P
Ramayana
by

Tulsidas

सूचना

तुलसीदास कृत रामायण मूल

यह पुस्तक कई बार नवलकिशोर यन्त्रालय में छापी गई - प्रथम छोटे काग़ज़ २० - २६ के हे आठवें हिस्से में लल्लूजी लाल कवि गुजराती की शुद्ध छपी हुई पुस्तक से जो सब से प्रथम हिन्दुस्तान में छपी थी छापी गई थी उस की असंख्य प्रति हरि भक्तों ने हाथों हाथ मोलली - फिर २२ - २६ के हे आठवें हिस्से बड़े काग़ज़ पर वही मूल रामायण तसवीरों सहित छापी गई - फिर यन्त्रालय की तरफ़ से कई बार असंख्य प्रति छापी गई और हाथों हाथ बट गई - वही मूल रामायण तसवीरों सहित छापी गई है - परन्तु बहुधा लोगों को उन कथाओं के संयुक्त होकर छापे जाने की इच्छा थी जो क्षेपक के नाम से प्रकट हैं - छापे खाने के प्रबन्ध कर्त्ताओं की बड़ी तलाश से जहां तक रामायण की क्षेपक कथा मिलीं वह इकट्ठा होकर अपनी २ जगह पर संयुक्त की गई हैं - प्रयोजन यह है कि यह रामायण जो उन रामायण से अलग छापी गई है बहुत उत्तमता से पूरी कथाओं के साथ मुद्रित हुई है - हम नीचे उन क्षेपकों की सूची लिखते हैं जिस से विदित होगा कि कौन कौनसी कथायें इस में संयुक्त की गई हैं -

क्षेपक कथाओं का सूची पत्र

रावण स्वेत द्वीप सुतल लोकादि गमन कथा-

बालकाण्ड १११ पत्र के ९ पंक्ति से १२० पत्र के २५ पंक्ति तक गंगा कथा-

लङ्का काण्ड ११ पत्र ८ पंक्ति से १५ पत्र के १७ पंक्ति तक रामचन्द्र सेन संख्या कथा-

लङ्काकाण्ड ४९ पत्र २५ पंक्ति से ६१ पत्र के ७ पंक्ति तक सुलोचना कथा-

लङ्का काण्ड ६४ पत्र २ पंक्ति से १११ पत्र के २३ पंक्ति तक अहि रावण मकर ध्वज मरणान्तक कथा-

विज्ञापन

इस रामायण के सिवाय और २ भी मति प्रत्येक इच्छा भिलाषियों के भक्ति स्नेह की कारक तैयार हुई हैं जिन की सूची नीचे लिखी है-

१- एक रामायण मूल क्षेपक व तसवीरें सहित बड़े मोटे अक्षरों में है चतुर्थ हिस्से २०-२६ कागज़ पर मुद्रित हुई है और उस को राम स्नेही भक्तों ने अतीव प्रसन्नता से ग्रहण किया-

२- दूसरी रामायण अत्युत्तम सीसाक्षर टेप में छपी है और इस में एक कोश भी संयुक्त है-

३- तीसरी रामायण और भी २०-२६ के है आठवें हिस्से में मुद्रित हुई है विचारांश है कि इस की क़ीमत बहुत कम नियत की जावे जिस में थोड़ा ख़र्च करने वाले लोग बहुत सस्त मोल में ले सकें-

शुभचिन्तक नवलकिशोर

फाल्गुन संवत् १९३४ तथा मार्च सन् १८७८ ईसवी

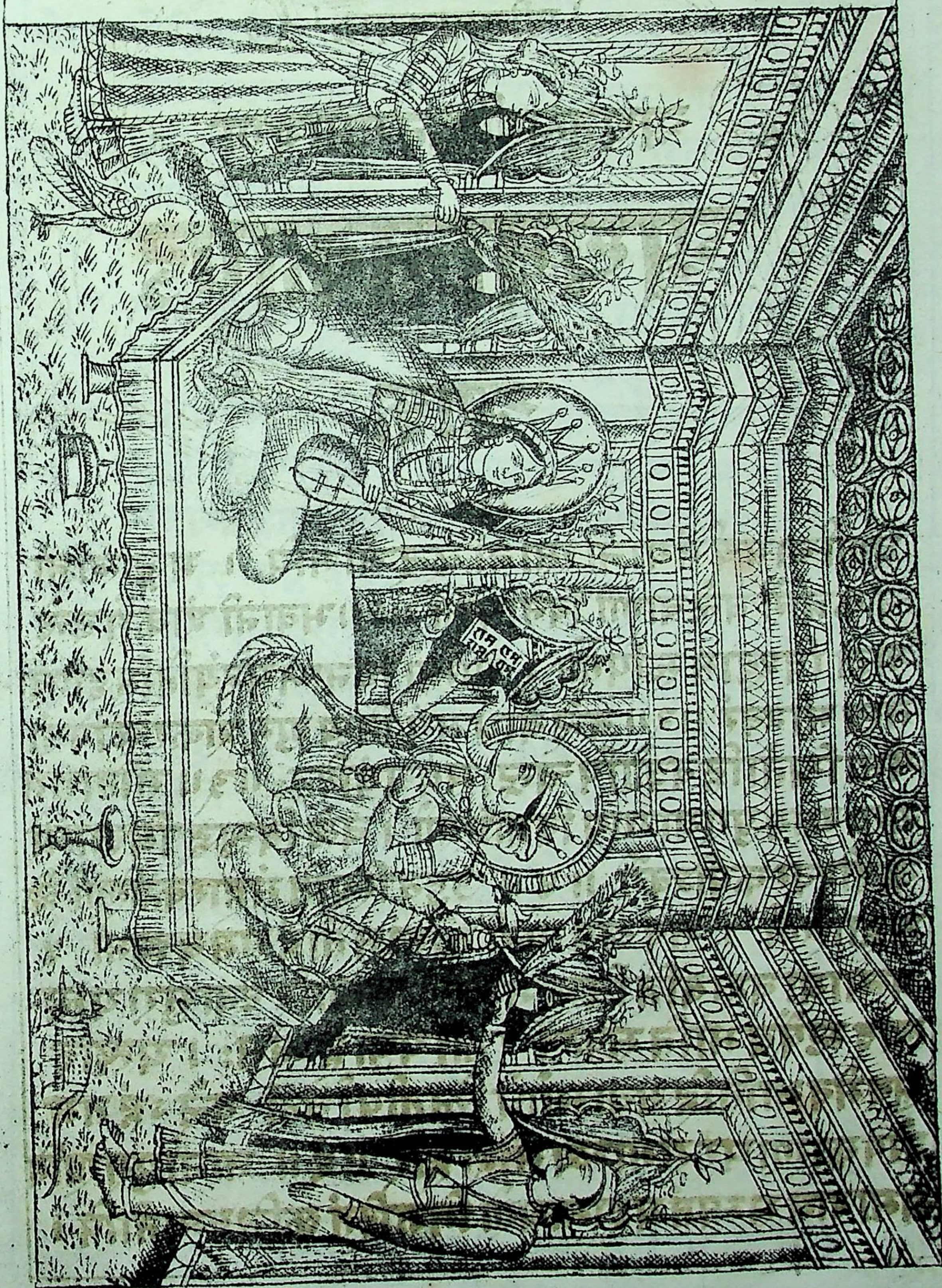
सूचीपत्र रामायण तुलसी दास कृत

बाल काण्ड

सूचीपत्र

उत्तर काण्ड

श्री गणेश जी और सरस्वती जी की मूर्ति



श्रीरामायनमः

अथतुलसीकृतरामायण

अथबालकाण्ड

श्लोक

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि । मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥१॥ भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ । याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाःस्वान्तस्थमीश्वरं ॥२॥ वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणं यमाश्रितोहि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र वंद्यते ॥३॥ सीताराम गुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ । वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥४॥ उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीं । सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रामवल्लभां ५ यन्मायावशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा यत्सत्वादमृषैव भांति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः । यत्पाद प्लवमेव भातिहि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देऽहं तम शेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिं ॥६॥ नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि ।

स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबंध मतिमं जुलमातनोति ७

सोरठ जेहि सुमिरत सिधि होय गण नायक करिवर बदन
करो अनुग्रह सोय । बुद्धि राशि शुभ गुण सदन
मूक होइं बाचाल । पंगु चढ़ैं गिरिवर गहन
जासु कृपा सु दयाल । द्रवौ सकल कलिमल दहन
नील सरोरुह श्याम । तरुण अरुण वारिज नयन
करो सो मम उर धाम । सदा क्षीर सागर शयन ॥
कुंद इंदु सम देह । उमा रमण करुणा अयन ॥
जाहि दीन पर नेह । करौ कृपा मर्दन मयन ॥
बन्दौं गुरु पद कंज । कृपा सिंधु नर रूप हरि ।
महा मोह तम पुंज । जासु बचन रवि कर निकर

बन्दौं गुरु पद पद्म परागा ॥ सुरुचि सुवास सरस अनुरागा
अमिय मूरि मय चूरण चारू । शमन सकल भव रुज परिवारू
सुकृत शंभु तन विमल विभूती मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥
जन मन मंजु मुकुर मल हरणी । किये तिलक गुण गण वश करणी
श्री गुरु पद नख मणि गण ज्योती सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती
दलन मोह तम सो सु प्रकासू । बड़े भाग्य उर आवहिं जासू
उघरहिं विमल विलोचन हिय के मिटहिं दोष दुख भव रजनी के
सूझहिं राम चरित मणि माणिक गुप्त प्रगट जहं जो जेहि खानिक

दोहा यथा सु अंजन आंज दृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखहिं शैल बन भूतल भूरि निधान ॥

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिय दृग दोष विभंजन
तेहि करि विमल विवेक बिलोचन बरणौं राम चरित्त भव मोचन
बन्दौं प्रथम मही सुर चरणा । मोह जनित संशय सब हरणा

सभामण्डली के सहित श्रीतुलसीदासजी को श्रीरामचरित्र का वर्णन करना ॥ ॥



सुजन समाज सकल गुण खानी करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी ॥
साधु चरित शुभ सरिस कपासू निरस विशद गुण मय फल जासू
जो सहि दुख पर छिद्र दुरावा। वंदनीय जेहि जग यश पावा।
मुद मंगल मय संत समाजू ॥ जो जग जंगम तीरथ राजू ॥
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा ॥ सरस्वति ब्रह्म विचार प्रचारा।
विधि निषेद मय कलि मल हरणी कर्म कथा रबि नंदनि बरणी ॥
हरि हर कथा बिराजत बेनी ॥ सुनत सकल मुद मंगल देनी
बट विश्वास अचल निज धर्मा तीरथ राज समाज सु कर्मा ॥
सबहि सुलभ सब दिन सब देशा सेवत सादर समन कलेशा।
अकथ अलौकिक तीरथ राऊ देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ।
दो० सुनि समुझहि जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग।
मज्जन फल देखिय तत काला काक होहिं पिक बकौ मराला
सुनि आश्चर्य करहिं जनि कोई सत्त संगति महिमा नहिं गोई
बालमीक नारद घट योनी ॥ निज निज मुखनि कही निज होनी
जल चर थल चर नभ चर नाना जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥
मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहि यतन जहाँ जेहि पाई
सो जानब सत संग प्रभाऊ ॥ लोकहु वेद न आन उपाऊ
विनु सत संग विवेक न होई राम कृपा बिनु सुलभ न सोई
सत संगति मुद मंगल मूला सोइ फल सिद्ध सब साधन फूला
शठ सुधरहिं सत संगति पाई पारस परस कुधातु सुहाई ॥
विधि वस सुजन कुसंगति परहीं फणि मणि सम निज गुण अनुस
विधि हरि हर कवि कोविद बानी कहत साधु महिमा सकुचानी
सो मोसन कहि जात न कैसे। शाक वणिक मणि गुण गण जैसे
दो० बन्दौं सन्त समान चित हित अनहित नहिं कोउ

अंजलिगत शुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोउ
संत सरल चित जगत हित जानि सुभाव सनेहु
बाल बिनय सुनि करि कृपा राम चरण रति देहु
बहुरि बंदि खल गण सति भाए । जे बिन काज दाहिनेहु बाँए
पर हित हानि लाभ जिन केरे । उजरे हरष बिषाद बसेरे ॥
हरिहर यश राकेश राहु से ॥ । पर अकाज भट सहस बाहु से
जे पर दोष लखहिं सहसाखी । परहित घृत तिन के मन माखी
तेज कृशानु रोष महिषेशा ॥ अघ अवगुन धन धनिक धनेशा
उदय केतु सम हित सबही के । कुंभकरण सम सोवत नीके ॥
पर अकाज लगि तनु परिहरहीं जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं
बंदौं खल जस शेष सरोषा ॥ सहस बदन बरनै पर दोषा ॥
पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना पर अघ सुनै सहस दश काना
बहुरि शक्र सम बिनवौं तेही । संतत सुरानीक हित जेही
बचन बज्र जेहि सदा पियारा । सहस नयन पर दोष निहारा
दो॰ उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति
जानु पाणि युग जोरि जन बिनती करौं सप्रीति
मैं आपन दिशि कीन्ह निहोरा । तिन निज ओर न लाउब भोरा
बायस पालिय अति अनुरागा होहिं निरामिष कबहु कि कागा
बंदौं संत असज्जन चरणा ॥ । दुख प्रद उभय बीच कछु बरणा
बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं । मिलत एक दारुण दुख देहीं ।
उपजहिं एक संग जग माहीं । जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं
सुधा सुरा सम साधु असाधू । जनक एक जग जलधि अगाधू
भल अनभल निज निज करतूती लहत सुयश अपलोक बिभूती
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू ।। गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू
गुण अवगुण जानत सब कोई जो जेहि भाव नीक तेहि सोई

दो॰ भले भलाई पै लहहिं। लहहिं निचाई नीच॥
सुधा सराहिय अमरता। गरल सराहिय मीच॥

खल अघ अगुण साधु गुण गाहा उभय अपार उदधि अवगाहा
तेहि तें कछु गुण दोष बखाने॥ संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने
भलेउ पोच सब बिधि उपजाये गनि गुण दोष वेद बिलगाये।
कहहिं वेद इतिहास पुराना॥ बिधि प्रपंच गुण अवगुण साना
दुख सुख पाप पुण्य दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाती।
दानव देव ऊंच अरु नीचू॥ अमिय सजीवन माहुर मीचू॥
माया ब्रह्म जीव जग दीशा॥ लक्ष अलक्ष रंक अव नीशा।
काशि मगह सुरसरि कर्मनाशा मरु मालव महि देव गवाशा।
स्वर्ग नर्क अनुराग बिरागा॥ निगमागम गुण दोष बिभागा

दो॰ जड़ चेतन गुण दोष मय विश्व कीन्ह करतार॥
संत हंस गुण गहहिं पै परि हरि बारि बिकार॥

अस बिवेक जब देहिं बिधाता तब तजि दोष गुणहिं मन राता
काल सुभाव कर्म बरि आई॥ भलेउ प्रकृति बश चुकइं भलाई
सो सुधारि हरि जन जिमि लेहीं दलि दुख दोष बिमल यश देहीं।
खलउ करइं भल पाइ सुसंगू। मिटहिं न मलिन सुभाव अभंगू
लखि सुभेष जग बंचक जेऊ। बेष प्रताप पूजियत तेऊ॥
उघरहिं अंतन होय निबाहू॥ कालनेमि जिमि रावण राहू
किये कुबेष साधु सनमानू॥ जिमि जग जामवंत हनुमानू
हानि कुसंग सुसंगति लाहू॥ लोकहु वेद विदित सब काहू
गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा। कीचहिं मिलै नीच जल संगा
साधु असाधु सदन शुक शारी। सुमिरहिं राम देहिं गण गारी
धूम कुसंगति कारिख होई॥ लिखिय पुराण मंजु मसि सोई
सोइ जल अनल अनिल संघाता होइ जलद जग जीवन दाता

दो० गुह भेषज जल पवन पट पाइ कुयोग सुयोग ॥
होइ कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलक्षण लोग
सम प्रकाश तम पाख दुहु नाम भेद विधि कीन्ह
शशि पोषक शोषक समुझि जग यश अपयश दीन्ह
जड़ चेतन जग जीव तज सकल राम मय जानि ॥
बंदौं सब के पद कमल सदा जोरि युग पानि ॥
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्व ॥
बंदौं किन्नर रजनि चर । कृपा करहु अब सर्व ॥
आकर चारि लाख चौरासी ॥ जाति जीव नभ जल थल बासी
सिया राम मय सब जग जानी। करौं प्रणाम जोरि युग पानी।
जानि कृपा कर किंकर मोहू । सब मिलि करहु छांडि छल छोहू
निज बल बुद्धि भरोस मोहिं नाहीं ताते बिनय करउं सब पाहीं।
करण चहौं रघुपति गुण गाहा लघु मति मोरि चरित अवगाहा
सूझ न एकौ अंग उपाऊ ॥ । मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥
मति अति नीच ऊंच मति आछी चहिय अमिय जग जुरै न छाछी
क्षमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई । सुनिहहिं बाल बचन मन लाई
जो बालक कह तोतरि बाता ॥ सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता
हंसिहहिं कूर कुटिल कुविचारी जे पर दूषण भूषण धारी ॥
निज कबित्त केहि लाग न नीका सरस होउ अथवा अति फीका
जे पर भणित सुनत हर षाहीं । ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं।
जग बहु नर सरि सर सम भाई ॥ जे निज बाढ़ बढ़हिं जल पाई
सज्जन सुकृत सिंधु सम कोई । देखि पूर विधु बाढ़हिं जोई ॥
दो० भाग छोट अभिलाष बड़ करउं एक विश्वास।
पैहहिं सुख सुनि सुजन जन खल करिहैं उपहास।
खल परिहास होइ हित मोरा ॥ काक कहहिं कल कंठ कठोरा ॥

हँसिहहिं बक दादुर चातकही। हँसहिं मलिन खल विमल बतकही
कवित रसिक न राम पद नेहू ॥। तिन कहँ सुखद हास रस एहू
भाषा भणित मोरि मति भोरी ॥ हँसिबे योग हँसे नहिं खोरी।
प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी तिनहिं कथा सुनि लागहिं फीकी
हरि हर पद रति मति न कुतर्की। तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुबर की
राम भक्ति भूषित जिय जानी ॥ सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी
कवि न होउँ नहिं चतुर प्रवीना। सकल कला सब विद्या हीना
आखर अर्थ अलंकृत नाना ॥ छन्द प्रबंध अनेक विधाना।
भाव भेद रस भेद अपारा ॥। कवित दोष गुण विविध प्रकारा
कवित विवेक एक नहिं मोरे ॥। सत्य कहौं लिखि कागद कोरे
सो॰ भणित मोर सब गुण रहित विश्व विदित गुण एक
सो विचारि सुनिहहिं सुमति जिन्ह के विमल विवेक
इहि महँ रघुपति नाम उदारा ॥। अति पावन पुराण श्रुति सारा
मंगल भवन अमंगल हारी ॥ उमा सहित जेहि जप त्रिपुरारी
भणित विचित्र सुकवि कृत जोऊ राम नाम विनु सोह न सोऊ ॥
विधु बदनी सब भांति संवारी ॥ सोह न बसन विना बर नारी।
सब गुण रहित कुकवि कृत बानी राम नाम यश अंकित जानी
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही। मधुकर सरस संत गुण ग्राही
यदपि कवित्त गुण एकौ नाहीं। राम प्रताप प्रगट इहि माहीं।
सोइ भरोस मोरे मन आवा ॥। को न सुसंग बड़ा पन पावा
धूमौ तजै सहज करु आई ॥ अगर प्रसंग सुगंध बसाई ॥
भणित भदेस वस्तु भलि बरणी॥ राम कथा जग मंगल करणी
छन्द मंगल करनि कलि मल हरणि तुलसी कथा रघुनाथ की
गति कूर कविता सरित की ज्यों परम पावन पाथ की ॥
प्रभु सुयश संगति भणित भलि होइहि सुजन मन भावनी

भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावन पावनी ॥

दो॰ प्रिय लागहि अति सबहिं मम भणित राम यश संग
दारु बिचार कि करइ कोउ वंदिय मलय प्रसंग ॥

श्याम सुरभि पय बिशद अति गुण द करहिं सब पान
गिरा ग्राम्य सिय राम यश गावहि सुनहिं सुजान ॥

मणि माणिक मुकुता छवि जैसी अहि गिरि गज शिर सोहन जैसी
नृप किरीट तरुणी तनु पाई ॥। लहहिं सकल शोभा अधिकाई
तैसहिं सुकबि कवित बुध कहहीं उपजहिं अनत अनत छवि लहहीं
भक्ति हेतु बिधि भवन बिहाई। सुमिरत शारद आवति धाई
राम चरित सर बिनु अन्हवाएं सो श्रम जाइ न कोटि उपाए ॥
कवि कोविद अस हृदय विचारी गावहिं हरि गुण कलिमल हारी
कीन्हे प्राकृत जन गुण गाना ॥ सिर धुनि गिरा लगति पछिताना
हृदय सिंधु मति सीप समाना ॥ स्वाती शारद कहहिं सुजाना ॥
जो बरषै बर बारि बिचारू ॥। होहिं कवित्त मुकुता मणि चारू

दो॰ युक्ति बेधि पुनि पोहिये राम चरित बर ताग ॥ ❀
पहिरहिं सज्जन विमल उर शोभा अति अनुराग।

जे जन मैं कलि काल कराला ॥ कर तब वायस बेष मराला ॥
चलत कुपंथ वेद मग छाड़े ॥ कपट कले वर कलि मल भांड़े।
वंचक भक्त कहाइ राम के ॥। किंकर कंचन कोह काम के ॥
तिन महं प्रथम रेख जग मोरी। धिक धरम ध्वज धंधक धोरी।
जो अपने अवगुण सब कहऊं बाढ़ कथा पार नहिं लहऊं ॥
ताते मैं अति अलप बखाने ॥ थोरे महं जानि हहिं सयाने ॥
समुझि विविध विधि बिनती मोरी कोउन कथा सुनि देइहि खोरी
एतेहु पर करि हहिं जे शंका ॥ मोते अधिक ते जड़ मति रंका।
कविन होउं नहिं चतुर कहाऊं मति अनुरूप राम गुण गाऊं

कहँ रघुपति के चरित अपारा। कहँ मति मोरि निरत संसारा।
जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं। कहहु तूल केहि लेखे माहीं॥
समुझत अमित राम प्रभुताई करत कथा मन अति कदराई॥
दो० सारद शेष महेश विधि आगम निगम पुरान॥
नेति नेति कहि जासु गुण करहिं निरंतर गान॥
सब जानत प्रभु प्रभुता सोई॥ तदपि कहे बिनु रहा न कोई॥
तहां वेद अस कारण राखा॥ ।भजन प्रभाव भांति बहु भाषा
एक अनीह अरूप अनामा॥ अज सच्चिदानन्द पर धामा॥
व्यापक विश्व रूप भगवाना॥ तेइ धरि देह चरित कृत नाना
सो केवल भक्तन हित लागी॥ परम कृपालु प्रणत अनुरागी।
जेहि जन पर ममता अरु छोहू तेहि करुणा कर कीन्ह न कोहू
गई बहोरि गरीब नेवाजू॥ ।सरल सबल साहिब रघुराजू॥
बुध बरणहिं हरि यश अस जानी करहिं पुनीत सुफल निज बानी
तेहि बल मैं रघुपति गुण गाथा कहिहौं नाइ राम पद माथा॥
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई। तेहि मग चलत सुगम मोहिं भाई
दो० अति अपार जे सरित वर जो नृप सेतु कराहिं॥
चढ़ि पिपीलिका परम लघु विनु श्रम पारहि जाहिं॥
यहि प्रकार बल मनहिं दृढ़ाई॥ करिहौं रघुपति कथा सुहाई॥
व्यास आदि कवि पुंगव नाना॥ जिन्ह सादर हरि चरित बखाना।
चरण कमल बन्दौं सब केरे॥ ।पुरवहु सकल मनोरथ मेरे॥
कलि के कविन करौं परणामा। जिन वरणे रघुपति गुण ग्रामा
जे प्राकृत कवि परम सयाने॥ भाषा जिन्ह हरि चरित बखाने।
भये जे अहहिं जे होइहैं आगे। प्रणवउं सबहिं कपट छल त्यागे
होउ प्रसन्न देहु बरदानू॥ ॥ साधु समाज भणित सनमानू॥
जो प्रबन्ध बुध नहिं आदरहीं॥ सो श्रम बादि बाल कवि करहीं

कीरति भणित भूति भलि सोई ॥ सुरसरि सम सब कहँ हित होई
राम सु कीरति भणित भदेसा ॥ असमंजस अस मोहिं अंदेसा
तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे ॥ सिअनि सुहावनि टाट पटोरे ॥
करहु अनुग्रह अस जिय जानी। बिमल यशहिं अनुहरहु सुवानी
दो॰ सरल कवित्त कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान ॥
सहज वयर बिसराइ रिपु। जो सुनि करहिं बखान।
सो न होइ बिनु बिमल मति मोहि मतिबल अति थोर
करहु कृपा हरियश कहौं। पुनि पुनि करउँ निहोर
कबि कोबिद रघुवर चरित मानस मंजु मराल ॥
बाल बिनय सुनि सुरुचि लखि मोपर होहु कृपाल ॥
सो॰ बन्दौं मुनि पद कंज। रामायण जिन निर्मयो ॥
सखरस कोमल मंजु। दोष रहित दूषण सहित ॥
बन्दौं चारों वेद भव बारिधि बोहित सरस ॥ ॥
जिनहिं न सपनेहुँ खेद। बरणत रघुपति बिशदयश
बन्दौं विधि पद रेणु। भव सागर जिन कीन यह ॥
संत सुधा शशि धेनु। प्रगटे खल बिष बारुणी ॥
दो॰ बिबुध बिप्र बुध गुरु चरण। बन्दि कहौं करजोर
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल। मंजु मनोरथ मोर ॥
पुनि बन्दौं शारद सुरसरिता ॥। युगल पुनीत मनोहर चरिता ॥
मज्जन पान पाप हर एका ॥। कहत सुनत इक हर अविवेका
गुरु पितु मातु महेश भवानी ॥ प्रणऊँ दीन बन्धु दिन दानी।
सेवक स्वामि सखा शिव जी के ॥ हित निरूप सब बिधि तुलसी के
कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा साबर मंत्र जाल जिन सिरिजा
अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रगट प्रभाव महेश प्रतापू ॥
सो महेश मोपर अनुकूला ॥ ॥ करौं कथा मुद मंगल मूला ॥

सुमिरि शिवा शिव पाइ पसाऊ। बरणौं राम चरित चित चाऊ।
भणित मोर शिव कृपा विभाती। शशि समाज मिलि मनहु सुराती
जो यह कथा सनेह समेता॥ ॥ कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता
होइहहिं राम चरण अनुरागी॥ कलिमल रहित सुमंगल भागी
दो०   सपनेहुं सांचहु मोहि पर जो हर गौरि पसाउ॥
तौ फुर होउ जो कहउं सब भाषा भणित प्रभाउ॥
बन्दौं अवध पुरी अति पावनि॥ सरयू सरि कलि कलुष नसावनि
प्रणऊं पुर नर नारि बहोरी॥ ॥ ममता जिन पर प्रभुहिं न थोरी।
सिय निन्दक अघ ओघ नसाये॥ लोक विशोक बसाइ बसाये॥
बन्दौं कौशल्या दिशि प्राची॥ कीरति जासु सकल जग माची
प्रगटेउ जहं रघुपति शशि चारू विश्व सुखद खल कमल तुषारू
दशरथ राउ सहित सब रानी॥ सुकृत सुमंगल मूरति जानी
करौं प्रणाम कर्म मन बानी॥ करहु कृपा सुत सेवक जानी
जिनहिं विरंचि बड़ भयेउ बिधाता महिमा अवधि राम पितु माता
सो०   बन्दौं अवध भुआल। सत्य प्रेम जेहि राम पद
बिछुरत दीन दयाल। प्रिय तन तृण इव परिहरेउ
प्रणवौं परिजन सहित विदेहू॥ जाहि राम पद गूढ़ सनेहू॥
योग भोग महं राखेउ गोई॥ । राम बिलोकत प्रगटेउ सोई॥
प्रणवौं प्रथम भरत के चरणा॥ जासु नेम व्रत जाइ न बरणा॥
राम चरण पंकज मन जासू ॥ । लुब्ध मधुप इव तजे न पासू॥
बन्दौं लक्ष्मण पद जल जाता॥ शीतल सुभग भक्त सुख दाता
रघुपति कीरति बिमल पताका। दंड समान भयो यश जाका।
शेष सहस्र शीश जग कारन॥ जो अवतरेउ भूमि भय टारन॥
सदा सो सानुकूल रहु मो पर॥ । कृपा सिन्धु सौमित्र गुणाकर
रिपु सूदन पद कमल नमामी॥ । सूर सुशील भरत अनुगामी॥

महावीर विनऊँ हनुमाना ॥ राम जासु यश आपु बखाना ॥
सो० बन्दौं पवन कुमार। खल बन पावक ज्ञान घन ॥
जासु हृदय आगार। बसहिं राम सर चाप धर ॥
कपि पति ऋक्ष निशाचर राजा अंगदादि जे कीस समाजा ॥
बन्दौं सब के चरण सुहाये ॥ । अवध शरीर राम जिन पाये।
रघुपति चरण उपासक जेते ॥ खग मृग सुर नर असुर समेते
बन्दौं पद सरोज सब केरे ॥ ॥ जे बिनु काम राम के चेरे ॥ ॥
शुक सनकादि आदि मुनि नारद जे मुनिवर विज्ञान विशारद।
प्रणाऊँ सबहि धरणि धरि शीशा करहु कृपा जन जानि मुनीशा
जनक सुता जग जननि जानकी अतिशय प्रिय करुणा निधान की
ताके युग पद कमल मनाऊँ ॥ जासु कृपा निरमल मति पाऊँ।
पुनि मन वचन कर्म रघुनायक। चरण कमल बन्दौं सब लायक।
राजिव नयन धरे धनु शायक ॥ भक्त विपति भंजन सुख दायक
दो० गिरा अर्थ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न
बन्दौं सीता राम पद। जिनहिं परम पद खिन्न ॥
बन्दौं राम नाम रघुबर के ॥ ॥ हेतु कृशानु भानु हिम कर के ॥
विधि हरि हर मय वेद प्राण से ॥ अगुण अनूपम गुण निधान से
महा मन्त्र जोइ जपत महेशू ॥ काशी मुक्ति हेतु उपदेशू ॥
महिमा जासु जान गण राऊ ॥ प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ॥
जान आदि कवि नाम प्रतापू ॥ भयउ सिद्ध कर उलटा जापू
सहस नाम सम सुनि शिववानी जप जे बीज सुसङ्ग भवानी ॥
हरषे हेतु हेरि हर ही के ॥ ॥ किय भूषण तिय भूषण ती के
नाम प्रभाव जान शिव नीके। कालकूट फल दीन्ह अमी के
दो० बरषा ऋतु रघुपति भगति तुलसी शालि सुदास।
राम नाम वर वरण युग। श्रावण भादौं मास ॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ ॥। बरण विलोचन जन प्रिय जोऊ
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू लोक लाहु पर लोक निबाहू ॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। राम लषन सम प्रिय तुलसी के।
बरणत बरण सरिस बिलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज संघाती
नर नारायण सरिस सुभ्राता ।। जग पालक विशेष जनत्राता
भक्ति सुतिय कल करण विभूषण जग हित हेतु विमल विधु पूषण
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के ॥ कमठ शेष सम धर बसुधा के ॥
जन मन मंजु कंज मधुकर से ॥ जीह यशोमति हरि हलधर से

दो० एक छत्र इक मुकुट मणि। सब बरणन पर जोउ ॥
तुलसी रघुबर नाम के ।। बरण बिराजत दोउ ॥ ॥

समुझत सरस नाम अरु नामी। प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी।
नाम रूप दोइ ईश उपाधी ।। अकथ अनादि सुसामुझ साधी
को बड़ छोट कहत अपराधू ।। सुनि गुण भेद समुझिहैं साधू
देखिय रूप नाम आधीना ।। रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना
रूप विशेष नाम बिनु जाने ।। करतलगत न परहिं पहिचाने
सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे ।। आवत हृदय सनेह विशेषे ।।
नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परै बखानी
अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी

दो० राम नाम मणि दीप धरु जीह देहरी द्वार ॥ ॥
तुलसी भीतर बाहिरे ॥ जो चाहसि उजियार

नाम जीह जपि जागहिं योगी ॥ बिरति बिरंचि प्रपंच वियोगी ॥
ब्रह्म सुखहिं अनुभवहिं अनूपा अकथ अनामय नाम न रूपा।
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ ॥ नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ॥
साधक नाम जपहिं लय लाये ॥ होहिं सिद्ध अणिमादिक पाये।
जपहिं नाम जन आरत भारी ॥ मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।

राम भक्त जग चारि प्रकारा ।। ।। सुकृती चारिउ अनघ उदारा
चहूं चतुर कहं नाम अधारा ।।। ज्ञानी प्रभुहि विशेष पियारा
चहुं युग चहुं श्रुति नाम प्रभाऊ कलि विशेष नहिं आन उपाऊ
दो० सकल कामना हीन जे ।। राम भक्ति रस लीन ।।
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद ।। तिनहुं किये मन मीन।
अगुण सगुण दोउ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा।
मोरे मत बड़ नाम दुहूतें ।। ।। ।। किये जेहि युग निज बस निज बूतें
प्रौढ़ि सुजन जन जानहिं जनकी। कहउं प्रतीति प्रीति रुचि मनकी
एक दारुगत देखिय एकू ।। ।। पावक युग सम ब्रह्म विवेकू ।।
उभय अगम युग सुगम नाम तें। कहउं नाम बड़ ब्रह्म राम तें ।।
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी ।। जड़ चेतन घन आनंद राशी
अस प्रभु हृदय अछत अविकारी सकल जीव जग दीन दुखारी
नाम निरूपण नाम यतन तें ।। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें
दो० निरगुण तें इहि भांति बड़ नाम प्रभाव अपार ।।
कहउं नाम बड़ राम तें । निज विचार अनुसार।
राम भक्त हित नर तनु धारी ।।। सहि संकट किय साधु सुखारी
नाम सप्रेम जपत अनयासा ।।भक्त होहिं मुद मंगल बासा
राम एक तापस तिय तारी ।। ।। नाम कोटि खल कुमति सुधारी
ऋषि हित राम सुकेतु सुताकी ।।सहित सेन सुत कीन्ह विवाकी
सहित दोष दुख दास दुराशा ।। दलइ नाम जिमि रवि निशि नाशा
भंजेउ राम आपु भव चापू ।भव भय भंजन नाम प्रतापू।
दंडक बन प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम किय पावन
निश्चर निकर दले रघुनन्दन ।नाम सकल कलि कलुष निकंदन
दो० शवरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ह रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल वेद विदित गुण गाथ

राम सुकंठ बिभीषण दोऊ ।।। राखे शरण जान सब कोऊ
नाम अनेक गरीब निवाजे ।। लोक वेद वर विरद बिराजे ।।
राम भालु कपि कटक बटोरा। सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा ।।
नाम लेत भव सिन्धु सुखाहीं। करहु विचार सुजन मन माहीं
राम सकुल रण रावण मारा ।।। सीय सहित निज पुर पगु धारे
राजा राम अवध रजधानी ।।। गावत गुण सुर मुनिवर बानी
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती ।।। बिनु श्रम प्रबल मोह दल जीती
फिरत सनेह मगन सुख अपने। नाम प्रसाद शोच नहिं सपने

दो॰ ब्रह्म राम तें नाम बड़ ।।। बरदायक बर दानि ।।।
राम चरित शत कोटि महँ लिय महेश जिय जानि

नाम प्रसाद शंभु अबिनाशी। साज अमंगल मंगल राशी।
शुक सनकादि सिद्ध मुनि योगी नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी
नारद जानेउ नाम प्रतापू ।।।। जग प्रिय हरि हर हरि प्रिय आपू
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू ।। भक्त शिरोमणि भे प्रहलादू
ध्रुव सगलानि जपेउ हरिनामू। पायेउ अचल अनूपम ठामू
सुमिरि पवन सुत पावन नामू ।। अपने बस करि राखेउ रामू ।।
अपर अजामिल गज गणिकाऊ भये मुक्त हरि नाम प्रभाऊ
कहउँ कहाँ लगि नाम बड़ाई ।। राम न सकहिं नाम गुण गाई

दो॰ राम नाम को कल्पतरु। कलि कल्याण निवास
जो सुमिरत भये भांग तें। तुलसी तुलसी दास ।।

चहुं युग तीनि काल तिहुं लोका भये नाम जपि जीव बिशोका
वेद पुराण संत मत एहू ।। ।। सकल सुकृत फल राम सनेहू
ध्यान प्रथम युग मख युग दूजे। द्वापर परितोषत प्रभु पूजे ।।
कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना
नाम काम तरु काल कराला ।। सुमिरत शमन सकल जग जाला

राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता॥
नहिं कलि कर्म न भक्ति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू॥ ॥
काल नेमि कलि कपट निधानू नाम सुमति समरथ हनुमानू॥
दो॰ राम नाम नरकेसरी॥ कनक कसिपु कलिकाल
जापक जन प्रहलाद जिमि पालहिं दलि सुर साल
भाय कुभाय अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ
सुमिरि सो नाम राम गुण गाथा करौं नाइ रघुनाथ हिं माथा॥
मोरि सुधारहिं सो सब भांती॥ जासु कृपा नहिं कृपा अघाती
राम सुस्वामि कुसेवक मोसे॥ निज दिसि देखि दया निधि पोसे
लोकहुं बेद सुसाहब रीती॥ ॥ बिनय सुनत पहिचानत प्रीती
गुनी गरीब ग्राम नर नागर॥॥ पंडित मूढ़ मलीन उजागर॥
सुकवि कुकवि निज मति अनुसारी नृपहिं सराहत सब नर नारी॥
साधु सुजान सुशील नृपाला॥ ईश अंशभव परम कृपाला
सुनि सन मानहिं सबहिं सुबानी भणित भक्ति मति गति पहिचानी
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ॥ जानि शिरोमणि कोशलराऊ
रीझत राम सनेह निसोते॥ ॥ को जग मंद मलिन मति मोते
दो॰ शठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु॥
उपल किए जल जान जेहि सचिव सुमति कपि भालु
होंहुं कहावत सब कहत राम सहत उपहास॥ ॥
साहेब सीता नाथ से॥ सेवक तुलसी दास॥ ॥
अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी॥ सुनि अघ नरकहुं नाक सिकोरी
समुझि सहमि मोहिं अपडर अपने सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने॥
सुनि अवलोकि सुचित चखु चाही भक्ति मोरि मति स्वामि सराही
कहत न साइ होलि अति नीकी॥ रीझत राम जानि जन जी की॥
रहत न प्रभु चित चूक किये की। करत सुरत सै बार हिये की॥॥

जेहि अघ बधेउ व्याध जिमि बाली फिरि सुकंठ सोइ कीन्ह कुचाली
सोइ करतूति विभीषण केरी ॥ सपनेहुं सो न राम हिय हेरी ॥
ते भरतहिं भेंटत सनमाने ॥ ॥ राज सभा रघुवीर बखाने ॥ ॥

दो॰ प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किय आपु समान ॥
तुलसी कहूँ न राम से । साहेब शील निधान ॥
राम निकाई रावरी ॥ है सब ही को नीक ॥ ॥
जो यह साँची है सदा ॥ तौ नीको तुलसीक ॥
इहि विधि निज गुण दोष कहि सबहिं बहुरि शिर नाइ
बरणौं रघुबर विशद यश सुनि कलि कलुष नशाइ

याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई ॥ भरद्वाज मुनिवरहिं सुनाई ॥ ॥
कहिहौं सोइ संवाद बखानी ॥ सुनहु सकल सज्जन सुख मानी
शंभु कीन्ह यह चरित सुहावा ॥ बहुरि कृपा करि उमहिं सुनावा
सो शिव काकभुशुंडहिं दीन्हा ॥ राम भक्ति अधिकारी चीन्हा ॥
तेहि सन याज्ञवल्क्य पुनि पावा । तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा ॥
ते श्रोता वकता सम शीला ॥ सम दरशी जानहिं हरि लीला
जानहिं तीनि काल निज ज्ञाना करतलगत आमलक समाना
औरौं जे हरिभक्त सुजाना ॥ कहहिं सुनहिं समुझहिं विधि नाना

दो॰ मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सु सूकर खेत ॥
समुझ नहीं तसु बालपन तब अति रहेउँ अचेत
श्रोता वकता ज्ञान निधि कथा राम की गूढ़ ॥
किमि समुझै यह जीव जड़ कलिमल ग्रसित विमूढ़

तदपि कही गुरु बारहिं बारा ॥ समुझि परी कछु मति अनुसारा
भाषा बन्ध करब मैं सोई ॥ मोरे मन प्रबोध जेहि होई ॥
जस कछु बुधि विवेक बल मेरे । तस कहिहौं हिय हरि के प्रेरे ॥
निज सन्देह मोह भ्रम हरणी ॥ करौं कथा भव सरिता तरणी ॥

बुध बिश्राम सकल जन रंजनि ॥ राम कथा कलि कलुष बिभंजनि
राम कथा कलि पन्नग भरणी ॥। पुनि बिवेक पावक कहं अरणी
राम कथा कलि कामद गाई ॥ सुजन सजीवन मूरि सुहाई ।
सोइ बसुधा तल सुधा तरंगिनि । भव भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि
असुर सेन सम नरक निकंदनि ॥ साधु विबुध कुल हित गिरिनंदनि
संत समाज पयोधि रमासी ॥ ॥। विश्व भार धर अचल क्षमासी
यम गण मुहं मसि जग यमुनासी जीवन मुक्ति हेतु जनु कासी
रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । तुलसि दास हित हिय हुलसी सी
शिव प्रिय मेकल शैल सुतासी । सकल सिद्धि सुख संपति रासी
सद गुण सुर गण अंब अदितिसी रघुबर भक्ति प्रेम परमिति सी

दो० राम कथा मन्दाकिनी ॥ चित्र कूट चित्त चारु ॥
तुलसी सुभग सनेह बन । सिय रघुबीर बिहारु ॥।

राम चरित चिन्ता मणि चारु ॥। सन्त सुमति तिय सुभग सिंगारु
जग मंगल गुण ग्राम राम के ॥ दानि मुक्ति धन धर्म्म दान के
सद गुरु ज्ञान बिराग योग के ॥ बिबुध बैद भव भीम रोग के।
जननि जनक सिय राम प्रेम के। बीज सकल ब्रत धर्म्म नेम के
शमन पाप संताप शोक के ॥। प्रिय पालक पर लोक लोक के
सचिव सुभट भूपति विचार के। कुंभज लोभ उदधि अपार के
काम क्रोध कलि मल करिगण के केहरि शावक जन मन बन के
अतिथि पूज्य प्रीतम पुरारि के। कामद घन दारिद दवारि के ॥
मंत्र महामणि विषय व्याल के। मेटत कठिन कुअंक भाल के
हरण मोह तम दिनकर कर से। सेवक शालि पाल जलधर से
अभिमत दानि देव तरु वर से। सेवत सकल सुखद हरि हर से
सुकवि शरद नभ मन उडुगण से। राम भक्ति जन जीवन धन से
सकल सुकृत फल भूरि भोग से। जग हित निरुपधि साधु लोग से

सेवक मन मानस मराल से ॥ ॥ पावन गंग तरंग माल से ॥ ॥

दो० कुपथ कुतर्क कुचालि कलि कपट दम्भ पाखण्ड ।
दहन राम गुण ग्राम इमि इंधन अनल प्रचंड ॥
रामचरित राकेश कर ॥ सरिस सुखद सब काहु
सज्जन कुमुद चकोर चित हित विशेष बड़ लाहु ॥

कीन्ह प्रश्न जेहि भांति भवानी ॥ जेहि विधि शंकर कहा बखानी
सो सब हेतु कहब मैं गाई ॥*॥ कथा प्रबन्ध विचित्र बनाई ॥
जिन यह कथा सुनी नहिं होई ॥ जनि आश्चर्य करै सुनि सोई
कथा अलौकिक सुनहिं जे ज्ञानी। नहिं आश्चर्य करहिं अस जानी
राम कथा की मिति जग नाहीं ॥। अस प्रतीति तिन के मन माहीं
नाना भांति राम अवतारा ॥ ॥ रामायण शत कोटि अपारा
कल्प भेद हरि चरित सुहाये ॥ । भांति अनेक मुनीशन गाये
करिय न संशय अस उर आनी । सुनिय कथा सादर रति मानी ।

दो० राम अनंत अनंत गुण । अमित कथा विस्तार
सुनि आश्चर्य न मानि हहिं जिनके विमल विचार

इहि विधि सब संशय करि दूरी ॥ सिर धरि गुरु पद पंकज धूरी
पुनि सबही बिनवौं कर जोरी ॥ करत कथा जेहि लागन खोरी
सादर शिवहिं नाइ अब माथा ॥ बरणौं विशद राम गुण गाथा
संवत सोरह सै इक तीसा ॥ ॥ करौं कथा हरि पद धरि सीसा
नौमी भौम वार मधु मासा ॥ ॥ अवधपुरी यह चरित प्रकासा
जेहि दिन राम जन्म श्रुति गावहिं तीरथ सकल तहां चलि आवहिं
असुर नाग खग नर मुनि देवा। आय करहिं रघुनायक सेवा
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना। करहिं राम कल कीरति गाना

दो० मज्जहिं सज्जन वृन्द बहु। पावन सरयू नीर ॥
जपहिं राम धरि ध्यान उर सुन्दर श्याम शरीर ॥

दरश परस मज्जन अरु पाना ॥ हरै पाप कह वेद पुराना ॥ ॥
नदी पुनीत अमित महिमा अति कहि न सकै शारदा बिमल मति
राम धामदा पुरी सुहावनि ॥ ॥ लोक समस्त विदित जग पावनि
चारि खानि जग जीव अपारा अवध तजे तन नहिं संसारा ॥
सब बिधि पुरी मनोहर जानी। सकल सिद्धि प्रद मंगल खानी
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा सुनत नशाहिं काम मद दंभा।
राम चरित मानस यह नामा ॥ सुनत श्रवण पाइय विश्रामा
मन करि विषय अनल वन जरई होइ सुखी जो इहिं सर परई
राम चरित मानस मुनि भावन। बिरचेउ शंभु सुहावन पावन
त्रिविध दोष दुख दारिद दावन कलि कुचालि कलि कलुष नशावन
रचि महेश निज मानस राखा। पाइ सुसमय शिवा सन भाखा।
तातें राम चरित मानस वर ॥। धरेउ नाम हिय हेरि हरषि हर
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई ॥ सादर सुनहु सुजन मन लाई ॥

दो॰ जस मानस जेहि विधि भयो जग प्रचार जेहि हेतु ॥
अब सोइ कहौं प्रसंग सब सुमिरि उमा वृष केतु ॥

शंभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी राम चरित मानस कवि तुलसी।
करउं मनोहर मति अनुहारी। सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू। वेद पुराण उदधि घन साधू।
बरषहिं राम सुयश वर बारी ॥। मधुर मनोहर मंगल कारी ॥।
लीला सगुण जो कहहिं बखानी सोइ स्वच्छता करै मल हानी।
प्रेम भक्ति जो वरणि न जाई ॥ सोइ मधुरता सो शीतल ताई।
सो जल सुकृत शालि हित होई राम भक्त जन जीवन सोई ॥
मेधा महिगत सो जल पावन सिमिटि श्रवण मग चलेउ सुहावन
भरेउ सुमानस शिथिल थिराना। सुखद शीत रुचि चारु चिराना

दो॰ सुठि सुन्दर संवाद वर ॥ विरचेउ बुद्धि विचारि ॥

तेइ यह पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि ॥
सप्त प्रबन्ध सुभग सो पाना ॥ ज्ञान नयन निरखत मन माना
रघुपति महिमा अगुण अबाधा बरणब सोइ बर वारि अगाधा
राम सीय यश सलिल सुधा सम उपमा बीचि बिलास मनोरम ॥
पुरइनि सघन चारु चौपाई ॥। युक्ति मंजु मणि सीप सुहाई ॥
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा ॥ सोइ बहु रंग कमल कुल सोहा
अरथ अनूप सुभाव सुभासा ॥ सोइ मकरन्द पराग सुवासा ॥
सुकृत पुंज मंजुल अलि माला ज्ञान बिराग बिचार मराला ॥
धुनि अवरेब कवित गुण जाती मीन मनोहर ते बहु भांती ॥
अर्थ धर्म कामादिक चारी ॥। कहब ज्ञान विज्ञान बिचारी
नव रस जप तप योग परागा। ते सब जलचर चारु तड़ागा ।
सुकृती साधु नाम गुण गाना। ते बिचित्र जल बिहंग समाना
संत सभा चहुं दिशि अँवराई । श्रद्धा ऋतु वसंत सम गाई ।
भक्ति निरूपण विविधि बिधाना। क्षमा दया द्रुम लता बिताना
संयम नियम फूल फल ज्ञाना। हरि पद रति रस वेद बखाना
औरौ कथा अनेक प्रसंगा । तेइ सुक पिक बहु बरण बिहंगा

दो॰ पुलक बाटिका बाग बन सुख सु बिहंग बिहारु ॥
माली सुमन सनेह जल । सींचत लोचन चारु ॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे ॥। ते एहि ताल चतुर रखवारे ॥
सदा सुनहिं सादर नर नारी ॥ तेइ सुर बर मानस अधिकारी
अति खल जे बिषयी बक कागा इहि सर निकट न जाहिं अभागा
जंबुक भेक सिवार समाना ॥ इहां न विषय कथा रस नाना ॥
तेहि कारण आवत हिय हारे ॥ कामी काक बलाक बिचारे ।
आवत इहि सर अति कठिनाई राम कृपा बिनु आइ न जाई ।
कठिन कुसंग कुपंथ कराला । तिन्ह के बचन व्याघ्र हरि व्याला

गृह कारज नाना जंजाला ॥ ॥ तेइ अति दुर्गम शैल विशाला
वन बहु विषय मोह मद माना । नदी कुतर्क भयंकर नाना ॥
दो० जे श्रद्धा शंवल रहित ॥ नहिं संतन कर साथ ।
तिन कहँ मानस अगम अति जिनहिं न प्रिय रघुनाथ
जो करि कष्ट जाइ पुनि कोई ॥ जातहिं नींद जुड़ाई होई ॥
जड़ता जाड़ विषम उर लागा ॥ गयहु न मज्जन पाव अभागा
करि न जाय सर मज्जन पाना ॥ फिरि आवै समेत अभिमाना
जो बहोरि कोउ पूछन आवा । सर निन्दा करि ताहि सुनावा ।
सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही । राम कृपा करि चितवहिं जेही
ते नर यह सर तजहिं न काऊ ॥ जिन के राम चरित भल भाऊ
जो नहाइ चह इहिं सर भाई ॥ सो सत्त संत करै मन लाई ।
अस मानस मानस चख चाही । भै कवि बुद्धि बिमल अवगाही
बढ़्यो हृदय आनन्द उछाहू ॥ उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू ॥
चली सुभग कविता सरिता सो ॥ राम बिमल यश जल भरिता सो
सरयू नाम सु मंगल मूला ॥ ॥ लोक वेद मत मंजुल कूला ॥
नदी पुनीत सु मानस नन्दिनि ॥ कलि मल तृण तरु मूल निकंदिनि
दो० श्रोता त्रिविधि समाज पुर ग्राम नगर दुहुं कूल ॥
संत सभा अनुपम अवध । सकल सु मंगल मूल ।
रामभक्ति सुरसरितहि जाई ॥ मिली सु कीरति सरयु सुहाई
सानुज राम समर यश पावन ॥ मिलेउ महानद शोण सुहावन
युग बिच भक्ति देव धुनि धारा । सोहति सहित सुविरति विचारा
त्रिविध ताप त्रासक त्रिमुहानी । राम सरूप सिन्धु समुहानी ।
मानस मूल मिली सुरसरिहीं ॥ ॥ सुनत सुजन मन पावन करिहीं
बिच बिच कथा विचित्र विभागा जनु सर तीर तीर बन बागा
उमा महेश विवाह बराती ॥ ॥ जे जलचर अगणित बहु भांती

रघुवर जन्म अनन्द बधाई ।।। भँवर तरंग मनोहर ताई ।।
दो० बाल चरित चहुँ बन्धु के। बनज विपुल बहुरंग।
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर वारि विहंग॥
सीय स्वयंबर कथा सुहाई ।। सरित सुहावन सो छवि छाई
नदी नाव पटु प्रश्न अनेका ।। केवट कुशल उतर सविवेका
पुनि अनुकथन परस्पर होई । पथिक समाज सोह सरि सोई
घोर धार भृगु नाथ रिसानी ।। घाट सुबन्ध राम वर बानी ।।
सानुज राम बिबाह उछाहू ।। सो शुभ उमग सुखद सब काहू
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं ते सुकृती जन मुदित नहाहीं
राम तिलक हित मंगल साजा । पर्व योग जनु जुरे समाजा
काई कुमति केकयी केरी ।। परी जासु फल बिपति घनेरी
दो० शमन असित उतपात सब भरत चरित जपयाग
कलि अघ खल अवगुण कथन ते जलमल बक काग
कीरति सरित छहूं ऋतु रूरी ।। समय सुहावनि पावनि भूरी
हिम हिम शैल सुता शिव व्याहू। शिशिर सुखद प्रभु जन्म उछाहू
बरनब राम विवाह समाजू ।।। सो मुद मंगल मय ऋतु राजू
ग्रीषम दुसह राम वन गवनू ।। पंथ कथा खर आतप पवनू
बर्षा घोर निशाचर रारी ।।। सुर कुल शालि सुमंगलकारी
राम राज सुख विनय बड़ाई ।। विशद सुखद सोइ शरद सुहाई
सती शिरोमणि सिय गुण गाथा। सोइ गुण अमल अनूपम पाथा
भरत सुभाउ सुशीतलताई ।। सदा एक रस बरणि न जाई
दो० अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परस्पर हास।
भायप भलि चहुँ बन्धु की जल माधुरी सुबास ।।
आरति विनय दीनता मोरी ।। लघुता ललित सुबारि न थोरी
अद्भुत सलिल सुनत गुणकारी। आश पियास मनो मल हारी॥

राम सुप्रेम हिं शोषत पानी ॥ हरत सकल कलि कलुष गलानी
भव श्रम शोषक तोषक तोषा। शमन दुरित दुख दारिद दोषा
काम कोह मद मोह नशावन। विमल विवेक विराग बढ़ावन
सादर मज्जन पान किये तें। मिटहिं पाप परिताप हिये तें
जिन यह वारि न मानस धोये। तिन कायर कलि काल बिगोये
तृषित निरखि रवि कर भव वारी फिरहिं मृगा जिमि जीव दुखारी

दो॰ मति अनुहारि सुवारि बर गुण गण मन अन्हवाइ
सुमिरि भवानी शंकरहिं कह कवि कथा सुहाइ।
भरद्वाज जिमि प्रश्न किय यान्नवल्क्य मुनि पाय
प्रथम मुख्य संवाद सोइ। कहिहौं हेतु बुझाय।
अवरघुपति पद पंकरुह हिय धरि पाय प्रसाद
कहौं युगल मुनिवर्य कर मिलन सुभग संवाद।

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा। जिनहिं राम पद अति अनुरागा
तापस शम दम दया निधाना। परमारथ पथ परम सुजाना।
माघ मकरगत रवि जब होई। तीरथ पतिहिं आव सब कोई
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी ॥ सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी
पूजहिं माधव पद जल जाता। परसि अक्षय वट हर्षित गाता
भरद्वाज आश्रम अति पावन। परम रम्य मुनि बर मन भावन
तहां होइ मुनि ऋषय समाजा। जाहिं जे मज्जन तीरथ राजा
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा। कहहिं परस्पर हरि गुण गाहा

दो॰ ब्रह्म निरूपण धर्म विधि बरनत तत्त्व विभाग ॥
कहहिं भक्ति भगवंत की संयुत ज्ञान विराग ॥

इहि प्रकार भरि मकर नहाहीं। पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं
प्रति संवत अस होइ अनन्दा। मकर मज्जि गवनहिं मुनि छन्दा
एक बार भरि मकर नहाये ॥ सब मुनीश आश्रम निसिधाये

याज्ञवल्क्य मुनि परम बिबेकी। भरद्वाज राखेउ पद टेकी ॥
सादर चरण सरोज पखारे ॥ अति पुनीत आसन बैठारे
करि पूजा मुनि सुयश बखानी। बोले अति पुनीत मृदु बानी
नाथ एक संशय बड़ मोरे । ॥ करतल बेद तत्त्व सब तोरे
कहत मोहिं लागत भय लाजा जौं न कहौं बड़ होइ अकाजा
दो० संत कहहिं अस नीति प्रभु श्रुति पुराण जो गाव
होइ न बिमल बिवेक उर गुरु सन किये दुराव ॥
अस बिचारि प्रगटौं निज मोहू हरहु नाथ करि जन पर छोहू
राम नाम कर अमित प्रभावा । संत पुराण उपनिषद गावा
संतत जपत शंभु अबिनाशी । शिव भगवान ज्ञान गुण राशी
आकर चारि जीव जग अहहीं। काशी मरत परम पद लहहीं।
सो कि राम महिमा मुनि राया । शिव उपदेश करत करि दाया
राम कवन प्रभु पूछौं ताही । । कहहु बुझाय कृपानिधि मोहीं
एक राम अवधेश कुमारा । तिन कर चरित बिदित संसारा
नारि बिरह दुख लहेउ अपारा। भए रोष रण रावण मारा।
दो० प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि
सत्यधाम सर्बज्ञ तुम । कहहु बिवेक बिचारि
जैसे मिटै मोर भ्रम भारी ॥। कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी
याज्ञवल्क्य बोले मुसुकाई ॥। तुमहिं बिदित रघुपति प्रभुताई
राम भक्त तुम मन क्रम बानी । चतुराई तुम्हारि मैं जानी
चाहहु सुनै राम गुण गूढ़ा ॥ कीन्हेउ प्रश्न मनहुं अति मूढ़ा
तात सुनहु सादर मन लाई ॥ कहउं राम की कथा सुहाई
महा मोह महिषेश बिशाला ॥ राम कथा कालिका कराला
राम कथा शशि किरण समाना। संत चकोर करहिं ते पाना
ऐसे संशय कीन्ह भवानी ॥ महा देव तब कहा बखानी।

दो० कहौं सो मति अनुहारि अब उमा शंभु संवाद ॥
भयउ समय जेहि हेतु जेहि सुनि मुनि मिटहिं विषाद

एक बार त्रेता युग माहीं ॥ शंभु गये कुंभज ऋषि पाहीं
संग सती जग जननि भवानी । पूजे ऋषि अखिलेश्वर जानी
राम कथा मुनि वर्य बखानी ॥ सुनी महेश परम सुख मानी ।
ऋषि पूछा हरि भक्ति सुहाई । कही शंभु अधिकारी पाई ।
कहत सुनत रघुपति गुण गाथा कछु दिन तहाँ रहे गिरि नाथा ।
मुनि सन बिदा माँगि त्रिपुरारी । चले भवन संग दक्ष कुमारी ।
तेहि अवसर भंजन महि भारा हरि रघुवंश लीन्ह अवतारा
पिता वचन तजि राज उदासी । दंडक बन विचरत अविनासी

दो० हृदय बिचारत जात हर केहि बिधि दरशन होइ
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु । गये जान सब कोइ ॥

सो० शंकर उर अति छोभ सती न जानहिं मर्म सोइ
तुलसी दरशन लोभ मन डर लोचन लालची

रावण मरण मनुज कर राँचा । प्रभु विधि वचन कीन्ह चह साँचा
जो नहिं जाउं रहै पछतावा । करत विचार न बनत बनावा
इहि विधि भये शोच वस ईशा ताही समय जाय दशशीशा
लीन्ह नीच मारीचहि संगा ॥ भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा
करि छल मूढ़ हरी वैदेही ॥ प्रभु प्रताप उर विदित न तेही
मृग बधि बंधु सहित हरि आये आश्रम देखि नयन जल छाये
बिरह विकल नर इव रघुराई । खोजत विपिनि फिरत दोउ भाई
कबहूं योग वियोग न जाके । देखा प्रगट बिरह दुख ताके

दो० अति विचित्र रघुपति चरित जानहिं परम सुजान
जे मतिमंद बिमोह बस हृदय धरहिं कछु आन ॥

शंभु समय तेहि रामहिं देखा ॥ उपजा हिय अति हर्ष विशेषा

भरि लोचन छबि सिंधु निहारी ॥ कुसमय जान न कीन्हि चिन्हारी
जय सच्चिदानन्द जग पावन ॥ अस कहि चले मनोज नशावन
चले जात शिव सती समेता ॥ पुनि पुनि पुलकित कृपानिकेता
सती सो दशा शंभु की देखी ॥ उर उपजा सन्देह बिशेखी
शंकर जगत वंद्य जगदीशा । सुर नर मुनि सब नावत शीशा
तिन नृपसुतहिं कीन्ह परनामा । कहि सच्चिदानन्द पर धामा
भये मगन छबि तासु बिलोकी । अजहुं प्रीति उर रहत न रोकी

सो० ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद
सो कि देह धरि होइ नर । जाहि न जानत वेद ॥

बिष्णु जो सुर हित नर तनु धारी । सोउ सर्वज्ञ यथा त्रिपुरारी ॥
खोजत सो कि अज्ञ इव नारी । ज्ञान धाम श्रीपति असुरारी ।
शंभु गिरा पुनि मृषा न होई । शिव सर्वज्ञ जान सब कोई
अस संशय मन भयउ अपारा । होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा
यद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी । हर अन्तरयामी सब जानी ।
सुनहु सती तव नारि सुभाऊ । संशय अस न धरिय उर काऊ
जासु कथा कुम्भज ऋषि गाई । भक्ति जासु मैं मुनिहिं सुनाई
सोइ मम इष्ट देव रघुबीरा । सेवत जाहि सदा मुनि धीरा

छं० मुनि धीर योगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं
कहि नेति निगम पुराण आगम जासु कीरति गावहीं
सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय मायापति धनी
अवतरेउ अपने भक्त हित निज तंत्र नित रघुकुल मनी

सो० लाग न उर उपदेश यदपि कहेउ शिव बार बहु ।
बोले बिहँसि महेश हरि माया बल जानि जिय ।

जो तुम्हरे मन अति सन्देहू । तो किन जाइ परीक्षा लेहू ।
तब लगि बैठि रहौं बट छाहीं जब लगि तुम ऐहहु मोहिं पाहीं

जैसे जाइ मोह भ्रम भारी । करहु सो यतन विवेक विचारी
चली सती शिव आयसु पाई । करहि विचार करौं का भाई
उहाँ शंभु अस मन अनुमाना । दक्ष सुता कहं नहिं कल्याना
मोरेहु कहे न संशय जाही । विधि विपरीत भलाई नाही
होइहै सोइ जो राम रचि राखा को करि तर्क बढ़ावहि शाखा
अस कहि लगे जपन हरिनामा गई सती जहं प्रभु सुखधामा
दो॰ पुनि पुनि हृदय विचार करि धरसीता कर रूप ।
आगे होइ चलि पंथ तेहि जेहि आवत सुरभूप
लक्ष्मण दीख उमा कृत वेषा । चकित हृदय भ्रम भयउ विशेषा
कहि न सकत कछु अति गंभीरा प्रभु प्रभाव जानत मति धीरा
सती कपट जानेउ सुर स्वामी । सम दरशी सब अन्तरयामी ।
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना । सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना
सती कीन्ह चह तहां दुराऊ । देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ
निज माया बल हृदय बखानी । बोले बिहंसि राम मृदु बानी ।
जोरि पाणि प्रभु कीन्ह प्रणामू पिता समेत लीन्ह निज नामू
कहेउ बहोरि कहाँ वृषकेतू । बिपिनि अकेलि फिरहु केहि हेतू
दो॰ राम वचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोच
सती सभीत महेश पहं । चली हृदय बड़ शोच
मैं शंकर कर कहा न माना ॥ निज अज्ञान राम पहं आना
जाइ उतर अब देहौं काहा । उर उपजा अति दारुण दाहा
जाना राम सती दुख पावा । निज प्रभाव कछु प्रगटि जनावा
सती दीख कौतुक मग जाता । आगे राम सहित सिय भ्राता
फिरि चितवा पाछे प्रभु देखा । सहित बंधु सिय सुन्दर वेषा
जहिं चितवति तहं प्रभु आसीना सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रवीना
देखे शिव विधि विष्णु अनेका । अमित प्रभाव एक तें एका ।

बन्दत चरण करत प्रभु सेवा ॥ । विविधि वेष देखे सब देवा ॥
दो० सती विधात्री इन्दिरा ॥ देखी अमित अनूप ॥
जेहि जेहि वेष अजादि सुर तेहि तेहि तनु अनुरूप।
देखे जहँ तहँ रघुपति जेते ॥ । शक्ति न सहित सकल सुर तेते
जीव चराचर जे संसारा ॥ ॥ देखे सकल अनेक प्रकारा ॥
पूजहिं प्रभुहिं देव बहु वेषा । राम रूप दूसर नहिं देखा ॥
अव लोके रघुपति बहु तेरे ॥ । सीता सहित न वेष घनेरे ।
सोइ रघुपति सोइ लक्ष्मण सीता देखि सती अति भई सभीता
हृदय कंप तनु सुधि कछु नाहीं । नयन मूंदि बैठीं मग माहीं
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी । कछु न दीख तहँ दक्षकुमारी
पुनि पुनि नाइ राम पद शीशा । चलीं तहाँ जहँ रहे गिरीशा
दो० गई समीप महेश तब ॥ हँसि पूछी कुशलात ।
लीन्ह परीक्षा कवन विधि कहहु सत्य सब बात
सती समुझि रघुबीर प्रभाऊ । भय बस शिव सन कीन्ह दुराऊ
कछुन परीक्षा लीन्ह गोसाईं कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहि नाईं
जो तुम कहा सो मृषा न होई । मोरे मन प्रतीति अस होई
तव शंकर देखेउ धरि ध्याना ॥ सती जो कीन्ह चरित सब जाना
बहुरि राम मायहिं सिर नावा । प्रेरि सतिहि जेहि झूठ कहावा
हरि इच्छा भावी बलवाना । हृदय विचारत शंभु सुजाना
सती कीन्ह सीता कर वेषा । । शिव उर भयउ विषाद विशेषा
जो अब करौं सती सन प्रीती । मिटै भक्ति पथ होइ अनीती ।
दो० परम प्रेम नहिं जाइ तजि किये प्रेम बड़ पाप ।
प्रगट न कहत महेश कछु हृदय अधिक संताप
तबहिं शंभु प्रभु पद शिर नावा सुमिरत राम हृदय अस आवा
इहि तनु सतिहि भेट अब नाहीं । शिव संकल्प कीन्ह मन माहीं

अस बिचारि शंकर मति धीरा । चले भवन सुमिरत रघुबीरा ॥
चलत गगन भै गिरा सुहाई । जय महेश भलि भक्ति दृढ़ाई ॥
अस प्रण तुम बिनु करै को आना । रामभक्त समरथ भगवाना ।
सुनि नभ गिरा सती उर शोचू । पूछा शिवहिं समेत सकोचू ॥
कीन्ह कवन प्रण कहहु कृपाला । सत्यधाम प्रभु दीन दयाला ।
यद्यपि सती पूछा बहु भांती ॥ तदपि न कहेउ त्रिपुरआराती

दो० सती हृदय अनुमान किय सब जाना सर्वज्ञ ॥
कीन्ह कपट मैं शंभु सन । नारि सहज जड़ अज्ञ

सो० जलपय सरिस बिकाइ । देखहु प्रीति की रीति भल
बिलग होइ रस जाइ ॥ कपट खटाई परत ही ॥

हृदय शोच समुझत निज करणी चिंता अमित जाइ नहिं बरणी
कृपा सिंधु शिव परम अगाधा। प्रगट न कहेउ मोर अपराधा
शंकर रुख अवलोकि भवानी। प्रभु मोहिं तजेउ हृदय अकुलानी
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई तपै अवां इव उर अधिकाई
सतिहिं सशोच जानि वृषकेतू। कहेउ कथा सुन्दर सुख हेतू ।
बरणत पंथ विविधि इतिहासा विश्वनाथ पहुंचे कैलासा
तहँ पुनि शंभु समुझि प्रण आपन बैठे बट तर करि कमलासन
शंकर सहज सरूप संभारा ॥ लागि समाधि अखंड अपारा

दो० सती बसहिं कैलाश तब । अधिक शोच मन माहिं
मर्म न कोऊ जान कछु । युग सम दिवस सिराहिं

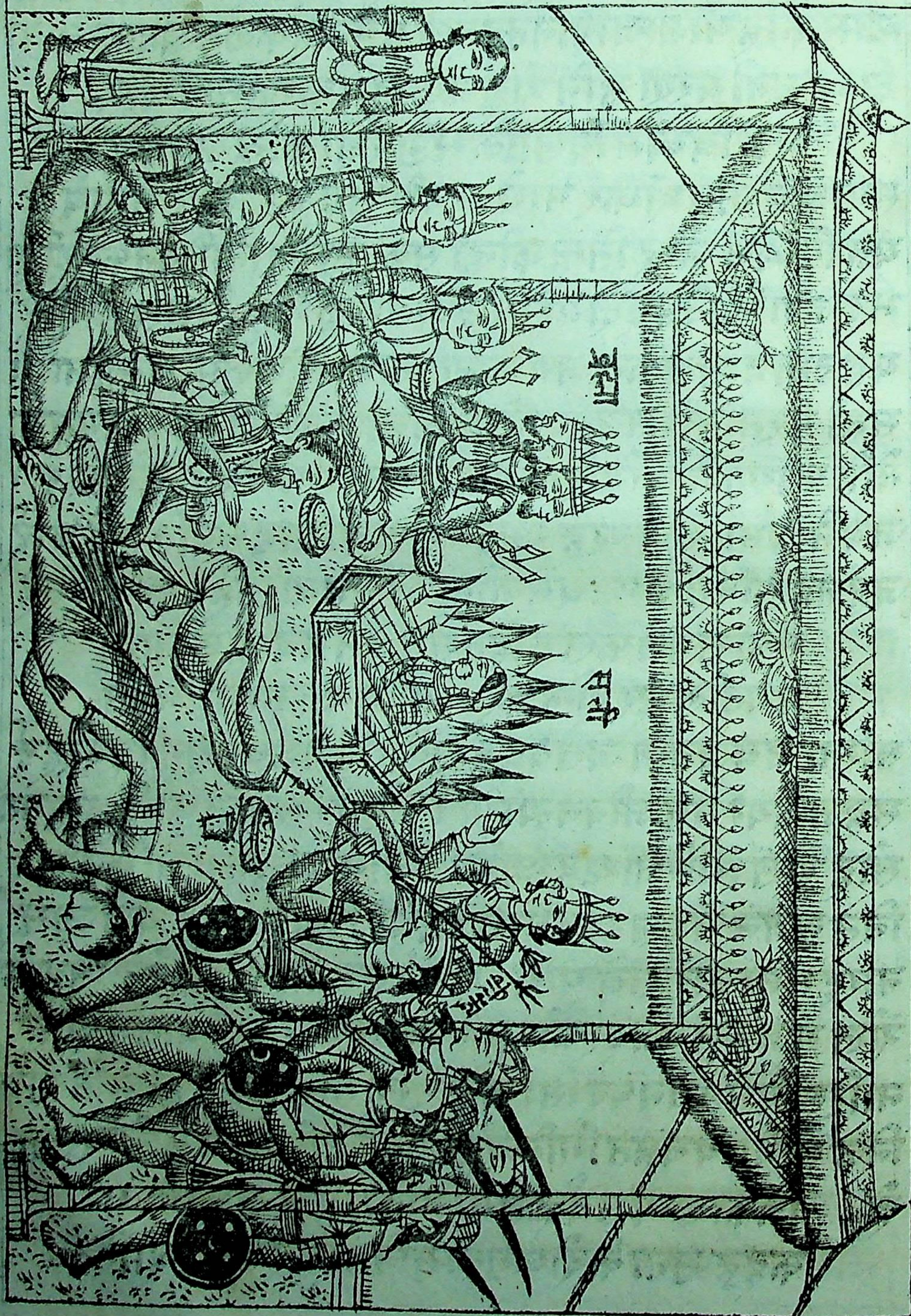
नित नव शोच सती उर भारा । कब जैहौं दुख सागर पारा
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना पुनि पति बचन मृषा करि जाना
सो फल मोहिं बिधाता दीन्हा । जो कछु उचित रहा सो कीन्हा
अब बिधि अस बूझिय नहिं तोही शंकर बिमुख जिआवहु मोही
कहि न जाय कछु हृदय गलानी । मन महँ रामहिं सुमिरि सयानी

जो प्रभु दीन दयालु कहावा ॥ आरति हरण वेद यश गावा ।
तौ मैं विनय करौं कर जोरी ॥ छूटै वेगि देह अब मोरी ॥
जो मोरे शिव चरण सनेहू ॥ मन क्रम वचन सत्य व्रत येहू ॥
दो॰ तो समदर्शी सुनिय प्रभु । करो सो वेगि उपाय ॥
होइ मरण जेहि बिनहिं श्रम दुसह बिपति बिहाय
यहि बिधि दुखित प्रजेश कुमारी अकथनीय दारुण दुख भारी ॥
बीते संवत सहस सतासी ॥ तजी समाधि शंभु अविनाशी
राम नाम शिव सुमिरण लागे। जानेउ सती जगत पति जागे
जाय शंभु पद वन्दन कीन्हा । सन मुख शंकर आसन दीन्हा
लगे कहन हरि कथा रसाला । दक्ष प्रजेश भये तेहि काला ।
देखा विधि विचारि सब लायक दक्षहिं कीन्ह प्रजापति नायक
बड़ अधिकार दक्ष जब पावा । अति अभिमान हृदय तब आवा
नहिं कोउ अस जनमेउ जग माहीं प्रभुता पाय जाहि मद नाहीं
दो॰ दक्ष लिये मुनि बोलि सब करण लगे बड़ याग ।
नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग ॥
किन्नर नाग सिद्ध गन्धर्वा ॥ बधुन समेत चले सुर सर्वा ।
विष्णु बिरंचि महेश बिहाई । चले सकल सुर यान बनाई ।
सती बिलोके गगन विमाना । जात चले सुन्दर विधि नाना
सुर सुन्दरी करहिं कल गाना । सुनत श्रवण छूटहिं मुनि ध्याना
पूछेव तब शिव कहेउ बखानी पिता यज्ञ सुनि कै हरषानी
जो महेश मोहिं आयसु देहीं । कछु दिन जाय रहौं मिस एहीं
पति परित्याग हृदय दुख भारी कहै न निज अपराध विचारी
बोली सती मनोहर बानी ॥ भय संकोच प्रेम रस सानी
दो॰ पिता भवन उत्सव परम जो प्रभु आयसु होइ ॥
तो मैं जाउं कृपायतन । सादर देखन सोइ ॥

कहेउ नीक मोरे मन भावा। यह अनुचित नहिं नेवत पठावा
दक्ष सकल निज सुता बुलाईं। हमरे बयर तुम्हैं बिसराईं ॥
ब्रह्म सभा हम सन दुख माना। तेहि तें अजहुं करहिं अपमाना
जो बिनु बोले जाहु भवानी ॥ रहै न सील सनेह न कानी
यदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा। जाइय बिनु बोले न संदेहा।
तदपि बिरोध मान जहं कोई। तहां गये कल्याण न होई ॥
भांति अनेक शंभु समुझावा। भावी बस न ज्ञान उर आवा
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बुलाये नहिं भलि बात हमारे भाये
दो॰ कहि देखा हर यतन बहु रहै न दक्ष कुमारि ॥
दिये मुख्य गण संग तब बिदा किये त्रिपुरारि।
पिता भवन जब गई भवानी। दक्ष त्रास काहु न सन मानी
सादर भले हि मिली इक माता भगिनी मिलीं बहुत मुसुकाता
दक्ष न कछु पूछी कुशलाता। सतिहिं बिलोकि जरे सब गाता
सती जाइ देखेउ तब यागा। कतहुं न दीख शंभु कर भागा
तब चित चढ़ेउ जो शंकर कहेऊ प्रभु अपमान समझि उर दहेउ
पाछिल दुखन हृदय अस व्यापा जस यह भयउ महा परितापा
यद्यपि जग दारुण दुख नाना सब ते कठिन जाति अपमाना
समुझि सोच तिहिं भो अति क्रोधा बहु बिधि जननी कीन्ह प्रबोधा
दो॰ शिव अपमान न जाइ सहि हृदय न होत प्रबोध
सकल सभहि हठि हटकि तब बोली बचन सक्रोध
सुनहु सभासद सकल मुनिन्दा। कही सुनी जिन्ह शंकर निन्दा
सो फल तुरत लहब सब काहू। भली भांति पछिताव पिता हू
संत शंभु श्री पति अपवादा सुनिय जहां तहं असि मर्य्यादा
काटिय तासु जीभ जो बसाई। श्रवण मूंदि नहिं चलिय पराई
जगदातमा महेश पुरारी ॥। जगत जनक सब के हित कारी

पिता मन्द मति निंदत तेही ॥ दक्ष शुक्र संभव यह देही ॥
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू ॥ उर धरि चन्द्र मौलि वृषकेतू
अस कहि योग अगिनि तनु जारा भयउ सकल मख हाहाकारा
दो॰ सती मरण सुनि शंभु गण लगे करण मख खीश
यज्ञ विध्वंस विलोकि भृगु रक्षा कीन्ह मुनीश।
समाचार जब शंकर पाये ॥ वीरभद्र करि कोप पठाये ॥
यज्ञ विध्वंस जाइ तिन्ह कीन्हा सकल सुरन्ह विधिवत फल दीन्हा
भइ जग विदित दक्ष गति सोई जस कछु शंभु विमुख की होई
यह इतिहास सकल जग जाना तातें मैं संक्षेप बखाना ॥
सती मरत हरि सन वर मांगा जन्म जन्म शिव पद अनुरागा
तेहि कारण हिमगिरि गृह जाई जनमी पारवती तनु पाई।
जब ते उमा शैल गृह आई। सकल सिद्धि संपति तहं छाई
जहं तहं मुनिनउ आश्रम कीन्हे उचित वास हिम भूधर दीन्हे
सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति
प्रगटी सुन्दर शैल पर। मणि आकर बहु भांति
सरिता सब पुनीत जल बहहीं। खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं
सहज बयर सब जीवन त्यागा गिरि पर सकल करहिं अनुरागा
सोह शैल गिरिजा गृह आये। जिमि अनुराग भक्ति के पाये
नित नूतन मंगल गृह तासू। ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू
नारद समाचार सब पाये ॥ कौतुक हिम गिरि गेह सिधाये
शैल राज बड़ आदर कीन्हा। पद पखारि वर आसन दीन्हा
नारि सहित मुनि पद सिर नावा चरण सलिल सब भवन सिंचावा
निज सौभाग्य बहुत गिरि बरणा सुता बोलि मेली मुनि चरणा
दो॰ त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम। गति सर्वत्र तुम्हारि ॥
कहहु सुता के दोष गुण मुनिवर हृदय विचारि

दक्षप्रजा पति की यज्ञमें पार्व्वती जी का सती होना और श्री महादेवजीके कोपसे वीरभद्र प्रगट होकर दक्षप्रजापति का शिर काट कर यज्ञ का विध्वंस करना॥



कह मुनि विहंसि गूढ़ मृदुबानी सुता तुम्हारि सकल गुणखानी
सुन्दरि सहज सुशील सयानी । नाम उमा अंबिका भवानी
सब लक्षण संपन्न कुमारी ॥ होइहि संतत पियहिं पियारी
सदा अचल एहि कर अहिवाता इहितें यश पैहहिं पितु माता
होय है पूज्य सकल जग माहीं इहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं
इहि कर नाम सुमिरि संसारा ॥ त्रिय चढ़िहहिं पतिव्रत असिधारा
शैल सुलक्षणि सुता तुम्हारी । सुनहु जे अब अवगुण दुइ चारी
अगुण अमान मातु पितु हीना उदासीन सब संशय छीना
दो॰ योगी जटिल अकाम तन नगन अमंगल भेष
असस्वामी इहि कहँ मिलिहि परी हस्त असरेख
सुनि मुनि गिरा सत्य जिय जानी दुख दंपतिहि उमा हरषानी
नारद हूं यह भेद न जाना ॥ दशा एक समुझत बिलगाना
सकल सखी गिरिजा गिरि मयना पुलक शरीर भरे जल नयना
होइ न मृषा देव ऋषि भाषा । उमा सो वचन हृदय धरि राखा
उपजेउ शिव पद कमल सनेहू । मिलन कठिन मन यह संदेहू
जानि कुअवसर प्रीति दुराई । सखी उछंग बैठी पुनि जाई
झूठि न होइ देव ऋषि बानी । सोचहिं दंपति सखी सयानी
उर धरि धीर कहैं गिरि राऊ । कहहु नाथ का करिय उपाऊ
दो॰ कह मुनीश हिमवन्त सुनु जो विधि लिखा लिलार
देव दनुज नर नाग मुनि । कोउ न मेटन हार ॥
तदपि एक मैं कहौं उपाई ॥ होइ करै जो दैव सहाई ।
जस वर मैं वरणेउँ तुम पाहीं मिलिहि उमहिं कछु संशय नाहीं
जे जे वर के दोष बखाने ॥ ते सब शिव पहं मैं अनुमाने
जो विवाह शंकर सन होई । दोषो गुण सम कह सब कोई
जो अहि सेज शयन हरि करहीं । बुध कछु तिन कहं दोष न धरहीं

भानु कृशानु सर्व रस खाहीं। तिन कहँ मन्द कहत कोउ नाहीं
शुभ अरु अशुभ सलिल सब बहहीं सुरसरि कोउ न अपावन कहहीं
समरथ कहँ नहिं दोष गुसाईं। रवि सुरसरि पावक की नाईं
दो० जो ऐसहि ईर्षा करहिं। जड़ विवेक अभिमान।
परहिं कल्प भर नर्क महँ जीव कि ईश समान।
सुरसरि कृत यश बारुणि जाना कबहुँ न संत करहिं तिहि पाना
सुरसरि मिले सु पावन जैसे। ईश अनीशहिं अन्तर तैसे।
शंभु सहज समरथ भगवाना इहि विवाह सब विधि कल्याना
दुराराध्य पै अहहिं महेशू ॥ आशु तोष पुनि किये कलेशू
जो तप करै कुमारि तुम्हारी। भाविउ मेटि सकै त्रिपुरारी
यद्यपि वर अनेक जग माहीं इहि कहँ शिव तजि दूसर नाहीं
वरदायक प्रणता रति भंजन। कृपा सिन्धु सेवक मन रंजन
इच्छित फल विनु शिव आराधे लहइ न कोटि योग जप साधे
दो० अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहिं दीन्ह असीश
होइहि यहि कल्याण अब संशय तजहु गिरीश
कहि अस ब्रह्म भवन मुनि गयउ आगिल चरित सुनहु जस भयउ
पतिहिं इकान्त पाय कह मयना नाथ न मैं समुझेउँ मुनि बयना
जो घर वर कुल होइ अनूपा। करिय विवाह सुता अनुरूपा
न तु कन्या वरु रहौ कुमारी ॥ कन्त उमा मम प्राण पियारी
जो न मिलिहि वर गिरिजहि योगू गिरि जड़ सहज कहहिं सब लोगू
सो विचारि पति करहु विवाहू। जेहि न बहोरि होइ उर दाहू।
अस कहि परी चरण धरि शीशा बोले सहित सनेह गिरीशा।
वरु पावक प्रगटै शशि माहीं नारद बचन अन्यथा नाहीं
दो० प्रिया शोच परिहरहु सब सुमिरहु श्री भगवान।
पारवती जिन निर्मयउ सोइ करिहहिं कल्यान

अब जो तुमहिं सुता पर नेहू ॥ तो अस जाइ सिखावन देहू ॥
करै सो तप जेहि मिलहिं महेसू। आन उपाय न मिटहिं कलेसू ॥
नारद वचन सगर्भ सहेतू ॥ सुन्दर सब गुण निधि वृषकेतू ॥
अस विचारि तुम तजि सब शंका सबहि भांति शंकर अकलंका ॥
सुनि पति वचन हर्ष मन माहीं। गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं ॥
उमहिं विलोकि नयन भरि वारी सहित सनेह गोद बैठारी।
वारहि वार लेति उर लाई । गद गद कंठ न कछु कहि जाई ॥
जगत मातु सर्वज्ञ भवानी । मातु सुखद बोलीं मृदु बानी ॥
दो० सुनहु मातु मैं दीख अस सपन सुनावहुं तोहिं
सुन्दर गौर सु विप्रवर ॥ अस उपदेशेउ मोहिं ॥
करहु जाइ तप शैलकुमारी । नारद कहा सो सत्य विचारी ॥
मातु पितहि पुनि यह मत भावा तप सुख प्रद दुख दोष नशावा ॥
तप बल रचैं प्रपंच विधाता ॥ तप बल विष्णु सकल जगत्राता ॥
तप बल शंभु करहिं संहारा ॥ तप बल शेष धरहिं महि भारा ॥
तप अधार सब सृष्टि भवानी। करहु जाइ तप अस जिय जानी ॥
सुनत वचन विस्मित महतारी। सपन सुनायेउ गिरिहि हंकारी ॥
मातु पितहिं बहु विधि समुझाई चली उमा तप हित हरषाई ॥
प्रिय परिवार पिता अरु माता। भये विकल मुख आवन बाता ॥
दो० वेद शिरा मुनि आइ तब सबहिं कहा समुझाइ
पारवती महिमा सुनत रहे प्रबोध हि पाइ ॥
उर धरि उमा प्राण पति चरणा। जाइ विपिन लागी तप करणा ॥
अति सुकुमारि न तन तप योगू। पति पद सुमिरि तजेउ सब भोगू ॥
निति नव चरण उपज अनुरागा। विसरी देह तपहि मन लागा ॥
संवत सहस मूल फल खाये । शाक खाइ शत वर्ष गंवाये ॥
कछु दिन भोजन बारि बतासा । किये कठिन कछु दिन उपवासा ॥

बेल पात महि परे सुखाई ॥ तीनि सहस संवत सो खाई
पुनि परि हरेउ सुखानेउ पर्णा। उमा नाम तव भयउ अपर्णा।
देखि उमहिं तप क्षीन शरीरा ब्रह्म गिरा भइ गगन गंभीरा।
दो॰ भयउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरि राज कुमारि
परिहरु दुसह कलेश सव अब मिलिहहिं त्रिपुरारि
अस तप काहु न कीन्ह भवानी भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी
अब उर धरहु ब्रह्म बर वानी। सत्य सदा संतत शुचि जानी
आवै पिता बुलावन जबहीं। हठ परिहरि घर जायहु तबहीं
मिलहिं तुमहिं जब सप्त ऋषीशा जानेहु तव प्रमाण वागीशा
सुनत गिरा विधि गगन बखानी पुलक गात गिरिजा हरषानी
उमा चरित मैं सुन्दर गावा। सुनहु शंभु कर चरित सुहावा
जब तें सती जाइ तनु त्यागा। तब तें शिव मन भयउ विरागा
जपहिं सदा रघुनायक नामा। जहँ तहँ सुनहिं राम गुणग्रामा
दो॰ चिदानन्द सुख धाम शिव विगत मोह मद काम
विचरहिं महि धरि हृदय हरि सकल लोक अभिराम
कतहुं मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना कतहुं राम गुण करहिं बखाना
यदपि अकाम तदपि भगवाना भक्त विरह दुख दुखित सुजाना
इहिं विधि गयउ काल बहु बीती नित नव होइ राम पद प्रीती।
नेम प्रेम शंकर कर देखा ॥ अविचल हृदय भक्ति की रेखा
प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला ॥ रूप शील निधि तेज विशाला
बहु प्रकार शंकरहि सराहा। तुम बिनु अस ब्रत को निरबाहा
बहु विधि राम शिवहिं समुझावा पारबती कर जन्म सुनावा
अति पुनीत गिरिजा की करणी विस्तर सहित कृपानिधि वरणी
दो॰ अब विनती मम सुनहुं शिव जो मोपर निज नेहु।
जाइ विवाहहु शैल जहि यह मोहिं मांगे देहु।

कह शिव यदपि उचित अस नाहीं नाथ वचन पुनि मेटन जाहीं
सिर धरि आयसु करिय तुम्हारा परम धरम यह नाथ हमारा
मातु पिता गुरु प्रभु की बानी ॥ बिनहिं बिचार करिय शुभ जानी
तुम सब भाँति परम हित कारी । आज्ञा सिर पर नाथ तुम्हारी
प्रभु तोषेउ सुनि शंकर वचना । भक्ति विवेक धर्म युत रचना
कह प्रभु हर तुम्हार प्रण रहेऊ । अब उर राखेउ जो हम कहेऊ
अन्तर्ध्यान भये अस भाषी । शंकर सोइ मूरति उर राखी
तबहिं सप्त ऋषि शिव पहँ आये बोले प्रभु अस वचन सुहाये
दो० पारवती पहँ जाइ तुम । प्रेम परीक्षा लेहु ॥ ॥
गिरिहि प्रेरि पठयेहु भवन दूर करेहु सन्देहु ॥ ॥
ऋषिन गौरि देखी तहँ कैसी । मूरति वन्त तपस्या जैसी ॥
बोले मुनि सुनु शैल कुमारी । करहु कवन कारण तप भारी
केहि आराधहु का तुम चहहू । हम सन सत्य मर्म सब कहहू
सुनत ऋषिन के वचन भवानी । बोली गूढ़ मनोहर बानी ॥
कहत मर्म मन अति सकुचाई । हंसिहहु सुनि हमार जड़ताई
मन हठ परा न सुनै सिखावा ॥ चहत वारि पर भीति उठावा
नारद कहा सत्य सोइ जाना ॥ बिनु पंखन हम चहहिं उड़ाना
देखिय मुनि अविवेक हमारा । चाहत पति शंकर अविकारा
दो० सुनत वचन बिहंसे ऋषय गिरिसंभव तव देह ।
नारद कर उपदेश सुनि । कहहु बसे केहि गेह
दक्ष सुतन्ह उपदेशेन जाई । तिन फिरि भवन न देखा आई
चित्रकेतु कर घर उन घाला । कनककशिपु कर पुनि अस हाला
नारद सिख जु सुनहिं नर नारी । अवशि भवन तजि होहिं भिखारी
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा । आप सरिस सबही चह कीन्हा
तेहि के वचन मानि विश्वासा । तुम चाहहु पति सहज उदासा

निर्गुण निलज कुवेष कपाली। अकुल अगेह दिगंबर ब्याली।
कहहु कवन सुख अस वर पाये भल भूलिहु ठग के बौराये।।
पंच कहैं शिव सती विवाही। पुनि अवडेरि मराइन ताही।
सो॰ अब सुख सोवत सोच नहिं भीख मांगि भव खाहि
सहज एकाकिन के भवन कबहुं कि नारि खटाहि
अजहूं मानहु कहा हमारा। हम तुम कहँ वर नीक विचारा
अति सुन्दर शुचि सुखद सुशीला गावहिं वेद जासु यश लीला
दूषण रहित सकल गुण रासी। श्री पति पुर वैकुंठ निवासी।
अस वर तुमहिं मिलाउब आनी सुनत वचन कह वचन भवानी
सत्य कहहु गिरि भव तन एहा हठ न छूट छूटै वरु देहा।।
कनकौ पुनि पषान ते होई। जारेहु सहज न परिहर सोई
नारद वचन न मैं परिहरऊं। बसौ भवन उजरौ नहिं डरऊं
गुरु के वचन प्रतीति न जेही। सपनेहु सुगम न सुख सिधि तेही
सो॰ महादेव अवगुण भवन विष्णु सकल गुण धाम
जेहि कर मन रम जाहि सन ताहि ताहि सन काम
जो तुम मिलतेउ प्रथम मुनीशा सुनतेउं सिख तुम्हार धरि शीशा
अब मैं जन्म शंभु हित हारा। को गुण दोषहिं करै विचारा
जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी। रहि न जाइ विनु किये बरेषी
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं वरकन्या अनेक जग माहीं।
जन्म कोटि लगि रगरि हमारी। बरौं शंभु नतु रहौं कुमारी।
तजौं न नारद कर उपदेशू। आप कहहिं सत वार महेशू
मैं पा परौं कहै जग दम्बा। तुम गृह गवनहु भयउ विलम्बा।
देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी। जय जय जय जगदम्ब भवानी
दो॰ तुम माया भगवान शिव सकल जगत पितु मात
नाइ चरण सिर मुनि चले पुनि पुनि हर्षित गात।

जाइ मुनिन्ह हिमवन्त पठाये ॥ करि बिनती गिरिजहिं गृह ल्याये
बहुरि सप्त ऋषि शिव पहँ जाई । कथा उमा की सकल सुनाई
भये मगन शिव सुनत सनेहा ॥ हरषि सप्त ऋषि गवने गेहा
मन थिर करि तब शंभु सुजाना । लगे करण रघुनायक ध्याना
तारक असुर भयेउ तेहि काला । भुज प्रताप बल तेज बिशाला
ते सब लोक लोकपति जीते ॥ भये देव सुख सम्पति रीते ।
अजर अमर सो जीति न जाई ॥ हारे सुर करि बिबिध लराई
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे ॥ देखे बिधि सब देव दुखारे ॥

दो॰ सब सन कहा बुझाइ बिधि दनुज निधन तब होइ
शंभु शुक्र संभूत सुत ॥ इहि जीते रण सोइ

मोर कहा सुनि करहु उपाई । होइहि ईश्वर करिहि सहाई
सती जो तजी दक्ष मख देहा ॥ जनमी जाइ हिमाचल गेहा
तेइ तप कीन्ह शंभु पति लागी । शिव समाधि बैठे सब त्यागी
यदपि अहै असमंजस भारी ॥ तदपि बात एक सुनहु हमारी
पठवहु काम जाइ शिव पाहीं । करै छोभ शंकर मन माहीं
तब हम जाइ शिवहि सिरनाई । करवाउब बिबाह बरिआई
इहि बिधि भलेहि देव हित होई । मत अति नीक कहा सब कोई
अस्तुति सुरन कीन्ह अति हेतू । प्रगटेउ बिषम बाण झष केतू

दो॰ सुरन कही निज बिपति सब सुनि मन कीन्ह बिचार
शंभु बिरोधन कुशल मोहिं बिहँसि कहेउ अस मार

तदपि करब मैं काज तुम्हारा । श्रुति कह परम धर्म उपकारा
परहित लागि तजै जो देही ॥ सन्तत सन्त प्रशंसहिं तेही ।
अस कहि चलेउ सबहिं सिरनाई सुमन धनुष कर सहित सहाई
चलत मार अस हृदय बिचारा शिव बिरोध ध्रुव मरण हमारा
तब आपन प्रभाव बिस्तारा । निज बस कीन्ह सकल संसारा

कोपेउ जबहिं वारिचरकेतू। क्षण महं मिटे सकल श्रुति सेतू
ब्रह्म चर्य्य व्रत योगम नाना। धीरज धर्म ज्ञान विज्ञाना॥
सदाचार जप योग विरागा। सभय विवेक कटक सब भागा
छं॰ भागे विवेक सहाय सहित सो सुभट संयुग महिमुरे
सद्ग्रन्थ पर्वत कंदरन महं जाइ तेहि अवसर दुरे।
होनिहार करतार को रखवार जग खर भर परा
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहं कोपि धनु शरकर धरा
दो॰ जे सजीव जग अचरचर नारि पुरुष अस नाम
ते निज निज मर्य्याद तजि भये सकल वस काम
सबके हृदय मदन अभिलाखा लता निहारि नवहिं तरु शाखा
नदी उमगि अंबुधि कहं धाई। संगम करें तलाव तलाई।
जहं अस दशा जड़न की वरणी को कहि सके सचेतन करणी
पशु पक्षी नभ जल थल चारी। भये कामवस समय विसारी
मदन अंध व्याकुल सब लोका निशि दिन नहिं अवलोकहिं को
देव दनुज नर किन्नर व्याला। प्रेत पिशाच भूत बैताला।
इन की दशा न कहेउं बखानी। सदा काम के चेरे जानी॥
सिद्ध विरक्त महा मुनि योगी। तेपि कामवस भये वियोगी
छं॰ भये कामवस योगीश तापस पामरन की को कहै।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्म मय देखत रहै।
अबला विलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामयं
दुइ दण्ड भरि ब्रह्माण्ड भीतर काम कृत कौतुक अयं
सो॰ धरा न काहू धीर। सब के मन मनसिज हरे
जेहि राखे रघुवीर। ते उबरे तेहि काल महं॥
उभय घरी अस कौतुक भयऊ जबलगि काम शंभु पहं गयऊ
शिवहिं विलोकि ससंकेउ मारू भयउ यथाथिति सब संसारू॥

भये तुरत जग जीव सुखारे ॥ जिमि मद उतरि गये मतवारे
रुद्रहि देखि मदन भय माना ॥ दुराधर्ष दुर्गम भगवाना ॥
फिरत लाज कछु कहि नहिं जाई मरण ठानि मन रचेसि उपाई
प्रगटेसि तुरत रुचिर ऋतुराजा कुसुमित नव तरु राजि बिराजा
वन उपवन वापिका तड़ागा । परम सुभग सब दिशा विभागा
जहं तहं जनु उमगत अनुरागा देखि मुएहु मन मनसिज जागा

छं॰ जागेउ मनोभव मुए मन वन सुभगता न परै कही ।
शीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही ।
विकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा ॥
कलहंस पिक शुक सरस रव करि गान नाचहिं अप्सरा

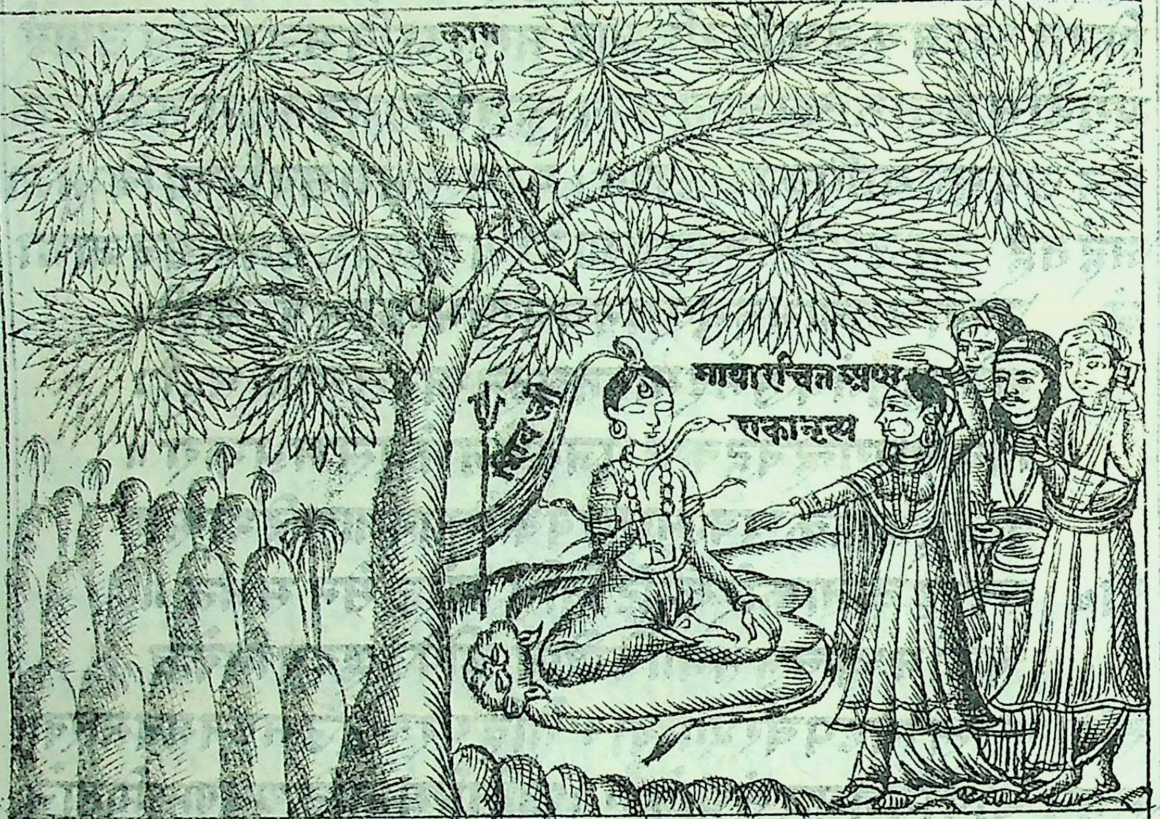
दो॰ सकल कला करि कोटि विधि हारेउ सेन समेत ॥
चली न अचल समाधि शिव कोपेउ हृदय निकेत

देखि रसाल विटप वर शाखा । तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माखा
सुमन चाप निज कर संधाने ॥ अति रिस ताकि श्रवण लगि ताने
छाड़े विषम विशिख उर लागे छूटि समाधि शंभु तब जागे ।
भयेउ ईश मन क्षोभ विशेषी । नयन उघारि सकल दिशि देखी
सौरभ पल्लव मदन विलोका । भयउ कोप कंपेउ त्रय लोका
तब शिव तीसर नयन उघारा । चितवत काम भयउ जरि छारा
हाहाकार भयउ जग भारी ॥ डरपे सुर भये असुर सुखारी ।
समुझि काम सुख सोचहिं भोगी भये अकंटक साधक योगी

छं॰ योगी अकंटक भये पति गति सुनति रति मूर्छित भई
रोदति वदति बहु भांति करुणा करति शंकर पहं गई
अति प्रेम करि विनती विविधि विधि जोरि कर सन्मुख रही
प्रभु आशु तोष कृपाल शिव अबला निरखि बोले सही

सो॰ अबतें रति तव नाथ कर । होइहि नाम अनंग ॥

देवता गणों की आज्ञा से काम करके कैलाश पर्वत पर श्री महादेव जी को समाधि से जगाना और श्री महादेव के क्रोध से काम का भस्म होना





बिनु बपु व्यापहि सबहिं पुनि सुनु निज मिलन प्रसंग
जब यदुबंश कृस्न अवतारा। होइहि हरन महा महि भारा॥
कृस्न तनय होइहि पति तोरा। बचन अन्यथा होइ न मोरा॥
रति गवनी सुनि शंकर बानी। कथा अपर अब कहौं बखानी॥
देवन समाचार सब पाये। ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाये॥
सब सुर बिस्नु बिरंचि समेता। गये जहां शिव कृपा निकेता॥
पृथक पृथक तिन कीन्ह प्रशंसा। भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा॥
बोले कृपासिन्धु वृष केतू। कहहु अमर आयहु केहि हेतू॥
कह बिधि तुम प्रभु अंतरयामी। तदपि भक्ति बस बिनऊं स्वामी॥
दो॰ सकल सुरन के हृदय अस। शंकर परम उछाह
निज नयननि देखा चहहिं। नाथ तुम्हार बिवाह॥
यह उत्सव देखिय भरि लोचन। सो कछु करिय मदन मद मोचन॥
काम जारि रति कहँ बर दीन्हा। कृपासिन्धु यह अति भल कीन्हा॥
सांसति करि पुनि करहिं पसाऊ। नाथ प्रभुन कर सहज सुभाऊ॥
पारबती तप कीन्ह अपारा। करहु तासु अब अंगीकारा॥
सुनि बिधि बचन समुझि प्रभु बानी। ऐसेइ होउ कहा सुख मानी॥
तब देवन दुंदुभी बजाई। बरषि सुमन जय जय सुर साई॥
अवसर जानि सप्त ऋषि आये। तुरतहिं बिधि गिरिभवन पठाये॥
प्रथम गये जहं रही भवानी। बोले बचन मधुर छल सानी॥
दो॰ कहा हमार न सुनेहु तब। नारद कर उपदेश
अब भा झूंठ तुम्हार प्रण। जारेउ काम महेश॥
सुनि बोली मुसुकाइ भवानी। उचित कहेहु मुनि बर बिज्ञानी॥
तुम्हरे जान काम हर जारा। अबलगि शंभु रहे सबिकारा॥
हमरे जान सदा शिव योगी। अज अनवद्य अकाम अभोगी॥
जो मैं शिव सेयेउं अस जानी। प्रीति समेत कर्म मन बानी॥

तौ हमार मत सुनहुं मुनीशा। करिहहिं सत्य कृपा निधि ईशा
तुम जो कहा हर जारेउ मारा। सो अति बड़ अविवेक तुम्हारा
तात अनल कर सहज सुभाऊ। हिम तेहि निकट जाइ नहिं कोऊ
गये समीप सो अवशि नशाई। जिमि संपाति निज पच्छ गंवाई
दो॰ हिय हरषे मुनि वचन सुनि देखि प्रीति विश्वास।।
चले भवानिहिं नाइ शिर गये हिमाचल पास।
सब प्रसंग गिरि पतिहिं सुनावा मदन दहन सुनि अति दुख पावा
बहुरि कहेउ रति कर वरदाना। सुनि हिमवंत बहुत सुख माना
हृदय विचारि शंभु प्रभुताई। सादर मुनि वर लिये बुलाई
सुदिन सु नखत सु घरी सुहाई। वेगि वेद विधि लगन धराई
पत्री सप्तऋषिन सोइ दीन्हा। गहि पद विनय हिमाचल कीन्हा
जाइ विधिहिं तिन दीन्ह सो पाती बांचत प्रीति न हृदय समाती
लगन बांचि अज सबहिं सुनाई हरषे मुनि सब सुर समुदाई
सुमन वृष्टि नभ बाजन बाजे। मंगल कलश दशहुं दिशि साजे
दो॰ लगे संवारन सकल सुर। वाहन विविधि विमान
होहिं सगुन मंगल शुभद करहिं अप्सरा गान।
शिवहिं शंभु गण करहिं सिंगारा जटा मुकुट अहि मौर संवारा
कुंडल कंकण पहिरे व्याला।। तन विभूति पट केहरि छाला
शशि ललाट सुन्दर सिर गंगा। नयन तीनि उपवीत भुजंगा
गरल कंठ उर नर सिर माला। अशिव भेष शिव धाम कृपाला
कर त्रिशूल अरु डमरु विराजा चले बसह चढ़ि बाजहिं बाजा
देखि शिवहिं सुर त्रिय मुसकाहीं वर लायक दुलहिन जग नाहीं
विष्णु विरंचि आदि सुर व्राता। चढ़ि चढ़ि वाहन चले बराता
सुर समाज सब भांति अनूपा। नहिं बरात दूलह अनुरूपा।
दो॰ विष्णु कहा अस विहसि तब बोलि सकल दिश राज।

बिलग बिलग होइ चलहु सब निज निज सहित समाज

बर अनुहार बरात न भाई ॥ हंसी करैहहु पर पुर जाई ॥
बिष्णु बचन सुनि सुर मुसकाने। निज निज सेन सहित बिलगाने
मनहीं मन महेश मुसुकाहीं। हरि के व्यंग बचन नहिं जाहीं
अति प्रिय बचन सुनत हरि केरे। भृंगी प्रेरि सकल गण टेरे ॥
शिव अनुशासन सुनि सब आये प्रभु पद जलज सीस तिन नाये
नाना बाहन नाना भेषा ॥ बिहंसे शिव समाज निज देखा
कोउ मुख हीन बिपुल मुख काहू बिनु पद कर कोउ बहु पद बाहू
बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना रिष्टपुष्ट कोउ अति तनु छीना

छं॰ तनु छीण कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन तनु धरे
भूषण कराल कपाल कर सब सद्य शोणित तनु भरे
खर स्वान सुअर शृगाल मुख गण भेष अगणित को गने
बहु जिनिस प्रेत पिशाच योगिनि भांति बरनत नहिं बने

सो॰ नाचहिं गावहिं गीत ॥ परम तरंगी भूत सब ॥
देखत अति बिपरीत । बोलहिं बचन बिचित्र बिधि

जस दूलह तस बनी बराता ॥ कौतुक बिबिध होहिं मग जाता
इहां हिमाचल रचेउ बिताना अति बिचित्र नहिं जाय बखाना
शैल सकल जहं लगि जग माहीं लघु बिशाल नहिं बरणि सिराहीं
बन सागर सब नदी तलावा । हिमगिरि सब कहं नेवत पठावा ॥
काम रूप सुन्दर तनु धारी ॥ सहित समाज सहित बर नारी ।
गये सकल तुहिनाचल गेहा । गावहिं मंगल सहित सनेहा ।
प्रथमहिं गिरि बहु गृह संवराये यथा योग जहं तहं सब छाये ।
पुर शोभा अवलोकि सुहाई । लागे लघु बिरंचि निपुणाई ।

छं: लघु लाग बिधि की निपुणता अवलोकि पुर शोभा सही
बन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभग सब सक को कही

मंगल विपुल तोरण पताका केतु गृह गृह सोहहीं
बनिता पुरुष सुन्दर चतुर छवि देखि मुनिमन मोहहीं

दो० जगदम्बा जहँ अवतरी। सो पुर बरणि न जाइ
ऋद्धि सिद्धि संपति सकल नित नूतन अधिकाइ

नगर निकट बरात जब आई ॥ पुर शोभा खर भर अधिकाई
करि बनाव सजि वाहन नाना। चले लेन सादर अगवाना
हिय हरषे सुर सेन निहारी ॥ हरिहिं देखि अति भये सुखारी
शिव समाज जब देखन लागे। बिडरि चले वाहन सब भागे
धरि धीरज तहँ रहे सयाने ॥ बालक सब लै जीव पराने
गये भवन पूछहिं पितु माता। कहहिं वचन भय कंपित गाता
कहिय कहा कहि जाइ न बाता। यम कर धार किधौं बरियाता।
बर बौराह बरद असवारा ॥ व्याल कपाल विभूषण छारा

छं० तन छार व्याल कपाल भूषण नगन जटिल भयंकरा
संग भूत प्रेत पिशाच योगिनि विकट मुख रजनीचरा
जो जियत रहत बरात देखत पुण्य बड़ तिनकर सही
देखिहिं सो उमा विवाह घर घर बात अस लरकन कही

दो० समुझि महेश समाज सब जननि जनक मुसुकाहिं
बाल बुझाये विविधि विधि निडर होउ डर नाहिं

लै अगवान बरातहिं आये ॥ दिये सबहिं जनवास सुहाये
मैना शुभ आरती सँवारी ॥ संग सुमंगल गावहिं नारी
कंचन थार सोह बर पानी । परिछन चली हरहिं हरषानी
बिकट भेष जब रुद्रहिं देखा । अबलन उर भय भयेउ विशेषा
भागि भवन पैठी अति त्रासा। गये महेश जहाँ जनवासा
मयना हृदय भयेउ दुख भारी। लीन्ही बोलि गिरीश कुमारी
अधिक सनेह गोद बैठारी । श्याम सरोज नयन भरि बारी

जेइ बिधि तुम्हहिं रूप अस दीन्हा तेइ जड़ बर बावर कस कीन्हा

छं॰ कस कीन्ह बर बौराह बिधि जेइ तुमहिं सुन्दरता दई
जो फल चहिय सुर तरुहिं सो बर बस बबूरहिं लागई
तुम सहित गिरि ते गिरौं पावक जरौं जलनिधि महं परौं
घर जाउ अपयश होउ जग जीवत बिवाह नहीं करौं

दो॰ भईं बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि
करि बिलाप रोदति बदति सुता सनेह संभारि ॥

नारद कर मैं काह बिगारा ॥ भवन मोर जिन बसत उजारा
अस उपदेश उमहिं जिन दीन्हा बौरे बरहिं लागि तप कीन्हा
सांचेहु उन के मोह न माया । उदासीन धन धाम न जाया ।
पर घर घालक लाज न भीरा । बांझ कि जान प्रसव की पीरा
जननिहिं बिकल बिलोकि भवानी बोली युत बिबेक मृदु बानी ।
अस बिचारि शोचहु मति माता सो न टरै जो रचै बिधाता
करम लिखा जो बावर नाहू । तो कत दोष लगाइय काहू
तुम सन मिटहिं कि बिधि के अंका मातु ब्यर्थ जनि लेहु कलंका

छं॰ जनि लेहु मातु कलंक करुणा परिहरहु अवसर नहीं
दुख सुख जो लिखा लिलार हमरे जाब जहं पाउब तहीं
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल अबला शोचहीं
बहु भांति बिधिहि लगाइ दूषण नयन बारि बिमोचहीं

दो॰ तेहि अवसर नारद ऋषय औ ऋषि सप्त समेत ।
समाचार सुनि तुहिन गिरि गवने तुरत निकेत ॥

तब नारद सबही समुझावा । पूरब कथा प्रसंग सुनावा ॥
मयना सत्य सुनहु मम बानी । जगदम्बा तव सुता भवानी
अजा अनादि शक्ति अबिनाशिनि सदा शंभु अरधंग निवासिनि
जग संभव पालन लय कारिणि निज इच्छा लीला बपु धारिणि

जनमी प्रथम दक्ष गृह जाई। नाम सती सुन्दर तनु पाई।
तहँउँ सती शंकरहिं बिवाही ॥ कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं
एक बार आवत शिव संगा ॥ देखेउ रघुकुल कमल पतंगा
भयउ मोह शिव कहा न कीन्हा भ्रम बस भेष सीय कर लीन्हा

छं॰ सिय भेष सती जो कीन्ह तेहि अपराध शंकर परिहरी
हर बिरह जाइ बहोरि पितु के यज्ञ योगानल जरी
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुण तप किया
अस जानि संशय तजहु गिरिजा सर्बदा शंकर प्रिया

दो॰ सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा विषाद
क्षण महँ व्यापेउ सकल पुर घर घर यह सम्बाद

तब मयना हिमवंत अनन्दे। पुनि पुनि पारवती पद बन्दे
नारि पुरुष शिशु युवा सयाने। नगर लोग सब अति हरषाने
लगे होन पुर मंगल गाना ॥ सजे सबहिं हाटक घट नाना
भांति अनेक भई जेवनारा। सूप शास्त्र जस कछु व्यवहारा
सो जेवनार कि जाइ बखानी ॥ बसहिं भवन जेहि मातु भवानी
सादर बोले सकल बराती ॥ बिस्नु बिरंचि देव सब जाती
बिबिधि पांति बैठी जेवनारा। लगे परोसन निपुण सुआरा
नारि बृन्द सुर जेंवत जानी। लागीं देन गारि मृदु बानी।

छं॰ गारी मधुर सुर देहिं सुंदरि ब्यंग वचन सुनावहीं ॥
भोजन करहिं सुर अति बिलंब बिनोद सुनि सुख पावहीं
जेंवत जो बढ्यो अनंद सो मुख कोटिहूं न परै कह्यो
अचवाइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रह्यो ॥

दो॰ बहुरि मुनिन हिमवंत कहँ लगन जनाई आइ।
समय बिलोकि बिवाह कर पठये देव बुलाइ ॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे। सबहिं यथोचित आसन दीन्हे

बेदी बेद विधान सँवारी ॥ सुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥
सिंहासन अति दिव्य सुहावा जाइ न बरणि बिरंचि बनावा
बैठे शिव विप्रन सिर नाई । हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई
बहुरि मुनीशन उमा बुलाई । करि शृंगार सखी लै आई ॥
देखत रूप सकल सुर मोहे । बरनै छबि अस जग कवि कोहै।
जगदम्बिका जानि भव भामा। सुरन मनहिं मन कीन्ह प्रणामा
सुन्दरता मर्य्याद भवानी ॥ जाइ न कोटिहु बदन बखानी

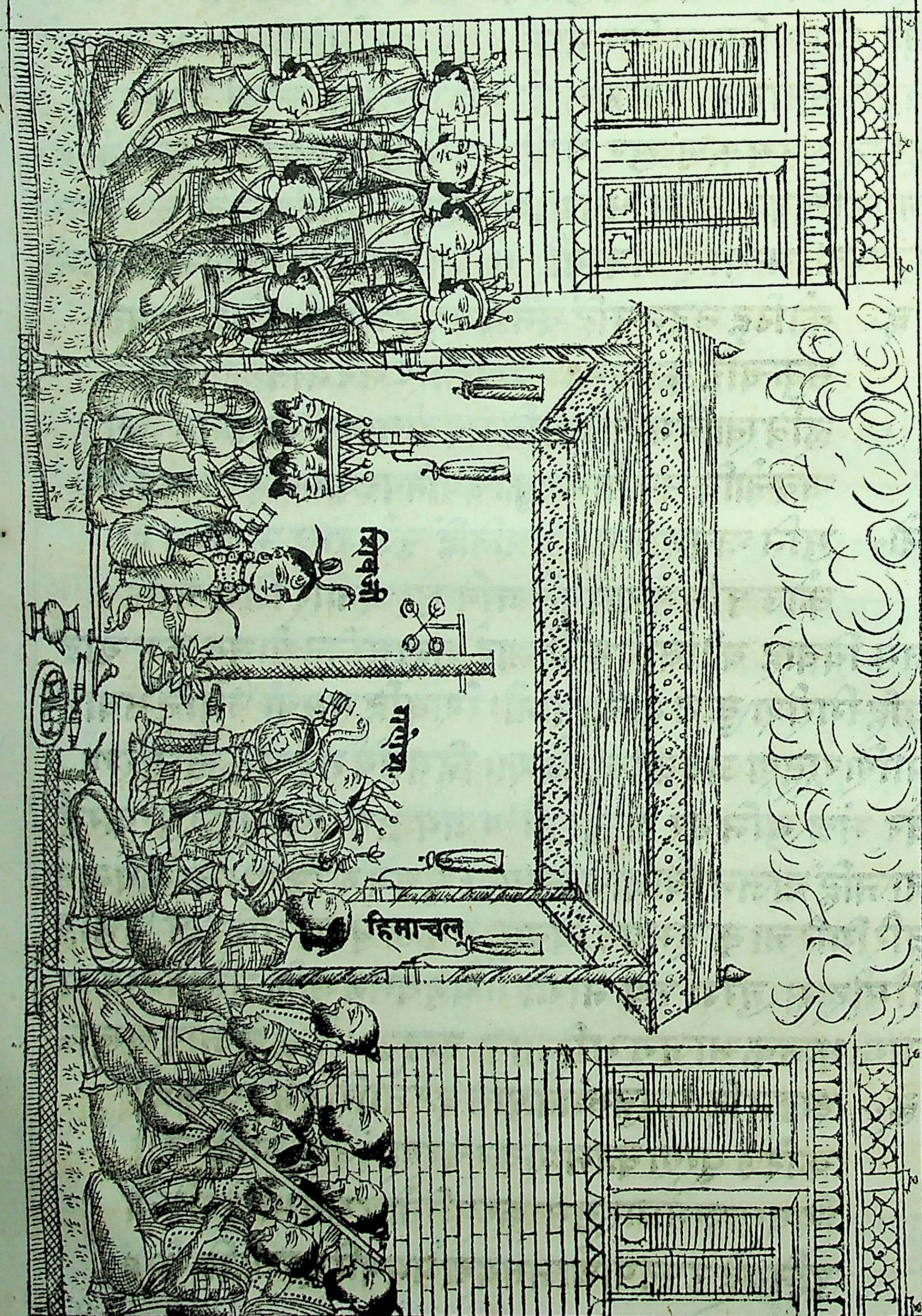
छं॰ कोटिहु बदन नहिं बनै बरणत जग जननि शोभा महा
सकुचहिं कहत श्रुति शेष सारद मंद मति तुलसी कहा
छवि खानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप शिव जहां
अवलोकि सकहिं न सकुचि पति पद कमल मन मधुकर तहां

दो॰ मुनि अनुशासन गणपतिहिं पूजे शंभु भवानि ॥
कोउ सुनि संशय करै जनि सुर अनादि जिय जानि

जस विवाह की विधि श्रुति गाई महा मुनिन सो सब कर वाई
गहि गिरीश कुश कन्या पानी। शिवहि समर्पी जानि भवानी
पाणि ग्रहण जब कीन्ह महेशा। हिय हर्षे तब सकल सुरेशा ॥
बेद मंत्र मुनि वर उच्चरहीं ॥ जय जय जय शंकर सुर करहीं
बाजहिं बाजन विविधि विधाना सुमन वृष्टि नभ भै विधि नाना
हरि गिरिजा कर भयउ विवाहू सकल भुवन भरि रहा उछाहू
दासी दास तुरंग रथ नागा ॥ धेनु बसन मणि वस्तु विभागा
अन्न कनक भाजन भरि जाना दाइज दीन्ह न जाइ बखाना

छं॰ दाइज दियो बहु भांति पुनि कर जोरि हिम भूधर कह्यो
कादेउं पूरण काम शंकर चरण पंकज गहि रह्यो
शिव कृपा सागर ससुर कर परितोष सब भांतिन कियो
पुनि गहे उ पद पाथोज मयना प्रेम परि पूरण हियो ॥

हिमाचल के मन्दिर में शिवजी के व्याह के निमित्त ब्रह्मा विसु आदि सम्पूर्ण देवतों को बरात में जाना और शिवपार्वती का व्याह होना ॥



दो॰ नाथ उमा मम प्राण सम गृहकिंकरी करेहु ॥
क्षमेहु सकल अपराध अब होइ प्रसन्न बर देहु

बहुविधि शंभु सासु समुझाई । गवनी भवन चरण सिर नाई
जननी उमा बोलि तब लीन्ही । लै उछंग सुंदर सिख दीन्ही
करहु सदा शंकर पद पूजा । नारि धर्म पति देव न दूजा
वचन कहति भरि लोचन बारी । बहुरि लाइ उर लीन्ह कुमारी
कत विधि सिरजि नारि जगमाहीं पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं
भै अति प्रेम विकल महतारी ॥ धीरज कीन्ह कुसमय विचारी
पुनि पुनि मिलति परति गहि चरणा परम प्रेम कछु जाइ न बरणा ।
सब नारिन मिलि भेटि भवानी ॥ जाइ जननि उर पुनि लपटानी

छं॰ जननिहिं बहुरि मिलि चली उचित असीस सब काहू दई
फिरि फिरि बिलोकति मातु तन तब सखी लै शिव पहं गई ॥
याचक सकल संतोषि शंकर उमा सहित भवनहिं चले
सब अमर हरषे सुमन बरषि निशान नभ बाजहिं भले ॥

दो॰ चले संग हिमवंत तब ॥ पहुंचावन अति हेतु
विविध भांति परितोष करि बिदा कीन्ह वृषकेतु ॥

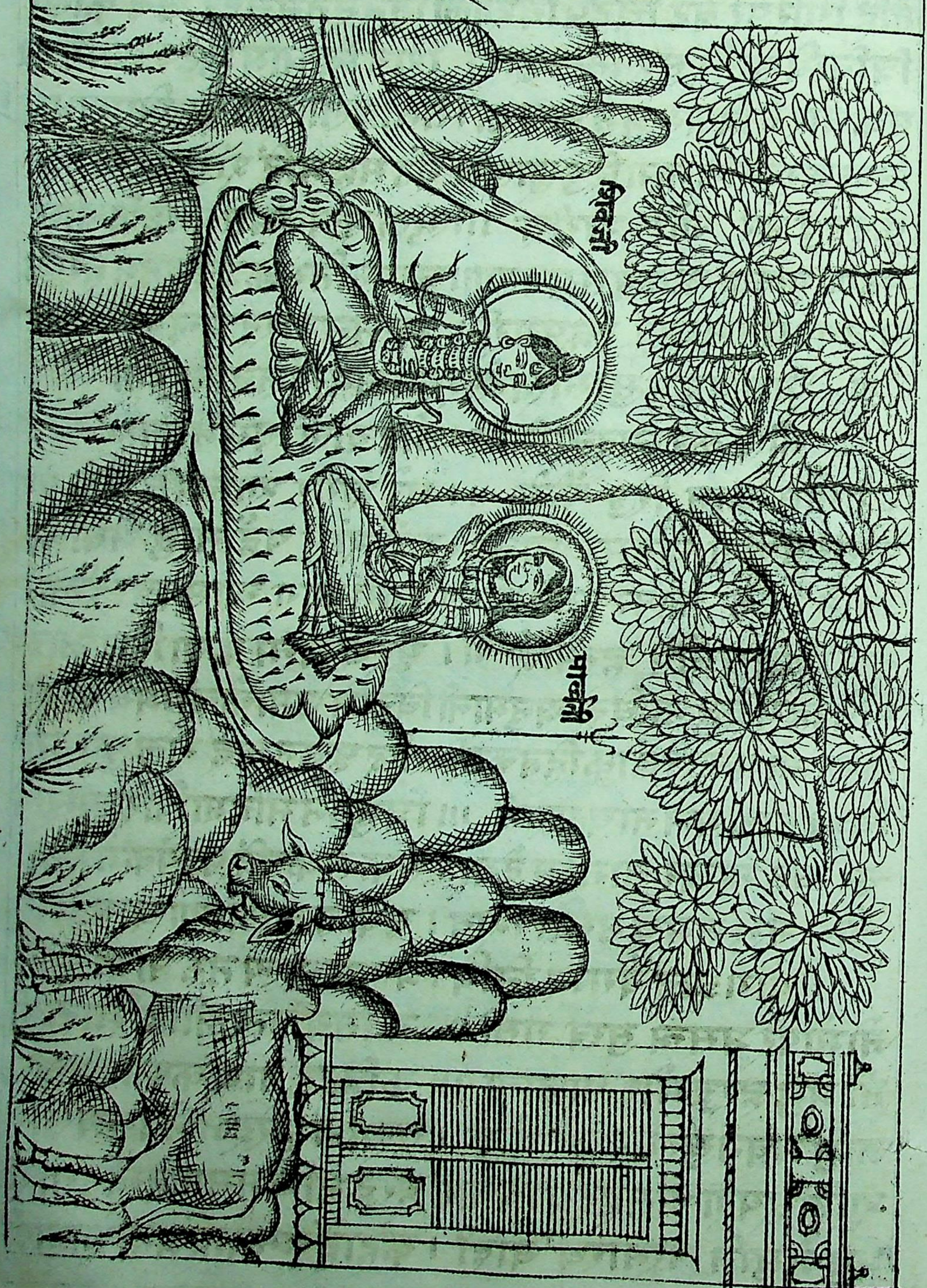
तुरत भवन आये गिरि राई ॥ सकल शैल सर लिये बुलाई
आदर दान विनय बहु माना । सब कर बिदा कीन्ह सनमाना
जबहिं शंभु कैलासहिं आये । सुर सब निज निज धाम सिधाये
जगत मातु पितु शंभु भवानी ॥ तेहि शृंगार न कहौं बखानी
करहिं विविध विधि भोग बिलासा गणन समेत बसहिं कैलासा
हर गिरिजा बिहार नित नयऊ । इहि विधि विपुल काल चलि गयऊ
तब जन्मे षटबदन कुमारा ॥ ॥ तारक असुर समर जिन मारा
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । षट मुख जन्म कर्म जग जाना

छं॰ जग जान षटमुख जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथ महा ॥

तेहि हेतु मैं वृषकेतु सुत कर चरित संक्षेपहिं कहा
यह उमा शंभु विवाह जे नर नारि कहहिं जे गावहीं
कल्याण काज विवाह मंगल सर्बदा सुख पावहीं
दो॰ चरित सिंधु गिरिजा रमण वेद न पावहिं पार ॥
बरणे तुलसी दास किमि अति मति मंद गँवार
शंभु चरित सुनि सरस सुहावा। भरद्वाज मुनि अति सुख पावा
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी ॥ नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी ॥
प्रेम विवस मुख आव न बानी दशा देखि हरषे मुनि ज्ञानी
अहो धन्य तव जन्म मुनीशा। तुमहिं प्राण सम प्रिय गौरीशा
शिव पद कमल जिनहिं रति नाहीं रामहिं ते सपनेहुं न सुहाहीं।
बिनु छल विश्व नाथ पद नेहू। राम भक्त कर लक्षण येहू।
शिव सम को रघुपति ब्रत धारी बिनु अघ तजी सती अस नारी
प्रण करि रघुपति भक्ति दृढ़ाई को शिव सम रामहिं प्रिय भाई
दो॰ प्रथम कहे मैं शिव चरित बूझा मरम तुम्हार ॥
शुचि सेवक तुम राम के। रहित समस्त विकार ॥
मैं जाना तुम्हार गुण शीला। कहौं सुनहु अब रघुपति लीला
सुनु मुनि आजु समागम तोरे। कहि न जाय जस सुख मन मोरे
राम चरित अति अमित मुनीशा कहि न सकहिं शत कोटि अहीशा
तदपि यथा श्रुति कहौं बखानी सुमिरि गिरापति प्रभु धनु पानी
शारद दारु नारि सम स्वामी ॥ राम सूत्र धर अन्तर यामी।
जेहि पर कृपा करहिं जन जानी कवि उर अजिर नचावहिं बानी
प्रणऊं सोइ कृपाल रघुनाथा। बरणउं विशद तासु गुण गाथा
परम रम्य गिरि वर कैलासू। सदा जहां शिव उमा निवासू
दो॰ सिद्ध तपोधन योगि जन सुर किन्नर मुनि वृन्द ॥
बसहिं तहां सुकृती सकल सेवहिं शिव सुख कन्द ॥

हरि हर बिमुख धर्म रत नाहीं। ते नर तहां न सपनेहुं जाहीं।
तेहि गिरि पर बट बिटप बिशाला नित नूतन सुंदर सब काला
त्रिबिधि समीर सुशीतल छाया शिव बिश्राम बिटप श्रुति गाया
एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ। तरु बिलोकि उर अतिसुख भयऊ
निज कर डासि नाग रिपु छाला। बैठे सहजहिं शंभु कृपाला
कुंद इंदु बर गौर शरीरा ॥। भुज प्रलंब परिधन मुनि चीरा
तरुण अरुण अंबुज सम चरणा। नख दुति भक्त हृदय तम हरणा
भुजग भूति भूषण त्रिपुरारी। आनन शरद चन्द छबि हारी
दो॰ जटा मुकुट सुरसरित सिर लोचन नलिन बिशाल
नील कंठ लावन्य निधि। सोह बाल बिधु भाल॥
बैठे सोह काम रिपु कैसे ॥। धरे शरीर शान्त रस जैसे ॥।
पारवती भल अवसर जानी। गईं शंभु पहं मातु भवानी
जानि प्रिया आदर अति कीन्हा बाम भाग आसन हर दीन्हा
बैठी शिव समीप हरषाई ॥। पूरब जन्म कथा चित आई
पति हिय हेतु अधिक अनुमानी बिहंसि उमा बोली प्रिय बानी
कथा जो सकल लोक हितकारी सोइ पूछन चहै शैल कुमारी
बिश्व नाथ मम नाथ पुरारी ॥। त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी
चर अरु अचर नाग नर देवा। सकल करहिं पद पंकज सेवा
दो॰ प्रभु समर्थ सर्वज्ञ शिव। सकल कला गुण धाम
योग ज्ञान बैराग्य निधि। प्रणत कल्प तरु नाम।
जो मोपर प्रसन्न सुख रासी ॥। जानिय सत्य मोहिं निज दासी
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना ॥। कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना
जासु भवन सुर तरु तर होई। सह कि दरिद्र जनित दुख सोई
शशिभूषण अस हृदय बिचारी हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी
प्रभु जे मुनि परमारथ बादी। कहहिं राम कहं ब्रह्म अनादी

श्रीमहादेव जी को कैलाश पर्वत पर वर के तले श्री पार्व्वती जी से श्रीरामचरित्र कहना



शेष शारदा वेद पुराना ॥ सकल करहिं रघुपति गुण गाना
तुम पुनि राम नाम दिन राती सादर जपहु अनंग अराती ॥
राम सो अवध नृपति सुत सोई। की अज अगुण अलख गति कोई
दो॰ जो नृप तनय तो ब्रह्म किमि नारि विरह मति भोरि
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि
जो अनीह व्यापक विभु कोऊ। कहहु बुझाइ नाथ मोहिं सोऊ
अज्ञ जानि रिसि जनि उर धरहू जेहि विधि मोह मिटै सोइ करहू
मैं बन दीख राम प्रभुताई। अति भय विकल न तुमहिं सुनाई
तदपि मलिन मन बोध न आवा सो फल भली भांति मैं पावा
अजहूं कछु संशय मन मोरे ॥ करहु कृपा बिनऊं कर जोरे।
प्रभु तब मोहि बहु भांति प्रबोधा नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा
तब कर अस विमोह मोहिं नाहीं राम कथा पर रुचि मन मांहीं
कहहु पुनीत राम गुण गाथा। भुजगराज भूषण सुर नाथा
दो॰ बन्दौं पद धरि धरणि शिर विनय करौं कर जोरि।
बरणहु रघुबर विशद यश श्रुति सिद्धान्त निचोरि
यदपि योषिता अन अधिकारी दासी मन क्रम बचन तुम्हारी
गूढ़ो तत्त्व न साधु दुरावहिं ॥ आरत अधिकारी जहं पावहिं
अति आरत पूछौं सुर राया ॥ रघुपति कथा कहहु करि दाया
प्रथम सो कारण कहहु विचारी निर्गुण ब्रह्म सगुण वपु धारी।
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा बाल चरित पुनि कहहु उदारा
कहहु यथा जानकी विवाहा राज तजा सो दूषण काहा
बन बसि कीन्हेउ चरित अपारा कहहु नाथ जिमि रावण मारा
राज बैठि कीन्ही बहु लीला ॥ सकल कहहु शंकर सुख शीला
दो॰ बहुरि कहहु करुणायतन कीन्ह जो अचरज राम
प्रजा सहित रघुवंश मणि किमि गवने निज धाम।

पुनि प्रभु कहहु सो तत्त्व बखानी। जेहि विज्ञान मगन मुनि ज्ञानी
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा ॥। पुनि सब बरणहु सहित विभागा
औरौ राम रहस्य अनेका ॥ कहहु नाथ अति बिमल बिबेका
जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई ॥ सोउ दयाल राखहु जनि गोई
तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना। आन जीव पावर का जाना
प्रश्न उमा की सहज सुहाई । छल विहीन सुनि शिव मन भाई
हर हिय राम चरित सब आये। प्रेम पुलकि लोचन जल छाये
श्री रघुनाथ रूप उर आवा ॥ परमानन्द अमित सुख पावा।

दो॰ मगन ध्यान रस दंड युग पुनि मन बाहिर कीन्ह।
रघुपति चरित महेश तब हर्षित वरणै लीन्ह ॥।

झूठौ सत्य जाहि विनु जाने ॥ जिमि भुजंग विनु रजु पहिचाने
जेहि जाने जग जाइ हेराई ॥। जागे यथा सपन भ्रम जाई।
बंदौ बाल रूप सोइ रामू ॥ सब विधि सुलभ जपत जस नामू
मंगल भवन अमंगल हारी ॥ द्रवो सो दशरथ अजिर विहारी
करि प्रणाम रामहिं त्रिपुरारी। हरषि सुधा सम गिरा उचारी।
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी । तुम समान नहिं कोउ उपकारी
पूछेहु रघुपति कथा प्रसंगा ॥ सकल लोक जग पावनि गंगा
तुम रघुवीर चरण अनुरागी । कीन्हेहु प्रश्न जगत हित लागी

सो॰ राम कृपा तें पार्वती । सपनेहु तव मन माहिं।
शोक मोह सन्देह भ्रम। मम विचार कछु नाहिं

तदपि अशंका कीन्हेउ सोई। कहत सुनत सबकर हित होई
जिन हरि कथा सुनी नहिं काना श्रवण रंध्र अहि भवन समाना।
नयनन संत दरश नहिं देखा ॥। लोचन मोर पंख कर लेखा।
ते सिर कटु तूमरि सम तूला ॥ जे न नमत हरि गुरु पद मूला
जिन हरि भक्ति हृदय नहिं आनी जीवत शव समान ते प्रानी।

जे नहिं करहिं राम गुण गाना। जीह सु दादुर जीह समाना।
कुलिश कठोर निठुर सोइ छाती सुनि हरि चरित न जो हरषाती
गिरिजा सुनहु राम कर लीला। सुर हित दनुज विमोहन शीला
दो॰ राम कथा सुर धेनु सम। सेवत सब सुख दान ॥॥
संत सभा सुर लोक सम। कोन सुने अस जान।
राम कथा सुन्दर कर तारी ॥। संशय विहंग उड़ावन हारी।
राम कथा कलि विटप कुठारी। सादर सुन गिरिराज कुमारी॥
राम नाम गुण चरित सुहाये ॥ जन्म कर्म अगणित श्रुति गाये
यथा अनन्त राम भगवाना। तथा कथा कीरति गुण नाना
तदपि यथा श्रुति जस मति मोरी कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई ॥ सुखद संत संमत मुहिं भाई।
एक बात नहिं मोहिं सुहानी। यदपि मोह वश कहेउ भवानी
तुम जो कहा राम कोउ आना जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना
दो॰ कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जो मोह पिशाच
पाषंडी हरि पद विमुख। जानहिं झूठ न सांच।
अज्ञ अकोविद अंध अभागी। काई विषय कुमुर मन लागी
लंपट कपटी कुटिल विशेषी ॥ सपनेहु संत सभा नहिं देखी
कहहिं ते वेद असंमत वानी ॥ जिनहिं न सूझ लाभ नहिं हानी
मुकुर मलिन अरु नयन विहीना राम रूप देखहिं किमि दीना।
जिनके अगुण न सगुण विवेका। जल्पहिं कल्पित वचन अनेका
हरि माया वस जगत भ्रमाहीं ॥ तिनहिं कहत कछु अघटित नाहीं
वातुल भूत विवस मत्त वारे ॥ ते नहिं बोलहिं वचन संभारे।
जिन कृत महा मोह मद पाना। तिन कर कहा करिय नहिं काना।
सो॰ अस निज हृदय विचारि। तज संशय भज रामपद
सुन गिरिराज कुमारि ॥ भ्रम तम रवि कर वचन मम

सगुणहिं अगुणहिं नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुराण बुध वेदा॥
अगुण अरूप अलख अज जोई। भक्त प्रेम बस सगुण सो होई॥
जो गुण रहित सगुण सो कैसे। जल हिम उपल बिलग नहिं जैसे॥
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तिहि किमि कहिय बिमोह प्रसंगा॥
राम सच्चिदानन्द दिनेशा। नहिं तहँ मोह निशा लव लेशा॥
सहज प्रकाश रूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि विज्ञान विहाना॥
हरष बिषाद ज्ञान अज्ञाना। जीव धर्म अहमिति अभिमाना॥
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना। परमानन्द परेश पुराना॥
दो॰ पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रगट परावर नाथ।
रघुकुल मणि मम स्वामि सोइ कहि शिव नायउ माथ॥
निज भ्रम नहिं समुझहिं अज्ञानी। प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी॥
यथा गगन घन पटल निहारी। झंपेउ भानु कहहिं कुविचारी॥
चितवत लोचन अंगुलि लाये। प्रगट युगल शशि तेहि के भाये॥
उमा राम विषयिक अस मोहा। नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा॥
विषय करण सुर जीव समेता। सकल एक ते एक सचेता॥
सब कर परम प्रकाशक जोई। राम अनादि अवधपति सोई॥
जगत प्रकाश्य प्रकाशक रामू। माया धीश ज्ञान गुण धामू॥
जासु सत्य ताते जड़ माया। भास सत्य इव मोह सहाया॥
दो॰ रजत सीप महँ भास जिमि यथा भानु कर वारि।
यदपि मृषा तिहुँ काल सोइ भ्रम न सकै कोउ टारि॥
एहि विधि जग हरि आश्रित रहई। यदपि असत्य देत दुख अहई॥
जो सपने सिर काटै कोई। बिनु जागे दुख दूरि न होई॥
जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई। गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई॥
आदि अन्त कोउ जासु न पावा। मति अनुमान निगम अस गावा॥
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु कर्म करै विधि नाना॥

आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बाणी बक्ता बड़ जोगी।
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहै घ्राण बिनु बास अशेषा।
अस सब भाँति अलौकिक करणी महिमा जासु जाइ नहिं बरणी
दो० जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान
सोइ दशरथ सुत भक्त हित कोशल पति भगवान।
काशी मरत जन्तु अवलोकी। जासु नाम बल करौं बिशोकी
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी॥ रघुबर सब उर अन्तर यामी
बिबसहुं जासु नाम नर कहहीं। जन्म अनेक संचित अघ दहहीं
सादर सुमिरण जो नर करहीं॥ भवबारिधि गोपद इव तरहीं।
राम सो परमात्मा भवानी॥ तहं भ्रम अति अविहित तव बानी
अस संशय आनत उर माहीं ज्ञान बिराग सकल गुण जाहीं
सुनि शिव के भ्रम भंजन बचना मिटि गइ सब कुतर्क की रचना
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती। दारुण असंभावना बीती
दो० पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि
बोली गिरिजा बचन बर। मनहुं प्रेम रस सानि
शशि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी मिटा मोह शरदातप भारी
तुम कृपाल सब संशय हरेऊ। राम स्वरूप जानि मोहिं परेऊ
नाथ कृपा अब गयेउ बिषादा। सुखी भइउं प्रभु चरण प्रसादा
अब मोहिं आपनि किंकरि जानी यदपि सहज जड़ नारि अयानी
प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू। जो मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू।
राम ब्रह्म चिन्मय अविनाशी। सर्ब रहित सब उर पुर बासी
नाथ धरेउ नर तनु केहि हेतू। मोहिं समुझाइ कहहु बृष केतू
उमा बचन सुनि परम बिनीता। राम कथा पर प्रीति पुनीता
दो० हिय हर्षे कामारि तब॥ शंकर सहज सुजान॥
बहु बिधि उमहिं प्रशंसि पुनि बोले कृपा निधान।

सो॰ सुन सुभ कथा भवानि। रामचरित मानस विमल।
कहा भुसुंडि बखानि ॥ सुना विहग नायक गरुड़
सोइ सम्बाद उदार ॥ जेहि विधि भा आगे कहब
सुनहु राम अवतार ॥ चरित परम सुन्दर अनघ
हरि गुण नाम अपार। कथा रूप अगणित अमित
मैं निज मति अनुसार। कहौं उमा सादर सुनहुं।
सुन गिरिजा हरि चरित सुहाये विपुल विशद निगमागम गाये
हरि अवतार हेतु जेहि होई। इद मिथ्या कहि जाइ न सोई
राम अतर्क बुद्धि मन वानी। मत हमार अस सुनहुं भवानी
तदपि संत मुनि वेद पुराना। जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना
तस मैं सुमुखि सुनावउं तोही। समुझि परै जस कारण मोही।
जब जब होइ धर्म की हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी
करहिं अनीत जाइ नहिं बरणी सीदहिं विप्र धेनु सुर धरणी ॥
तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा
दो॰ असुर मारि थापहिं सुरन्हि राखहिं निज श्रुति सेतु
जग विस्तारहिं विशद यश राम जन्म कर हेतु।
सोइ यश गाइ भक्त भव तरहीं। कृपा सिंधु जन हित तनु धरहीं
राम जन्म के हेतु अनेका ।। परम विचित्र एक तें एका ॥
जन्म एक दुइ कहौं बखानी सावधान सुनु सुमति भवानी
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ। जय अरु विजय जान सब कोऊ
विप्र श्राप तें दोनों भाई ॥॥ तामस असुर देह तिन पाई
कनककशिप अरु हाटकलोचन जगत विदित सुरपति मद मोचन
विजयी समर बीर विख्याता। धरि बराह वपु एक निपाता
होइ नरहरि वपु दूसर मारा। जन प्रह्लाद सुयश विस्तारा।
दो॰ भये निशाचर जाइ ते। महाबीर बलवान ॥।

कुंभकर्ण रावण सुभट । सुर बिजयी जग जान ॥
मुक्त न भयेउ हते भगवाना ॥ तीन जन्म द्विज वचन प्रमाना
एक बार तिन के हित लागी ॥ धरेउ शरीर भक्त अनुरागी।
कश्यप अदिति तहां पितु माता दशरथ कौशल्या विख्याता।
एक कल्प इहि विधि अवतारा चरित पवित्र किये संसारा
एक कल्प सुर देखि दुखारे । समर जलंधर सन सब हारे
शंभु कीन्ह संग्राम अपारा ॥ दनुज महा बल मरै न मारा
परम सती असुराधिप नारी ॥ तेहि बल ताहि न जीत पुरारी
दो॰ छल करि टारेउ तासु व्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह।
जब तेइ जानेउ मरम सब श्राप कोप करि दीन्ह
तासु श्राप हरि कीन्ह प्रमाना। कौतुक निधि कृपाल भगवाना
तहां जलंधर रावण भयऊ ॥ रण हति राम परम पद दयऊ
एक जन्म कर कारण एहा । जेहि लगि राम धरी नर देहा
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी। सुनि सुनि वरणी कविन घनेरी
नारद श्राप दीन्ह इक बारा ॥ कल्प एक तेहि लगि अवतारा
गिरिजा चकित भईं सुनि बानी नारद विष्णु भक्त मुनि ज्ञानी।
कारण कवन श्राप मुनि दीन्हा का अपराध रमा पति कीन्हा
यह प्रसंग मोहिं कहहु पुरारी। मुनि मन मोह सो अचरज भारी
दो॰ बोले विहंसि महेश तब। ज्ञानी मूढ़ न कोइ ॥
जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि क्षण होइ
सो॰ कहौं राम गुण गाय । भरद्वाज सादर सुनहु ॥॥
भव भंजन रघुनाथ । भज तुलसी तज मान मद
हिम गिरि गुहा एक अति पावनि बह समीप सुर सरित सुहावनि
आश्रम परम पुनीत सुहावा ॥ देखि देव ऋषि मन अति भावा
निरखि शैल गिरि विपिन विभागा भयेउ रमा पति पद अनुरागा

श्री महादेव जी और जलन्धर का युद्ध और विष्णुभगवान को जलन्धर की स्त्री वृन्दा का पतिव्रत भङ्ग करके जलन्धर का तेज हत करना फिर महादेव जी करके जलन्धर बध





सुमिरत हरिहिं श्रापगति बाधी। सहज बिमल मन लागि समाधी॥
मुनि गति देखि सुरेश डराना ॥ कामहिं बोलि कीन्ह सनमाना॥
सहित सहाय जाहु मम हेतू ॥ चलेउ हरषि हिय जलचरकेतू॥
सुनासीर मन महँ अति त्रासा। चहत देवऋषि मम पुर बासा॥
जे कामी लोलुप जग माहीं ॥ कुटिल काक इव सबहिं डराहीं॥

दो० सूख हाड़ ले भाग शठ ॥ श्वान निरखि मृगराज।
छीनि लेइ जनि जान जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज॥

तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ निज माया बसंत निरमयऊ॥
कुसुमित विविध विटप बहुरंगा कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा॥
चली सुहावनि त्रिविधि बयारी। काम कृशानु बढ़ावन हारी॥
रंभादिक सुर नारि नवीना ॥ सकल असम शर कलाप्रवीना॥
करहिं गान बहु तान तरंगा ॥ बहु विधि क्रीडहिं पानि पतंगा॥
देखि सहाय मदन हरषाना ॥ कीन्हेसि पुनि प्रपंच विधि नाना॥
काम कला कछु मुनिहिं न व्यापी निज भय डरेउ मनोभव पापी।
सीम कि चापि सकै कोउ तासू। बड़ रखवार रमा पति जासू॥

दो० सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मन मैन॥
गहेसि जाइ मुनिवर चरण कहि सुठि आरत बैन॥

भयेउ न नारद मन कछु रोषा॥ कहि प्रिय बचन काम परितोषा॥
नाइ चरण शिर आयसु पाई। गयेउ मदन तब सहित सहाई॥
मुनि सुशीलता आपनि करणी। सुरपति सभा जाइ सब बरणी॥
सुनि सब के मन अचरज आवा मुनिहिं प्रशंसि हरिहिं शिर नावा॥
तब नारद गवने शिव पाहीं ॥ जीति काम अहमिति मन माहीं॥
मार चरित शंकरहिं सुनावा ॥ अति प्रिय जानि महेश सिखावा॥
बारबार बिनवउं मुनि तोहीं। जिमि यह कथा सुनायउ मोहीं॥
तिमि जनि हरिहि सुनावहु कबहूं चलेहु प्रसंग दुरायहु तबहूं।

दो॰ शंभु दीन्ह उपदेश हित नहिं नारदहिं सुहान॥
भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान।
राम कीन्ह चाहें सो होई। करै अन्यथा अस नहिं कोई
शंभु वचन मुनि मनहिं न भाये तब विरंचि के लोक सिधाये
एक बार करतल वर वीणा। गावत हरि गुणगान प्रवीणा
क्षीर सिंधु गवने मुनि नाथा जहँ बस श्री निवास श्रुतिमाथा
हरषि मिले उठि रमा निकेता बैठे आसन ऋषिहिं समेता।
बोले विहँसि चराचर राया। बहुत दिनहिं कीन्हीमुनि दाया
काम चरित नारद सब भाषे। यद्यपि प्रथम वरजि शिव राखे
अति प्रचंड रघुपति की माया जेहि न मोह अस को जग जाया
दो॰ रूख बदन करि वचन मृदु बोले श्री भगवान॥
तुम्हरे सुमिरण ते मिटहिं मोह मार मद मान।
सुनु मुनि मोह होइ मन ताके। ज्ञान विराग हृदय नहिं जाके
ब्रह्म चर्य्य व्रत रत मति धीरा। तुमहिं कि करै मनो भव पीरा
नारद कहेउ सहित अभिमाना कृपा तुम्हारि सकल भगवाना
करुणा निधि मन दीख विचारी उर अंकुरेउ गर्व तरु भारी।
बेगि सो मैं डारिहौं उपारी। प्रण हमार सेवक हितकारी।
मुनि कर हित मम कौतुक होई अवशि उपाय करब मैं सोई
तब नारद हरि पद शिर नाई। चले हृदय अहमिति अधिकाई
श्रीपति निज माया तब प्रेरी। सुनहु कठिन करनी तेहि केरी
दो॰ विरचेउ मगु महँ नगर तेहि शत योजन विस्तार।
श्री निवास पुर ते अधिक रचना विविधि प्रकार।
बसहिं नगर सुन्दर नर नारी। जनु बहु मनसिज रति तनु धारी
तेहि पुर बसै शील निधि राजा अगणित हय गय सेन समाजा
शत सुरेश सम विभव विलासा। रूप तेज बल नीति निवासा।

विश्व मोहनी तासु कुमारी ॥ श्री बिमोह जेहि रूप निहारी
सो हरिमाया सब गुण खानी। शोभा तासु कि जाइ बखानी
करै स्वयम्बर सो नृप बाला। आये तहँ अगणित महिपाला
मुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ। पुरबासिन सब पूछत भयऊ
सुनि सब चरित भूप गृह आये। करि पूजा नृप मुनि बैठाये॥
दो० आनि देखाई नारदहिं भूपति राज कुमारि।
कहहु नाथ गुण दोष सब इहि कर हृदय बिचारि
देखि रूप मुनि बिरति बिसारी। बड़ी बार लगि रहे निहारी
लक्षण तासु बिलोकि भुलाने। हृदय हर्ष नहिं प्रगट बखाने
जो इहि बरै अमर सो होई। समर भूमि तेहि जीत न कोई
सेवहिं सकल चराचर ताही। बरै शील निधि कन्या जाही।
लक्षण सब बिचारि उर राखे। कछुक बनाइ भूप सन भाखे।
सुता सुलक्षणि कहि नृप पाहीं। नारद चले सोच मन माहीं।
करौं जाइ सोइ यतन बिचारी। जेहि प्रकार मोहिं बरै कुमारी
जप तप कछु न होइ इहि काला। हे बिधि मिलै कवन बिधि बाला
दो० इहि अवसर चाहिय परम शोभा रूप बिशाल।
जो बिलोकि रीझै कुंवरि तब मेलै जयमाल
हरि सन मांगौं सुन्दर ताई ॥ होइहि जात गहरु अति भाई
मोरे हित हरि सम नहिं कोऊ। इहि अवसर सहाय सो होऊ
बहु बिधि बिनय कीन्ह तेहि काला। प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला।
प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुड़ाने। होइहि काज हिये हरषाने।
अति आरत कहि कथा सुनाई। करहु कृपा प्रभु होहु सहाई
आपन रूप देहु प्रभु मोही। आन भांति नहिं पावहुं ओही
जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा। करो सो बेगि दास मैं तोरा
निज माया बल देखि बिशाला। हिय हँसि बोले दीन दयाला।

दो० जेहि बिधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार ॥
सोइ हम करब न आन कछु बचन न मृषा हमार ॥
कुपथ मांगु रुज ब्याकुल रोगी। बैद न देइ सुनहु मुनि योगी।
इहि बिधि हित तुम्हार मैं ठयऊ कहि अस अन्तर हित प्रभु भयऊ
माया बिबश भये मुनि मूढ़ा ॥ समुझि नहीं हरि गिरा निगूढ़ा
गवने तुरत तहां ऋषि राई ॥ जहां स्वयम्बर भूमि बनाई
निज निज आसन बैठे राजा। बहु बनाव करि सहित समाजा
मुनि मन हर्ष रूप अति मोरे। मोहिं तजि आन बरिहि नहिं भोरे
मुनि हित कारण कृपा निधाना। दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना
सो चरित्र लखि काहु न पावा। नारद जानि सबहिं सिर नावा
दो० रहे तहां दुइ रुद्र गण ॥ ते जानहिं सब भेउ ॥
बिप्रभेष देखत फिरहिं ॥ परम कौतुकी तेउ ॥।
जेहि समाज बैठे मुनि जाई ॥ हृदय रूप अहमिति अधिकाई
तहं बैठे महेश गण दोऊ ॥।॥ बिप्र भेष गति लखै न कोऊ
करहिं कूट नारदहिं सुनाई ॥ नीक दीन्ह हरि सुन्दर ताई।
रीझिहिं राज कुंवरि छबि देखी इनहिं बरहि हरि जानि बिशेषी
मुनिहिं मोह मन हाथ पराये ॥ हंसहिं शंभु गण अति सचुपाये
यदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी समुझि न परै बुद्धि भ्रम सानी
काहु न लखा सो चरित बिशेषी सो स्वरूप नृप कन्या देखी ॥
मर्कट बदन भयंकर देही ॥। देखत हृदय क्रोध भा तेही
दो० सखी संग लै कुंवरि तब चलि जनु राज मराल
देखति फिरै महीप सब। कर सरोज जय माल
जेहि दिशि बैठे नारद फूली। सो दिशि तेइ न बिलोकी भूली
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं देखि दशा हरगण मुसुकाहीं
धरि नृप तन तहं गयउ कृपाला कुंवरि हरषि मेली जय माला

दुलहिनि लै गो लक्षि निवासा नृप समाज सब भयेउ निरासा
मुनि अति विकल मोह मति नाठी मणि गिरि गई छूटि जनु गांठी
तब हर गण बोले मुसुकाई ॥ निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई
अस कहि दोउ भागे भय भारी। बदन दीख मुनि बारि निहारी।
भेष बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा तिनहिं श्राप दीन्हा अति गाढ़ा

दो० होहु निशाचर जाइ तुम कपटी पापी दोउ ॥ ॥
हँसेहु हमहिं सो लेहु फल बहुरि हँसेउ मुनि कोउ

पुनि जल दीख रूप निज पावा तदपि हृदय संतोष न आवा॥
फरकत अधर कोप मन माहीं। सपदि चले कमला पति पाहीं
दै हौं श्राप कि मरिहौं जाई। जगत मोर उपहास कराई॥
बीचहिं पंथ मिले दनु जारी। संग रमा सोइ राज कुमारी॥
बोले मधुर वचन सुर साईं॥ मुनि कहँ चले विकलकी नाईं
सुनत वचन उपजा अति क्रोधा माया बस न रहा मन बोधा
पर सम्पदा सकहु नहिं देखी। तुमरे इर्षा कपट विशेषी।
मथत सिंधु रुद्रहिं बौरायेहु। सुरन प्रेरि बिष पान करायहु

दो० असुर सुरा बिष शंकरहिं आपु रमा मणि चारु।
स्वारथ साधक कुटिल तुम सदा कपट व्यवहारु।

परम स्वतंत्र न शिर पर कोई। भावै मनहिं करहु तुम सोई।
भलेहिं मन्द मन्दहि भल करहू। बिसमय हर्ष नहिय कछु धरहू।
डहकि डहकि पर के सब काहू। अति अशंक मन सदा उछाहू
कर्म्म सुभासुभ तुमहिं न बाधा अब लगि तुमहिं न काहु साधा
भले भवन अब बायन दीन्हा। पावहुगे फल आपन कीन्हा
बंचेहु मांहिं जवन धरि देहा। सोइ तन धरहु श्राप मम येहा
कपि आकृति तुम कीन्ह हमारी करिहहिं कीस सहाइ तुमारी
मम अपकार कीन्ह तुम भारी। नारि विरह तुम होहु दुखारी।

दो० श्राप सीस धरि हरषि हिय प्रभु सुर कारज कीन्ह॥
निज माया की प्रबलता। करषि कृपा निधि लीन्ह॥
जब हरि माया दूरि निवारी ॥ नाहिं तहँ रमा न राज कुमारी।
तब मुनि अति सभीत हरि चरणा गहे पाहि प्रणतारति हरणा॥
मृषा होउ मम आप कृपाला। मम इच्छा कह दीन दयाला
मैं दुर्बचन कहेउं बहु तेरे। कह मुनि पाप मिटिहिं किमि मेरे
जपहु जाइ शंकर शत नामा। होइहि हृदय तुरत विश्रामा
कोउ नहिं शिव समान प्रिय मोरे असप्रतीति त्यागहु जनि भोरे
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी। सो न पाव मुनि भक्ति हमारी
अस उर धरि महि विचरहु जाई अब न तुमहिं माया नियराई
दो० बहु विधि मुनिहिं प्रबोधि प्रभु तब भये अंतर्ध्यान
सत्य लोक नारद चले। करत राम गुण गान।
हर गण मुनिहिं जात पथ देखी विगत मोह मन हर्ष विशेषी
अति सभीत नारद पहं आये। गहि पद आरत वचन सुनाये
हर गण हम न विप्र मुनि राया। बड़ अपराध कीन्ह फल पाया
श्राप अनुग्रह करहु कृपाला। बोले नारद दीन दयाला ॥
निशिचर जाइ होहु तुम दोऊ वैभव विपुल तेज बल होऊ
भुज बल विश्व जितब तुम जहिआ धरिहहिं विष्णु मनुज तन तहिआ
समर मरण हरि हाथ तुम्हारा। होइहहु मुक्त न पुनि संसारा
चले युगल मुनि पद सिर नाई। भये निशाचर कालहिं पाई
दो० एक कल्प एहि हेतु प्रभु ॥ लीन्ह मनुज अवतार।
सुर रंजन सज्जन सुखद। हरि भंजन भू भार ॥
एहि विधि जन्म कर्म हरि केरे। सुन्दर सुखद विचित्र घनेरे।
कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं चारु चरित नाना विधि करहीं
तब तब कथा मुनीशन गाई। परम विचित्र प्रबंध बनाई।

विविध प्रसंग अनूप बखाने। करहिं न सुनि आश्चर्य्य सयाने
हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहु विधि श्रुति संता।
राम चन्द्र के चरित सुहाये ॥ कल्प कोटि लगि जाहिं न गाये।
यह प्रसंग मैं कहा भवानी ॥ हरि माया मोहहिं मुनि ज्ञानी।
प्रभु कौतुकी प्रणत हित कारी। सेवत सुलभ सकल दुख हारी ॥
सो० सुर नर मुनि कोउ नाहिं। जेहि न मोह माया प्रबल
अस विचारि मन माहिं। भजिय महा मायापतिहिं
अपर हेतु सुनु शैलकुमारी। कहौं विचित्र कथा विस्तारी
जेहि कारण अज अगुण अनूपा ब्रह्म भये कोशल पुर भूपा ॥
जो प्रभु विपिन फिरत तुम देखा बंधु समेत किये मुनि वेषा ॥
जासु चरित अवलोकि भवानी सती शरीर रहिउ बौरानी ॥
अजहुं न छाया मिटत तुम्हारी तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी।
लीला कीन्ह जो तेहि अवतारा सो सब कहिहौं मति अनुसारा
भरद्वाज सुनि शंकर वानी ॥ सकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी
लगे बहुरि वरनै वृष केतू ॥ सो अवतार भयउ जेहि हेतू।
दो० सो मैं तुम सन कहौं सब सुनु मुनीश मन लाइ।
राम कथा कलि मल हरणि मंगल करणि सुहाइ।
स्वायंभु अरु मनु सत रूपा ॥ जिन तें भै नर सृष्टि अनूपा।
दंपति धर्म आचरण नीका। अजहूं गाव श्रुति जिनकी लीका
नृप उत्तान पाद सुत तासु ॥ ध्रुव हरि भक्त भये सुत जासु
लघु सुत नाम प्रिय व्रत ताही। वेद पुराण प्रशंसत जाही ॥
देव हूती पुनि तासु कुमारी। जो मुनि कर्दम की प्रिय नारी
आदि देव प्रभु दीन दयाला। जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला
सांख्य शास्त्र जिन प्रगट बखाना तत्त्व विचार निपुण भगवाना
तेइ मनु राज कीन्ह बहु काला। प्रभु आयसु बहु विधि प्रतिपाला।

सो० होइ न विषय विराग ॥ भवन वसतभा चौथपन
हृदय बहुत दुख लाग । जन्म गयउ हरिभक्ति बिन

बरबस राज सुतहिं तब दीन्हा । नारि समेत गवन बन कीन्हा ।
तीरथ वर नैमिष विख्याता ॥ अति पुनीत साधक सिधि दाता
बसहिं तहाँ मुनि सिद्ध समाजा तहँ हिय हरषि चले मनु राजा
पंथ जात सोहहिं मति धीरा ज्ञान भक्ति जनु धरे शरीरा ॥
पहुंचे जाइ धेनु मति तीरा । हरषि नहाने निर्म्मल नीरा ॥
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी धर्म्म धुरंधर ऋषि मुनि जानी
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाये । मुनिन सकल सादर करवाये
कृश शरीर मुनिपट परिधाना संत सभा नित सुनहिं पुराना

दो० द्वादश अक्षर मंत्र वर । जपहिं सहित अनुराग
वासुदेव पद पंकरुह । दंपति मन अति लाग ।

करहिं अहार शाक फल कंदा सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानन्दा ।
पुनि हरि हेतु करन तप लागे वारि अहार मूल फल त्यागे ।
उर अभिलाष निरन्तर होई । देखिय नयन परम प्रिय सोई
अगुण अखंड अनंत अनादी जेहि चिंतहिं परमारथ वादी ।
नेति नेति जेहि वेद निरूपा । चिदानन्द निरुपाधि अनूपा ।
शंभु विरंचि विष्णु भगवाना । उपजहिं जासु अंश ते नाना
ऐसे प्रभु सेवक बस अहहीं । भक्त हेतु लीला तनु गहहीं ।
जौ यह वचन सत्य श्रुति भाषा तौ हमार पूजहिं अभिलाषा

दो० इहि विधि बीते वर्ष षट सहस वारि आहार ॥
संवत सप्त सहस्र पुनि । रहे समीर अधार ॥

बरष सहस दश त्यागेउ सोऊ । ठाढ़े रहे एक पद दोऊ ॥
विधि हरि हर तप देखि अपारा मनु समीप आये बहु बारा
मांगहु वर बहु भांति लुभाये । परम धीर नहिं चलहिं चलाये

अस्थि मात्र होयरहे शरीरा ॥ तदपि मनागपिनहिंमनपीरा
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी। गति अनन्य तापस नृपरानी
माँगु माँगु वर भै नभ बानी। परम गंभीर कृपा मृत सानी
मृतक जिआवनि गिरा सुहाई श्रवण रंध्र होइ उर जब आई
हृष्ट पुष्ट तन भयेउ सुहाये। मानहुं अबहिंभवनते आये
दो॰ श्रवण सुधा सम वचन सुनि पुलक प्रफुल्लितगात
बोले मनु करि दंडवत ॥ प्रेम न हृदय समात ॥
सुनु सेवक सुर तरु सुर धेनू ॥ विधिहरि हर वन्दित पद रेनू
सेवत सुलभ सकल सुख दायक प्रणत पाल सचराचर नायक
जो अनाथ हित हम पर नेहू। तो प्रसन्न होय यह वर देहू।
जो स्वरूप बस शिव मन माँहीं जेहि कारण मुनि यतन कराहीं
जो भुसुंडि मन मानस हंसा ॥ सगुण अगुण जेहिनिगमप्रशंसा
देखहिं हम सो रूपभरि लोचन। कृपा करहु प्रणतारति मोचन
दंपति वचन परम प्रिय लागे। मृदुल विनीत प्रेम रस पागे
भक्त वछल प्रभु कृपा निधाना विश्व वास प्रगटे भगवाना
दो॰ नील सरोरुह नील मणि नील नीर धर श्याम।
लाजहिं तन शोभा निरखि कोटि कोटि शतकाम
शरद मयंक वदन छवि सींवा। चारु कपोल चिबुकदर ग्रीवा
अधर अरुण रद सुन्दर नासा। बिधु कर निकर बिनिंदक हासा
नव अंबुज अंबुक छवि नीकी। चितवन ललित भावते जीकी
भृकुटि मनोज चाप छविहारी तिलक ललाट पटलदुतिकारी
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा कुटिल केश जनु मधुप समाजा
उर श्री वत्स रुचिर बन माला ॥ पदिक हार भूषण मणि जाला
केहरि कंधर चारु जनेऊ ॥ बाहु बिभूषण सुन्दर तेऊ ॥
करि कर सरिस सुभग भुज दण्डा कटि निषंग कर शर कोदण्डा

दो० तड़ित विनिन्दक पीत पट उदर रेख वर तीनि ॥
नाभि मनोहर लेति जनु। यमुन भँवर छवि छीनि
पद राजीव वरणि नहिं जाहीं ॥ मुनि मन मधुप वसहिं जेहि माहीं
बाम भाग शोभित अनुकूला । आदि शक्ति छबिनिधि जगमूला
जासु अंश उपजहिं गुण खानी। अगणित उमा रमा ब्रह्मानी।
भृकुटि बिलास जासु जग होई। राम बाम दिशि सीता सोई ॥
छबि समुद्र हरि रूप बिलोकी । इक टक रहे नयन पट रोकी।
चितवहिं सादर रूप अनूपा । तृप्ति न मानहिं मनु शत रूपा।
हर्ष विवस तनु दशा भुलानी । परे दंड इव गहि पद पानी।
सिर परसे प्रभु निज पद कंजा । तुरत उठाये करुणा पुंजा ॥
दो० बोले कृपा निधान पुनि अति प्रसन्न मोहिं जानि
मांगहु वर जोइ भाव मन महा दानि अनुमानि।
सुनि प्रभु वचन जोरि युग पाणी धरि धीरज बोले मृदु वाणी
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे। अब पूजे सब काम हमारे।
एक लालसा बड़ि मन माहीं । सुगम अगम कहि जात सो नाहीं
तुमहिं देत अति सुगम गुसाईं। अगम लागु मोहिं निज कृपिनाई
यथा दरिद्र विवुध तरु जाई ॥ बहु संपति मांगत सकुचाई
तासु प्रभाव न जाने सोई ॥ । तथा हृदय मम संशय होई
सो तुम जानहु अन्तर यामी। पुर वहु मोर मनोरथ स्वामी।
सकुच विहाइ मांगु नृप मोहीं। मोरे नहिं अदेव कछु तोही
दो० दानि शिरोमणि कृपा निधि नाथ कहौं सतभाव।
चाहौं तुमहिं समान सुत। प्रभु सन कवन दुराव।
देखि प्रीति सुनि वचन अमोले। एव मस्तु करुणा निधि बोले ॥
आप सरिस खोजों कहँ जाई । नृप तव तनय होब मैं आई।
शत रूपहिं बिलोकि कर जोरे। देवि मांगु वर जो रुचि तोरे।

जो वर नाथ चतुर नृप मांगा । सोइ कृपालु मोहिं अति प्रिय लागा
प्रभु परन्तु सुठि होत ढिठाई । यदपि भक्त हित तुमहिं सुनाई
तुम ब्रह्मादि जनक जग स्वामी ब्रह्म सकल उर अन्तर यामी
अस समुझत मन संशय होई कहा जो प्रभु प्रमाण पुनि सोई
जे निज भक्त नाथ तव अहहीं जो सुख पावहिं सो गति लहहीं
सो० सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरण सनेहु
सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु मोहिं कृपा करि देहु
सुनि मृदु गूढ़ रुचिर वच रचना कृपा सिंधु बोले मृदु वचना
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं मैं सो दीन्ह सब संशय नाहीं।
मातु विवेक अलौकिक तोरे कबहुं न मिटिहि अनुग्रह मोरे
बन्दि चरण मनु कहेउ बहोरी अवर एक विनती प्रभु मोरी।
सुत विषयक तव पद रति होऊ मोहिं बरु मूढ़ कहै किन कोऊ
मणि बिनु फणि जिमि जल बिनु मीना मम जीवन तिमि तुमहिं अधीना
अस वर मांगि चरण गहि रहेऊ एव मस्तु करुणा निधि कहेऊ
अब तुम मम अनुशासन मानी बसहु जाइ सुरपति रजधानी
सो० तहं करि भोग विशाल। तात गये कछु काल पुनि
होइहहु अवध भुआल तब मैं होब तुम्हार सुत।
इच्छा मय नर भेष सँवारे ॥ होइहों प्रगट निकेत तुम्हारे।
अंशन सहित देह धरि ताता। करिहों चरित भक्त सुख दाता
जेहि सुनि सादर नर बड़ भागी भव तरिहहिं ममता मद त्यागी
आदि शक्ति जेहि जग उपजाया सोउ अवतरहि मोरि यह माया
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा। सत्य सत्य प्रण सत्य हमारा ॥
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना अन्तर्ध्यान भये भगवाना
दंपति उर धरि भक्ति कृपाला। तेहि आश्रम निवसे कछु काला।
समय पाय तनु तजि अनयासा। जाइ कीन्ह अमरावति वासा।

दो॰ यह इतिहास पुनीत अति उमहिं कहेउ वृषकेतु
भरद्वाज सुनु अपर पुनि। राम जन्म कर हेतु॥
सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी। जो गिरिजा प्रति शंभु बखानी।
विश्व विदित इक केकय देशू। सत्य केतु तहँ बसै नरेशू॥
धर्म धुरंधर नीति निधाना। तेज प्रताप शील बलवाना।
तेहि के भये युगल सुत बीरा। सब गुण धाम महा रण धीरा।
रजधानी जेठे सुत आही॥ नाम प्रताप भानु अस ताही
अपर सुतन अरि मर्दन नामा भुजबल अतुल अचल संग्रामा
भाइहि भाइहि परम प्रभीती। सकल दोष छल वर्जित प्रीती
जेठे सुतहिं राज नृप दीन्हा। हरि हित आपु गवनबन कीन्हा
दो॰ जब प्रताप रवि भयेउ नृप फिरी दोहाई देश।
प्रजा पाल अति वेद विधि कतहुँ नहीं अघ लेश
नृप हित कारक सचिव सुजाना नाम धर्म्म रुचि शुक्र समाना
सचिव सयान बंधु बल बीरा। आपु प्रताप पुंज रण धीरा।
सेन संग चतुरंग अपारा॥ अमित सुभट सब समर जुझारा
सेन विलोकि राउ हरषाना। अरु बाजे गह गहे निशाना।
विजय हेतु कटकाइ बनाई जहँ तहँ परी अनेक लड़ाई॥
सुदिन साधि नृप चल्यो बजाई जीते सकल भूप बरिआई
सप्त दीप भुज बल बस कीन्हा लै लै दण्ड छांड़ि नृप दीन्हा
सकल अवनि मंडल तेहि काला एक प्रतापभानु महिपाला
दो॰ स्ववस विश्व करि बाहु बल निज पुर कीन्ह प्रवेश
अर्थ धर्म कामादि सुख सेवहिं सबै नरेश॥
भूप प्रतापभानु बल पाई। काम धेनु भै भूमि सुहाई॥
सब दुख वर्जित प्रजा सुखारी धर्म्म शील सुन्दर नर नारी।
सचिव धर्म रुचि हरि पद प्रीती नृप हित हेतु सिखावत नीती।

गुरु सुर सन्त पितर महि देवा । करैं सदा नृप सब की सेवा
भूप धर्म जे वेद बखाने ॥ सकल करैं सादर सुख माने
दिन प्रति देइ विविध विधि दाना सुनैं शास्त्र वर वेद पुराना।
नाना वापी कूप तड़ागा । सुमन वाटिका सुन्दर बागा
विप्र भवन सुर भवन सुहाये । सब तीरथन विचित्र बनाये
दो० जहं लगि कहे पुराण श्रुति एक एक सब याग
वार सहस्र सहस्र नृप । किए सहित अनुराग
हृदय न कछु फल अनु संधाना भूप विवेकी परम सुजाना
करैं जो धर्म कर्म मन वानी । वासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी
चढ़ि वर वाजि वार इक राजा। मृगया कर सब साजि समा
विंध्याचल गंभीर वन गयऊ। मृग पुनीत बहु मारत भय
फिरत विपिन नृप दीख वराहू। जनु वन दुरे शशिहिं ग्रसि राहू
बड़ विधु नहिं समात मुख माहीं मनहुं क्रोध वस उगिलत नाहीं
काल कराल दशन छवि गाई। तनु विशाल पीवर अधिकाई
घुरुघुरात हय आरव पाये । चकित विलोकत कान उठाये
दो० नील महीधर शिखर सम देखि विशाल वराह ॥
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हांकि न होइ निबाह
आवत देखि अधिक रव बाजी चला वराह मरुत गति भाजी
तुरत कीन्ह नृप शर संधाना ॥ महि मिलि गयेउ विलोकत बाना
तकि तकि तीर महीश चलावा। करि छल सुअर शरीर बचावा
प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा । रिसि वस भूप चलेउ संग लागा
गयउ दूरि घन गहन वराहू ॥ जहं नाहीं गज वाजि निबाहू
अति अकेल वन विपुल कलेशू तदपि न मृग मग तजै नरेशू
कोल विलोकि भूप बड़ धीरा । भागि पैठ गिरि गुहा गंभीरा
अगम देखि नृप अति पछिताई फिरेउ महा वन परेउ भुलाई

दो॰ खेद खिन्न तिरषित क्षुधित राजा बाजि समेत।
खोजत व्याकुल सरित सर जल बिनु भयेउ अचेत

फिरत बिपिन आश्रम इक देखा तहँ बस न्रपति कपट मुनि वेषा
जासु देश न्रप लीन्ह छुड़ाई। समर सेन तजि गयेउ पराई
समय प्रताप भानु कर जानी। आपन अति असमय अनुमानी
गयउ न गृह मन बहुत गलानी मिला न राजहिं न्रप अभिमानी
रिसि उर मारि रंक जिमि राजा विपिन बसै तापस के साजा
तासु समीप गवन न्रप कीन्हा। यह प्रताप रवि तेइ तब चीन्हा
राउ त्रषित नहिं सो पहिचाना देखि सुभेष महा मुनि जाना
उतरि तुरग तें कीन्ह प्रणामा। परम चतुर न कहेउ निज नामा

दो॰ भूपति त्रषित बिलोकि तेइ सरवर दीन्ह देखाइ
मज्जन पान समेत हय। कीन्ह न्रपति हरषाइ

गै श्रम सकल सुखी न्रप भयऊ निज आश्रम तापस लैगयऊ
आसन दीन्ह अस्त रवि जानी। पुनि तापस बोला म्रदु बानी
को तुम कस बन फिरहु अकेले सुन्दर युवा जीव पर हेले
चक्रवर्ति के लक्षण तोरे॥ देखत दया लागि अति मोरे
नाम प्रतापभानु अवनीशा तासु सचिव मैं सुनहु मुनीशा
फिरत अहेरहिं परेउँ भुलाई। बड़े भाग्य देखेउँ पद आई
हम कहँ दुर्लभ दरश तुम्हारा॥ जानत हौं कछु भल होनिहारा
कह मुनि तात भयेउ अँधियारा योजन सत्तर नगर तुम्हारा

दो॰ निशा घोर गंभीर बन। पंथ न सूझ सुजान
बसहु आजु अस जान तुम जायहु होत विहान
तुलसी जस भवितव्यता तैसं मिलैं सहाइ॥
आपुन आवे ताहि पै। कि ताहि तहां लेजाय

भलेहि नाथ आयसु धरि शीशा बांधि तुरत तरु बैठ महीशा

नृप सब भांति प्रशंसेउ ताही चरण वंद्य निजभाग्य सराही
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई
मोहिं मुनीश सुत सेवक जानी नाथ नाम निज कहहु बखानी
तेहि न जान नृप नृपहिं सो जाना भूप सुहृदय सो कपट सयाना
बैरी पुनि क्षत्री पुनि राजा ॥ छल बल कीन्ह चहै निज काजा
समुझि राज सुख दुखित अराती अवा अनल इव सुलगै छाती
सरल वचन नृप के सुनि काना वयर संभारि हृदय हरषाना।

दो॰ कपट बोरि वाणी मृदुल बोलेउ युक्ति समेत ॥
नाम हमार भिखारि अब निरधन रहित निकेत ।

कह नृप जे विज्ञान निधाना तुम सारिख गलित अभिमाना
सदा रहहिं अपन पौ दुराये । सब विधि कुशल कुभेष बनाये
तेहि ते कहहिं संत श्रुति टेरे । परम अकिंचन प्रिय हरि केरे
तुम सम अधन भिखारि अगेहा होत बिरंचि शिवहिं सन्देहा
योसि सोसि तव चरण नमामी मोपर कृपा करिय अब स्वामी
सहज प्रीति भूपति की देखी। आप विषय विश्वास विशेषी
सब प्रकार राजहिं अपनाई बोलेउ अधिक सनेह जनाई
सुनसति भाव कहौं महिपाला इहां बसत बीते बहु काला।

दो॰ अबलगि मोहिं न मिलेउ कोउ मैं न जनायउं काहु
लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहु।

सो॰ तुलसी देख सुवेष । भूले मूढ़ न चतुर नर ॥
सुन्दर केकी पेख । वचन सुधा सम असन अहि

ताते गुप्त रहौं जग माहीं । हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं
प्रभु जानत सब विनहि जनाये। कहहु कवन सिधि लोक रिझाये
तुम सुचि सुमति परम प्रिय मोरे प्रीति प्रतीति मोहिं पर तोरे
अब जो तात दुरावौं तोहीं । दारुण दोष बढ़ै अति मोहीं

जिमि जिमि तापस कथै उदासा तिमि तिमि नृपहिं उपज विश्वासा
देखा स्ववस कर्म मन वानी। तब बोला तापस बक ध्यानी
नाम हमार एक तनु भाई । सुनि नृप बोलेउ पद सिर नाई
कहहु नाम कर अर्थ बखानी। मोहिं सेवक अति आपन जानी
दो० आदि सृष्टि उपजी जबै तब उतपति भइ मोरि
नाम एक तनु हेतु तेहि। देह न धरी बहोरि ॥
जनि आश्चर्य्य करहु मन माहीं सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं
तप बल ते जग सृजे विधाता तप बल विष्णु भये परित्राता
तपबल शंभु करहिं संहारा । तप तें अगम न कछु संसारा
भयउ नृपहिं सुनि अति अनुरागा कथा पुरातन कहे सो लागा
कर्म धर्म इतिहास अनेका । करे निरूपण विरति विवेका
उद्भव पालन प्रलय कहानी। कहेसि अमित आश्चर्य बखानी
सुनि महीश तापस बस भयऊ आपन नाम कहन तब लयऊ
कह तापस नृप जानौं तोहीं। कीन्हेउ कपट लाग भल मोहीं
सो० सुनु महीश अस नीति। जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप
मोहिं तोहिं पर अति प्रीति परम चतुरता निरखि तव
नाम तुम्हार प्रताप दिनेशा ।। सत्य केतु तव पिता नरेशा
गुरु प्रसाद सब जानिय राजा। कहिय न आनहिं जानि अकाजा
देखि तात तव सहज सुधाई। प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई
उपजि परी ममता मन मोरे ।। कहेउँ कथा निज बूझे तोरे।
अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं । मांगु जो भूप भाव मन माहीं
सुनि सुवचन भूपति हरषाना। गहि पद विनय कीन्ह विधि नाना।
कृपा सिंधु मुनि दरशन तोरे। चारि पदारथ करतल मोरे।
प्रभुहिं तथापि प्रसन्न विलोकी मांगि अगम वर होउँ अशोकी
दो० जरा मरण दुख रहित तन समर न जीतै कोउ।

एक छत्र रिपुहीन महि। राज कल्प शत होउ।

कह तापस नृप ऐसइ होऊ॥ कारण एक कठिन सुन सोऊ
कालौ तव पद नाइहि शीशा। एक विप्र कुल छांड़ि महीशा
तपवल विप्र सदा वरियारा। तिनके कोपन कोउ रखवारा
जौं विप्रन बस करहु नरेशा। तौ तव बस विधि विष्णु महेशा
चलन ब्रह्म कुल सें बरिआई सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई
विप्र श्राप बिनु सुनु महिपाला तोर नाश नहिं कवनिहुं काला
हरषे उराउ वचन सुनि तासू। नाथन होइ मोर अब नासू
तव प्रसाद प्रभु कृपा निधाना मो कहं सर्व काल कल्याना

दो० एवमस्तु कहि कपट मुनि बोला कुटिलवहोरि
मिलब हमार भुलाव जनि कहहु तो मोरि न खोरि

तातें मैं तोहि वर जौं राजा। कहे कथा तव परम अकाजा
छठे श्रवण यह परत कहानी नाश तुम्हार सत्य मम बानी
यह प्रगटे अथवा द्विजश्रापा। नाश तोर सुनु भानुप्रतापा
आन उपाय निधन तव नाहीं। जौं हरिहर कोपहिं मन माहीं
सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा द्विज गुरु कोप कहहु को राखा
राखै गुरु जो कोप विधाता। गुरु विरोध नहिं कोउ जग त्राता
जो न चलब हम कहे तुम्हारे। होइ नाश नहिं सोच हमारे
एकहि डर डरपत मन मोरा॥ प्रभु महिदेव श्राप अति घोरा

दो० होहिं विप्र बस कवन विधि कहहु कृपा करि सोउ
तुम तजि दीनदयाल निज हितू न देखौं कोउ।

सुन नृप विविध यतन जग माहीं कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं
अहै एक अति सुगम उपाई। तहां परन्तु एक कठिनाई॥
मम आधीन युक्ति नृप सोई। मोर जाब तव नगर न होई
आज लगें अरु जबतें भयऊं। काहू के गृह ग्राम न गयऊं

जो न जाव तव होइ अकाजू। बना आइ असमंजस आजू।
सुनि महीप बोले मृदु बानी। नाथ निगम असनीति बखानी
बड़े सनेह लघुन पर करहीं। गिरिनिज सिरन सदा तृण धरहीं
जलधि अगाध मौलि बह फेनू। संतत धरणि धरत सिर रेनू।
दो॰ अस कहि गहे नरेश पद स्वामी होहु कृपालु।
मोहिं लागि दुख सहिय प्रभु सज्जन दीन दयालु
जानि नृपहिं आपन आधीना। बोला तापस कपट प्रवीना।
सत्य कहौं भूपति सुनु तोहीं। जग महँ नहिं दुर्लभ कछु मोहीं
अवशि काज मैं करिहौं तोरा। मन क्रम वचन भक्त तैं मोरा
योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ। फले तबहिं जब करिय दुराऊ
जो नरेश मैं करउं रसोई ॥ तुम परसहु मोहिं जानन कोई
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई
पुनि तिनके गृह जेवै जोई। तव बस होइ भूप सुनु सोई।
जाइ उपाय रचहु नृप येहू। संवत भरि संकल्प करेहू॥
दो॰ नित नूतन द्विज सहस शत वरेहु सहित परिवार
मैं तुम्हरे संकल्प लगि दिनहिं करब जेवनार
इहि विधि भूप कष्ट अति थोरे होइहहिं सकल विप्रवस तोरे
करिहहिं विप्र होम मख सेवा तेहि प्रसंग सहजहिं वस देवा
और एक तोहि कहौं लखाऊ मैं यहि भेष न आउब काऊ।
तुम्हरे उपरोहित कहं राया। हरि आनब मैं करि निज माया
तप बल तेहि करि आपु समाना रखिहौं इहां वरष परमाना
मैं धरि तासु वेष सुनु राजा। सब विधि तोर सवांरब काजा
गै निशि बहुत शयन अब कीजे मोहिं तोहिं भूप भेंट दिन तीजे
मैं तप बल तोहि तुरग समेता। पहुंचैहौं सोवतहि निकेता
दो॰ मैं आउब सोइ भेष धरि पहिचानेहु तब मोहिं।

जब एकांत बुलाइ सब कथा सुनाऊँ तोहिं ।
शयन कीन्ह नृप आयसु मानी आसन जाइ बैठ छल ज्ञानी
श्रमित भूप निद्रा अति आई । सो किमि सोव शोच अधिकाई
काल केतु निशिचर तहँ आवा जेहि सूकर होइ नृपहि भुलावा
परम मित्र तापस नृप केरा ॥ । जानै सो अति कपट घनेरा ॥
तेहि के शत सुत अरु दश भाई खल अति अजय देव दुखदाई
प्रथमहिं भूप समर सब मारे ॥ विप्र संत सुर देखि दुखारे
तेहि खल पाछिल बयर संभारा । तापस नृप मिलि मंत्र विचारा
जेहि रिपु क्षय सोइ रचेसि उपाऊ भावी बस न जान कछु राऊ
दो॰ रिपु तेजसी अकेल अति लघु करि गणिय न ताहु
अजहुँ देत दुख रवि शशिहिं शिर अवशेषित राहु
तापस नृप निज सखहि निहारी हरषि मिलेउ उठि भयउ सुखारी
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई । यातु धान बोला सुख पाई
अब साधेउं रिपु सुनहु नरेशा । जो तुम कीन्ह मोर उपदेशा
परि हरि शोच रहहु तुम सोई ॥ बिनु औषधहिं व्याधि विधि खोई
कुल समेत रिपु मूल बहाई ॥ चौथे दिवस मिलब मैं आई
तापस नृपहिं बहुत परि तोषी । चला महा कपटी अति रोषी
भानु प्रतापहिं बाजि समेता । पहुंचायेसि सोवतहिं निकेता
नृपहिं नारि पहं शयन कराई । हय गृह बांधेसि बाजि बनाई
दो॰ राजा के उपरोहितहिं । हरि लै गयउ बहोरि ।
लै राखेसि गिरि खोह महं माया करि मति भोरि ।
आपु विरन्चि उपरोहित रूपा । परा जाइ तेहि सेज अनूपा ।
जागेउ नृप अन भयउ बिहाना देखि भवन अति अचरज माना
मुनि महिमा मन महं अनुमानी उठे गवहिं जेहि जान न रानी
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही ॥ पुर नर नारि न जानेउ केही ।

गये याम युग भूपति आवा । घर घर उत्सव बाजु बधावा
उपरोहितहिं दीख जब राजा । चकित विलोकि सुमिरि सोइ काजा
युग सम नृपहिं गए दिन तीनी कपटी मुनिपद रह मति लीनी
समय जानि उपरोहित आवा । नृपहि मतो सब कहि समुझावा
दो॰ नृप हर्षे पहिचानि गुरु भ्रम बस रहा न चेत ।
बरे तुरत शत सहस वर । विप्र कुटुंब समेत ॥
उपरोहित जेवनार बनाई । छ रस चारि विधि जस श्रुति गाई
मायामय तेइ कीन्ह रसोई । व्यंजन बहु गनि सकै न कोई
विविध मृगन कर आमिष रांधा तेहि महँ विप्र मांसु खल साधा
भोजन कहँ सब विप्र बुलाये । पद पखारि सादर बैठाये ॥
परसन लागु जबहि महिपाला भइ अकाश बाणी तेहि काला
विप्र वृन्द उठि उठि गृह जाहू । है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू
भयउ रसोई भू सुर मासू ॥ । सब द्विज उठे मानि विश्वासू
भूप विकल मति मोह भुलानी । भावी वस न आव मुख बानी
दो॰ बोले विप्र सकोप तब । नहिं कछु कीन्ह विचार
जाइ निशाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार ।
क्षत्रि बंध तें विप्र बोलाई ॥ घाले लिये सहित समुदाई
ईश्वर राखा धर्म हमारा ॥ । जैहसि तैं समेत परिवारा
संवत मध्य नाश तव होऊ । जल दाता न रहहिं कुल कोऊ
नृप सुनि श्राप विकल अति त्रासा भइ बहोरि वर गिरा अकाशा
विप्रहु श्राप विचारि न दीन्हा । नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा
चकित विप्र सब सुनि नभ बानी भूप गये जहँ भोजन खानी
तहँ न अशन नहिं विप्र सुआरा । फिरेउ राउ मन शोच अपारा
सब प्रसंग महिसुरन सुनाई ॥ त्रसित परेउ अवनी अकुलाई
दो॰ भूपति भावी मिटै नहिं । यदपि न दूषण तोर ॥

किये अन्यथा होइ नहिं विप्र श्राप अति घोर ॥
अस कहि सब महि देव सिधाये समाचार पुर लोगन पाये ॥
शोचहिं दूषण दैवहिं देही ॥ विरचत हंस काक किय जेही
उपरोहितहिं भवन पहुंचाई असुर तापसहिं खबरि जनाई ।
तेहि खल जहं तहं पत्र पठाये सजि सजि सेन भूप सब आये ।
घेरिन्ह नगर निशान बजाई । विविधि भांति नित होति लराई
जूझे सकल सुभट कै करणी ॥ बंधु समेत परे नृप धरणी ॥ ॥
सत्य केतु कुल कोइन बांचा । विप्रश्राप किमि होइ असांचा
रिपुहिं जीति नृप नगर बसाई । निज निज पुर गये जय जस पाई ।
दो० भरद्वाज सुनु जाहि जब होत विधाता वाम ॥ ॥
धूरि मेरु सम जनक यम ताहि व्याल सम दाम ॥
काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा भयउ निशाचर सहित समाजा
दश शिर ताहि बीस भुज दंडा । रावण नाम बीर बरि बंडा ॥
भूप अनुज अरि मर्दन नामा । भयेउ सो कुंभ कर्ण बल धामा ॥
सचिव जो रहा धर्म रुचि जासू भयउ विमात्र बंधु लघु तासू ।
नाम बिभीषण जेहि जग जाना विसुभक्त विज्ञान निधाना ।
रहे जे सुत सेवक नृप केरे ॥ भये निशाचर घोर घनेरे ॥ ॥
काम रूप खल जिनिस अनेका कुटिल भयंकर विगत विवेका ॥
कृपा रहित हिंसक सब पापी । वरणि न जाय विश्व परितापी ।
दो० उपजे यदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप ।
तदपि महीसुर श्रापवस भये सकल अघ रूप ।
कीन्ह विविधि तप तीनों भाई परम उग्र सो वरणि न जाई ।
गयउ निकट तप देखि विधाता मांगहु वर प्रसन्न मैं ताता ।
करि विनती पद गहि दश शीशा बोलेहु वचन सुनहु जगदीशा
हम काहू कर मरहिं न मारे ॥ बानर मनुज जाति दुइ बारे ।

एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा। मैं ब्रह्मा मिलि तेहि वर दीन्हा।
पुनि प्रभु कुंभकर्ण पहं गयऊ। तेहि विलोकि मन विसमय भयऊ।
जो यह खल नित करब अहारा। होइहि सब उजारि संसारा॥
शारद प्रेरि तासु मति फेरी॥ मांगेसि नींद मास षट केरी॥
दो० गयेउ विभीषण पास तब कहा पुत्र वर मांग॥
तेहि मांगेउ भगवंत पद कमल अमल अनुराग
तिनहिं देइ वर ब्रह्म सिधाये। हर्षित ते अपने गृह आये।
मय तनुजा मंदोदरि नामा॥ परम सुन्दरी नारि ललामा।
सोइ मय दीन्ह रावणहिं आनी भई सो यातुधान पति रानी।
हर्षित भयउ नारि भलि पाई पुनि दोउ बंधु विवाहेसि जाई
गिरि त्रिकूट इक सिंधु मझारी विधि निर्मित दुर्गम अति भारी
सोइ मय दानव बहुरि संवारा। कनक रचित मणिभवन अपारा
भोगवती जस अहिकुलवासा अमरावति जस शक्र निवासा
तिनतें अधिक रम्य अति बंका जग विख्यात नाम तेहि लंका
दो० खाईं सिंधु गंभीर अति चारिउ दिशि फिरि आव
कनक कोट मणि खचित दृढ़ बरणि न जाइ बनाव
हरि प्रेरित तेहि कल्प जोइ यातुधान पति होय।
शूर प्रतापी अतुल बल दल समेत बस सोय॥।
रहे तहां निशिचर भट भारे॥। ते सब सुरन समर संहारे॥।
अब तहं रहहिं शक्र के प्रेरे। रक्षक कोटि यक्ष पति केरे
दशमुख कतहुं खबरि अस पाई सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई।
देखि विकट भट बड़ि कटकाई यक्ष जीव ले चले पराई।
फिरि सब नगर दशानन देखा गयउ शोच सुख भयउ विशेषा
सुन्दर सहज अगम अनुमानी कीन्ह तहां रावण रजधानी
जेहि जस योग बांटि गृह दीन्हे सुखी सकल रजनीचर कीन्हे

एक बार कुबेर पहं धावा ॥ पुष्पक यान जीति ले आवा।
दो॰ कौतुकही कैलाश पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ।
मनहुं तौलि भट बाहु बल चला अधिक सुख पाइ
सुख संपति सुत सेन सहाई। जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई।
नित नूतन सब बाढ़त जाई॥ जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई
अति बल कुंभ कर्ण अस भ्राता। जेहि कहँ नहिं प्रतिभट जग जाता
करि मद पान सोवै षट मासा॥ जागत होइ तिहूं पुर त्रासा॥
जो दिन प्रति अहार करु सोई। विश्व वेगि सब चौपट होई॥
समर धीर नहिं जाइ बखाना। तेहि सम अधिक न कोउ बलवा
वारिद नाद जेठ सुत तासू॥ भट महँ प्रथम लीक जग जासू
जेहि न होइ रण सन्मुख कोई। सुरपुर नितहिं परावन होई।
सो॰ कुमुख अकंपन कुलिश रद धूम्रकेतु अतिकाय
एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय॥
काम रूप जानहिं सब माया। सपनेहुं जिनके धर्म न दाया
दशमुख बैठ सभा इक बारा। देखि अमित आपन परिवारा
सुत समूह जन परिजन नाती गनै को पार निशाचर जाती।
सेन विलोकि सहज अभिमानी बोला वचन क्रोध मद मानी।
सुनहु सकल रजनीचर यूथा। हमरे वैरी विबुध वरूथा॥
ते सन्मुख नहिं करहिं लराई। देखि सकल रिपु जाहिं पराई
तिन कर मरण एक विधि होई। कहौं बुझाइ सुनहु अब सोई
द्विज भोजन मख होम सराधा सब कर जाइ करहु तुम बाधा
दो॰ क्षुधा क्षीण बल हीन सुर सहजहिं मिलिहहिं आइ
तब मारिहौं कि छाड़िहौं भली भांति अपनाइ
मेघ नाद कहँ पुनि हँकरावा। दीन्ह सीख बल बयर बढ़ावा
जे सुर समर धीर बलवाना। जिनके लरिबे को अभिमाना।

तिनहिं जीति रण आनेसि बांधी उठि सुत पितु अनुशासन साधी
इहि विधि सबहीं आज्ञा दीन्हा । आपुन चलेउ गदा कर लीन्हा
चलत दशानन डोलत अवनी गर्जत गर्भ स्रवत सुर रवनी ।
रावण आवत सुनेउ सकोहा । देवन तकेउ मेरु गिरि खोहा
दिगपालन के लोक सिधाये । सूने सकल दशानन पाये ॥
पुनि पुनि सिंह नाद करि भारी देइ देवतान गारि प्रचारी ।
रण मद मत्त फिरै जग धावा । प्रति भट खोजत कतहुं न पावा

क्षेपक

नारद मिले कहेसि मुसुकाई ॥ देव कहां मुनि देहु दिखाई ।
सुनत अनख नारदहि न भावा । स्वेत द्वीप तिहि तुरत पठावा ।
सागर उतरि पारसो गयऊ ॥ नारि वृन्द तहं देखत भयऊ
तिन्ह सन कहा पतिन्ह पहं जाइ कहेउ कि आव निशाचर नाह
तब मैं तिनहिं जीति संग्रामा । लै जैहौं तुम कहं निज धामा
सुनत वचन एक अहह रिसानी । धाइ चरण गहि गगन उड़ानी
गई दूरि धरि धरि झकझोरा ॥ डारिसि सिंधु मध्य अति जोरा

दो० गयो पताल अचेत ह्वै । मरै न विप्र प्रसाद ॥
सावधान उठि गर्जि पुनि हिये न हरष विषाद ।

जीतेसि नाना नगर सब भारी । गयो बहुरि बलि लोक सुरारी ।
बामन रावण आवत जाना ॥ किये देव ऋषि सन अपमाना
खेलत रहे नगर शिशु नाना ॥ निज बल तिनहिं दीन्ह भगवाना
धाइ धरा तिन पुर लै आये । नगर नारि नर देखन धाये ॥
बीस बाहु दश कन्धर भाई ॥ विधि यह गढ़ेनि कहां की आई
शिशुन बांधि खिझावहिं भारी । नाम न कहै सहै बरु मारी ॥
बामन दीख बहुत सकुचाना । तब छुड़ाइ दिय कृपानिधाना
चला तुरत निशाचर नाहा ॥ लाज शंक कछु नहिं मन माहा

दो॰ अति निर्लज्ज दया रहित। हिंसा पर अति प्रीति।
रामविमुख दशकंध शठ। तापर चाहत जीति।
भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ विधाता वाम॥
मणिहु कांच होइ जाइ तब लहै न कौड़ी दाम।
जहँ कहुं फिरत देव द्विज पावै। दण्ड लेइ बहु त्रास दिखावै
इहि आचरण फिरै दिन राती। महा मलिन मन खल उतपाती
बहुरि तुरत पंपापुर आवा। बालि नाम कपिपति जिहि ठावा
अवलोकेसि इक सर वर शोभा। जिहि पन महा मुनिहुँ कर लोभा।
तहां कपीश करै निज ध्याना। दशकन्धर हि देखि मुसुकाना
तब रावण बोला करि क्रोधा। बक ध्यानी कपि मूढ़ बिन बोधा
नाम तोर सुनि आयउं धाई। दे कपि युद्ध छांड़ि कदराई।
दो॰ मोहिं जीति विनु समर सुनु वृथा ध्यान तव कीस।
कटकटाइ कह रजनिचर रदन तीनि से बीस॥
बालि कहा हठि करिय न रारी। दशकंधर घर जाहु विचारी
बल तुम्हार ऐसोइ है भाई। अजय चारि दिशि मैं सुनि पाई
इहि विधि बालि बहुत समुझावा कवनिहु भांति बोध नहिं आवा
तब सकोप उठि झपटि कपीशा दशहि कांख चापि दशशीशा
बालिहि बिसरि गई सुधि ताहू इहि विधि विगत भये बहु मासू
एक दिवस रवि अंजुलि साजा कांख ते निसरि दशानन भाजा
निलज अशंक आव पुनि तहवां करै जल केलि सहस भुज जहवां
दो॰ छोभेउ जल भुज बीस बल बूड़न लगी समाज।
सहस बाहु अति क्रोध मन मोहिं सम आन को आज
जाइ दीख तहँ रावण ठाढ़ा॥ जासु विपुल भुज बल जल बाढ़ा
माया प्रबल महा बल भारी। लंकेश्वर कहं धरिसि प्रचारी।
निरखि तियन आचरज विशाला बांधि राखि केहु दिन हयशाला

लज्जित दुष्ट मष्ट करि रहई ॥। गिसि उर मारि कष्ट बहु सहई ।
सकल आइ देखहिं नर नारी। मारहिं लात हंसैं दै तारी ॥
नाम न कहै रहै सकुचाना । बहुविधि पूछै नृपति सुजाना
नृत्य करैं रंभा इक नारी ॥। दशहुं माथ दश दीपक धारी
मुनि पुलस्त्य तब जाइ छुड़ावा। पुनि नलशाप आयतिहिपावा
दो० मारग जात देखि अति। अनुपम सुन्दरि नारि।
चन्दन पुष्प पत्र कर ॥। पूजन चलि त्रिपुरारि।
देखि उर्वसी मन सकुचानी ॥ तब रावण बोला मृदु बानी।
को तुम नारि गमन कहं कीन्हा लज्जा बस तिहिं उत्तर न दीन्हा
मन मद मत्त विचार न करेऊ। धनपति पुत्र बधू कर धरेऊ।
चीन्हि ताहि पुनि शंका आई। घाटि कर्म कीन्हीं पछिताई।
मन पूछि लाय शोच उर भयऊ लंकेश्वर लंका कहं गयऊ
विकल उर्वसी अलकहिं आई नलकूबर मन बात जनाई
दीन्ह शाप तिन क्रोध अपारा रावण वंश होइ क्षय कारा
चली शाप लंका कहं आई । दशकंधर बैठा जिहिं ठाईं ॥
आगे आइ ठाढ़ि भइ शापा ॥। निरखि दशानन अतिभय कांपा
दो० शापहिं अंगीकार करि मन महं कीन्ह विचार
दण्ड ऋषिन्ह मे लीन्ह नहिं रोषेउ लंक भुआर।
दूत चारि पठए ऋषि आश्रम निरखि बिसरगा मुनि अधि आत
तिन सन तब पूछहिं मुनि हाला कहहु कुशल लंकेश भुआला
कुशल तासु यह सुनहु मुनीशा कर तुम सन चाहत दश सीशा
सुनि सो वचन महा भय पाई ॥ करहिं विचार विरति विमराई
जेहि दरबार नीति नहिं भाई । खलमण्डली जुरी तहं आई।
कछु विन दियेनहीगति आछी घर भरि रुधिर दियेतनपाछी
दूतन्ह सौंपि कहा मुनि ज्ञानी ॥ भूपहिं कहेउ जाय यह बानी

दो० घर उघरत क्षय होइहहु सहित सकल परिवार ॥
दूत तुरत घर ले गये लंका पति दरबार ॥ * ॥ * ॥

रावण घट लखि परम हुलासा। तव दूतन मुनि वचन प्रकाशा
सुनि मुनि शाप उपज उर दाहू। बोला घट लै उत्तर जाहू ॥
यतन समेत धरनि धरि एहू ॥ जानि न पाव बात यह केहू ॥
लेइ घट जनक नगर ते गये। गाड़त क्षेत्र मध्य तहं भये।
जनक यज्ञ रचना तहं ठयऊ। चामीकर हल करषत भयऊ
प्रगट अवनि तें ऋषय कुमारी कन्या कहि लीन्ही उर धारी।
नाम जानकी परम पुनीता ॥ नारद आइ कहा पुनि सीता
कहि सु कथा ऋषिराउ सिधाये बहुरि दूत लंका पुर आये
चारि ठांव हारा, लंकेशा ॥ देवन को बहु देत कलेशा।

इति

रवि शशि पवन वरुण धनुधारी अगिनि काल यम सब अधिकारी
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा। हठि सब ही के पंथहि लागा।
ब्रह्म सृष्टि जहं लगि तनुधारी। दशमुख बसवर्ती नर नारी॥
आयसु करहिं सकल भयभीता नवहिं आइ निति चरण विनीता

दो० भुजबल विश्व वश्य करि राखेसि कोउ न स्वतंत्र।
मण्डलीक महि रावण। राज करै निज मंत्र॥
देव यक्ष गन्धर्व नर ॥ किन्नर नाग कुमारि।
जीति वरीं निज बाहुबल बहु सुन्दरि वर नारि॥

इन्द्रजीत सन जो कछु कहेऊ। सो सब जनु पहिले करि रहेऊ
प्रथमहिं जिन कहं आयसु दीन्हा तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा
देखत भीम रूप सब पापी ॥ निशिचर निकर देव परितापी
करहिं उपद्रव असुर निकाया। नाना रूप धरहिं करि माया।
जेहि विधि होइ धर्म निर्मूला। सो सब करहिं वेद प्रतिकूला

जेहि जेहि देश धेनु द्विज पावहिं। नगर ग्राम पुर आगि लगावहिं
शुभ आचरण कतहुं नहिं होई। वेद विप्र गुरु मान न कोई॥
नहिं हरि भक्ति यज्ञ तप ज्ञाना। सपनेहुं सुनियन वेद पुराना।

छं॰ जप योग विरागा तप मख भागा श्रवण सुनै दशशीशा।
आपुन उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीसा॥
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिय नहिं काना।
तेहि बहु विधि त्रासै देश निकासै जो कह वेद पुराना

सो॰ बरणि न जाय अनीति। घोर निशाचर जो करहिं।
हिंसा पर अति प्रीति। तिनके पापहि कवन मिति

बाढ़े बहु खल चोर जुआरी॥ जे लम्पट पर धन पर नारी॥
मानहिं मातु पिता नहिं देवा॥ साधुन सों करवावहिं सेवा॥
जिन के यह आचरण भवानी। ते जानहु निशिचर सब प्रानी
अतिशय देखि धर्म की हानी। परम सभीत धरा अकुलानी।
गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही। जस मोहिं गरुअ एक परद्रोही
सकल धर्म देखहिं विपरीता। कहि न सकै रावण भय भीता
धेनु रूप धरि हृदय विचारी॥ गई तहां जहं सुर मुनि झारी।
निज संताप सुनायेसि रोई॥ काहू ते कछु काज न होई॥

छं॰ सुर मुनि गंधर्वा मिलि करि सर्वा गये विरंचि के लोका
संग गोतनु धारी भूमि विचारी परम विकल भय शोका
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मेरो कछु न बसाई॥
जाकरि तैं दासी सो अविनाशी हमरो तोर सहाई

सो॰ धरणि धरहु मन धीर। कह विरंचि हरि पद सुमिरि
जानत जन की पीर॥ प्रभु भंजहिं दारुण विपति

बैठे सुर सब करहिं विचारा॥ कहँ पाइय प्रभु करिय पुकारा।
पुर बैकुण्ठ जान कह कोई॥ कोइ कह पय निधि महँ बसु सोई

जाके हृदय भक्ति जस प्रीती ॥ प्रभु तेहि प्रगट सदा यह रीती
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊं ॥ अवसर पाय वचन इक कहेऊं
हरि व्यापक सर्वत्र समाना ॥ प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना।
देश काल दिशि बिदिशिहु माहीं कहहु सो कहां जहां प्रभु नाहीं
अग जग मय सब रहित बिरागी पवन ते प्रगट होहि जिमि आगी
मोर वचन सब के मन माना ॥ साधु साधु करि ब्रह्म बखाना।

दो॰ सुनि बिरंचि मन हर्ष तन। पुलक नयन बह नीर ॥
अस्तुति करत स जोरि कर सावधान मति धीर ॥

छं॰ जय जय सुरनायक जन सुख दायक प्रणत पाल भगवंता
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधु सुता प्रिय कंता
पालन सुर धरणी अद्भुत करणी मर्म न जानैं कोई ॥
जो सहज कृपाला दीन दयाला करौ अनुग्रह सोई
जय जय अविनाशी सब घट वासी व्यापक परमानन्दा
अभिगति गो तीता चरित पुनीता माया रहित मुकुन्दा
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनि वृन्दा
निशि वासर ध्यावहिं हरि गुण गावहिं जयति सच्चिदानंदा
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा
सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा
जो भव भय भंजन जन मन रंजन गंजन विपति वरूथा।
मन वच क्रम वानी छांड़ि सयानी शरण सकल सुर यूथा
शारद श्रुति शेषा ऋषय अशेषा जाकहं कोउ न जाना
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवो सो श्री भगवाना।
भव वारिध मन्दर सब विधि सुन्दर गुण मंदिर सुख पुंजा
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा

दो॰ जानि सभय सुर भूमि सुनि वचन समेत सनेह ॥

गगन गिरा गंभीर भइ। हरणि शोक सन्देह॥
जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा। तुमहिं लागि धरिहौं नर भेशा॥
अंशनि सहित मनुज अवतारा। लैहौं दिन कर वंश उदारा।
कश्यप अदिति महा तप कीन्हा तिन कहं मैं पूरब वर दीन्हा
ते दशरथ कौशल्या रूपा॥ कोशल पुरी प्रगट नर भूपा।
तिन के गृह अवतरिहौं जाई। रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई
नारद वचन सत्य सब करिहौं। परम शक्ति समेत अवतरिहौं
हरिहौं सकल भूमि गरु आई। निर्भय होहु देव समुदाई॥
गगन ब्रह्म वाणी सुनि काना। तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना
तब ब्रह्मा धरणिहि समुझावा अभय भई भरोस जिय आवा।
दो० निज लोकहि विरंचि गये देवन्ह इहै सिखाय॥
बानर तनु धरि धरणि महं हरि पद सेवहु जाय।
गये देव सब निज निज धामा। भूमि सहित पाये विश्रामा॥
जो कछु आयसु ब्रह्मै दीन्हा। हर्षे देव विलंब न कीन्हा॥
बनचर देह धरी क्षिति माहीं। अतुलित बल प्रताप तिन पाहीं
गिरि तरु नख आयुध सब वीरा हरि मारग चितवहिं रणधीरा
गिरि कानन जहं तहं भरि पूरी। रहे निज निज अनीक रचि रूरी
यह सब रुचिर चरित मैं भाषा। अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा
अवधपुरी रघुकुल मणि राऊ वेद विदित तेहि दशरथ नाऊ।
धर्म धुरंधर गुण निधि ज्ञानी। हृदय भक्ति मति सारंग पानी।
दो० कौशल्यादि नारि प्रिय सब आचरण पुनीत॥
पति अनुकूल प्रेम दृढ़। हरि पद कमल विनीत।
एक बार भूपति मन माहीं॥ भै गलानि मोरे सुत नाहीं॥
गुरु गृह गये तुरत महिपाला। चरण लागि करि विनय विशाला
निज दुख सुख रूप गुरुहिं सुनायउ कहि वशिष्ठ बहु विधि समझायउ

धरहु धीर होइहैं सुत चारी। त्रिभुवन विदित भक्त भय हारी।
शृंगीऋषिहि वशिष्ट बुलावा। पुत्रलागि शुभ यज्ञ करावा ॥
भक्ति सहित मुनि आहुति दीन्हे प्रगटे अगिनि चारु कर लीन्हे
जो वशिष्ट कछु हृदय विचारा। सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा।
यह हवि बांटि देहु नृप जाई। यथा योग जेहि भाग बनाई

दो० तब अदृश्य पावक भये सकल सभहि समुझाइ
परमानन्द मगन नृप। हर्ष न हृदय समाइ ॥

तबहिं राउ प्रिय नारि बुलाईं। कौशल्यादि तहां चलि आईं।
अर्द्ध भाग कौशल्यहिं दीन्हा उभय भाग आधे कर कीन्हा
कैकेयी कहँ नृप सो दयउ ॥ रहेउ सो उभय भाग पुनि भयऊ
कौशल्या कैकयी हाथ धरि ॥ दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि
इहि विधि गर्भ सहित सब नारी भयउ हृदय हर्षित सुख भारी
जा दिन तें हरि गर्भहिं आये ॥ सकल लोक सुख संपति छाये
मन्दिर महं सब राजहिं रानी। शोभा शील तेज की खानी।
सुख युत कछुक काल चलि गयऊ जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ

दो० योग लगन ग्रह वार तिथि सकल भये अनुकूल
चर अरु अचर हर्ष युत। राम जन्म सुख मूल ॥

नवमी तिथि मधुमास पुनीता। शुक्ल पक्ष अभिजित्त हरि प्रीता
मध्य दिवस अति शीत न घामा पावन काल लोक विश्रामा
शीतल मन्द सुरभि बह बाऊ। हर्षित सुर संतन मन चाऊ
बन कुसुमित गिरिगण मणियारा स्रवहिं सकल सरितामृतधारा
सो अवसर विरंचि जब जाना चले सकल सुर साजि विमाना
गगन विमल संकुल सुर यूथा गावहिं गुण गंधर्व बरूथा
बर्षहि सुमन सु अंजलि साजी गह गह गगन दुन्दुभी बाजी
अस्तुति करहि नाग मुनि देवा बहु विधि लावहिं निज निज सेवा

राजा दशरथ का पुत्रार्थ यज्ञ करना और अग्नि देवता को प्रकट होकर हव्य देना और राजा दशरथ करके तीनो रानियों को हव्य बांटना ॥*॥



दो॰ सुर समूह बिनती करी । पहुंचे निज निज धाम ॥
जग निवास प्रभु परगटे अखिल लोक विश्राम

छं॰ भये प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घन श्यामा निज आयुध भुज चारी
भूषण बन माला नयन विशाला शोभा सिन्धु खरारी
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता
माया गुण ज्ञाना तीत अमाना वेद पुराण भनंता ॥
करुणा सुख सागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति संता
सो मम हित लागी जन अनुरागी प्रगट भये श्री कंता
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै शिशु लीला अति प्रियशीला यह सुख परम अनूपा
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होय बालक सुर भूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भव कूपा

दो॰ विप्र धेनु सुर संत हित । लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुण गोपार ॥

सुनि शिशु रुदन परम प्रिय बानी संभ्रम चलि आईं सब रानी ॥
हर्षित जहं तहं धाईं दासी ॥ आनंद मगन सकल पुर वासी ।
दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना ॥ मानहुं ब्रह्मा नन्द समाना ।
परम प्रेम मन पुलक शरीरा । चाहत उठन करत मति धीरा ।
जाकर नाम सुनत शुभ होई । मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥

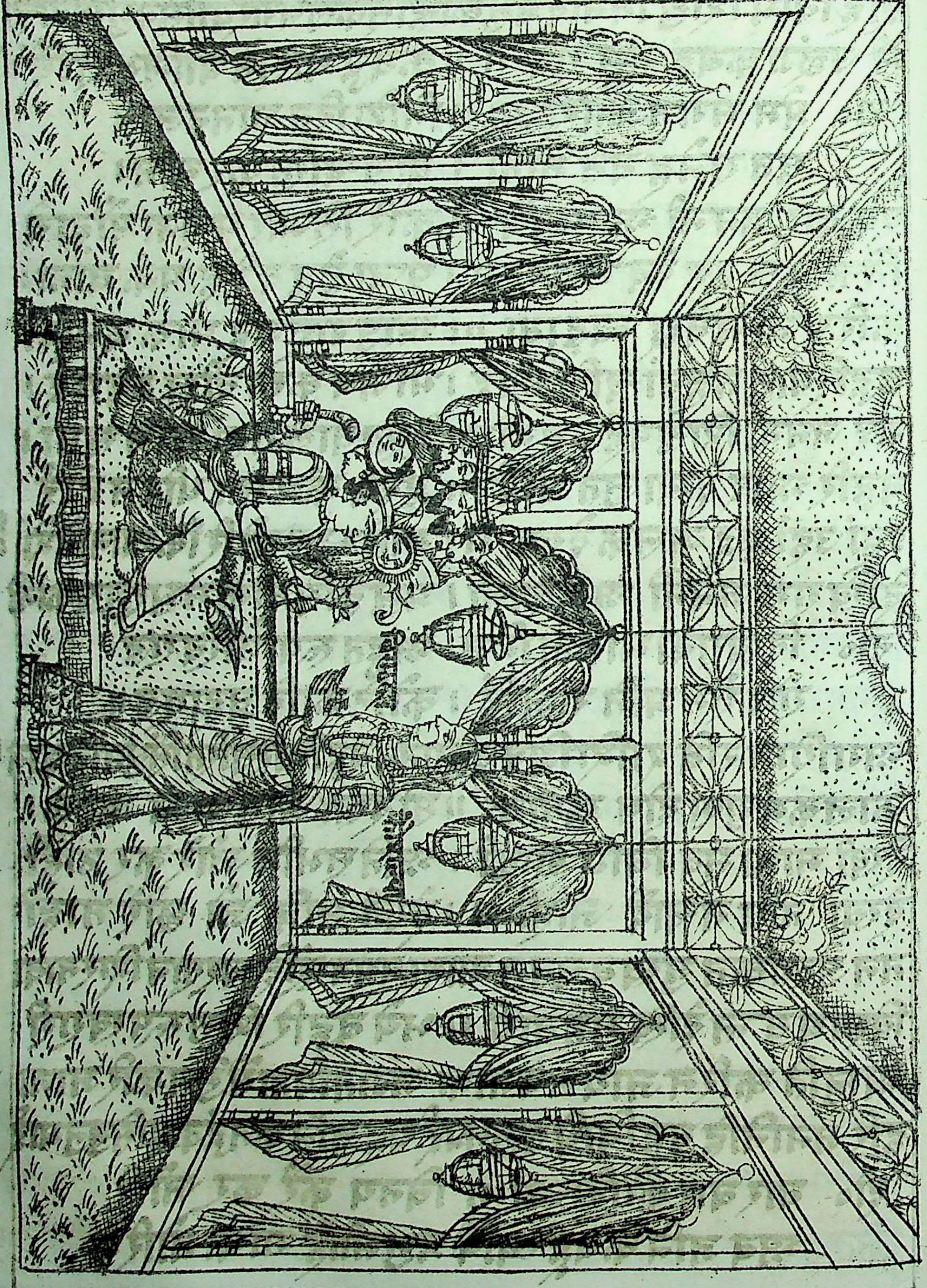
परमानन्द पूरि मन राजा । कहा बुलाइ बजावहु बाजा ।
गुरु बशिष्ठ कहं गयउ हंकारा आये द्विजन्ह सहित नृप द्वारा
अनुपम बालक देखि न जाई। रूपराशि गुण कहि न सिराई।
दो० नव नांदी मुख श्राद्ध करि जात कर्म सब कीन्ह ।
हाटक धेनु वसन मणि । नृप विप्रन कहं दीन्ह ।
ध्वज पताक तोरण पुर छावा। कहि न जाइ जेहि भांति बनावा।
सुमन वृष्टि आकाश तें होई । ब्रह्मानन्द मगन सब कोई
वृन्द वृन्द सब चलीं लुगाई। सहज शृंगार किये उठि धाई
कनक कलश मंगल भरि थारा गावत पैठहिं भूप दुआरा
करि आरती निछावर करहीं । बार बार शिशु चरणन परहीं ।
मागध सूत वंदिगण गायक । पावन गुण गावहिं रघुनायक
सर्वस दान दीन्ह सब काहू ।।। जेहि पावा राखा नहिं ताहू
मृगमद चन्दन कुंकुम कीचा । मची सकल वीथिन बिच बीचा
दो० गृह गृह बाज बधाव शुभ प्रगटे सुखकन्द ।
हरषवन्त सब जहं तहं ।। नगर नारि नर वृन्द ।।।
कैकय सुता सुमित्रा दोऊ ।।। सुन्दर सुत जनमत भइं ओऊ
वह सुख सम्पति समय समाजा कहि न सकै शारद अहिराजा
अवध पुरी सोहै इहि भांती । प्रभुहि मिलन आई जनु राती
देखि भानु जनु मन सकुचानी । तदपि बनी संध्या अनुमानी
अगर धूप जनु बहु अंधियारी उड़े अबीर मनहु अरुनारी।
मन्दिर मणि समूह जनु तारा । नृप गृह कलश सो इंदु उदारा
भवन वेदधुनि अति मृदु बानी जनु खग मुखर समय सुख सानी
कौतुक देखि पतंग भुलाना ।।। एक मास तेहि जात न जाना
दो० मास दिवस का दिवस भा मरम न जानै कोइ ।
रथ समेत रवि थाकेऊ। निशा कवन विधि होइ

यह रहस्य काहू नहिं जाना ॥ दिनमणि चले करत गुण गाना।
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा। चले भवन वरणत निज भागा।
औरौं एक कहौं निज चोरी। सुनु गिरिजा अति दृढ़मति तोरी
काक भुशुण्डि संग हम दोऊ मनुज रूप जानै नहिं कोऊ।
परमानन्द प्रेम सुख फूले ॥। वीथिन फिरहिं मगन मन भूले
यह सब चरित जानै पै सोई। कृपा राम की जापर होई ॥
तेहि अवसर जो जेहि विधि आवा दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा
गज रथ तुरग हेम गो हीरा। दीन्हे नृप नाना विधि चीरा।
दो० मन संतोष सबन के। जहं तहं देहिं असीस।
सकल तनय चिरजीवहु तुलसि दास के ईश।
कछुक दिवस बीते इहि भांती जात न जानहिं दिन अरु राती
नामकरण कर अवसर जानी। भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी॥
करि पूजा भूपति अस भाषा। धरिय नाम जो मुनि गुनि राखा
इन के नाम अनेक अनूपा। मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा
जो आनन्द सिंधु सुख राशी। सीकर तें त्रैलोक्य सुपासी
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक विश्रामा
विश्व भरण पोषण करु जोई। ताकर नाम भरत अस होई
जाके सुमिरण तें रिपु नाशा। नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा
दो० लक्षण धाम राम प्रिय सकल जगत आधार
गुरु वशिष्ठ तेहि राखेउ लक्ष्मण नाम उदार॥
धरे नाम गुरु हृदय विचारी। वेद तत्त्व नृप तव सुत चारी
पुनि जन धन सर्वस शिव प्राना बाल केलि रस तेहि सुख माना
बारेहि तें निज हित पति जानी लक्ष्मण राम चरण रति मानी
भरत शत्रुहन दोनों भाई ॥। प्रभु सेवक जस प्रीति बड़ाई।
श्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी ॥ निरखहिं छवि जननी तृण तोरी

चारिउ शील रूप गुण धामा ॥ तदपि अधिक सुख सागर रामा ॥
हृदय अनुग्रह इंदु प्रकाशा ॥ सूचत किरण मनोहर हासा ॥
कबहुं उछंग कबहुं वर पालन । मातु दुलारहिं कहि प्रिय लालन ॥
दो० ब्यापक ब्रह्म निरंजन ॥ निर्गुण बिगत बिनोद
सो अज प्रेम भक्ति बस। कौशल्या की गोद ॥
काम कोटि छबि श्याम शरीरा। नील कंज वारिद गंभीरा ॥
अरुण चरण पंकज नख जोती कमल दलन बैठे जनु मोती
रेख कुलिश ध्वज अंकुश सोहैं नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहैं
कटि किंकिणी उदर त्रय रेखा। नाभि गंभीर जान जेहि देखा
भुज विशाल भूषण युत भूरी ॥ हिय हरि नख शोभा अति रूरी
उर मणि हार पदिक की शोभा विप्र चरण देखत मन लोभा।
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई। आनन अमित मदन छवि छाई
दुइ दुइ दसन अधर अरुणारे नासा तिलक को वर्णै पारे
सुन्दर श्रवण सु चारु कपोला । अति प्रिय मधुर तोतरे बोला
नील कमल दोउ नयन विशाला विकट भृकुटि लटकन वर भाला
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे । बहु प्रकार रचि मातु संवारे
पीत झिंगुलिया तन पहिराये जानु पाणि विचरत मन भाये
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति शेषा सो जानै सपनेहुं जिन्ह देखा
दो० सुख संदोह मोह पर ॥ ज्ञान गिरा गोतीत ॥
दंपति परम प्रेम बस ॥ कर शिशु चरित पुनीत
इहि विधि राम जगत पितु माता कोशल पुर वासिन सुखदाता
जिन रघुनाथ चरण रति मानी । तिन की यह गति प्रगट भवानी
रघुपति विमुख यतन कर कोरी। कवन सकै भव बंधन छोरी।
जीव चराचर बस कै राखे ॥ सो माया प्रभु सो भय भाखे।
भृकुटि विलास नचावै ताही । अस प्रभु छांडि भजिय कहु काही

मन क्रम वचन छांड़ि चतुराई। भजतहिं कृपा करैं रघुराई।
इहि विधि शिशु विनोद प्रभु कीन्हा सकल नगर बासिन सुख दीन्हा
लै उछंग कबहूं हल रावैं ॥ ॥ कबहु पालने घालि झुलावैं।
दो० प्रेम मगन कौशिल्या ॥ निशि दिन जात न जान
सुत सनेह बस माता । बाल चरित कर गान।
एक बार जननी अन्हवाये ॥ करि सिंगार पलना पौढ़ाये
निज कुल इष्ट देव भगवाना । पूजा हेतु कीन्ह एक बाना।
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा ॥। आपु गई जहं पाक बनावा
बहुरि मातु तहवां चलि आई । भोजन करत दीख रघुराई।
गइ जननी शिशु पहं भय भीता। देखा बाल तहां पुनि सूता।
बहुरि आइ देखा सुत सोई ॥ हृदय कंप मन धीर न होई
इहां उहां दुइ बालक देखा ॥। मति भ्रम मोरि कि आन विशेषा
देखि राम जननी अकुलानी। प्रभु हंसि दीन्ह मधुर मुसुकानी
दो० दिखरावा मातहि निज। अद्भुत रूप अखण्ड
रोम रोम प्रति राजहिं । कोटि कोटि ब्रह्मण्ड॥
अगणित रवि शशि शिव चतुरानन बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन
काल कर्म गुण दोष सुभाऊ ॥ सो देखा जो सुना न काऊ।
देखी माया सब विधि गाढ़ी । अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी
देखा जीव नचावै जाही ॥। देखी भक्ति जो छोरै ताही
तन पुलकित मुख वचन न आवा नयन मूंदि चरणन शिर नावा
विसमय वन्त देखि महतारी ॥ भये बहुरि शिशु रूप खरारी
अस्तुति करि न जाय भय माना जगत पिता मैं सुत करि जाना
हरि जननिहि बहु विधि समुझाई यह जनि कतहुं कहसि सुनु माई
दो० बार बार कौशिल्या ॥ विनय करै कर जोरि
अब जनि कबहूं व्यापै प्रभु मोहिं माया तोरि॥

श्रीरामचन्द्रजी का अपनी माता कौशल्या को विराट रूप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को दिखलाना और कौशल्या का मोह निवृत्त करना॥



बाल चरित हरि बहु बिधि कीन्हा अति आनंद दासन कहं दीन्हा
कछुक काल बीते सब भाई ॥ बड़े भये परिजन सुख दाई ॥
चूडा करण कीन्ह गुरु आई। विप्रन पुनि दक्षिणा बहु पाई
परम मनोहर चरित अपारा । करत फिरत चारिउ सुकुमारा
मन क्रम बचन अगोचर जोई दशरथ अजिर विचर प्रभु सोई
भोजन करत बुलावत राजा । नहिं आवहिं तजि बाल समाजा
कौशल्या जब बोलन जाई ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई
निगम नेति शिव अंत न पावा ताहि धरे जननी हठि धावा
धूसर धूर भरे तनु आये ॥ भूपति विहसि गोद बैठाये ।

दो० भोजन करत चपल चित इत उत अवसर पाइ
भाजि चले किलकात मुख दधि ओदन लपटाइ

बाल चरित अति सरल सुहाये शारद शेष शंभु श्रुति गाये ।
जिन कर मन इन सन नहिं राता ते जन बंचित किये विधाता
भये कुमार जबहि सब भ्राता दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई । अलप काल विद्या सब पाई
जाकी सहज स्वास श्रुति चारी सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी ।
विद्या विनय निपुण गुण शीला खेलहिं खेल सकल नृप लीला
करतल बाण धनुष अति सोहा देखत रूप चराचर मोहा ॥
जिन बीथिन विहरहिं सब भाई थकित होहिं सब लोग लुगाई

दो० कोशल पुर बासी नर। नारि वृन्द अरु बाल ॥
प्राणहु ते प्रिय लागते सब कहं राम कृपाल

बंधु सखा सब लेहिं बुलाई । बन मृगया नित खेलहिं जाई
पावन मृग मारहिं जिय जानी दिन प्रति नृपहिं देखावहिं आनी
जो मृग राम बाण के मारे ॥ ते तनु तजि सुर लोक सिधारे
अनुज सखा संग भोजन करहीं मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं

जेहि विधि सुखी होहिं पुर लोगा करहिं कृपानिधि सोइ संयोगा
वेद पुराण सुनहिं मन लाई ॥ आपु कहहिं अनुजहि समुझाई
प्रात काल उठि कै रघुनाथा ॥ मातु पिता गुरु नावहिं माथा
आयसु मांगि करहिं पुर काजा देखि चरित हरषहिं मन राजा।

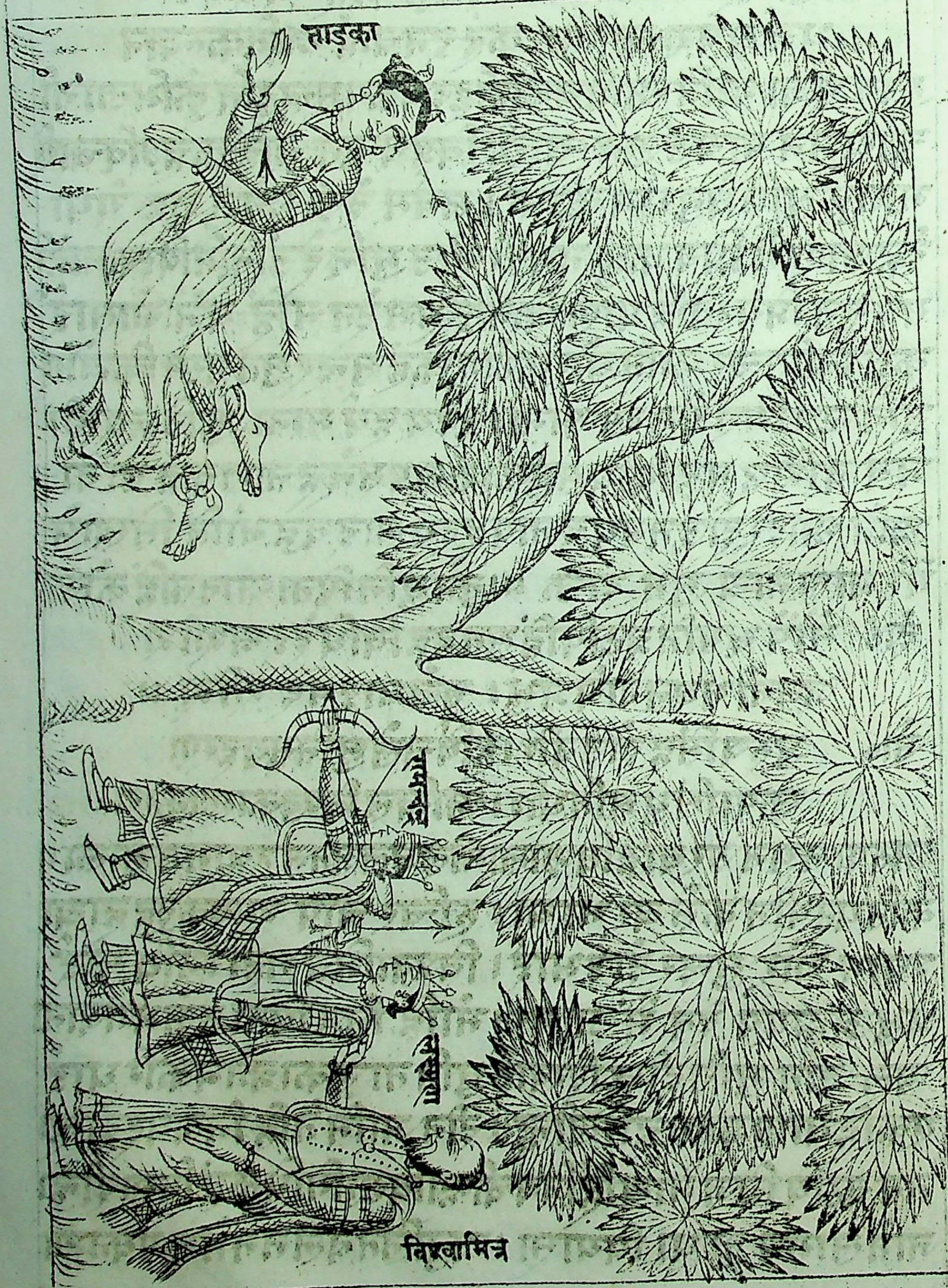
दो॰ व्यापक अकल अनीह अज निर्गुण नाम न रूप
भक्त हेतु नाना विधि। करत चरित्र अनूप

यह सब चरित कहा मैं गाई । आगिल कथा सुनहु मन लाई
विश्वामित्र महा मुनि ज्ञानी। बसहिं विपिन शुभ आश्रम जानी
तहं जप यज्ञ योग मुनि करहीं। अति मारीच सुबाहुहि डरहीं
देखत यज्ञ निशाचर धावहिं ॥ करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं
गाधि तनय मन चिंता व्यापी। हरि बिन मरहिं न निशिचर पापी
तब मुनि वर मन कीन्ह विचारा प्रभु अवतरेउ हरण महि भारा
इहि मिसु देखौं प्रभु पद जाई। करि विनती आनौं दोउ भाई
ज्ञान विराग सकल गुण अयना सो प्रभु मैं देखब भरि नयना

दो॰ बहु विधि करत मनोरथ। जात न लागी बार ॥
करि मज्जन सरयू जल। गये भूप दरबार ॥॥

मुनि आगमन सुना जब राजा । मिलन गयउ लै विप्र समाजा
करि दंडवत मुनिहिं सनमानी। निज आसन बैठारिन आनी
चरण पखारि कीन्ह अति पूजा मो सम आजु धन्य नहिं दूजा
विविधि भांति भोजन करवावा मुनि वर हृदय हर्ष अति छावा
पुनि चरणन मेले सुत चारी । राम देखि मुनि विरति बिसारी
भये मगन देखत मुख शोभा । जनु चकोर पूरण शशि लोभा
तब मन हर्ष वचन कह राऊ ।। मुनि अस कृपा कीन्ह नहिं काऊ
केहि कारण आगमन तुम्हारा । कहहु सो करत न लाउब बारा
असुर समूह सतावहिं मोही ।। मैं याचन आयेउं नृप तोही

अनुज समेत देहु रघुनाथा। निशिचर वध मैं होब सनाथा
दो० देहु भूप मन हर्षित ॥ तजहु मोह अज्ञान ॥।
धर्म सुयश नृप तुम कहं इन कहं अति कल्यान
सुनि राजा अति अप्रिय बानी हृदय कंप मुख द्युति कुंभिलानी
चौथे पन पायउं सुत चारी। विप्र वचन नहिं कहहु विचारी
मांगहु भूमि धेनु धन कोषा। सर्बस देउं आजु सह रोषा
देह प्राण ते प्रिय कछु नाहीं। सोउ मुनि देउं निमिषिइक माहीं
सब सुत प्रिय मोहिं प्राण कि नाई राम देत नहिं बनै गोसाई
कहं निशिचर अति घोर कठोरा कहं सुन्दर सुत परम किशोरा
सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी। हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी।
तब बशिष्ठ बहु विधि समुझावा नृप सन्देह नाश कहं पावा
अति आदर दोउ तनय बुलाये हृदय लाइ बहु भांति सिखाये
मेरे प्राणनाथ सुत दोऊ ॥।तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ
दो० सौंपे भूपति ऋषिहिं सुत बहु विधि देइ अशीश
जननी भवन गये प्रभु। चले नाइ पद शीश ॥
सो० पुरुषसिंह दोउ बीर। हर्षि चले मुनि भय हरण
कृपा सिंधु मतिधीर। अखिल विश्व कारण करण
अरुण नयन उर बाहु विशाला नील जलज तन श्याम तमाला।
कटि पट पीत कसे वर भाथा। रुचिर चाप शायक दुहु हाथा
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई। विश्वामित्र महा निधि पाई
प्रभु ब्रह्मण्य देव मैं जाना। मोहिं नित पिता तजे भगवाना
चले जात मुनि दीन्ह दिखाई सुनि ताड़का क्रोध करि धाई
एकहि बाण प्राण हरि लीन्ह॥ दीन जानि तेहि निजपद दीन्हा
तब ऋषि निज नाथहिं जिय चीन्हा विद्या निधि कहं विद्या दीन्हा
जाते लागन क्षुधा पियासा। अतुलित बल तन तेज प्रकाशा


विश्वा मित्र की यज्ञ रक्षा करने के निमित्त श्रीरामचन्द्र करके ताड़का
राक्षसी का बध करना ॥
ताड़का
विश्वामित्र

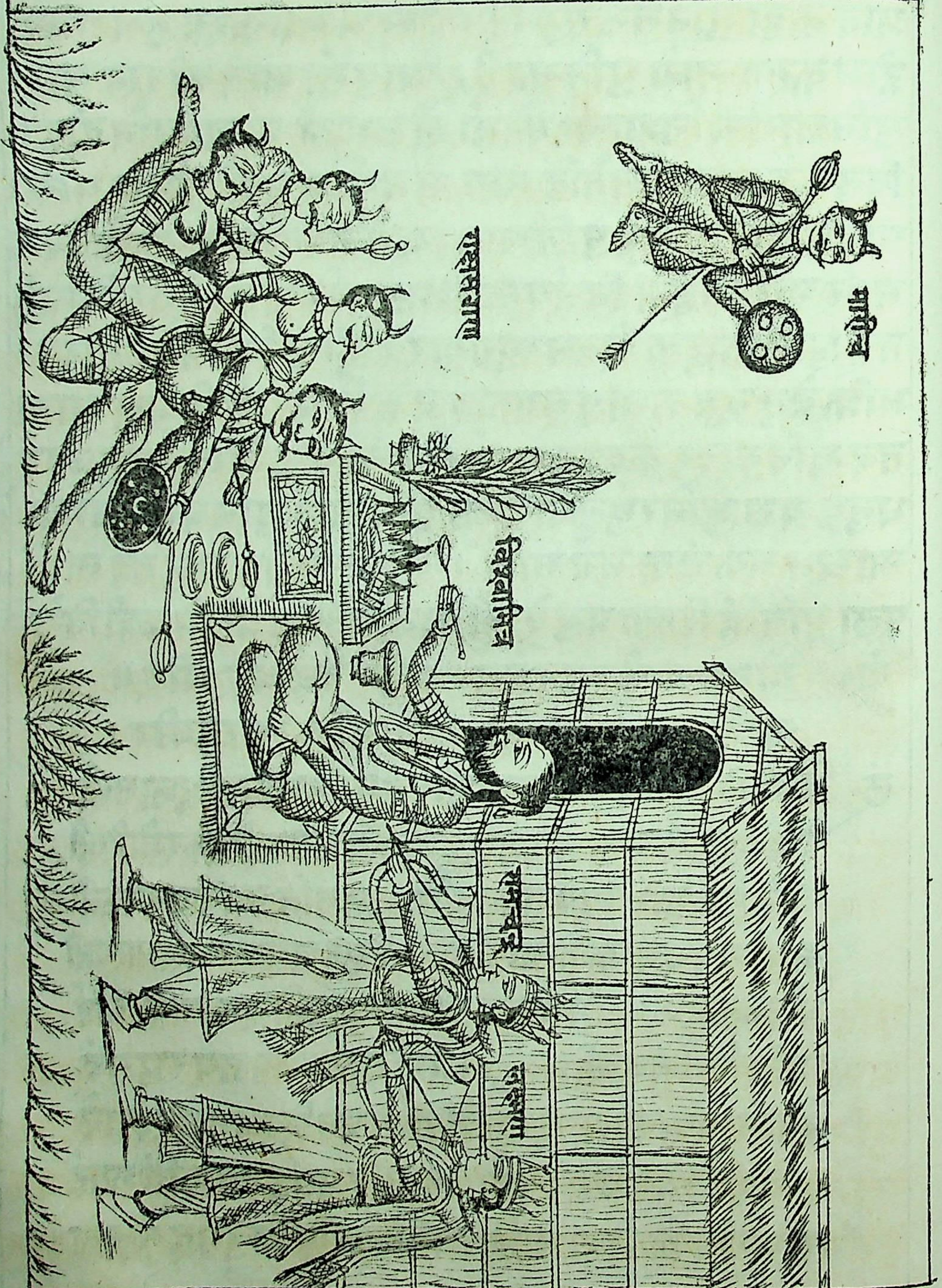
दो० आयुध सकल समर्पि के प्रभु निज आश्रम आनि
कन्द मूल फल भोजन दिये भक्त हित जानि ॥

प्रात कहा मुनि सन रघुराई ॥ निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई
होम करण लागे मुनि झारी । आपु रहे मख की रखवारी
सुनि मारीच निशाचर कोही लै सहाय आवा मुनि द्रोही
बिनु फर बाण राम तेहि मारा सत योजन गा सागर पारा ।
पावक शर सुबाहु पुनि मारा अनुज निशाचर कटक संघारा
मारि असुर द्विज निर्भय कारी अस्तुति करहिं देव मुनि झारी
तहं पुनि कछुक दिवस रघुराया रहे कीन्ह बिप्रन पर दाया ।
भक्ति हेतु बहु कथा पुराणा ॥ कहें बिप्र यद्यपि प्रभु जाना
तब मुनि सादर कहा बुझाई । चरित एक देखिय प्रभु जाई
धनुष यज्ञ सुनि रघुकुलनाथा हर्षि चले मुनि वर के साथा
आश्रम एक दीख मग माहीं । खग मृग जीव जन्तु तहं नाहीं
पूछा मुनिहिं शिला प्रभु देखी । सकल कथा ऋषि कही बिशेषी

दो० गौतम नारी श्राप बस । उपल देह धरि धीर ॥
चरण कमल रज चाहती कृपा करहु रघुबीर ।

छं० परसत पद पावन शोक नशावन प्रगट भई तपपुञ्ज सही
देखत रघुनायक जन सुखदायक सन्मुख होइ कर जोरि रही
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा मुख नहिं आवै वचन कही
अतिशय बड़ भागी चरणन लागी युगल नयन जलधार बही
धीरज मन कीन्हा प्रभु कहं चीन्हा रघुपति कृपा भक्ति पाई
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई
मैं नारि अपावनि प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई
राजिव लोचन भव भय मोचन पाहि पाहि शरणहिं आई
मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना

श्रीरामचन्द्र जी की सहायता से विश्वा मित्र जी का यज्ञ करना और श्रीरामचन्द्र करके अनेक राक्षसों को वध करना ॥



देखेउँ भरि लोचन हरि भव मोचन यहै लाभ शंकर जाना
विनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न वर मांगो आना।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना
जेहि पद सुर सरिता परम पुनीता प्रगट भई शिव शीश धरी
सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम शिर धरेउ कृपाल हरी
इहि भांति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरण परी।
जो अति मन भावा सो वर पावा गै पति लोक अनन्द भरी

दो॰ अस प्रभु दीन बंधु हरि ॥ कारण रहित कृपाल ॥
तुलसिदास शठ ताहि भज छांड़ि कपट जंजाल।

चले राम लछमण मुनि संगा ॥ गये जहां जग पावनि गंगा।
अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रणामा बहु प्रकार सुख पायउ रामा

क्षेपक

पुनि सुरसरि उतपति रघुराई ॥ कौशिक सन पूछा शिर नाई।
कह मुनि प्रभु तव कुल इक राजा नाम सगर तिहुं लोक विराजा
तेहि के युग भामिनि सुकुमारी प्रथम केशिनी सुमति पियारी
सब प्रकार सम्पति सुख साजा ॥ सुत विहीन मन विसमय राजा
एक समय भामिनि दोउ साथा गये वन तनय हेतु रघुनाथा
सघन सफल तरु सुन्दर नाना ॥ तहं भृगु मुनि तप तेज निधाना

दो॰ सहित नारि नृप मुदित मन रहे वरष शत एक ॥
कीन्हें तप बल देखि भृगु अस्तुति कीन्ह अनेक

कहि निज दुख प्रणाम नृप कीन्हा दे अशीश तब मुनिवर दीन्हा
नृप रानी सन मुनि अस भाषा लेहु स्ववर जो जेहि अभिलाषा
सुनि मुनि वचन शीश तिन नावा देहु नाथ जो अति मन भावा
एक हि कह्यो एक सुत होना। दूसरि साठ सहस सुत लोना
हरषित भयो सुभग वर पाई।पाणि जोरि चरणन शिर नाई

सहित भामिनी अवधहिं आये हरष सहित कछु दिवस गंवाये
जानि सुघरि सुन्दर सुख दाई ॥ नाम केशि असमंजस जाई
सुमति प्रसव एक तुंबरि सोई । भये सुत प्रगट कहे मुनि जोई
निरखे सुत हरषित सब होई । मंगलचार किये सब कोई ॥
हरष सहित दिये दान नरेसू । पूजि विप्र गुरु गौरि गणेसू
रत्न घर सुन्दर विविध मंगाये ते सब सुत नृप तिन महं नाये

दो॰ एहि विधि भयेउ सकल सुत पूजे सब मन काम
जाइ दिवस निशि हरषबस सुनहु राम घनश्याम

पुर जन सब घर घरनि नरेसू । अति आनंद तन मिटा अंदेसू
बाल केलि कर भये कुमारा । लीला करैं अगम संसारा ॥
होइ सो काज सकल मन चीते एहि सुख बसत बहुत दिन बीते
सरयू नदी अवध जो अहई । विमल सलिल उत्तर तट बहई
प्रजा लोक के बालक नाना । नित उठि तहां करैं अस्नाना ।
असमंजस तहं तरनी आनी । तिनहिं चढ़ाइ बोरि निज पानी
भये प्रजा सब परम दुखारी ॥ बालक बध सुनि सुनहु खरारी
सकल गये जहं बैठ नृपाला । बोले बचन नाय पद भाला ॥
तुम नृप रहहु प्रजा प्रति पाला । सुत तुम्हार भा सब कर काला
तजब देश सब सुनहु नरेसू । बिना तजे नहिं मिटै कलेसू ।

दो॰ तव सुत कीन्हे पाप बहु मारे बालक वृन्द ॥ ॥
तुम कह प्राण समान यह सकल प्रजन कह मन्द ।

प्रजा गिरा सुनि धीरज दीन्हा । सुतहिं देश तें बाहर कीन्हा
तासु तनय जग विदित प्रभाऊ गुण निधि अंशमान तेहि नाऊ
बसत हृदय नृप के सो कैसे । मुनि मन मीन सलिल रह जैसे
गये प्रजा सब निज निज धामा भये विलोकि मन गुण विश्रामा
बहुरि नृपति मन कीन्ह विचारा आइ भयेउ पन चौथ हमारा ।

हित मंत्री गुरु सुतहु बुलाये । हिमगिरि बिंध्य मध्य तब आये
रुचिर बेदिका एक बनाई ॥ देखत बनइ बरनि नहिं जाई
मख आरंभ छांडे तब तुरगा । बेग बन्त जिमि देखिय उरगा

दो॰ सुरपति सुन भय दारुण हिय मन महँ करि अनुमान
आन तुरग तब लीन्हेउ मर्म न काहू जान ॥१॥

एवंहु आनि कपिल मुनि पाहीं कोउ न जान काहू हिय माहीं
जुगवत रहे जे सुभट सयाने । ले तुरंग रहे किनहुं न जाने ॥
तिन सब आन कही नृप पाहीं । महाराज हम कहत डराहीं ।
लीन्ह तुरग कोइ जान न कोई । कहा करिय जो आयसु होई
सुनत वचन नृप बिस्मय पाये । सकल सुतन कहं तुरत बुलाये
जाहु तुरग तुम हेरहु जाई ॥ सकल चले चरणन शिर नाई
सुरपति सम देखिय सब बीरा । सकल धनुर्धर अतिरण धीरा
तिनहिं चलत धरनी अकुलाई बलि पशु जीव भये सब आई
सुमन वाटिका उपबन बागा । सरित कूप वापिका तड़ागा ।
नगर गांव मुनीश थल नाना । गिरि कन्दर कानन अस्थाना

दो॰ इहि विधि खोजहु तुरग तिन आये भूपति पाहिं
चरणन माथहि नाइ कहि खोज अश्व की नाहिं

खोदहु महि सुत करहि पठाये । चले सकल पूरब दिशि आये
तिन के कर जिमि कुलिश समाना योजन भरि खोदहिं बलवाना
देखि अतुल बल देव डेराने ॥ नरह नाह बिरंच सन माने ।
शोधत महि पताल सब आये दिग्गज देखि एक शिर नाये ।
तिन पूछा सब कथा सुनाये ॥ बहुरि सकल दक्षिण दिशि आये
इहि विधि पुनि दूसर गज देखा अति उतंग गजराज विशेषा
ताहू बहु प्रणाम तिन कीने ॥ चले सुनत पश्चिम चित दीने ।
तीसर देखि प्रदक्षिण कीन्ही । पुनि उत्तर दिशि शोधहि लीन्हीं

दिग्गज स्वेत निरख सुखपाये सकल कपिल मुनिपहिसुनिआये
खोजत मही पार नहिं पावा। शोभा चहुं दिशि जलधि सुहावा

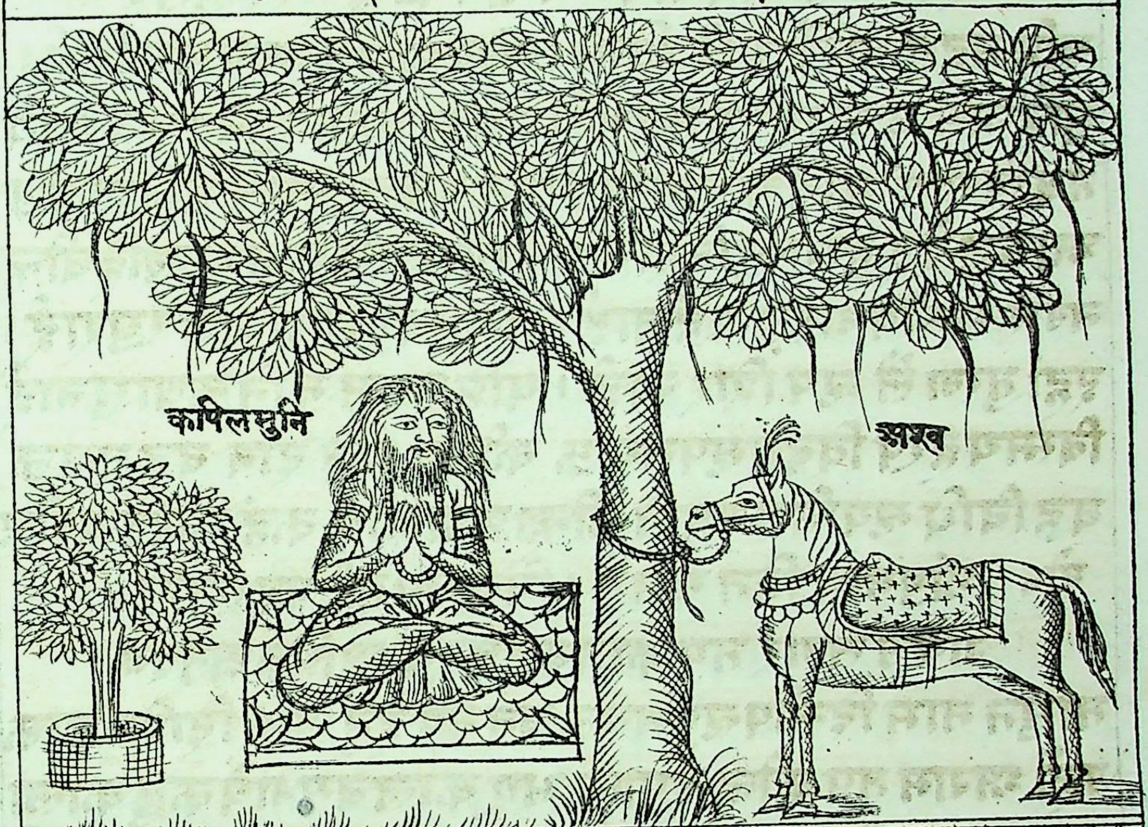
दो॰ देखिन आप तुरंग तब बांधा मुनि वर पास॥
बोले वचन सकोप करि भय चह सब करनास

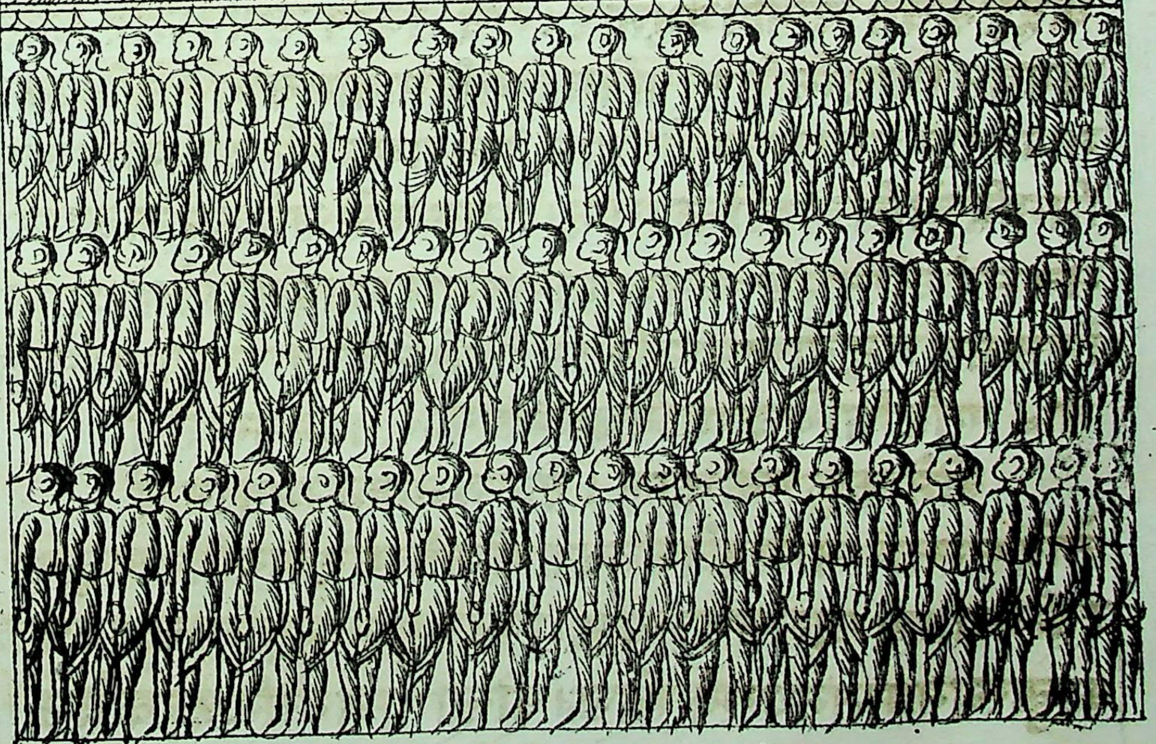
खोदा महि हम चारिउ कोधारे रे दुष्ट बहुत तोहि शोधा॥
कोउ कह चोर दीख बहु होई इहि सम छली और नहिं कोई
पर धन ले पताल पुनि आयो तसकर मुनि वर भेष बनायो
कोऊ कहें यह मुनि वर नाहीं समुझि देखि लक्षण मन माहीं
कोउ कह बक तप कीन्ह अपारा अहो दुष्ट ले तुरग हमारा।
सुनत वचन मुनि चितवा जबहीं भये भस्म सब क्षण में तबहीं
उमा वचन जिह समुझ न बोला सुधा होइ विष तिक्त म अोला
पावक जानि धरहिं कर आनी जरहिं काहि नहिं अति अभिमानी
जान गरल जे संग्रह करहीं सुनहुं राम ते काहे न मरहीं
क्रोध करै विन किये विचारा भये सकल तेहि ते जरि छारा
इहां नृपति अंशुमान बुलाये नहिं आये सब तिनहिं पठाये

दो॰ दीन्हा नृपति अशीश तब अतिहित बारहि बार
वेगि फिरो ले तुरग सुत मेरे प्राण अधार॥

चले नाय पर शीश कुमारा। विस्नु भक्त हित कुल उजियारा
जहं तहं देखि मुनिन के धामा पूछि खबर करि दंड प्रणामा।
पन्नग नाग सन पाइ अशीशा चहुं दिग्गज कहं नाव न शीशा
यहि विधि शोधत मग महं जाता मिले गरुड़ सुमती कर भ्राता
चरन परत तब आशिष दयऊ जरे सकल जेहि विधि सो कहेऊ
सुनतहि वचन शोच भयो भारी। लिये खगेश दिखाय लवारी।
अंशु मान तहं मज्जन कीन्हा। क्रमक्रम सबहि जलांजलि दीन्हा
पुनरि गरुड़ बोले सुन भ्राता॥ मैं तोहि कहौं कोरयणक बाता

राजा सगर के साठ सहस्र पुत्रों को अश्वमेध का घोड़ा ढूढ़ने जाना और कपिल देव मुनि के स्थान पर पहुंच कर उक्त मुनि के श्राप से साठों सहस्र का भस्म होना ॥





सो॰ कर सुत सोइ उपाय। गंगा आवहि अवनि महं
दरशन ते अघ जाय। मज्जन कीन्हे परम सुख।
षष्ठि सहस तरिहैं एही विधि। गंगा पाय परम पावन निधि।
सुनि अस वचन हृदय मन भाये सहित गरुड़ मुनिवर पहं आये
तब खगेश मुनि चरणन नायउ पूरब कथा सकल मुनि गायउ
आयसु देइ तुरग मुनि दीन्हा। हरषि हृदय निज अरवहि चीन्हा
नगर समीप गरुड़ पहुंचाई। गये भवन निज तब खगराई।
इहां तुरग लै नृप शिर नाई। षष्ठि सहस मुनि कथा सुनाई
विस्मय हरष विवस नृप भयऊ कीन्हा यज्ञ दान बहु दयऊ
बहु विधि नृपति राज पुनि कीन्हा प्रजा लोक कहं अति सुख दीन्हा
सो॰ अंशुमान हित राज दै। निज मन हरि पद लाग।
गयेउ सगर तप काज बन हृदय अधिक अनुराग
तासुत नाम दिलीप नृप भयऊ बन तप हेतु उतर दिशि गयऊ
उहां अगम तप कीन्ह नृपाला भए काल बस गये कछु काला
कहहु कवन दिलीप प्रभुताई। सेवैं सकल नृपति जेहि आई
सुरगवत जिहि निति सुरपति रहही महिमा तासु कवि केहि विधि कहही
भागीरथ अस सुत भयो जासू पितु सम नीति अधिक उर तासू
तिनहिं बोलि नृप दीन्हेउ राजू। आप चले उठि तप के काजू।
मन महं करत पंथ अनुमाना। सुरसरि आव तजउं नत प्राना
निज मनु तनु दीन्हेउ निमि देऊ फिरि निज नगर क नाम न लेऊ
सो॰ एहि विधि करत विचार नृप कीन्हे तप अखन्ड तब
बीते कछु एक काल। देह तजी कोउ भगर नहिं
जेहि सुरसरि लगि तजे तन भूपा सो तजि मूढ़ पियहिं जल कूपा
इहां भगीरथ अस मन भयऊ। पितुन आव बहु दिन चलि गयऊ
काकुस्थ नाम तनय एक रहेऊ। दीन्हा राज नीति बहु कहेऊ।

कहि सब पूर्व कथा सुत पाहीं। दीन्ह असीस चले नर नाहीं।
निकसत नगर शकुन भल पाये अति हि निविड़ बन जहं नृप आये
देखि भगीरथ बन सुख पावा। सुरसरि हित तप कहं मन लावा
एक चरण दोउ भुजा उठाये। रवि सन्मुख चितवहिं मन लाये
वर्ष सहस बीते एहि भांती॥ जात न जानें दिन अरु राती।
देखि उग्र तप अज चलि आये बोले वचन नृपहिं मन भाये।
चहहि नृपति जो ले वर हाला बोले नृप करि अजहिं प्रणामा
जो मांगौं सो जानत अहहू। मो सन मागन प्रभु किमि कहहू

दो० तदपि कहौं प्रभु देहु वर सब संतन कह रिद्धि
दूसर मांगौं जोरि कर। गंगा आवहिं सिद्धि।

एव मस्तु कहि पुनि विधि भवही सुरसरि देहूं राखि को सकही।
छूट जाहि पुनि तुरत रसातल। फिरहि न नृपति बहुरि सुनु भूतल
तोहि मैं कहौं एक तोहि पाहीं। अति दयाल शंकर मन माहीं
सोइ शंकर राखि देवसरि आजू उनहिं जपे तव होइहै काजू।
अस कहि विधि अंतर हित भये बहुरि भगीरथ शिवपहं गये
त्रिबुध वरष अंगुष्ट अधारा। वार वार शिव नाम उचारा॥
शिव दयाल प्रगटे तब आई। हाथ जोरि नृप विनय सुनाई।
मैं राखब सुरसरि कह ईशा॥ बहुरि रमा पति ध्यान करीशा

दो० उहां देव सरि शिव वचन सुनि मन कीन्ह विचार
जावं रसातल शिव सहित जात न लावौं वार॥

अंतरयामी शिव हि उपाई। निज शिर जटा सो अगम बनाई
इहां भगीरथ अस्तुति कीन्ही। सुनि दृढ़ गिरा छांड़ि विधि दीन्ही
छूटे शोर भयेउ जग भारी॥ चकित देव अहि दिग्गज चारी
सुरसरि पुनि हर जटा समानी वर्ष एक तहं रही भवानी॥
कौतुक देख सकल सुर हरषे। कहु जय जय ति सुमन बहु वरषे।

बहुरि भगीरथ सुमिरन कीन्हा। डारि जटा शिव बुंदक दीन्हा।
तेहि ते भई तीनि पुनि धारा। एक गई नभ एक पताल ॥
गई नभ सोई कि अघनाशिनी देवन धरा नाम मन्दाकिनी

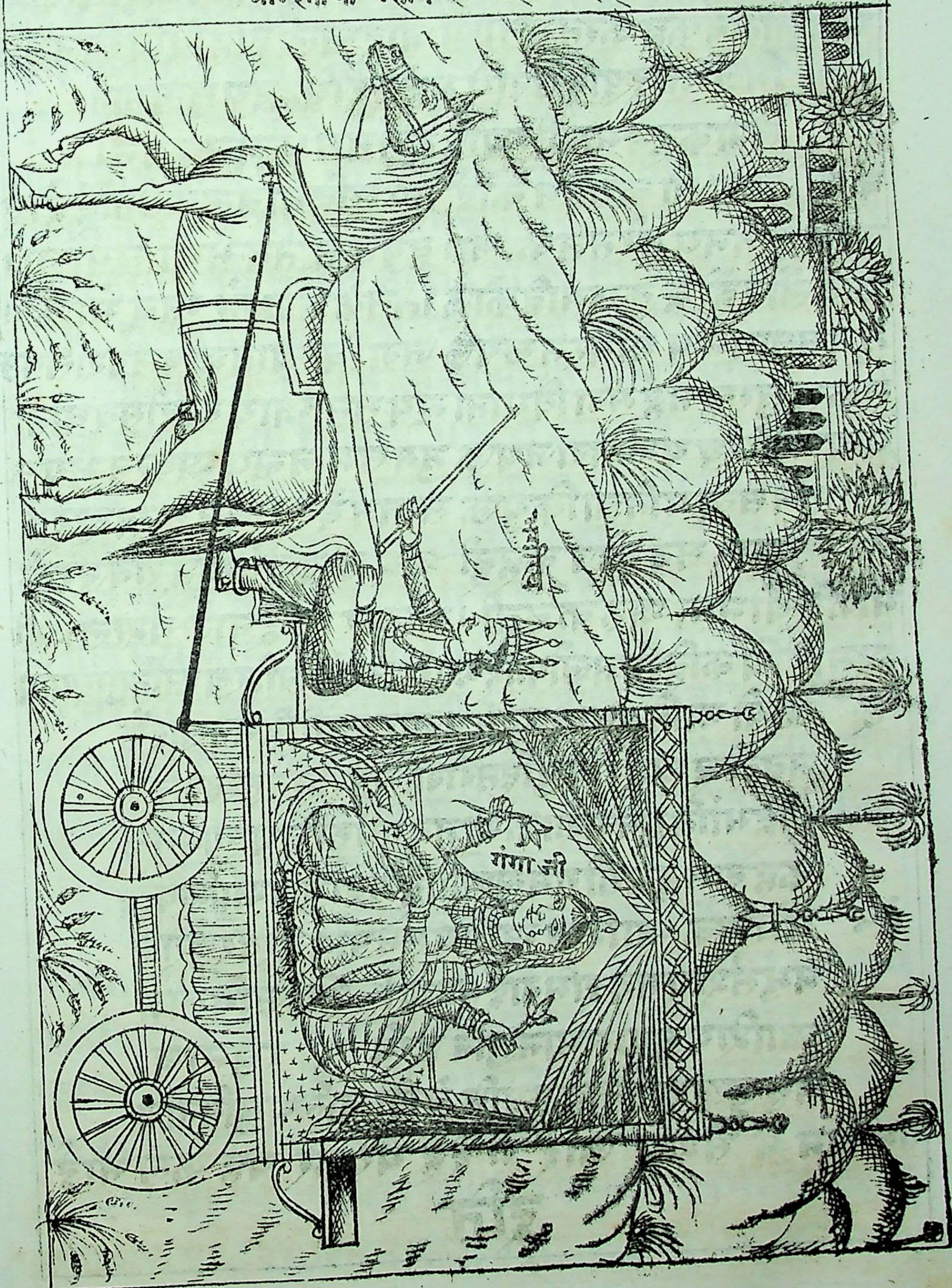
दो॰ दूसरि गई पताल में ॥ नाम प्रभावतिहरनदुख
तीसरि भई गंगा सोई। सब संतन को करनसुख
सलिलप्रवाह निरखि नृपति उर अतिभयेउ अनन्द
जैसे उमड़त सिंधु तब पूर्ण कला लखि चन्द।

आय भगीरथ पुनि सिर नाये बोले सुरसरि वचन सुहाये।
वेगवन्त नृप रथ ले आनू ॥ तुरत तुरग शुभ गति जिमि भानू
तेहि रथ चढ़ि नृप चलु मम आगे चलिहौं मैं तब पाछे लागे
सुनि नृप दिव्य तुरग रथ आना चले हृदय सुमिरत भगवाना
चली अगा करि नृपहि सुरसरी देवन मुदित सुमन झर करी।
चलत तेज कछु बरणि न जाई। टूटहिं गिरि तरु शैल सुहाई।
करैं कुलाहल विविध बहु भांती। कमठ नक्र झष व्याल सो माती
मज्जन करहिं देव तहं आई। मुनि गनि सिद्ध रहे सब छाई।

सो॰ तरपन कर मन लाय। हर्ष हृदय नहिं जात कहि
दरशन तें अघ जाय। तरैं सकल मुनि जन कहैं
मज्जन कर हरषाय। सुर अजादि मन कादि ऋषि
पान करत अघ जाय। अस मन सब कोउ कहैं।

करै जो मज्जन जप मन लाई। तिनकी महिमा कहि न सिराई
रथ पर जात सोह नृप कैसे ॥ तेजवन्त रवि देखिय जैसे ॥
लांघत शैल सुहावन देशा। पाछे सुरसरि आगे नरेशा
हरिद्वार समीप जब आये ॥ तीर्थ देखि सुरसरि मन लाये
तीर्थ निरखि मन भयो सुखभागी आदि प्रयाग पहुंचि अघहारी
करैं मज्जन कीन्हे दुख जाई। बहुरि देव सरि काशी आई

भगीरथ करके रथारूढ़ श्री गंगा जी का मृत्यु लोक में आगमन और हरद्वार काशी आदि तीर्थों में होकर सागर में प्रवेश होना



सो शिवपुरी सहज सुखदाई। बरणिन जाइ मनोहर नाई।
अबसै तीर्थ विविधि विधिजानी गई तहां किमि कहौं बखानी
मग लोगन कहं करत सनाथा जाइ चली इहि विधि सुनाथा
दो॰ मिलीजाइ पुनि उदधि महं उदधिहृदय सुखमान
लगे कहन भागीरथहि तुम सम धन्य न आन।
कीन्हो अस जो करहि न कोई नृप महिमा बल कस नहिं होई
सगर सुतनय तरे तत काला। हर्षवन्त तब भयो नृपाला।
अब लौं रह्यो है कुलमाहि कोऊ तिनके संग तरे अब सोऊ॥
तुम समान नृप अवर न भयऊ जग विख्यात अचल यश लयऊ
सकल सुरन्ह तहं संग विधाता नृप सन आय कहीसब बाता
धन्य भगीरथ यश जग जयऊ तुम समान नृप अवर न भयऊ
आपनि सत्य प्रतिज्ञा कियऊ सम्मत वेद जनन सुख दयऊ
गंगा सागरु सब कोउ कहहीं अघ उलूक देखत रवि डरहीं
भागीरथी नाम अरु कहहीं। सुन सुर सिद्ध नाग यश लहहीं
अस विधि कहि निज लोकहिं आये जहां भगीरथ अति सुख पाये
छं॰ पायो अमित सुख बहुरि पूजा सुरसरिहिं मन लाइ कै
तब दीन्ह आशिष मुदित गंगा नृप भवन सुख पाइ कै
इहि भांति सुन गंगा कथा तब राम रुचि बरणन करै
कह दास तुलसी राम लषणहिं महा मुनि आशिष दये
दो॰ कौशिक आशिष अमिय सम पाय हरष रघुराज
प्रभु संशय सब दूरि गई। लवा निरषि जिमि बाज
आशिष सुधा समान सुनि हरषे श्री रघुनाथ।
प्रभु सुख पाइ कहेउ पुनि वेगि चलिय मुनिनाथ
राम नाम तें संशय जाई॥ देह धरे कर यह फल भाई

इति

गाधि सुवन सब कथा सुनाई । जेहि प्रकार सुरसरि महि आई
तब प्रभु ऋषिन समेत नहाये विविध दान महिदेवन पाये।
हर्षि चले मुनि वृन्द सहाया ॥ वेगि विदेह नगर नियराया।
पुर रम्यता राम जब देखी । हर्षे अनुज समेत विशेषी।
वापी कूप सरित सर नाना ॥ सलिल सुधासम मणि सोपाना
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा ॥ ॥ कूजत कल बहु वरण विहंगा
वरण वरण विकसे जल जाता त्रिविध समीर सदा सुख दाता

दो॰ सुमन वाटिका बाग बन विपुल विहंग निवास
फूलत फलत सु पल्लवित सोहत पुर चहुं पास ॥

बनैन बरनत नगर निकाई ॥ जहां जाइ मन तहां लुभाई।
चारु बजार विचित्र अटारी । मणिमय विधि जनु स्वकर संवारी
धनिक वणिक वर धनद समाना बैठे सकल वस्तु लै नाना।
चौहट सुन्दर गली सुहाई ॥ सन्तत रहहि सुगंध सिचाई
मंगल मय मन्दिर सब केरे । चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे
पुर नर नारि सुभग शुचि संता धर्म शील ज्ञानी गुण वन्ता।
अति अनूप जहं जनक निवासू विथकहिं विबुध विलोकि विला
होत चकित चित कोट विलोकी सकल भुवन शोभा जनु रोकी

दो॰ धवल धाम मणि पुरट पट सुघटित नाना भांति।
सिय निवास सुन्दर सदन शोभा किमि कहि जाति

सुभग द्वार सब कुलिश कपाटा भूप भीर नट मागध भाटा ॥
बनी विशाल बाजि गज शाला। हय गय रथ संकुल सब काला
सूर सचिव सेनप बहु तेरे । नृप गृह सरिस सदन सब केरे
पुर बाहिर सर सरित समीपा । उतरे जहं तहं विपुल महीपा
देखि अनूप एक अंबराई ॥ सब सुपास सब भांति सुहाई
कौशिक कहेउ मोर मन माना इहां रहिय रघुवीर सुजाना।

भलेहि नाथ कहि कृपानिकेता। उतरे तहं मुनिवृन्द समेता।
विश्वामित्र महा मुनि आये। समाचार मिथिलापति पाये
दो॰ संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर वर गुरु ज्ञाति।
चले मिलन मुनि नायकहि मुदित राउ इहि भांति
कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा। दीन्ह असीस मुदित मुनि नाथा।
विप्र वृन्द सब सादर वन्दे ।। जानि भाग्य बड़ राउ अनन्दे
कुशल प्रश्न कहि वारहिंवारा विश्वामित्र नृपहि बैठारा ।।
तेहि अवसर आये दोउ भाई। गये रहे देखन फुलवाई ।।
श्याम गौर मृदु वयस किशोरा लोचन सुखद विश्व चितचोरा
उठे सकल जब रघुपति आये। विश्वामित्र निकट बैठाये।
भये सब सुखी देखि दोउ भ्राता। वारि विलोचन पुलकित गाता।
मूरति मधुर मनोहर देखी ।। भयउ विदेह विदेह विशेषी
दो॰ प्रेम मगन मन जानि नृप करि विवेक धरि धीर
बोलेउ मुनि पद नाइ शिर गद्गद गिरा गंभीर।
कहहु नाथ सुन्दर दोउ बालक। मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पा
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा उभय भेष धरि सोइ कि आवा
सहज विराग रूप मन मोरा। थकित होत जिमि चन्द्र चकोरा
तातें प्रभु पूछौं सत भाऊ ।। कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ
इनहिं विलोकत अति अनुरागा वरवस ब्रह्म सुखहिं मन त्यागा
कह मुनि विहँसि कहेउ नृप नीका वचन तुम्हार न होइ अलीका
ये प्रिय सबहि जहां लगि प्राणी मन मुसकाहिं राम सुनि वाणी
रघुकुल मणि दशरथ के जाये मम हित लागि नरेश पठाये
दो॰ राम लखन दोउ बंधुवर रूप शील बल धाम ।।
मख राखेउ सब साखि जग जीति असुर संग्राम
मुनि तव चरण देखि कह राऊ कहि न सकौं निज पुण्य प्रभाऊ

सुन्दर स्याम गौर दोउ भ्राता। आनँद हू के आनँद दाता।
इन्ह कै प्रीति परस्पर पावनि। कहि न जाइ मन भाव सुहावनि॥
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू। ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू॥
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू। पुलक गात उर अधिक उछाहू॥
मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसा। चलेउ लिवाइ नगर अवनीसा॥
सुन्दर सदन सुखद सब काला। तहाँ बास लै दीन्ह भुआला॥
करि पूजा सब बिधि सेवकाई। गयउ राउ गृह बिदा कराई॥

दो० रिषय संग रघुबंस मनि करि भोजन बिश्राम।
बैठे प्रभु भ्राता सहित। दिवस रहा भरि याम॥

लखन हृदय लालसा बिसेषी। जाइ जनकपुर आइय देखी॥
प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं। प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं॥
राम अनुज मन की गति जानी। भगत बछलता हिय हुलसानी॥
परम बिनीत सकुचि मुसुकाई। बोले गुरु अनुसासन पाई॥
नाथ लषण पुर देखन चहहीं। प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं॥
जौ राउर अनुसासन पाऊँ। नगर देखाइ तुरत लै आऊँ॥
सुनि मुनीस कह बचन सप्रीती। कस न राम तुम्ह राखहु नीती॥
धर्म सेतु पालक तुम ताता। प्रेम बिबस सेवक सुख दाता॥

दो० जाइ देखि आवहु नगर सुख निधान दोउ भाइ।
करहु सुफल सबके नयन सुन्दर बदन दिखाइ॥

मुनि पद कमल बन्दि दोउ भ्राता। चले लोक लोचन सुख दाता॥
बालक बृन्द देखि अति सोभा। लगे संग लोचन मन लोभा॥
पीत बसन परिकर कटि भाथा। चारु चाप सर सोहत हाथा॥
तनु अनुहरत सुचंदन खोरी। स्यामल गौर मनोहर जोरी॥
केहरि कंधर बाहु बिसाला॥ उर अति रुचिर नागमणि माला॥
सुभग श्रवण सरसीरुह लोचन बदन मयंक ताप त्रय मोचन

काननकनकफूल छबिदेही। चितवत चितहिचोर जनुलेही
चितवनि चारु भ्रकुटिवर बांकी तिलक रेख शोभा जनुचाकी
दो॰ रुचिर चौतनी सुभग सिर मेचक कुंचित केश।
नख शिख सुन्दर बंधु दोउ शोभा सकल सुदेश।
देखन नगर भूप सुत आये ॥ समाचार पुर वासिन पाये ॥
धाये धाम काम सब त्यागे ॥ मनहुं रंक निधि लूटन लागे ॥
निरखि सहजसुन्दर दोउ भाई। होहिं सुखी लोचन फल पाई
युवती भवन झरोखनि लागी। निरखहिं राम रूप अनुरागी
कहहिं परस्पर वचन सप्रीती। सखि इन कोटि कामछवि जीती
सुरनर असुर नाग मुनि माहीं। शोभा अस कहुं सुनियत नाहीं
विस्नु चारि भुज विधि मुखचारी विकट भेष मुख पंच पुरारी।
अपर देव असको जग आही। इहि विधि छवि पटतरिये जाही
दो॰ वयकिशोर सुखमा सदन श्याम गौर सुख धाम।
अंग अंग पर वारिये ॥ कोटि कोटि शत काम
कहहु सखी अस को तनुधारी जो न मोह यह रूप निहारी।
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी। जो मैं सुना सो सुनहु सयानी।
ये दोउ नृप दशरथ के ढोटा। बालमराल नि केकल जोटा
मुनि कौशिक मख केरखवारे। जिन रण अजय निशाचरमारे
श्याम गात कल कंजविलोचन जो मारीच सुभुज मद मोचन
कौशल्या सुत सो सुख खानी। नाम राम धनु सायक पानी।
गौर किशोर भेष वर काछे । कर शर चाप राम के पाछे।
लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता। सुनु सखि तासु सुमित्रा माता
दो॰ विप्रकाज करिबंधु दोउ मग मुनि बधू उधारि
आये देखन चाप मख सुनि हरषीं सब नारि।
देखि राम छवि कोउ इककहई योग्य जानकी यह वर अहई

जौं सखि इनहिं देखि नरनाहू । प्रण परिहरि हठि करै विवाहू
कोउ कह इन्ह भूपति पहिचाने मुनि समेत सादर सनमाने ॥
सखि परंतु प्रण राउ न तजई । विधि वस हठि अविवेकहि भजई
कोउ कह जौं भल अहै विधाता सब कह सुनिय उचित फलदाता
तौ जानकिहि मिलिहि वर एहू नाहिन आली यह सन्देहू ॥
जौं विधि वस अस बनै संयोगू तौ कृत कृत्य होहिं सब लोगू
सखि हमरे अति आरति ताते कबहुं क ये आवहिं इहि नाते

दो० नाहित हम कहं सुनहु सखि इन्ह कर दरशन दूरि
यह संघट तब होइ जब पुण्य पुराकृत भूरि ॥

बोली अपर कहेउ सखि नीका यह विवाह अति हित सबहीका
कोउ कह शंकर चाप कठोरा । ये श्यामल मृदु गात किशोरा
सब असमंजस अहै सयानी । यह सुनि अपर कहै मृदु बानी
सखि इन कहँ कोउ कोउ अस कहहीं बड़ प्रभाव देखत लघु अहहीं
परसि जासु पद पंकज धूरी ॥॥ तरी अहिल्या कृत अघ भूरी
सो कि रहै विनु शिव धनु तोरे । यह प्रतीति परिहरिय न भोरे
जेहि विरंचि रचि सीय संवारी तेइ श्यामल वर रचेउ विचारी
तासु वचन सुनि सब हरषानी । ऐसेइ होउ कहहिं मृदु बानी ।

दो० हिय हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि वृन्द
जाहिं जहां जहं बंधु दोउ तहं तहं परमानन्द ।

पुर पूरब दिशि गे दोउ भाई ॥ जहां धनुष मख भूमि बनाई
अति विस्तार चारु गच ढारी । विमल वेदिका रुचिर संवारी
चहुं दिशि कंचन मंच विशाला रचे जहां बैठहिं महि पाला ॥
तेहि पाछे समीप चहुं पासा । अपर मंच मंडली विलासा
कछुक ऊंच सब भांति सुहाई बैठहिं नगर लोग सब आई
तिनके निकट विशाल सुहाये धवल धाम बहु वरण बनाये ।

जहं बैठी देखहिं पुर नारी ॥ यथा योग्य निज कुल अनुहारी
पुर बालक कहि कहि मृदु बचना सादर प्रभुहि देखावहिं रचना

दो० सब शिसु इहि मिसु प्रेम बस परसि मनोहर गात
तन पुलकहिं अति हर्ष हिय देखि देखि दोउ भ्रात

शिसु सब राम प्रेम बस जाने। प्रीति समेत निकेत बखाने ॥
निज निज रुचि सब लेहिं बुलाई सहित सनेह जाहिं दोउ भाई
राम देखावहिं अनुजहिं रचना कहि मृदु मधुर मनोहर बचना
लव निमेष महं भुवन निकाया रचै जासु अनुशासन माया।
भक्त हेतु सोइ दीन दयाला ॥ चितवत चकित धनुष मख शाला
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं। जानि बिलम्ब त्रास मन माहीं
जासु त्रास डर कहं डर होई ।भजन प्रभाव देखावत सोई
कहि बातैं मृदु मधुर सुहाई। किये बिदा बालक बरि आई

दो० सभय सप्रेम विनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ
गुरु पद पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ॥

निशि प्रवेश मुनि आयसु दीन्हा सबही संध्या बंदन कीन्हा।
कहत कथा इतिहास पुरानी रुचिर रजनी युग याम सिरानी
मुनि वर शयन कीन्ह तब जाई लगे चरण चापन दोउ भाई
जिनके चरण सरोरुह लागी।करत विविध जप योग विरागी
ते दोउ बंधु प्रेम जनु जीते ।गुरु पद कमल पलोटत प्रीते
बार बार मुनि आज्ञा दीन्हा। रघुवर जाइ शयन तब कीन्हा
चापत चरण लषण उर लाये समय सप्रेम परम सुख पाये
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता पौढे धरि उर पद जलजाता

दो० उठे लषण निशि विगत सुनि अरुण शिखा धुनि कान
गुरु ते पहिले जगतपति जागे राम सुजान॥

सकल शौच करि जाइ नहाये नित्य निवाह गुरुहिं शिर नाये

समय जानि गुरु आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई॥
भूप बाग बर देखेउ जाई। जहँ बसन्त ऋतु रही लुभाई॥
लागे बिटप मनोहर नाना। बरण बरण बर बेलि बिताना॥
नव पल्लव फल सुमन सुहाये। निज सम्पति सुर तरुहिं लजाये॥
चातक कोकिल कीर चकोरा। कूजत बिहँग नचत कल मोरा॥
मध्य बाग सर सोह सुहावा। मणि सोपान बिचित्र बनावा॥
बिमल सलिल सरसिज बहुरंगा। जल खग कूजत गुंजत भृंगा॥

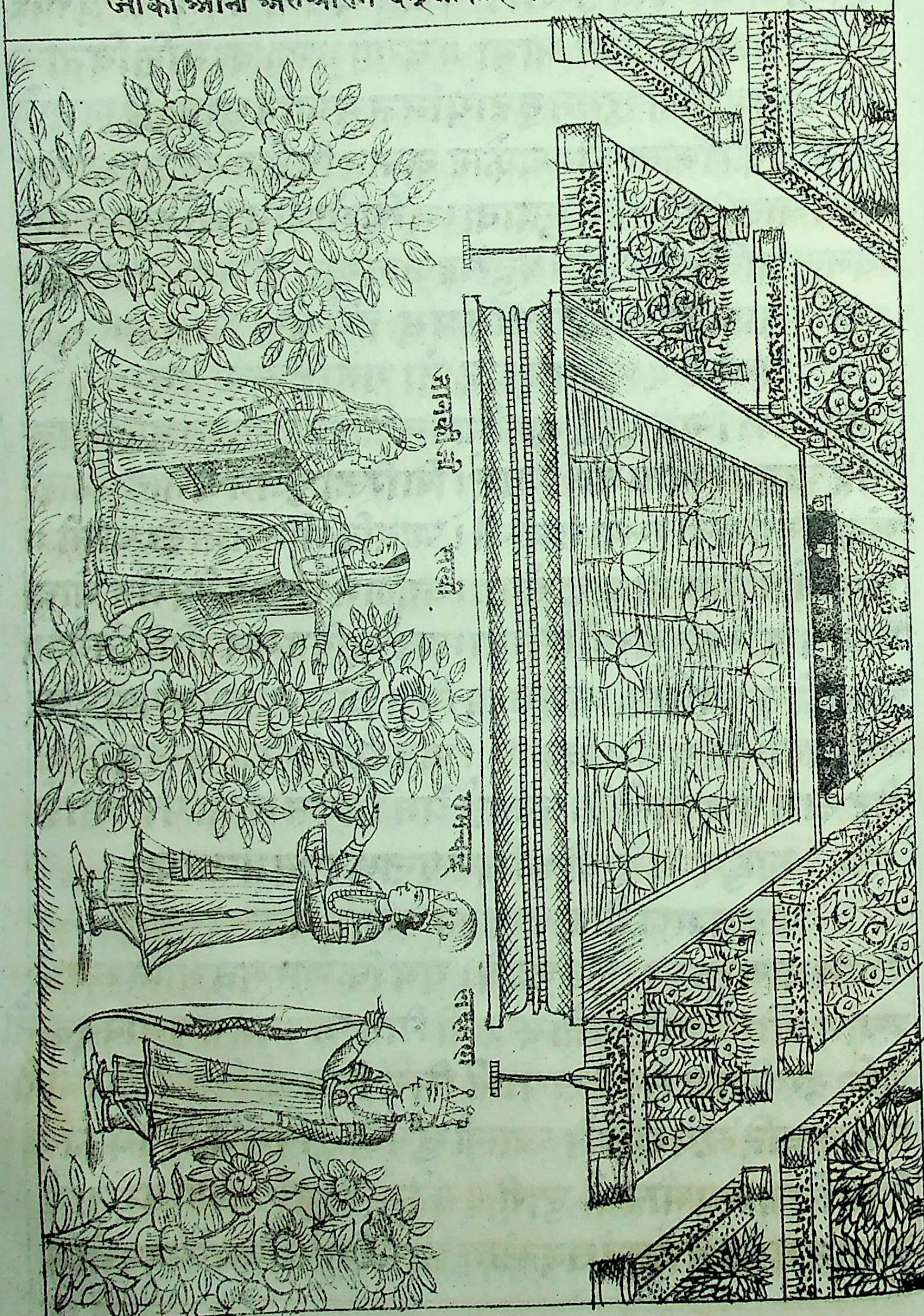
दो० बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु हर्षे बंधु समेत॥
परम रम्य आराम यह जो रामहिं सुख देत॥

चहुँ दिशि चितै पूछि मालीगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन॥
तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई॥
संग सखी सब सुभग सयानी। गावहिं गीत मनोहर बानी॥
सर समीप गिरिजा ग्रह सोहा। बरणि न जाय देखि मन मोहा॥
मज्जन करि सर सखी समेता। गई मुदित मन गौरि निकेता॥
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग बर मांगा॥
एक सखी सिय संग बिहाई। गई रही देखन फुलवाई॥
तेइ दोउ बंधु बिलोके जाई। प्रेम बिबस सीता पहँ आई॥

दो० तासु दशा देखी सखिन पुलक गात जल नयन।
कहु कारण निज हरष कर पूछहिं सब मृदु बयन॥

देखन बाग कुँवर दोउ आये। बय किशोर सब भांति सुहाये॥
स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी॥
सुनि हरषीं सब सखी सयानी। सिय हिय अति उतकंठा जानी॥
एक कहहिं नृप सुत ते आली। सुने जे मुनि संग आये काली॥
जिन निज रूप मोहनी डारी। कीन्हे स्वबस नगर नर नारी॥
बरणत छबि जहँ तहँ सब लोगू। अवसि देखिये देखन योगू॥

श्रीरामचन्द्र अरु लक्ष्मण जी को पुष्प वाटिका में जाना अरु गिरिजा पूजनार्थ जानकी जी को आना अरु श्रीरामचन्द्र जी को देखि अलौकिक प्रीति उत्पन्न होना



तासु वचन अति सियहि सुहाने दरश लागि लोचन अकुलाने
चली अग्र करि प्रिय सखि सोई प्रीति पुरातन लखै न कोई ॥॥
दो० सुमिरि सीय नारद वचन उपजी प्रीति पुनीत
चकित विलोकति सकल दिशि जनु शिशु मृगी सभीत
कंकण किंकिणि नूपुर धुनि सुनि कहत लषण मन राम हृदय गुनि
मानहुं मदन दुन्दुभी दीन्ही ॥॥ मनसा विश्व विजय कह कीन्ही
अस कहि फिरि चितये तेहि ओरा सिय मुख शशि भये नयन चकोरा
भये विलोचन चारु अचंचल मनहुं सकुचि निमि तजेउ दृगंचल
देखि सीय शोभा सुख पावा । हृदय सराहत वचन न आवा ।
जनु विरंचि सब निज निपुणाई विरचि विश्व कहं प्रगट दिखाई
सुन्दरता कहं सुन्दर करई ॥ । छवि गृह दीप सिखा जनु बरई
सब उपमा कवि रहे जुठारी ॥ केहि पट तरिय विदेह कुमारी
दो० सिय शोभा हिय वरणि प्रभु आपनि दशा विचारि
बोले शुचि मन अनुज सन वचन समय अनुहारि
तात जनक तनया यह सोई । धनुष यज्ञ जेहि कारण होई
पूजन गौरि सखी लै आई ॥ करति प्रकाश फिरति फुलवाई
जासु विलोकि अलौकिक शोभा सहज पुनीत मोर मन छोभा
सो सब कारण जान विधाता ॥ फरकहि शुभद अंग सुनु भ्राता
रघुवंशिन कर सहज सुभाऊ । मन कुपंथ पग धरै न काऊ ॥
मोहिं अतिशय प्रतीति जिय केरी जेहि सपनेहुं परनारि न हेरी
जिनके लहहि न रिपु रण पीठी । नहिं लावहिं पर तिय मन डीठी
मंगन लहहिं न जिनके नाहीं ते नर वर थोरे जग माहीं ॥
दो० करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लुभान
मुख सरोज मकरंद छवि करत मधुप इव पान
चितवत चकित चहूं दिशि सीता कहं गये नृप किशोर मन चीता

जहं विलोकि मृग शावक नयनी जनु तहं बरष कमल सित श्रयनी
लता ओट तब सखिन लखाये श्यामल गौर किशोर सुहाये
देखि रूप लोचन ललचाने । हर्षे जनु निज निधि पहिचाने
थके नयन रघुपति छवि देखी पलकन हूं परिहरी निमेषी
अधिक सनेह देह भइ भोरी शरद शशिहिं जनु चितव चकोरी
लोचन मग रामहिं उर आनी दीन्ह पलक कपाट सयानी ।
जब सिय सखिन प्रेम बस जानी कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी

दो० लता भवन ते प्रगट भे । तेहि अवसर दोउ भाइ ।
निकसे जनु युग विमल विधु जलद पटल बिलगाइ

शोभा सीव सुभग दोउ वीरा ॥ नील पीत जलजात शरीरा ॥
काकपक्ष शिर सोहत नीके । गुच्छा बिच बिच कुसुम कली के
भाल तिलक श्रम बिंदु सुहाये । श्रवण सुभग भूषण छवि छाये
विकट भृकुटि कच घूघर वारे नव सरोज लोचन रतनारे ।
चारु चिबुक नासिका कपोला हास विलास लेत जनु मोला
मुख छवि कहि न जाय मोहिं पाहीं जो विलोकि बहु काम लजाहीं
उर मणि माल कंबु कल ग्रीवा । काम कलभ कर भुज बल सीवा
सुमन समेत वाम कर दोना ॥ सांवर कुंवर सखी सुठि लोना

दो० केहरि कटि पट पीत धर सुखमा शील निधान
देखि भानु कुल भूषणहिं विसरा सखिन अपान

धरि धीरज इक सखी सयानी । सीता सन बोली गहि पानी ।
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू भूप किशोर देखि किन लेहू ।
सकुचि सीय तब नयन उघारे सन्मुख दोउ रघुवंश निहारे ॥
नख शिख देखि राम की शोभा सुमिरि पिता प्रण मन अति क्षोभा
परवस सखिन लखी जब सीता भये गहरु सब कहहिं सभीता
पुनि आउब एहि विरिया काली अस कहि मन विहंसी इक आली

गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी भये बिलंब मातु भय मानी ॥
धरि बड़ि धीर राम उर आनी फिर आपन प्रण पितुबस जानी
दो० देखन मिसु मृग विहग तरु फिरै बहोरि बहोरि ॥
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़ी प्रीति न थोरि
जानि कठिन शिवचाप बिसूरति चली राखि उर स्यामल मूरति
प्रभु जब जात जानकी जानी सुख सनेह शोभा गुण खानी ॥
परम प्रेम मय मृदु मसि कीन्ही। चारु चित्त भीतर लिखि लीन्ही
गई भवानी भवन बहोरी ॥ । बंदि चरण बोली कर जोरी।
जय जय जय गिरिराज किशोरी जय महेश मुख चंद चकोरी
जय गज बदन षडानन माता । जगत जननि दामिनि दुति गाता
नहिं तव आदि मध्य अवसाना अमित प्रभाव वेद नहिं जाना
भव भौ विभव परा भव कारिणि विश्व विमोहनि स्वबस विहारिणि
दो० पति देवता सुतीय महं मातु जननि तव रेख ॥
महिमा अमित न कहि सकहिं सहस शारदा शेष
सेवत तोहि सुलभ फल चारी । वर दायिनि त्रिपुरारि पियारी
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे ॥ सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे
मोर मनोरथ जानहुं नीके ॥। बसहु सदा उरपुर सब ही के ॥
कीन्हेउ प्रगट न कारण तेही । अस कहि चरण गहे वैदेही
विनय प्रेम बस भई भवानी ॥ खसी माल मूरति मुसुकानी ।
सादर सिय प्रसाद उर धरेऊ । बोली गौरि हर्ष हिय भरेऊ ॥
सुनु सिय सत्य अशीष हमारी । पूजिहि मन कामना तुम्हारी
नारद वचन सदा शुचि सांचा । सो वर मिलिहि जाहि मन रांचा
छं० मन जाहि रांचो मिलिहि सो वर सहज सुंदर सांवरो
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रांवरो
इहि भांति गौरि अशीष सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली

तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली
सो० जानि गौरि अनुकूल। सिय हिय हर्ष न जाय कहि
मंजुल मंगल मूल ॥ वाम अंग फरकन लगे
हृदय सराहत सीय लुनाई ॥ गुरु समीप गवने दोउ भाई ॥
राम कहा सब कौशिक पाहीं ॥ सरल सुभाव छुअत छल नाहीं
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही। पुनि अशीश दोउ भाइन्ह दीन्ही
सुफल मनोरथ होंउ तुम्हारे । राम लषण सुनि भये सुखारे
करि भोजन मुनि वर विज्ञानी लगे कहन कछु कथा पुरानी।
विगत दिवस मुनि आयसु पाई संध्या करण चले दोउ भाई
प्राची दिशि शशि उगेउ सुहावा सिय मुख सरिस देखि सुख पावा
बहुरि विचार कीन्ह मन माहीं। सीय वदन सम हिमकर नाहीं।
दो० जन्म सिंधु पुनि बंधु विष दिन मलीन स कलंक ॥
सिय मुख समता पाव किमि चंद वापुरो रंक ॥।
घटै बढ़ै विरहिनि दुख दाई ॥ ग्रसै राहु निज संधिहि पाई ॥
कोक शोक प्रद पंकज द्रोही। अवगुण बहुत चन्द्रमा तोहीं
वैदेही मुख पटतर दीन्हे ॥। होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे
सिय मुख छवि विधु व्याज बखानी गुरु पहं चले निशा बड़ि जानी
करि मुनि चरण सरोज प्रणामा। आयसु पाइ कीन्ह विश्रामा।
विगत निशा रघुनायक जागे । बंधु विलोकि कहन अस लागे
उयउ अरुण अवलोकहु ताता पंकज कोक लोक सुख दाता।
बोले लषण जोरि युग पाणी । प्रभु प्रभाव सूचक मृदु वाणी
दो० अरुणोदय सकुचे कुमुद उडुगण जोति मलीन
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भये नृपति बलहीन
नृप सब नखत करहिं उजियारी टारि न सकहिं चाप तम भारी
कमल कोक मधुकर खग नाना हरषे सकल निशा अवसाना।

ऐसहिं प्रभु सब भक्त तुम्हारे ॥ होइहहिं टूटे धनुष सुखारे ॥
उदय भानु बिनु श्रम तम नाशा। दुरे नखत जग तेज प्रकाशा।
रवि निज उदय ब्याज रघुराया प्रभु प्रताप सब नृपन दिखाया।
तव भुजबल महिमा उद्घाटी । प्रगटी धनु विघटन परिपाटी
बंधु वचन सुनि प्रभु मुसुकाने। होइ शुचि सहज पुनीत अन्हाने
नित्य कृया करि गुरु पहं आये चरण सरोज सुभग शिर नाये
सतानंद तब जनक बुलाये । कौशिक मुनि पहँ तुरत पठाये
जनक बिनय तिन आय सुनाई। हर्षि बोलि लिये दोउ भाई ॥
दो॰ सतानंद पद वंदि प्रभु। बैठे गुरु पहं जाइ ॥
चलहु तात मुनि कहेउ तव पठवा जनक बुलाइ
सीय स्वयंवर देखिय जाई ॥ ईश काहि धौं देहि बडाई ॥
लषण कहा यश भाजन सोई नाथ कृपा तव जापर होई ॥
हरषे सुनि सब मुनि वर बानी। दीन्ह अशीष सबहि सुख मानी
पुनि मुनि वृन्द समेत कृपाला देखन चले धनुष मख शाला
रंगभूमि आये दोउ भाई ॥ । अस सुधि सब पुरवासिन पाई
चले सकल ग्रह काज बिसारी बालक युवा जरठ नर नारी ॥
देखी जनक भीर भइ भारी । शुचि सेवक सब लिये हंकारी
तुरत सकल लोगन पहँ जाहू । आसन उचित देहु सब काहू
दो॰ कहि मृदु वचन विनीत तिन बैठारे नर नारि ॥
उत्तम मध्यम नीच लघु। निज निज थल अनुहारि
राजकुंवर तेहि अवसर आये मनहुं मनोहरता छवि छाये
गुण सागर नागर वर बीरा । सुन्दर श्यामल गौर शरीरा ॥
राज समाज बिराजत रूरे ॥ उडगण महं जनु युग विधु पूरे ॥
जिन के रही भावना जैसी ॥ प्रभु मूरति देखी तिन तैसी ॥
देखहिं भूप महा रण धीरा ॥ मनहुं वीर रस धरे शरीरा ॥

डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी मनहुं भयानक मूरति भारी ॥
रहे असुर छल जो नृप वेषा । तिन प्रभु प्रगट काल सम देखा ॥
पुर वासिन देखे दोउ भाई ॥ नरभूषण लोचन सुख दाई ॥
दो॰ नारि विलोकहिं हरषि हिय निज निज रुचि अनुरूप
जनु सोहत शृंगार धरि मूरति परम अनूप ॥
विदुषन प्रभु विराट मय दीसा बहु मुख कर पग लोचन शीशा ॥
जनक जाति अवलोकहिं कैसे । सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे ॥
सहित विदेह विलोकहिं रानी ॥ शिशु सम प्रीति न जाय बखानी ॥
योगिन परम तत्त्व मय भासा । संत शुद्ध मन सहज प्रकाशा ॥
हरि भक्तन देखेउ दोउ भ्राता । इष्ट देव इव सब सुख दाता ॥
रामहिं चितव भाव जेहि सीया । सो सनेह सुख नहिं कथनीया ॥
उर अनुभवति न कहि सक कोऊ कवन प्रकार कहै कवि कोऊ ॥
एहि विधि रहा जाहि जस भाऊ तेइ तस देखेउ कोशल राऊ ॥
दो॰ राजत राज समाज महँ कोशल राज किशोर
सुन्दर श्यामल गौर तन विश्व विलोचन चोर
सहज मनोहर मूरति दोऊ ॥ कोटि काम उपमा लघु सोऊ ॥
शरद चन्द निंदक मुख नीके । नीरज नयन भावते जी के ॥
चितवनि चारु मार मद हरणी । भावत हृदय जाय नहिं बरणी ॥
कल कपोल श्रुति कुंडल लोला चिबुक अधर सुन्दर मृदु बोला ॥
कुमुद बंधु कर निन्दक हासा ॥ भृकुटी विकट मनोहर नासा ॥
भाल विशाल तिलक झलकाही कच विलोकि अलि अवलि लजाही
पीत चौतनी शिरन सुहाई ॥ कुसुम कली बिच बीच बनाई ॥
रेखा रुचिर कंबु कल ग्रीवा ॥ जनु त्रिभुवन सुखमा की सींवा ॥
दो॰ कुंजर मणि कंठा ललित उर तुलसी की माल ।
वृषभ कंध केहरि ठवनि बल निधि बाहु विशाल

करि तूणीर पीत पट बांधे ॥ कर शर धनुष वाम वर कांधे।
पीन यज्ञ उपवीत सुहाई ॥ नखशिख मंजु महा छवि छाई
देखि लोग सब भये सुखारे ॥ इक टक लोचन टरहिं न टारे
हरषे जनक देखि दोउ भाई। मुनि पद कमल गहे तब जाई
करि बिनती निज कथा सुनाई। रंग अवनि सब मुनिहि दिखाई
जहँ जहँ जाहिं कुवर वर दोऊ। तहँ तहँ चकित चितव सब कोऊ
निज निज रुचि रामहिं सब देखा। कोउ न जान कछु मर्म विशेषा
भलि रचना नृप मन मुनि कहेऊ राजा मुदित परम सुख लहेऊ

सो॰ सब मंचन ते मंच इक। सुन्दर विशद विशाल।
मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल ॥ॐ

प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे जनु राकेश उदय भये तारे॥
अस प्रतीति तिन्ह के मन माहीं राम चाप तोरब शक नाहीं
बिनु भंजेहु भव धनुष विशाला मेलिहि सीय राम उर माला
अस विचारि गवनहु घर भाई जय प्रताप बल तेज गँवाई॥
बिहँसे अपर भूप सुनि बानी। जे अविवेक अंध अभिमानी
तोरेहु धनुष ब्याह अवगाहा। बिनु तोरे को कुवरि बिवाहा
एक बार कालहु किन होई। सिय हित समर जितब हम सोई॥
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने। धर्म्म शील हरि भक्त सयाने।

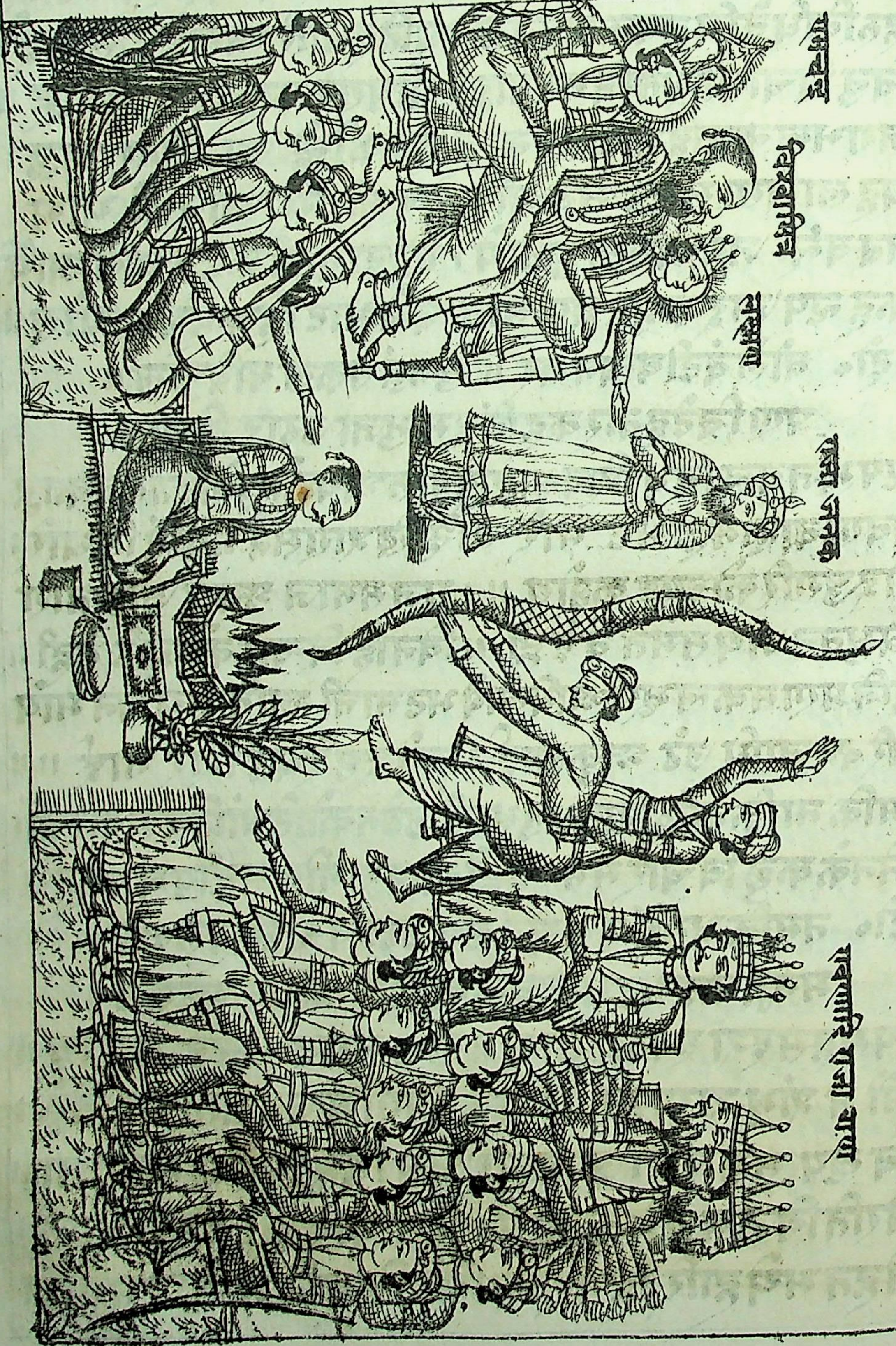
सो॰ सीय बिवाहब राम। गर्व दूर करि नृपन कर॥
जीति को सक संग्राम। दशरथ के रण बाकुरे॥

वृथा मरहु जनि गाल बजाई। मन मोदक नहिं भूख बुझाई
शिख हमार सुनु परम पुनीता जगदंबा जानहु जिय सीता।
जगत पिता रघुपतिहि विचारी भरि लोचन छवि लेहु निहारी
सुन्दर सुखद सकल गुण राशी। ये दोउ बंधु शंभु उर वासी॥
सुधा समुद्र समीप विहाई ॥ मृग जल निरखि मरहु कत धाई

करहु जाय जा कहँ जोइ भावा। हमतो आजु जन्म फल पावा।
अस कहि भले भूप अनुरागे। रूप अनूप विलोकन लागे॥
देखहिं सुर नभ चढ़े विमाना। बरषहिं सुमन करहिं कल गाना।
दो॰ जानि सु अवसर सीय तब पठवा जनक बुलाइ।
चतुर सखी सुन्दरि सकल सादर चलीं लिवाइ॥
सिय शोभा नहिं जाइ बखानी। जग दम्बिका रूप गुण खानी
उपमा सकल मोहिं लघु लागी। प्राकृत नारि अंग अनुरागी
सीय बरणि तेहि उपमा देई॥ को कवि कहै अयश को लेई।
जौं पटतरिय तीय सम सीया॥ जग अस युवति कहां कमनीया
गिरा मुखर तन अर्द्ध भवानी। रति अति दुखित अतनु पति जानी
विष वारुणी बंधु प्रिय जेही॥ कहिय रमा सम किमि वैदेही॥
जौं छवि सुधा पयोनिधि होई। परम रूप मय कच्छप सोई।
शोभा रजु मन्दर शृंगारू॥ मथै पाणि पंकज निज मारू
दो॰ एहि विधि उपजै लक्षि जब सुन्दरता सुख मूल।
तदपि सकोच समेत कवि कहहिं सीय सम तूल
चलीं संग लै सखी सयानी। गावति गीत मनोहर बानी।
सोह नवल तन सुन्दरि सारी। जगत जननि अतुलित छवि भारी
भूषण सकल सुदेश सुहाये। अंग अंग रचि सखिन बनाये
रंगभूमि जब सिय पगु धारी॥ देखि रूप मोहे नर नारी॥
हर्षि सुरन दुन्दुभी बजाई॥ वर्षि प्रसून अपसरा गाई॥
पाणि सरोज सोह जयमाला। औचक चितै सकल महिपाला
सीय चकित चित रामहिं चाहा भये मोह वस सब नर नाहा
मुनि समीप बैठे दोउ भाई॥ लगे ललकि लोचन निधि पाई
दो॰ गुरुजन लाज समाज बड़ि देखि सीय सकुचानि।
लागी विलोकन सखिन तन रघुबीरहि उर आनि

रामरूप अरु सिय छवि देखी। नरनारिन परिहरी निमेषी।
शोचहिं सकल कहत सकुचाहीं विधि सन विनय करहिं मन माहीं
हरु विधि वेगि जनक जड़ताई। मति हमारि अस देहु सुहाई।
विनु विचार प्रण तजि नर नाहू। सीय राम कर करैं विवाहू॥
जग भल कहहिं भाव सब काहू हठ कीन्हे उर अंतर दाहू।
यह लालसा मगन सब लोगू वर सांवरो जानकी योगू
तब बंदी जन जनक बुलाये। विरदावली कहत चलि आये
कह नृप जाइ कहहु प्रण मोरा चले भाट हिय हर्ष न थोरा॥
दो० बोले वंदी वचन वर॥ सुनहु सकल महिपाल॥
प्रण विदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ विशाल
नृप भुज बल विधु शिवधनु राहू गरुअ कठोर विदित सब काहू
रावण बाण महा भट भारे॥ देखि शरासन गवहिं सिधारे।
सोइ पुरारि को दण्ड कठोरा॥। राज समाज आज जोइ तोरा
त्रिभुवन जय समेत वैदेही॥ विनहिं विचार वरै हठि तेही॥
सुनि प्रण सकल भूप अभिलाषे भट मानी अति शय मन माषे
परिकर बाधि उठे अकुलाई। चले इष्ट देवन शिर नाई॥॥
तमकि ताकि तकि शिवधनु धरहीं उठै न कोटि भांति बल करहीं।
जिनके कछु विचार मन माहीं चाप समीप महीप न जाहीं।
दो० तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ
मनहुं पाइ भट बाहु बल अधिक अधिक गरुआइ
भूप सहस दश एकहि बारा॥ लगे उठावन टरइ न टारा॥
डगै न शंभु शरासन कैसे। कामी वचन सती मन जैसे।
सब नृप भये योग उपहासी जैसे विनु विराग संन्यासी॥
कीरति विजय वीरता भारी। चले चाप कर सर बस हारी।
श्रीहत भये हारि हिय राजा। बैठे निज निज जाइ समाजा।

धनुषभञ्जन के निमित्त सम्पूर्ण राजा लोगों का जाना और धनुष का न उठना ॥ ५ ॥



नृपन विलोकि जनक अकुलाने बोले वचन रोष जनु साने ॥
दीप दीप के भूपति नाना ॥ आये सुनि हम जो प्रण ठाना
देव दनुज धरि मनुज शरीरा । विपुल वीर आये रण धीरा ॥
दो० कुवरि मनोहरि विजय बड़ि कीरति अति कमनीय
पावन हार विरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय॥
कहहु काहि यह लाभ न भावा। काहु न शंकर चाप चढ़ावा।
रहा चढ़ा उब तोर बु भाई । तिल भरि भूमि न सकेउ छुड़ाई
अब जनि कोउ माखै भट मानी वीर विहीन मही मैं जानी
तजहु आश निज निज गृह जाहु लिखा न विधि वैदेहि विवाहू
सुकृत जाय जो प्रण परिहरऊं कुवरि कुआरि रहै का करऊं॥
जो जनतें बिनु भट भुइं भाई तौ प्रण करि होतेउं न हंसाई
जनक वचन सुनि सब नर नारी देखि जानकी भये दुखारी ॥
सुनतहि लषण कुटिल भै भौंहैं । रदपट फरकत नयन रिसौहैं
दो० कहि न सकत रघुवीर डर लगे वचन जनु बाण ॥
नाइ राम पद कमल शिर बोले गिरा प्रमाण ॥
रघुवंशिन महं जहं कोउ होई । तेहि समाज अस कहइ न कोई
कही जनक जस अनुचित बानी विद्यमान रघुकुल मणि जानी।
सुनहु भानु कुल पंकज भानू । कहौं सुभाव न कछु अभिमानू
जौं रावर अनुशासन पाऊं । कंदुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊं।
कांचे घट जिमि डारौं फोरी ॥ सकौं मेरु मूलक इव तोरी ॥
तव प्रताप महिमा भगवाना। का बापुरो पिनाक पुराना॥
नाथ जानि अस आयसु होऊ कौतुक करौं विलोकिय सोऊ
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं शत योजन प्रमाण लै धावौं
दो० तोरौं छत्रक दंड जिमि । तव प्रताप बल नाथ॥
जो न करौं प्रभु पद सपथ पुनि न धरौं धनु हाथ

लषण सकोप वचन जब बोले। डगमगानि महि दिग्गज डोले
सकल लोक सब भूप डराने ॥ सिय हिय हर्ष जनक सकुचाने
गुरु रघुपति सब मुनि मन माहीं मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं
सैनहिं रघुपति लषण निवारे। प्रेम समेत निकट बैठारे ॥
विश्वामित्र समय शुभ जानी। बोले अति सनेह मृदु बानी
उठहु राम भंजहु भव चापू। मेटहु तात जनक परितापू
सुनि गुरु वचन चरण शिर नावा हर्ष विषाद न कछु उर आवा
ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये। ठवनि युवा मृगराज लजाये ॥

दो० उदित उदय गिरि मंच पर रघुबर बाल पतंग ॥
विकसे सन्त सरोज सब। हर्षे लोचन भृंग ॥॥

नृपन केरि आशा निशि नाशी। वचन नखत अवलीन प्रकाशी
मानि महीप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
भये विशोक कोक मुनि देवा। वर्षहिं सुमन जनावहिं सेवा
गुरु पद वंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन सन आयसु मांगा
सहजहि चले सकल जग स्वामी मत्त मंजु कुंजर वर गामी ॥
चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भये सुखारी
वंदि पितर सुर सुकृत संभारे। जो कछु पुण्य प्रभाव हमारे।
तो शिव धनु मृनाल कि नाईं तोरहिं राम गणेश गुसाईं ॥

दो० रामहिं प्रेम समेत लखि सखिन समीप बुलाइ ॥
सीता मातु सनेह बस। वचन कहै बिलखाइ ॥

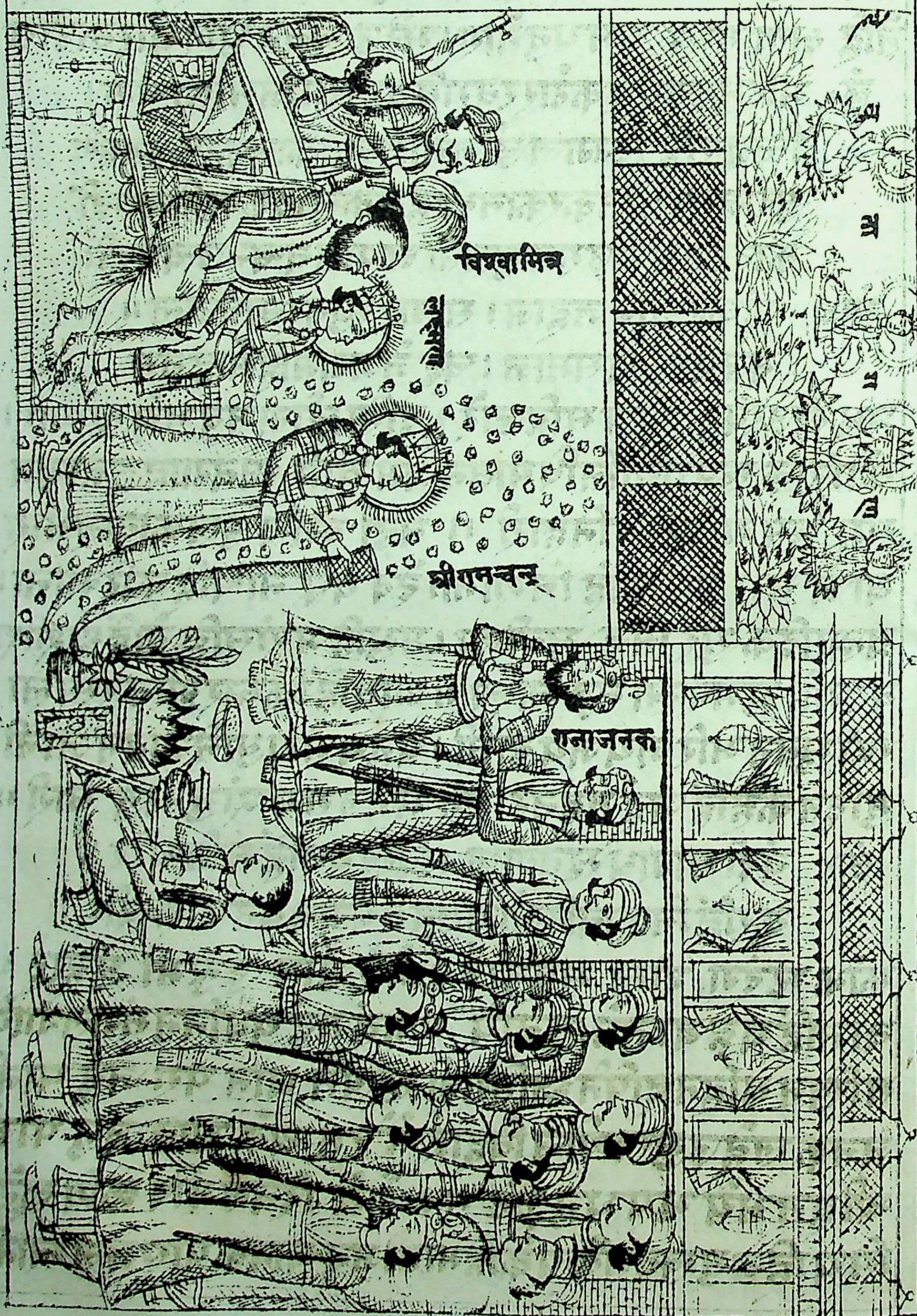
सखि सब कौतुक देखन हारे। जेउ कहावत हितू हमारे ॥
कोउ न बुझाइ कहइ नृप पाहीं ये बालक अस हठ भल नाहीं
रावण वाण छुआ नहिं चापा हारे सकल भूप करि दापा ॥
सो धनु राज कुवर कर देहीं। बाल मराल कि मन्दर लेहीं।
भूप सयानप सकल सिरानी सखि विधि गति कछु जाय न जानी

बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेज वन्त लघु गणिय न रानी॥
कहं कुंभज कहं सिंधु अपारा शोषेउ सुयश सकल संसारा
रवि मण्डल देखत लघु लागा। उदय तासु त्रिभुवन तम भागा
दो० मंत्र परम लघु जासु वस विधि हरि हर सुर सर्व।
महा मत्त गज राज कहं। वश कर अंकुश खर्व।
काम कुसुम धनु शायक लीन्हे सकल भुवन अपने बस कीन्हे
देवि तजिय संशय अस जानी भंजव धनुष राम सुनु रानी॥
सखी वचन सुनि भइ परतीती मिटा विषाद बढ़ी अति प्रीती
तब रामहिं बिलोकि बैदेही॥ सभय हृदय बिनवति जेहि तेही
मनहीं मन मनाय अकुलानी। होहु प्रसन्न महेश भवानी॥
करहु सुफल आपनि सेवकाई करि हित हरहु चाप गरुआई
गणनायक वर दायक देवा॥ आजु लगे कीन्ही तव सेवा।
बार बार बिनती सुनि मोरी॥ करहु चाप गरुता अति थोरी
दो० देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर॥
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली शरीर॥
नीके निरखि नयन भरि शोभा पितु प्रण सुमिरि बहुरि मन छोभा
अहह तात दारुण हठ ठानी॥ समुझत नाहिं कछु लाभ न हानी॥
सचिव सभय सिख देइन कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई।
कहँ धनु कुलिशहु चाहि कठोरा कहं श्याम मृदु गात किशोरा
विधि केहि भांति धरों उर धीरा सिरस सुमन किमि बेधिहि हीरा
सकल सभा की मति भइ भोरी। अब मोहिं शम्भु चाप गति तोरी
निज जड़ता लोगन पर डारी॥ होहु हरुअ रघुपतिहि निहारी।
अति परिताप सीय मन माहीं। लव निमेष युग सम चलि जाहीं
दो० प्रभुहि चिते पुनि चितै महि राजत लोचन लोल
खेलत मनसिज मीन युग जनु बिधु मण्डल डोल

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी प्रगट न लाज निशा अवलोकी
लोचन जल रह लोचन कोना जैसे परम कृपिण कर सोना।
सकुची व्याकुलता बड़ि जानी धरि धीरज प्रतीति उर आनी
तन मन वचन मोर मन सांचा रघुपति पद सरोज मन रांचा
तौ भगवान सकल उर वासी। करिहहिं मुहिं रघुपति की दासी
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलत न कछु सन्देहू
प्रभु तन चितै प्रेम प्रण ठाना। कृपा निधान राम सब जाना
सियहि विलोकि तकेउ धनु कैसे चितव गरुड़ लघु व्यालहिं जैसे
दो० लषण लखेउ रघुवंश मणि ताकेउ हर कोदण्ड
पुलकि गात बोले वचन चरण चापि ब्रह्माण्ड॥
दिग कुंजर हु कमठ अहि कोला धरहु धरणि धरि धीर न डोला।
राम चहहिं शंकर धनु तोरा॥ होहु सजग सुनि आयसु मोरा
चाप समीप राम जब आये॥ नर नारिन सुर सुकृत मनाये।
सबकर संशय अरु अज्ञानू। मन्द महीपन कर अभिमानू।
भृगुपति केरि गर्व गरुआई॥ सुर मुनि वरन केरि कदराई॥
सिय कर शोच जनक परितापा रानिन कर दारुण दुख दापा॥
शंभु चाप बड़ बोहित पाई। चढ़े जाइ सब संग बनाई॥
राम बाहु बल सिंधु अपारा। चहत पार नहिं कोउ कनहारा॥
दो० राम विलोके लोग सब। चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपायतन जानी विकल विशेषि
देखी विपुल विकल वैदेही॥ निमिष विहात कल्प सम तेही
तृषित वारि बिनु जो तन त्यागा। मुये करै का सुधा तड़ागा।
का वर्षा जब कृषी सुखाने। समय चूक पुनि का पछिताने
अस जिय जानि जानकी देखी प्रभु पुलके लखि प्रीति विशेषी
गुरुहि प्रणाम मनहिं मन कीन्हा अति लाघव उठाइ धनु लीन्हा।

दमकेउ दामिनि जिमि घन लयऊ। पुनि धनु नभ मंडल सम भयऊ॥
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े। काहु न लखा देख सब ठाढ़े॥
तेहि छण मध्य राम धनु तोरा। भरेउ भुवन धुनि घोर कठोरा॥
छं० भरि भुवन घोर कठोर रव रवि बाजि तजि मारग चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे सकल विकल विचारहीं।
कोदण्ड भंजेउ राम तुलसी जयति वचन उचारहीं॥
सो० शंकर चाप जहाज। सागर रघुवर बाहु बल॥
बूड़े सकल समाज। चढ़े जे प्रथमहि मोह वस॥
प्रभु दोउ खंड चाप महि डारे। देखि लोग सब भये सुखारे॥
कौशिक रूप पयोनिधि पावन। प्रेम वारि अवगाह सुहावन॥
राम रूप राकेश निहारी। बढ़ी वीचि पुलकावलि भारी॥
बाजे नभ गह गहे निशाना। देव वधू नाचहिं करि गाना॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा। प्रभुहि प्रशंसहि देहिं अशीशा॥
वरषहिं सुमन रंग बहु माला। गावहिं किन्नर गीत रसाला॥
रही भुवन भरि जय जय बानी। धनुष भंग धुनि जात न जानी॥
मुदित कहहिं जहं तहं नर नारी। भंजेउ राम शंभु धनु भारी॥
दो० वंदी मागध सूत गण। विरद वदहिं मति धीर॥
करहिं निछावरि लोग सब हय गय धन मणि चीर॥
झांझ मृदंग शंख सहनाई। भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई॥
बाजहिं बहु बाजने सुहाये। जहं तहं युवतिन मंगल गाये॥
सखिन सहित हर्षित अति रानी। सूखत धान परा जनु पानी॥
जनक लहेउ सुख शोच विहाई। पैरत थके थाह जनु पाई॥
श्री हत भये भूप धनु टूटे। जैसे दिवस दीप छवि छूटे॥
सिय हिय सुख वरणिय केहि भांती। जनु चातक पाए जल स्वाती॥

श्री रामचन्द्र जी का धनुष भङ्ग करना और सम्पूर्ण देवता लोगों को पुष्पों की वर्षा करना॥



रामहिं लखण विलोकत कैसे । शशिहि चकोर किशोरक जैसे ।
सतानन्द तब आयसु दीन्हा । सीता गमन राम पहँ कीन्हा ।

दो॰ संग सखी सुन्दरि चतुरि । गावहिं मंगल चार ॥
गवनी बाल मराल गति सुखमा अंग अपार ॥

सखिन मध्य सिय सोहति कैसी छवि गण मध्य महा छवि जैसी
कर सरोज जय माल सुहाई । विश्व विजय शोभा जनु छाई
तन सकोच मन परम उछाहू । गूढ़ प्रेम लखि परै न काहू
जाइ समीप राम छवि देखी ॥ रहि जनु कुवरि चित्र अवरेखी
चतुर सखी लखि कहा बुझाई । पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥
सुनत युगल कर माल उठाई । प्रेम विवस पहिराइ न जाई
सोहत जनु युग जलज सनाला । शशिहि सभीत देत जयमाला
गावहिं छवि अवलोकि सहेली सिय जयमाल राम उर मेली ॥

सो॰ रघुवर उर जयमाल ।। देखि देव वरषहिं सुमन ।
सकुचे सकल भुआल । जनु विलोकि रवि कुमुद गण

पुर अरु व्योम बाजने बाजे ।।। खल भये मलिन साधु सब गाजे ।
सुर किन्नर नर नाग मुनीशा । जय जय सब कहि देहिं असीसा
नाचहिं गावहिं विबुध बधूटी । बार बार कुसुमावलि छूटी ॥
जहं तहं विप्र वेद धुनि करहीं । बन्दी विरदावलि उच्चरहीं ॥
महि पाताल नाक यश व्यापा । राम बरी सिय भंजेउ चापा
करहिं आरती पुर नर नारी ।।। देहिं निछावरि वित्त विसारी
सोहत सीय राम की जोरी ॥ छवि शृंगार मनहुं इक ठोरी ॥
सखी कहहिं प्रभु पद गहु सीता । करति न चरण परस अति भीता

दो॰ गौतम त्तिय गति सुरति करि नहिं परसति पद पानि
मन विहसे रघुबंश मणि प्रीति अलौकिक जानि

तब सिय देखि भूप अभिलाषे । कूर कपूत मूढ़ मन माखे ॥

उठि उठि पहिरि सनाह अभागे । जहँ तहँ गाल बजावन लागे ॥
लेहु छुडाइ सीय कहँ कोऊ । धरि बांधहु नृप बालक दोऊ ॥
तोरे धनुष काज नहिं सरई । जीवत हमहिं कुवरि को बरई ॥
जो विदेह कछु करै सहाई ॥ जीतहु समर सहित दोउ भाई ॥
साधु भूप बोले सुनि बानी ॥ राज समाजहि लाज लजानी ॥
बल प्रताप वीरता बडाई । नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥
सोइ सूरता कि अब कहुं पाई । असबुधि तो विधि मुह मसिलाई ॥
दो० देखहु रामहिं नयन भरि । तजि इरषा मद मोहु ।
लषण रोष पावक प्रबल जानि शलभ जनि होहु ॥
वैनतेय बलि जिमि चह कागू । जिमि शश चहहिं नाग अरि भागू ॥
जिमि चह कुशल अकारण कोही । सुख सम्पदा चहहि शिवद्रोही ॥
लोभी लोलुप कीरति चहई ॥ अकलंकता कि कामी लहई ॥
हरि पद विमुख परम गति चाहा । तस तुम्हार लालच नर नाहा ॥
कोलाहल सुनि सीय सकानी । सखी लिवाइ गई जहँ रानी ॥
राम सुभाय चले गुरु पाहीं । सिय सनेह बरणत मन माहीं ॥
रानिन सहित शोचवस सीया । अब धौं विधिहि कहा करनीया ॥
भूप वचन सुनि इत उत तकहीं । लषण राम डर बोलि न सकहीं ॥
दो० अरुण नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन सकोप ।
मनहुं मत्त गजगण निरखि सिंह किशोरहि चोप ॥
खरभर देखि विकल नर नारी ॥ सब मिलि देहिं महीपन गारी ॥
तेहि अवसर सुनि शिव धनु भंगा । आये भृगुकुल कमल पतंगा ॥
देखि महीप सकल सकुचाने । बाज झपट जनु लवा लुकाने ॥
गौर शरीर भूति भलि भ्राजा । भाल विशाल त्रिपुंड विराजा ॥
शीश जटा शशि बदन सुहावा । रिसिवस कछुक अरुण होइ आवा ॥
भृकुटी कुटिल नयन रिसि राते । सहजहिं चितवत मनहुं रिसाते ॥

वृषभ कंध उर बाहु विशाला। चारु जनेउ माल मृग छाला॥
कटि मुनिवसन तूण दुइ बांधे। धनु शर कर कुठार कल कांधे॥

दो॰ सन्त भेष करणी कठिन। वरणि न जाइ सरूप॥
धरि मुनि तनु जनु वीर रस आये जहँ सब भूप॥

देखत भृगुपति भेष कराला। उठे सकल भय विकल भुआला॥
पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करण सब दण्ड प्रणामा॥
जेहि सुभाय चितवहिं हित जानी। सो जाने जनु आयु खुटानी॥
जनक बहोरि आय शिर नावा। सीय बुलाय प्रणाम करावा॥
आशिष दीन्ह सखी हरषानी। निज समाज लै गई सयानी॥
विश्वामित्र मिले पुनि आई। पद सरोज मेले दोउ भाई॥
राम लषण दशरथ के ढोटा। दीन्ह अशीष जानि भल जोटा॥
रामहिं चितय रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन॥

दो॰ बहुरि विलोकि विदेह सन कहहु कहा अति भीर।
पूछत जान अजान जिमि व्यापेउ कोप शरीर॥

समाचार कहि जनक सुनाये। जेहि कारण महीप सब आये॥
सुनत वचन फिरि अनत निहारे। देखे चाप खण्ड महि डारे॥
अति रिसि बोले वचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष केइ तोरा॥
वेगि दिखाउ मूढ़ नत आजू। उलटौं महि जहँ लगि तव राजू॥
अति डर उतर देत नृप नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी॥
मन पछताति सीय महतारी। विधि संवारि सब बात बिगारी॥
भृगुपति कर सुभाव सुनि सीता। अर्द्ध निमेष कल्प सम बीता॥

दो॰ सभय विलोके लोग सब जानि जानकी भीर॥
हृदय न हर्ष विषाद कछु बोले श्री रघुवीर॥

नाथ शंभु धनु भंजन हारा। होइहि कोउ एक दास तुम्हारा॥

आयसु कहा कहिय किन मोही सुनि रिसाय बोले मुनि कोहीं
सेवक सो जो करे सेवकाई । अरि करणी करि करिय लराई
सुनहुं राम जेइ शिव धनु तोरा। सहस बाहु सम सो रिपु मोरा
सो बिलगाउ विहाइ समाजा । नतु मारे जैहैं सब राजा ।
सुनि मुनि वचन लषण मुसकाने बोले परसु धरहि अपमाने
बहु धनुहीं तोरेउं लरिकाईं ॥ कबहुन अस रिसि किन्ह गुसाईं
इहि धनु परम मता केहि हेतू । सुनि रिसाय कह भृगुकुलकेतू

दो॰ रे नृप बालक कालबश बोलत तोहि न सभार ॥
धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार ।

लषण कहा हंसि हमरे जाना । सुनहु देव सब धनुष समाना
काक्षित लाभ जीर्ण धनु तोरे । देखा राम नये के भोरे ।
छुवत टूट रघुपतिहिं न दोषू मुनि बिनु काज करिय कत रोषू
बोले चित्तय परसु की ओरा ॥ रे शठ सुनेसि प्रभाव न मोरा ॥
बालक बोलि बधौं नहिं तोहीं । केवल मुनि जड़ जानेसि मोहीं
बाल ब्रह्मचारी अति कोही ॥ विश्व बिदित क्षत्रियकुलद्रोही
भुज बल भूमि भूप बिन कीन्हे । बिपुल बार महि देवन दीन्हे
सहस बाहु भुज छेदन हारा ॥ परसु बिलोकु महीप कुमारा

दो॰ मातु पितहि जनि शोच बस करसि महीपकिशोर
गर्भन के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ।

बिहंसि लषण बोले मृदु बानी । अहो मुनीश महा भट मानी
पुनि पुनि मोहिं देखाव कुठारा । चहत उड़ावन फूंकि पहारा
इहां कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं जो तर्जनि देखत मरि जाहीं
देखि कुठार शरासन बाना । मैं कछु कहा सहित अभिमाना
भृगु कुल समुझि जनेउ बिलोकी जो कछु कहहु सहौं रिसि रोकी
सुर महि सुर हरिजन अरु गाई । हमरे कुल इन पर न सुराई ।

वधे पाप अपकीरति हारे ॥ मारतहुं पां परिय तुम्हारे ॥
कोटि कुलिश सम वचन तुम्हारा वृथा धरहु धनुवाण कुठारा
दो॰ जो विलोकि अनुचित कहेउं क्षमहु महा मुनि धीर
सुनि सरोष भृगु बंश मणि बोले गिरा गंभीर ॥
कौशिक क्षमहु मंद यह बालक कुटिल कालवश निजकुल घालक
भानु वंश राकेश कलंकू ॥ निपट निरंकुश अबुध अशंकू
काल कवर होइहि क्षण माहीं। कहीं पुकारि खोरि मोहिं नाहीं
तुम हट कहु जो चहहु उबारा। कहि प्रताप बल रोष हमारा
लषण कहेउ मुनि सुयश तुम्हारा तुमहिं अछत को वरणै पारा
अपने मुख तुम आपनि करणी बार अनेक भांति बहु वरणी
नहिं संतोष तो पुनि कछु कहहू। जनि रिसि रोकि दुसह दुख सहहू
बीर व्रत्ति तुम धीर अछोभा। गारी देत न पावहु शोभा
दो॰ सूर समर करणी करहिं। कहि न जनावहिं आपु
विद्यमान रण पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु
तुम तो काल हांकि जनु लावा। बार बार मोहिं लागि बुलावा
सुनत लषण के वचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा।
अब जनि देहु दोष मोहिं लोगू। कटुवादी बालक बध योगू
बाल विलोकि बहुत मैं बांचा। अब यह मरण हार भा सांचा।
कौशिक कहा क्षमिय अपराधू। बाल दोष गुण गणहिं न साधू
कर कुठार मैं अकरुण कोही। आगे अपराधी गुरु द्रोही
उतर देत छाडों बिनु मारे। केवल कौशिक शील तुम्हारे
नतु इहि काटि कुठार कठोरे। गुरुहि उऋण होतेउं श्रम थोरे
दो॰ गाधि सुअन कह हृदय हंसि मुनिहिं हरिअरै सूझ
अजगव खंडेउ ऊख जिमि अजहुं न बूझ अबूझ।
कहेउ लषण मुनि शील तुम्हारा को नहिं जान विदित संसारा

मातुहिं पितहिं उरिण भये नीके। गुरु ऋण रहा शोच बड़ जीके॥
सो जनु हमरे माथे काढ़ा। दिन चलि गये ब्याज बहु बाढ़ा
अब आनिय व्यवहरिया बोली तुरत देव मैं थैली खोली॥
सुनि कटु वचन कुठार सुधारा। हा हा कहि सब लोग पुकारा
भृगुवर परसु देखावहु मोही। विप्र विचारि बचौं नृप द्रोही
मिले न कबहुं सुभट रण गाढ़े। द्विज देवता घरहि के बाढ़े॥
अनुचित कहि सब लोग पुकारे रघुपति सैनहिं लषण निवारे॥

दो॰ लषण उतर आहुति सरिस भृगुवर कोप कृशानु
बढ़त देखि जल सम वचन बोले रघु कुल भानु

नाथ करहु बालक पर छोहू। सूध दूध मुख करिय न कोहू॥
जौं पै प्रभु प्रभाव कछु जाना। तौं कि बराबर करत अयाना॥
जौं लरिका कछु अनुचित करहीं गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं।
करिय कृपा शिशु सेवक जानी। तुम सम शील धीर मुनि ज्ञानी
राम वचन सुनि कछुक जुड़ाने। कहि कछु लषण बहुरि मुसुकाने
हँसत देखि नख शिख रिसि व्यापी। राम तोर भ्राता बड़ पापी॥
गौर शरीर श्याम मन माहीं॥ कालकूट मुख पय मुख नाहीं।
सहज टेढ़ अनुहरै न तोही। नीच मीच सम लखै न मोहीं

दो॰ लषण कहेउ हंसि सुनहु मुनि क्रोध पाप कर मूल
जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं विश्व प्रतिकूल

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया। परिहरि कोप करिय अब दाया
टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने। बैठिय होइहि पाय पिराने॥
जौं अति प्रिय तो करिय उपाई जोरिय कोउ बड़ गुणी बुलाई
बोलत लषणहिं जनक डेराहीं। मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं
थर थर कांपहिं पुर नर नारी॥ छोट कुमार खोट अति भारी
भृगु पति सुनि सुनि निर्भय बानी रिसि तनु जरै होइ बल हानी

बोले रामहिं देइ निहोरा । बचौं बिचारि बंधु लघु तोरा ॥
मन मलीन तनु सुन्दर कैसे । बिष रस भरा कनक घट जैसे ॥
दो॰ सुनि लक्ष्मण बिहँसे बहुरि नयन तरेरे राम ॥
गुरु समीप गवने सकुचि परिहरि बानी बाम ॥
अति बिनीत मृदु शीतल बानी । बोले राम जोरि जुग पाणी ॥
सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना । बालक बचन करिय नहिं काना ॥
बररै बालक एक सुभाऊ । इनहिं न सन्त बिदूषहिं काऊ ॥
तिन नाहीं कछु काज बिगारा । अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥
कृपा कोप बध बंधु गुसाईं । मोपर करिय दास की नाईं ॥
कहिय बेगि जेहि बिधि रिसि जाई । मुनि नायक सोइ करिय उपाई ॥
कह मुनि राम जाइ रिसि कैसे । अजहुं बंधु तव चितव अनैसे ॥
इहि के कंठ कुठार न दीन्हा । तौ मैं कहा कोप करि कीन्हा ॥
दो॰ गर्भ स्रवहिं अवनिप रवनि सुनि कुठार गति घोर ।
परसु अछत देखौं जियत बैरी भूप किशोर ॥
बहै न हाथ दहै रिसि छाती । भा कुठार कुंठित नृप घाती ॥
भयउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ । मोरे हृदय कृपा कस काऊ ॥
आजु दैव दुख दुसह सहावा । सुनि सौमित्र बिहँसि सिर नावा ॥
बाउ कृपा मूरति अनुकूला । बोलत बचन झरत जनु फूला ॥
जौं पै कृपा जरै मुनि गाता । क्रोध भये तनु राखु बिधाता ॥
देखु जनक हठि बालक येहू । कीन्ह चहत जड़ यमपुर गेहू ॥
बेगि करहु किन आंखिन ओटा । देखत छोट खोट नृप ढोटा ॥
बिहँसे लषण कहा मुनि पाहीं । मूंदिय आंखि कतहुं कोउ नाहीं ॥
दो॰ परसु राम तब राम प्रति बोले बचन सक्रोध ।
शंभु शरासन तोरि शठ करसि हमार प्रबोध ॥
बंधु कहै कटु संमत तोरे ॥ । तू छल बिनय करसि कर जोरे ॥

करु परितोष मोर संग्रामा ॥ नाहिंत छाडु कहाउब रामा
छल तजि करहु समर शिवद्रोही बंधु सहित नतु मारौं तोही
भृगुपति तमकि कुठार उठाये। मन मुसुकाहिं राम शिर नाये
गुनाह लषण कर हम पर रोषू। कतहुं सुधाइहु ते बड़ दोषू॥
टेढ़ जानि शंका सब काहू। वक्र चन्द्रमहिं ग्रसै न राहू
राम कहेउ रिसि तजिय मुनीशा कर कुठार आगे यह शीशा
जेहि रिसि जाइ करिय सोइ स्वामी मोहिं जानि आपन अनुगामी
दो॰ प्रभुहिं सेवकहिं समर कस तजहु विप्र वर रोष॥
भेष विलोकि कहेसि कछु बालकहू नहिं दोष।
देखि कुठार बाण धनु धारी ॥ भै लरिकहिं रिसि वीर विचारी
नाम जान पै तुमहिं न चीन्हा। वंश सुभाव उतर तेहि दीन्हा
जौ तुम अवतेहु मुनि की नाईं। पद रज शिर शिशु धरत गुसाईं
क्षमहु चूक अनजानत केरी। चहिय विप्र उर कृपा घनेरी
हमहिं तुमहिं सरवरि कस नाथा। कहहु तो कहां चरण कहं माथा
राम मात्र लघु नाम हमारा ॥ परशु सहित बड़ नाम तुम्हारा
देव एक गुण धनुष हमारे। नव गुण परम पुनीत तुम्हारे
सब प्रकार हम तुम सन हारे। क्षमहु विप्र अपराध हमारे।
दो॰ वार वार मुनि विप्रवर। कहा राम सन राम॥
बोले भृगुपति सरुष होइ तुहूं बन्धु सम बाम॥
निपटहिं द्विज करि जानेहु मोहीं मैं जस विप्र सुनाऊं तोहीं
चाप स्रुवा शर आहुति जानू। कोप मोर अति घोर कृशानू
समिध सेन चतुरंग सुहाई ॥ महा महीप भये पशु आई
मैं इहि परशु काटि बलि दीन्हा समर यज्ञ जग कोटिन कीन्हा
मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे। बोलसि निदरि विप्र के भोरे।
भंजेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा। अहमिति मनहुं जीति जग काढ़ा

राम कहा मुनि कहहु विचारी। रिसि अति बड़ि लघु चूक हमारी
छुअतहिं टूट पिनाक पुराना। मैं केहि हेतु करौं अभिमाना

दो० जौं हम निदरहिं विप्र वदि सत्य सुनहु भृगुनाथ
तौ अस को जग सुभट जेहि भय बस नावहिं माथ

देव दनुज भूपति भट नाना॥ समबल अधिक होउ बलवाना
जौं रण हमहिं प्रचारय कोऊ। लरहिं सुखेन काल किन होऊ
क्षत्रिय तनु धरि समर सकाना। कुल कलंक तेहि पावर जाना
कहौं सुभावन कुलहि प्रशंसी। कालहु डरहिं न रण रघुवंशी
विप्र वंश की अस प्रभुताई। अभय होइ जो तुमहिं डेराई
सुनि मृदु गूढ़ वचन रघुपति के। उघरे पटल परसु धर मति के
राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु मोर मिटै सन्देहू
देत चाप आपुहि चढ़ि गयऊ। परसु राम मन विस्मय भयऊ

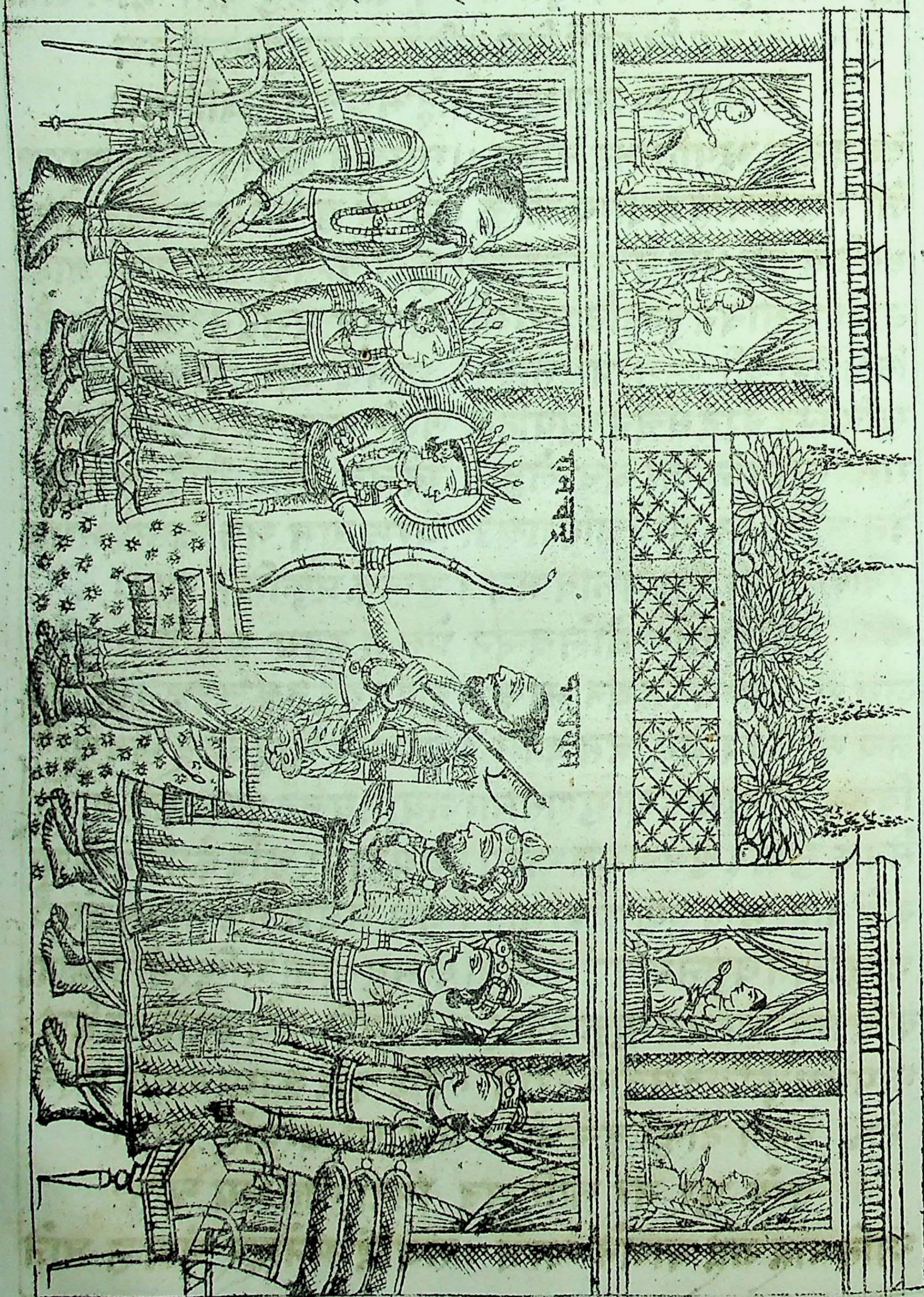
दो० जाना राम प्रभाव तब। पुलक प्रफुल्लित गात।
जोरि पाणि बोले वचन प्रेम न हृदय समात॥

जय रघुवंश वनज वन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृशानू
जय सुर विप्र धेनु हित कारी। जय मद मोह कोह भ्रम हारी
विनय शील करुणा गुण सागर जयति वचन रचना अति नागर
सेवक सुखद सुभग सब अंगा। जय शरीर छवि कोटि अनंगा
करौं कहा मुख एक प्रशंसा। जय महेश मन मानस हंसा
अनुचित वहुत कहेउं अज्ञाता क्षमहु क्षमा मन्दिर दोउ भ्राता
कहि जय जय जय रघुकुल केतू। भृगुपति गये वनहिं तप हेतू
अपभय कुटिल महीप डेराने। जहँ तहँ कायर गवहिं पराने

दो० देवन दीन्ही दुन्दुभी॥ प्रभु पर वरषहिं फूल।
हरषे पुर नर नारि सब मिटा मोह भय शूल

अति गह गहे बाजने बाजे। सबहिं मनोहर मंगल साजे

धनुष शाला में धनुषभङ्ग के समाचार सुन कोप युत परशु रामजी का आना ।
और श्री रामचन्द्र जी से ज्ञान पाय तप निमित्त बन का जाना



जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनी करहिं गान कल कोकिल बयनी
सुख बिदेह कर बरणि न जाई। जन्म दरिद्र मनहुं निधि पाई
बिगत त्रास भइ सीय सुखारी। जनु बिधु उदय चकोरकुमारी
जनक कीन्ह कौशिकहि प्रणामा प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा॥
मोहिं कृत कृत्य कीन्ह दुहु भाई अब जो उचित सो कहिय गुसाईं
कह मुनि सुन नरनाह प्रवीना। रहा विवाह चाप आधीना॥
टूटतही धनु भयउ विवाहू। सुर नर नाग विदित सब काहू

दो० तदपि जाइ तुम करहु अब यथा बंश ब्यवहार
बूझि विप्रकुल वृद्ध गुरु वेद विदित आचार।

दूत अवध पुर पठवहु जाई। आनैं नृप दशरथहिं बुलाई
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला पठये दूत अवध तेहि काला
बहुरि महाजन सकल बुलाये। आइ सबनि सादर शिर नाये
हाट बाट मन्दिर सुर वासा।। नगर संवारहु चारिहु पासा
हरषि चले निज निज गृह आये पुर परिचारक बोलि पठाये
रचहु विचित्र बितान बनाई। शिर धरि बचन चले सचु पाई
पठये बोलि गुणी तिन्ह नाना। जो बितान विधि कुशल सुजाना
विधिहिं बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा बिरचे कनक कदलि के खंभा।

दो० हरित मणिन के पत्र फल पद्म राग के फूल॥
रचना देखि विचित्र अति मन बिरंचि के भूल॥

बेनु हरित मणिमय सब कीन्हे। सरल सपरण परहिं नहिं चीन्हे।
कनक कलित अहिबेलि बनाई लखि नहिं परै सपर्ण सुहाई।
तेहि के रचि पचि बंध बनाये। बिच बिच मुकुता दाम सुहाये
मानिक मरकत कुलिश पिरोजा चीर कोर पचि रचे सरोजा।
किये भृंग बहु रंग विहंगा। गुंजहिं कुंजहिं पवन प्रसंगा।
सुर प्रतिमा खंभन गढ़ि काढ़े। मंगल द्रव्य लिये सब ठाढ़े॥

चौके भांति अनेक पुराये ॥ सिन्दुर मणि मय सहज सुहाये
दो० सौरभ पल्लव सुभग सुठि किये नील मणि कोर
हेम बौर मरकत घवरि। लसत पाट मय डोर।
रचे रुचिर वर बंदन वारे ॥ मनहुं मनो भव फंद संवारे
मंगल कलश अनेक बनाये। ध्वज पताक पट चमर सुहाये
दीप मनोहर मणिमय नाना। जाइ न बरणि विचित्र विताना
जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही। सो बरणै अस मति कवि केही
दूलह राम रूप गुण सागर। सो वितान तिहु लोक उजागर
जनक भवन की शोभा जैसी। गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी
जेहि तिरहुति तेहि समय निहारी तेहि लघु लगे भुवन दश चारी
जो सम्पदा नीच गृह सोहा ॥ सो बिलोकि सुर नायक मोहा
दो० बसै नगर जेहि लक्ष्मि करि कपट नारि वर भेष
तेहि पुर की शोभा कहत सकुचैं शारद शेष
पहुंचे दूत राम पुर पावन। हरषे नगर बिलोकि सुहावन
भूप द्वार तिन खबरि जनाई। दशरथ नृप सुनि लये बुलाई ॥
करि प्रणाम तिन्ह पाती दीन्ही मुदित महीप आप उठि लीन्ही
वारि बिलोचन बांचत पाती। पुलक गात आई भरि छाती
राम लषण उर कर वर चीठी। रहि गये कहत न खाटी मीठी
पुनि धरि धीर पत्रिका बांची। हरषी सभा बात सुनि सांची
खेलत रहे तहां सुधि पाई। आये भरत सहित दोउ भाई
पूछत अति सनेह सकुचाई।। तात कहां ते पाती आई।
दो० कुशल प्राण प्रिय बंधु दोउ अहहिं कहहु केहि देश
सुनि सनेह साने वचन। बांची बहुरि नरेश ॥
सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता। अधिक सनेह समात न गाता
प्रीति पुनीत भरत की देखी। सकल सभा सुख लहेउ विशेषी

तब नृप दूत निकट बैठारे। मधुर मनोहर वचन उचारे
भैया कुशल कहहु दोउ वारे। तुम नीके निज नयन निहारे
श्यामल गौर धरे धनु भाथा। वय किशोर कौशिक मुनि साथा
पहिचानेहु तौ कहहु सुभाऊ। प्रेम विवश पुनि पुनि कह राऊ
जा दिन ते मुनि गये लिवाई। तब तें आजु सांचि सुधि पाई
कहहु विदेह कवन विधि जाने। सुनि प्रिय वचन दूत मुसुकाने
दो॰ सुनहु महीपति मुकुट मणि तुम सम धन्य न कोउ
राम लषण जिनके तनय विश्व विभूषण दोउ।
पूंछन योग न तनय तुम्हारे॥ पुरुष सिंह तिहुं पुर उजियारे
जिनके यश प्रताप के आगे। शशि मलीन रवि शीतल लागे
तिन कहं कहिय नाथ किमि चीन्हे देखिय रविहि कि दीपक लीन्हे
सीय स्वयंबर भूप अनेका॥ सिमिटे सुभट एक तें एका
शंभु शरासन काहु न टारा। हारे सकल भूप बरि यारा
तीन लोक महँ जे भट मानी। सब की शक्ति शंभु धनु भानी
सकै उठाइ सुरा सुर मेरू॥ सोउ हिय हारि गयउ कर फेरू
जेहि कौतुक शिव शैल उठावा सोउ तेहि सभा पराभव पावा
दो॰ तहां राम रघुवंश मणि। सुनिय महा महि पाल।
भंजेउ चाप प्रयास विनु जिमि गज पंकज नाल।
सुनि सरोष भृगुनायक आये। बहुत भांति तिन आंखि देखाये
देखि राम बल निज धनु दीन्हा। करि बहु विनय गवन बन कीन्हा
राजत राम अतुल बल जैसे। तेज निधान लषण पुनि तैसे
कंपहिं भूप विलोकत जाके। जिमि गज हरि किशोर के ताके
देव देखि तब बालक दोऊ॥ अवनि आंखि तर आवन कोऊ
दूत वचन रचना प्रिय लागी। प्रेम प्रताप वीर रस पागी
सभा समेत राउ अनुरागे॥ दूतहिं देन निछावर लागे।

कहि अनीति तेहिं मूँदेउ काना। धर्म विचारि सबहिं सुख माना
दो० तब उठि भूप वशिष्ठ कहं दीन्ह पत्रिका जाइ।
कथा सुनाई गुरुहिं सब सादर दूत बुलाइ ॥*
सुनि बोले मुनि अति सुख पाई। पुण्य पुरुष कहं महि सुख छाई
जिमि सरिता सागर महं जाहीं। यद्यपि ताहि कामना नाहीं
तिमि सुख संपति बिनहिं बुलाये धर्म शील पहँ जाहिं सुभाये
तुम गुरु विप्र धेनु सुर सेवी ॥ तस पुनीत कौशल्या देवी ॥
सुकृती तुम समान जग माहीं। भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं
तुम तें अधिक पुण्य बड़ काके। राजन राम सरिस सुत जाके
बीर विनीत धर्म व्रत धारी ॥ गुण सागर बालक वरचारी
तुम कहं सर्व काल कल्याना। सजहु बरात बजाइ निशाना
दो० चलेउ बेगि सुनि गुरुवचन भलेहि नाथ शिर नाइ
भूपति गवने भवन तब। दूतहिं वास दिवाइ।
राजा सब रनिवास बुलाई ॥ जनक पत्रिका बांचि सुनाई
सुनि संदेश सकल हरखानी। अपर काज सब भूप बखानी
प्रेम प्रफुल्लित राजा रानी ॥ मनहुं शिखिन सुनि बारिद बानी
मुदित अशीस देहिं गुरु नारी। बारहिं बार मगन महतारी।
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती। हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती
राम लखण की कीरति करणी। बारहिं बार भूप वर वरणी ॥
मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाये। रानिन्ह तब महिदेव बुलाये
दिये दान आनन्द समेता ॥ चले विप्र वर आशिष देता
सो० याचक लिये हंकारि। दीन्ह निछावर कोटि विधि
चिरजीवहु सुत चारि। चक्रवर्ति दशरत्थ के ॥
कहत चले पहिरे पट नाना। हरषि हने गह गहे निशाना
समाचार सब लोगन पाये ॥ लागे घर घर होन बधाये ॥

भुवन चारि दस भरेउ उछाहू । जनक सुता रघुबीर बिवाहू ।
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे । मग गृह गली सँवारन लागे ।
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि । राम पुरी मंगल मय पावनि
तदपि प्रीति की रीति सुहाई ॥ मंगल रचना रची बनाई ॥१॥
ध्वज पताक पट चामर चारू । छावा परम विचित्र बजारू
कनक कलश तोरण मणि जाला हरद दूब दधि अक्षत माला

दो० मंगल मय निज निज भवन लोगन रचे बनाइ ।
वीथी सींची चतुर सब । चौके चारु पुराइ ॥

जहँ तहँ यूथ यूथ मिलि भामिनि सजि नव सप्त सकल दुति दामिनि
विधुबदनी मृग शावक लोचनि निज स्वरूप रति मान विमोचनि
गावहिं मंगल मंजुल बानी ।सुनि कलरव कल कंठ लजानी
भूप भवन किमि जाइ बखाना विश्व विमोहन रचेउ विताना
मंगल द्रव्य मनोहर नाना ॥। राजत बाजत विपुल निशाना
कतहुं विरद बन्दी उच्चरहीं । कतहुं वेद धुनि भूसुर करहीं ।
गावहिं सुन्दरि मंगल गीता । लैलै नाम राम अरु सीता ।
बहुत उछाह भवन अति थोरा । मानहुँ उमगि चला चहुं ओरा

दो० शोभा दशरथ भवन की को कवि वरनै पार ॥।
जहाँ सकल सुर शीश मणि राम लीन्ह अवतार

भूप भरत पुनि लये बुलाई ॥। हय गय स्यंदन साजहु जाई
चलहु वेगि रघुवीर बराता । सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता
भरत सकल साहनी बुलाये । आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये
रचि रुचि तुरग साज तिन साजे वर्ण वर्ण वर बाजि विराजे ।
सुभग सकल सुठि चंचल करणी अय जिमि जरत धरत पगु धरणी
नाना भांति न जाहिं बखाने । निदरि पवन जनु चहत उड़ाने
तिन सब छयल भये अस वारा । भरत सरिस सब राज कुमारा ।

सब सुन्दर सब भूषण धारी ॥ कर शर चाप तूण कटि भारी।
दो० छरे छबीले छयल सब। शूर सुजान नवीन ॥
जुग पदचर असवार प्रति जे असि कला प्रवीन
बांधे बिरद बीर रण गाढ़े ॥। निकसि भये पुर बाहिर ठाढ़े
फेरहिं चतुर तुरंगिनि नाना। हरषहिं धुनि सुनि पवन निशाना
रथ सारथिन विचित्र बनाये। ध्वज पताक मणि भूषण छाये
चंवर चारु किंकिणि धुनि करहीं भानु यान शोभा अपहरहीं
श्याम कर्ण अगणित हय होते ते तिन्ह रथन सारथिन जोते
सुन्दर सकल अलंकृत सोहे ॥ जिनहिं विलोकत मुनिमन मोहे
जे जल चलहिं थलहिं की नाईं। टाप न बूड़ वेग अधिकाई
अस्त्र शस्त्र सब साज सजाई। रथी सारथिन लिये बुलाई
दो० चढ़ि चढ़ि रथ बाहिर नगर लागी जुरन बरात
होत सगुन सुन्दर सुखद जो जेहि कारज जात
सुन्दर हस्तिन सोहे अंबारी। कहि न जाइ जेहि भांति संवारी
चले मत्त गज घंट बिराजे। मनहुं सुभग सावन घन गाजे
वाहन अपर अनेक विधाना। सिबिका सुभग सुखासन याना
तिन चढ़ि चले विप्र वर वृन्दा। जनु तनु धरे सकल श्रुति छन्दा
मागध सूत वंदि गुण गायक। चले यान चढ़ि जो जेहि लायक
बेसर ऊंट वृषभ बहु जाती ॥। चले वस्तु भरि अगणित भांती
कोटिन कांवरि चले कहारा ॥ विविध वस्तु को बरणै पारा
चले सकल सेवक समुदाई। निज निज साज समाज बनाई
दो० सब के उर निर्भर हरष। पूरित पुलक शरीर ॥
कबहिं देखि हौं नयन भरि राम लषण दोउ बीर
गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा। रथ रव बाजि हींस चहुं ओरा
निदरि घनहिं घूर्मरहिं निशाना निज पराव कछु सुनियत काना

महाबीर भूपति के हारे ॥ रज होइ जाहिं पखान पबारे ॥
चढ़ीं अटारिन देखहिं नारी । लये आरती मंगल थारी ॥
गावहिं गीत मनोहर नाना । अति आनन्द नहिं जाइ बखाना ॥
तब सुमन्त्र दुइ स्यंदन साजी । जोते रबि हय निन्दक बाजी ॥
दोउ रथ रुचिर भूप पहं आने नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने ॥
राज समाज एक रथ भ्राजा । दूसर तेज पुंज अति राजा ॥

दो० तेहि रथ रुचिर बशिष्ठ कहं हरषि चढ़ाइ नरेश ।
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हर गुरु गौरि गणेश ॥

सहित बशिष्ठ सोह नृप कैसे । सुर गुरु संग पुरन्दर जैसे ॥
करि कुलरीति वेद विधि राऊ । देखि सबहिं सब भांति बनाऊ ॥
सुमिरि राम गुरु आयसु पाई चले महीपति शंख बजाई ॥
हरषे बिबुध बिलोकि बराता बरषहिं सुमन सुमंगल दाता ॥
भयउ कोलाहल हय गय गाजे ब्योम बरात बाजने बाजे ॥
सुर नर नारि सुमंगल गाईं । सरस राग बाजहिं सहनाई ॥
घंट घंटि धुनि बरणि न जाई । सरौं करें पायक फहराई ॥
करहिं बिदूषक कौतुक नाना हास कुशल कलगान सुजाना ॥

दो० तुरग नचावहिं कुंवर वर अँकनि मृदंग निशान ।
नागर नट चितवहिं चकित डिगहिं न ताल बिधान ॥

बनै न बरणत बनी बराता ॥ होइ सगुन सुन्दर शुभ दाता ॥
चारा चाख बाम दिशि लेई । मनहुं सकल मंगल कहि देई ॥
दाहिन काग सुखेत सुहावा । नकुल दरश सब काहुन पावा ॥
सानुकूल बह त्रिबिधि बयारी । सघट सबाल आव बर नारी ॥
लोवा फिर फिर दरश दिखावा सुरभी सन्मुख शिशुहि पिआवा ॥
मृगमाला दाहिन दिशि आई मंगलगण जनु दीन्ह दिखाई ॥
क्षेमकरी कह क्षेम बिशेषी । स्यामा बाम सुतरु तर देखी ॥

सन्मुख आय उदधि अरु मीना कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना

दो॰ मंगल मय कल्याण मय अभिमत फल दातार
जनु सब सांचे होन हित भये शकुन एक बार

मंगल शकुन सुगम सब तांके सगुण ब्रह्म सुन्दर सुत जाके।
राम सरिस वर दुलहिनि सीता। समधी दशरथ जनक पुनीता
सुनि अस व्याह सगुन सब बांचे अब कीन्हे विरंचि हम सांचे
इहि विधि कीन्ह बरात पयाना। हय गय गाजहिं हनहिं निशाना
आवत जानि भानु कुल केतू। सरितन जनक बंधाये सेतू॥
बीच बीच वर वास बनाये॥ सुर पुर सरिस सम्पदा छाये
अशन शयन वर वसन सुहाये। पावहिं सब निज निज मन भाये
नित नूतन सुख लखि अनुकूला सकल बरातिन मंदिर भूला

दो॰ आवत जानि बरात वर सुनि गह गहे निशान
सजि गज रथ पद चर तुरंग लेन चले अगवान

कनक कलश कल कोंपर थारा भोजन ललित अनेक प्रकारा
भरे सुधा सम सब पकवाना। भांति भांति नहिं जाहि बखाना
फल अनेक वर वस्तु सुहाई। हरषि भेंट हित भूप पठाई॥
भूषण वसन महामणि नाना। खग मृग हय गय बहु विधियाना
मंगल सगुन सुगन्ध सुहाये। बहुत भांति महिपाल पठाये
दधि चिउरा उपहार अपारा। भरि भरि कावरि चले कहारा
अगवानन जब दीख बराता॥ उर आनंद पुलक भर गाता
देखि बनाव सहित अगवाना। मुदित बरातिन हने निशाना

दो॰ हरषि परस्पर मिलन हित कछुक चले बग मेल
जनु आनंद समुद्र दुइ मिलत विहाइ सुवेल।

बरषि सुमन सुर सुन्दरि गावहिं मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं
वस्तु सकल राखी नृप आगे। विनय कीन्ह तिन्ह अति अनुरागे

प्रेम समेत राउ सब लीन्हा । भै बकशीस याचकन दीन्हा ।
करि पूजा मान्यता बडाई ।। जनवांसे कह चले लिवाई
वसन विचित्र पावडे परहीं । नृप दशरथ तापर पग धरहीं
देखि धनद धनमद परिहरहीं बरषि सुमन सुर जयजय करहीं
अति सुन्दर दीन्हेउ जनवासा । जहं सब कहं सब भांति सुपासा
जानी सिय बरात पुर आई । कछु निज महिमा प्रगटि जनाई
हृदय सुमिर सब सिद्धि बुलाई । भूप पहुनई करन पठाई ।।

दो॰ सिय आयसु शिर सिद्धि धरि गई जहां जनवास ।।
लयं सम्पदा सकल सुख सुर पुर भोग विलास ।

निज निज वास विलोकि बराती । सुर सुख सकल सुलभ सब भांती
विभव भेद कछु काहु न जाना ।। सकल जनक कर करहिं बखाना
सिय महिमा रघुनायक जानी । हरषे हृदय हेतु पहिचानी ।
पितु आगमन सुनत दोउ भाई । हृदय न अति आनन्द समाई
सकुचत कहि न सकत गुरु पाहीं पितु दरशन लालच मन माहीं ।।
विश्वामित्र विनय बडि देखी ।। उपजा उर सन्तोष विशेषी ।
हरषि बंधु दोउ हृदय लगाये ।। पुलक अंग लोचन जल छाये
चले जहां दशरथ जनवासे ।। मनहुं सरोवर तके पियासे ।।

दो॰ भूप विलोके जबहिं मुनि आवत सुतन समेत ।।
उठेउ हरषि सुख सिंधु महं चले थाह सी लेत ।।

मुनिहिं दण्डवत कीन्ह महीशा वार वार पद रज धरि शीशा
कौशिक राउ लिये उर लाई ।। कहि अशीष पूछी कुशलाई
पुनि दण्डवत करत दोउ भाई । देखि नृपति उर सुख न समाई
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे । मृतक शरीर प्राण जनु भेटे ।।
पुनि वशिष्ठ पद शिर तिन नाये प्रेम मुदित मुनि वर उर लाये ।
विप्र वृन्द बन्दे दुहु भाई ।। । मनभावति अशीष तिन्ह पाई

भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा। लियें उठाइ लाइ उर रामा॥
हरषे लषण देखि दोउ भ्राता। मिले प्रेम परि पूरण गाता।
दो० पुरजन परिजन जाति जन याचक मंत्री मीत
मिले यथा विधि सबहिं प्रभु परम कृपालु विनीत
रामहिं देखि बरात जुड़ानी। प्रीति की रीति न जाइ बखानी
नृप समीप सोहहिं सुत च्यारी। जनु धन धर्मादिक तनु धारी
सुतन्ह सहित दशरथ कहं देखी मुदित नगर नर नारि विशेषी
सुमन बरषि सुर हनहिं निशाना नाक नटी नाचहिं करि गाना
सतानन्द अरु विप्र सचिवगन मागध सूत विदुष वन्दीजन
सहित बरात राउ सनमाना। आयसु मांगि चले अगवाना
प्रथम बरात लगन में आई। तातें पुर प्रमोद अधिकाई।
ब्रह्मानन्द लोग सब लहहीं। बढ़उ दिवस निशि विधि सन कहहीं
दो० राम सीय शोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज
जहं तहं पुरजन कहहिं अस मिलि नर नारि समाज
जनक सुकृत मूरति वैदेही। दशरथ सुकृत राम धरि देही
इन सम काहु न शिव अवराधे। काहु न इन समान फल साधे
इन सम कोउ न भयउ जग माहीं है नहिं कतहूं होनउ नाहीं।
हम सब सकल सुकृत की रासी भये जग जन्मि जनक पुर बासी
जिन जानकी राम छवि देखी। को सुकृती हम सरिस विशेषी
पुनि देखब रघुवीर विवाहू॥ लेब भली विधि लोचन लाहू
कहहिं परस्पर कोकिल बयनी। यह विवाह बड़ लाहु सुनयनी
बड़े भाग विधि बात बनाई। नयन अतिथि होइहैं दोउ भाई
दो० बारहिं बार सनेह बस। जनक बोलाउब सीय।
लेन आइहहिं बन्धु दोउ कोटि काम कमनीय।
विविधि भांति होइहि पहुनाई। प्रिय न काहि अस सासुर माई

तब तब राम लषणहिं निहारी। होइहहिं सबपुरलोग सुखारी
सखि जस राम लषण कर जोटा तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा।
श्याम गौर सब अंग सुहाये। ते सब कहहिं देखि जे आये
कहा एक मैं आजु निहारे।। जनु बिरंचि निज हाथ संवारे
भरत राम एकहि अनुहारी।।। सहसा लखि न सकहिं नर नारी
लषण शत्रु सूदन इक रूपा। नख शिख तें सब अंग अनूपा
मन भावहिं मुख बरणि न जाहीं उपमा कहं त्रिभुवन कोउ नाहीं

छं० उपमान कोउ कह दास तुलसी कतहुं कवि कोविद कहैं
बल विनय विद्या शील शोभा सिंधु इन सम ये लहैं
पुरनारि सकल पसारि अंचल विधिहि वचन सुनावहीं
व्याहियहु चारिउ भाइ इहि पुर हम सुमंगल गावहीं।

सो० कहहिं परस्पर नारि। वारि विलोचन पुलक तन
सखि सब करब पुरारि। पुण्य पयोनिधि भूप दोउ

इहि विधि सकल मनोरथ करही आनंद उमगि उमगि उर भरही।
जे नृप सीय स्वयम्बर आये। देखि बन्धु सब तिन सुख पाये
कहत राम यश विशद विशाला निज निज भवन गये महिपाला
गये बीति कछु दिन इहि भांती। प्रमुदित पुर जन सकल बराती
मंगल मूल लगन दिन आवा। हिम ऋतु अगहन मास सुहावा।
ग्रह तिथि नखत योग वर वारू। लगन शोधि विधि कीन्ह विचारू
पठै दीन्ह नारद सन सोई। गुनी जनक के गणकन जोई
सुनी सकल लोगन यह बाता।। कहहिं ज्योतिषी आहहिं विधाता

दो० धेनु धूलि वेला विमल। सकल सुमंगल मूल।।
विप्रन कहेउ विदेह सन जानि समय अनुकूल

उपरोहितहि कहेउ नर नाहा। अब विलंब के कारण काहा
सतानन्द तब सचिव बुलाये। मंगल कलश साजि सब ल्याये

संख निसान पणव बहु बाजे । मंगल कलश सगुन सब साजे
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता करहिं वेद धुनि विप्र पुनीता
लेन चले सादर इहि भांती । गये जहां जनबास बराती ।
कोशल पति कर देख समाजू अति लघु लगे तिनहिं सुर राजू
भयउ समय अब धारिय पाऊ यह सुनि परा निशानन घाऊ
गुरुहिं पूंछि करि कुल विधि राजा चले संग मुनि साज समाजा

दो॰ भाग्य विभव अवधेश कर देखि देव ब्रह्मादि ॥
लगे सराहन सहस मुख जानि जन्म निज वादि

सुरन सुमंगल अवसर जाना । वरषहिं सुमन बजाइ निशाना
शिव ब्रह्मादिक विबुध वरूथा चढ़े विमानन्ह नाना यूथा
प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू । चले विलोकन राम विवाहू
देखि जनक पुर सुर अनुरागे । निज निज लोक सबहिं लघु लागे
चितवहिं चकित विलोकि विताना रचना सकल अलौकिक नाना
नगर नारि नर रूप निधाना ॥ सुघर सुधर्म सुशील सुजाना
तिनहिं देखि सब सुर नर नारी । भये नखत जनु विधु उजियारी
विधिहिं भयउ आश्चर्य विशेषी निज करणी कछु कतहुं न देखी

दो॰ शिव समुझाये देव सब । जनि आश्चर्य भुलाहु
हृदय विचारहु धीर धरि सिय रघुवीर विवाहु ।

जिन कर नाम लेत जग माहीं । सकल अमंगल मूल नशाहीं
करतल होहिं पदारथ चारी ॥ ते सिय राम कहेउ कामारी
इहि विधि शंभु सुरन समुझावा पुनि आगे वर वसह चलावा
देवन देखे दशरथ जाता ॥। महा मोद मन पुलकित गाता
साधु समाज संग महि देवा । जनु तन धरे करहिं सुख सेवा ।
सोहत साथ सुभग सुत चारी । जनु अपवर्ग सकलतनुधारी
मरकत कनकवरन वर जोरी । देखि सुरन भै प्रीति न थोरी

सुनि रामहिं बिलोकि हिय हरखे नृपहिं सराहि सुमन तिन्ह बरषे

सो० राम रूप नख सिख सुभग बारहिं बार निहारि ॥
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि ॥

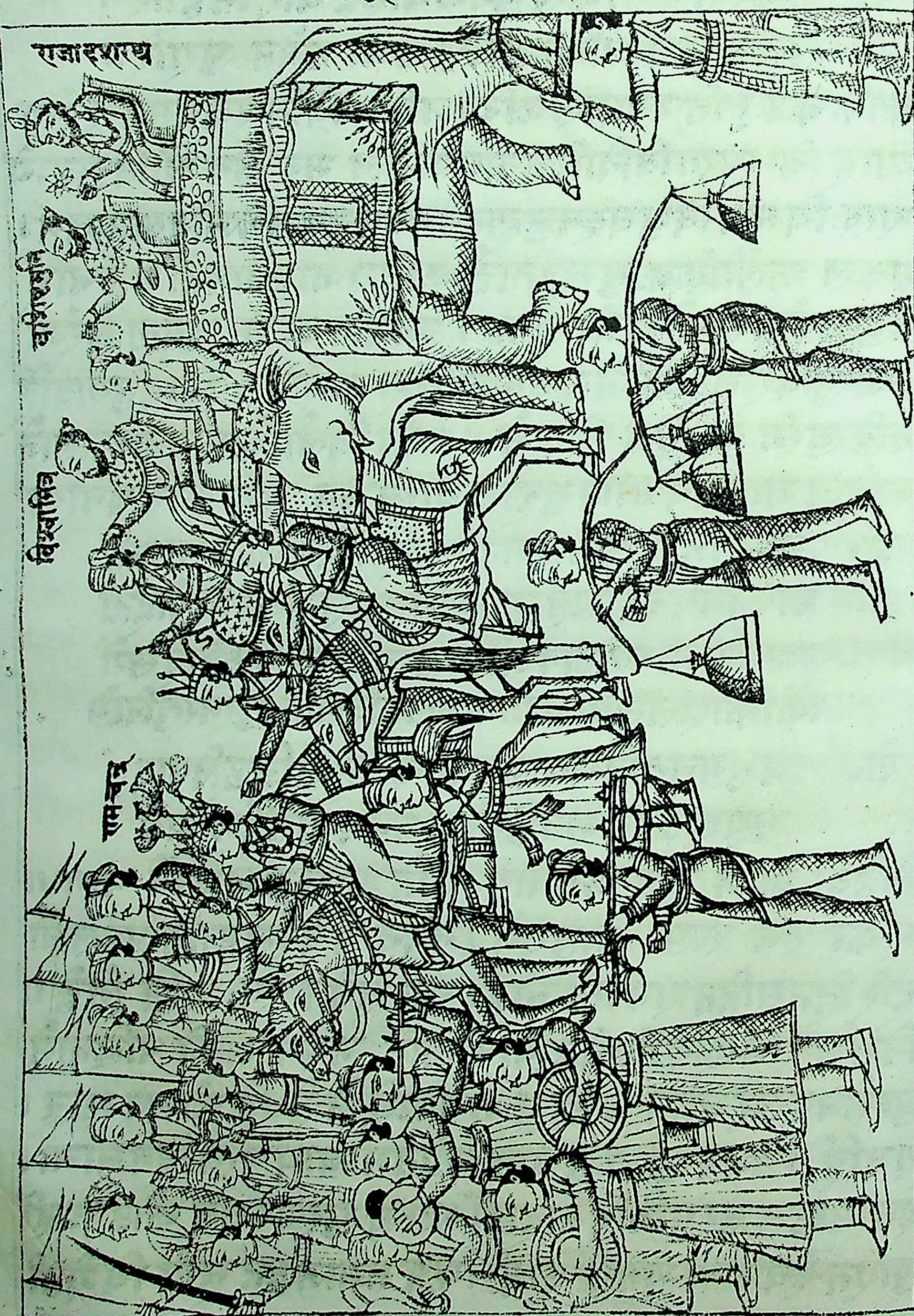
केकि कंठ दुति स्यामल अंगा तड़ित बिनिन्दक बसन सुरंगा
ब्याह बिभूषण बिबिधि बनाये मंगल मय सब भांति सुहाये
सरद बिमल बिधु बदन सुहावन नयन नवल राजीव लजावन।
सकल अलौकिक सुन्दरताई कहि न जाय मनहीं मन भाई
बंधु मनोहर सोहहिं संगा । जात नचावत चपल तुरंगा
राज कुंवर बर बाजि नचावहिं बंश प्रसंसक बिरद सुनावहिं
जेहि तुरंग पर राम बिराजे । गति बिलोकि खगनायक लाजे
कहि न जाइ सब भांति सुहावा बाजि भेष जनु काम बनावा

छं० जनुबाजिभेषबनाइमनसिज रामहित अति सोहही
अपनवय बल रूप गुणगति सकल भुवन बिमोहही
जगामगतिजीनजड़ाव जोति सुमोति मानिकतेहि लगे
किंकिणिललामलगामललितबिलोकिसुरनरमुनिठगे

सो० प्रभुमनसहिंलयलीनमनचलतबाजिछबिपाव
भूषणउडुगणतड़ितघन जनुबर बरहिं नचाव

जेहिवर बाजि राम असवारा। तेहि शारदहु न बरनै पारा ॥
शंकर राम रूप अनुरागे। नयन पंचदश अति प्रियलागे
हरि हित सहित रामजब जोहे। रमा समेत रमा पति मोहे ॥
निरखि राम छबि बिधि हरषाने आठै नयन जानि पछिताने
सुरसेनप उर बहुत उछाहू ॥ बिधि ते डेवढ़ लोचन लाहू।
रामहिं चितव सुरेश सुजाना। गौतम श्राप परम हित माना।
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं आजु पुरन्दर सम कोउ नाहीं
मुदित देव गण रामहिं देखी। नृप समाज दुहु हरख बिशेषी

श्री राम चन्द्र जी की बरात में राजा दशरथ भरत शत्रुघ्न आदि अयोध्या वासियों को जनक पुर में जाना और अगवानी लेना



छं॰ अति हर्ष राज समाज दुहु दिशि दुन्दुभी बाजहिं घनी ॥
वरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुल मनी
इहि भांति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ॥
रानी सुआसिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं

दो॰ सजि आरती अनेक विधि मंगल सकल संवारि ॥
चलीं मुदित परिछन करन गज गामिनि वर नारि ।

विधुवदनी मृग शावक लोचनि सब निज तनु छवि रति मद मोचनि
पहिरे वरन वरन वर चीर ॥ । सकल विभूषण सजे शरीर ।
सकल सुमंगल अंग बनाये । करहिं गान कल कंठ लजाये
कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं चाल विलोकि काम गज लाजहिं
बाजहिं बाजन विविध प्रकार । नभ अरु नगर सुमंगल चार
शची शारदा रमा भवानी । जे सुर तिय शुचि सहज सयानी
कपट नारि वर वेष बनाई ॥ मिलीं सकल रनिवासहिं आई
करहिं गान कल मंगल बानी । हरष विवस सब काहु न जानी

छं॰ को जान केहि आनंद वश सब ब्रह्म वर परिछन चली
कल गान मधुर निशान बरषहिं सुमन सुर शोभा भली
आनंद कंद विलोकि दूलह सकल हिय हर्षित भईं
अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई

दो॰ जो सुख भा सिय मातु मन देखि राम वर भेष ।
सो न सकहिं कहि कल्प शत सहस शारदा शेष ॥

नयन नीर हटि मंगल जानी परिछन करहिं मुदित मन रानी
वेद विहित अरु कुल व्यवहारू कीन्ह भली विधि सब परिचारू
पंच शब्द धुनि मंगल गाना । पट पावड़े परहिं विधि नाना
करि आरती अर्घ तिन दीन्हा । राम गवन मंडप तब कीन्हा ।
दशरथ सहित समाज विराजे । विभव विलोकि लोकपति लाजे

समय समय सुर बरषहिं फूला। शांति पढ़हिं महि सुर अनुकूला
नभ अरु नगर कोलाहल होई। आपन पर कछु सुनै न कोई॥
इहि विधि राम मंडपहि आये। अर्घ देइ आसन बैठाये॥

छं० बैठारि आसन आरती करि निरखि वर सुख पावहीं।
मणि वसन भूषण भूरि वारहि नारि मंगल गावहीं॥
ब्रह्मादि सुर वर विप्र भेष बनाइ कौतुक देखहीं॥
अवलोकि रविकुल कमल रवि छवि सुफल जीवन लेखहीं

दो० नाऊ बारी भार नर। राम निछावरि पाइ॥
मुदित असीसहिं नाइ शिर हर्ष न हृदय समाइ

मिले जनक दशरथ अति प्रीती। करि वैदिक लौकिक सब रीती
मिलत महा दोउ राज विराजे॥ उपमा खोजि खोजि कवि लाजे
लही न कतहुं हारि हिय मानी। इन सम ए उपमा उर आनी
समधी देखि देव अनुरागे। सुमन वरषि यश गावन लागे
जग विरंचि उपजावा जब ते। देखे सुने व्याह बहु तब ते॥
सकल भांति सम साज समाजू। सम समधी देखे हम आजू
देव गिरा सुनि सुन्दर सांची। प्रीति अलौकिक दुहु दिशि मांची
देत पांवड़े अर्घ सुहाये॥ सादर जनक मंडपहि ल्याये

छं० मंडप विलोकि विचित्र रचना रुचिरता मुनि मन हरे
निज पाणि जनक सुजान सब कहं आनि सिंहासन धरे
कुल इष्ट सरिस वशिष्ठ पूजे विनय करि आशिष लही
कौशिक हि पूजत परम प्रीति की रीति तौ न परै कही

दो० बामदेव आदिक ऋषिय पूजे मुदित महीश
दिये दिव्य आसन सबहिं सब सन लही असीश

बहुरि कीन्ह कोशलपति पूजा। जानि ईश सम भावन दूजा॥
कीन्ह जोरि कर विनय बड़ाई। कहि निज भाग्य विभव बहुताई

पूजे भूपति सकल बराती ॥ समधी सम सादर सब भांती।
आसन उचित दये सब काहू। कहौं कहा मुख एक उछाहू
सकल बरात जनक मन मानी। दान मान विनती वर बानी।
विधि हरिहर दिशपति दिनराऊ जे जानहिं रघुवीर प्रभाऊ।
कपट विप्र वर भेष बनाये ॥ कौतुक देखहिं अति सचुपाये
पूजे जनक देव सम जाने ॥ दये सुआसन विन पहिचाने

छं॰ पहिचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई
आनंद कन्द विलोकि दूलह उभय दिशि आनंदमई
सुरलखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दिये।
अवलोकि सरल सुभाव प्रभु को विबुध मन प्रमुदित भये

दो॰ राम चन्द्र मुख चन्द्र छवि लोचन चारु चकोर
करत पान सादर सकल प्रेम प्रमोद न थोर ॥

समय विलोकि वशिष्ठ बुलाये सादर सतानन्द मुनि आये ॥
बेगि कुवँरि अब आनहु जाई चले मुदित मन आयसु पाई
रानी सुनि उपरोहित बानी ॥ प्रमुदित सखिन समेत सयानी।
विप्र वधू कुल वृद्ध बुलाई । करि कुल रीति सुमंगल गाई ॥
नारि भेष जे सुर वर वामा ॥ सकल सुभाय सुन्दरी श्यामा
तिनहिं देखि सुख पावहिं नारी विन पहिचान प्राण ते प्यारी
बार बार सन मानहिं रानी ॥ उमा रमा शारद सम जानी
सीय संवारि समाज बनाई । मुदित मण्डपहि चलीं लिवाई

छं॰ चलि ल्याइ सीतहि सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी
नवसप्त साजे सुन्दरी तव मत्त कुंजर गामिनी।
कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं
मंजीर नूपुर कलित कंकण ताल गति वर बाजहीं ॥

दो॰ सोहत बनिता वृन्द महँ सहज सुहावनि सीय

छबि ललना गण मध्य जनु सुखमा तिय कमनीय

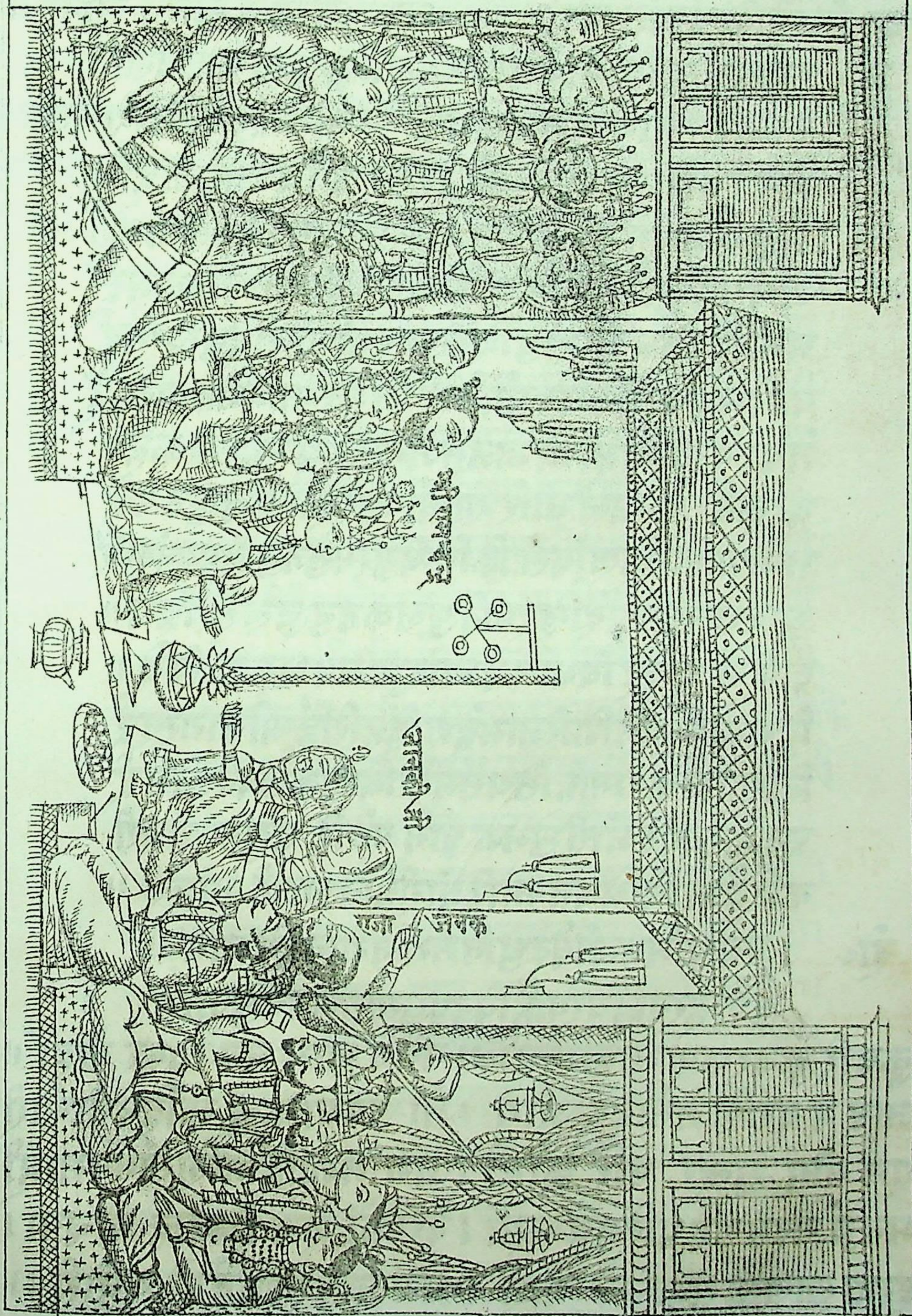
सिय सुन्दरता बरणि न जाई लघुमति बहुत मनोहर ताई
आवत देखि बरातिन सीता। रूप राशि सब भांति पुनीता
सबहि मनहिं मन कीन्हप्रणामा देखि राम भये पूरण कामा।
हरषे दशरथ सुतन समेता ॥। कहि न जाइ उर आनंद जेता
सुर प्रणाम करि वर्षहिं फूला। मुनि अशीश धुनि मंगल मूला
बात निशान कुलाहल भारी प्रेम प्रमोद नगर नर नारी ॥
इहि विधि सीय मंडपहि आई। प्रमुदित शांति पढ़हिं मुनिराई
तेहि अवसर करि विधि ब्यवहारू इहुकुल गुरु सब कीन्ह अचारू

छं॰ आचार करि गुरु गौरि गणपति मुदित विप्र पुजावहीं
सुर प्रगट पूजा लेहिं देहिं अशीस मुनि सुख पावहीं
मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मन में चहैं
भरे कनक कोपर कलश सब कर लिये परिचारक रहैं
कुल रीति प्रीति समेत रवि कहि देत सब सादर किये
इहि भांति देव पुजाइ सीतहि शुभग सिंहासन दिये ॥
सिय राम अवलोकन परस्पर प्रेम काहुन लखि परै
मन बुद्धि वर वाणी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै

दो॰ होम समय तनु धरि अनल अति हित आहुति लेहिं
विप्र भेष धरि वेद सब कहि विवाह विधि देहिं

सीय मातु किमि जाइ बखानी। जनक पाट महिषी जग जानी
सुयश सुकृत सुख सुन्दरताई। सब समेटि विधि रची बनाई
समय जानि मुनि वरन बुलाई। सुनत सुआसिनि सादर ल्याई
जनक वाम दिशि सोह सुनयना। हिम गिरि संग बनी जनु मयना
कनक कलश मणि कोपर रूरे। सुचि सुगन्ध मंगल जल पूरे
निजकर मुदित राउ अरु रानी। धरे राम के आगे आनी।

जनकपुर में श्री रामचन्द्र जी का श्री जानकी जी के साथ वि-
वाह होना॥



पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसर जानी
वर बिलोकि दंपति अनुरागे। पाय पुनीत पखारन लागे॥

छं॰ लागेपखारनपायपंकजप्रेमतनु पुलकावली
नभनगरगाननिसानजयधुनिउमगिजनुचहुंदिसिचली
जेपद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव बिराजहीं॥
जेसुकृतसुमिरतिबिमलतामनसकलकलिमलभाजहीं
जेपरसिमुनिबनितालहीगतिरही जो पातकमई
मकरंद जिनको शंभु शिर सुचिता अवधि सुरबरनई
करिमधुपमुनिमनयोगिजनजेसेइ अभिमतगतिलहैं
तेपदपखारतभाग्यभाजनजनकजयजयसबकहैं।
वरकुंवर करतल जोरि शाखोच्चार दोउकुलगुरु करैं
भयोपाणिग्रहणबिलोकिबिधिसुरमनुजमुनिआनंदभरैं
सुखमूलदूलहदेखिदंपतिपुलकतनुहुलसें हिये॥
करि लोक वेद विधान कन्यादान नृपभूषण किये॥
हिमवंतजिमिगिरिजामहेशहिंहरिहिंश्रीसागरदई
तिमि जनक रामहिंसिय समर्पी विश्वकलकीरतिनई
एकओरकरि जोरी सुभग पुनि गोरि मूरति सांवरी
करि होम विधिवत गांठिजोरीहोन लागी भांवरी॥

दो॰ जयधुनिवन्दीवेदधुनिमंगलगान निशान॥
सुनिहरषहिंबरषहिंबिबुधसुरतरुसुमन सुजान

कुवरि कुवर कल भांवरि देहीं॥ नयन लाभ सब सादर लेहीं॥
जाइ न वरणि मनोहर जोरी।जो उपमा कछु कहिय सो थोरी
राम सीय सुन्दर परि छाहीं। जग मगाहिं मणि खंभन माहीं
मनहुं मदन रति धरि बहु रूपा। देखहिं राम बिवाह अनूपा।
दरश लालसा सकुचन थोरी॥ प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी॥

भये मगन सब देखन हारे ॥ जनक समान अपान बिसारे
प्रमुदित मुनिन भांवरी फेरी ॥ नेग सहित सब रीति निबेरी
राम सीय सिर सिन्दुर देही ॥ सोभा कहि न जाति बिधि केही
अरुण पराग जलज भर नीके । शशिहि भूष अहि लोभ अमी के
बहुरि वशिष्ठ दीन्ह अनुशासन वर दुलहिनि बैठे इक आसन ।

छं. बैठे वरासन राम जानकि मुदित मन दशरथ भये ॥१॥
तन पुलकि पुनि पुनि देखि अपने सुकृत सुर तरु फल नये
भरि भुवन रहा उछाह राम विवाह भा सबही कहा
केहि भांति वरणि सिरात रसना एक मुख मंगल महा
तब जनक पाइ वशिष्ठ आयसु व्याह साज संवारि के
माण्डवी श्रुति कीर्ति उर्मिला कुंवरि लई हंकारि के
कुश केतु कन्या प्रथम जो गुण शील सुख शोभा मयी
सब रीति प्रीति समेत करि सो व्याहि नृप भरतहिं दयी
जानकी लघु भगिनि जो सुन्दरि शिरोमणि जानि के
सो जनक दीन्ही व्याहि लषणहि सकल विधि सनमानि के
जहि नाम श्रुति कीरति सुलोचनि सुमुखि सदगुन आगरी
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूप शील उजागरी ॥
अनुरूप वर दुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिय हर्षहीं
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुर गण वर्षहीं ।
सुन्दरी सुन्दर वरण सब एक मण्डप राजहीं ॥
जनु जीव उर चारिउ अवस्था विभुन सहित विराजहीं ।

दो० मुदित अवधपति सकल सुत बधुन समेत निहारि
जनु पाये महिपाल मणि क्रियन सहित फल चारि

जस रघुबीर व्याह विधि वरणी । सकल कुंवर व्याहे तेहि करणी
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी । रहा कनक मणि मण्डप पूरी ॥

कंबल बसन विचित्र पटोरे ॥ भाँति भांति बहु मोल न थोरे
गज रथ तुरंग दास अरु दासी धेनु अलंकृत काम दुहासी
वस्तु अनेक करिय किमि लेखा कहि न जाइ जानहिं जिन देखा
लोक पाल अवलोकि सिहाने। लीन्ह अवध पति सब सुख माने
दीन्ह याचकन्ह जो जेहि भावा उबरा सो जनवासहिं आवा
तब कर जोरि जनक म्दु बानी बोले सब बरात सन मानी ॥

छं॰ सनमान सकल बरात सादर दान विनय बड़ाय कै
प्रमुदित महा मुनि वृन्द बन्दे पूजि प्रेम लड़ाय कै
शिर नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट किये
सुर साधु चाहत भाव सिंधु कि तोष जल अंजलि दिये
कर जोरि जनक बहोरि बंधु समेत कोशल राय सों
बोले मनोहर वचन सानि सनेह शील सुभाय सों।
सम्बन्ध राजन रावरे हम बड़े अब सब विधि भये।
यह राज साज समेत सेवक जानिबी बिनु गथ लये
ये दारिका परिचारिका करि पालवी करुणा मयी
अपराध क्षमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठ्यो दयी
पुनि भानु कुल भूषण सकल सनमान निधि समधी किये
कहि जात नहिं विनती परस्पर प्रेम परिपूरण हिये।
वृन्दारका गण सुमन बरषहिं राउ जनवासहिं चले।
दुन्दुभी धुनि वेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले ॥
तब सखिन मंगल गान करत मुनीश आयसु पाइ के
दुलह दुलहिनि सहित सुन्दरि चलीं कुहवर ल्याइ कै।

दो॰ पुनि पुनि रामहिं चितव सिय सकुचति मन सकुचै न
हरति मनोहर मीन छवि प्रेम पियासे नैन॥

स्याम शरीर सुभाय सुहावन ॥ शोभा कोटि मनोज लजावन ॥

यावक युत पद कमल सुहाये। मुनि मन मधुप रहत जहं छाये ॥
पीत पुनीत मनोहर धोती ॥ हरत बाल रवि दामिनि ज्योती
कल किंकिणि कटि सूत्र मनोहर बाहु बिशाल विभूषण सोहर ॥
पीत जनेउ महा छवि देई ॥॥ कर मुद्रिका चोरि जनु लेई ॥
सोहत ब्याह साज सब साजे ॥ उर आयत सब भूषण राजे ॥
पीत उपरना कांखा सोती ॥ दुहु आंचरन्ह लगे मणि मोती
नयन कमल कल कुंडल काना। बदन सकल सौंदर्य निधाना
सुन्दर भृकुटि मनोहर नासा ।भाल तिलक रुचिरुचिर निवास
सोहत मौर मनोहर माथे ॥॥ मंगल मय मुकुता मणि गाथे

छं॰ गाथे महा मणि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं
पुर नारि सुन्दर वर विलोकहिं निरखि छवि तृण तोरहीं
मणि वसन भूषण वारि आरति करहिं मंगल गावहीं
सुर सुमन बरषहिं सूत मागध बन्दि सुयश सुनावहीं
कुहबरहिं आने कुंवर कुंवरि सुआसिनिन्ह सुख पाइ कै
अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइ कै
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन सादर कहैं
रनिवास हास बिलास रस वस जनम को फल सब लहैं
निज पाणि मणि महं देखि प्रति मूरति सरूप निधान की
चालति न भुजवल्ली विलोकनि विरह बस भइ जानकी
कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली
वर कुंवरि सुन्दर सकल सखिन लवाइ जनवासहिं चली
तेहि समय सुनिय असीस जहं तहं नगर नभ आनंद महा
चिरजियहु जोरी चारु चारिउ मुदित मन सबही कहा।
योगीन्द्र सिद्ध मुनीश देव बिलोकि प्रभु दुन्दुभि हनी
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी

दो० सहित बधू दिन कुंवर सब तब आये पितु पास ॥
शोभा मंगल मोद भरि । उमगेउ जनु जनवास ।
पुनि जेवनार भयउ बहु भांती । पठये जनक बुलाइ बराती ॥
परत पावड़े बसन अनूपा ॥ । सुतन समेत गवन किय भूपा ॥
सादर सब के पांव पखारे ॥ यथा योग पीढ़न बैठारे ॥।
धोये जनक अवध पति चरणा । शील सनेह जाहि नहिं बरणा
बहुरि राम पद पंकज धोये ॥ जे हर हृदय कमल महं गोये
तीनो भाइ राम सम जानी ॥ धोये चरण जनक निज पानी
आसन उचित सबहि नृप दीन्हे बोलि सूप कारी सब लीन्हे ।
सादर लगे परन पनवारे ॥। कनक खील मणि परण संवारे
दो० सूपोदन सुरभी सरपि । सुन्दर स्वाद पुनीत ॥
क्षणमहं सबके परसि गे चतुर सुआर विनीत ॥
पंच कौर करि जेवन लागे । गारि गान सुनि अति अनुरागे
भांति अनेक परे पकवाना ॥ सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाना
परसन लगे सुआर सुजाना । ब्यंजन विविध नाम को जाना
चारि भांति भोजन विधि गाई । एक एक विधि बरणि न जाई
छ रस रुचिर ब्यंजन बहु जाती । एक एक रस अगणित भांती
जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी । लै लै नाम पुरुष अरु नारी ।
समय सुहावन गारि विराजा । हंसत राउ सुनि सहित समाजा
इहि विधि सबही भोजन कीन्हा आदर सहित आचमन लीन्हा
दो० देइ पान पूजे जनक ॥ दशरथ सहित समाज
जनवासे गवने मुदित ॥ सकल भूप शिर ताज
निति नूतन मंगल पुर माहीं ॥ निमिष सरिस दिन यामिनि जाहीं
बड़े भोर भूपति मणि जागे ॥ याचक गुण गण गावन लागे
देखि कुवर वर बधुन समेता ॥ किमि कहि जात मोद मन जेता

प्रात क्रिया करि गे गुरु पाहीं। महा प्रमोद प्रेम मन माहीं॥
करि प्रणाम पूजा कर जोरी। बोले गिरा अमिय जनु बोरी॥
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनि राजा। भयउँ आज मैं पूरण काजा॥
अब सब विप्र बुलाइ गुसांई। देहु धेनु सब भांति बनाई॥
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई। पुनि पठये मुनि वृन्द बुलाई॥

दो० वामदेव अरु देव ऋषि बाल्मीक जाबालि।
आये मुनि वर निकर तब कौशिकादि तपसालि॥

दण्ड प्रणाम सबहिं नृप कीन्हा। पूजि सप्रेम बरासन दीन्हा॥
चारि लक्ष वर धेनु मगाई। काम सुरभि सम शील सुहाई॥
सब विधि सकल अलंकृत कीन्ही। मुदित महीप ऋषिन कहं दीन्ही॥
करत विनय बहु विधि नरनाहू। लहेउं आजु जग जीवन लाहू॥
पाइ असीस महीश अनन्दा। लिये बोलि पुनि याचक वृन्दा॥
कनक वसन मणि हय गय स्यंदन। दिये बूझि रुचि रविकुल नन्दन॥
चले पढ़त गावत गुण गाथा। जय जय जय दिनकर कुल नाथा॥
इहि विधि राम विवाह उछाहू। सकैं न वरणि सहस मुख जाहू॥

दो० वार वार कौशिक चरण शीश नाइ कह राउ।
यह सब सुख मुनिराज तव कृपा कटाक्ष प्रभाउ॥

जनक सनेह शील करतूती। नृप सब भांति सराह विभूती॥
दिन उठि विदा अवधपति मांगा। राखहिं सहित जनक अनुरागा॥
नित नूतन आदर अधिकाई। दिन प्रति सहस भांति पहुनाई॥
नित नव नगर अनंद उछाहू। दशरथ गवन सोहाइ न काहू॥
बहुत दिवस बीते इहि भांती। जनु सनेह रजु बंधे बराती॥
कौशिक सतानन्द तब जाई। कहा विदेह नृपहि समुझाई॥
अब दशरथ कहं आयसु देहू। यद्यपि छांड़ि न सकहु सनेहू॥
भलेहि नाथ कहि सचिव बुलाये। कहि जय जीव शीश तिन नाये॥

दो० अवध नाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाव ॥
भये प्रेम बस सचिव सुनि विप्र सभासद राव ॥
पुरवासी सुनि चली बराता । पूछत विकल परस्पर बाता ॥
सत्य गवन सुनि सब बिलखाने । मनहुं सांझ सरसिज सकुचाने
जहं जहं आवत बसे बराती । तहँ तहं सीध चलावहु भांती ।
विविध भांति मेवा पकवाना ॥ भोजन साज न जाइ बखाना
भरि भरि बसह अपार कहारा । पठये जनक अनेक सुआरा
तुरंग लाख रथ सहस पचीसा सकल संवारे नख अरु शीशा
मत्त सहस दश सिंधुर साजे । जिनहिं देखि दिशि कुंजर लाजे
कनक वसन मणि भरि भरि याना महिषी धेनु वस्तु विधि नाना
दो० दायज अमित न सकिय कहि दीन्ह विदेह बहोरि ।
जो अवलोकत लोकपति लोक सम्पदा थोरि ।
सब समाज इहि भांति बनाई । जनक अवधपुर दीन्ह पठाई
चलिहि बरात सुनत सब रानी । विकल मीन गण जनु लघु पानी
पुनि पुनि सीय गोद कर लेही । देइ अशीस सिखावन देही
होइहहु संतत पियहि पियारी चिर अहिवात अशीस हमारी
सासु ससुर गुरु सेवा करहू ॥ पति रुख लखि आयसु अनुसरहू
अति सनेह बस सखी सयानी । नारि धर्म सिखवहिं मृदु बानी
सादर सकल कुंवरि समुझाई । रानिन बार बार उर लाई ॥
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी । कहहिं विरंचि रची कत नारी
दो० तेहि अवसर भाइन सहित राम भानु कुल केतु
चले जनक मन्दिर मुदित विदा करावन हेतु ॥
चारिउ भाइ सुभाय सुभाये । नगर नारि नर देखन धाये ।
कोउ कह चलन चहत हहिं आजू कीन्ह विदेह विदा कर साजू
लेहु नयन भरि रूप निहारी । प्रिय पाहुने भूप सुत चारी ॥

को जानै केहि सुकृत सयानी ॥ नयन अतिथि कीन्हें बिधि आनी ॥
मरण शील जिमि पाव पियूषा ॥ सुर तरु लहै जन्म कर भूखा ॥
पाव नारकी हरि पद जैसे ॥ इन कर दरशन हम कहं तैसे ॥
निरखि राम शोभा उर धरहू ॥ निज मन फणि मूरति मणि करहू ॥
इहि बिधि सबहि नयन फल देता ॥ गये कुंवर सब राज निकेता ॥
दो० रूप सिन्धु सब बंधु लखि हरषि उठी रनिवासु ॥
करहिं निछावर आरती महा मुदित मन सासु ॥
देखि राम छवि अति अनुरागी ॥ प्रेम विवस पुनि पुनि पद लागी ॥
रही न लाज प्रीति उर छाई ॥ सहज सनेह बरणि किमि जाई ॥
भाइन सहित उबटि अन्हवाये ॥ छ रस अशन अति हेतु जिंवाये ॥
बोले राम सुअवसर जानी ॥ शील सनेह सकुच मय बानी ॥
राउ अवधपुर चहत सिधाये ॥ बिदा होन हित हमहिं पठाये ॥
मातु मुदित मन आयसु देहू ॥ बालक जानि करब नित नेहू ॥
सुनत वचन बिलखेउ रनिवासू ॥ बोलि न सकहिं प्रेम बस सासू ॥
हृदय लगाइ कुंवरि सब लीन्ही ॥ पतिन सहित बिनती अति कीन्ही ॥
छं० करि विनय सिय रामहि समर्पी जोरि कर पुनि पुनि कहै ॥
बलि जाउं तात सुजान तुम कहं विदित गति सब की अहै ॥
परिवार पुरजन मोहि राजहिं प्राण प्रिय सिय जानिबी ॥
तुलसी सुशील सनेह लखि निज किंकरी करि मानिबी ॥
सो० तुम परिपूरण काम । ज्ञान शिरोमणि भाव प्रिय ॥
जन गुण गाहक राम । दोष दलन करुणायतन ॥
अस कहि रही चरण गहि रानी ॥ प्रेम पंक जनु गिरा समानी ॥
सुनि सनेह सानी बर बानी ॥ बहु बिधि राम सासु सनमानी ॥
राम बिदा मांगत कर जोरी ॥ कीन्ह प्रणाम बहोरि बहोरी ॥
पाइ असीस बहुरि शिर नाई ॥ भाइन सहित चले रघुराई ॥

मंजु मधुर मूरति उर आनी। भईं सनेह शिथिल सब रानी।
पुनि धीरज धरि कुवरि हंकारी। वार वार भेंटहि महतारी॥
पहुंचावहि फिरि मिलहिं बहोरी बढी परस्पर प्रीति न थोरी॥
पुनि पुनि मिलति सखिन बिलगाई बाल बत्स जनु धेनु लवाई
दो॰ प्रेम बिवस नर नारि सब सखिन सहित रनिवास
मानहु कीन्ह बिदेह पुर करुणा बिरह निवास॥
शुक सारिक जानकी जिआये कनक पिंजरन राखि पढाये॥
व्याकुल कहहिं कहा वैदेही। सुनि धीरज परिहरै न केही
भये बिकल खग मृग इहि भाती मनुज दशा कैसे कहि जाती
बंधु समेत जनक तब आये। प्रेम उमगि लोचन जल छाये
सीय बिलोकि धीरता भागी॥ रहे कहावत परम बिरागी॥
लीन्ह राउ उर लाइ जानकी॥ मिटी महा मर्य्याद ज्ञानकी।
समुझावत सब सचिव सयाने। कीन्ह सुभाव अनवसर जाने
वारहिबार सुता उर लाई॥ सजि सुन्दरि पालकी मगाई
दो॰ प्रेम बिवस परिवार सब जानि सुलगन नरेश।
कुवरि चढाई पालकी॥ सुमिरे सिद्ध गणेश
बहु बिधि भूप सुता समुझाई नारि धर्म कुल रीति सिखाई
दासी दास दिये बहु तेरे॥ शुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे
सीय चलत व्याकुल पुर बासी होंइ सगुण शुभ मंगल राशी
भूसुर सचिव समेत समाजा। संग चले पहुंचावन राजा॥
रथ गज बाजि बरातिन साजे। सुनि गह गहे बाजने बाजे
दशरथ बिप्र बोल सब लीन्हे। दान मान परि पूरण कीन्हे
चरण सरोज धूरि धरि शीशा मुदित महीपति पाइ असीसा
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना मंगल मूल सगुन भये नाना
दो॰ सुर प्रसून बरषहिं हरषि करहिं अपसरा गान

चले अवध पति अवधपुर मुदित बजाइ निशान

नृप करि विनय महाजन फेरे। सादर सकल मांगने टेरे ॥
भूषण बसन बाजि गज दीन्हे प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे
बार बार विरदा वलि भाषी। फिरे सकल रामहिं उर राखी
बहुरि बहुरि कौशलपति कहहीं जनक प्रेम बस फिरन न चहहीं
पुनि कह भूपति वचन सुहाये फिरिय महीप दूरि बड़ि आये।
राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े ॥ प्रेम प्रवाह विलोचन बाढ़े ॥
तब विदेह बोले कर जोरी ॥ वचन सनेह सुधा जनु बोरी ॥
करौं कवन विधि विनय तुम्हारी महा राज मोहि दीन्ह बड़ाई

दो० कोशल पति समधी सजन सनमाने सब भांति
मिलन परस्पर विनय अति प्रीति न हृदय समाति

मुनि मण्डली जनक शिर नावा। आशिर बाद सबहि सन पावा
सादर पुनि भेंटे जामाता ॥ रूप शील गुण निधि सब भ्राता
जोरि पंकरुह पाणि सोहाये। बोले वचन प्रेम जनु छाये ॥
राम करौं केहि भांति प्रशंसा । मुनि महेश मन मानस हंसा ॥
करहिं योग योगी जेहि लागी। कोह मोह ममता मद त्यागी
व्यापक ब्रह्म अलख अविनाशी चिदानन्द निर्गुण गुण राशी
मन समेत जेहि जानन बानी ॥ तरकि न सकहिं सकल अनुमानी
महिमा निगम नेति करि कहहीं। जो तिहुं काल एक रस रहहीं।

दो० नयन विषय मो कहं भयउ सो समस्त सुख मूल ॥
सबहिं लाभ जग जीव कहं भये ईश अनुकूल ॥

सबहि भांति मोहि दीन्ह बड़ाई। निज जन जानि लीन्ह अपनाई
होइ सहस दश शारद शेषा। करहिं कल्प कोटिक भरि लेखा
मोर भाग्य राउर गुण गाथा ॥ कहि न सिराहिं सुनिय रघुनाथा
मैं कछु कहौं एक बल मोरे ॥ तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे ॥

बार बार मांगों कर जोरे ॥ मन परिहरै चरण जनि भोरे
सुनि वर वचन प्रेम जनु पोषे । पूरण काम राम परि तोषे
करि वर विनय ससुर सनमाने । पितु कौशिक बशिष्ठ सम जाने
विनती बहुरि भरत सन कीन्ही । मिलि सप्रेम पुनि आशिष दीन्ही
दो॰ मिले लषण रिपु सूदनहिं दीन्ह असीस महीश
भये परस्पर प्रेम वस । फिरि फिरि नावहिं शीश
बार बार करि विनय बडाई । रघुपति चले संग सब भाई ।
जनक गहे कौशिक पद जाई । चरण रेणु शिर नयनन लाई ।
सुन मुनीश सब दरशन तोरे ॥ अगमन कछु प्रतीति मन मोरे
जो सुख सुयश लोकपति चहही करत मनोरथ सकुचत अहही
सो सुख सुयश सुलभ मोहिं स्वामी सब सिधि तव दरशन अनुगामी
कीन्ह विनय पुनि पुनि शिर नाई फिरे महीपति आशिष पाई
चली बरात निशान बजाई ॥ मुदित छोट बड़ सब समुदाई
रामहिं निरखि ग्राम नर नारी । पाइ नयन फल होहिं सुखारी
दो॰ बीच बीच वर बास करि मग लोगन सुख देत ॥
अवध समीप पुनीत दिन पहुंची आय जनेत ॥
हने निशान पणव बहु बाजे ॥ भेरि शंख धुनि हयगय गाजे
झांझ मृदंग डिमडिमी सुहाई । सरस राग बाजे सहनाई ॥
पुर जन आवत अकनि बराता मुदित सकल पुलकावल गाता
निज निज सुन्दर सदन संवारे हाट बाट चौहट पुर द्वारे ।
गली सकल अरगजा सिंचाई जहं तहं चौके चारु पुराई ।
बना बजार न जात बखाना । तोरण केतु पताक विताना
सुफल पुंग फल कदलि रसाला । रोपे बकुल कदम्ब तमाला
लगे सुभग तरु परसत धरणी । मणिमय आलबाल कलि करणी
दो॰ विविधि भांति मंगल सकल गृह गृह रचे संवारि

सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबर पुरी निहारि ॥

भूप भवन तेहि अवसर सोहा रचना देखि मदन मन मोहा

मंगल शकुन मनोहर ताई । रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई

जनु उछाह सब सहज सुहाये । तनु धरि धरि दशरथ गृह आये

देखन हेतु राम वैदेही ॥ ॥ कहहु लालसा होइ न केही ।

जूथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि निज छबि निदरहिं मदन बिलासिनि

कलश सुमंगल सजी आरती । गावहिं जनु बहु भेष भारती

भूपति भवन कुलाहल होई ॥ जाइ न बरणि समय सुख सोई

कौशल्यादि राम महतारी । प्रेम विवस जनु दशा विसारी

दो॰ दिये दान विप्रन विपुल । पूजि गणेश पुरारि

प्रमुदित परम दरिद्र जनु । पाइ पदारथ चारि ॥

प्रेम प्रमोद विवस सब माता । चलहिं न चरण शिथिल सब गाता

राम दरश हित अति अनुरागीं परिछन साज सजन सब लागीं

विविध विधान बाजने बाजे ॥ मंगल मुदित सुमित्रा साजे

हरद दूब दधि पल्लव फूला ॥ पान पुंग फल मंगल मूला

अक्षत अंकुर रोचन लाजा । मंजुल मंजरि तुलसि विराजा

छुहे पुरट घट सहज सुहाये ॥ मदन शकुनि जनु नीड़ बनाये

शकुन सुगंधन जाहिं बखानी मंगल सकल सजहिं सब रानी

रची आरती विविध विधाना । मुदित करहिं कल मंगल गाना

दो॰ कनक थार भरि मंगलन्ह कमल करनि लिये मातु

चली मुदित परिछन करन पुलक पल्लवित गातु ।

धूप धूम नभ मेचक भयऊ । सावन घन घमंड जनु ठयऊ

सुरतरु सुमन माल सुर वरषहिं । मनहुँ बलाक अवलि मन करषहिं

मंजुल मणिमय वंदन वारा ॥ मनहुँ पाक रिपु चाप संवारा

प्रगटहिं दुरहिं अटन्ह पर भामिनि चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि

दुन्दुभि धुनि घन गरजहिं घोरा याचक चातक दादुर मोरा ॥
सुचि सुगंध वहु बरषहिं वारी सुखी सकल शशिपुरनर नारी
समय जानि गुरु आयसु दीन्हा पुर प्रवेश रघुकुलमणि कीन्हा
सुमिरि शंभु गिरिजा गण राजा मुदित महीपति सहित समाजा

दो० होहिं शकुन वरषहिं सुमन सुर दुन्दुभी बजाइ।
विबुध वधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ।

मागध सूत वन्दि नट नागर। गावहिं यश तिहुं लोक उजागर
जयधुनि विमल वेद वर वानी। दश दिश सुनिय सुमंगल सानी
विपुल बाजने बाजन लागे। नभ सुर नगर लोग अनुरागे
बने बराती वरणि न जाहीं ॥ महा मुदित मन सुख न समाहीं
पुरवासिन तब राउ जोहारे। देखत रामहिं भये सुखारे ॥
करहिं निछावरि मणिगण चीरा वारि विलोचन पुलक शरीरा
आरति करहिं मुदित पुर नारी हरषहिं निरखि कुवर वर चारी
शिविका सुभग ओहार उघारी। देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी

दो० इहि विधि सबहीं देत सुख आये राज दुआर ॥
मुदित मातु परछनि करहिं वधुन समेत कुमार।

करहिं आरती वारहिं वारा ॥ प्रेम प्रमोद कहै को पारा।
भूषण मणि पट नाना जाती। करहिं निछावरि अगणित भांती
वधुन समेत देखि सुत चारी ॥ परमानन्द मगन महतारी ॥
पुनि पुनि सीय राम छवि देखी मुदित सुफल जग जीवन लेखी
सखी सीय मुख पुनि पुनि चाही गान करहिं निज सुकृत सराही
वरषहिं सुमन क्षणहिं क्षण देवा नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा
देखि मनोहर चारिउ जोरी ॥ शारद उपमा सकल ढंढोरी
देत न बनहिं निपट लघु लागी। इकटक रही रूप अनुरागी

दो० निगम नीति कुलरीति करि अरघ पावड़े देत

बधुन सहित सुत परिछि सब चलीं लिवाइ निकेत

चारि सिंहासन सहज सुहाये। जनु मनोज निज हाथ बनाये
तिन पर कुँवरि कुँवर बैठारे ॥ सादर पाय पुनीत पखारे ॥
धूप दीप नैवेद्य वेद विधि । पूजे वर दुलहिनि मंगल निधि
बारहिं बार आरती करहीं ॥ व्यजन चारु चामर शिर ढरहीं
वस्तु अनेक निछावरि होहीं भरी प्रमोद मातु सब सोहीं
पावा परम तत्व जनु योगी। अमृत लह्यौ जनु संतत रोगी
जन्म रंक जनु पारस पावा ॥ अंधहिं लोचन लाभ सुहावा
मूक वदन जस शारद छाई । मानहुं समर शूर जय पाई

दो॰ इहि सुख तें शत कोटि गुण पावहिं मातु अनंद
भाइन सहित विवाहि घर आये रघुकुल चन्द
लोक रीति जननी करहिं वर दुलहिनि सकुचाहिं
मोद विनोद विलोक बड़ राम मनहिं मुसकाहिं।

देव पितर पूजे विधि नीकी। पूजी सकल वासना जीकी
सबहिं वन्दि मागहिं वरदाना। भाइन सहित राम कल्याना
अन्तर हित सुर आशिष देहीं। मुदित मातु अंचल भरि लेहीं
भूपति बोलि बरातिन्ह लीन्हे। यान वसन मणि भूषण दीन्हे
आयसु पाइ राखि उर रामहिं मुदित गये सब निज निज धामहिं
पुर नर नारि सकल पहिराये । घर घर बाजहिं अनंद बधाये
याचक जन याचहिं जोइ जोई प्रमुदित राउ देइ सोइ सोई
सेवक सकल बजनियां नाना। पूरण किये दान सन माना

दो॰ देहिं असीस जुहारि सब गावहिं गुणगन गाथ
तब गुरु भूसुर सहित गृह गवन कीन्ह नरनाथ

जो वशिष्ठ अनुशासन दीन्हा। लोक वेद विधि सादर कीन्हा
भूसुर भीर देखि सब रानी । सादर उठीं भाग्य बड़ जानी

पाय पखारि सकल अन्हवाये पूजि भली विधि भूप जेंवाये
आदर दान प्रेम परितोषे ॥ देत असीस चले मन तोषे
बहु विधि कीन्ह गाधिसुतपूजा नाथ मोहिं सम धन्य न दूजा
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी ॥ रानिन सहित लीन्ह पग धूरी
भीतर भवन दीन्ह वर वासू ॥ मन जुगवत रह नृप रनिवासू
पूजे गुरु पद कमल बहोरी ॥ कीन्ह विनय मन प्रीति न थोरी

दो॰ वधुन समेत कुमार सब रानिन सहित महीश।
पुनि पुनि बन्दत गुरुचरण देत असीस मुनीश॥

विनय कीन्ह उर अति अनुरागे सुत सम्पदा राखि सब आगे॥
नेग मांगि मुनि नायक लीन्हा। आशिर वाद बहुत विधि दीन्हा
उर धरि रामहिं सीय समेता । हरषि कीन्ह गुरु गवन निकेता
विप्र वधू कुलवृद्ध बुलाई ॥ चीर चारु भूषण पहिराई।
बहुरि बुलाइ सुआसिनि लीन्ही रुचि विचारि पहिरावन दीन्ही
नेगी नेग योग सब लेहीं ॥ ॥ रुचि अनुरूप भूप मणि देहीं
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने ॥ भूपति भली भांति सन माने॥
देव देखि रघुवीर विवाहू ॥ वरषि प्रसून प्रशंसि उछाहू

दो॰ चले निशान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ।
कहत परस्पर राम यश। हरष न हृदय समाइ॥

सब विधि सबहिं समदि नर नाहू रहा हृदय भरि पूरि उछाहू॥
जहँ रनिवास तहां पगु धारे। सहित वधूटिन कुंवर निहारे।
लिये गोद करि मोद समेता । को कहि सकै भयउ सुख जेता
वधू सप्रेम गोद बैठारी ॥ ॥ वार वार हिय हरषि दुलारी।
देखि समाज मुदित रनिवासू। सब के उर आनन्द विलासू।
कहेउ भूप जिमि भयउ विवाहू। सुनि सुनि हरष होत सब काहू
जनक राज गुण शील बड़ाई। प्रीति रीति सम्पदा सुहाई

बहु विधि भूप भाट जिमि बरणी रानी सब प्रमुदित सुनि करणी

दो० सुतन समेत नहाइ नृप बोलि लिये गुरु ज्ञाति

भोजन किये अनेक विधि घरी पांच गइ राति

मंगल गान करहिं वर भामिनि। भइ सुख मूल मनोहर यामिनि

अँचै पान सब काहुन पाये ॥ स्रग सुगन्ध भूषित छवि छाये

रामहिं देखि रजायसु पाई ॥ निज निज भवन चले सिर नाई

प्रेम प्रमोद विनोद बड़ाई ॥ समय समाज मनोहरताई

कहि न सकहिं श्रुति शारद शेषू बेद विरंचि महेश गणेशू ॥

सो मैं कहौं कवन विधि बरणी । भूमि नाग सिर धरै कि धरणी

नृप सब भांति सबहिं सनमानी कहि मृदु बचन बुलाई रानी।

बधू लरिकिनी पर घर आई ॥ राखेहु नयन पलक की नाई ॥

दो० लरिका श्रमित उनीद बस शयन करावहु जाइ।

अस कहि गे विश्राम गृह राम चरण चित लाइ

भूप बचन सुनि सहज सुहाये। जड़ित कनक मणि पलँग डसाये

सुभग सुरभि पय फेनु समाना। कोमल कलित सुपेती नाना।

उपबरहन बर बरणि न जाहीं। स्रग सुगन्ध मणि मन्दिर माहीं

रतन दीप सुठि चारु चँदोवा ॥ कहत न बनै जान जेहि जोवा

सेज रुचिर रचि राम उठाये ॥ प्रेम समेत पलँग पौढ़ाये

आज्ञा पुनि पुनि भाइन दीन्ही निज निज सेज शयन तिन कीन्ही

देखि श्याम मृदु मंजुल गाता । कहहिं सप्रेम बचन सब माता

मारग जात भयावनि भारी ॥ केहि विधि तात ताड़का मारी

दो० घोर निशाचर विकट भट समर गनैं नहिं काहु।

मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु।

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारे । ईश अनेक करवरे टारे ॥

मख रखवारी करि दुहु भाई । गुरु प्रसाद सब विद्या पाई

मुनि तिय तरी लगत पग धूरी। कीरति रही भुवन भरि पूरी॥
कमठ पीठ पवि कूट कठोरा ॥ नृप समाज महं शिवधनु तोरा
विश्व विजय यश जानकि पाई आये भवन ब्याहि सब भाई
सकल अमानुष कर्म तुम्हारे । केवल कौशिक कृपा सुधारे
आजु सुफल जग जन्म हमारे। देखि तात बिधु बदन तुम्हारे।
जे दिन गए तुमहिं बिनु देखे । ते बिरंचि जनि पारहिं लेखे॥

दो० राम प्रतोषी मातु सब ॥ कहि बिनीत वर बयन
सुमिरि शंभु गुरु विप्र पद किये नीदवश नयन

नीदहु बदन सोह सुठि लोना । मनहुं सांझ सरसीरुह सोना
घर घर करहिं जागरण नारी। देहिं परस्पर मंगल गारी॥
पुरी बिराजति राजत रजनी । रानी कहहिं बिलोकहु सजनी
सुन्दरि बदन सासु लै सोई ॥ फनिपति जनु शिर मणि उर गोई
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे ॥ अरुणचूड़ वर बोलन लागे
बन्दी मागध गुण गण गाए । पुरजन द्वार जुहारन आए।
बन्दि विप्र सुर गुरु पितु माता । पाइ अशीष मुदित सब भ्राता
जननिन्ह सादर बदन निहारे । भूपति संग द्वार पगु धारे॥

दो० कीन्ह शौच सब सहज शुचि सरित पुनीत नहाइ
प्रात क्रिया करि तात पहं आए चारिउ भाइ ॥

भूप बिलोकि लिये उर लाई॥ बैठे हरषि रजायसु पाई॥
देखि राम सब सभा जुड़ानी । लोचन लाभ अवधि अनुमानी
पुनि वशिष्ठ मुनि कौशिक आये सुभग आसनन्ह मुनि बैठाये
सुतन समेत पूजि पद लागे ॥ निरखि राम दोउ उर अनुरागे
कहहिं वशिष्ठ धर्म इतिहासा । सुनहिं महीप सहित रनिवासा
मुनि मन अगम गाधिसुत करणी मुदित वशिष्ठ विपुल विधि बरणी
बोले वामदेव सब सांची ॥ ॥ कीरति कलित लोक तिहुं माची

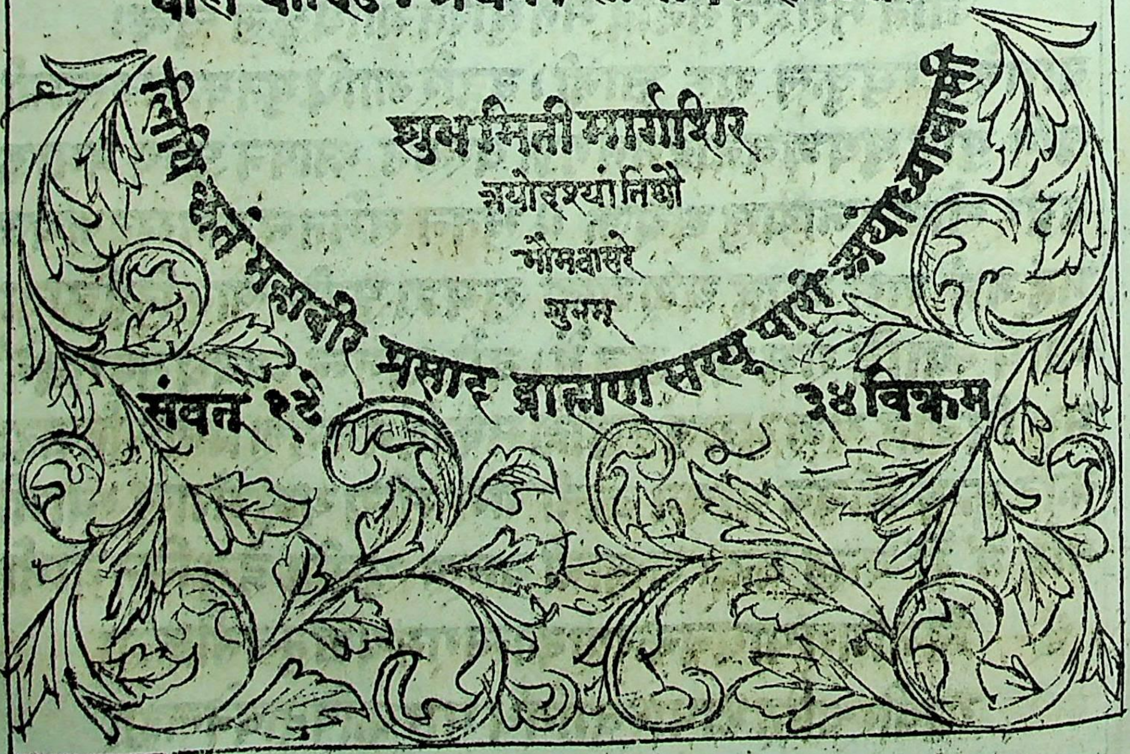
सुनि आनन्द भयउ सब काहू। राम लखण उर अधिक उछाहू
दो॰ मंगल मोद उछाह नित जाहिं दिवस इहि भांति
उमगी अवध अनन्द भरि अधिक अधिक अधिकाति
सुदिन साधि कर कंकण छोरे। मंगल मोद विनोद न थोरे॥
नित नव सुख सुर देखि सिहाहीं अवध जन्म याचहिं विधि पाहीं
विश्वामित्र चलन नित चहहीं। राम सप्रेम विनयवस रहहीं॥
दिन दिन सउ गुण भूपति भाऊ देखि सराह महा मुनि राऊ॥
मांगत विदा राउ अनुरागे। सुतन समेत ठाढ़ भये आगे
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी। मैं सेवक समेत सुत नारी॥
करब सदा लरिकन पर छोहू। दरशन देत रहब मुनि मोहू
अस कहि राउ सहित सुत रानी परेउ चरण मुख आवत बानी
दीन्ह असीष विप्र बहु भांती। चले न प्रीति रीति कहि जाती
राम सप्रेम संग सब भाई। आयसु पाइ फिरे पहुंचाई
दो॰ राम रूप भूपति भगति ब्याह उछाह अनन्द।
जात सराहत मनहिं मन मुदित गाधिकुल चन्द।
वाम देव रघुकुल गुरु ज्ञानी। बहुरि गाधि सुत कथा बखानी
सुनि मुनि सुयश मनहिं मन राऊ बरणत आपन पुण्य प्रभाऊ
बहुरे लोग रजायसु भयऊ॥ सुतन समेत नृपति गृह गयऊ
जहं तहं राम ब्याह यश गावा सुयश पुनीत लोक तिहुं छावा
आये ब्याहि राम घर जब तें। बसै अनन्द अवध सब तब तें
प्रभु विवाह यश भयउ उछाहा सकहिं न बरणि गिरा अहिनाहा
कवि कुल जीवन पावन जानी राम सीय यश मंगल खानी
तेहि तें मैं कछु कहा बखानी करण पुनीत हेतु निज बानी
छं॰ निज गिरा पावन करण कारन राम यश तुलसी कह्यो
रघुवीर चरित अपार वारिधि पार कवि कवनै लह्यो

उपवीतब्याह उछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं ॥
बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं ॥
सुनि गाय कहौं गिरीश कन्या धन्य अधिकारी सही
निज प्रीति नूतन सुनत हरिगुण याकि अनुपम ते लही ।
रघुवीर पद अनुराग जल सो भगिन वेगि बुझावई ॥
यह जानि तुलसीदास मन क्रम बचन हरि गुण गावई

दो० कठिन काल मल ग्रसन तनु साधन कछुक न होर ॥
यह विचारि विश्वास करि हरि सुमिरें बुध मोर ॥

सो० मन हरि पद अनुराग । करइ त्यागि नाना कपट
महा मोह निशि जाग । सोवत बीते काल बहु ॥
सिय रघुवीर बिबाह । जे सप्रेम सादर सुनहिं ॥
तिनकहँ सदा उछाहु । मंगलायतन राम यश ॥

इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य विज्ञान संतोष सम्पादनो नाम तुलसी कृत ॥
बाल काण्ड : प्रथम : सोपानः समाप्तः ॥





॥ वामाङ्के च विभाति भूधर सुता देवा पगा मस्तके भाले
वाल विधु र्गलेच गरलं यस्यो रसिव्याल राट् ॥ सोऽयंभूति
विभूषण: सुर वर: सर्वा धिप: सर्वदा । सर्व: शर्वगत:शि-
व: शशि निभ: श्री शंकर: पातुमाम् ॥ १॥ प्रसन्नतांयानगतो
भिषेकत स्तथा नमम्लौवनवास दु:खत: । मुखाम्बुजश्री
रघुनन्दन स्यमे सदास्तु नम्मञ्जुल मंगलप्रदम् ॥ २॥ नीलाम्बु
ज श्यामल कोमलांगम् सीता समारो पित वाम भागम् ॥
पाणौ महा शायक चारु चापम् नमामि रामं रघु वंश
नायकम् ॥ ३॥

दो० श्री गुरु चरण सरोज रज निजमन मुकुरसुधारि
वरणौं रघुवर विमलयश जो दायक फल चारि।

जब तें राम व्याहि घर आये। नित नव मंगल मोद वधाये
भुवन चारि दश भूधर भारी ॥ सुकृत मेघ वरषहिं सुख बारी

ऋधि सिधि सम्पति नदी सुहाई। उमगि अवध अंबुधि कहं आई
मणि गण पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुन्दर सब भांती
कहि न जाइ कछु नगर विभूती। जनु इतनी विरंचि कर तूती॥
सब विधि सब पुर लोग सुखारी। राम चन्द्र मुख चन्द्र निहारी।
मुदित मातु सब सखी सहेली। फलित बिलोकि मनोरथ बेली
राम रूप गुण शील सुभाऊ। प्रमुदित होहिं देखि सुनि राऊ

दो० सब के उर अभिलाष अस कहहिं मनाइ महेश।
आप अछत युवराज पद रामहिं देहिं नरेश॥

एक समय सब सहित समाजा राज सभा रघु राज विराजा।
सकल सुकृत मूरति नर नाहू। राम सुयश सुनि अतिहि उछाहू
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषे लोकप रहहिं प्रीति रुख राखे।
त्रिभुवन तीनि काल जग माहीं। भूरिभाग दशरथ सम नाहीं
मंगल मूल राम सुत जासू। जो कछु कहिय थोर सब तासू
राउ सुभाव मुकुर कर लीन्हा। बदन बिलोकि मुकुट सम कीन्हा
श्रवण समीप भये सित केशा। मनहुं चौथपन अस उपदेशा।
नृप युवराज राम कहं देहू॥ जीवन जन्म सुफल करि लेहू

दो० अस विचारि उर आनि नृप सुदिन सुअवसर पाइ
तन पुलकित मन मुदित अति गुरुहि सुनायउ जाइ

कहेउ भुआल सुनिय मुनिनायक भये राम सब विधि सब लायक
सेवक सचिव सकल पुरवासी। जे हमार अरि मित्र उदासी
सबहि राम प्रिय जेहि विधि मोहीं प्रभु असीष जनु तनु धरि सोही
विप्र सहित परिवार गुसाईं। करहिं छोह सब रौरे हि नाईं
जे गुरु चरण रेणु शिर धरहीं। ते जनु सकल विभव वस करहीं
मोहिं समान अरु भयउ न दूजे। सब पायउं प्रभु पद रज पूजे॥
अब अभिलाष एक मन मोरे। पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे॥

मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू कहेउ नरेश रजायसु देहू ॥
दो० राउर राजन नाम यश। सब अभिमत दातार।
फल अनुगामी महिपमणि मन अभिलाष तुम्हार
सब बिधि गुरु प्रसन्न जिय जानी बोलेउ राउ विहसि मृदु बानी
नाथ राम करिये युवराजू ॥। कहिय कृपा करि करिय समाजू
मोहिं अछत अस होइ उछाहू। लहहिं लोग सब लोचन लाहू
प्रभु प्रसाद शिव सबै निबाहीं यह लालसा इक मन माहीं॥
पुनि न शोच तनु रहै कि जाऊ जेहि न होइ पाछे पछिताऊ
सुनि मुनि दशरथ वचन सुहाये मंगल मूल मोद अति पाये
सुनु नृप जासु विमुख पछताहीं जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं
भये तुम्हार तनय सो स्वामी राम पुनीत प्रेम अनुगामी।
दो० बेगि विलंब न करिय नृप साजिय सबै समाज।
सुदिन सुमंगल तबहि जब राम होहिं युवराज।
मुदित महीपति मन्दिर आये सेवक सचिव सुमन्त बुलाये
कहि जय जीव शीश तिन नाये भूप सुमंगल वचन सुनाये
प्रमुदित मोहिं कहेउ गुरु आजू रामहिं राज देहु युवराजू।
जो पांचहिं मत लागे नीका करहु हरषि हिय रामहिं टीका
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी। अभिमत बिरव परेउ जनु पानी
बिनती सचिव करहि कर जोरी जियहु जगतपति बरष करोरी
जग मंगल भल काज बिचारा बेगहिं नाथ न लाइय बारा॥
नृपहि मोद सुनि सचिव सुभाषा बढ़त बिटप जनु लही सुशाखा
दो० कहेउ भूप मुनिराज कर जो जो आयसु होइ
राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ
हरषि मुनीश कहेउ मृदु बानी आनहु सकल सुतीरथ पानी
औषधि मूल फूल फल नाना कहे नाम गणि मंगल जाना

चामर चमर बसन बहुभांती रोम पाट मट अगणित जाती
मणि गण मंगल बस्तु अनेका जो जग योग भूप अभिषेका
वेद विहित कहि सकल विधाना कहेउ रचहु पुर विविध विताना
पनस रसाल सुपारी फल केरा । रोपहु वीथिन पुर चहुं फेरा
रचहु मंजु मणि चौके चारू। कहहु बनावन वेगि बजारू।
पूजहु गण पति गुरु कुलदेवा। सब विधि करहु भूमिसुर सेवा
दो० ध्वज पताक तोरण कलश सजहु तुरंग रथ नाग।
शिर धरि मुनि वर वचन सब निज निज काजहिं लाग
जेहि मुनीश जो आयसु दीन्हा सो जनु काज प्रथम तेइ कीन्हा
विप्र साधु सुर पूजत राजा ॥ करत राम हित मंगल काजा
सुनत राम अभिषेक सुहावा बाजु गहा गह अवध बधावा
राम सीय तनु शकुन जनाये । फरकहि मंगल अंग सुहाये
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं। भरत आगमन सूचक अहहीं
भये बहुत दिन अति अवसेरी। सगुन प्रतीति भेट प्रिय केरी।
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं यहै शकुन फल दूसर नाहीं।
रामहिं बंधु शोच दिन राती ॥ अंडन्ह कमठ हृदय जेहि भांती
दो० तेहि अवसर मंगल परम सुनि हरखेउ रनिवास॥
शोभित लखि विधु बढ़त जनु वारिधि बीचि बिलास
प्रथम जाइ जिन्ह खबरि जनाये भूषण बसन भूरि तिन पाये॥
प्रेम पुलकि तनु मन अनुरागीं मंगल साज सजन सब लागीं
चौके चारु सुमित्रा पूरी ॥ मणि मय विविधि भांति अति रूरी
आनंद मगन राम महतारी। दिये दान बहु विप्र हंकारी।
पूजेउ ग्राम देव सुर नागा ॥ कहेउ बहोरि देन बलि भागा
जेहि विधि होइ राम कल्याना देहु दया करि सो बरदाना
गावहिं मंगल कोकिल बयनी विधु बदनी मृग शावक नयनी

दो॰ राम राज अभिषेक सुनि हिय हरषी नर नारि ॥
लगी सुमंगल सजन सब विधि अनुकूल विचारि

तब नर नाह वशिष्ठ बुलाये । राम धाम सिख देन पठाये ॥
गुरु आगमन सुनत रघुनाथा द्वार आइ नायेउ पद माथा
सादर अर्घ देइ घर आने ॥ सोरह भांति पूजि सनमाने
गहे चरण सिय सहित बहोरी बोले राम कमल कर जोरी
सेवक सदन स्वामि आगमनू । मंगल मूल अमंगल दमनू
तदपि उचित अस बोलि सप्रीती पठइय नाथ काज अस नीती
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू । भयउ पुनीत आजु मम गेहू
आयसु होय सो करिय गुसांई सेवक लहै स्वामि सेवकाई

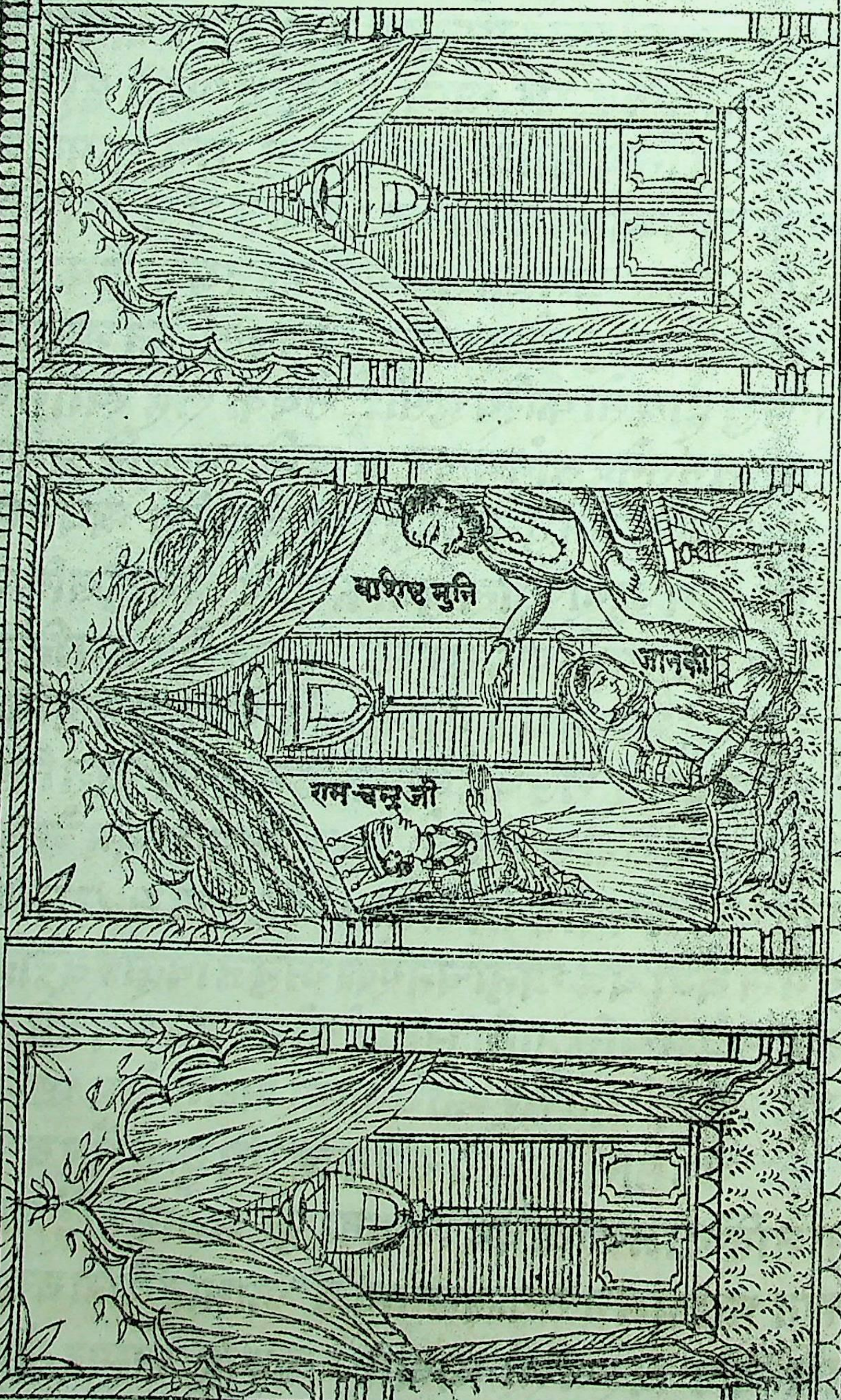
दो॰ सुन सनेह साने वचन ॥ मुनि रघुवरहि प्रसंस ।
राम कसन तुम कहहु अस हंस वंश अवतंस ॥

वरणि राम गुण शील सुभाऊ बोले प्रेम पुलकि मुनि राऊ
भूप सजेउ अभिषेक समाजू चाहत देन तुमहिं युव राजू
राम करहु सब संयम आजू । जो विधि कुशल निबाहे काजू
गुरु सिख देइ राउ पहं गयऊ राम हृदय अस विस्मय भयऊ
जन्मे एक संग सब भाई ॥ । भोजन शयन केलि लरिकाई
कर्ण वेध उपवीत विवाहा । संग संग सब भयउ उछाहा
विमल वंश यह अनुचित एका अनुज विहाइ बड़ेहि अभिषेका
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई हरेउ भरत मन की कुटिलाई

दो॰ तेहि अवसर आये लषन मगन प्रेम आनन्द
सनमाने प्रिय वचन कहि रवि कुल कैरव चन्द

बाजहिं बाजन विविध विधाना पुर प्रमोद नहिं जाइ बखाना
भरत आगमन सकल मनावहिं आवहिं वेगि नयन फल पावहिं
हाट बाट घर गली अथाई। कहहिं परस्पर लोग लुगाई।

राजा दशरथ की आज्ञानुसार श्री गुरु वशिष्ठ जी का श्रीरामचन्द्र के मन्दिर में जाना और युवराज के निमित्त आशिष देना ॥



कालि लगन भल केतिक वारा पूजिहिं विधि अभिलाष हमारा
कनक सिंहासन सीय समेता। बैठहिं राम होइ चित चेता
सकल कहहिं कब होइहि काली विघ्न मनावहिं देव कुचाली
तिनहिं सोहात न अवध बधावा चोरहि चांदनि रातिन भावा
शारद बोलि विनय सुर करहीं। बारहि बार पाय लै परहीं॥

दो० विपति हमार बिलोकि बड़ि मातु करिय सोइ काज
राम जाहिं बन राज तजि। होइ सकल सुर काज

सुनि सुर विनय ठाढ़ि पछताती भयउं सरोज विपिन हिम राती
देखि देव पुनि कहहिं बहोरी। मातु तोहिं नहिं थोरिउ खोरी
विस्मय हर्ष रहित रघु राऊ। तुम जानहु रघुवीर सुभाऊ॥
जीव कर्म बस दुख सुख भागी जाइये अवध देव हित लागी
बार बार गहि चरण सकोची चली विचारि विबुध मति पोची
ऊंच निवास नीच कर तूती। देखिन सकहिं पराइ विभूती
आगिल काज विचारि बहोरी करिहैं चाह कुशल कवि मोरी
हरषि हृदय दशरथ पुर आई। जनु ग्रह दशा दुसह दुखदाई

दो० नाम मंथरा मन्द मति॥ चेरि कैकयी केरि।
अयश पिटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि।

देखि मंथरा नगर बनावा॥। मंगल मंजुल बाजु बधावा।
पूंछसि लोगन्ह काह उछाहू। राम तिलक सुनि भा उर दाहू
करै विचार कुबुद्धि कुजाती। होइ अकाज कवन विधि राती
देखि लागु मधु कुटिल किराती जिमि गंवत तकैलेउं केहि भांती
भरत मातु पहं गइ बिलखानी का अनमनि हंसि हंसि कह रानी
उतर न देइ सो लेइ उसांसू॥ नारि चरित करि ढारति आंसू
हंसि कह रानि गाल बड़ तोरे। दीन्ह लषण शिख अस मन मोरे
तबहुं न बोलि चेरि बड़ि पापिनि छांड़ै स्वास कारि जनु सांपिनि

दो० सभय रानि कह कहसि किन कुशल राम महिपाल
भरत सत्रुघ्न रिपुदवन सुनि भा कुबरी उर शाल

कत सिख देइ हमहिं कोउ माई। गाल करब केहि कर बल पाई
राम हिं छांड़ि कुशल केहि आजू जाहि नरेश देत युव राजू॥
भा कौसल्यहि विधि अति दाहिन देखत गर्व रहत उर नाहिन
देखहु कस न जाइ सब शोभा। जो अवलोकि मोर मन छोभा
पूत विदेश न शोच तुम्हारे। जानति हो बस नाह हमारे।
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई। लखहु न भूप कपट चतुराई
सुनि प्रिय वचन कुटिल मन जानी झुकी रानि रहु अरगानी।
पुनि अस कबहुं कहसि घरफोरी तो धरि जीह कढ़ावों तोरी

दो० काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि॥
तिय विशेष पुनि चेरि कहि भरत मातु मुसुकानि

प्रिय वादिनि सिख दीन्हेउ तोहीं सपनेहु तो पर कोप न मोही।
सुदिन सुमंगल दायक सोई। तोर कहा फुर जा दिन होई॥
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई। यह दिन कर कुल रीति सदाई
राम तिलक जो सांचेहु काली मांगु देउं मन भावत आली।
कौशल्या सम सब महतारी। रामहि सहज सुभाव पियारी
मोपर करहिं सनेह विशेषी। मैं करि प्रीति परीक्षा देखी॥
जो विधि जन्म देइ करि छोहू। होहिं राम सिय पूत पतोहू॥
प्राण तें अधिक राम प्रिय मोरे तिनके तिलक छोभ कस तोरे।

दो० भरत शपथ तोहिं सत्य कहु परिहरि कपट दुराव
हर्ष समय विस्मय करसि कारण मोहिं सुनाव।

एकहि बार आस सब पूजी। अब कछु कहब जीह करि दूजी
फोरै योग कपार अभागा। भलो कहत दुख रौरेहु लागा
कहहिं झूंठ फुर बात बनाई॥ ते प्रिय तुमहि करुइ मैं माई

हमहुं कहब अब ठकुर सुहाती नाहिं तो मौन रहब दिन राती
करि कुरूप विधि परबस कीन्हा बवा सो लुनिय लहिय सो दीन्ह
कोउ नृप होउ हमैं का हानी । चेरि छांड़ि अब होब कि रानी
जारै योग सुभाव हमारा ।।। अनभल देखि न जाइ तुम्हारा
तातें कछुक बात अनुसारी । समब देवि बड़ चूक हमारी
दो० गूढ़ कपट प्रिय वचन सुनि तीय अधर बुधि रानि
सुर माया बस बैरिणिहि सुहृद जानि पति आनि
सादर पुनि पुनि पूंछति ओही शबरी नाद मृगी जनु मोही
तस मति फिरी अहै जस भावी रहसी चेरि घात भलि फाबी।।
तुम पूछहु मैं कहत डराऊं ।। धरेहु मोर घर फोरी नाऊं ।।
सजि प्रतीति गढ़ि बहु विधि छोली अवध साढ़साती जनु बोली
प्रिय सिय राम कहा तुम रानी रामहिं तुम प्रिय सो फुर बानी
रहे प्रथम अब सो दिन बीते ।। समय पाइ रिपु होहिं पिरीते
भानु कमल कुल पोषनि हारा। बिनु जल जारि करै सो छारा
जरि तुम्हारि चह सवति उखारी रूंधहु करि उपाइ बर बारी।
दो० तुमहिं न शोच सुहाग बल निज बस जानहु राव
मन मलीन मुहं मीठ नृप राउर सरल सुभाव।।
चतुर गंभीर राम महतारी ।। बीच पाइ निज काज संवारी
पठये भरत भूप ननि औरे ।। राम मातु मत जानब रौरे ।।
सेवहिं सकल सवति मोहिं नीके गर्वित भरत मातु बल पीके।
साल तुम्हार कौशिलहि माई । चतुर कपट नहिं परत लखाई
राजहिं तुम पर प्रीति बिशेषी। सवति सुभाव सकै नहिं देखी
रचि प्रपंच भूपहि अपनाई । राम तिलक हित लगन धराई
इहि कुल उचित राम कहं टीका सबहि सुहाइ मोहिं सुठि नीका
आगिल बात समुझि डर मोही। देउ दैव फिरि सो फल ओही

दो० रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट प्रबोध
कहेसि कथा सत सौति कर जातें बढ़ै विरोध ॥

भावी बस प्रतीति उर आई ॥ पूछि रानि निज सपथ दिवाई
का पूछहु तुम अजहुं न जाना । हित अन हित निज पसु पहिचाना
भये पाख दिन सजत समाजू । तुम सुधि पायहु मोसन आजू
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे । सत्य कहे नहिं दोष हमारे ॥
जो असत्य कछु कहब बनाई । तो विधि देइहि मोहिं सजाई
रामहिं तिलक कालि जौं भयऊ तुम कहं विपति बीज विधि बयऊ
रेखा खैंचि कहौं बल भाषी ॥ भामिनि भयहु दूध की माखी ।
जो सुत सहित करहु सेवकाई । तौ घर रहहु न आन उपाई

दो० कद्रू विनतहि दीन्ह दुख । तुमहिं कौशिल्या देव ॥
भरत बन्दि ग्रह सेइहैं । राम लषण कर नेव ॥

केकय सुता सुनत कटु बानी । कहि न सकै कछु सहमि सुखानी
तनु पसेव कदलि जनु कांपी ॥ कुबरी दशन जीह तब चापी ।
कहि कहि कोटिक कपट कहानी धीरज धरहु प्रबोधेसि रानी ॥
कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू । जिमि न नवै फिरि उकठ कुकाठू
फिरा कर्म प्रिय लागु कुचाली । बकिहि सराहत मनहुं मराली
सुन मंथरा बात फुर तोरी ॥ दहिन आंख नित फरकत मोरी
दिन प्रति देखौं राति कुसपना । कहौं न तोहि मोह बस अपना
काह कहौं सखि सूद सुभाऊ । दहिन बाम नहिं जानौं काऊ

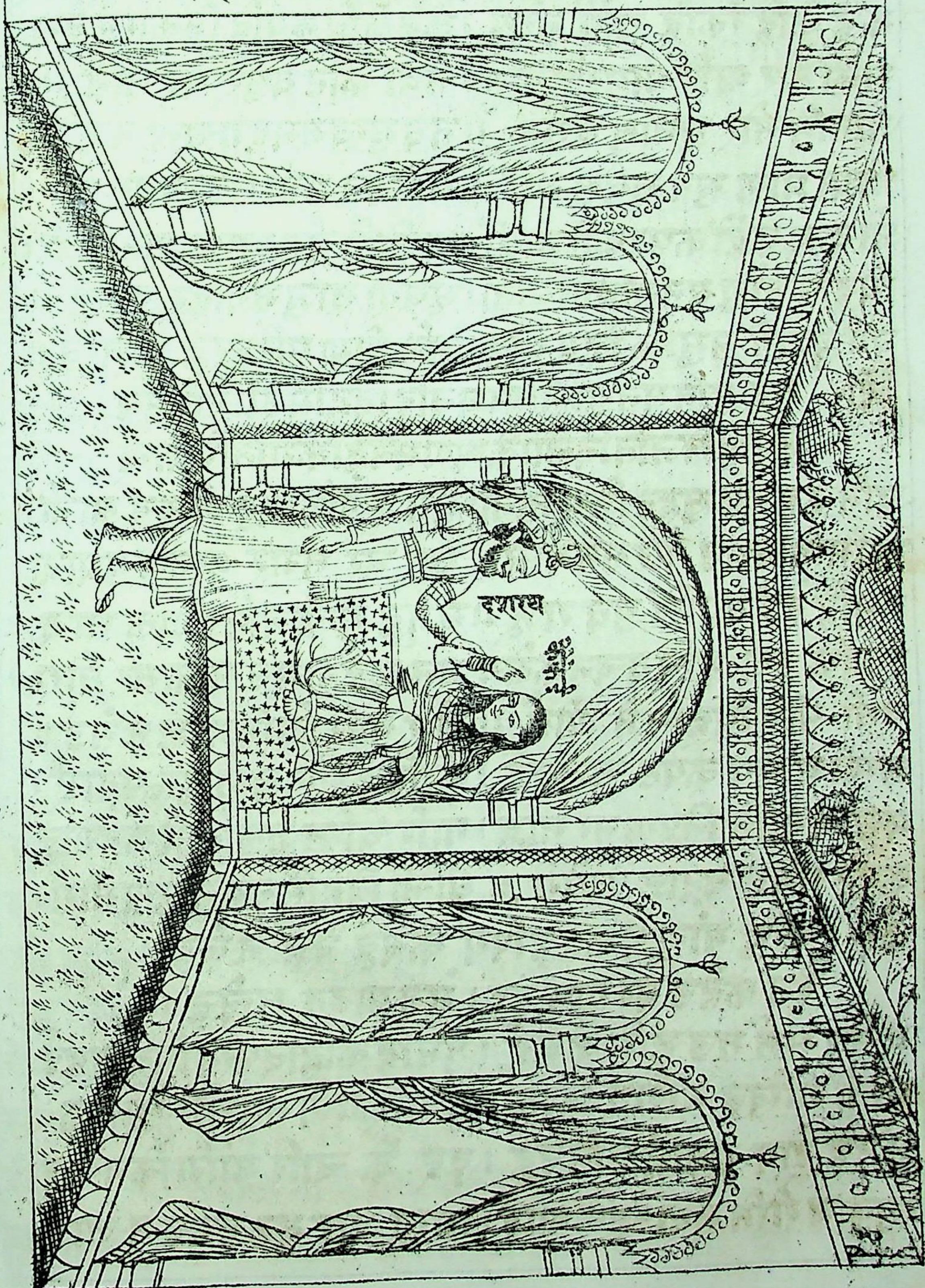
दो० अपने चलत न आजु लगि अनभल काहु न कीन्ह
केहि अघ एकहि बार मोहिं दैव दुसह दुख दीन्ह

नैहर जन्म भरब बरु जाई ॥ जियत न करब सवति सेवकाई ॥
अरि बस दैव जियावै जाही । मरण नीक तेहि जियब न चाही
दीन वचन कह बहु विधि रानी । सुनि कुबरी तिय माया ठानी ॥

अस कस कहहु मानि मन ऊना सुख सुहाग तुम कहं दिन दूना
जो राउर अस अनभल ताका सो पाइहि यह फल परि पाका
जब तें कुमति सुना मैं स्वामिनि भूख न बासर नींद न यामिनि
पूंछा गुणिन्ह रेख तिन खांची भरत भुआल होब यह सांची
भामिनि करहु तो कहौं उपाऊ हैं तुम्हरे सेवा बस राऊ ॥
दो० परौं कूप तव वचन लगि सकों पूत पति त्यागि
कहेसि मोर दुख देखि बड़ कस न करब हित लागि
कुबरी करी कुबलि केकयी ॥ कपट छुरी उर पाहन टेई ॥
लखै न रानि निकट दुख कैसे। चरै हरित तृण बलिपशु जैसे
सुनत बात मृदु अन्त कठोरी। देति मनहुं मधु माहुर घोरी
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं। स्वामिनि कहेहु कथा मोहि पाहीं
दुइ वरदान भूप सन थाती ॥। मांगहु आज जुड़ावहु छाती
सुतहि राज रामहिं बनवासू। देहु लेहु सब सवति हुलासू
भूपति राम सपथ जब करई। तब मांगहु जेहि वचन न टरई
होइ अकाज आजु निशि बीते वचन मोर प्रिय मानहुं जीते
दो० बड़ कुघात करि पातकिनि कहेसि कोप गृह जाहु
काज संवारहु सजग सब सहसा जनि पतियाहु।
कुबरिहि रानि प्राण समजानी बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥
तुहि सम हित न मोर संसारा। बहे जात कर भयसि अधारा
जो विधि पुरब मनोरथ काली करौं तोहि चख पूतरि आली
बहु विधि चेरिहि आदर देई । कोप भवन गवनी कैकेई ॥ ॥
विपति बीज वर्षा ऋतु चेरी ॥ भुइं भइ कुमति केकयी केरी ॥
पाइ कपट जल अंकुर जामा। बर दोउ दल फल दुख परिणामा
कोप समाज साजि [illegible] सोई ॥ राज करत तेहि कुमति बिगोई
[illegible] कोलाहल होई । यह कुचाल कछु जान न कोई

दो० प्रमुदित पुरनरनारि सब साजि सुमंगल चार ॥
इक प्रविशहिं इक निकसहीं भीर भूप दरबार ॥
बाल सखा सुनि हिय हरषाहीं । मिलि दश पांच राम पहं जाहीं
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिचानी । पूछहिं कुशल क्षेम मृदु बानी
फिरहि भवन प्रभु आयसु पाई । करत परस्पर राम बड़ाई ॥
को रघुबीर सरस संसारा ॥ । शील सनेह निबाहन हारा ॥
जेहि जेहि योनि कर्म बस भ्रमहीं तहं तहं ईश देहि यह हमहीं ।
सेवक हम स्वामी सिय नाहू ॥ होउ नाथ यह और निबाहू
अस अभिलाष नगर सब काहू केकय सुता हृदय अति दाहू ।
कौन कुसंगति पाइ न आई । रहैं न नीच मते चतुराई ॥
दो० सांझ समय सानन्द नृप । गये केकयी गेह ॥
गवन निठुरता निपट किय जनु धरि देह सनेह ॥
कोप भवन सुनि सकुचे राऊ । भयबस अगमन परै न पाऊ ।
सुरपति बसै बाहु बल जाके ॥ । नर पति रहहिं सकल रुख ताके ।
सो सुनि तिय रिसि गये सुखाई । देखहु काम प्रताप बड़ाई ।
शूल कुलिश असि अंगनिहारे ते रति नाथ सुमन शर मारे ।
सभय नरेश प्रिया पहं गयऊ । देखि दशा दुख दारुण भयऊ
भूमि शयन पट मोट पुराना । दिये डारि तनु भूषण नाना
कुमतिहि कस कुरूपता फावी अनहित बात सोचु जनु भावी
जाइ निकट नृप कह मृदु बानी । प्राण प्रिया केहि हेतु रिसानी
छं० केहि हेतु रानि रिसानि परसत पाणि पतिहि निवारई
मानहुं सरोष भुअंग भामिनि विषम भांति निहारई
दुइ वासना रसना दशन वर मर्म ठाहर देखई ॥
तुलसी नृपति भवितव्यता बस काम कौतुक लेखई
सो० बार बार कह राउ । सुमुखि सुलोचनि पिक वचनि

भरत को युवराज होने और श्री रामचन्द्र के बनवास देने के निमित्त कैकेई को भूषणालंकार रहित कोपभवन में जाना और राजा दशरथ को आकर कैकेई का मनाना



कारण मोहिं सुनाउ। गजगामिनि निजकोप कर
अनहित तोर प्रिया केहि कीन्हा केहि दुइ शिर केहि यम चह लीन्हा
कहु केहि रंकहि करौं नरेशू। कहु केहि नृपहि निकारउं देशू
सकौं तोर अरि अमरहि मारी। महा कीट बपुरे नर नारी ॥
जानसि मोर सुभाव वरोरू। तव मुख ममदृग चन्द चकोरू
प्रिया प्राण सुत सर्वस मोरे। परिजन प्रजा सकल वस तोरे।
जो कछु कहौं कपट करि तोहीं। भामिनि राम शपथ शत मोहीं।
विहसि मांगु मनभावति बाता। भूषण साजु मनोहर गाता ॥
घरी कुघरी समुझि जिय देखू। वेगि प्रिया परिहरहु कुवेखू ॥
दो॰ यह सुनि मन गुणि शपथ बड़ि विहसि उठी मतिमन्द
भूषण सजति विलोकि मृग मनहुं किरातिनि फन्द
पुनि कह राउ सुहृद जिय जानी। प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी।
भामिनि भयउ तोर मनभावा। घर घर नगर अनन्द बधावा
रामहिं देउं कालिं युव राजू। सजहु सुलोचनि मंगल साजू
दलकि उठी सुनि वचन कठोरा जनु छुइ गयउ पाक बर तोरा
ऐसी पीर विहसि ते गोई। चोर नारि जिमि प्रगट न रोई ॥
लखी न भूप कपट चतुराई। कोटि कुटिल गुरु गुरू पढ़ाई।
यद्यपि नीति निपुण नर नाहू। नारि चरित जलनिधि अवगाहू
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी। बोली विहसि नयन मुख मोरी।
दो॰ मांगु मांगु पै कहहु पिय कबहुं देहु न लेहु ॥
देन कहेउ वर दान दुइ। तेउ पावत सन्देहु ॥
जानेउ मर्म राउ हंसि कहई। तुमहिं कोहाव परम प्रिय अहई
थाती राखि न मांगेउ काऊ। विसरि गयो मम भोर सुभाऊ
झूंठहु दोष हमहिं जनि देहू। दुइ कै चारि मांगि किन लेहू
रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाइ बरु वचन न जाई

नहिं असत्य सम पातक पुंजा गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा
सत्य मूल सब सुकृत सुहाई । वेद पुराण विदित मुनि गाई
तेहि पर राम शपथ करि आई सुकृत सनेह अवधि रघुराई
बात दृढ़ाइ कुमति हंसि बोली कुमत विहंगकुलह जनु खोली
दो॰ भूप मनोरथ सुभग वन सुख सुविहंग समाज।
भिल्लिनि जनु छाड़न चहति वचन भयंकर बाज
सुनहु प्राणपति भावत जीका देहु एक वर भरतहि टीका ॥
दूसर वर मांगों कर जोरी ॥ नाथ मनोरथ पुरवहु मोरी ॥
तापस वेष विशेष उदासी । चौदह वर्ष राम बन बासी ॥
सुनि तिय वचन भूप उर शोकू । शशि कर छुवत विकल जिमि कोकू
गये सहमि कछु कहि नहिं आवा जनु शचान बन झपटेउ लावा
विवरण भयउ निपट महिपालू दामिनि हनेउ मनहुं तरु तालू
माथे हाथ मूंदि दोउ लोचन । तनु धरि शोच लागु जनु शोचन
मोर मनोरथ सुर तरु फूला ॥ फरत करिणि जनु हतेउ समूला
अवध उजारि कीन्ह कैकेई दीन्हेसि अचल विपति कै नेई
दो॰ कवने अवसर का भयउ गयउ नारि विश्वास
योग सिद्ध फल समय जिमि यतिहि अविद्या नाश
इहि विधि राउ मनहिं मन दहई देखि कुभांति कुमति अस कहई
भरत कि राउर पूत न होहीं ॥ आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं
जो सुनि शर सम लागु तुम्हारे । काहे न बोलहु वचन संभारे।
देहु उतर अस कहहु कि नाहीं सत्य सिंधु तुम रघुकुल माहीं।
देन कहेहु वर अब जनि देहू । तजहु सत्य जग अपयश लेहू
सत्य सराहि कहेहु वर देना । जानेहु लेइहि मांगि चबेना
शिबि दधीचि बलि जो कछु भाषा तनु धन तजेउ वचन प्रण राखा।
अति कटु वचन कहति कैकेई मानहुं लोन जरे पर देई।

दो० धर्म धुरन्धर धीर धरि नयन उघारे राउ ॥
सिरधुनि लीन्ह उसास अति मारेसि मोहिं कुठाउ

आगे देखि बरति रिसि भारी ॥ मनहुं रोष तर वारि उघारी
मूठ कुबुद्धि धार निठुराई ॥ धरी कुबरी जनु सान बनाई
लखेउ महीप कराल कठोरा ॥ सत्य कि जीवन लेइहि मोरा
बोले राउ कठिन करि छाती ॥ बानी विनय न ताहि सोहाती
मोरे भरत राम दोउ आंखी ॥ सत्य कहौं करि संकर साखी
प्रिया वचन कस कहसि कुभांती रीति प्रतीति प्रीति करि हाती
अवसि दूत मैं पठउब प्राता । ऐहैं वेगि सुनत दोउ भ्राता
सुदिन साधि सब साज सजाई । देहौं भरत कहं राज बजाई

दो० लोभ न रामहिं राज कर बहुत भरत पर प्रीति
मैं बड़ छोट विचार करि करत रहेउं नृप नीति ।

राम शपथ शत कहौं सुभाऊ । राम मातु मोहिं कहा न काऊ
मैं सब कीन्ह तोहि बिनु पूछे । ताते परेउ मनोरथ छूछे ॥
रिसि परिहरि अब मंगल साजू कछु दिन गए भरत युवराजू
एकहि बात मोहिं दुख लागा बर दूसर असमंजस मांगा
अजहूं हृदय दहत तेहि आंचा रिसि परिहास कि सांचहु सांचा
कहु तजि रोष राम अपराधू ॥ सब कोउ कहत राम सुठि साधू
तुहू सराहसि करसि सनेहू ॥ अब सुनि मोहि परम सन्देहू
जासु सुभाव अरिहु अनुकूला सो किमि करहि मातु प्रतिकूला

दो० प्रिया हास रिसि परिहरहु मांगु विचारि विवेक ।
जेहि देखौं अब नयन भरि भरत राज अभिषेक ।

जिऐ मीन बरु बारि बिहीना ॥ मणि बिनु फणिक जियै दुख दीना
कहौं सुभाव न छल मन माहीं । जीवन मोर राम बिनु नाहीं ।
समुझि देखु तैं प्रिया प्रवीना । जीवन दरश राम आधीना

सुनि मृदु वचन कुमति अति जरई मनहुं अनल आहुति घृत परई
कहहु करहु किन कोटि उपाया इहां न लागिहि राउर माया
देहु कि लेहु अयश करि नाहीं मोहिं न बहु परिपंच सोहाहीं
राम साधु तुम साधु सुजाना। राम मातु तुम भलि पहिचाना
जस कौशिला मोर भल ताका। तस फल देउं उन्हें करि शाका
दो० होत प्रात मुनिभेष धरि जौं न राम बन जाहिं।
मोर मरण राउर अयश। नृप समुझहु मन माहिं
अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी मानहु रोष तरंगिनि बाढ़ी॥
पाप पहार प्रगट भइ सोई॥ भरी क्रोध जल जाइन जोई॥
दोउ बर कूल कठिन हठधारा भँवर कूबरी वचन प्रचारा॥
ढाहति भूप रूप तरु मूला॥ चली बिपति बारिधि अनुकूला
लखी नरेश बात सब सांची। तिय मिसु मीचु शीश पर नाची
गहि पद विनय कीन्ह बैठारी। जनि दिन कर कुल होसि कुठारी
मागु माथ अबही देउं तोही। राम बिरह जनि मारसि मोही
राखु राम कहं जेहि तेहि भांती। नाहित जरिहि जन्म भरि छाती
दो० देखी व्याधि असाध्य नृप परेउ धरणि धुनि माथ
कहत परम आरत वचन राम राम रघुनाथ॥
व्याकुल राउ शिथिल सब गाता करिणि कल्प तरु मनहुं निपाता
कण्ठ सूख मुख आव न बानी। जिमि पाठीन दीन विनु पानी।
पुनि कह कटु कठोर कैकेई। मर्म पाछि जनु माहुर देई॥
जो अन्तहु अस करतब रहेऊ मांगु मांगु कहि केबल कहेऊ
दुइ कि होइ एक संग भुआलू। हसब ठठाइ फुलाउब गालू।
दानि कहाउब अरु कृपणाई चाहिय क्षेम कुशल रौताई॥
छाड़हु वचन कि धीरज धरहू। जनि अबला इव करुणा करहू
तन तिय तनय धाम धन धरणी सत्य सिंधु कहं तृण सम बरणी

दो॰ मर्म वचन सुनि राउ कह कछुक दोष नहिं तोर
लागेउ मोहि पिशाच जनु काल कहावत मोर।
चहत न भरत भूप पद भोरे ॥ विधि बस कुमति बसी उर तोरे
सो सब मोर पाप परिणामू। कछु न बसाइ भयो विधि बामू
सुवस बसिहि पुनि अवध सुहाई सब गुण धाम राम प्रभुताई
करिहैं भाइ सकल सेव काई। होइ है तिहु पुर राम बड़ाई।
तोर कलंक मोर पछिताऊ ॥ मुयेउ मेटि न जाइहि काऊ
अब तोहिं नीक लाग कर सोई लोचन ओट बैठु मुख गोई ॥
जो लौं जियौं कहौं कर जोरी। तो लौं जनि कछु कहसि बहोरी
फिरि पछितैहसि अंत अभागी मारसि गाय नाहरू लागी
दो॰ परेउ राउ कहि कोटि विधि काहे करसि निदान
कपट सयानि न कहति कछु जागति मनहुं मसान।
राम राम रटि विकल भुआलू जनु बिनु पंख विहंग बिहालू
हृदय मनाव भोर जनि होई। रामहिं जाइ कहै जनि कोई
उदय करहु जनि रवि कुल सूरा। अवध बिलोकि सूल होइ उरा
भूप प्रीति कैकयि निठुराई ॥ उभय अवधि विधि रचौं बनाई
विलपत नृपहि भयउ भिनुसारा वीणा वेणु शंख धुनि द्वारा
पढ़हिं भाट गुण गावहिं गायक सुनत नृपहि लागत जनु शायक
मंगल सकल सोहाइं न कैसे। सहगामिनी विभूषण जैसे।
तेहि निशि नींद परी नहिं काहू। राम दरश लालसा उछाहू।
दो॰ द्वार भीर सेवक सचिव। कहहिं उदय रवि देखि
जागे अजहुं न अवधपति कारण कवन विशेषि
पिछले पहर भूप नित जागा। आजु हमहिं बड़ अचरज लागा
जाहु सुमंत जगावहु जाई ॥ कीजिय काज रजायसु पाई
गे सुमन्त नृपमन्दिर पाहीं ॥ देखि भयानक जात डेराहीं

धाइ खाइ जनु जातन हेरा ॥ मानहुं विपतिविषाद बसेरा
पूछत न कोउ न उतर कछु देई । गे जेहि भवन भूप कैकेयी
कहि जय जीव बैठ शिर नाई । देखि भूप गति गयउ सुखाई
शोक विकल विवरण महि परेऊ मानहुं कमल मूल परिहरेऊ
सचिव सभीत सकै नहिं पूछी । बोली अशुभ भरी शुभ छूछी

दो० परीन राजहिं नींद निशि मर्म जानु जगदीश ।
राम राम रटि भोर किय हेतु न कहेउ महीश ।

आनहुं रामहिं बेगि बुलाई । समाचार तब पूछहु आई
चल्यो सुमन्त राउ रुख जानी । लखी कुचाल कीन्ह कछु रानी
शोचविवस महि परै न पाऊ । रामहिं बोलि कहहिं का राऊ
उर धरि धीरज गयउ दुआरे पूछहिं सकल देखि मन मारे
समाधान मन कर सब होंका । गये जहाँ दिनकर कुल टीका
राम सुमन्तहि आवत देखा । आदर कीन्ह पिता सम लेखा
निरखि वदन कहि भूप रजाई । रघुकुल दीपहि चले लिवाई
राम कुभाँति सचिव संग जाहीं । देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं

दो० आइ दीख रघुवंशमणि नरपति निपट कुसाज ।
सहमि परेउ लखि सिंहिनिहिं मनहुं वृद्ध गज राज ।

सूखे अधर जरै सब अंगा । मनहुं दीन मणिहीन भुजंगा
सरुख समीप देखि कैकेई ॥ मानहुं मृत्यु घरी गणि देई
करुणामय रघुनाथ सुभाऊ । प्रथम दीख दुख सुना न काऊ
तदपि धीर धरि समय विचारी पूछा मधुर वचन महतारी ।
मोहिं कहु मातु तात दुख कारण करिय यत्न जेहि होइ निवारण
सुनहुं राम सब कारण एहू । राजहि तुम पर बहुत सनेहू
देन कहेउ मोहिं दुइ बरदाना । मांगेउं जो कछु मोहिं सोहाना
सो सुनि भयउ भूप उर शोचू । छांड़ि न सकहिं तुम्हार संकोचू

दो॰ सुत सनेह इत बचन उत संकट परेउ नरेश ॥
सकहु तो आयसु शीश धरि मेटहु कठिन कलेश

निधरक बैठि कहत कटु बानी। सुनत कठिनता अति अकुलानी
जीभ कमान वचन शर जाना। मनहुं भूप मृदु लक्ष्य समाना
जनु कठोर पन धरे शरीरा । सीख धनुष विद्या बर वीरा।
सब प्रसंग रघुपति हिं सुनाई। बैठी जनु तनु धरि निठुराई
मन मुसकाहिं भानु कुलभानू। राम सहज आनन्द निधानू
बोले वचन विगत सब दूषन । मृदु मंजुल जनु बाग विभूषन
सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पितु मातु वचन अनुरागी
तनय मातु पितु पोषन हारा । दुर्लभ जननी यह संसारा ॥

दो॰ मुनिगण मिलन विशेष वन सबहि भांति भल मोर
तेहि महं पितु आयसु बहुरि सम्मत जननी तोर।

भरत प्राण प्रिय पावहिं राजू ॥ विधि सब विधि मोहिं संमुख आजू
जो न जाउं बन ऐसेहु काजा ॥ प्रथम गणिय मोहिं मूढ़ समाजा
सेवहिं अरण्ड कल्प तरु त्यागी। परिहरि अमिय लेहिं विष मांगी
तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं देखि विचारि मातु मन माहीं।
अंब एक दुख मोहिं विशेषी । निपट विकल नर नायक देखी
थोरिहि बात पितहि दुख भारी। होत प्रतीति न मोहिं महतारी
राउ धीर गुण उदधि अगाधू। भा मोते कछु बड़ अपराधू ॥
ताते मोहिं न कहत कछु राऊ । मोर शपथ तोहि कहु सति भाऊ

दो॰ सहज सरल रघुवर वचन कुमति कुटिल करि जान
चले जोंक जिमि वक्र गति यद्यपि सलिल समान।

रहसी रानि राम रुख पाई ॥ बोली कपट सनेह जनाई ॥
शपथ तुम्हार भरत के आना। हेतु न दूसर मैं कछु जाना ॥
तुम अपराध योग नहिं ताता। जननी जनक बन्धु सुख दाता।

राम सत्य तुम जो कछु कहहू । तुम पितु मातु वचन रति अहहू
पितहि बुझाइ कहो बलि सोई । चौथे पन जेहि अयश न होई
तुम सम सुवन सुकृत जेहि दीन्हे उचित न तासु निरादर कीन्हे
लागहि कुमुखि वचन शुभ कैसे मगह गयादिक तीरथ जैसे ।
रामहि मातु वचन सब भाये । जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाये

दो॰ गै मूर्छा रामहिं सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह
सचिव राम आगमन कहि विनय समय सम कीन्ह

जब नृप अकनि राम पगु धारे । धरि धीरज तब नयन उघारे ॥
सचिव सँभारि राउ बैठारे ॥ चरण परत नृप राम निहारे ॥
लिये सनेह विकल उर लाई । गइ मणि फणिक बहुरि जिमि पाई
रामहिं चिते रहे नर नाहू ॥ चला विलोचन वारि प्रवाहू ॥
शोक विकल कछु कहै न पारा । हृदय लगावत बारहि बारा ॥
विधिहि मनाव राउ मन माहीं । जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं
सुमिरि महेशहि कहहिं निहोरी विनती सुनहु सदाशिव मोरी ॥
आशु तोष तुम औढर दानी । आरत हरहु दीन जन जानी ।

दो॰ तुम प्रेरक सब के हृदय ॥ सो मति रामहिं देहु ॥
वचन मोर तजि रहहिं घर परिहरि शील सनेहु ॥

अयश होउ वरु सुयश नशाऊ नरक परौं वरु सुर पुर जाऊ
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं । लोचन ओट राम जनि होहीं ।
अस मन गुनत राउ नहिं बोला पीपर पात सरस मन डोला ।
रघुपति पितहि प्रेम वश जानी । पुनि कछु कहेउ मातु अनुमानी
देश काल अवसर अनुसारी । बोले वचन विनीत विचारी ।
तात कहौं कछु करौं ढिठाई । अनुचित क्षमब जानि लरिकाई
अति लघु बात लागि दुख पावा काहे न मोहिं कहि प्रथम जनावा
देखि गुसाइँहि पूछेउँ माता । सुनि प्रसंग भो शीतल गाता ।

दो॰ मंगल समय सनेह बस सोच परिहरिय तात।
आयसु देइय हरषि हिय कहि पुलके प्रभु गात

धन्य जन्म जगतीतल तासू। पितहि प्रमोद चरित सुनि जासू
चारि पदारथ करतल ताके। प्रिय पितु मातु प्राण सम जाके
आयसु पालि जन्मफल पाई। ऐहौं बेगहि होहु रजाई॥
बिदा मातु सन आवौं मागी। चलिहौं बनहिं बहुरि पालागी
अस कहि राम गवन तब कीन्हा भूप शोक बस उत्तर न दीन्हा
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी छुवत चढ़ी जनु सब तन बीछी
सुनि भये बिकल सकल नरनारी बेलि बिटप जनु लाग दवारी
जो जहँ सुनै धुनै शिर सोई। बड़ बिषाद नहिं धीरज होई
दो॰ मुख सुखाहिं लोचन स्रवहिं शोक न हृदय समाय
मानहुं करुणारस कटक उतरा अवध बजाय।

भलि बनाइ बिधि बात बिगारी जहँ तहँ देहिं केकयिहिं गारी
इहि पापिनिहि बूझि का परेऊ छाय भवन पर पावक धरेऊ
निज कर नयन काढ़ि चह दीखा डारि सुधा विष चाहत चीखा
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी भइ रघुवंश वेणु बन आगी॥
पल्लव बैठि पेड़ इन काटा ॥ सुख महं शोक ठाट इन ठाटा।
सदा राम इहि प्राण समाना। कारण कवन कुटिलपन ठाना
सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ सब विधि अगम अगाध दुराऊ
निज प्रतिबिंब मुकुर गहि जाई जानि न जाइ नारि गति भाई
दो॰ का नहिं पावक जारि सकै का न समुद्र समाइ ॥
का न करै अबला प्रबल केहि जग काल न खाइ।

का सुनाय विधि काह सुनावा का दिखाइ चह काह दिखावा
एक कहैं भल भूप न कीन्हा ॥ वर विचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा
जो हठि भयउ सकल दुख भाजन अबला विवस ज्ञान गुण गा जन

एक धर्म पर मिति पहिचाने । नृपहिं दोष नहिं देहिं सयाने ।
शिव दधीचि हरि चन्द कहानी । एक एक संग कहहिं बखानी ।
एक भरत कर सम्मत कहहीं । एक उदास भाव सुनि रहहीं ।
कान मूंदि कर रद कर जीहा । एक कहहिं यह बात अलीहा ।
सुकृत जाइ अस कहत तुम्हारे । भरत राम कहँ प्राण पियारे ।

दो॰ चन्द चवै बरु अनल कण सुधा होइ विष तूल ।
सपनेहुं कबहुं न करहिं कछु भरत राम प्रतिकूल

एक विधातहि दूषण देहीं । सुधा दिखाइ दीन्ह विष जेहीं
खर भर नगर शोच सब काहू । दुसह दाह उर मिटा उछाहू ।
विप्र बधू कुल मान जठेरी । जे प्रिय परम केकयी केरी ।
लगीं देन सिख शील सराही । वचन बाण सम लागहिं ताही
भरत न प्रिय मोहिं राम समाना । सदा कहहु यह सब जग जाना
करहु राम पर सहज सनेहू । केहि अपराध आजु वन देहू
कबहुं न कीन्ह सवति अवरेषू । प्रीति प्रतीति जान सब देषू
कौशल्या अब कहा बिगारा । तुम जेहि लागि बज्र पुर पारा

दो॰ सीय कि पिय सँग परिहरिहि लषण कि रहिहहि धाम
भरत कि भूजब राजपुर नृप कि जियहिं विनु राम ॥

अस विचारि जिय छांडहु कोहू । शोक कलंक कोठि जनि होहू ।
भरत हि अयश देहु युवराजू । कानन कौन राम कर काजू ।
नाहिन राम राज कर भूखे । धर्म धुरीण विषय रस रूखे
गुरु गृह वसहिं राम तजि गेहू । नृप सन अस वर दूसर लेहू ॥
राम सरिस सुत कानन योगू । कहा कहहिं सुनि तुम कहँ लोगू
जौ न मानि हो कहे हमारे । नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे
जौ परिहास कीन्ह कछु होई । तौ कहि प्रगट जनावहु सोई ।
उठहु वेगि सोइ करहु उपाई । जेहि विधि शोक कलंक नशाई

छं॰ जेहिभांति शोक कलंक जाइ उपाइ करिकुलपालहू
हठि फेरु रामहिं जातवन जनि वात दूसर चालहू
जिमि भानु विनु दिन प्राण विनु तन चंद विनु जिमि यामिनी
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु विनु समुझि धौं मन भामिनी

सो॰ सखिन सिखावन दीन्ह। सुनत मधुर परिणामहित
तेइ कछु कान न कीन्ह। कुटिल प्रबोधी कूबरी॥

उतर न देइ दुसह दुख रूखी॥ मृगिहि चितव जनु बाघिनि भूखी
ब्याधि असाधि जानि तिन त्यागी चलीं कहति मति मन्द अभागी
राज करत इहि दैव विगोई॥ कीन्हेसि अस जस करै न कोई
इहि विधि विलपहिं पुर नर नारी देहिं कुचालिहि कोटिक गारी
जरहिं विषम ज्वर लेहिं उसासा। कवन राम विनु जीवन आसा
विकल वियोग प्रजा अकुलानी जिमि जल चर गण सूखत पानी
अति विषाद सब लोग लुगाई। गये मातु पहं राम गुसांई॥
सुख प्रसन्न चित चौगुण चाऊ इहै सोच जनि राखहिं राऊ॥

दो॰ नव गयंद रघुवंश मणि राज अलान समान॥
छूटि जान बन गवन सुनि उर आनंद अधिकान

रघुकुल तिलक जोरि दोउ हाथा मुदित मातु पद नायउ माथा
दीन्ह असीष लाइ उर लीन्हे। भूषण वसन निछावर कीन्हे
बार बार मुख चुंबति माता॥ नयन नेह जल पुलकित गाता
गोद राखि पुनि हृदय लगाई। श्रवत प्रेम रस पयद सुहाई।
प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई। रंक धनद पदवी जनु पाई॥
सादर सुन्दर बदन निहारी॥ । बोली मधुर वचन महतारी॥
कहहु तात जननी बलिहारी। कबहि लगन मुद मंगल कारी
सुकृत शील सुख सीव सुहाई जन्म लाभ लहि अवध अघाई

दो॰ जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत इहिभांति

जिमि चातकि चातिक तृषित वृष्टि सरद ऋतु स्वाति

तात जाँउ बलि वेगि अन्हाहू। जो मन भाव मधुर कछु खाहू
पितु समीप तब जायहु भैया। भइ बड़ि बार जाइ बलि मैया
मातु वचन सुनि अति अनुकूला। जनु सनेह सुर तरु के फूला
सुख मकरन्द भरे श्री मूला॥ निरखि राम मन भंवर न भूला
धर्म्म धुरीण धर्म्म गति जानी। कहेउ मातु सन अति मृदु वानी
पिता दीन्ह मोहिं कानन राजू। जहं सब भांति मोर बड़ काजू
आयसु देहु मुदित मन माता। जेहि मुद मंगल कानन जाता
जनि सनेह बस डरपसि भोरे। आनंद मातु अनुग्रह तोरे।

दो॰ वर्ष चारि दस विपिन बसि करि पितु वचन प्रमान
आय पाय पुनि देखिहौं मन जनि करसि मलान

वचन विनीत मधुर रघुवर के। सर सम लाग मातु उर करके।
सहमि सूखि सुनि सीतल बानी जिमि जवास पर पावस पानी
कहि न जाय कछु हृदय विषादू। जनु सहमे करि केहरि नादू॥
नयन सलिल तन थर थर कांपी मांजा मनहुं मीन कहं व्यापी
धरि धीरज सुत बदन निहारी॥ गद्गद वचन कहति महतारी
तात पितहि तुम प्राण पियारे। देखि मुदित नित चरित तुम्हारे
राज देन कहं सुभ दिन साधा। कहेउ जान बन केहि अपराधा
तात सुनावहु मोहिं निदानू॥ को दिनकर कुल भयउ कृशानू

दो॰ निरखि राम रुख सचिव सुत कारण कहेउ बुझाइ
सुनि प्रसंग रहि मूक जिमि दसा वरणि नहिं जाइ

राखि न सकइ न कहि सक जाहू। दुहू भांति उर दारुण दाहू।
लिखित सुधा कर लिखि गा राहू विधि गति वाम सदा सब काहू
धर्म्म सनेह उभय मति घेरी॥ भइ गति सांप छछूंदर केरी॥
राखौं सुतहि होइ अब रोधू। धर्म्म जाइ अरु बन्धु विरोधू

कहौं जान बन तौ बड़ि हानी। संकट सोच विकलभइ रानी
बहुरि समुझि तियधर्म सयानी राम भरत दोउ सुत सम जानी।
सरल सुभाव राम महतारी ॥। बोली वचन धीर धरि भारी॥
तात जाउं बलि कीन्हेउ नीका। पितु आयसु सब धर्मक टीका
दो॰ राज देन कहे दीन्ह बन मोहिं न सोच दुख लेश
तुम बिन भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेश॥
जो केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जाइ बलि माता
जो पितु मातु कहे बन जाना। तौ कानन शत अवध समाना
पितु बन देव मातु वन देवी ॥ खग मृग चरण सरोरुह सेवी
अन्तहु उचित नृपहि वनवासू वय विलोकि हिय होत हिरासू
वड भागी वन अवध अभागी जो रघुवंश तिलक तुम त्यागी
जो सुत कहौं संग मोहिं लेहू। तुम्हरे हृदय होइ सन्देहू॥
पुत्र परम प्रिय तुम सब हीके। प्राण प्राण के जीवन जी के॥
ते तुम कहहु मातु बन जाऊं। मैं सुनि वचन बैठि पछिताऊं
दो॰ यह विचारि नहिं करउं हठ झूठ सनेह बढाइ॥
मानि मातु के नात बलि सुरति विसरि नहिं जाइ
देव पितर सब तुमहिं गुसाईं। राखहु पलक नयन की नाईं
अवधि अम्बु प्रिय परिजन मीना तुम करुणा कर धर्म धुरीना
अस विचारि सोइ करहु उपाई सबहि जिअत जेहिं भेटहु आई
जाहु सुखेन वनहिं बलि जाऊं। करि अनाथ जन परिजन गाऊं
सब कर आजु सुकृत फल बीता भये कराल काल विपरीता।
बहु विधि विलपि चरण लपटानी परम अभागिनि आपुहि जानी
दारुण दुसह दाह उर व्यापा। वरणि न जाइ विलाप कलापा।
राम उठाय मातु उर लावा ॥। कहि मृदु वचन बहुत समुझावा
दो॰ समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाय।

जाइ सासु पग कमल युग वंदि बैठि शिर नाइ॥
दीन्ह अशीष सासु मृदु वानी। अति सुकुमारि देखि अकुलानी।
बैठि नमित मुख शोचति सीता रूप राशि पति प्रेम पुनीता।
चलन चहत वन जीवन नाथा कवन सुकृत सन होइहि साथा।
की तनु प्राण कि केवल प्राना विधि करतब कछु जान न जाना।
चारु चरण नख लेखति धरणी नूपुर मुखर मधुर कवि वरणी।
मनहुं प्रेम वस विनती करहीं। हमहिं सीय पद जनि परिहरहीं।
मंजु विलोचन मोचति वारी। बोली देखि राम महतारी॥
तात सुनहुं सिय अति सुकुमारी सासु ससुर परिजनहिं पियारी।
दो० पिता जनक भूपाल मणि ससुर भानु कुल भान।
पति रविकुल कैरव विपिन विधु गुण रूप निधान।
मैं पुनि पुत्र वधू प्रिय पाई॥ रूप राशि गुण शील सुहाई॥
नयन पुतरि इव प्रीति बढ़ाई। राखउं प्राण जानकिहि लाई।
कल्पवेलि जिमि बहु विधि लाली सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली।
फूलत फलत भये विधि वामू। जानि न जाइ काह परिणामू।
पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा। सिय न दीन पगु अवनि कठोरा।
जिवन मूरि जिमि जुगवत रहेऊं दीप बाति नहिं टारन कहेऊं।
सो सिय चहति चलन बन साथा आयसु कहा होइ रघुनाथा।
चन्द्र किरण रस रसिक चकोरी। रवि रुख नयन सकै किमि जोरी।
दो० करि केहरि निशिचर चरहिं दुष्ट जंतु बन भूरि।
विष वाटिका कि सोह सुत सुभग सजीवन मूरि।
वन हित कोल किरात किशोरी रची विरंचि विषय रस भोरी।
पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ तिनहिं कलेश न कानन काऊ।
कै तापस तिय कानन योगू॥ जिन तप हेतु तजा सब भोगू।
सिय वनबसिहि तातकेहि भांती चित्र लिखित कपि देखि डराती

सुरसर सुभग बनज बन चारी। डाबर योग कि हंस कुमारी॥
अस बिचारि जस आयसु होई। मैं सिख देउं जानकिहि सोई॥
जो सिय भवन रहै कह अंबा। मो कहं होइ प्राण अवलंबा॥
सुनि रघुबीर मातु प्रिय बानी। शील सनेह सुधा जनु सानी॥

दो० कहि प्रिय बचन बिबेक मय कीन्ह मातु परितोष।
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगट बिपिन गुण दोष॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं। बोले समय समुझि मन माहीं॥
राजकुमारि सिखावन सुनहू। आन भांति जिय जनु कछु गुनहू॥
आपन मोर नीक जो चहहू। बचन हमार मानि घर रहहू॥
आयसु मोर सासु सेवकाई। सब बिधि भामिनि भवन भलाई॥
इहिते अधिक धर्म नहिं दूजा। सादर सासु ससुर पद पूजा॥
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी। होइहि प्रेम बिकल मति भोरी॥
तब तब तुम कहि कथा पुराणी। सुन्दरि समुझायहु मृदु बाणी॥
कहौं सुभाव सपथ सत मोही। सुमुखि मातु हित राखौं तोही॥

दो० गुरु श्रुति सम्मत धर्म फल पाइय बिनहि कलेश।
हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेश॥

मैं पुनि करि प्रमाण पितु बानी। बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी॥
दिवस जात नहिं लागिहि बारा। सुन्दरि सिखवन सुनहु हमारा॥
जो हठ करहु प्रेम बस बामा। तो तुम दुख पाउब परिणामा॥
कानन कठिन भयंकर भारी। घोर घाम हिम बारि बयारी॥
कुश कंटक मग कंकर नाना। चलब पयादेहि बिनु पदत्राना॥
चरण कमल मृदु मंजु तुम्हारे। मारग अगम भूमिधर भारे॥
कन्दर खोह नदी नद नारे॥ अगम अगाध न जाहिं निहारे॥
भालु बाघ बृक केहरि नागा। करहिं नाद सुनि धीरज भागा॥

दो० भूमि शयन बल्कल बसन असन कंद फल मूल

सेकि सदा सब दिन मिलहिं समय समय अनुकूल

नर अहार रजनीचर करहीं कपट भेष विधि कोटिन धरहीं ।
लागै अति पहार कै पानी । विपिन विपति नहिं जात बखानी
व्याल कराल विहग बन घोरा । निशिचर निकर नारि नर चोरा
डरपहिं धीर गहन सुधि आये मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये
हंस गवनि तुम नहिं बन योगू सुनि अपयश देइहिं मोहि लोगू
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली जियइ कि लवन पयोधि मराली
नव रसाल बन विहरण शीला सोह कि कोकिल विपिन करीला
रहहु भवन अस हृदय विचारी चन्द्रबदनि दुख कानन भारी ॥

दो० सहज सुहृद गुरु स्वामि सिख जो न करै हित मानि
सो पछताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ।

सुनि मृदु वचन मनोहर पीके लोचन नलिन भरे जल सीके ॥
शीतल सिख दाहक भइ कैसे । चकइहि शरद चांदनी जैसे ॥
उतर न आव विकल वैदेही ॥ तजन चहत मोहिं परम सनेही
बरबस रोकि विलोचन बारी ॥ धरि धीरज उर अवनि कुमारी
लागि सासु पद कह कर जोरी । क्षमव देवि बड़ अविनय मोरी
दीन्ह प्राण पति मोहिं सिख सोई जेहि विधि मोर परम हित होई
मैं पुनि समुझि दीख मन माहीं । पिय वियोग सम दुख जग नाहीं

दो० प्राणनाथ करुणायतन सुन्दर सुखद सुजान ॥
तुम बिनु रघुकुल कुमुद विधु सुरपुर नरक समान

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवार सुहृद समुदाई
सासु ससुर गुरु सुजन सुहाई । सुत सुन्दर सुशील सुखदाई ॥
जहं लगि नाथ नेह अरु नाते ॥ पिय बिनु तियहि तरणिते ताते
तन धन धाम धरणि पुर राजू ॥ पति विहीन सब शोक समाजू ।
भोग रोग सम भूषण भारू ॥ यम जातना सरस संसारू ॥

प्राण नाथ तुम बिनु जग माहीं। मो कहं सुखद कतहुं कोउ नाहीं॥
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसहि नाथ पुरुष बिनु नारी॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे। शरद विमल विधु वदन निहारे॥
दो० खगमृग परिजन नगर बन बल्कल विमल दुकूल
नाथ साथ सुर सदन सम पर्ण शाल सुख मूल॥
बन देवी बन देव उदारा॥*॥ करिहैं सासु ससुर सम सारा॥
कुश किशलय साथरी सुहाई। प्रभु संग मंजु मनोज तुराई॥
कन्द मूल फल अमिय अहारू। अवध सौंध सुख सरस पहारू॥
क्षण क्षण प्रभु पद कमल विलोकी रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी॥
बन दुख नाथ कहेउ बहुतेरे। भय विषाद परिताप घनेरे॥
प्रभु वियोग लवलेश समाना। सब मिलि होहिं न कृपा निधाना॥
अस जिय जानि सुजान शिरोमनि लेइय संग मोहि छांडिय जनि॥
विनती बहुत करौं का स्वामी। करुणामय उर अन्तर यामी॥
दो० राखिय अवध जो अवधि लगि रहत न जानिये प्रान
दीन बन्धु सुन्दर सुखद। शील सनेह निधान॥
मोहिं मग चलत न होइहि हारी क्षण क्षण चरण सरोज निहारी॥
सबहि भांति पिय सेवा करिहौं मारग जनित सकल श्रम हरिहौं॥
पाद पखारि बैठि तरु छाहीं॥ करिहौं वायु मुदित मन माहीं॥
श्रम कण सहित श्याम तनु देखे का दुख समय प्राण पति पेखे॥
सम महि तृण तरु पल्लव डासी। पाय पलोटिहि सब निशि दासी॥
बार बार मृदु मूरति जोही॥ लागिहि ताप बयारि न मोही॥
को प्रभु संग मोहिं चितवन हारा सिंह वधुहि जिमि शशक सियारा॥
मैं सुकुमारि नाथ बन योगू॥ तुमहिं उचित तप मो कहं भोगू॥
दो० ऐसहु वचन कठोर सुनि जो न हृदय बिलगान
तो प्रभु विषम वियोग दुख सहिहैं पामर प्रान॥

अस कहि सीय बिकल भइ भारी। बचन बियोग न सकी सँभारी॥
देखि दसा रघुपति जिय जाना। हठि राखे राखिहि नहिं प्राना॥
कहेउ कृपालु भानुकुलनाथा। परिहरि सोच चलहु बन साथा॥
नहिं बिषाद कर अवसर आजू। बेगि करहु बन गवन समाजू॥
कहि प्रिय बचन प्रियहि समुझाई। लगे मातु पद आसिष पाई॥
बेगि प्रजा दुख मेटब आई। जननी निठुर बिसरि जनि जाई॥
फिरिहि दसा बिधि बहुरि कि मोरी। देखिहौं नैन मनोहर जोरी॥
सुदिन सुघरी तात कब होई। जननी जियत बदन बिधु जोई॥

दो० बहुरि बच्छ कहि लाल कहि रघुपति रघुबर तात।
कबहुँ बुलाइ लगाइ उर हरषि निरखिहौं गात॥

लखि सनेह कातरि महतारी। बचन न आव बिकल भइ भारी॥
राम प्रबोध कीन्ह बिधि नाना। समय सनेह न जाइ बखाना॥
तब जानकी सासु पग लागी। सुनिय माय मैं परम अभागी॥
सेवा समय दैव बन दीन्हा। मोर मनोरथ सुफल न कीन्हा॥
तजब छोभ जनि छाड़िअ छोहू। करम कठिन कछु दोष न मोहू॥
सुनि सिय बचन सासु अकुलानी। दसा कवन बिधि कहौं बखानी॥
बारहिं बार लाइ उर लीन्ही। धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही॥
अचल होउ अहिवात तुम्हारा। जब लगि गंग जमुन जल धारा॥

दो० सीतहि सासु असीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार।
चली नाइ पद पदुम सिर अति हित बारहिं बार॥

समाचार जब लछिमन पाये। ब्याकुल बिलखि बदन उठि धाये॥
कंप पुलक तनु नयन सनीरा। गहे चरन अति प्रेम अधीरा॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े। मीन दीन जनु जल तें काढ़े॥
सोच हृदय बिधि का होनिहारा। सब सुख सुकृत सिरान हमारा॥
मो कहं काह कहब रघुनाथा। रखिहैं भवन कि लेहैं साथा॥

राम बिलोकि बन्धु कर जोरे। देह गेह सब सन तृण तोरे॥
बोले बचन राम नय नागर॥ शील सनेह सरल सुख सागर
तात प्रेम बस जनि कदराहू। समुझि हृदय परिणाम उछाहू
दो॰ मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिरधरि करहिं सुभाय
लहेउ लाभ तिन जन्म के नतरु जन्म जग जाय॥
अस जिय जानि सुनहु सिख भाई करौ मातु पितु पद सेवकाई
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं॥ राउ वृद्ध मम दुख मन माहीं
मैं बन जाउं तुमहिं लै साथा॥ होइहि सब बिधि अवध अनाथा
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू॥ सब कह परै दुसह दुख भारू
रहहु करहु सबकर परितोषू। नतरु तात होइहि बड़ दोषू॥
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवशि नर्क अधिकारी
रहहु तात अस नीति बिचारी। सुनत लषण भये व्याकुल भारी
सियरे बचन सूखि गे कैसे॥ परसत तुहिन तामरस जैसे॥
दो॰ उतर न आवत प्रेम बस गहे चरण अकुलाइ।
नाथ दास मैं स्वामि तुम तजहु तौ कहा बसाइ
दीन्ह मोहिं सिख नीक गुसांई। लागत अगम अपनि कदराई
नर बर धीर धर्म धुर धारी॥ निगम नीति के ते अधिकारी
मैं शिशु प्रभु सनेह प्रतिपाला मन्दर मेरु कि लेइ मराला॥
गुरु पितु मातु न जानौं काहू। कहौं सुभाव नाथ पतिआहू
जहं लगि जगत सनेह सगाई प्रीति प्रतीति निगम निज गाई
मोरे सबै एक तुम स्वामी॥ दीन बन्धु उर अन्तर यामी॥
धर्म नीति उपदेशिय ताही॥ कीरति भूति सुगति प्रिय जाही
मन क्रम बचन चरणरत होई। कृपा सिन्धु परिहरिय कि सोई
दो॰ करुणा सिन्धु सुबन्धु के सुनि मृदु बचन बिनीत
समुझाये उर लाइ प्रभु जानि सनेह सभीत॥

मांगहु बिदा मातु सन जाई। आवहु बेगि चलहु बन भाई॥
मुदित भये सुनि रघुबर बानी। भयउ लाभ बड़ मिटी गलानी॥
हर्षित हृदय मातु पहँ आये॥ मनहुं अंध फिरि लोचन पाये॥
जाइ जननि पद नायउ माथा। मन रघुनन्दन जानकि साथा॥
पूछेउ मातु मलिन मन देखी। लक्षण कहेउ सब कथा बिशेषी॥
गई सहमि सुनि बचन कठोरा। मृगी देखि जनु दव चहुं ओरा॥
लक्षण लखेउ भा अनरथ आजू। येहि सनेह बस करब अकाजू॥
मांगत बिदा सभय सकुचाहीं। जाय संग बिधि कहहिं कि नाहीं॥

सो॰ समुझि सुमित्रा राम सिय रूप सुशील सुभाव॥
नृप सनेह लखि धुनेउ सिर पापिनि कीन्ह कुदाव॥

धीरज धरेउ कुअवसर जानी। सहज सुहृद बोली मृदु बानी॥
तात तुम्हार मातु बैदेही॥ पिता राम सब भांति सनेही॥
अवध तहां जहं राम निवासू। तहां दिवस जहां भानु प्रकासू॥
जो पै राम सीय बन जाहीं॥ अवध तुम्हार काज कछु नाहीं॥
गुरु पितु मातु बन्धु सुर साईं॥ सेइय सकल प्राण की नाईं॥
राम प्राण प्रिय जीवन जी के॥ स्वारथ रहित सखा सब ही के॥
पूजनीय प्रिय परम जहां ते॥ मानहि सकल राम के नाते॥
अस जिय जानि संग बन जाहू। लेहु तात जग जीवन लाहू॥

दो॰ भूरि भाग भाजन भयेउ मोहि समेत बलि जाउं॥
जो तुम्हरे मन छाड़ि छल कीन्ह राम पद ठाउं॥

पुत्रवती युवती जग सोई॥ रघुवर भक्त जासु सुत होई॥
नतरु बांझि भलि बादि बियानी। राम बिमुख सुत ते हित हानी॥
तुम्हरेहि भाग राम बन जाहीं। दूसर हेतु तात कछु नाहीं॥
सकल सुकृत कर फल सुत येहू। राम सीय पद सहज सनेहू॥
राग रोष इरषा मद मोहू॥ जनि सपनेहुं इनके बस होहू॥

सकल प्रकार विकार विहाई मनक्रम वचन करहु सेवकाई ।
तुम कहु वन सब भांति सुपासू संग पितु मातु राम सिय जासू
जेहि न राम वन लहहिं कलेसू सुत सोइ करेहु मोर उपदेसू

छं० उपदेश यहि जेहि तात तुमते राम सिय सुख पावहीं
पितु मातु प्रिय परिवार पुरसुख सुरति वन विसरावहीं
तुलसी सुतहि सिख देइ आयसु देइ पुनि आशिष दई
रति होउ अविरल अमल सिय रघुवीर पद नित नित नई

सो० मातु चरण शिर नाइ । चले तुरत शंकित हिये ॥
वा गुरु विषम तुराइ । मनहुं भाग मृग भाग वस

गये लषण जहं जानकि नाथा भे मन मुदित पाइ प्रिय साथा ।
वंदि राम सिय चरण सुहाये । चले संग नृप मन्दिर आये ॥
कहहि परस्पर पुर नर नारी ॥ भलि वनाइ विधि वात विगारी
तनु कृश मन दुख वदन मलीना विकल मनहुं माखी मधु छीना
कर मींजहिं शिर धुनि पछताहीं जनु विनु पंख विहंग अकुलाहीं
भइ वड़ि भीर भूप दर वारा ॥ वरणि न जाइ विषाद अपारा
सचिव उठाइ राउ बैठारे ॥॥ कहि प्रिय वचन राम पगुधारे
सिय समेत दोउ तनय निहारी व्याकुल भये भूमि पति भारी ।

दो० सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ
वारहिं वार सनेह वस ॥ राउ लिये उर लाइ ॥ ॥

सकै न वोलि विकल नर नाहू । शोक विवस उर दारुण दाहू
नाइ शीश पद अति अनुरागा उठि रघुनाथ विदा तब मांगा
पितु अशीष आयसु मोहि दीजे हर्ष समय विस्मय कत कीजे
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू ॥ यश जग जाइ होइ अपवादू
सुनि सनेह वस उठि नर नाहू । बैठारे रघुपति गहि वाहू ॥
सुनहु तात तुम कहँ मुनि कहहीं राम चराचर नायक अहहीं

शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी ईश देइ फल हृदय विचारी।
करै जो कर्म पाव फल सोई॥ निगम नीति अस कह सब कोई

दो॰ और करै अपराध कोइ और पाव फल भोग
अति विचित्र भगवन्त गति को जग जानै योग

रखु राम लषण हित लागी॥ बहुत उपाय कीन्ह छल त्यागी
लखे राम रुख रहत न जाने॥ धर्म धुरंधर धीर सयाने
तब प्रभु सीय लाइ उर लीनी। अति हित बहुत भांति सिख दीनी
कहि बन के दुख दुसह सुनाये सासु ससुर पितु सुख समुझाये
सिय मन राम चरण अनुरागा घर न सुगम बन अगमन लागा
औरो सबहि सीय समुझाई। कहि कहि विपिन विपति अधिकाई
सचिव नारि गुरु नारि सयानी। सहित सनेह कहहिं मृदु बानी
तुम कहं तौ न दीन्ह बन वासू। करहु जो कहहि ससुर गुरु सासू

दो॰ सिख शीतल हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सुहानि
शरद चन्द्र चांदनि लगत जनु चकई अकुलानि।

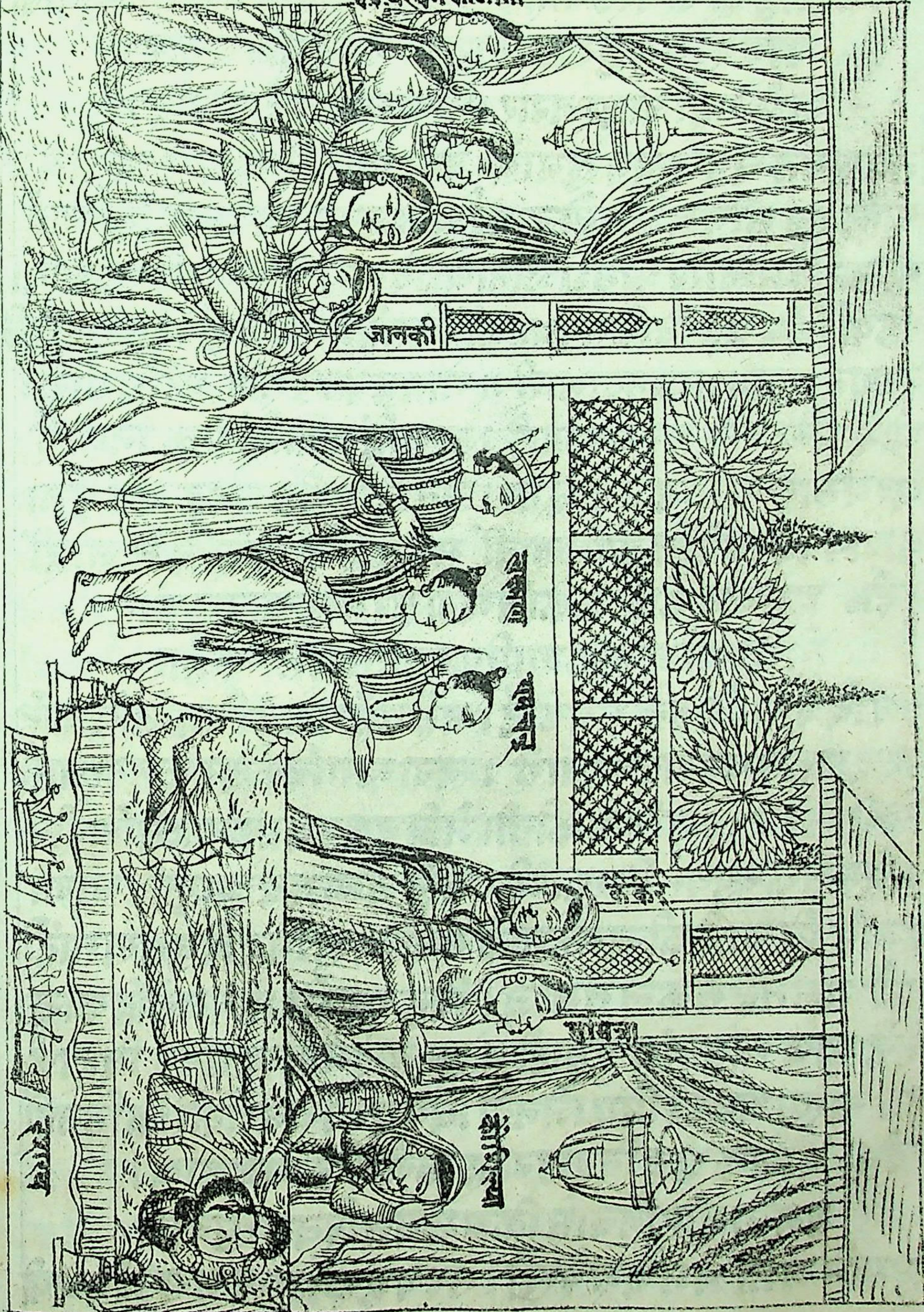
सीय सकुच वस उतर न देई॥ सो सुनि तमकि उठी कैकेई॥
मुनि पट भूषण भाजन आनी आगे धरि बोली मृदु बानी॥
नृपहि प्राण प्रिय तुम रघुबीरा। शील सनेह न छाड़हि भीरा।
सुकृत सुयश परलोक नसाऊ तुमहि जान बन कहहि न राऊ
अस विचारि सोइ करो जु भावा राम जननि सिख सुनि सुख पावा
भूपहि वचन बाण सम लागे। करहि न प्राण पयान अभागे
शोक विकल मूर्छित नर नाहू। कहा करिय कछु सूझ न काहू
राम तुरत मुनि वेष बनाई॥ चले जनक जननी सिर नाई॥

दो॰ सजि बन साज समाज प्रभु वनिता बन्धु समेत॥
वंदि विप्र गुरु चरण प्रभु चले करि सबहिं अचेत

निकसि वशिष्ठ द्वार भये ठाढ़े। देखे लोग विरह दव डाढ़े॥

कहि प्रिय वचन सबहि समुझाये विप्रवृन्द रघुबीर बुलाये
गुरु सन कहि वर शासन दीन्हे । आदर दान विनय बश कीन्हे
याचक दान मान सन्तोषे ॥ मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
दासी दास बुलाइ बहोरी ॥ गुरुहि सौंपि बोले कर जोरी
सब कर सार संभार गुसाईं । करब जनक जननी की नाईं
बारहि बार जोरि युग पानी । कहत राम सब सन मृदु बानी
सोइ सब भांति मोर हितकारी । जेहि तें रहैं भुआल सुखारी
दो० मातु सकल मोरे विरह जेहि न होहिं दुखदीन
सो उपाय तुम करब सब पुरजन परम प्रवीन ।
इहि विधि राम सबहि समुझावा गुरु पद पद्म हरषि सिर नावा
गणपति गौर गिरीश मनाई चले असीस पाइ रघुराई ॥
राम चलत अति भयो विषादू । सुनि न जाइ पुर आरत नादू ।
कुशगुण लंक अवध अति शोकू हर्ष विषाद विवश सुरलोकू
गै मूर्छा तब भूपति जागे ॥। बोलि सुमन्त कहन अस लागे
राम चले बन प्राण न जाहीं । केहि सुख लागि रहे तन माहीं
इहि ते कवन व्यथा बलवाना जो दुख पाइ तजहिं तन प्राना
पुनि धीर धीर कहहिं नरनाहू । लै रथ संग सखा तुम जाहू
दो० सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि
रथ चढ़ाइ दिखराइ वन फिरहु गये दिन चारि ।
जौ नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई सत्यसिन्धु दृढ़व्रत रघुराई ।
तौ तुम विनय करहु कर जोरी । फेरिय प्रभु मिथिलेश किशोरी
जब सिय कानन देखि डेराई । कहेउ मोर सिख अवसर पाई
सासु ससुर अस कहेउ संदेसू । पुत्रि फिरिय वन बहुत कलेसू
पितु गृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी रहेउ जहां रुचि होइ तुम्हारी
इहि विधि करेहु उपाय कदंबा । फिरइ तो होइ प्राण अवलंबा

कैकेई के मुख से श्री रामचन्द्र के १४ वर्ष वन जाने का वरदान सुन कर दशरथ को अति विलाप करना और मूर्छित होना और श्री रामचन्द्र लक्ष्मण जानकी जी को दशरथ के निकट आकर कैकेई की आज्ञा से मुनि वेष धर वन को जाना



नाहिं तौ मोर मरण परिणामा कछु न बसाइ भयो बिधि बामा
अस कहि मूर्छि परेउ महि राऊ राम लषण सिय आनि दिखाऊ
दो॰ पाय रजायसु नाइ शिर रथ अति बेगि बनाइ।
गये जहां बाहर नगर। सीय सहित दोउ भाइ।
तब सुमंत नृप बचन सुनाये। करि बिनती रथ राम चढ़ाये।
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई चले हृदय अवधहि शिर नाई
चलत राम लखि अवध अनाथा। बिकल लोग लागे सब साथा
कृपा सिंधु बहु बिधि समुझावहिं फिरहिं प्रेम बश पुनि फिरि आवहिं
लागत अवध भयावनि भारी ।। मानहु कालराति अंधियारी।
घोर जन्तु सम पुर नर नारी । डरपहिं एकहिं एक निहारी
घर मसान परिजन जनु भूता । सुत हित मीत मनहु यम दूता
बागन बिटप बेलि कुंभिलाहीं सरित सरोवर देखि न जाहीं
दो॰ हय गय कोटिक केलिमृग पुर पशु चातक मोर
पिक रथांग शुक सारिका सारस हंस चकोर।
राम वियोग विकल सब ठाढ़े। जहं तहं मनहुं चित्र लिखि काढ़े
नगर सफल बन गहवर भारी । खग मृग बिकल सकल नर नारी
बिधि कैकइ किरातिनी कीनी। जेहि दव दुसह दशहु दिशि दीनी
सहि न सके रघुवर बिरहागी । चले लोग सब व्याकुल भागी
सबहिं बिचारि कीन्ह मन माहीं राम लषण सिय बिनु सुख नाहीं
जहाँ राम तहं सकल समाजू। बिनु रघुवीर अवध केहि काजू
चले साथ अस मंत्र दृढ़ाई ।। सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई
राम चरण पंकज प्रिय जिनहीं विषय भोग वश करें कि तिनहीं
दो॰ बालक वृद्ध बिहाइ गृह लगे लोग सब साथ।
तमसा तीर निवास किय प्रथम दिवस रघुनाथ
रघुपति प्रजा प्रेम बश देखी। सदय हृदय दुख भयउ विशेषी

करुणा मय रघुनाथ गुसाईं। वेगि पाइ यह पीर पराई॥
कहि सप्रेम मृदु वचन सुहाये बहु विधि राम लोग समुझाए
किए धर्म उपदेश घनेरे॥ लोग प्रेम बस फिरहिं न फेरे।
शील सनेह छांड़ि नहिं जाई। असमंजस वस भे रघुराई
लोग शोक श्रम वस गये सोई कछुक देवमाया मति मोई
जबहि यामयुग यामिनि बीती राम सचिव सन कहेउ सप्रीती
खोज मारि रथ हांकहु ताता आन उपाय बनहि नहिं बाता

दो० राम लषण सिय यान चढ़ि शंभु चरण शिर नाइ
सचिव चलायेउ तुरत रथ इत उत खोज दुराइ॥

जागे सकल लोग भये भोरू।गये रघुवीर भयो अति शोरू
रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं राम राम कहि चहुँ दिशि धावहिं
मनहु वारि निधि बूड़ जहाजू॥ भयउ विकल जनु वणिक समाजू
एकहि एक देहि उपदेशू॥। तजेउ राम हम जानि कलेशू
निन्दहिं आपु सराहहिं मीना। धिग जीवन रघुवीर विहीना
जो पै प्रिय वियोग विधि कीन्हा तौ कस मरण न मांगे दीन्हा
इहि विधि करत प्रलाप कलापा आये अवध भरे परितापा
विषम वियोग न जाइ बखाना अवधि आस राखहिं सब प्राना

दो० राम दरश हित नेम व्रत। लगे करन नर नारि॥
मनहु कोक कोकी कमल दीन विहीन तमारि॥

सीता सचिव सहित दोउ भाई। शृंगबेर पुर पहुंचे जाई॥
उतरे राम देवसरि देखी॥। कीन्ह दण्डवत हरष विशेषी।
लषण सचिव सिय कीन्ह प्रणामा सबहि सहित सुख पायेउ रामा
गंग सकल मुद मंगल मूला। सब सुख करनि हरणि सब शूला
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा राम विलोकत गंग तरंगा॥
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई विबुध नदी महिमा अधिकाई

मज्जन कीन्ह पंथ श्रम गयेऊ। शुचि जल पियत मुदित मन भयेऊ॥
सुमिरत जाहिं मिटहिं भव भारू। तेहि श्रम यह लौकिक व्यवहारू॥

दो० शुद्ध सच्चिदानन्द मय। राम भानु कुल केतु।
चरित करत नर अनुहरत संसृत सागर सेतु॥

यह सुधि गुह निषाद जब पाई। मुदित लिये प्रिय बन्धु बुलाई॥
लै फल मूल भेंट भरि भारा। मिलन चल्यो हिय हर्ष अपारा॥
करि दण्डवत भेंट धरि आगे। प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागे॥
सहज सनेह विवस रघुराई। पूछेउ कुशल निकट बैठाई॥
नाथ कुशल पद पंकज देखे। भयेउ भाग्य भाजन जन लेखे॥
देव धरणि धन धाम तुम्हारा। मैं जन नीच सहित परिवारा॥
कृपा करिय पुर धारिय पाऊ। थापिय जन सब लोग सिहाऊ॥
कहेउ सत्य सब सखा सुजाना। मोहि दीन्ह पितु आयसु आना॥

दो० वर्ष चारि दश वास वन। मुनि व्रत भेष अहार।
ग्राम वास नहि उचित सुनि गुहहि भयो दुख भार॥

राम लषण सिय रूप निहारी॥ कहहिं सप्रेम नगर नर नारी॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन पठये वन बालक ऐसे॥
एक कहहिं भूपति भल कीन्हा। लोचन लाहु हमहि जिन दीन्हा॥
तब निषाद पति उर अनुमाना। तरु शिंशिपा मनोहर जाना॥
लै रघुनाथहिं ठौर बतावा॥। कहेउ राम सब भांति सुहावा॥
पुर जन करि जुहारि गृह आये। रघुवर संध्या करन सिधाये॥
गुह सँवारि साथरी बनाई॥ कुश किसलय मृदु परम सुहाई॥
शुचि फल मूल मृदुल मधु जानी। दोना भरि भरि राखेसि आनी॥

दो० सिय सुमंत भ्राता सहित कन्द मूल फल खाइ॥
शयन कीन्ह रघुवंश मणि पाय पलोटत भाइ॥

उठे लषण प्रभु सोवत जानी। कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी॥

कछुक दूरि सजि बाण शरासन। जागन लगे बैठि बीरासन॥
गुह बुलाइ पाहरू प्रतीती॥। ठाँव ठाँव राखे अति प्रीती
आपु लषण पहँ बैठेउ जाई। कटि भाथी शर चाप चढ़ाई
सोवत प्रभुहि निहार निषादू। भयउ प्रेम वस हृदय विषादू
तनु पुलकित लोचन जल वहई वचन सप्रेम लषण सन कहई
भूपति भवन सु सहज सुहावा। सुरपति सदन न पटतर आवा
मणि मय रचित चारु चौवारे। जनु रति पति निज हाथ संवारे
दो॰ सुचि सु विचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुवास
पलंग मंजु मणि दीप जहं सब विधि सकल सुपास
विविध वसन उपधान तुराई। क्षीरफेन मृदु विशद सुहाई।
तहँ सिय राम शयन निशि करहीं निज छवि रति मनोज मद हरहीं
ते सिय राम साथरी सोये॥। श्रमित वसन विन जाहिं न जोये
मातु पिता परिजन पुर वासी॥ सखा सुशील दास अरु दासी
जुगवहिं जिनहिं प्राण की नाईं महि सोवत सो राम गुसाईं
पिता जनक जग विदित प्रभाऊ ससुर सुरेश सखा रघुराऊ॥
राम चन्द्र पति सो वैदेही॥ महि सोवत विधि वाम न केही
सिय रघुवीर कि कानन योगू। कर्म प्रधान सत्य कह लोगू
दो॰ कैकयि नन्दिनि मंद मति कठिन कुटिल पन कीन्ह
जे रघुनन्दन जानकिहि सुख अवसर दुख दीन्ह।
भइ दिन कर कुल विटप कुठारी कुमति कीन्ह सब विश्व दुखारी
राम सीय महि शयन निहारी। भयउ विषाद निषादहि भारी
बोले लषण मधुर मृदु बानी। ज्ञान विराग भक्ति रस सानी॥
कोउ न काहु दुख सुख कर दाता निज कृत कर्म भोग सब भ्राता
योग वियोग भोग भल मन्दा। हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा
जनम मरण जहँ लगि जग जालू सम्पति विपति कर्म अरु कालू

धरणि धाम धन पुर परिवारू। स्वर्ग नर्क जहँ लगि व्यवहारू।
देखिय सुनिय गुनिय मन माहीं मोह मूल परमारथ नाहीं ॥ ॥
दो० सपने होइ भिखारि न्रिप रंक नाकपति होइ ॥
जागे लाभ न हानि कछु तिमि प्रपंच जिय जोइ
अस विचारि नहिं कीजिय रोसू बादि काहु नहिं दीजिय दोषू
मोह निशा सब सोवनि हारा। देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा ॥
इहि जग यामिनि जागहिं योगी परमारथ परि पंच वियोगी।
जानिय तबहिं जीव जग जागा जब सब विषय विलास विरागा
होइ विवेक मोह भ्रम भागा। तब रघुवीर चरण अनुरागा ॥
सखा परम परमारथ एहू ॥ मन क्रम वचन राम पद नेहू।
राम ब्रह्म परमारथ रूपा ॥ ॥ अविगत अलख अनादि अनूपा
दो० भक्त भूमि भूसुर सुरभि । सुर हित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटें जग जाल।
सखा समुझि अस परिहरि मोहू सिय रघुवीर चरण रत होहू ॥
कहत राम गुण भा भिनुसारा। जागे जग मंगल दातारा ॥
सकल शौच करि राम अन्हाये शुचि सुजान वट क्षीर मगाये
अनुज सहित शिर जटा बनाये देखि सुमंत नयन जल छाये।
हृदय दाह अति वदन मलीना कह कर जोरि वचन अति दीना
नाथ कहेउ अस कोशलनाथा लै रथ जाहु राम के साथा ॥ ॥
बन दिखाइ सुरसरि अन्हवाई। आनेहु वेगि फेरि दोउ भाई।
लखण राम सिय आनेहु फेरी संशय सकल सकोच निबेरी
दो० न्रिप अस कहेउ गुसांइ जस कहिय करौं बलि सोइ
करि विनती पायन परेउ दीन बाल जिमि रोइ।
तात कृपा करि कीजिय सोई। जाते अवध अनाथ न होई ॥
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा। तात धर्म मत तुम सब शोधा

शिव दधीचि हरिचन्द नरेशा सहे धर्म हित कोटि कलेशा।
रन्ति देव बलि भूप सुजाना ॥ धर्म धरेउ सहि संकट नाना।
धर्म न दूसर सत्य समाना ॥ आगम निगम पुराण बखाना
मैं सोइ धर्म सुलभ करि पावा तजे तो तिहुँ पुर अपयश छावा
संभावित कहँ अपयश लाहू। मरण कोटि सम दारुण दाहू।
तुम सन तात बहुत का कहऊं॥ दिये उतर फिरि पातक लहऊं

दो॰ पितुपदगहि कहि कोटि विधि विनय करब कर जोरि
चिन्ता कवनहु बात की तात करिय जनि मोरि

तुम पुनि पितु समान हित मोरे। विनती करौं तात कर जोरे
सब विधि सोइ करतब्य तुम्हारे। दुख न पाव नृप शोच हमारे
सुनि रघुनाथ सचिव संवादू ॥ भयउ सपरिजन विकल निषादू
पुनि कछु लषण कहेउ कटुबानी प्रभु बरजेउ बड़ अनुचित जानी
सकुचि राम निज शपथ दिवाई लषण संदेश कहब जनि जाई
कह सुमंत पुनि भूप संदेशू ॥ सहि न सकहिं सिय विपिन कलेशू
जेहि विधि अवध आव फिरि सीया सोइ रघुनाथ तुमहिं करणीया
नतरु निपट अवलंब विहीना। मैं न जियब जिमि जल बिनु मीना

दो॰ मैंके ससुरे सकल सुख । जबहिं जहां मन मान
तब तहँ रहब सुखेन सिय जबलगि विपति विहान

विनती कीन्ह भूप जेहि भांती । आरति प्रीति न सो कहि जाती
पितु संदेश सुनि कृपा निधाना। सियहि दीन्ह शिष कोटि विधाना
सासु ससुर गुरु प्रिय परिवारू । फिरहु तो सब कर मिटै खंभारू
सुनि पति वचन कहति वैदेही। सुनहु प्राण पति परम सनेही
प्रभु करुणामय परम विवेकी ॥ तनु तजि छांह रहत किमि छेंकी
प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई ॥ कहँ चन्द्रिका चन्द तजि जाई
पतिहि प्रेममय विनय सुनाई। कहति सचिव सन गिरा सुहाई

तुम पितु ससुर सरस हितकारी। उतर देउँ फिरि अनुचित भारी

दो० आरत बस सन्मुख भइउँ बिलग न मानब तात
आरज सुत पद कमल बिनु बादि जहाँ लग नात

पितुहि विभव विलास मैं दीठा। नृप मणि मुकुट मिलत पद पीठा
सुख निधान अस पितु गृह मोरे पति विहीन मन भावन भोरे
ससुर चक्रवै कोशल राऊ ॥ भुवन चारि दश प्रगट प्रभाऊ
आगे होइ जेहि सुरपति लेई। अर्द्ध सिंहासन आसन देई।
ससुर एतादृश अवध निवासू। प्रिय परिवार मातु सम सासू
बिनु रघुपति पद पदुम परागा। मोहिं कोउ सपनेहुँ सुखद न लागा
अगम पंथ बन भूमि पहारा। करि केहरि सर सरित अपारा।
कोल्ह किरात कुरंग विहंगा ॥ मोहि सब सुखद प्राणपति संगा

दो० सासु ससुर सन मोरि हुति। विनय करब परि पाय
मोर शोच जनि करिय कछु मैं बन सुखी सुभाय।

प्राणनाथ प्रिय देवर साथा ॥ वीर धुरीण धरे धनु भाथा ॥
नहिं मग श्रम भ्रम दुख मन मोरे मोहिं लगि शोच करिय जनि भोरे
सुनि सुमन्त सिय शीतल बानी। भये विकल जनु फणि मणि हानी
नयन न सूझ सुनै नहिं काना ॥ कहि न सकै कछु अति अकुलाना
राम प्रबोध कीन्ह बहु भांती॥ तदपि होइ नहिं शीतल छाती ॥
यतन अनेक साथ हित कीन्हा उचित उतर रघुनन्दन दीन्हा॥
मेटि जाइ नाहिं राम रजाई।। कठिन कर्म गति कछु न बसाई
राम लषण सिय पद शिर नाई। फिरे वणिक जिमि मूर गँवाई

दो० रथ हांके हय राम तन। हेरि हेरि हिहि नाहिं।
देखि निषाद विषाद बस शिर धुनि धुनि पछताहिं

जासु वियोग विकल पशु ऐसे। प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे।
बर बस राम सुमन्त पठाये ॥ सुरसरि तीर आपु चलि आये

मांगी नाव न केवट आना ॥ कहै तुम्हार मर्म मैं जाना ॥
चरण कमल रज कहँ सब कहई। मानुष करणि मूरि कछु अहई ॥
छुअत शिला भई नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई ॥
तरणिउ मुनि घरनी होइ जाई। बाट परै मोरि नाव उड़ाई ॥
यह प्रतिपालौं सब परिवारू ॥ नहिं जानौं कछु और कबारू ॥
जो प्रभु अवशि पार गा चहहू ॥ तौ पद पदुम पखारन कहहू ॥

छं॰ पदपद्म धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ॥
मोहिं राम राउरि आनि दशरथ शपथ सब सांची कहौं ॥
बरु तीर मारहिं लषण पै जबलगि न पाव पखारिहौं ॥
तौ लगि न तुलसी दास नाथ कृपालु पार उतारिहौं ॥

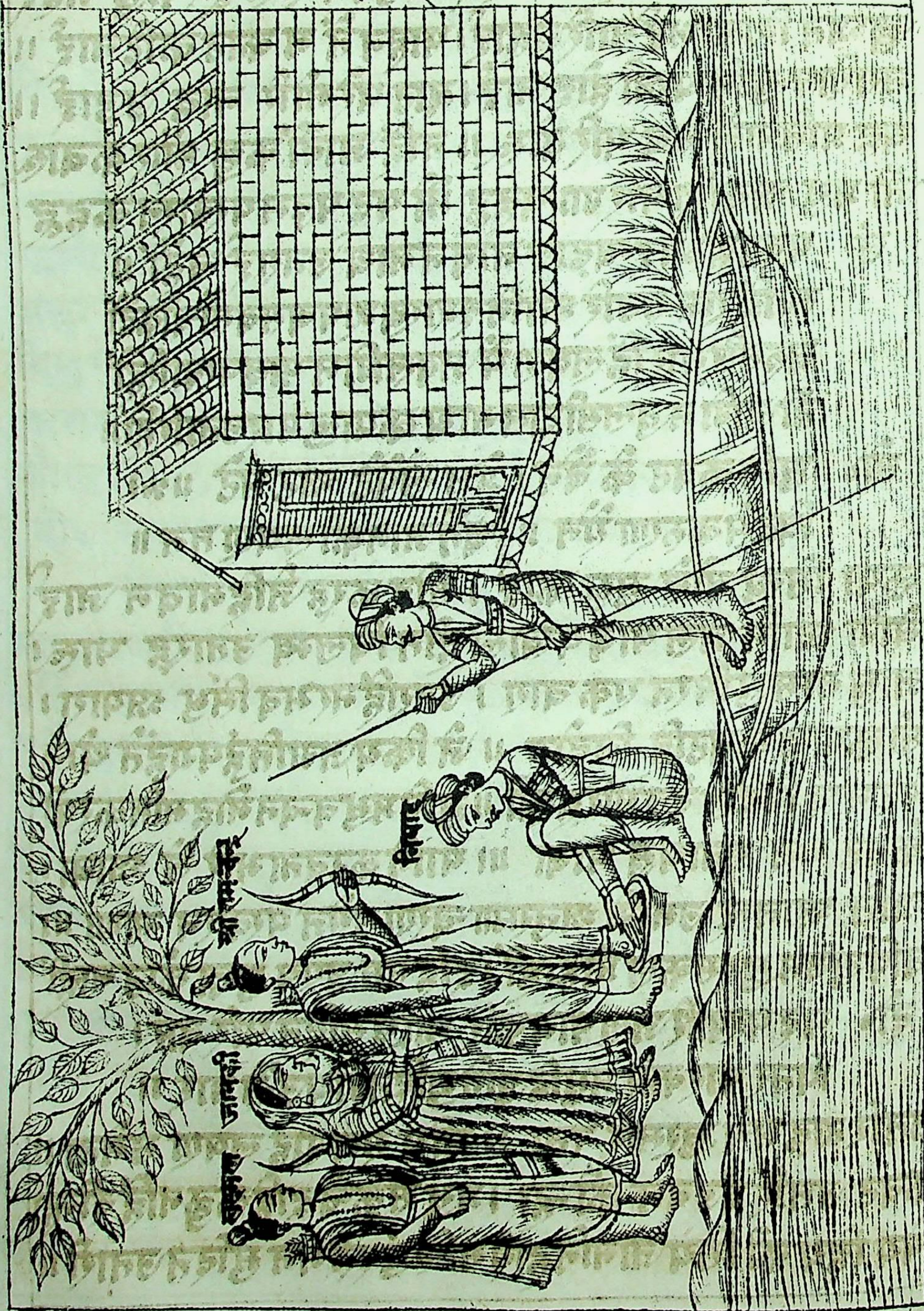
सो॰ सुनि केवट के बैन। प्रेम लपेटे अटपटे ॥ ५ ॥
बिहसे करुणा ऐन ॥ चितै जानकी लषण तन ॥

कृपा सिन्धु बोले मुसुकाई। सोइ करहु जेहि नाव न जाई ॥
बेगि आनि जल पाव पखारू। होत बिलम्ब उतारहु पारू ॥
जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भव सिंधु अपारा ॥
सो कृपालु केवटहि निहोरा ॥ जे किय जगतिहुं पगहुं ते थोरा ॥
पद नख निरखि देवसरि हरषी ॥ सुनि प्रभु वचन मोह मति करषी ॥
केवट राम रजायसु पावा ॥ पानि कठवता भरि लै आवा ॥
अति आनन्द उमगि अनुरागा। चरण सरोज पखारन लागा ॥
बर्षि सुमन सुर सकल सिहाहीं। इहि सम पुण्य पुञ्ज कोउ नाहीं ॥

सो॰ पद पखारि जल पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पार करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लै पार ॥

उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता ॥ सीय राम गुह लषण समेता ॥
केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभु सकुचे इहि कछु नहिं दीन्हा ॥
पिय हिय की सिय जाननिहारी मणि मुंदरी मन मुदित उतारी ॥

श्री रामचन्द्र लक्ष्मण जानकी जी को सुरसरि पार उतरने के निमित्त केवट से कहना और केवट को श्री रामचन्द्र जी के चरण धोय सुरसरि पार उतारना



कहेउ कृपालु लेहु उतराई। केवट चरण गहेउ अकुलाई
नाथ आजु हम काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा॥
अमित काल मैं कीन्ह मजूरी। आजु दीन्ह विधि सबभरि पूरी
अब कछु नाथ न चाहिय मोरे दीनदयाल अनुग्रह तोरे॥॥
फिरति बार जो कछु मोहिं देवा सो प्रसाद मैं शिर धरि लेवा॥

दो० बहुत कीन्ह हठ लखण प्रभु नहिं कछु केवट लेइ।
बिदा कीन्ह करुणायतन भक्ति बिमल वर देइ॥॥

तब मज्जन करि रघुकुल नाथा पूजि पारथी नायउ माथा॥
सिय सुरसरिहि कहा कर जोरी मातु मनोरथ पुरउब मोरी॥॥
पति देवर संग कुशल बहोरी। आइ करौं जेहि पूजा तोरी॥
सुनि सिय विनय प्रेम रस सानी। भइ तब विमल वारि वर बानी
सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही॥। तव प्रभाव जग विदित न केही
लोकप होहिं विलोकत तोरे॥ तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरे
तुम जो हमहिं बड़ि विनय सुनाई कृपा कीन्ह मोहिं दीन्ह बड़ाई
तदपि देवि मैं देव अशीशा। सुफल होन हित निज बागीशा

दो० प्राण नाथ देवर सहित। कुशल कोशला आइ।
पूरिहि सब मन कामना। सुयश रहिहि जग छाइ

गंगा वचन सुनि मंगल मूला॥ मुदित सीय सुरसरि अनुकूला
तब प्रभु गुहहि कहा घर जाहू। सुनत सूख मुख भा उर दाहू।
दीनवचन गुह कह कर जोरी। विनय सुनिय रघुकुलमणि मोरी
नाथ साथ रहि पंथ दिखाई॥ करि दिन चारि चरण सेवकाई
जेहि वन जाइ रहब रघुराई। पर्णकुटी मैं करब सुहाई॥
तब मोकहँ जस देव रजाई॥ सो करिहौं रघुवीर दुहाई॥
सहज सनेह राम लखि तासू। संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू॥
पुनि गुह ज्ञाति बोलि सब लीन्हे करि परितोष बिदा तब कीन्हे

दो० तब गणपति शिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ ।
सखा अनुज सिय सहित बन गवन कीन्ह रघुनाथ ॥

तेहि दिन भयउ बिटप तर बासू । लषण सखा सब कीन्ह सुपासू ॥
प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथ राज दीख प्रभु जाई ॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी । माधव सरिस मीत हितकारी ॥
चारि पदारथ भरा भँडारू । पुण्य प्रदेश देश अति चारू ॥
क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा । सपनेहुं जिन्ह प्रतिपच्छन पावा ॥
सेन सकल तीरथ बर बीरा । कलुष अनीक दलन रण धीरा ॥
संगम सिंहासन सुठि सोहा । छत्र अखयबट मुनि मन मोहा ॥
चँवर यमुन जल गंग तरंगा । देखि होहिं दुख दारिद भंगा ॥

दो० सेवहिं सुकृत साधु सुचि पावहिं सब मन काम ।
बन्दी बेद पुराण गण कहहिं बिमल गुण ग्राम ।

को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ । कलुष पुंज कुंजर मृग राऊ ॥
अस तीरथ पति देखि सुहावा । सुख सागर रघुबर सुख पावा ॥
कहि सिय अनुजहि सखहि सुनाई । श्री मुख तीरथ राज बड़ाई ॥
करि प्रणाम देखत अनुरागा । कहत महातम अति अनुरागा ॥
इहि बिधि आइ बिलोकेउ बेनी । सुमिरत सकल सुमंगल देनी ॥
मुदित नहाइ कीन्हि शिव सेवा । पूजि यथा बिधि तीरथ देवा ॥
तब प्रभु भरद्वाज पहँ आये । करत दण्डवत मुनि उर लाये ॥
मुनि मन मोद न कछु कहि जाई । ब्रह्मानन्द राशि जनु पाई ॥

दो० दीन्ह अशीष मुनीश उर अति आनंद अस जानि ।
लोचन गोचर सुकृत फल मनहुं किये बिधि आनि ॥

कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हा । पूजि प्रेम परिपूरण कीन्हा ॥
कन्द मूल फल अंकुर नीके । दिये आनि मुनि मनहुं अमी के ॥
सीय लषण जन सहित सुहाये । अति रुचि राम मूल फल खाये ॥

भये विगत श्रम राम सुखारे ॥ भरद्वाज मृदु वचन उचारे ॥
आजु सुफल तप तीरथ त्यागू । आजु सुफल जप योग विरागू
सुफल सकल शुभ साधन साजू राम तुमहिं अवलोकत आजू
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी तुम्हरे दरश आश सब पूजी ।
अब करि कृपा देहु वर एहू । निज पद सरसिज सहज सनेहू

दो० कर्म वचन मन छांड़ि छल जबलगि जन न तुम्हार
तबलगि सुख सपनेहुं नहीं किये कोटि उपचार ॥

सुनि मुनि वचन राम सकुचाने भाव भक्ति आनन्द अघाने ॥
तब रघुबर मुनि सुयश सुहावा कोटि भांति कहि सबहि सुनावा
सो बड़ सो सब गुण गण गेहू । जेहि मुनीश तुम आदर देहू ॥
मुनि रघुवीर परस्पर नवहीं ॥ वचन अगोचर सुख अनुभवहीं
यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी । बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी ।
भरद्वाज आश्रम सब आये ॥ देखन दशरथ सुवन सुहाये ।
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू । मुदित भये लहि लोचन लाहू
देहिं अशीष परम सुख पाई । फिरे सराहत सुन्दर ताई ॥

दो० राम कीन्ह विश्राम निशि प्रात प्रयाग अन्हाइ
चले सहित सियलषण जन मुदित मुनिहिं शिर नाइ

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं । नाथ कहहु हम केहि मगु जाहीं
सुनि मुनि विहंसि राम सन कहहीं सुगम सकल मगु तुम कहं अहहीं
साथ लागि मुनि शिष्य बुलाये सुनि मन मुदित पचासक आये
सबहिं राम पद प्रेम अपारा । सबहिं कहहिं मगु दीख हमारा
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे । जिन्ह बहु जन्म सुकृत बड़ कीन्हे
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई प्रमुदित हृदय चले रघुराई ॥
ग्राम निकट जब निसरहिं जाई देखहिं दरश नारि नर धाई ॥
होहिं सनाथ जन्म फल पाई । फिरहिं दुखित मन संग पठाई ॥

दो० बिदा कीन्ह बटु बिनय करि फिरे पाइ मन काम ॥
उतरि अन्हाये यमुन जल जो शरीर सम श्याम ॥

सुनत तीर बासी नर नारी ॥। धाये निज निज काज बिसारी
लषण राम सिय सुन्दर ताई। देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई
अति लालसा सबहिं मन माहीं नाम गांव पूछत सकुचाहीं ॥
जे तिन्ह महँ बय बृद्ध सयाने। तिन्ह करि युक्ति राम पहिचाने
सकल कथा कहि तिनहिं सुनाई बनहिं चले पितु आयसु पाई
सुनि सबिषाद सकल पछताहीं रानी राय कीन्ह भल नाहीं ॥
राम लषण सिय रूप निहारी। सोच सनेह बिकल नर नारी।
ते पितु मातु कहौ सखि कैसे। जिन पठये बन बालक ऐसे ॥

दो० तब रघुबीर अनेक बिधि सखहिं सिखावन दीन्ह
राम रजायसु शीश धरि गवन भवन तिन्ह कीन्ह

पुनि सिय राम लषण कर जोरी यमुनहिं कीन्ह प्रणाम बहोरी
गवने सीय सहित दोउ भाई। रबि तनया कर करत बड़ाई ॥
पथिक अनेक मिलहिं मग जाता कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता
राज लखण सब अंग तुम्हारे। देखि सोच हिय होत हमारे।
मारग चलहु पयादेहि पाये ॥ ज्योतिष झूंठ हमारे हि भाये ॥
अगम पंथ गिरि कानन भारी। तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी
करि केहरि बन जाइ न जोई हम संग चलहिं जो आयसु होई
जाब जहां लगि तहँ पहुंचाई। फिरब बहोरि तुमहिं सिरनाई

दो० यहि बिधि बूझहिं प्रेम बस पुलक गात जल नैन।
कृपा सिंधु फेरहिं तिनहिं कहि बिनती मृदु बैन।

जे पुर गाम बसहिं मगु माहीं। तिनहिं नाग सुर नगर सिहाहीं
केहि सुकृती केहि घरी बसाये धन्य पुण्यमय परम सुहाये।
जहँ जहँ राम चरण चलि जाहीं तेहि समान अमरावति नाहीं

पुरजन पुन्य मनु निकट निवासी । तिनहिं सराहहिं सुरपुरवासी
जो भरि नयन विलोकहिं रामहिं सीता लषण सहित घन स्यामहिं
जेहि सर सरित राम अवगाहहिं । तिनहिं देव सर सरित सराहहिं ।
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई ॥ करहिं कल्पतरु तासु बड़ाई ।
परसि राम पद पद्म परागा ॥ ॥ मानति भूरि भूमि निज भागा ।

दो० छांह करहिं घन विबुध गण बरषहिं सुमन सिहाहिं
देखत गिरि बन विहंग मृग राम चले मग जाहिं

सीता लषण सहित रघुराई ॥ गाँव निकट जब निसरहिं जाई
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी ॥ चलहिं तुरत गृह काज विसारी
राम लषण सिय रूप निहारी । पाइ नयन फल होहिं सुखारी ।
सजल नयन अति पुलक शरीरा सब भये मगन देखि दोउ वीरा
वरणि न जाइ दशा तिन्ह केरी । लही रंक जनु सुर मणि ढेरी ॥
एकहि एक बोलि सिख देही ॥ लोचन लाहु लेहु क्षण एही ।
रामहिं देखि एक अनुरागे ॥ चितवत चले जात संग लागे
एक नयन मग छवि उर आनी होहिं शिथिल तन मन वानी

दो० एक देखि बट छाँह भलि डासि मृदुल तृण पात
कहहिं गवाइय क्षणक श्रम गवनब अवहिं कि प्रात

एक कलश भरि आनहिं पानी अचइय नाथ कहहिं मृदु वानी
सुनि प्रिय वचन प्रीति अति देखी राम कृपालु सु शील विशेषी
जानी सीय श्रमित मन माहीं । घरिक विलम्ब कीन्ह बट छांहीं
मुदित नारि नर देखहिं शोभा ॥ रूप अनूप देखि मन लोभा ॥
इकटक सब सोहहिं चहुं ओरा । राम चन्द्र मुख चन्द्र चकोरा ॥
तरुण तमाल वरण तन सोहा । देखत काम कोटि मन मोहा ।
दामिनि वरण लषण सुठि नीके । नख सिख सुभग भावते जीके
मुनि पट कटिन्ह कसे तूणीरा । सोहत कर कमलन्ह धनु तीरा

दो० जटा मुकुट शीशन सुभग उर भुज नयन विशाल
शरद पर्व विधु वदन वर लसत स्वेद कण जाल ॥
वरणि न जाइ मनोहर जोरी ॥ शोभा अमित मोर मति थोरी ।
राम लषण सिय सुन्दर ताई ॥ सब चितवहिं मन मति चित लाई ।
थके नारि नर प्रेम पियासे ॥ मनहुं मृगी मृग देखि दिवासे ।
सीय समीप ग्राम तिय जाहीं । पूछत अति सनेह सकुचाहीं ।
बार बार सब लागहिं पाये ॥ कहहिं वचन मृदु सरल सुहाये ।
राज कुमारि विनय हम करहीं । तिय सुभाव कछु पूछत डरहीं ।
स्वामिनि अविनय क्षमब हमारी बिलग न मानव जानि गंवारी
राज कुवर दोउ सहज सलोने ॥ इनते लहि दुति मरकत सोने ।
दो० श्यामल गौर किशोर वर सुन्दर सुखमा ऐन ॥
शरद सर्वरी नाथ मुख । शरद सरोरुह नैन ॥
कोटि मनोज लजावनि हारे ॥ सुमुखि कहहु को अहहिं तुम्हारे
सुनि सनेह मय मंजुल बानी ॥ सकुचि सीय मन महं मुसुकानी
तिनहिं बिलोकि बिलोकउ धरनी दुहू सकोच सकुचति वर वरनी ।
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी । बोली मधुर वचन पिक बयनी
सहज सुभाव सुभग तन गोरे । नाम लषण लघु देवर मोरे ॥
श्याम वरण विशाल भुज नैना । अति सुन्दर बोलन मृदु बैना ॥
बहुरि वदन विधु अंचल ढांकी । पिय तन चितै भौंह करि बांकी
खंजन मंजु तिरी छे णनयनी । निजपति कहेउ तिनहिं पिय सयनी
भई मुदित सब ग्राम वधूटी ॥ रंकन्ह रतन राशि जनु लूटी ॥
दो० अति सप्रेम सिय पाय परि बहु विधि देहिं असीष
सदा सुहागिनि रहहु तुम जब लगि महि अहि शीश
पारबती सम पति प्रिय होहू ॥ देवि न हम पर छांडब छोहू ॥
पुनि पुनि विनय करहिं कर जोरी जो इहि मारग फिरिय बहोरी ॥

दरशन देव जानि निज दासी ॥ लखी सीय सब प्रेम पियासी ।
मधुर वचन कहि कहि परितोषी जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी
तबहिं लषण रघुबर रुख जानी पूछेउ मगु लोगन मृदु बानी।
सुनत नारि नर भये दुखारी ॥ पुलकित अंग विलोचन बारी
मिटा मोद मन भये मलीने ॥ विधि निधि दीन्ह लीन्ह जनु छीने
समुझि कर्म गति धीरज कीन्हा। शोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा

दो० लषण जानकी सहित तब गवन कीन्ह रघुनाथ ॥
फेरे सब प्रिय वचन कहि लिये लाइ मन साथ ॥

फिरत नारि नर अति पछिताहीं दैवहि दोष देहिं मन माहीं ॥
सहित विषाद परस्पर कहहीं । विधि करतब सब उलटे अहहीं
निपट निरंकुश निठुर निशंकू । जेहि शशि कीन्ह सरुज सकलंकू
रूख कल्पतरु सागर खारा ॥ तेइ पठये बन राज कुमारा ॥
जौं पै इनहिं दीन्ह बन वासू ॥ कीन्ह बादि विधि भोग विलासू
ये विचरहिं मगु विनु पद त्राना। रचे बादि विधि वाहन नाना॥
ये महि परहिं डासि कुश पाता । सुभग सेज कत कीन्ह विधाता
तरु तर वास इनहिं विधि दीन्हा। धवल धाम रचि रचि श्रम कीन्हा

दो० जौ ये मुनि पट धर जटिल सुन्दर सुठि सुकुमार ॥
विविधि भांति भूषण वसन बादि किये करतार ॥

जौं ये कन्द मूल फल खाहीं। बादि सुधादि अशन जग माहीं।
एक कहहिं यह सहज सुहाये । आपु प्रगट भये विधि न बनाये
जहं लगि वेद कहेउ विधि करनी श्रवण नयन मन गोचर बरनी॥
देखहु खोजि भुवन दश चारी ॥ कहं अस पुरुष कहां अस नारी।
इनहिं देखि विधि मन अनुरागा पटतर योग बनावन लागा।
कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आये । तेहि इरिषा बन आनि दुराये ॥
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं। आपुहि परम धन्य करि मानहिं

ते पुनि पुण्य पुंज हम लेखे। जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे।

दो० इहि विधि कहि कहि वचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर

किमि चलिहैं मारग अगम सुठि सुकुमार शरीर।

नारि सनेह विकल सब होहीं॥ चकई सांझ समय जिमि सोही

मृदु पद कमल कठिन मग जानी। गहवरि हृदय कहहिं मृदु बानी

परसत मृदुल चरण अरुणारे॥ सकुचति महि जिमि हृदय हमारे

जो जगदीश इनहिं बन दीन्हा। कस न सुमन मय मारग कीन्हा।

जो मांगे पाइय विधि पाहीं। राखिय सखि इन्ह आंखिन माहीं

जे नर नारि न अवसर आये। ते सिय रामन देखन पाये॥

सुनि सरूप पूछहिं अकुलाई। अब लगि गये कहां लगि भाई

समरथ धाइ विलोकहिं जाई। प्रमुदित फिरहिं नयन फल पाई

दो० अबला बालक वृद्ध जन। कर मीजहिं पछिताहिं।

होहिं प्रेम बस लोग इमि। राम जहां जहं जाहिं।

गांव गांव अस होइ अनन्दा। देखि भानु कुल कैरव चन्दा॥

जे कछु समाचार सुनि पावहिं। ते नृप रानिहिं दोष लगावहिं

कहहिं एक अति भल नर नाहू दीन्ह हमहिं जिन्ह लोचन लाहू

कहहिं परस्पर लोग लुगाई॥ बातें सरल सनेह सुहाई॥

ते पितु मातु धन्य जे जाये॥ धन्य सो नगर जहां ते आये

धन्य सो शैल देश बन गाऊं। जहँ जहँ जाहिं धन्य सो ठाऊं

सुख पायो विरंचि रचि तेही॥ ये जिन्ह के सब भांति सनेही

राम लषण सिय कथा सुहाई। रही सकल मग कानन छाई।

दो० इहि विधि रघुकुल कमल रवि मग लोगन सुख देत

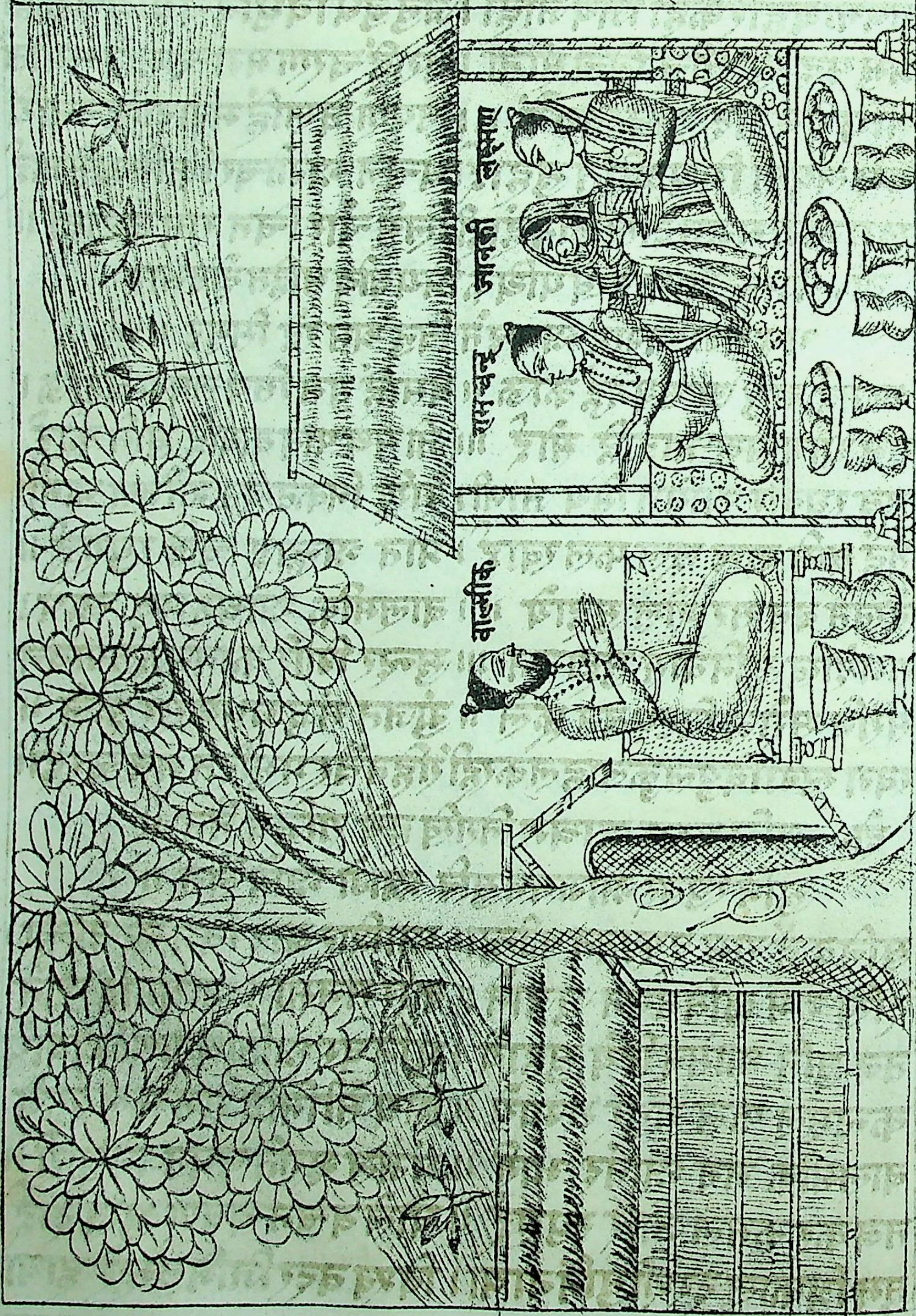
जाहिं चले देखत विपिन सिय सौमित्रि समेत।

आगे राम लषण पुनि पाछे॥ तापस भेष विराजत काछे॥

उभय मध्य सिय शोभति कैसी। ब्रह्म जीव बिच माया जैसी।

बहुरि कहौं छवि जस मन बसई। जनु मधु मदन मध्य रति लसई॥
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही। जनु बुध विधु बिच रोहिणि सोही॥
प्रभु पद रेख बीच बिच सीता। धरहिं चरण मग चलहिं सभीता॥
सीय राम पद अंक बराये। लषण चलहिं मग दाहिन बाये॥
राम लषण सिय प्रीति सुहाई। वचन अगोचर किमि कहि जाई॥
खग मृग मगन देखि छवि होहीं लिये चोर चित राम बटोही॥
दो॰ जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सीय सहित दोउ भाइ
भव मग अगम अनन्द ते बिनु श्रम रहे सिराइ॥
अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ॥ बसहिं राम सिय लषण बटाऊ।
राम धाम पथ जाइहि सोई॥ जो पथ पाव कबहि मुनि कोई
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी। देखि निकट बट शीतल पानी।
तहँ बसि कन्द मूल फल खाई। प्रात अन्हाइ चले रघुराई॥
देखत बन सर शैल सुहाये॥ बालमीक आश्रम प्रभु आये।
राम देखि मुनि बास सुहावन॥ सुन्दर गिरि कानन जल पावन
सरनि सरोज विटप बन फूले॥ गुंजत मंजु मधुप सर फूले॥
खग मृग विपुल कुलाहल करहीं रहित वैर ममुदित मन चरहीं।
दो॰ मुनि सुन्दर आश्रम निरखि हर्षे राजिव नैन॥
सुनि रघुवर आगमन मुनि आगे आये लैन॥
मुनि कहँ राम दण्डवत कीन्हा। आशिर बाद विप्र बर दीन्हा।
देखि राम छवि नयन जुड़ाने॥ करि सनमान आश्रमहिं आने
तब मुनि आसन दिये सुहाये। मुनि वर अतिथि प्राणप्रिय पाये
कन्दमूल फल मधुर मगाये॥ सिय सौमित्रि राम फल खाये
बालमीक मन आनंद भारी॥ मंगल मूरति नयन निहारी॥
तब कर कमल जोरि रघुराई॥ बोले वचन श्रवण सुख दाई
तुम त्रिकाल दर्शी मुनि नाथा। विश्व बदर जिमि तुम्हरे हाथा

श्री रामचन्द्र लक्ष्मण और जानकी जी को वाल्मीक मुनि के आश्रम पर जाना और कुछ कालवास करने के निमित्त आश्रम का पूछना



अस कहि प्रभु सब कथा बखानी ॥ जेहि जेहि भांति दीन्ह बन रानी

दो० तात बचन पुनि मातु मत भाइ भरत अस राउ ॥
मो कहँ दरश तुम्हार प्रभु सब मम पुण्य प्रभाउ

देखि पाय मुनि राय तुम्हारे ॥ भये सुकृत सब सुफल हमारे
अब जहँ राउर आयसु होई । मुनि उद्वेग न पावहिं कोई ॥
मुनि तापस जिनते दुखलहहीं ते नरेश बिनु पावक दहहीं ॥
मंगल मूल विप्र परितोषू ॥ । दहै कोटि कुल भूसुर रोषू ॥।
अस जिय जानि कहिय सोइठाऊं सिय सौमित्र सहित तहँ जाऊं
तहँ रचि रुचिर पर्ण तृण शाला बास करौं कछु काल कृपाला
सहज सरल सुनि रघुबर बानी । साधु साधु बोले मुनि ज्ञानी ।
कसन कहहु अस रघुकुल केतू तुम पालक संतत श्रुति सेतू

छं० श्रुति सेतु पालक राम तुम जगदीश माया जानकी ॥
जो सृजति जग पालति हरति रुख पाइ कृपानिधानकी
जोसहजशीश अहीशमहिधर लषण सचराचर धनी ।
सुरकाज धरि नरराज तन चले दलन खल निशिचरअनी

सो० रामसरूप तुम्हार । बचन अगोचर बुद्धि पर ॥
अभिगति अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह

जग पेखन तुम देखनि हारे । विधि हरि शंभु नचावन हारे
तेउन जानहिं मर्म तुम्हारा ॥ और तुमहिं को जाननि हारा
सो जानै जेहि देहु जनाई ॥। जानत तुम्हे तुमहिं व्है जाई
तुम्हरी कृपा तुमहिं रघुनन्दन । जानत भक्त भक्ति उर चन्दन ।
चिदानन्द मय देह तुम्हारी ॥ विगत विकार जान अधिकारी
नर तन धरेहु सन्त सुर काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । जड मोहहिं बुध होहिं सुखारे
तुम जो कहहु करहु सब सांचा । जसकाछिय तस चाहिय नाचा

दो० पूछेउ मोहिं कि रहौं कहँ । मैं पूछत सकुचाउँ ।
जहं न होहु तहं देहु कहि तुमहिं दिखावौं ठाउँ ॥
सुनि सुनि वचन प्रेम रस साने । सकुचि राम मन महं मुसुकाने
बालमीक हंसि कहहिं बहोरी ॥ बाणी मधुर अमिय रस बोरी ।
सुनहु राम अब कहौं निकेता । बसहु जहां सिय लषण समेता
जिनके श्रवण समुद्र समाना । कथा तुम्हार सुभग सरि नाना
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे ॥ तिनके हिये सदन तव रूरे ॥
लोचन चातक जिन करि राखे । रहहिं दरश जल धर अभिलाषे
निदरहिं सिन्धु सरित सर वारी । रूप बिन्दु लहि होहिं सुखारी
तिनके हृदय सदन सुखदायक । बसहु लषण सिय सह रघुनायक
दो० यश तुम्हार मानस विमल हंसनि जीहा जासु ॥
मुक्ताहल गुण गण चुगहिं बसहु राम हिय तासु ।
प्रभु प्रसाद शुचि सुभग सुबासा सादर जासु लहै नित नासा ।
तुमहिं निवेदित भोजन करहीं । प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं ।
शीश नवहिं सुर गुरु द्विज देखी प्रीति सहित करि विनय विशेषी
कर नित करहिं राम पद पूजा । राम भरोस हृदय नहिं दूजा ॥
चरण राम तीरथ चलि जाहीं । राम बसहु तिनके मन माहीं ॥
मंत्र राज नित जपहिं तुम्हारा । पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा
तर्पन होम करहिं विधि नाना । विप्र जेवाइ देहिं बहु दाना ॥
तुम तें अधिक गुरुहि जिय जानी सकल भाव सेवहिं सनमानी ।
दो० सब कर मांगहिं एक फल राम चरण रत होउ ॥
तिनके मन मन्दिर बसहु । सिय रघुनन्दन दोउ ॥
काम क्रोध मद मान न मोहा ॥ लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा ।
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया । तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया
सब के प्रिय सब के हित कारी । दुख सुख सरिस प्रशंसा गारी ।

कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत शरण तुम्हारी।
तुमहिं छांड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के उर माहीं।
जननी सम जानहिं पर नारी ॥। धन पराय बिषते बिष भारी॥
जे हरषहिं पर सम्पति देखी ॥ ॥ दुखित होहिं पर बिपति बिशेषी
जिनहिं राम तुम प्राण पियारे ॥ तिन के उर शुभ सदन तुम्हारे।

दो० स्वामि सखा पितु मातु गुरु जिन के सब तुम तात।
तिन के मन मन्दिर बसहु। सीय सहित दोउ भ्रात ॥

अवगुण तजि सब के गुण गहहीं बिप्र धेनु हित संकट सहहीं।
नीति निपुण जिनकी जग लीका घर तुम्हार तिन के मन नीका।
गुण तुम्हार समुझहिं निज दोषू। जेहि सब भांति तुम्हार भरोसू
राम भक्त प्रिय लागहिं जेही। तेहि उर बसहु सहित वैदेही।
जाति पांति धन धर्म बड़ाई ॥ प्रिय परिवार सदन समुदाई॥
सब तजि तुमहिं रहै लौ लाई। ताके हृदय बसहु रघुराई ॥॥
स्वर्ग नर्क अपवर्ग समाना ॥ जहँ तहँ देख धरे धनु बाना।
मन क्रम बचन जो राउर चेरा राम करहु ताके उर डेरा ॥।

दो० जाहि न चाहिय कबहुँ कछु तुम सन सहज सनेह
बसहु निरंतर तासु उर ॥ सो राउर निज गेह ॥

इहि बिधि मुनि वर धाम दिखाए बचन सप्रेम राम मन भाए ॥।
कह मुनि सुनहु भानुकुल नायक आश्रम कहौं समय सुखदायक
चित्र कूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भांति सुपासू
शैल सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग बिहग बिहारू
नदी पुनीत पुरान बखानी ॥ अत्रि तीय निज तप बल आनी
सुरसरि धार नाम मंदा किनि। जो सब पातक पोतक डाकिनि
अत्रि आदि मुनि वर तहँ बसहीं करहिं योग जप तप तनु कसही
चलहु सुफल श्रम सब कर करहू राम देहु गौरव गिरि वरहू॥

दो० चित्रकूट महिमा अमित कही महा मुनि गाय।
आइ अन्हाने सरितवर सीय सहित दोउ भाय।

रघुवर कहेउ लषण भल घाटू। करहु कतहुं अब ठाहर ठाटू॥
लषण दीख तव उतर करारा। चहुं दिशि फिरेउ धनुष जिमि नारा
नदी पनच सर सम दम दाना। सकल कलुष कलि साउज नाना
चित्रकूट जनु अचल अहेरी। चूक न घात मारु मुठभेरी॥
अस कहि लषण ठहर दिखरावा थल विलोकि रघुपति सुख पावा
रमेउ राम मन देवन जाना॥। चले सहित सुरपति परधाना।
कोल्ह किरात भेष धरि आये। रचेउ पर्ण तृण सदन सुहाये
वरणि न जाइ मंजु दुइ शाला। एक ललित लघु एक विशाला

दो० लषण जानकी सहित प्रभु राजत पर्ण निकेत।
सोह मदन मुनि भेष जनु रति ऋतु राज समेत।

अमर नाग किन्नर दिगपाला। चित्रकूट आये तेहि काला।
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू॥ मुदित देव लहि लोचन लाहू।
वरषि सुमन कह देव समाजू। नाथ सनाथ भये हम आजू॥
करि विनती दुख दुसह सुनाये। हरषित निज निज गेह सिधाये
चित्रकूट रघुनन्दन छाये॥। समाचार सुनि मुनि मुनि आये
आवत देखि मुदित मुनि वृन्दा कीन्ह दण्डवत रघुकुल चन्दा
मुनि रघुवरहि लाइ उर लेहीं॥ सुफल होन हित आशिष देहीं
सिय सौमित्रि राम छवि देखहिं साधन सकल सुफल करि लेखहिं

दो० यथा योग सनमानि प्रभु बिदा किये मुनि वृन्द।
करहिं योग जप यज्ञ तप निज आश्रमन स्वछन्द।

यह सुधि कोल्ह किरातन पाई। हरषे जनु नव निधि घर आई
कन्द मूल फल भरि भरि दोना। चले रंक जनु लूटन सोना॥
तिन महं जिन्ह देखे दोउ भ्राता। और तिनहिं पूछहिं मग जाता

कहत सुनत रघुबीर निकाई ॥ आय सबन देखे रघुराई ॥।
करहिं जोहारि भेंट धरि आगे प्रभुहि विलोकत अति अनुरागे
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े। पुलक शरीर नयन जल बाढ़े।
राम सनेह मगन सब जाने। कहि प्रिय वचन सकल सनमाने
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी। वचन विनीत कहहिं कर जोरी

दो० अब हम नाथ सनाथ सब भये देखि प्रभु पाय।
भाग्य हमारे आगमन। राउर कोशल राय ॥

धन्य भूमि बन पंथ पहारा ॥ जहँ जहँ नाथ पाँव तुम धारा
धन्य विहग मृग कानन चारी सुफल जन्म भये तुमहिं निहारी
हम सब धन्य सहित परिवारा। देखि नयन भरि दरश तुम्हारा
कीन्ह बास भल ठाम बिचारी। इहाँ सकल ऋतु रहब सुखारी
हम सब भांति करब सेवकाई। करि केहरि अहि बाघ बराई
बन बीहड़ गिरि कन्दर खोहा। सब हमार प्रभु पग पग जोहा
तहँ तहँ तुमहिं अहेर खेलाउब सर निर्झर सब ठाम दिखाउब
हम सेवक परिवार समेता ॥ नाथ न सकुचब आयसु देता

दो० वेद वचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुणा ऐन ॥
वचन किरातन के सुनत जिमि पितु बालक बैन।

रामहिं केवल प्रेम पियारा ॥ जानि लेहु जो जाननि हारा।
राम सकल बन चर परितोषे। कहि मृदु वचन प्रेम परिपोषे
विदा किये शिर नाइ सिधाये। प्रभु गुण कहत सुनत घर आये
एहि विधि सीय सहित दोउ भाई बसहिं विपिन सुर मुनि सुखदाई
जब ते आइ रहे रघुनायक। तब ते भो बन मंगलदायक।
फूलहिं फलहिं विटप विधि नाना मंजु लालित वर बेलि विताना
सुर तरु सरिस सुभाय सुहाये। मनहुं विबुध बन परिहरि आये
गुंजत मंजुल मधुकर श्रेनी ॥ त्रिविध बयारि बहै सुख देनी।

दो० नीलकंठ कलकंठ सुक चात्रिक चक्र चकोर॥
भांति भांति बोलहिं बिहग श्रवन सुखद चित चोर
करि केहरि कपि कोल कुरंगा। विगत वयर विहरहिं इक संगा
फिरत अहेर राम छवि देखी। होहिं मुदित मृग वृन्द विशेषी
विबुध विपिन जहं लग जग माहीं देखि राम बन सकल सिहाहीं
सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या। मेकल सुता गोदावरि धन्या
सब सरि सिंधु नदी नद नाना। मन्दाकिनि कर करहिं बखाना
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू। मन्दर मेरु सकल सुर वासू॥
शैल हिमाचल आदिक जेते। चित्रकूट यश गावहिं तेते॥
देव मुदित मन सुख न समाई। बिनु श्रम विपुल बड़ाई पाई
दो० चित्र कूट के विहग मृग वेलि विटप तृणजाति
पुण्य पुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति
नयन वंत रघुपतिहि विलोकी पाइ जन्म फल होहिं विशोकी
परसि चरण रज अचर सुखारी भये परम पद के अधिकारी
सो बन शैल सुभाय सोहावन॥ मंगल मय अति पावन पावन
महिमा कहौं कवन विधि तासू। सुख सागर जहं कीन्ह निवासू
पय पयोधि तजि अवध विहाई जहं सिय राम लषण रहे आई
कहि न सकहिं सुखमा जस कानन जौं शत सहस होहिं सहसानन
सो मैं वरणि कहौं विधि केही। डाबर कमठ कि मन्दर लेही॥
सेवहिं लषण कर्म मन बानी। जाइ न शील सनेह बखानी॥
दो० क्षण क्षण सिय लखि राम पद जानि आपु पर नेह
करत लषण सपने न चित बंधु मातु पितु गेह।
राम संग सिय रहहिं सुखारी॥ पुर परिजन गृह सुरति बिसारी
क्षण क्षण पिय विधु वदन निहारी प्रमुदित मनहुं चकोर कुमारी॥
नाह नेह नित बढ़त विलोकी। हर्षित रहति दिवस जिमि कोकी

सिय मन राम चरण अनुरागा अवध सहस सम बन प्रियलागा
पर्णकुटी प्रिय प्रीतम संगा । प्रिय परिवार कुरंग विहंगा।
सासु ससुर समसुनितियमुनिवर अशन अमिय समकंदमूलफर
नाथ साथ साथरी सुहाई ॥ मयन शयन शतसम सुखदाई
लोकप होहिं विलोकत जासू। तेहि कि मोह सक विषय विलासू

सो॰ सुमिरत रामहिं तजहिं जन तृण सम विषय विलासु
राम प्रिया जग जननि सिय कछु न आचरज तासु

सीय लषण जेहि विधि सुख लहहीं सोइ रघुनाथ करें ओइ कहहीं
कहहिं पुरातन कथा कहानी। सुनहिं लषण सिय अतिसुखमानी
जब जब राम अवध सुधि करहीं तब तब वारि विलोचन भरहीं।
सुमिरिमातु पितु परिजन भाई। भरत सनेह शील सेवकाई।
कृपा सिन्धु प्रभु होहिं दुखारी। धीरज धरहिं कुसमय विचारी
लखि सिय लषण विकल होइ जाहीं जिमि पुरुषहिं अनुसरपर्छाहीं
प्रिया बंधु गति लखि रघुनन्दन। धीर कृपालु भक्त उर चन्दन।
लगे कहन कछु कथा पुनीता। सुनि सुख लहहिं लषण अरु सीता

सो॰ राम लषण सीता सहित। सोहत पर्ण निकेत ॥।
जिमि वासव वस अमरपुर सची जयंति समेत ॥

जुगवहिं प्रभु सिय अनुजहि कैसे पलक विलोचनगोलक जैसे
सेवहिं लषण सीय रघुबीरहि। जिमि अविवेकी पुरुष शरीरहि
इहि विधि प्रभु बन बसहिं सुखारी खग मृग सुर तापस हितकारी
कहेउं राम बन गवन सुहावा। सुनहु सुमंत अवध जिमि आवा
फिरेउ निषाद प्रभुहि पहुंचाई। सचिव सहित रथ देखेउ आई
मंत्री विकल विलोकि निषादू। कहिन सकहि जस भयउ विषादू
राम राम सिय लषण पुकारी । परेउ धरणि तल व्याकुल भारी।
देखि दखिण दिशि हय हिहिनाहीं जिमि बिनु पंख विहंग अकुलाहीं

दो॰ नहिं तृण चरहिं न पियहिं जल मोचहिं लोचन वारि
व्याकुल भयेउ निषाद गण रघुवर बाजि निहारि
धरि धीरज तब कहहि निषादू। अब सुमन्त परिहरहु विषादू
तुम पण्डित परमारथ ज्ञाता। धरहु धीर लखि वाम विधाता
विविधि कथा कहि कहि मृदुबानी रथ बैठारयो बरबस आनी
शोक शिथिल रथ सकहिं न हांकी रघुवर विरह पीर उर बांकी
तरफराहिं मग चलहिं न घोरे। बन मृग मनहुं आनि रथ जोरे
अटकि परहिं फिरि चितवहिं पीछे राम वियोग विकल दुख तीछे
जो कह राम लषण बैदेही॥। हिकरिहि करि हय हेरहिं तेही
बाजि विरह गति कि मि कहि जाती बिनु मणि फणिक विकल जेहि भांती
दो॰ भये निषाद विषाद बस। देखत सचिव तुरंग॥
बोलि सुसेवक चारि तब दिये सारथी संग॥।
गुह सारथि हि फिरयो पहुंचाई विरह विषाद बरणि नहिं जाई
चले अवध लै रथहि निषादा होंहि क्षणहिं क्षण मगन विषादा
शोच सुमन्त विकल दुख दीना धिक जीवन रघुवीर विहीना।
रहिहि न अन्तहु अधम शरीरू यश न लहेउ बिछुरत रघुवीरू
भये अयश अघ भाजन प्राना। कौन हेतु नहिं करत पयाना।
अहह मन्दमति अवसर चूका। अजहुं न हृदय होत दुइ टूका।
मीजि हाथ शिर धुनि पछिताई। मनहुं कृपण धन राशि गवाई
विरद बांधि वर वीर कहाई॥ चले समर जनु सुभट पराई।
दो॰ विप्र विवेकी वेद विद। संमत साधु सुजाति॥
जिमि धोखे मद पान कर सचिव शोच तेहि भांति
जिमि कुलीन तिय साधु सयानी पति देवता कर्म मन बानी।
रहै कर्म बस परिहरि नाहू॥ सचिव हृदय तिमि दारुण दाहू
लोचन सजल दृष्टि भई थोरी। सुनै न श्रवण विकल मति भोरी

सूखहिं अधर लागि मुह लाटी। जियन जाइ उर अवध कपाटी
विवरण भयउ न जाइ निहारी। मारेसि मनहुं पिता महतारी।
हानि गलानि विपुल मन व्यापी यम पुर पंथ शोच जिमि पापी
वचन न आव हृदय पछिताई अवध काह मैं देखव जाई॥
राम रहित रथ देखिहि जोई॥ सकुचिहि मोहिं विलोकत सोई
दो॰ धाइ पूछिहहिं मोहिं जब विकल नगर नर नारि।
उतर देब मैं सबहि तब हृदय बज्र बैठारि॥॥
पुछिहहिं दीन दुखित सब माता कहब काह मैं तिनहिं विधाता
पुछिहहिं जबहिं लषणमहतारी कहिहों कवन संदेश सुखारी।
राम जननि जब आइहि धाई। सुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवाई।
पूछत उतर देव मैं तेही॥। गे बन राम लषण वैदेही॥
जेइ पूछिहि तेहि उत्तर देवा। जाइ अवध अब यह सुख लेवा
पूछहिं जबहिं राउ दुख दीना। जीवन जासु राम आधीना।
देहों उतर कवन मुह लाई॥। आयउं कुशल कुवर पहुंचाई
सुनत लषण सिय राम संदेसू॥ तृण इव तन परिहर ब नरेसू।
दो॰ हृदय न विदरत पंक जिमि विछुरत प्रीतम नीर॥
जानत हों मोहिं दीन्ह विधि यह जातना शरीर॥
इहि विधि करत पंथ पछतावा तमसा तीर तुरत रथ आवा।
विदा किये करि विनय निषादू। फिरे पाय परि विकल विषादू।
पैठत नगर सचिव सकुचाई॥ जनु मारेसि गुरु ब्राह्मण गाई॥
बैठि विटप तर दिवस गवावा। सांझ समय तब अवसर पावा
अवध प्रवेश कीन्ह अंधियारे। पैठु भवन रथ राखि दुआरे।
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाये। भूप द्वार रथ देखन आये॥॥
रथ पहिचानि विकल लखि घोरे गरहिं गात जिमि आतप वोरे
नगर नारि नर व्याकुल कैसे। नियटत नीर मीन गण जैसे॥

दो० सचिव आगमन सुनत सब विकल भई रनिवास
भवन भयंकर लाग तेहि। मानहुं प्रेत निवास॥

अति आरत सब पूछहिं रानी। उतर न आव विकल भइ बानी
सुनै न श्रवण नयन नहिं सूझा। कहहु कहां नृप जेहि तेहि बूझा
दासिन्ह दीख सचिव विकलाई कौशिल्या गृह गई लिवाई
जाइ सुमन्त दीख कस राजा॥ अमिय रहित जनु चन्द विराजा
असन न शयन विभूषण हीना परेउ भूमि तल निपट मलीना
लेइ उसास सोच इहि भांती। सुर पुर ते जनु खसेउ ययाती
लेत सोच भरि क्षण क्षण छाती जनु जरि पंख परेउ सम्पाती
राम राम कह राम सनेही॥। पुनि कह राम लषण वैदेही।

दो० देखि सचिव जय जीव कहि कीन्हेसि दण्ड प्रणाम
सुनत उठे व्याकुल नृपति कहु सुमन्त कहं राम

भूप सुमन्त लीन्ह उर लाई॥ बूड़त कछु अधार जनु पाई।
सहित सनेह निकट बैठारी॥ पूछत राउ नयन भरि बारी॥
राम कुशल कहु सखा सनेही। कहं रघुनाथ लषण वैदेही॥
आनेहु फेरि कि बनहि सिधाये सुनत सचिव लोचन जल छाये
शोक विकल पुनि पूछ नरेसू। कहु सिय राम लषण संदेसू
राम रूप गुण शील सुभाऊ। सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ
राज सुनाइ दीन्ह बन बासू॥ सुनि मन भयउ न हरष हरासू
सो सुत बिछुरत गये न प्राना॥ को पापी जग मोहिं समाना।

दो० सखा राम सिय लषण जहं तहां मोहिं पहुंचाउ॥
नाहित चाहत चलन अब प्राण कहौं सत भाउ।

पुनि पुनि पूछत मंत्रिहि राऊ। प्रीतम सुअन संदेश सुनाऊ
सुनहु सखा सोइ करिय उपाऊ राम लषण सिय वेगि दिखाऊ
सचिव धीर धरि कहि मृदुबानी महाराज तुम पण्डित ज्ञानी

वीर सु धीर धुरन्धर देवा ॥५॥ साधु समाज सदा तुम सेवा
जन्म मरण सब दुख सुख भोगा हानि लाभ प्रिय मिलन वियोगा
काल कर्म बस होहिं गुसाईं ॥३॥ बर बस राति दिवस की नाईं
सुख हर्षहिं जड़ दुख बिलखाहीं दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं
धीरज धरहु विवेक विचारी ॥ छांड़िय शोच सकल हितकारी

दो० प्रथम बास तमसा भयउ । दूसर सुरसरि तीर ॥
न्हाय रहे जल पान करि सिय समेत दोउ बीर ॥

केवट कीन्ह बहुत सेवकाई ॥ सो यामिनि सिंगवेर गवाँई ॥
होत प्रात बट क्षीर मँगावा ॥ जटा मुकुट निज शीश बनावा
राम सखा तब नाव मँगाई ॥। प्रिया चढ़ाइ चले रघुराई ॥
लषण धरे धनु बाण बनाई ॥ आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई
विकल विलोकि मोहिं रघुबीरा बोले मधुर बचन धरि धीरा ॥
तात प्रणाम तात सन कहेऊ । बार बार पद पंकज गहेऊ ॥
करब पाय परि बिनय बहोरी । तात करिय जनि चिंता मोरी ।
बन मग मंगल कुशल हमारे । कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे ।

छं० तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ।
प्रतिपालि आयसु कुशल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं
जननी सकल परितोष करि यों पाय करि बिनती घनी
तुलसी करेहु सोइ यतन जेहि बिधि कुशल रह कोशलधनी

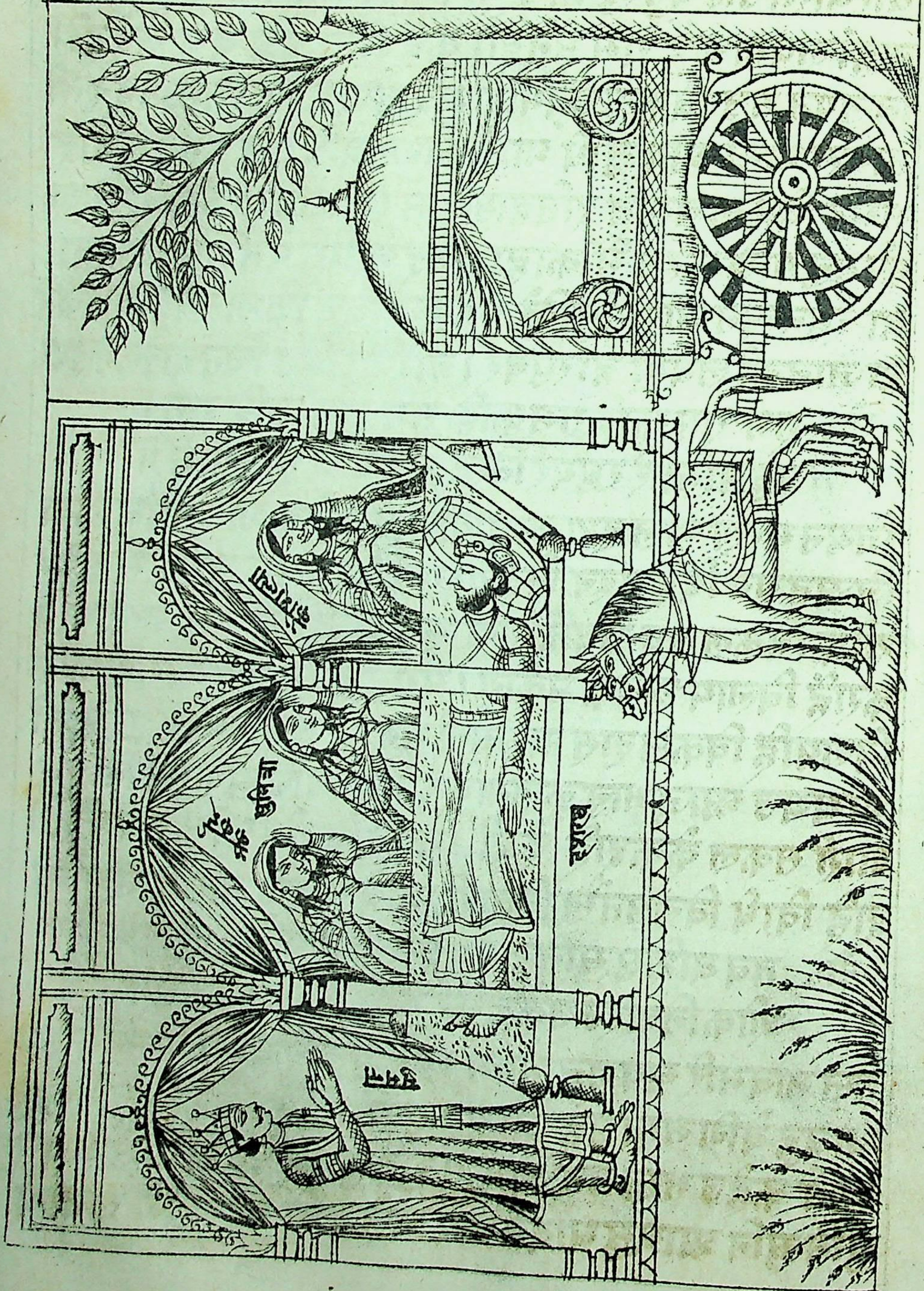
सो० गुरु सन कहब संदेश । बार बार पद पद्म गहि ॥
करब सोइ उपदेश ॥ जेहि न शोच मोहिं अवधपति

पुर जन परिजन सकल निहोरी । तात सुनायहु विनती मोरी ॥।
सोइ सब भांति मोर हितकारी ॥। जाते रह नर नाह सुखारी ॥
कहब संदेश भरत के आये ॥। नीति न तजब राज पद पाये
पालहु प्रजहि कर्म मन बानी ॥ सेयहु मातु सकल सम जानी

और निबाहब भायप भाई ॥ करि पितु मातु सुजन सेवकाई
तात भांति तेहि राखब राऊ ॥ शोच मोर जेहि करहिं न काऊ
लषण कहेउ कछु बचन कठोरा बरजि राम पुनि मोहिं निहोरा
बार बार निज शपथ दिवाई । कहब न तात लषण लरिकाई
दो॰ कहि प्रणाम कछु कहन लिय सिय भइ शिथिल सनेह
थकित वचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह
तेहि अवसर रघुवर रुख पाई । केवट पारहि नाव चलाई ॥
रघुकुल तिलक चले इहि भांती देखेउँ ठाढ़ कुलिश धरि छाती
मैं आपन किमि कहब कलेशू । जिअत फिरेउँ ले राम संदेशू
अस कहि सचिव वचन रहि गयऊ हानि गलानि शोच वस भयऊ
सुनत सुमन्त्र वचन नर नाहू ॥ परेउ धरणि उर दारुण दाहू
तलफत विषम मोह मन मापा । माजा मनहु मीन कहँ व्यापा
करि विलाप सब रोवहिं रानी । महा विपति किमि जाइ बखानी
सुनि विलाप दुखहू दुख लागा धीरज हू कर धीरज भागा ॥
दो॰ भयउ कोलाहल अवध अति सुनि नृप राउर सोर
विपुल विहग वन परेउ निशि मानहु कुलिश कठोर
प्राण कण्ठगत भयउ भुआलू मणि विहीन जिमि व्याकुल व्यालू
इन्द्रिय सकल विकल भइ भारी । जनु सर सरसिज वन विनु बारी
कौशल्या नृप दीख मलीना ॥ रवि कुल रवि अथयं जनु दीना
उर धरि धीर राम महतारी ॥ । बोली वचन समय अनुहारी
नाथ समुझि मन करिय विचारू राम वियोग पयोधि अपारू ।
कर्णधार तुम अवधि जहाजू । चढ़ेउ सकल प्रिय बनिक समाजू
धीरज धरिय तो पाइय पारू । नाहित बूड़हि सब परि वारू
जौं जिय धरिय विनय पिय मोरी राम लषण सिय मिलब बहोरी
दो॰ प्रिया वचन मृदु सुनत नृप चितयउ आँखि उघारि

तलफत मीन मलीन जनु सींचत शीतल बारि ॥
धरि धीरज उठि बैठु भुआलू । कहु सुमन्त कहँ राम कृपालू
कहां लषण कहँ राम सनेही। कहँ प्रिय पुत्र बधू बैदेही।
विलपत राउ विकल बहुभांती भइ युग सरिस सिरातिन राती
तापस अन्ध शाप सुधि आई कौशल्यहिं सब कथा सुनाई
भयउ विकल बरनत इतिहासा राम रहित धिक जीवन आसा
सो तनु राखि करब मैं काहा । जेइ न प्रेम पन मोर निबाहा
हा रघुनन्दन प्राण पिरीते ।।। तुम बिन जिअत बहुत दिन बीते
हा जानकी लषण हा रघुबर । हा पितु हित चित चातक जलधर
दो० राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुबर बिरह राउ गये सुर धाम ॥
जियन मरण फल दशरथ पावा अंड अनेक अमल यश छावा
जिअत राम बिधु बदन निहारी। राम बिरह मरि मरण सँवारी।
शोक विकल सब रोवहिं रानी रूप शील बल तेज बखानी ॥
करहिं विलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमि तल बारहिं बारा
विलपहिं विकल दास अरु दासी घर घर रुदन करहिं पुर वासी
अथयउ आजु भानु कुल भानू धर्म अवधि गुण रूप निधानू
गारी सकल केकइहि देहीं । नयन विहीन कीन्ह जग जेहीं।
इहि विधि विलपत रैन बिहानी आये सकल महा मुनि ज्ञानी
दो० तब वशिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास
शोक निवारेउ सकल कर निज विज्ञान प्रकाश ॥
तेल नाव भरि नृप तनु राखा । दूत बुलाइ बहुरि अस भाषा।
धावहु वेगि भरत पहँ जाहू । नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू
इतनै कहेउ भरत सन जाई ।। गुरु बुलाइ पठये दोउ भाई ॥
मुनि सुनि आयसु धावन धाये चले वेगि वर बाजि लजाये

सुमन्त को श्री रामचन्द्र लक्ष्मण जानकी जी समेत वन में पहुंचा कर अति विकल अयोध्या को ॥ लौट आना और राजा दशरथ को श्रीरामचन्द्र के वियोग में सुरधाम सिधारना



अनरथ अवध अरंभेउ जबते। कुसगुन होहिं भरत कहँ तबते
देखहिं राति भयानक सपना ।। जागि करहिं कटु कोटि कलपना।
बिप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना ।। शिव अभिषेक करहिं बिधिनाना
मागहिं हृदय महेश मनाई ।। कुशल मातु पितु परिजन भाई
दो० इहि विधि सोचत भरत मन धावन पहुंचे आइ।
गुरु अनुशासन श्रवण सुनि चले गणेश मनाइ।
चले समीर बेग हय हांके ।।। लांघत सरित शैल बन बांके।
हृदय सोच बड़ कछु न सोहाई। अस जानहिं जिय जाउँ उड़ाई
एक निमेष बरष सम जाई। इहि बिधि भरत नगर नियराई
असगुन होहिं नगर पैठारा। रटहिं कुभांति कुखेत करारा
खर शृगाल बोलहिं प्रतिकूला सुनि सुनि होहि भरत उर शूला
श्रीहत सर सरिता बन बागा। नगर बिशेष भयावन लागा।
खग मृग हय गय जाहिं न जोये राम बियोग कुरोग बिगोये।
नगर नारि नर निपट दुखारी ।। मनहुं सबनि सब सम्पति हारी।
दो० पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवहिं जोहारहिं जाहिं
भरत कुशल पूछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं
हाट बाट नहिं जाइ निहारी। जनु पुर दशदिशि लागि दवारी
आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि। हरषी रबिकुल जलरुह चंदिनि
सजि आरती मुदित उठि धाई। द्वारहि भेंटि भवन लै आई ।।
भरत दुखित परिवार निहारी ।। मानहु तुहिन बनज बन मारी।
कैकेयी हर्षित इहि भांती ।। मनहुं मुदित दव लाइ किराती
सुतहि ससोच देखि मन मारे ।। पूछति नैहर कुशल हमारे।।
सकल कुशल कह भरत सुनाई। पूछी निज कुल कुशल भलाई
कहु कहँ तात कहाँ सब माता। कहँ सिय राम लषण प्रिय भ्राता
दो० सुनि सुत बचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन ।।।

भरत श्रवण मन शूल सम। पापिनि बोली बैन

तात बात मैं सकल संवारी। भइ मंथरा सहाय बिचारी।
कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ
सुनत भरत भये बिकल बिषादा जनु सहमेउ करि केहरि नादा
तात तात हा तात पुकारी ॥ परेउ भूमि तल व्याकुल भारी
चलत न देखन पायउँ तोहीं। तात न रामहिं सौंपेहु मोही।
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी। कहु पितु मरण हेतु महतारी
सुनि सुत बचन कहति कैकेई। मर्म पांछि जनु माहुर देई॥
आदिहि ते सब आपनि करणी कुटिल कठोर मुदित मन बरणी

दो० भरत हि बिसरेउ पितु मरण सुनत राम बन गौन
हेतु अपुन पुनि जानि जिय थकित रहे धरि मौन

बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति मनहुँ जरे पर लोन लगावति
तात राउ नहिं सोच न योगू ॥ बिढ़इ सुकृत जस कीन्हेउ भोगू
जीवत सकल जन्म फल पाये। अन्त अमरपति सदन सिधाये
अस अनुमानि सोच परिहरहू सहित समाज राज पुर करहू।
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारा पाके छत जनु लाग अंगारा
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा। पापिनि सबहि भांति कुलनाशा
जो पै कुरुचि रही अस तोही। जनमत काहे न मारेसि मोही
पेड़ काटि तैं पल्लव सींचा ॥ मीन जिअन हित बारि उलीचा

सो० हंस बंश दसरथ जनक। राम लखण से भाइ॥
जननी तूं जननी भई। बिधि तें कहा बसाइ।

जब तैं कुमति कुमत मन ठयऊ खंड खंड होइ हृदय न गयऊ
बर मांगत मन भइ नहिं पीरा। जरि न जीह मुँह परेउ न कीरा
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही। मरण काल बिधि मति हरि लीन्ही
बिधिहु न नारि हृदय गति जानी सकल कपट अघ अवगुण खानी

सरल सुशील धर्म रत राऊ ॥ सो किमि जानहि तीय सुभाऊ
अस को जीव जन्तु जग माहीं। जेहि रघुनाथ प्राण प्रिय नाहीं
भे अति अहित राम तेउ तोहीं। को तू अहसि सत्य कहु मोहीं
जो हसि सो हसि मुह मसि लाई। आँखि ओट उठि बैठहु जाई।

दो० राम विरोधी हृदय ते। प्रगट कीन्ह विधि मोहिं
मो समान को पातकी। बादि कहौं कछु तोहिं

सुनि शत्रुघ्न मातु कुटिलाई ॥ जरहिं गात रिसि कछु न बसाई
तेहि अवसर कुबरी तहं आई। बसन विभूषण विविधि बनाई
लखि रिसि भरेउ लषण लघु भाई बरत अनल घृत आहुति पाई
हुमुकि लात तकि कूबर मारा ॥ परि मुह भरि महि करति पुकारा
कूबर टूटेउ फूट कपारू ॥ ॥ दलित दशन मुख रुधिर प्रचारू
आहि दइय मैं काह नशावा। करत नीक फल अनइस पावा
सुनि रिपुहन लषि नख शिख खोटी लगे घसीटन धरि धरि झोंटी
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई। कौशल्या पहँ गे दोउ भाई।

दो० मलिन वसन विवरण विकल कृश शरीर दुखभार
कनक कलप वर बेलि बन मानहुं हनी तुषार ॥

भरतहि देखि मातु उठि धाई ॥ मूर्छित अवनि परी झँव आई
देखत भरत विकल भये भारी। परे चरण तन दशा बिसारी।
मातु तात कहँ देहि दिखाई। कहँ सिय राम लषण दोउ भाई
कैकयि कत जनमी जग मांझा। जो जनमी भइ काहे न बांझा
कुल कलंक जेहि जनमेउ मोही अपयश भाजन प्रियजन द्रोही
को त्रिभुवन मोहिं सरिस अभागी गति असि तोरि मातु जेहि लागी
पितु सुरपुर बन रघुकुल केतू ॥ मैं केवल सब अनरथ हेतू ॥
धिक मोहिं भयेउ वेणु बन आगी दुसह दाह दुख दूषण भागी

दो० मातु भरत के वचन मृदु। सुनि पुनि उठी संभारि।

लिये उठाइ लगाइ उर। लोचन मोचति बारि ॥

सरल सुभाय माय उर लाये ॥। अति हित मनहुं राम फिरि आये
भेटेउ बहुरि लषण लघु भाई ॥ शोक सनेह न हृदय समाई ॥।
देखि सुभाव कहत सब कोई । राम मातु अस काहे न होई ॥
माता भरत गोद बैठारे ॥४॥ आंसु पोछि मृदु वचन उचारे
अजहुं बच्छ बलि धीरज धरहू। कुसमय समुझि शोक परिहरहू
जनि मानहु जिय हानि गलानी काल कर्म गति अघटित जानी
काहुहि दोष देहु जनि ताता ॥भा मोहिं सब विधि बाम विधाता
जो ऐसेहु विधि मोहिं जियावा। अजहुं को जानै का तेहि भावा

दो॰ पितु आयसु भूषण बसन तात तजे रघुबीर ॥
विस्मय हर्ष न हृदय कछु पहिरे बल्कल चीर ॥

मुख प्रसन्न मन राग न रोषू ॥। सब कर सब विधि करि परितोषू
चले विपिन सुनि सिय संग लागी रहीं न राम चरण अनुरागी ॥।
सुनतहि लषण चले उठि साथा रहे न यतन किये रघुनाथा।
तब रघुपति सबही शिर नाई । चले संग सिय अरु लघु भाई
राम लषण सिय बनहिं सिधाये । गइ न संग न प्राण पठाये ॥
यह सब भा इन आंखिन आगे तउ न तजा तन जीव अभागे
मोहिं न लाज निज नेह निहारी। राम सरिस सुत मैं महतारी।
जिये मरे भल भूपति जाना ॥ मोर हृदय शत कुलिश समाना

दो॰ कौशल्या के वचन सुनि। भरत सहित रनिवास ॥
व्याकुल विलपत राजगृह मानहु शोक निवास ॥

विलपहिं विकल भरत दोउ भाई कौशल्या लिय हृदय लगाई।
भांति अनेक भरत समुझाये। कहि विवेक वर वचन सुनाये।
भरतहु मातु सकल समुझाई कहि पुराण श्रुति कथा सुहाई
छल विहीन शुचि सरल सुबानी बोले भरत जोरि युग पानी ॥

जे अघ मातु पिता गुरु मारे ॥ गाइ गोठ महि सुर पुर जारे ॥
जे अघ तिय बालक बध कीन्हे । मीत महीपति माहुर दीन्हे ॥
जे पातक उपपातक अहहीं ॥। कर्म वचन मन भव कवि कहहीं
ते पातक मोहिं होउ विधाता । जौं यह होइ मोर मत माता ॥
सो॰ जे परिहरि हरि हर चरण भजहिं भूत गण घोर
तिन्ह की गति मोहिं देउ विधि जौं जननी मत मोर
बेचहिं वेद धर्म दुहि लेहीं ॥। पिशुन पराव पाप कहि देहीं।
कपटी कुटिल कलह प्रिय क्रोधी वेद विदूषक विश्व विरोधी।
लोभी लम्पट लोल लवारा । जे ताकहिं पर धन पर दारा
पावउँ मैं तिनकर गति घोरा । जौं जननी यह सम्मत मोरा ॥
जे नहिं साधु संग अनुरागे ॥। परमारथ पथ विमुख अभागे।
जे न भजहि हरि नर तनु पाई। जिन्हहिं न हरि हर सुयश सुहाई
तजि श्रुति पंथ वाम पथ चलहीं वंचक विरचि भेष जग छलहीं
तिन्ह की गति शंकर मोहिं देऊ। जननी जौं यह जानौं भेऊ ॥
छं॰ मन वचन कर्म कृपाय तन कर हास मैं सुनु मातुरी॥
उर बसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी॥
अस कहत लोचन बहत जल तन पुलक नख लेखत मही
हिय लाय लिये बहोरि जननी जानि प्रभु पद रत सही
सो॰ मातु भरत के वचन सुनि सांचे सरल सुभाय ॥
कहत राम प्रिय तात तुम सदा वचन मन काय
राम प्राण तें प्राण तुम्हारे । तुम रघुपतिहि प्राण ते प्यारे
विधु विष चुवै स्रवै हिम आगी होइ वारि चर वारि विरागी।
भये मातु वरु मिटै न मोहू ॥ तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू।
मत तुम्हार अस जो जग कहहीं सो सपनेहु सुख सुगति न लहहीं
अस कहि मातु भरत हिय लाये। थन पय स्रवहिं नयन जल छाये

करत विलाप विपुल इहिभांती। बैठे बीति गई सब राती ॥१
वामदेव वशिष्ठ मुनि आये ॥ सचिव महाजन सकल बुलाये
मुनि बहु भांति भरत उपदेशे । कहि परमारथ वचन सुदेशे ॥
दो॰ तात हृदय धीरज धरहु। करहु जो अवसर आजु
उठे भरत गुरु वचन सुनि करन कहेउ सब काजु।
नृप तन वेद विहित अन्हवावा। परम विचित्र विमान बनावा ॥
गहि पद भरत मातु सब राखी। रही राम दरशन अभिलाषी।
चन्दन अगर भार बहु आये । अमित अनेक सुगन्ध सुहाये।
सरयु तीर रचि चिता बनाई ॥ जनु सुर पुर सोपान सुहाई।
या विधि दाह क्रिया सब कीन्ही विधिवत न्हाइ तिलांजलि दीन्ही
शोधि समृति सब वेद पुराना । कीन्ह भरत दश गात्र विधाना
जहं जस मुनिवर आयसु दीन्ही तहं तस सहस भांति सब कीन्ही
भये विशुद्ध दिये सब दाना ॥ धेनु बाजि गज बाहन नाना।
दो॰ सिंहासन भूषण वसन। अन्न धरणि धन धाम।
दिये भरत लहि भूमिसुर भे परि पूरण काम ॥
पितु हित भरत कीन्ह जस करणी सो मुख लाख जाइ नहिं वरणी
सुदिन शोधि मुनिवर तहं आये सकल महाजन सचिव बुलाये
बैठे राज सभा सब जाई ॥ पठये बोलि भरत दोउ भाई ॥
भरत वशिष्ठ निकट बैठारे ॥ नीति धर्म मय वचन उचारे
प्रथम कथा सब मुनिवर वरणी। कैकयि कठिन कीन्ह जस करणी
भूप धर्म व्रत सत्य सराहा ॥ । जेहि तनु परिहरि प्रेम निबाहा
कहत राम गुण शील सुभाऊ। सजल नयन पुलके मुनि राऊ।
बहुरि लषण सिय प्रीति बखानी शोक सनेह मगन मुनि ज्ञानी
दो॰ सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ
हानि लाभ जीवन मरण । यश अपयश विधि हाथ

अस विचारि केहि दीजिय दोषू । व्यर्थ काहि पर कीजिय रोषू ॥
तात विचार करहु मन माहीं । शोच योग दशरथ नृप नाहीं ॥
शोचिय विप्र जो वेद विहीना । तजि निज धर्म विषय लव लीना ।
शोचिय नृपति जो नीति न जाना । जेहि न प्रजा प्रिय प्राण समाना
शोचिय वैश्य कृपण धनवानू । जो न अतिथि शिव भक्ति सुजानू
शोचिय शूद्र विप्र अपमानी ॥ मुखर मान प्रिय ज्ञान गुमानी
शोचिय पुनि पति वंचक नारी कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी ।
शोचिय वटु निज व्रत परिहरई । जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई

दो० शोचिय गृही जो मोह वस करै धर्म पथ त्याग
शोचिय यती प्रपंचरत विगत विवेक विराग ॥

वैखानस सोइ शोचन योगू ॥ तप विहाय जेहि भावै भोगू ॥
शोचिय पिसुन अकारण क्रोधी जननि जनक गुरु बंधु विरोधी ।
सब विधि शोचिय पर अपकारी निज तन पोषक निर्दय भारी ।
शोचनीय सबही विधि सोई । जो न छांड़ि छल हरि जन होई
शोचनीय नहिं कोशल राऊ । भुवन चारि दश प्रगट प्रभाऊ
भयउ न अहै न अब होनिहारा । भूप भरत जस पिता तुम्हारा ।
विधि हरि हर सुरपति दिशनाथा वरणहिं सब दशरथ गुण गाथा

दो० कहहु तात केहि भांति कोउ करहि बड़ाई तासु ॥
राम लषण तुम शत्रुहन सरिस सुअन सुत जासु

सब प्रकार भूपति बड़ भागी । वादि विषाद करिय तेहि लागी
यह सुनि समुझि शोच परिहरहू शिर धरि राज रजायसु करहू ॥
राय राज पद तुम कहं दीन्हा । पिता वचन फुर चाहिय कीन्हा
तजे राम जेहि वचनहिं लागी । तन परिहरेउ राम विरहागी ।
नृपहि वचन प्रिय नहिं प्रिय प्राणा करहु तात पितु वचन प्रमाणा
करहु शीश धरि भूप रजाई ॥ है तुम कहं सब भांति भलाई

परसराम पितु आज्ञा राखी । मारी मात लोक सब साखी ।
तनय ययातिहि यौवन दयऊ । पितु आज्ञा अघ अयश न भयऊ ॥
दो० अनुचित उचित विचार तजि जे पालहिं पितु बैन ।
ते भाजन सुख सुयश के । बसहिं अमर पति ऐन ॥
अवशि नरेश वचन फुर करहू । पालहु प्रजा शोक परि हरहू ।
सुर पुर नृप पाइहि परि तोषू ॥ तुमकहं सुकृत सुयश नहिं दोषू
वेद विहित सम्मत सब हीका ॥ जेहि पितु देइ सो पावै टीका
करहु राज परिहरहु गलानी ॥ मानहु मोर बचन हित जानी ॥
सुनि सुख लहब राम वैदेही ॥ ॥ अनुचित कहब न पंडित केही
कौशल्यादि सकल महतारी ॥ ॥ तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारी ।
मरम तुम्हार राम सब जानहिं ॥ ॥ सो सब विधि तुम मन भल मानिहिं
सौंपेहु राज राम के आये ॥ ॥ सेवा करेहु सनेह सुहाये ॥ ॥
दो० कीजिय गुरु आयसु अवशि कहहिं सचिव करजोरि ।
रघुपति आये उचित जस तब तस करब बहोरि ।
कौशिल्या धरि धीरज कहई ॥ ॥ पूत पिता गुरु आयसु अहई
सो आदरिय करिय हित मानी ॥ तजिय विषाद काल गति जानी
बन रघुपति सुर पुर नर नाहू ॥ ॥ तुम इहि भांति तात कदराहू ॥
परिजन प्रजा सचिव सब अम्बा । तुमहीं सुत सब कर अवलम्बा
लखि विधि वाम काल कठिनाई । धीरज धरहु मातु बलि जाई ।
शिर धरि गुरु आयसु अनुसरहू । प्रजा पालि पुर जन दुख हरहू ।
गुरु के बचन सचिव अभिनंदन । सुनत भरत हिय जलरुह चंदन
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी ॥ ॥ शील सनेह सरल रस सानी ॥
छं० सानी सरल रस मातु बाणी सुनि भरत व्याकुल भये ॥
लोचन सरोरुह श्रवत सींचत विरह उर अंकुर नये ॥
सो दशा देखत समय तेहि विसरी सबहि सुधि देह की ।

तुलसी सराहत सकल सादर सींव सहज सनेह की।

सो॰ भरत कमल कर जोरि। धर्मधुरंधर धीर धरि॥
वचन अमिय जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहि

मोहिं उपदेश दीन्ह गुरु नीका। प्रजा सचिव सम्मत सबही का॥
मातु उचित पुनि आयसु दीन्हा अवशि शीश धरि चाहिय कीन्हा
गुरु पितु मातु स्वामि हित बानी। सुनि मन मुदित करिय भल जानी
उचित कि अनुचित किये विचारू धर्म जाइ शिर पातक भारू॥
तुम तौ देहु सरल सिख मोही॥ जो आचरत मोर हित होई॥
यद्यपि यह समुझत हौं नीके॥ तदपि होत परितोष न जी के॥
अब तुम बिनय मोरि सुनि लेहू। मोहिं अनुहरत सिखावन देहू
उत्तर देउं क्षमब अपराधू॥ दुखित दोष गुण गनहिं न साधू

दो॰ पितु सुरपुर सिय राम बन करन कहहु मोहि राज।
यहि ते जानहुं मोर हित कै आपन बड़ काज॥

हित हमार सिय पति सेवकाई सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई॥
मैं अनुमानि दीख मन माहीं॥ आन उपाय मोर हित नाहीं॥
शोक समाज राज केहि लेखे॥ लषण राम सिय पद बिनु देखे
बादि बसन बिनु भूषण भारू। बादि विरति बिनु ब्रह्म विचारू
सरुज शरीर बादि सब भोगा॥ बिनु हरिभक्ति जाय जप योगा
जाय देह बिन जीव सुखाई॥ बादि मोर सब बिनु रघुराई॥
जाउं राम पहँ आयसु देहू॥ एकहि आंक मोर हित येहू॥
मोहिं नृप करि आपन भल चहहू सो सनेह जड़ता बस कहहू॥

दो॰ कैकेयी सुत कुटिल मति। राम विमुख गत लाज॥
तुम चाहत सुख मोह बस मोहिं से अधम के राज

कहौं सांच सब सुनि पतियाहू। चाहिय धर्म शील नर नाहू॥
मोहिं राज हठि देहहु जबहीं॥ रसा रसातल जाइहि तबहीं॥

मोहिं समान को पाप निवासी। जेहि लगि सीयराम बन बासी ॥
राम राम कहँ कानन दीन्हा ॥। बिछुरत गमन अमर पुर कीन्हा
मैं शठ सब अनरथ कर हेतू। बैठ बात सब सुनउं सचेतू ॥
बिनु रघुबीर बिलोकिय बासू। रहे प्राण सहि जग उपहासू ॥
राम पुनीत विषय रस रूखे। लोलुप भूप भोग के भूखे ॥
कहं लगि कहउं हृदय कठिनाई निदरि कुलिश जेहि लही बड़ाई
दो० कारण ते कारज कठिन। होय दोष नहिं मोर ॥
कुलिश अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर।
कैकेयी भव तन अनुरागे ॥। पामर प्राण अघाइ अभागे।
जो प्रिय विरह प्राण प्रिय लागे देखब सुनब बहुत अब आगे
लषण राम सिय कहं बन दीन्हा पठय अमर पुर पति हित कीन्हा
लीन्ह विधवपन अपयश आपू दीन्हेउ प्रजहि शोक संतापू ॥
मोहिं दीन्ह सुख सुयश सुराजू कीन्ह कैकयी सब कर काजू ॥
इहि तें मोर काह अब नीका। तेहि पर देन कहहु तुम टीका
कैकयि जठर जन्मि जग माहीं। यह मोहिं कहं कछु अनुचित नाहीं
मोर बात सब विधिहि बनाई। प्रजा पंच कत करहु सहाई।
दो० ग्रह ग्रही त पुनि बातबस तेहि पुनि बीछी मार
ताहि पियाई वारुणी ॥ कहहु कवन उपचार
कैकयि सुअन योग जग जोई। चतुर विरंचि रचे मोहिं सोई ॥
दशरथ तनय राम लघु भाई ॥। दीन्ह मोहिं विधि बादि बड़ाई
तुम सब कहहु कढ़ावन टीका। राय राज सबही कहं नीका ॥
उत्तर देउं केहि विधि केहि केही। कहहु सुखे न यथा रुचि जेही।
मोहिं कुमातु समेत विहाई ॥ कहहु कहिहि को कीन्ह भलाई
मोहिं बिनु को सचराचर माहीं। जेहि सिय राम प्राण प्रिय नाहीं
परम हानि सब कहँ बड़ लाहू ॥ अदिन मोर नहिं दूषण काहू ॥

संशय शील प्रेमबस अहहू ॥ सबै उचित सब जो कछु कहहू
दो॰ राम मातु सुठि सरल चित मोपर प्रेम बिशेषि ॥
कहहि सुभाव सनेहबस मोरि दीनता देखि ॥
गुरु विवेक सागर जग जाना ॥ जिनहिं विश्व कर बदर समाना
मोकहं तिलक साजि सजि सोऊ भा विधि विमुख विमुख सब कोऊ
परिहरि राम सीय जग मांहीं ॥ कोउ न कहहि मोर मत नाहीं
सो मैं सुनव सहब सुख मानी ॥ अन्तहु कीच तहां जहं पानी
डर न मोहिं जग कहिहि कि पोचू पर लोकहु कर नाहिन शोचू
एकै बड़ उर दुसह दवारी ॥ मोहिं लगि भे सियराम दुखारी
जीवन लाहु लषण भल पावा । सब तजि राम चरण मन लावा
मोर जन्म रघुबर बन लागी ॥ झूठ काह पछिताउं अभागी ॥
दो॰ आपनि दारुण दीनता । सबहिं कहेउं समुझाय
देखे बिन रघुबीर पद । जिय की जरनि न जाय।
आन उपाय मोहिं नहिं सूझा ॥ को जिय की रघुबर बिनु बूझा
एकहि आंक इहै मन माहीं ॥ प्रात काल चलिहौं प्रभु पाहीं
यद्यपि मैं अनभल अपराधी । भइ मोहिं कारण सकल उपाधी
तदपि शरण सन्मुख मोहिं देखी । क्षमि सब करिहहिं कृपा विशेषी
शील सकुचि सुठि सरल सुभाऊ । कृपा सनेह सदन रघु राऊ ॥
अरिहक अनभल कीन्ह न रामा मैं शिशु सेवक यद्यपि वामा
तुम्ह पै पांच मोर भल मानी ॥ आयसु आशिष देहु सुबानी
जेहि सुनि विनय मोहिं जन जानी आवहिं बहुरि राम रजधानी
दो॰ यद्यपि जन्म कुमातु तें मैं शठ सदा सदोष ॥
आपन जानि न त्यागिहैं मोहिं रघुबीर भरोस
भरत वचन सब कहं प्रिय लागे राम सनेह सुधा सम पागे ॥
लोग वियोग विषम दुख दागे । मंत्र सजीव सुनत जनु जागे ॥

मातु सचिव गुरु पुर नरनारी। सकल सनेह विकल भैं भारी।
भरतहिं कहहिं सराहि सराही। राम प्रेम मूरति तनु आही ॥
तात भरत अस काहि न कहहू। प्राण समान राम प्रिय अहहू।
जो पामर आपनि जड़ताई ॥ तुमहिं सुगाइ मातु कुटिलाई
सो शठ कोटिक पुरुष समेता। बसहि कल्प शत नरक निकेता
अहि अघ अवगुण मणि नहिं गहई हरै गरल दुख दारिद दहई
दो॰ अवशि चलिय वन राम पहं भरत मंत्र भल कीन्ह।
शोक सिंधु बूड़त सबहि। तुम अवलम्बन दीन्ह ॥
भा सब के मन मोदन थोरा ॥ जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा
चलत प्रात लखि निर्णय नीके। भरत प्राण प्रिय भे सबही के ॥
मुनिहि वन्दि भरत हि शिर नाई। चले सकल घर विदा कराई ॥
धन्य भरत जीवन जग माहीं। शील सनेह सराहत जाहीं ॥
कहहिं परस्पर भा वड काजू ॥ सकल चलै कर साजहि साजू
जेहि राखहि घर रहु रखवारी। सो जानै जनु गरदनि मारी ॥
कोउ कह रहन कहिय नहिं काहू को न चहै जग जीवन लाहू
दो॰ जरै सु सम्पति सदन सुख सुहृद मातु पितु भाइ
सन्मुख होत जो राम पद करै न सहज सहाइ ॥
घर घर वाहन साजहि नाना। हर्ष हृदय परभात पयाना ॥
भरत जाइ घर कीन्ह विचारू। नगर वाजि गज भवन भंडारू
संपति सब रघुपति कै आही। जो विनु यतन चलों तजि ताही
तो परिणाम न मोरि भलाई ॥ पापि शिरोमणि सांइ दोहाई
करहि स्वामि हित सेवक सोई। दूषन कोटि देइ किन कोई ॥
अस विचारि शुचि सेवक बोले जे सपनेहु निज धर्म न डोले।
कहि सब मर्म धर्म सब भाषा। जो जेहि लायक सो तहं राखा
करि सब यतन राखि रखवारे। राम मातु पहं भरत सिधारे

दो० आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान॥
कहेउ सजावन पालकी सुखद सुखासन यान
चक चकई इव पुर नर नारी। चलत प्रात उर आरति भारी
जागत सब निशि भयउ बिहाना भरत बुलाये सचिव सुजाना।
कहेउ लेहु सब तिलक समाजू बनहिं देव मुनि रामहिं राजू॥
वेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे तुरत तुरंग रथ नाग सवारे॥
अरुन्धती अरु अगिनि समाजू रथ चढ़ि चले प्रथम मुनि राजू।
विप्र वृन्द चढ़ि वाहन नाना॥ चले सकल तप तेज निधाना।
नगर लोग सब सजि सजि याना चित्र कूट कहँ कीन्ह पयाना
शिबिका सुभग न जांइ बखानी चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी।
दो० सौंपि नगर सुचि सेवकन्हि सादर सबहि चलाइ
सुमिरि राम सिय चरण तब चले भरत दोउ भाइ।
राम दरश हित सब नर नारी॥ जनु करि करिणि चले तकि बारी
बन सिय राम समुझि मन माहीं सानुज भरत पयादेहि जाहीं॥
देखि सनेह लोग अनुरागे॥ उतरि चले हय गय रथ त्यागे
जाइ समीप राखि निज डोली। राम मातु मृदु बाणी बोली॥
तात चढ़हु रथ बलि महतारी। होइहि प्रिय परि वार दुखारी।
तुम्हरे चलत चलिहि सब लोगू सकल शोक कृश नहिं मग योगू
शिर धरि वचन चरण शिर नाई। रथ चढ़ि चलत भये दोउ भाई
तमसा प्रथम दिवस करि बासू दूसर गोमति तीर निवासू।
दो० पय अहार फल अशन इक निशि भोजन सब लोग
करत राम हित नेम ब्रत। परिहरि भूषण भोग॥।
सई तीर बसि चले बिहाने॥। शृंगवेर पुर सब नियराने॥।
समाचार सब सुने निषादा॥। हृदय विचार करै स विषादा॥
कारण कवन भरत बन जाहीं। हैं कछु कपट भाव मन माहीं

जो पै जिय न होति कुटिलाई। तौ कत लीन्ह संग कटकाई।
जानहिं सानुज रामहिं मारी ॥ करौं अकंटक राज सुखारी ॥
भरत न राज नीति उर आनी। तब कलंक अब जीवन हानी।
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा। रामहिं समर न जीतन हारा ॥
का आश्चर्य भरत अस करहीं। नहिंविषवेलि अमियफलफरहीं

दो॰ अस विचारि गुह ज्ञाति मन कहेउ सजग सब होहु
हयवासहु बोरहु तरणि कीजिय घाटा रोहु ॥

होहु संजोइ रोकहु घाटा। ठाटहु सकल मरण के ठाटा।
सन्मुख लोह भरत सन लेहू ॥ जियत न सुर सरि उतर न देहू
समर मरण पुनि सुरसरि तीरा। राम काज क्षण भंगु शरीरा ॥
भरत भाइ नृप मैं जन नीचू ॥ बड़े भाग अस पाइय मीचू ॥
स्वामि काजु करिहौं रण रारी ॥ यशलहु धवल भुवन दश चारी
तजहुं प्राण रघुनाथ निहोरे। दुहू हाथ मुद मोदक मोरे ॥
साधु समाज न जाकर लेखा। राम भक्त महं जासु न रेखा ॥
जाय जियत जग सो महि भारू। जननी यौवन विटप कुठारू ॥

दो॰ विगत विषाद निषादपति सबहि बढ़ाय उछाह
सुमिरि राम मांगेउ तुरत तरकस धनुष सनाह।

वेगहि भाइ सजहु संजोऊ ॥ सुनि रजाय कदराय न कोऊ
भले नाथ सब कहहिं सहर्षा। एकहि एक बढ़ावहिं कर्षा ॥
चले निषाद जुहारि जुहारी ॥ शूर सकल रण रुचै सुरारी ॥
सुमिरि राम पद पंकज पनहीं। भाथा बाधि चढ़ावहिं धनुहीं
आंगरि पहिरि कूंडि शिर धरहीं फरसा बांस सेल सम करहीं।
एक कुशल अति ओड़न खांड़े कूदहिं गगन मनहुं सिति छोड़े
निज निज साज समाज बनाई। गुह राउतहि जुहारे जाई।
देखि सुभट सब लायक जाने ॥ लै लै नाम सकल सनमाने।

दो० भाइहु लावहु धोख जनि आजु काज बड़ मोहु
सुनि सरोष बोले सुभट । बीर अधीर न होहु ॥

राम प्रताप नाथ बल तोरे ॥। करहिं कटक बिनु भट बिनु घोरे
जियत पांव नहिं पीछे धरहीं ।। रुंड मुण्ड मय मेदिनि करहीं ।
दीख निषाद नाथ भल टोलू ॥ कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू ॥
इतना कहत छींक भइ बांये ॥ कहेउ शकुनि अन्ह खेत सुहाये
बूढ़ एक कह शकुन विचारी ।भरतहि मिलिय न होइहि रारी
रामहिं भरत मनावन जाहीं ।। शकुन कहै अस विग्रह नाहीं
सुनि गुह कहै नीक कह बूढ़ा ।सहसा करि पछिताहिं विमूढ़ा
भरत सुभाव शील बिनु बूझे ।बड़ि हित हानि जानि बिनु जूझे

दो० गहहु घाट भट सिमिटि सब लेउ मर्म मिलि जाय
बूझि मित्र अरि मध्यगति तब तस करब उपाय

लखब सनेह सुभाव सुहाये ॥ बैर प्रीति नहिं दुरत दुराये ॥
अस कहि भेंट संजोवन लागे ।कंद मूल फल खग मृग मांगे
मीन पीन पाठीन पुराने ॥ ।।भरि भरि भार कहारन आने ॥
सकल साज सजि मिलन सिधाये मंगल मूल शकुन शुभ पाये
देखि दूरि तें कहि निज नामू ।। कीन्ह मुनीशहि दण्ड प्रणामू
जानि राम प्रिय दीन्ह अशीशा भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीशा
राम सखा सुनि स्यंदन त्यागा ।चले उतरि उमगत अनुरागा।
गांव जाति गुह नांव सुनाई ॥ कीन्ह जुहारि माथ महि लाई

दो० करत दण्डवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ
मनहुं लषण सन भेंट भइ प्रेम न हृदय समाइ ॥

भेंटे भरत ताहि अति प्रीती ॥ लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती।
धन्य धन्य धुनि मंगल मूला । सुर सराहि तेहि बरषहिं फूला
लोक वेद सब भांतिहिं नीचा। जासु छांह छुइ लेइय सींचा।

तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता। मिलत पुलक परिपूरित गाता॥
राम राम कहि जे जमुहाहीं। तिनहिं न पापपुंज समुहाहीं॥
इहि तौ राम लाय उर लीन्हा। कुल समेत जग पावन कीन्हा॥
करम नास जल सुरसरि परई। तेहि को कहहु शीश नहिं धरई॥
उलटा नाम जपत जग जाना। बाल्मीकि भे ब्रह्म समाना॥
दो० स्वपच सवर खस मन जड़ पांवर कोल्ह किरात।
राम कहत पावन परम। होत भुवन विख्यात॥
नहिं अचरज युग युगचलि आई। केहि न दीन्ह रघुबीर बड़ाई॥
राम नाम महिमा सुर कहहीं। सुनि सुनि अवध लोग सुख लहहीं॥
राम सखहि मिलि भरत सप्रेमा। पूछहिं कुशल सु मंगल क्षेमा॥
देखि भरत कर शील सनेहू। भा निषाद तेहि समय विदेहू॥
सकुच सनेह मोद मन बाढ़ा। भरतहि चितवत इकटक ठाढ़ा॥
धरि धीरज पद बन्दि बहोरी। विनय सप्रेम करत कर जोरी॥
कुशल मूल पद पंकज पेखी। मैं तिहु काल कुशल निज लेखी॥
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे। सहित कोटि कुल मंगल मोरे॥
दो० समुझि मोरि करतूति कुल प्रभु महिमा जिय जोइ।
जो न भजे रघुबीर पद। जग विधि वंचित सोइ॥
कपटी कायर कुमति कुजाती। लोक वेद बाहिर सब भांती॥
राम कीन्ह आपन जब हीते। भयउं भुवन भूषण तब हीते॥
देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई। मिले बहोरि लषण लघु भाई॥
कहि निषाद निज नाम सुबानी। सादर सकल जुहारी रानी॥
जानि लषण सम देहिं असीसा। जियहु सुखी जनु लाख बरीसा॥
निरखि निषाद नगर नर नारी। भये सुखी जनु लषण निहारी॥
कहहिं लहेउ यह जीवन लाहू। भेंटेउ राम भद्र भरि बाहू॥
सुनि निषाद निज भाग बड़ाई। प्रमुदित मन लै चलेउ लिवाई॥

दो॰ सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाइ
घर तरु तर सर बाग बन बासबनायउ जाइ ॥
सृंगबेर पुर भरत दीख जब ।भयंसनेहबस अंगशिथिल तब
सोहत दिये निषादहिं लागू ॥ जनु तनु धरे विनय अनुरागू।
इहि विधि भरत सेन सब संगा। दीख जाइ जग पावनि गंगा।
राम घाट कहं कीन्ह प्रणामा । भा मन मगन मिले जनु रामा
करहिं प्रणाम नगर नर नारी ॥ मुदित ब्रह्म मैं वारि निहारी।
करि मज्जन मागहिं कर जोरी। रामचन्द्र पद प्रीति न थोरी।
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू ॥ सकल सुखद सेवक सुर धेनू
जोरि पाणि वर मांगौं एहू ॥। सीय राम पद सहज सनेहू ॥
दो॰ इहि विधि मज्जन भरत करि गुरु अनुशासन पाइ
मातु नहानी जानि सब। डेरा चले लिवाइ ॥
जहं तहं लोगन्ह डेरा कीन्हा। भरत सोध सबही कर लीन्हा
गुरु सेवा करि आयसु पाई। राम मातु पहं गे दोउ भाई।
चरण चांपि कहि कहि मृदु बानी जननी सकल भरत सनमानी।
भाइहि सौंपि मातु सेव काई। आप निषादहि लीन्ह बुलाई।
चले सखा कर सो कर जोरे ॥ शिथिल शरीर सनेह न थोरे ॥
पूछत सखहि सो ठांव देखाऊ। नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ ॥
जहं सिय राम लषण निशि सोये कहत भरे जल लोचन कोये ॥
भरत वचन सुनि भयउ विषादू। तुरत तहां लै गयउ निषादू
दो॰ जहं शिंशिपा पुनीत तरु रघुवर किय विश्राम
अति सनेह सादर भरत कीन्हेउ दण्ड प्रणाम
कुश साथरी निहारि सुहाई ॥ कीन्ह प्रणाम प्रदक्षिण लाई
चरण रेख रज आंखिन लाई। बनैन कहत प्रीति अधिकाई
कनक बिंदु दुइ चारि क देखे। राखे शीश सीय सम लेखे।

सजल विलोचन हृदय गलानी । कहत सखा मन बचन सुवानी ॥
श्री हत सीय विरह दुति हीना । यथा अवध नर नारि मलीना ॥
पिता जनक देउं पटतर केही । करतल भोग योग जग जेही ॥
ससुर भानु कुल भानु भुआलू । जेहि सिहात अमरावति पालू ॥
प्राण नाथ रघुनाथ गुसाईं ॥ । जो बड़ होत सो राम बड़ाई ।

दो० पति देवता सुतीय मणि । सीय साथरी देखि ॥
विहरत हृदय न हहरि मम पवि ते कठिन विशेषि ॥

लालन योग लषण लघु लोने । भे न भाइ अस अहहिं न होने ।
पुर जन प्रिय पितु मातु दुलारे । सिय रघुवीर हि प्राण पियारे ॥
म्रदु मूरति सुकुमार सुभाऊ ॥ तात बाउ तन लागि न काऊ ॥
ते बन बसहिं विपति सब भांती । निदरे कोटि कुलिश यह छाती ॥
राम जनमि जग कीन्ह उजागर । रूप शील सुख सब गुण सागर ॥
पुर जन परिजन गुरु पितु माता । राम सुभाव सबहिं सुख दाता ।
वैरिउ राम बड़ाई करहीं ॥ । बोलनि मिलनि विनय मन हरहीं ॥
शारद कोटि कोटि शत शेषा । करि न सकहिं प्रभु गुण लव लेशा ॥

दो० सुख स्वरूप रघुवंश मणि मंगल मोद निधान ॥
ते सोवत कुश डासि महि विधि गति अति बलवान ॥

राम सुना दुख कान न काऊ ॥ जीवन तरु जिमि जुगवत राऊ ॥
पलक नैन फणि मणि जेहि भांती । जुगवहि जननि सकल दिन राती ॥
ते अब फिरत विपिन पद चारी । कंद मूल फल फूल अहारी ॥
धिक कैकेयि अमंगल मूला । भइसि प्राण प्रीतम प्रतिकूला ॥
मैं धिक धिक अघ उदधि अभागी । सब उतपात भयउ जेहि लागी ॥
कुल कलंक करि सृजेउ विधाता । सांइ द्रोह मोंहिं कीन्ह कुमाता ॥
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू ॥। नाथ करिय कत वादि विषादू ॥
राम तुमहिं प्रिय तुम प्रिय रामहिं । यह निरदोष दोष विधि वामहिं ॥

छं० विधिवामकीकरणीकठिनजेहिमातु कीन्ही बावरी ॥
तेहि राति पुनिपुनि करहिं प्रभु सादर सराहन रावरी
तुलसी न तुमसों राम प्रीतम कहत हौं सौंहें किये
परिणाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये।
सो० अन्तर्यामी राम । सकुच सप्रेम कृपायतन ॥
चलिय करिय विश्राम यह विचार दृढ़ आनि मन
सखा वचन सुनि उर धरि धीरा ॥ वास चले सुमिरत रघुवीरा ॥
यह सुधि पाइ नगर नर नारी ॥ चले विलोकन आरत भारी ।
परदक्षिण करि करहिं प्रणामा । देहिं कैकयिहि खोरि निकामा
भरिभरि वारि विलोचन लेहीं ॥ वाम विधातहि दूषण देहीं ॥
एक सराहहिं भरत सनेहू ॥ ॥ कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू ।
निंदहिं आपु सराहि निषादहि । को कहि सकै विमोह विषादहि
इहि विधि राति लोग सब जागा । भा भिनसार गुदारा लागा ॥
गुरुहि सुनाव चढ़ाइ सुहाई ॥ नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥
दण्ड चारि महँ भा सब पारा । उतरि भरत तब सबहि सँभारा
दो० प्रातक्रिया करि मातुपद बन्दि गुरुहिं सिर नाइ ॥
आगे किये निषाद गण । दीन्हेउ कटक चलाइ
कियें निषादनाथ अगुआई । मातु पालकी सकल चलाई ।
साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा ॥ विप्रन सहित गवन गुरु कीन्हा
आप सुरसरिहि कीन्ह प्रणामू । सुमिरे लषण सहित सिय रामू
गवने भरत पयादेहि पाये ॥ । कोतल संग जाहिं डोरि आये
कहहिं सुसेवक वारहि बारा । होइय नाथ अश्व असवारा ॥
राम पयादेहि पाँव सिधाये ॥ हम कहँ रथ गज बाजि बनाये
शिर भर जाउं उचित अस मोरा सबतें सेवक धर्म कठोरा ॥
देखि भरत गति सुनि मृदु बानी सब सेवक गण गरहिं गलानी

दो० भरत तीसरे पहर कहँ । कीन्ह प्रवेश प्रयाग ॥
कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुराग

झलका झलकत पायन कैसे । पंकज कोष ओस कण जैसे ।
भरत पयादेहि आये आजू ॥ देखि दुखित मुनि सकल समाजू
खबरि लीन्ह सब लोग अन्हाये । कीन्ह प्रणाम त्रिवेणिहि आये
सविधि सिता सित नीर अन्हाने । दिये दान महि सुर सन माने ।
देखत श्यामल धवल हिलोरे ॥ पुलक शरीर भरत कर जोरे ॥
सकल काम प्रद तीरथ राऊ ॥ वेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ ।
मांगौं भीख त्यागि निज धरमू । आरत काह न करहिं कुकरमू
अस जिय जानि सुजानि सुदानी सफल करौं जग याचक बानी ॥

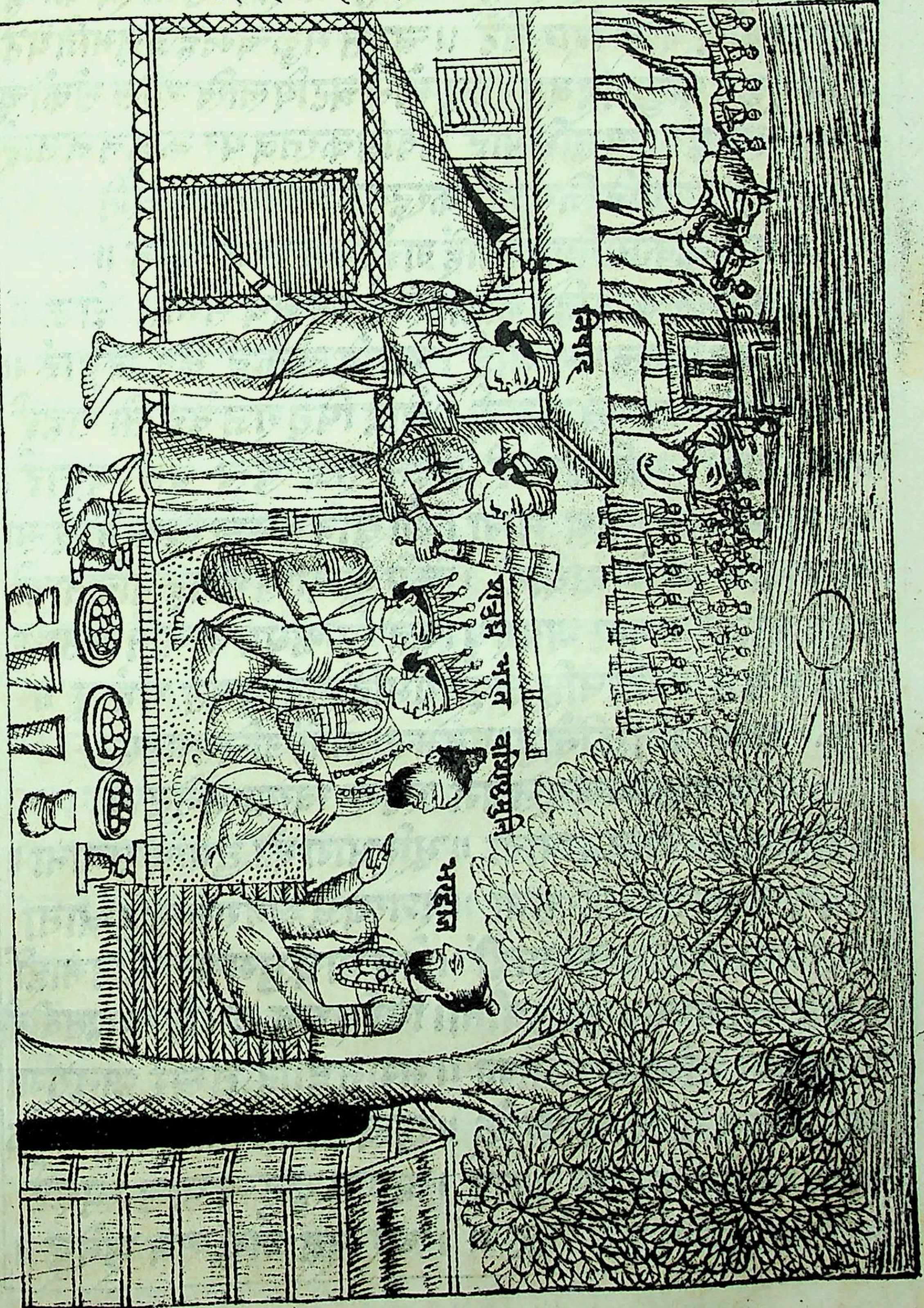
दो० अर्थ न धर्म न काम रुचि गति न चहौं निर्वान ॥
जन्म जन्म रति राम पद । यह वरदान न आन ॥ ॥

जानहि राम कुटिल करि मोही । लोग कहैं गुरु साहिब द्रोही
सीता राम चरण रति मोरे ॥ । अनुदिन बढ़ौ अनुग्रह तोरे ।
जलद जन्म भरि सुरति विसारे । याचक जल पवि पाहन डारे ॥
चातक रटनि घटे घटि जाई ॥ बढ़े प्रेम सब भांति भलाई ॥
कनकहि वान चढ़ै जिमि दाहे तिमि प्रीतम पद नेम निबाहे
भरत वचन सुनि माझ त्रिवेनी भै मृदु वाणि सुमंगल देनी ॥
तात भरत तुम सब विधि साधू । राम चरण अनुराग अगाधू ।
बादि गलानि करहु मन माहीं ॥ तुम सम रामहि प्रिय कोउ नाहीं ।

दो० तन पुलके हिय हर्ष सुनि वेणि वचन अनुकूल
भरत धन्य कहि धन्य कहि नभ सुर वरषहिं फूल ॥

प्रमुदित तीरथ राज निवासी । वैषानस बटु गृही उदासी ॥
कहहिं परस्पर मिलि दश पांचा भरत सनेह शील शुचि सांचा
सुनत राम गुण ग्राम सुहाये । भरद्वाज मुनि वर पहं आये ॥

भरद्वाज मुनि के आश्रम पर भरत शत्रुघ्न वशिष्ठादि अयोध्या वासियों का जाना
और भरत और भरद्वाज मुनि को परस्पर वार्तालाप करना



दण्ड प्रणाम करत मुनि देखे । मूरति वंत भाग निज लेखे ॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे ॥ दीन्ह असीष कृतारथ कीन्हे
आसन दीन्ह नाइ सिर बैठे ॥ चहत सकुच गृह जनु भजि पैठे
मुनि पूछब कछु यह बड़ सोचू बोले ऋषि लखि शील संकोचू
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई । विधि करतब पर कछु न बसाई
सो० तुम गलानि जिय जनि करहु समुझि मातु करतूति
तात केकयिहि दोष नहिं गई गिरा मति धूति ॥
इहौ कहत भल कहिहि न कोऊ। लोक वेद बुध सम्मत दोऊ ॥
तात तुम्हार विमल यश गाई । पाइहि लोकहु वेद बड़ाई ॥
लोक वेद सम्मत सब कहई । जेहि पितु राज देइ सो लहई
राउ सत्य व्रत तुमहिं बुलाई ॥ देत राज सुख धर्म बड़ाई।
राम गवन वन अनरथ मूला । जो सुनि सकल विश्व भे शूला
सो भावी बस रानि अयानी ॥ करि कुचालि अंतहु पछितानी
तहउँ तुम्हार अलप अपराधू। कहै सो अधम अयान असाधू
करतेहु राज तुमहिं नहि दोषू। रामहिं होत सुनत संतोषू ॥
सो० अब अति कीन्हेहु भरत भल तुमहिं उचित मत एहु
सकल सुमंगल मूल जग रघुबर चरण सनेहु ॥
सो तुम्हार धन जीवन प्राना ॥ भूरि भाग को तुमहिं समाना ॥
सो तुम्हार आचरज न ताता ॥ दशरथ सुअन राम लघु भ्राता
सुनहु भरत रघुपति मन माहीं ॥ प्रेम पात्र तुम सम कोउ नाहीं
लषण राम सीतहि अति प्रीती। निशि सब तुमहिं सराहत बीती
जाना मर्म नहात प्रयागा ॥ मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा
तुम पर अस सनेह रघुबर के ॥ सुख जीवन जग जस जड़ नर के
यह न अधिक रघुबीर बड़ाई । प्रणत कुटुम्ब पाल रघुराई
तुम तो भरत मोर मत एहू ॥ । धरे देह जनु राम सनेहू ॥

दो॰ तुम कंह भरत कलंक यह हम सब कहं उपदेश
राम भक्ति रस सिंधु हित । भो यह समय गणेश
नव विधु विमल तात यश तोरा । रघुवर किंकर कुमुद चकोरा ।
उदय सदा अथइहि कबहूंना । घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना ।
कोक त्रिलोक प्रीति अति करही । प्रभु प्रताप रवि छविहि न हरही ।
निशि दिन सुखद सदा सब काहू । ग्रसहि न कैकयि करत बराहू
पूरण राम सुप्रेम पियूषा ॥ । गुरु अपमान दोष नहिं दूषा ॥
राम भक्ति अब अमिय अघाहू । कीन्हेउ सुलभ सुधा वसु धाहू
भूप भगीरथ सुरसरि आनी ॥ । सुमिरत सकल सुमंगल खानी
दशरथ गुण गण वरणि न जाहीं । अधिक कहा जेहि सम जग नाहीं
दो॰ जासु सनेह सकोच बस । राम प्रगट भे आय ॥
जे हर हिय नयनन्ह कबहु निरखे नाहिं अघाय ॥
कीरति विधु तुम कीन्ह अनूपा । जहं बस राम प्रेम मृग रूपा
तात गलानि करहु जिय जाये । डरहु दरिद्रहि पारस पाये ॥ ।
सुनहुं भरत हम झूठ न कहहीं ॥ उदासीन तापस बन रहहीं ।
सब साधन कर सुफल सुहावा । लषण राम सिय दरशन पावा
तेहि फल कर फल दरश तुम्हारा सहित प्रयाग सुभाग हमारा ।
भरत धन्य तुम जग यश लयऊ । कहि अस प्रेम मगन मुनि भयऊ
सुनि मुनि वचन सभासद हरषे ॥ साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥
धन्य धन्य धुनि गगन प्रयागा ॥ सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा
दो॰ पुलक गात हिय राम सिय सजल सरोरुह नैन ॥
करि प्रणाम मुनि मंडलिहि बोले गदगद बैन ॥।
मुनि समाज अरु तीरथ राजू । सांचेहु शपथ अघाइ अकाजू
इहि थल जौ कछु कहिय बनाई इहि सम नहिं कछु अघ अधमाई
तुम सरवज्ञ कहौं सति भाऊ ॥। उर अन्तर यामी रघुराऊ ॥

मोहिं न मातु करतब कर शोचू। नहिं दुख जिय जग जानहि पोचू ॥
नाहिन डर बिगरहि पर लोकू। पितहु मरे कर नाहिन शोकू ॥
सुकृत सुयश भरि भुवन सुहाये। लक्ष्मण राम सरिस सुत पाये ॥
राम विरह तजि तन क्षणभंगू। भूप शोच कर कवन प्रसंगू ॥
राम लषण सिय बिनु पग पनहीं। करि मुनिवेष फिरहिं बन बनहीं ॥

दो॰ अजिन बसन फल अशन महि शायन डासि कुश पात
बसि तरुतर निति सहत दुख हिम तप बरषा बात ॥

यह दुख दाह दहै निति छाती। भूख न बासर नींद न राती ॥
यह कुरोग कर औषधि नाहीं। शोधेउं सकल विश्व मन माहीं ॥
मातु कुमत बढ़ई अघ मूला ॥ तेहि हमार हित कीन्ह बसूला ॥
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुयंत्रू। गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्रू ॥
मोहिं लगी यह कुठाट तेहि ठाटा। घालिसि सब जग बारहि बाटा ॥
मिटै कुयोग राम फिरि आये। बसै अवध नहिं आन उपाये ॥
भरत वचन सुनि मुनि सुख पाई। सबहि कीन्ह बहु भांति बड़ाई ॥
तात करहु जनि शोच विशेषी। सब दुख मिटिहि राम पद देखी ॥

दो॰ करि प्रबोध मुनि वर कहेउ अतिथि प्राण प्रिय होहु
कन्द मूल फल फूल हम ॥ देहिं लेहु करि छोहु ॥

सुनि मुनि वचन भरत हिय शोचू। भयउ कुअवसर कठिन सकोचू ॥
जानि गरुअ गुरु गिरा बहोरी। चरण बंदि बोले कर जोरी ॥
शिर धरि आयसु करिय तुम्हारा। परम धर्म यह नाथ हमारा ॥
भरत वचन मुनि वर मन भाये ॥ शुचि सेवक शिष निकट बुलाये ॥
चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई ॥ कन्द मूल फल आनहु जाई ॥
भले नाथ कहि तिन्ह शिर नाये। प्रमुदित निज निज काज सिधाये ॥
मुनिहिं शोच पाहुन बड़ नेवता। तस पूजा चाहिय जस देवता ॥
सुनि ऋधि सिधि अणिमादिक आईं। आयसु होय सो करैं गोसाईं ॥

दो० राम विरह व्याकुल भरत सानुज सकल समाज।
पहुनाई करि हरहु श्रम। कहेउ मुदित मुनिराज॥
ऋधि सिधि शिर धरि मुनिवर बानी बड़भागिनि आपुहिं अनुमानी
कहहिं परस्पर सिधि समुदाई। अतुलित अतिथि राम लघुभाई
मुनि पद बंदि करिय सोइ आजू। होइ सुखी सब राज समाजू
अस कहि रुचिर रचे ग्रह नाना॥ जे बिलोकि बिलखाहिं बिमाना
भोग बिभूति भूरि भरि राखे॥ देखत जिन्हहिं अमर अभिलाषे
दासी दास साज सब लीन्हे॥ जुगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे
सब समाज सजि सिधि पल माहीं जे सुख सपनेहु सुर पुर नाहीं॥
प्रथमहि बास दिये सब केही॥ सुन्दर सुखद यथा रुचि जेही।
दो० बहुरि सपरिजन भरत कहं ऋषि आयसु अस दीन्ह
बिधि बिसमय दायक बिभव मुनिवर तप बल कीन्ह।
मुनि प्रभाव जब भरत बिलोका। सब लघु लगे लोक पति लोका
सुख समाज नहिं जाइ बखानी। देखत बिरति बिसारहिं ज्ञानी।
आसन शयन सुबसन बिताना। बन बाटिका बिहग मृग नाना
सुरभि फूल फल अमिय समाना बिमल जलाशय बिबिध बिधाना
अशन पान शुचि अमिल अमी से देख लोग सकुचात जमी से।
सुर सुरभी सुर तरु सब ही के॥ लखि अभिलाष सुरेश शची के
ऋतु बसन्त बह त्रिविध बयारी। सब कहं सुलभ पदारथ चारी।
स्रक चन्दन बनिता दिक भोगा॥ देखि हर्ष बिस्मय सब लोगा॥
दो० संपति चकई भरत चक। मुनि आयसु खेलवार।
तेहि निशि आश्रम पींजरा राखे भा भिनुसार॥
कीन्ह निमज्जन तीरथ राजा। नाइ मुनिहि शिर सहित समाजा
ऋषि आयसु अशीष शिर राखी करि दण्डवत बिनय बहु भाषी
पथ गत कुशल साथ सब लीन्हे। चले चित्र कूटहि चित दीन्हे।

राम सखा कर दीन्हे लागू ॥। चलत देह धरि जनु अनुरागू
नहिं पद त्राण शीश नहिं छाया प्रेम नेम व्रत धर्म असाया ॥
लषण राम सिय पंथ कहानी ॥ पूछत सखहि कहत मृदु बानी
राम वास थल विटप विलोके । उर अनुराग रहत नहिं रोके ॥
देखि दशा सुर बरषहिं फूला ॥ भइ मृदु महि मगु मंगल मूला
दो० किये जाहिं छाया जलद सुखद बहत वर बात ।
तस मगु भयउ न राम कहं जस भा भरतहि जात ॥
जड़ चेतन जग जीव घनेरे ॥ जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ।
ते सब भये परम पद योगू । भरत दरश भेंवज भव रोगू
यह बड़ि बात भरत के नाहीं । सुमिरत जिन्हहिं राम मन माहीं
बारेक राम कहत जग जेऊ । होत तरण तारण नर तेऊ ॥
भरत राम प्रिय पुनि लघु भ्राता कस न होइ मगु मंगल दाता ।
सिद्ध साधु मुनि वर अस कहहीं भरतहि निरखि हर्ष हिय लहहीं
देखि प्रभाव सुरेशहि शोचू । जग भल भलहि पोच कह पोचू
गुरु सन कहेउ करहु प्रभु सोई । रामहिं भरतहि भेंट न होई ॥
दो० राम सकोची प्रेम वस ॥। भरत सप्रेम पयोधि ॥
बनी बात बिगरन चहत । करिय यतन कल शोधि ।
वचन सुनत सुर गुरु मुसुकाने । सहस नयन विनु लोचन जाने
कह गुरु बादि छोभ छल छांड़ू । यहां कपट करि होइय भांड़ू ॥
माया पति सेवक सन माया ॥। करियत उलटि परे सुर राया
तब कछु कीन्ह राम रुख जानी । अब कुचाल करि होइहि हानी
सुनु सुरेश रघुनाथ सुभाऊ ॥। निज अपराध रिसाहिं न काऊ
जो अपराध भक्त कर करई ॥। राम रोष पावक सो जरई ॥
लोकहु वेद विदित इतिहासा । यह महिमा जानहिं दुर्वासा ।
भरत सरिस को राम सनेही ॥। जग जपु राम राम जपु जेही

दो० मनहुं न आनिय अमरपति रघुबर भक्त अकाज
अयश लोक परलोक दुख दिन दिन शोक समाज

सुनु सुरेश उपदेश हमारा ॥ रामहिं सेवक परम पियारा
मानत सुख सेवक सेवकाई । सेवक बैर बैर अधिकाई ।
यद्यपि सम नहिं राग न रोषू ॥ गहहिं न पाप पुण्य गुण दोषू
कर्म प्रधान विश्व करि राखा ॥ जो जस करै सो तस फल चाखा
तदपि करहिं सम विषम विहारा । भक्त अभक्त हृदय अनुसारा
अगुण अलेख अमान एक रस । राम सगुण भये भक्त प्रेम बस
राम सदा सेवक रुचि राखी ॥ । वेद पुराण साधु सुर साखी ॥
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई करहु भरत पद प्रीति सुहाई ॥

दो० राम भक्त पर हित निरत । पर दुख दुखी दयाल ॥
भक्त शिरोमणि भरत तें । जनि डरपहु सुर पाल ॥

सत्य सिंधु प्रभु सुर हित कारी ॥ भरत राम आयसु अनुसारी ।
स्वारथ विवस विकल तुम होहू । भरत दोष नहिं राउर मोहू ॥
सुनि सुर वर सुर गुरु वर बानी । भा प्रमोद मन मिटी गलानी ॥
वरषि प्रसून हर्षि सुर राऊ ॥। लगे सराहन भरत सुभाऊ ॥
यहि विधि भरत चले मग जाहीं । दशा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं
जब हिं राम कहि लेहिं उसासा । उमगत्त प्रेम मनहुं चहुं पासा ।
द्रवहिं वचन सुनि कुलिश पखाना । पुर जन प्रेम न जाइ बखाना
बीच वास करि यमुनहिं आये । निरखि नीर लोचन जल छाये ।

दो० रघुबर वर्ण विलोकि वर । वारि समेत समाज ॥
होत विरह वारिधि मगन । चढ़े विवेक जहाज ॥

यमुन तीर तेहि दिन कर वासू । भयउ समय सम सबहि सुपासू
रातिहि घाट घाट की तरणी ॥ आईं अगणित जाइ न वरणी
प्रात पार भे एकहि खेवा ॥। तोषे राम सखा करि सेवा ॥।

चले अन्हाइ नदिहि शिर नाई। साथ निषाद नाथ लघु भाई॥
आगे मुनि वर वाहन आछे। राज समाज जाइ सब पाछे॥
तेहि पाछे दोउ बन्धु पयादे॥ भूषण वसन वेष सुठि सादे॥
सेवक सुहृद सचिव सुत साथा। सुमिरत लषण सीय रघु नाथा।
जहँ जहँ राम वास विश्रामा। तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रणामा
दो० मगवासी नरनारि सुनि। धाम काम तजि धाइ॥
देखि स्वरूप सनेह वस। मुदित जन्म फल पाइ।
कहहिं सप्रेम एक इक पाहीं। राम लषण सखि होंहिं कि नांहीं
वय वपु वसन रूप सोइ आली। शील सनेह सरिस सम चाली॥
वेष न सो सखि सीय न संगा। आगे अनी चली चतुरंगा।
नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा। सखि सन्देह होत इहि भेदा॥
तासु तर्क तिय गण मन मानी। कहहिं सकल तोहि सम न सयानी
तेहि सराहि वाणी फुर पूजी॥ बोली मधुर वचन तिय दूजी॥
कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू। जेहि विधि राम राज रस भंगू
भरतहि बहुरि सराहन लागी॥ शील सनेह सुभाव सुभागी॥
दो० चलत पयादे खात फल। पिता दीन्ह तजि राज॥
जात मनावन रघुवरहि। भरत सरिस को आज।
भायप भक्ति भरत आचरणू। कहत सुनत दुख दूषण हरणू।
जो कछु कहिय थोर सखि सोई। राम बन्धु अस काहे न होई॥
हम सब सानुज भरतहि देखे॥ भये धन्य युवती जन लेखे॥
सुनि गुण देखि दशा पछिताहीं। कैकयि जननि योग सुत नाहीं॥
कोउ कह दूषण रानिहु नाहिन। विधि सब भांति हमहिं जो दाहिन
कहँ हम लोग वेद विधि हीना। लघु कुल तिय करतूति न लीना
बसहिं कुदेश कुगांव कुठामा॥ कहँ यह दरश पुण्य परिणामा
अस अनन्द अचरज प्रति ग्रामा। जनु मरु भूमि कल्प तरु जामा॥

दो० भरत दरश देखत खुलेउ ॥ मगु लोगन्ह कर भाग ॥
जनु सिंहल वासिन्ह भयउ विधिवस सुलभ प्रयाग
निज गुण सहित राम गुण गाथा सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा
तीरथ मुनि आश्रम सुर धामा । निरखि निमज्जहिं करहिं प्रणामा
मनहीं मन मागहिं वर येहू ॥। सीय राम पद पद्म सनेहू ॥।
मिलहिं किरात कोल्ह बन वासी वैखानस वटु यती उदासी ॥।
करि प्रणाम पूछहिं जेहि तेंही । केहि बन लषण राम वैदेही ॥
ते प्रभु समाचार सब कहहीं ॥ भरत हि देखि जन्म फल लहहीं
जे जन कहहिं कुशल हम देखे ॥ ते प्रिय राम लषण सम पेखे
इहि बिधि बूझत सबहि सुबानी। सुनत राम बन बास कहानी।
दो० तेहि वासर बस प्रातही ॥ चले सुमिरि रघुनाथ ॥
राम दरश की लालसा ॥ भरत सरिस सब साथ ॥
मंगल शकुन होहिं सब काहू । फरकहिं सुखद विलोचन बाहू
भरतहि सहित समाज उछाहू । मिलिहहिं राम मिटहि दुखदाहू
करत मनोरथ जस जिय जाके । जाहि सनेह सुरा सब छाके ॥
शिथिल अंग मगु पगडग डोलहिं बिह्वल वचन प्रेम बस बोलहिं
राम सखा तेहि समय देखावा । शैल शिरोमणि सहज सुहावा
जासु समीप सरित पय तीरा ॥। सीय समेत बसहिं दोउ वीरा ॥
देखि करहिं सब दण्ड प्रणामा । कहि जय जानकि जीवन रामा
प्रेम मगन अस राज समाजू ॥ जनु फिरि अवध चले रघुराजू।
दो० भरत प्रेम तेहि समय जस तस कहि सकै न शेष ॥।
कविहि अगम जिमि ब्रह्म सुख अह मम मलिन जनेश
सकल सनेह शिथिल रघुबर के। गये कोस दुइ दिन कर ढरके ॥
जल थल देखि चले निशि बीते। कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीते।
उमा राम रजनी अब शेषा ॥। जागे सीय सपन अस देखा ॥

सहित समाज भरत जनु आये। नाथ वियोग ताप तन ताये।
सकल मलिन मन दीन दुखारी देखी सासु आनु अनुहारी॥
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन भये सोच बस सोक बिमोचन
लषण सपन यह नीक न होई। कठिन कुचाह सुनाइहि कोई।
अस कहि बंधु समेत अन्हाने। पूजि पुरारि साधु सन माने॥

छं॰ सनमानि सुर मुनि वंदि बैठे उत्तर दिशि देखत भये॥
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे विकल प्रभु आश्रम गये
तुलसी उठे अवलोकि कारण काह चित चकित रहे
तब समाचार किरात कोल्हन आइ तेहि अवसर कहे

सो॰ सुनत सुमंगल बैन। मन प्रमोद तन पुलक भर
शरद सरोरुह नैन॥ तुलसी भरे सनेह जल॥

बहुरि सोच बस भे सिय रमन्। कारण कवन भरत आगमन्
एक आइ अस कहा बहोरी॥ सेन संग चतुरंग न थोरी॥
सो सुनि रामहिं भा अति सोचू। इत पितु वच उत बंधु सकोचू
भरत सुभाव समुझि मन माहीं। प्रभु चित हित थिति पावत नाहीं
समाधान तब भा यह जाने। भरत कहे महँ साधु सयाने
लषण लखेउ प्रभु हृदय खभारू कहत समय सम नीति विचारू
बिनु पूछे कछु कहउँ गुसांई। सेवक समयन ढीठ ढिठाई।
तुम सर्वज्ञ शिरोमणि स्वामी। आपनि समुझि कहौं अनुगामी

दो॰ नाथ सुहृद सुठि सरल चित शील सनेह निधान॥
सब पर प्रीति प्रतीति जिय जानिय आपु समान॥

विषयी जीव पाइ प्रभुताई॥ मूढ़ मोह बस होहिं जनाई॥
भरत नीति रत साधु सुजाना। प्रभु पद प्रेम सकल जग जाना
तेऊ आज राज पद पाई॥ चले धर्म मर्याद मिटाई॥
कुटिल कुबंधु कुअवसर ताकी जानि राम बन वास एकाकी।

करि कुमंत्र मन साजि समाजू । आये करन अकंटक राजू ॥
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई। आये दल बटोरि दोउ भाई।
जौ जिय होति न कपट कुचाली केहि सोहात रथ बाजि गजाली
भरतहि दोष देइ को जाये । जग बौराइ राज पद पाये ॥

दो० शशि गुरु तिय गामी नहुख चढ़े भूमि सुरयान
लोक बेद ते बिमुख भा अधम को बेनु समान

सहस बाहु सुर नाथ त्रिशंकू । केहि न राज मद दीन्ह कलंकू
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ। रिपु रण रंच न राखब काऊ ॥
एक कीन्ह नाहिं भरत भलाई । निदरे राम जानि असहाई ॥
समुझि परिहि सो आज विशेषी समर सरोष राम रुख देखी
इतना कहत नीति रस भूला ।। रण रस विटप पुलक जिमि फूला
प्रभु पद वंदि शीश रज राखी । बोले सत्य सहज बल भाखी ।
अनुचित नाथ न मानब मोरा। भरत हमहिं उपचार न थोरा
कहं लगि सहिय रहिय मन मारे नाथ साथ धनु हाथ हमारे ॥

दो० क्षत्रि जाति रघुकुल जनम राम अनुज जग जान
लातहु मारे चढ़त शिर नीच को धूरि समान ॥

उठि कर जोर रजायसु मांगा ॥ मनहुं बीर रस सोवत जागा ॥
बांधि जटा शिर कसि कटि भाथा साजि शरासन शायक हाथा
आजु राम सेवक यश लेऊं ॥ भरतहि समर सिखावन देऊं ॥
राम निरादर कर फल पाई ॥ सोवहु समर सेज दोउ भाई ॥
आइ बना भल सकल समाजू । प्रगट करौं रिसि पाछिल आजू
जिमि करि निकर दलै मृग राजू लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू
तैसहि भरतहि सेन समेता ॥ सानुज निदरि निपातौं खेता ॥
जौ सहाय कर शंकर आई ॥ तदपि हनौं रण राम दुहाई ।

दो० अति सरोष भाषे लषण । लखि सुनि शपथ प्रमान

समय विलोकत लोकपति चाहत भभरि भगान

जग भै मगन गगन भै बानी ॥ लषण बाहु बल विपुल बखानी
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा ॥। को कहि सकै को जाननि हारा
अनुचित उचित काज कछु होई समुझि करिय भल कह सबकोई
सहसा करि पाछे पछिताहीं ॥ कहहिं वेद बुध ते बुध नाहीं।
सुनि सुरवचन लषण सकुचाने राम सीय सादर मन माने ॥
कही तात तुम नीति सुहाई ॥ सब तें कठिन राज मद भाई
जो अंचवत मातहि नृप तेई । नाहिन साधु सभा जिन्ह सेई
सुनहु लषण भल भरत सरीखा । विधि प्रपंच मह सुना न दीखा

दो० भरतहि होइ न राज मद । विधि हरि हर पद पाइ ।
कबहुं कि कांजी सी करहि क्षीर सिंधु बिन साइ ।

तिमिर तरुण तरणिहि सक गिलई गगन मगन मगु मेघहि मिलई
गो पद जल बूड़हिं घट योनी । सहज क्षमा बरु छाड़हिं क्षोनी
मशक फूंक बरु मेरु उड़ाई ॥ होइ न नृप मद भरतहि भाई
लषण तुम्हार शपथ पितु आना सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना
सगुण क्षीर अवगुण जल ताता मिले रचै पर पंच विधाता ।
भरत हंस रवि वंश तड़ागा ॥। जनमि कीन्ह गुण दोष विभागा
गहि गुण पय तजि अवगुण बारी निज यश जगत कीन्ह उजियारी
कहत भरत गुण शील सुभाऊ । प्रेम पयोधि मगन रघु राऊ ॥

दो० सुनि रघुबर बाणी विबुध देखि भरत पर हेतु ॥
सकल सराहत राम सों ॥ प्रभु को कृपा निकेत

जो न होत जग जन्म भरत को । सकल धरम धुर धरणि धरत को
कवि कुल अगम भरत गुण गाथा को जानै तुम बिनु रघु नाथा ।
लषण राम सिय सुनि सुर बानी अति सुख लहेउ न जाइ बखानी
इहां भरत सब सहित सुहाये ॥। मन्दाकिनी पुनीत अन्हाये ।

सरित समीप राखि सब लोगा। मांगि मातु गुरु सचिवनि योगा
चले भरत जहँ सिय रघुराई। साथ निषाद नाथ लघु भाई॥
समुझि मातु करतब सकुचाहीं करत कुतर्क कोटि मन माहीं
राम लषण सिय सुनि मम नाऊं उठि जानि अनत जाहिं तजि ठाऊं

दो॰ मातु मते महँ जानि मोहिं जो कछु करहिं सो थोर
अघ अवगुण तजि आदरहिं समुझि आपनी ओर

जौं परिहरहिं मलिन मन जानी जौं सनमानहिं सेवक मानी॥
मोरे शरण राम की पनहीं॥ राम सु स्वामि दोष सब जनहीं
जग यश भाजन चातक मीना नेम प्रेम निज निपुण प्रवीना
अस मन गुणत चले मग जाता सकुच सनेह शिथिल सब गाता
फेरति मनहु मातु कृत खोरी। चलत भक्ति बल धीरज धोरी।
जब समुझहिं रघुनाथ सुभाऊ। तब पथ परत उतावल पाऊ।
भरत दशा तेहि अवसर कैसी। जल प्रवाह जल अलिगति जैसी
देखि भरत कर शोच सनेहू ॥भा निषाद तेहि समय विदेहू॥

दो॰ लगे होन मंगल शकुन सुनि गुणि कहत निषाद॥
मिटिहि शोच होइहि हरष पुनि परिणाम विषाद॥

सेवक वचन सत्य सब जाने ॥। आश्रम निकट जाइ नियराने॥
भरत दीख बन शैल समाजू ॥ मुदित क्षुधित जनु पाइ सुनाजू
ईति भीति जनु प्रजा दुखारी। त्रिविध ताप पीड़ित ग्रह मारी
जाइ सुराज सुदेश सुखारी॥। भई भरत गति तेहि अनुहारी
राम वास बन सम्पति भ्राजा। सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा।
सचिव विराग विवेक नरेसू॥ विपिन सुहावन पावन देसू॥
भट कमनीय शैल रज धानी। शांति सुमति शुचि सुन्दर रानी
सकल अंग सम्पन्न सुराऊ। राम चरण आश्रित चित चाऊ

दो॰ जीति मोह महिपाल दल सहित विवेक भुआल।

करत अकंटक राज पुर ॥ सुख सम्पदा सुकाल ॥
बन महेश मुनि वास घनेरे ॥ ॥ जनु पुर नगर गांव गण खेरे ।
विपुल विचित्र विहग मृग नाना प्रजा समाज न जाइ बखाना
खरहा करि हरि बाघ बराहा ॥ देखि महिष वृक साजि सराहा
बैर विहाइ चरहिं इक संगा ॥ । जहं तहं मनहुं सेन चतुरंगा
झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं । मनहुं निशान विविधि विधि बाजहिं
चक चकोर चातक सुक पिकगन कूजत मंजु मराल मुदित मन
अलि गण गावत नाचत मोरा । जनु सुराज मंगल चहुं ओरा
बेलि विटप तृण सफल सफूला । सब समाज मुद मंगल मूला ।
दो॰ राम शैल शोभा निरखि भरत हृदय अति प्रेम
तापस तप फल पाइ जिमि सुखी सिराने नेम ॥
तब केवट ऊंचे चढ़ि जाई ॥ कहा भरत सन भुजा उठाई
नाथ देख यह विटप विशाला पाकर जम्बु रसाल तमाला
तिन तरुवरन्ह मध्य बट सोहा । मंजु विशाल देखि मन मोहा
नील सघन पल्लव फल लाला । अविचल छांह सुखद सब काला
मानहुं तिमिर अरुण मय राशी । विरची विधि संकेलि सुखमा सी
तेहि तरु सरित समीप गुसांई । रघुवर पर्ण कुटी जहं छाई ।
तुलसी तरु वर विविधि सुहाये । कहुं सिय पिय कहुं लषण लगाये
बट छाया वेदिका बनाई ॥ । सिय निज पाणि सरोज सुहाई
दो॰ जहं बैठ मुनि गण सहित निति सिय राम सुजान
सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान
सखा वचन सुनि विटप निहारी । उमगे भरत विलोचन वारी ॥
करत प्रणाम चले दोउ भाई । कहत प्रीति शारद सकुचाई
हर्षहिं निरखि राम पद अंका । मानहुं पारस पायउ रंका ॥
रज शिर धरि हिय नैनन्हि लावहिं रघुवर मिलन सरिस सुख पावहिं

देखि भरत गति अकथ अतीवा प्रेम मगन म्रग खग जड़ जीवा
सखहि सनेह विवस मग भूला । कहि सुपंथ सुर वरसहिं फूला ॥
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे । सहज सनेह सराहन लागे ॥
होत न भूतल भाव भरत को । अचर सचर चर अचर करत को
दो० प्रेम अमिय मन्दिर विरह भरत पयोधि गंभीर ॥
मथि प्रगटे सुर साधु हित कृपा सिन्धु रघुवीर ॥
सखा समेत मनोहर जोटा ॥ लखेउ न लषण सघन बन ओटा
भरत दीख प्रभु आश्रम पावन । सकल सुमंगल सदन सुहावन ।
करत प्रवेश मिटा दुख दावा । जनु योगी पर मारथ पावा ।
देखे लषण भरत प्रभु आगे ॥ पूछत वचन कहत अनुरागे
शीश जटा कटि मुनिपट बांधे । तूण कसे कर शर धनु कांधे ॥
वेदी पर मुनि साधु समाजू ॥ सीय सहित राजत रघु राजू ॥
वल्कल वसन जटिल तनु श्यामा जनु मुनि वेष कीन्ह रति कामा
कर कमलन्ह धनु सायक फेरत । जीकी जरनि हरत हसि हेरत ॥
दो० लसत मंजु मुनि मंडली । मध्य सीय रघु नन्द ॥
ज्ञान सभा जनु तनु धरे । भक्ति सच्चिदानन्द ॥ः
सानुज सखा समेत मगन मन । विसरे हर्ष शोक सुख दुख गन
पाहि नाथ कहि पाहि गुसाईं । भूतल परे लकुट की नाईं ॥
वचन सप्रेम लषण पहिचाने । करत प्रणाम भरत जिय जाने ।
बंधु सनेह सरस इहि ओरा । उत साहब सेवा बर जोरा ॥
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई । सुकवि लषण मन की गति भनई
रहे राखि सेवा पर भारू ॥ ॥ चढ़ी चंग जनु खैंच खिलारू
कहत सप्रेम नाइ महि माथा । भरत प्रणाम करत रघु नाथा ॥
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा ॥ । कहुं पट कहुं निषंग धनु तीरा
दो० बरबस लिये उठाइ उर ॥ लाये कृपा निधान ॥ः

भरत राम की मिलन लखि बिसरे सबहि अपान ॥
मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी कविकुल अगम करम मन बानी
परम प्रेम पूरण दोउ भाई ॥ मन बुधि चित अहमिति बिसराई
कहहु सुप्रेम प्रगट को करई। केहि छाया कवि मति अनुसरई
कविहि अर्थ आखर बल सांचा अनुहर ताल गतिहि नट नाचा
अगम सनेह भरत रघुबर के। जहं न जाइ मन विधि हरि हरके
सो मैं बरणि कहौं केहि भांती। बाजु सुराग कि गाडरि तांती
मिलनि विलोकि भरत रघुवर की सुरगण सभय धकधकी धरकी
समुझाये सुर गुरु जड़ जागे। बरषि प्रसून प्रशंसन लागे ॥
दो० मिलि सप्रेम रिपुसूदनहि केवट भेंटे राम ॥
भूरि भाइ भेंटे भरत ॥ लक्ष्मण करत प्रणाम ॥
भेंटेउ लषण ललकि लघु भाई बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई
पुनि मुनिगण दोउ भाइन्ह बन्दे । अभिमत आशिष पाइ अनन्दे
सानुज भरत उमगि अनुरागा। धरि शिर सियपद पद्म परागा
पुनि पुनि करत प्रणाम उठाये। सियकर कमल परसि बैठाये ॥
सीय अशीश दीन्ह मन माहीं। मगन सनेह देह सुधि नाहीं ॥
सब विधि सानुकूल लखि सीता भे अशोच उर अपडर बीता
कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूछा प्रेम भरा मन निज गति छूछा
तेहि अवसर केवट धीरज धरि जोरि पाणि विनवत प्रणाम करि
दो० नाथ साथ मुनि नाथ के मातु सकल पुर लोग ॥
सेवक सेनप सचिव सब आये विकल वियोग ॥
शील सिंधु सुनि गुरु आगमनू सीय समीप राखि रिपु दमनू ॥
चले सवेग राम तेहि काला । धीर धर्म धुर दीन दयाला ॥
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे । दण्ड प्रणाम करन प्रभु लागे ॥
मुनिवर धाइ लिये उर लाई । प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई ॥

प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । कीन्ह दूरि तें दंड प्रणामू ।
राम सखा ऋषि बरबस भेंटे ॥ जनु महि लुठत सनेह समेटे ॥
रघुपति भगति सुमंगल मूला । नभ सराहि सुर बरषहिं फूला ।
इहि सम निपट नीच कोउ नाहीं । बड़ वशिष्ठ सम को जग माहीं ।
दो० जेहि लखि लषणहुं तें अधिक मिले मुदित मुनिराउ
सो सीतापति भजन को । प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥
आरत लोग राम सब जाना । करुणाकर सुजान भगवाना
जो जेहि भांति रहा अभिलाषी तेहि तेहि की तैसी रुचि राखी
सानुज मिलि पल महं सब काहू । कीन्ह दूरि दुख दारुण दाहू ॥
यह बड़ि बात राम कै नाहीं ॥ । जिमि घट कोटि एक रवि छाहीं
मिलि केवटहिं उमगि अनुरागा पुरजन सकल सराहहिं भागा
देखी राम दुखित महतारी ॥ । जनु सुवेलि अवली हिम मारी
प्रथम राम भेंटे कैकेयी ॥ । सरल सुभाव भक्ति मति भेई ॥
पग परि कीन्ह प्रबोध बहोरी । काल कर्म विधि शिर धरि खोरी
दो० भेंटे रघुवर मातु सब ॥ करि प्रबोध परितोष ।
अम्ब ईश आधीन जग काहु न देइय दोष ॥
गुरु तिय पद बन्दे दोउ भाई । सहित विप्र तिय जे संग आई
गंग गौरि सम सब सन मानी । देहिं असीष मुदित मृदु बानी
गहि पद लगे सुमित्रा अंका । जनु भेंटी सम्पति अति रंका ।
पुनि जननी चरणन दोउ भ्राता । परे प्रेम व्याकुल सब गाता ।
अति अनुराग अम्ब उर लाये । नयन सनेह सलिल अन्हवाये
तेहि अवसर कर हर्ष विषादू ॥ किमि कवि कहै मूक जिमि स्वादू
मिलि जननिहिं सानुज रघुराऊ । गुरु सन कहेउ कि धारिय पाऊ
पुरजन पाइ मुनीश नियोगू ॥ जल थल तकि तकि उतरे लोगू
दो० महिसुर मंत्री मातु गुरु ॥ गने लोग लिये साथ ।

पावन आश्रम गवन किय भरत लषण रघुनाथ

सीय आइ मुनि वर पग लागी। उचित असीष लही मन मांगी
गुरु पत्निहि मुनि तियन्ह समेता मिलि सप्रेम कहि जाइ न जेता
बन्दि बन्दि पद सिय सबही के। आशिष वचन लहे प्रिय जीके
सासु सकल जब सीय निहारी मूंदेउ नयन सहमि सुकुमारी।
परी बधिक बस मनहुं मराली। काह कीन्ह करतार कुचाली
तिन्ह सिय निरखि निपट दुख पावा तो सब सहिय जो दैव सहावा
जनक सुता तब उर धरि धीरा ॥ नील नलिन लोचन भरि नीरा।
मिली सकल सासुन्ह शिरनाई । तेहि अवसर करुणा महि छाई

दो॰ लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग
हृदय असीसहिं प्रेम बस रहिहहु भरी सुहाग ॥

विकल सनेह सीय सब रानी । बैठन सब हि कहेउ गुरु ज्ञानी।
प्रथम कही जग गति मुनि नाथा कहे कछुक परमारथ गाथा ।
नृप कर सुर पुर गमन सुनावा सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा
मरण हेतु निज नेह विचारी। भे अति विकल धीर धर धारी
कुलिश कठोर सुनत कटु बानी बिलपत लषण सीय सब रानी।
शोक विकल अति सकल समाजू मानहुं राज अकाजेउ आजू
मुनि वर बहुरि राम समुझाये। सहित समाज सुसरित अन्हाये
व्रत निरम्बु तेहि दिन प्रभु कीन्हा मुनिहुं कहे जल काहुन लीन्हा

दो॰ भोर भये रघुनन्दनहिं ॥ जो मुनि आयसु दीन्ह ।
श्रद्धा भक्ति समेत प्रभु । सो सब सादर कीन्ह ॥

करि पितु क्रिया वेद जस बरणी भे पुनीत पातक तम तरणी ।
जासु नाम पातक अघ तूला । सुमिरत सकल अमंगल मूला
शुद्ध सो भयेउ साधु सम्मत अस । तीरथ आवाहन सुरसरि जस।
शुद्ध भये दुइ वासर बीते ॥ ॥ बोले गुरु सन राम पिरीते ॥

नाथ लोग सब निपट दुखारी। कन्द मूल फल अम्बु अहारी।
सानुज भरत सचिव सब माता। देखि मोहिं पल जिमि जुग जाता
सब समेत पुर धारिय पाऊ ॥ आपु इहां अमरावति राऊ
बहुत कहेउं सब कियउं ढिठाई उचित होइ तस करिय गुसांई

दो० धर्म हेतु करुणायतन । कस न कहहु अस राम
लोग दुखित दिन दुइ दरस देखि लहहिं बिश्राम

राम वचन सुनि सभय समाजू । जनु जलनिधि महं बिकल जहाजू
सुनि सुनि गिरा सुमंगल मूला । भयउ मनहुं मारुत अनुकूला
पावन पय तिहुं काल नहाहीं। जो बिलोकि अघ ओघ नशाहीं
मंगल मूरति लोचन भरि भरि । निरखहिं हरषि दण्डवत करि करि
राम शैल बन देखन जाहीं ॥ जहं सुख सकल सकल दुख नाहीं
झरना झरहिं सुधा सम बारी । त्रिविध ताप हर त्रिविध बयारी
विटप बेलि तृण अगणित जाती फल प्रसून पल्लव बहु भांती।
सुन्दर शिला सुखद तरु छाहीं। जाइ बरणि छबि बन केहि पाहीं

दो० सरित सरोरुह जल बिहग कूजत गुञ्जत भृंग ॥
बैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग ॥

कोल्ह किरात भिल्ल बन बासी। मधु शुचि सुन्दर स्वादु सुधासी
भरि भरि पर्ण कुटी रचि रूरी । कन्द मूल फल अंकुर जूरी।
सबहि देहिं करि विनय प्रणामा। कहि कहि स्वाद भेद गुण नामा
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं ॥ फेरत राम दोहाई देहीं ॥
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी। मानत साधु प्रेम पहिचानी
तुम सुकृती हम नीच निषादा। पावा दरसन राम प्रसादा ॥
हमहिं अगम अति दरस तुम्हारा जस मरु धरणि देवसरि धारा
राम कृपाल निषाद नेवाजा । परिजन प्रजा चहिय जस राजा

दो० यह जिय जानि सकोच तजि करिय छोह लखि नेह

हमहिं कृतारथ करन लगि फल तृण अंकुर लेहु

तुम प्रिय पाहुन बन पगु धारे। सेवा योग न भाग हमारे ॥
देब कहा हम तुमहि गुसाईं। ईंधन पात किरात मिताई ॥
यह हमार अति बड़ सेवकाई। लेहिं न बासन बसन चुराई ॥
हम जड़ जीव जीवगण घाती। कुटिल कुचाली कुमति कुजाती ॥
पाप करत निशि बासर जाहीं। नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं ॥
सपनेहु धर्म बुद्धि कस काऊ। यह रघुनन्दन दरश प्रभाऊ ॥
जब ते प्रभु पद पद्म निहारे। मिटे दुसह दुख दोष हमारे ॥
बचन सुनत पुरजन अनुरागे। तिन्ह के भाग सराहन लागे ॥

छं॰ लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं।
बोलनि मिलनि सिय रामचरण सनेह लखि सुख पावहीं ॥
नर नारि निदरहिं नेह निज सुनि कोल्ह भिल्लन्ह की गिरा।
तुलसी कृपा रघुबंश मणि की लोह लै नौका तिरा ॥

सो॰ बिहरहिं बन चहुं ओर। प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब।
जल ज्यों दादुर मोर। भये पीन पावस प्रथम ॥

पुर जन नारि मगन अति प्रीती। बासर जाहिं पलक सम बीती ॥
सीय सासु प्रति बेष बनाई। सादर करहिं सरिस सेवकाई ॥
लखा न मर्म राम बिनु काहू। माया सब सिय माया माहू ॥
सीय सासु सेवा बस कीन्ही। तिन्ह लहि सुख सिख आशिष दीन्ही ॥
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई। कुटिल रानि पछितानि अघाई ॥
अव जिय महिं याचति कैकेयी। मोहिं न बीच बिधि मीचु न देई ॥
लोकहु बेद बिदित कवि कहहीं। राम बिमुख खल नरक न लहहीं ॥
यह संशय सब के मन माहीं। राम गवन बिधि अवध कि नाहीं ॥

सो॰ निशि न नींद नहिं भूख दिन भरत बिकल सुठि शोच।
नीच कीच बिच मगन जस मीनहिं सलिल सकोच ॥

कीन्ह मातु मिसु काल कुचाली ईति भीति जस पालक शाली
केहि विधि होइ राम अभिषेकू मोहिं अवकरत उपायन एकू
अवशि फिरहिं गुरु आयसुमानी पुनिपुनि कहब रामरुचिजानी
मातु कहेंहुं बहुरहिं रघु राऊ ॥ राम जननि हठ करबकि काऊ
मोहिं अनुचर कर केतिक बाता। तेहि महँ कुसमय वाम विधाता
जौं हठ करौं तो निपट कुकरमू। हर गिरि ते गुरु सेवक धरमू
एकौ युक्ति न मन ठहरानी ॥ सोचत भरतहि रैन सिरानी
प्रात अन्हाइ प्रभुहि शिर नाई बैठन पठये ऋषय बुलाई ॥

दो० गुरु पद कमल प्रणाम करि बैठे आयसु पाइ ॥
विप्र महाजन सचिव सब जुरे सभासद आइ ॥

बोले मुनि वर समय समाना ॥ सुनहु सभासद भरत सुजाना
धर्म्मधुरीण भानुकुल भानू ॥ राजा राम स्ववस भगवानू।
सत्य सिंधु पालक श्रुति सेतू ॥ राम जन्म जग मंगल हेतू।
गुरु पितु मातु वचन अनुसारी खल दल दलन देव हितकारी
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ ॥ कोउ न राम सम जानयथारथ
विधि हरि हर शशि रवि दिशपाला माया जीव करम कलिकाला
अहिप महिप जहँलगिप्रभुताई योग सिद्ध निगमागम गाई
करि विचार जिय देखहु नीके। राम रजाय शीश सब ही के।

दो० राखे राम रजाय रुख ॥ हम सब कर हित होइ
समुझि सयाने करहु अब सब मिलि संमत सोइ

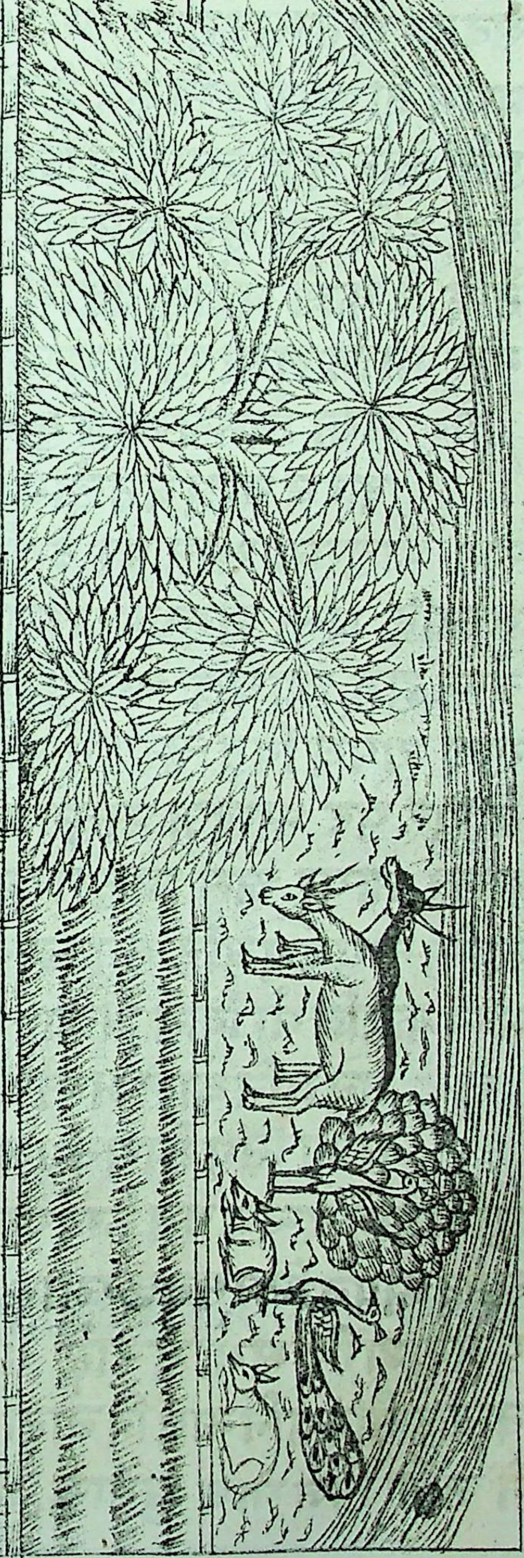
सब कहँ सुखद राम अभिषेकू। मंगल मूल मोद मगु एकू ॥
केहि विधि अवध चलहिं रघुराई कहहु समुझि सोइ करैं उपाई
सब सादर मुनि वर सुनि बानी। नै परमारथ स्वारथ सानी ॥
उतर न आव लोगभे भोरे ॥ ॥ तब शिर नाइ भरत कर जोरे
भानु वंश भे भूप घनेरे ॥ ॥ अधिक एक ते एक बड़ेरे ॥

जन्म हेतु सब कहं पितु माता। करम सुभासुभ देइ विधाता
दलि दुख सजै सकल कल्याना अस असीष राउर जग जाना।
सो गुसांइ विधिगति जेइ छेकी सकै को टारि टेक जो टेकी।
दो॰ बूझिय मोहिं उपाय अब सो सब मोर अभाग।
सुनि सनेह मय बचन गुरु उर उपजा अनुराग।
तात बात फुर राम कृपाही ।। राम विमुख सुख सपनेहुं नाहीं
सकुचौं तात कहत इक बाता। अरध तजहिं बुध सरबस जाता
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई। फिरिहहिं लषण सीय रघुराई
सुनि सुभ बचन हर्ष दोउ भ्राता भे प्रमोद परि पूरण गाता ।।
मन प्रसन्न तन तेज बिराजा । जनु जिय राउ राम भे राजा।
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी। सम दुख सुख सब रोवहिं रानी
कहहिं भरत मुनि कहा सो कीन्हे फल जग जीवन अभिमत दीन्हे
कानन करउं जन्म भरि बासू। एहि ते अधिक न मोर सुपासू
दो॰ अन्तरयामी राम सिय। तुम सरबज्ञ सुजान ।।
जो फुर कहहु तो नाथ निज कीजिय बचन प्रमान
भरत बचन सुनि देखि सनेहू । सभा सहित मुनि भयउ विदेहू
भरत महा महिमा जल राशी । मुनि मति ठाढ़ि तीर अबला सी
गा चह पार यतन बहु हेरा ।। पावति नाव न बोहित बेरा ।।
और करहि को भरत बड़ाई। सरस सीपरी सिन्धु समाई ।।
भरत मुनिहि मन भीतर भाये। सहित समाज राम पहँ आये
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह सुआसन बैठे सब सुनि मुनि अनुशासन
बोले मुनिवर बचन बिचारी। देश काल अवसर अनुहारी।
सुनहु राम सरबज्ञ सुजाना । धर्म नीति गुण ज्ञान निधाना
दो॰ सब के उर अन्तर बसहु जानहु भाव कुभाव ।।
पुर जन जननी भरत हित होइ सो करिय उपाय।

श्रीरामचन्द्र का अयोध्या में चल के राज करने के निमित्त चित्रकूट में वशिष्ठमुनि और रामचन्द्र भरत आदि का परस्पर वार्त्तालाप और जानकी जी को आकर गुरुपत्नी और कौशल्या आदि का नसीहत करना ॥ ॥







आरत कहहिं विचारि न काऊ। सूझ जुआरिहि आपन दाऊ॥
सुनि मुनि बचन कहत रघुराऊ। नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ॥
सब कर हित रुख राउर राखे॥ आयसु किये मुदित फुर भाषे॥
प्रथम जो आयसु मो कहँ होई। माथे मानि करौं सिख सोई॥
पुनि जेहि कहँ जस होब रजाई। सो सब भांति करिहि सेवकाई॥
कह मुनि राम सत्य तुम भाषा। भरत सनेह विचार न राखा॥
तेहि ते कहौं बहोरि बहोरी॥ भरत भक्ति भै मम मति भोरी॥
मोरे जानि भरत रुचि राखी। जो कीजिय सो शुभ शिव साखी॥

दो॰ भरत विनय सादर सुनिय करिय विचार बहोरि।
करब साधु मत लोक मत नृप नै निगम निचोरि॥

गुरु अनुराग भरत पर देखी। राम हृदय आनन्द विशेषी॥
भरतहिं धर्म धुरन्धर जानी। निज सेवक तन मानस बानी॥
बोले गुरु आयसु अनुकूला। बचन मंजु मृदु मंगल मूला॥
नाथ शपथ पितु चरण दोहाई। भयउ न भुवन भरत सम भाई॥
जे गुरु पद अम्बुज अनुरागी। ते लोकहु वेदहु बड़ भागी॥
राउर जापर अस अनुरागू। को कहि सकै भरत कर भागू॥
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई। करत बदन पर भरत बड़ाई॥
भरत कहहिं सो किये भलाई। अस कहि राम रहे अरगाई॥

दो॰ तब मुनि बोले भरत सन सब सकोच तजि तात।
कृपा सिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय की बात॥

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई। गुरु साहिब अनुकूल अघाई॥
लखि अपने शिर सब छर भारू। कहि न सकैं कछु करैं विचारू॥
पुलक शरीर सभा भे ठाढ़े॥ नीरज नयन नेह जल बाढ़े॥
कहब मोर मुनि नाथ निबाहा। इहि तें अधिक कहौं मैं काहा॥
मैं जानों निज नाथ सुभाऊ॥ अपराधिहु पर कोह न काऊ॥

मोपर कृपा सनेह बिशेषी ॥। खेलत खुनस कबहुँ नहिं देखी
शिशु पन तें परिहरेउ न संग ॥। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।
मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोही ॥ हारेहु खेलि जितावहिं मोही।
दो० महूँ सनेह सकोच बस। सनमुख कहेउँ न बैन
दरशन तृप्त न आजु लगि प्रेम पियासे नैन ॥
विधिन सकेउ सहि मोर दुलारा नीच बीच जननी मिसु पारा
इहौ कहत मोहिं आजु न शोभा आपु न समुझि साधु शुचि कोभा
मातु मन्दि मैं साधु सु चाली। उर अस आनत कोटि कुचाली
फरै कि कोदव बालि सु शाली। मुकता प्रवै कि संबुक ताली।
सपनेहु दोष कलेश न काहू ॥ मोर अभाग उदधि अवगाहू।
बिन समुझे निज अघ परि पाकू। जानेउ जाइ जननि कह काकू
हृदय हेरि हारेउ सब ओरा ॥। एकहि भांति भलेहि भल मोरा
गुरु गुसांइ साहिब सिय रामू। लागत मोहिं नीक परिणामू
दो० साधु सभा प्रभु गुरु निकट कहौं सुथल सति भाव
प्रेम प्रपंच कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघु राउ।
भूपति मरण प्रेम पन राखी ॥ जननी कुमति जगत सब साखी
देखि न जाहिं बिकल महतारी जरहिं दुसह ज्वर पुर नर नारी
महीं सकल अनरथ कर मूला। सो सुनि समुझि सहौं सब शूला
सुनि बन गवन कीन्ह रघुनाथा करि मुनि बेष लषण सिय साथा
बिनु पनहीं अरु प्यादेहि पाये। शंकर साखि रह्यौं इहि घाये।
बहुरि निहारि निषाद सनेहू। कुलिश कठिन उर भयउ न बेहू
अब सब आंखिन्ह देखेउं आई जियत जीव जड़ सबै सहाई
जिन्हहिं निरखि मग सांपिनि बीछी तजहिं बिषम बिष तापस तीछी
दो० तेइ रघुनन्दन लषण सिय अनहित लागे जाहि
तासु तनय तजि दुसह दुख दैव सहावै काहि।

लखि सब विधि गुरु स्वामि सनेहू मिटेउ छोभ नहिं मन सन्देहू।
अब करुणा कर कीजिय सोई। जन हित प्रभु चित छोभ न होई
जो सेवक साहिब संकोची ॥। निज हित चहै तासु मति पोची
सेवक हित साहिब सेवकाई। करै सकल सुख लोभ बिहाई
स्वारथ नाथ फिरे सब ही का ॥। किये रजाइ कोटि विधि नीका।
यह स्वारथ पर मारथ सारू ॥। सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू
देव एक विनती सुनि मोरी ॥। उचित होइ तस करब बहोरी
तिलक समाज साजि सब आना करिय सुफल प्रभु जो मन माना
दो॰ सानुज पठइय मोहिं बन कीजिय सबहि सनाथ
ना तरु फेरिय बंधु दोउ नाथ चलौं मैं साथ।
नतरु जाहिं बन तीनिउ भाई। बहुरिय सीय सहित रघुराई ॥
जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई करुणा सागर कीजिय सोई।
देव दीन्ह सब मोपर भारू ॥॥ मोरे नीति न धर्म विचारू ॥
कहौं वचन सब स्वारथ हेतू। रहत न आरत के चित चेतू ॥
उतर देइ सुनि स्वामि रजाई ॥। सो सेवक लखि लाज लजाई।
अस मैं अवगुण उदधि अगाधू स्वामि सनेह सराहत साधू ॥
अब कृपाल मोहिं सो मत भावा सकुच स्वामि मन जाइ न पावा
प्रभु पद शपथ कहौं सति भाऊ जग मंगल हित एक उपाऊ।
दो॰ प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देव।
सो शिर धरि धरि करिहिं सब मिटिहि अनट अवरेव
भरत वचन सुचि सुनि हियहरषे साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥
अस मंजस बस अवध निवासी प्रमुदित मन तापस बन वासी
चुप रहि गे रघुनाथ सकोची ॥ प्रभु गति देखि सभा सब शोची
जनक दूत तेहि अवसर आवा। मुनि वशिष्ठ सुनि वेगि बुलावा
करि प्रणाम तिन्ह राम निहारे ॥ वेष देखि भे निपट दुखारे ॥।

इतहिं मुनिवर पूछी बाता ॥। कहहु बिदेह भूप कुशलाता
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा। बोले चर वर जोरें हाथा॥
बूझब राउर सादर सांई ॥। कुशल हेतु सो भयउ गुसाईं।
दो॰ नाहित कोशल नाथ के साथ कुशल गइ नाथ
मिथिला अवध बिशेषतें जग सब भयउ अनाथ
कोशल पति गति सुनि जनकौरा भे सब लोग शोच बस बौरा।
जेहि देखा तेहि समय बिदेहू। नाम सत्य अस लागन केहू।
नारि कुचालि सुनत महिपालहि सूझ न कछु जस मणि बिनु व्यालहि
भरत राज रघुबर बन बासू ॥। भा मिथिलेशहि हृदय हरासू
नृप बूझे बुध सचिव समाजू। कहहु बिचारि उचित का आजू
समुझि अवध असमंजस दोऊ चलिय कि रहिय न कह कछु कोऊ
नृपति धीर धरि हृदय बिचारी। पठये अवध चतुर चर चारी
बूझि भरत सत भाउ कुभाऊ ॥ आयसु बेगि न होइ लखाऊ
दो॰ गये अवध चर भरत गति बूझि देखि कर तूति।
चले चित्रकूटहि भरत चार चले तिर हूति ॥।
इतन्ह आइ भरत की करणी। जनक समाज यथामति बरणी
सुनि गुरु पुर जन सचिव महीपति भे सब शोच सनेह बिकल मति
धरि धीरज करि भरत बड़ाई ॥। लिये सुभट साहनी बुलाई ॥।
घर पुर देश राखि रख वारे ॥। हय गय रथ बहु यान संवारे
दुघड़ी साधि चले तत काला। किय बिश्राम न मग महिपाला
भोरहि आजु नहाइ प्रयागा ॥ चले यमुन उतरन सब लागा
खबरि लेन हम पठये नाथा। तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा
साथ किरात छ सातक दीन्हे। मुनि वर तुरत बिदा चर कीन्हे
दो॰ सुनत जनक आगमन सब हर्षेउ अवध समाज।
रघुनन्दनहि सकोच बड़ शोच बिबस सुर राज॥

सुनि अति विकल भरतबर बानी आरति प्रीति विनय नय सानी
शोक मगन सब सभा खँभारू । मनहुं कमल बन पर्यो तुषारू ।
कहि अनेक विधि कथा पुरानी । भरत प्रबोध कीन्ह मुनि ज्ञानी
बोले उचित वचन रघु नन्दू । दिन कर कुल कैरव बन चन्दू
तात जीय जनि करहु गलानी । ईश अधीन जीव गति जानी ।
तीन काल त्रिभुवन मत मोरे ॥ पुण्य श्लोक तात तर तोरे ।
उर आनत तुम पर कुटिलाई । जाइ लोक पर लोक नशाई ॥
दोष देहिं जननिहि जड़ तेई । जिन्ह गुरु साधु सभा नहिं सेई

दो॰ मिटहि पाप परि पंच सब अखिल अमंगल भार
लोक सुयश पर लोक सुख सुमिरत नाम तुम्हार ॥

कहौं सुभाव सत्य शिव साखी । भरत भूमि रह राउरि राखी ॥
तात कुतर्क करहु जनि आये । वैर प्रेम नहिं दुरै दुराये ॥ ॥
मुनि गण निकट विहंग मृग जाहीं बाधक बधिक विलोकि पराहीं
हित अनहित पशु पंछिउ जाना मानुष तन गुण ज्ञान निधाना
तात तुमहिं मैं जानौं नीके ॥ । करौं कहा असमंजस जी के ॥
राखेउ राउ सत्य मोहिं त्यागी । तन परिहरेउ प्रेम प्रण लागी
तासु वचन मेटत मन शोचू । तेहि तें अधिक तुम्हार संकोचू
तापर गुरु मोहिं आयसु दीन्हा अवशि जो कहहु चहौं सो कीन्हा

दो॰ मन प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सो आज
सत्य सिंधु रघुवर वचन । सुनि भा सुखी समाज

सुर गण सहित सभय सुर राजू । शोचहिं चाहत होन अकाजू
करत विचार बनत कछु नाहीं । राम शरण सब गे मन माहीं
बहुरि विचार परस्पर कहहीं । रघुवर भक्त भक्ति बस अहहीं
सुधि करि अंबरीष दुर्वासा । भे सुर सुरपति निपट निरासा
सहे सुरन्ह बहु काल विषादा । नर हरि किये प्रगट प्रह्लादा

लागि लागि कान कहहिं धुनि माथा अब सुर काज भरत के हाथा
आन उपाय न देखिय देवा । मानत राम सुसेवक सेवा ॥
हिय सप्रेम सेवहु सब भरतहिं निज गुण शील रामवस करतहिं
दो० सुनि सुर मत सुर गुरु कहेउ भल तुम्हार बड़भाग
सकल सुमंगल मूल जग भरत चरण अनुराग।
सीता पति सेवक सेवकाई ॥ ॥ काम धेनु शत सरिस सुहाई।
भरत भक्ति तुम्हरे मन आई ॥ तजहु शोच विधि बात बनाई
देखु देव पति भरत प्रभाऊ ॥ सहज सुभाव विवस रघुराऊ।
मन थिर करहु देव डर नाहीं। भरतहि जानि राम परिछाहीं
सुनि सुर गुरु सुर सम्मत शोचू। अन्तर यामी प्रभुहिं सकोचू
निज सिर भार भरत जियजाना करत कोटि विधि उर अनुमाना
करि विचार मन दीन्ही टीका । राम रजायसु आपनि नीका
निज पन तजि राखेउ मन मोरा। छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा
दो० कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब विधि सीतानाथ
करि प्रणाम बोले भरत । जोरि जलज युग हाथ।
कहउं कहावउं अब का स्वामी। कृपा अम्बु निधि अन्तर यामी
गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला। मिटी मलिन मन कलपित शूला
अपडर डरउं न शोच समूले । रविहि न दोष देव दिशि भूले
मोर अभाग मातु कुटिलाई । विधि गति विषम काल कठिनाई
पाव रोपि सब मिलि मोहिं घाला प्रणत पाल पन आपन पाला
यह नइ रीति न राउरि होई ॥ लोकहुं वेद विदित नहिं गोई
जग अनभल भल एक गुसांई। कहिय होइ भल कासु भलाई
देवदेव तरु सरिस सुभाऊ ॥ ॥ सनमुख विमुख न काहुहि काऊ
दो० जाइ निकट पहिचानि तरु छाह शमन सब शोच।
मांगत अभिमत पावफल राउ रंक भल पोच ॥१॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेयी। काहि कहै केहि दूषण देई॥
अस मन आनि मुदित नर नारी भयउ बहोरि रहब दिन चारी
इहि प्रकार गत बासर सोऊ। प्रात अन्हान लाग सब कोऊ
करि मज्जन पूजहिं नर नारी॥गणपति गौरि पुरारि तमारी
रमा रमण पद वन्दि बहोरी॥ बिनवहिं अंजलि अंचल जोरी
राजा राम जानकी रानी। आनद अवधि अवध रजधानी
सुवस वसै फिरि सहित समाजा भरतहि राम करहिं युवराजा
इहि सुख सुधा सींचि सब काहू देव देहु जग जीवन लाहू॥

दो॰ गुरु समाज भाइन्ह सहित राम राज पुर होउ॥
अछत राम राजा अवध मरिय माग सब कोउ॥

सुनि सनेह मय पुरजन बानी। निंदहिं योग विरति मुनि ज्ञानी
इहि विधि नित्य कर्म करि पुरजन रामहिं करहिं प्रणाम पुलकि तन
ऊंच नीच मध्यम नर नारी॥ लहहिं दरश निज निज अनुहारी
सावधान सबही सन मानहिं। सकल सराहत कृपानिधानहिं
लरकाई तें रघुबर बानी॥ पालत प्रीति रीति पहिचानी
शील सकोच सिंधु रघु राऊ। सुमुख सु लोचन सरल सुभाऊ
कहत राम गुण गण अनुरागे। सब निज भाग सराहन लागे
हम सब पुण्य पुंज जग थोरे। जिनहिं राम जानत करि मोरे

दो॰ प्रेम मगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथलेश
सहित सभा संभ्रम उठे। रवि कुल कमल दिनेश

आगे गवन कीन्ह रघुनाथा। भाइ सचिव गुरु पुरजन साथा
गिरि वर दीख जनक नृप जबही करि प्रणाम त्यागा रथ तबही
राम दरश लालसा उछाहू॥ पथ श्रम लेश कलेश न काहू
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही॥ बिनु मन तन दुख सुख सुधि केही
आवत जनक चले इहिं भाँती॥ सहित समाज प्रेम मत माती

आये निकट देखि अनुरागे ॥ सादर मिलन परस्पर लागे ।
लगे जनक मुनि गण पद वन्दन ऋषिन प्रणाम कीन्ह रघुनन्दन
भाइन सहित राम मिलि राजहि। चले लेवाइ समेत समाजहि
दो० आश्रम सागर शांत रस पूरण पावन पाथ ॥
सैन मनहुं करुणा सरित लिये जात रघुनाथ ।
बोरति ज्ञान विराग करारे ॥ वचन स शोक मिलत नदि नारे
शोच उसास समीर तरंगा ॥ धीरज तट तरु वर कर भंगा
विषम विषाद तुरावति धारा । भय भ्रम भंवर वर्त अपारा ।
केवट बुध विद्या वड़ि नावा ॥ सकहि न खेइ एक नहिं आवा
वनचर कोल्ह किरात विचारे । थके विलोकि पथिक हिय हारे
आश्रम उदधि मिली जब जाई । मनहुं उठेउ अंबुधि अकुलाई
शोक विकल दोउ राज समाजा। रहा न ज्ञान न धीरज लाजा।
भूप रूप गुण शील सराही ॥ ।शोचहिं शोक सिंधु अवगाही
छं० अवगाहि शोक समुद्र शोचहिं नारि नर व्याकुल महा
दै दोष सकल सरोष बोलहिं वाम विधि कीन्ही कहा
सुर सिद्ध तापस योगि जन मुनि दशा देखि विदेह की
तुलसी न समरथ कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की
सो० किये अमित उपदेश । जहँ तहँ लोगन्ह मुनिवरन
धीरज धरिय नरेश ॥ कहेउ वशिष्ठ विदेह सन
जासु ज्ञान रवि भव निशि नाशा वचन किरण मुनि कमल विकाशा
तेहि कि मोह महिमा नियराई । यह सिय राम सनेह बड़ाई ।
विषयी साधिक सिद्ध सयाने ॥ त्रिविध जीव जग वेद बखाने
राम सनेह सरस मन जासू ॥ । साधु सभा वड़ आदर तासू
सोहन राम प्रेम बिनु ज्ञाना । कर्णधार विनु जिमि जलयाना
मुनि बहु विधि विदेह समुझाये राम घाट सब लोग नहाये

सकल शोक संकुल नरनारी सो बासर बीतेउ बिन बारी।
पशु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारा प्रिय परिजन कर कवन विचारा
दो॰ दोउ समाज निमिराजरघु राज नहाने प्रात ॥
बैठे सब वट विटप तर। मन मलीन कृशगात
जे महि सुर दशरथ पुर बासी। जे मिथिला पति नगर निवासी
हंस वंश गुरु जनक पुरोधा। जिन्ह जग मग परमारथ शोधा
लगे कहन उपदेश अनेका। सहित धर्म नय विरति विवेका
कौशिक कहि कहि कथा पुरानी समुझाई सब सभा सुबानी
तब रघुनाथ कौशिकहि कहेऊ नाथ कालि विनु जल सब रहेऊ
मुनि कह उचित कहत रघुराई गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई
ऋषि रुख लखि कह तिरहुतिराजू इहां उचित नहिं अशन अनाजू
कहा भूप भल सबहि सोहाना। पाइ रजायसु चले नहाना।
दो॰ तेहि अवसर फलफूलदलमूल अनेक प्रकार ॥
लै आये वनचर विपुल भरि भरि कांवरि भार ॥
कामद भे गिरि राम प्रसादा। अवलोकत अपहरत विषादा
सर सरिता बन भूमि विभागा। जनु उमगत आनंद अनुरागा
बेलि विटप सब सफल सफूला। बोलत खग मृग अति अनुकूला
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू त्रिविध समीर सुखद सब काहू
जाइ न बरणि मनोहर ताई ॥ जनु महि करति जनक पहुनाई
तब सब लोग नहाइ नहाई । राम जनक मुनि आयसु पाई
देखि देखि तरुवर अनुरागे । जहं तहं पुर जन उतरन लागे
दल फल मूल कन्द विधि नाना पावन सुन्दर सुधा समाना ॥
दो॰ सादर सब कहं राम गुरु पठये भरि भरि भार ॥
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु लगे करन फल हार
ईहि विधि बासर बीते चारी ॥ राम निरखि नर नारि सुखारी।

इहु समाज अस रुचि मन माहीं। बिनु सिय राम फिरब भल नाहीं
सीता राम संग बन बासू ॥। कोटि अमर पुर सरिस सुपासू
परिहरि लषण राम बैदेही ॥ जेहि घर भाव वाम विधि तेही
दाहिन दैव होइ जब सबही ॥ राम समीप बसिय बन तबही
मंदाकिनि मज्जन तिहु काला। राम दरश मुद मंगल माला
अटन राम गिरि बन तापस थल। असन अमिय सम कन्द मूल फल
सुख समेत संबत दुइ साता ॥ पल सम होहिं न जानिय जाता
दो॰ इहि सुख योग न लोग सब कहहिं कहा अस भाग
सहज सुभाव समाज इहु। राम चरण अनुराग
इहि विधि सकल मनोरथ करहीं बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं
सीय मातु तेहि समय पठाईं ॥ दासी देखि सु अवसर आईं।
सावकाश सुनि सब सिय सासू। आईं जनक राज रनिवासू
कौशल्या सादर सब मानी ॥। आसन दीन्ह समय सम आनी
शील सनेह सरस दुहु ओरा। द्रवहिं देखि सुनि कुलिश कठोरा
पुलक शिथिल तन बारि विलोचन महि नख लिखन लगी सब शोचन
सब सिय राम प्रेम की मूरति। जनु करुणा बहु भेष विसूरति
सीय मातु कह विधि बुधि बांकी। जिमि पय फेनु फोरि पवि टांकी
दो॰ सुनिय सुधा देखिय गरल सब करतूति कराल।
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल।
सुनि सशोच कह देवि सुमित्रा। विधि गति अति विपरीत विचित्रा
जो सृजि पालै हरै बहोरी ॥। बाल केलि सम विधि मति भोरी
कौशल्या कह दोष न काहू ॥ कर्म्म विवस दुख सुख क्षति लाहू
कठिन कर्म्म गति जान विधाता। सो शुभ अशुभ कर्म फल दाता
ईश रजाइ शीश सब ही के ॥ उतपति थिति लय विषै अमी के
देवि मोह वस शोचिय बादी ॥। विधि प्रपंच अस अचल अनादी

भूपति जियब मरब उर आनी शोचिय सखि लखि निजहितजानी
सीय मातु कह सत्य सुबानी। सुकृत अवधि अवध पति रानी
दो० लषण राम सिय जाहिंबन भल परिणाम न पोच
गहबरि हिय कह कौशिला मोहिं भरत कर शोच
ईश प्रसाद अशीश तुम्हारी।। सुत सुबंधु सुर सरिता बारी॥
राम शपथ मैं कीन्ह न काऊ। सो करि सखी कहौं सति भाऊ
भरत शील गुण विनय बड़ाई। भायप भक्ति भरोस भलाई॥
कहत शारदहु कै मति हीचे। सागर सीप कि जाहिं उलीचे।
जानौं सदा भरत कुल दीपा। वार वार मोहिं कहेउ महीपा
कसे कनक मणि पारिष पाये। पुरुष परखिये समय सुभाये।
अनुचित आज कहब असमोरा शोक सनेह सयानप थोरा॥
सुनि सुर सरि सम पावनिबानी भई सनेह बिकल सब रानी॥
दो० कौशल्या कह धीर धरि सुनहु देवि मिथिलेशि
को विवेक निधि वल्लभहि तुमहि सकै उपदेशि
रानि राय सन अवसर पाई॥ आपनि भांति कहब समुझाई
राखिय लषण भरत गवनहिंवन जो यह मत मानै महीप मन
तौ भल यतन करब सुबिचारी मोरे शोच भरत कर भारी॥
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं॥ रहे नीक मोहिं लागत नाहीं॥
लखि सुभाव सुनि सरल सुबानी सब भइ मगन करुण रस सानी
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि शिथिल सनेह सिद्ध योगी मुनि
सब रनिवास थकित लखि रहेऊ तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ॥
देवि दण्ड युग यामिनि बीती। राम मातु सुनि उठी सप्रीती।
दो० वेगि पाय धारिय थलहि कह सनेह सति भाय॥
हमरे तो अब ईश गति कै मिथिलेश सहाय॥
लखि सनेह सुनि वचन विनीता जनक प्रिया गहि पांव पुनीता।

देवि अन्दित अस विनय तुम्हारी दसरथ घरनि राम महतारी
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं । अगिनि धूम गिरि सिर तृण धरहीं
सेवक राउ कर्म मन बानी ॥ सदा सहाय महेश भवानी ॥
रौर अंग योग जग को है ॥ दीप सहाय कि दिन कर सोहै
राम जाइ वन करि सुर काजू ॥ अचल अवधपुर करिहहिं राजू
अमर नाग नर राम बाहु बल । सुखवसिहहिं अपने अपने थल
यह सब यागवल्क्य कहि राखा देवि न होइ मुधा मुनि भाषा
दो० अस कहि पगुपरि प्रेम अति सिय हित विनय सुनाइ
सिय समेत सिय मातु तब चली सु आयसु पाइ ॥
प्रिय परिजनहिं मिली वैदेही । जो जेहि योग भांति तस तेही
तापस भेष जानकिहि देखी । भे सब विकल विषाद विशेषी
जनक राम गुरु आयसु पाई ॥ चले थलहि सिय देखी आई
लीन्ह लाइ उर जनक जानकी । पाहुनि पावनि प्रेम प्राणकी
उर उमगेउ अम्बुधि अनुरागू । भयउ भूप मन मनहुं प्रयागू।
सिय सनेह बटु बाढ़त जोहा । तापस राम प्रेम शिशु सोहा ।
चिरंजीवि मुनि ज्ञान विकल जनु । बूड़त लहेउ बाल अवलंबनु
मोह मगन मति नहिं विदेह की । महिमा सिय रघुवर सनेह की।
दो० सिय पितु मातु सनेह बस विकल न सकी संभारि
धरणि सुता धीरज धरेउ समय सुधर्म विचारि
तापस भेष जनक सिय देखी । भयउ प्रेम परितोष विशेषी।
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ ॥ सुयश धवल जग कह सब कोऊ
जिति सुर सरि कीरति सरि तोरी । गवन कीन्ह विधि अंड करोरी
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे । इहि किय साधु समाज घनेरे।
पितु कह सत्य सनेह सु बानी ॥ सीय सकुचि मन माहं समानी
पुनि पितु मातु लीन्ह उर लाई । सिख आशिष हित दीन्ह सुहाई

कहति न सीय सकुच मन माहीं । इहाँ बसब रजनी भल नाहीं ।
लखि रुख रानि जनायउ राऊ । हृदय सराहत शील सुभाऊ ।

सो॰ बार बार मिलि भेंटि सिय विदा कीन्ह सनमानि
कही समय शिर भरत गति रानि सुबानि सयानि

सुनि भूपाल भरत व्यवहारू ॥ सोन सुगन्ध सुधा शशि सारू
मूंदे सजल नयन पुलके तन । सुयश सराहन लगे मुदित मन
सावधान सुनु सुमखि सुलोचनि भरत कथा भव बंध विमोचनि
धरम राज नय ब्रह्म विचारू । यहां यथा मति मोर प्रचारू
सो मति मोरि भरत महि माही । कहै काहु छलि छुअति न छाहीं
विधि गण पति अहिपति शिव शारद कवि कोविद बुध बुद्धि विशारद
भरत चरित कीरति करतूती ॥ धर्म शील गुण विमल विभूती
समुझत सुनत सुखद सब काहू । शुचि सुर सरि रुचि निदरि सुधाहू

दो॰ निरवधि गुण निरुपम पुरुष भरत भरत सम जानि
कही सुमेरु कि सेर सम । कवि कुल मति सकुचानि

अगम सबहि बरनत वर वरणी जिमि जल हीन मीन मगु धरणी
भरत अमित महिमा सुन रानी । जानहिं राम न सकहिं बखानी ।
बरणि सप्रेम भरत सत भाऊ ॥ तिय जिय की रुचि लखि कह राऊ
बहुरहिं लषण भरत बन जाहीं । सब कर भल सब के मन माहीं
देवि परंतु भरत रघुबर की ॥ प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी
भरत सनेह अवधि मम ताके । यद्यपि राम स्वामि समता के
परमारथ स्वारथ सुख सारे ॥ भरत न सपनेहु मनहु निहारे
साधन सिद्धि राम पद नेहू ॥ मोहिं लखि परत भरत मन येहू

सो॰ भोरेहु भरत न पेलिहहिं मन महं राम रजाइ ।
करिय न शोच सनेह वस कहेउ भूप विलखाइ

राम भरत गुण गणत सप्रीती । निशि दंपतिहि पलक सम बीती

राज समाज प्रात युग जागे ॥ न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे
गे नहाइ गुरु पहँ रघुराई ॥। बन्दि चरण बोले रुख पाई।
नाथ भरत पुरजन महतारी ॥ शोच विकल बन बास दुखारी
सहित समाज राउ मिथिलेशू। बहुत दिवस भे सहत कलेशू
उचित होइ सो कीजिय नाथा। हित सबही कर रौरे हाथा।
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ मुनि पुलके लखि शील सुभाऊ
तुम बिनु राम सकल सुख साजा नरक सरिस दुहु राज समाजा
दो० प्राण प्राण के जीव के। जिय सुख के सुख राम॥
तुम तजि तात सोहात गृह जिन्हहिं तिन्हहि विधि बाम
सो सुख करम धरम जरि जाऊ। जहँ न राम पद पंकज भाऊ
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू ॥ जहाँ न राम प्रेम पर धानू॥
तुम बिन दुखी सुखी तुम तेही तुम जानहु जिय जो जेहि केही
राउर आयसु शिर सबही के। विदित कृपालहि गति सब नीके
आपु आश्रमहि धारिय पाऊ। भये सनेह शिथिल मुनि राऊ
करि प्रणाम तब राम सिधाये ॥ ऋषि धरि धीर जनक पहँ आये
राम वचन गुरु नृपहि सुनाये । शील सनेह सुभाव सुहाये ॥।
महाराज अब कीजिय सोई ॥ सब कर धर्म सहित हित होई
दो० ज्ञान निधान सुजान शुचि धर्म धीर नर पाल ॥
तुम बिनु असमंजस शमन को समर्थ एहि काल
सुनि मुनि वचन जनक अनुरागे लखि गति ज्ञान विराग विरागे
शिथिल सनेह गुणत मन माहीं आये इहां कीन्ह भल नाहीं
रामहिं राय कहेउ बन जाना । कीन्ह आपु प्रिय प्रेम समाना
हम अब बन तें बनहिं पठाई । प्रमुदित फिरब विवेक बड़ाई
तापस मुनि महि सुर गति देखी। भये प्रेम बस विकल विशेषी
समय समुझि धरि धीरज राजा। चले भरत पहँ सहित समाजा।

भरत आय आगे भय लीन्हा अवसर सरिस सुआसन दीन्हा

तात भरत कह तिरहुति राऊ। तुम हिं विदित रघुबीर सुभाऊ

दो० राम सत्य ब्रत धर्म रत। सब कर शील सनेहु ॥

संकट सहत सकोच बस कहिय जो आयसु देहु

सुनि तन पुलकि नयन भरि वारी बोले भरत धीर धरि भारी ॥

प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू कुल गुरु सम हित माय न बापू

कौशिकादि मुनि सहित समाजू ज्ञान अंबु निधि आपुन आजू

शिसु सेवक आयसु अनुगामी जानि मोहि सिख देइय स्वामी

इहि समाज थल बूझब राउर । मन मलीन मैं बोलब बाउर ॥

छोटे वदन कहौं बड़ि बाता । छमब तात लखि बाम विधाता

आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवा धर्म कठिन जग जाना ॥

स्वामि धर्म स्वारथहि विरोधू । बधिर अंध प्रेमहि न प्रबोधू

दो० राखि राम रुख धर्म ब्रत पराधीन मोहि जान ॥

सब के संमत सर्व हित । करिय प्रेम पहिचान ॥

भरत वचन सुनि देखि सुभाऊ । सहित समाज सराहत राऊ ॥

सुगम अगम मृदु मंजु कठोरा । अर्थ अमित अति आखर थोरा

जो मुख मुकुर मुकुर निज पाणी गहि न जाय अस अद्भुत वाणी

भूप भरत मुनि साधु समाजू । गे जहँ विबुध कुमुद द्विज राजू

सुनि सुधि शोच विकल सब लोगा मनहु मीन गण नव जल योगा

देव प्रथम कुल गुरु गति देखी । निरखि विदेह सनेह विशेषी ॥

राम भक्ति मय भरत निहारे ॥ सुर स्वारथी हहरि हिय हारे ॥

सब कहँ राम प्रेम मय पेखा ॥ भये अलेख शोच बस लेखा ।

दो० राम सनेह सकोच बस कह स शोच सुर राज ॥

रचहु प्रपंचहि पंच मिलि नाहित भयउ अकाज ॥

सुरन्ह सुमिरि शारदा सराही । देवि देव शरणा गत पाही ॥

फेरि भरत मति करि निज माया । पाल विवुध कुल करि छल छाया
विवुध विनय सुनि देवि सयानी । बोली सुर स्वारथि जड़ जानी ।
मो सन कहहु भरत मति फेरू । लोचन सहस न सूझ सुमेरू ॥
विधि हरि हर माया बड़ि भारी । सोउ न भरत मति सकै निहारी ।
सो मति मोहिं कहत करु भोरी । चंदिनि कर कि चंदकर चोरी ।
भरत हृदय सिय राम निवासू ॥ तहँ कि तिमिर जहँ तरणि प्रकासू
अस कहि शारद गइ विधि लोका । विवुध विकल निशि मानहुं कोका

दो० सुर स्वारथी मलीन मन ॥ कीन्ह कुमंत्र कुठाट ।
रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाट

करि कुचालि सोचत सुर राजू । भरत हाथ सब काज अकाजू
गये जनक रघुनाथ समीपा ॥ सन माने सब रघुकुल दीपा ॥
समय समाज धर्म अविरोधा । बोले तब रघुवंश पुरोधा ॥
जनक भरत सम्वाद सुनाई ॥ भरत कहावति कही सुहाई ।
तात राम जस आयसु देहू ॥ । सो सब करै मोर मत येहू ॥
सुनि रघुनाथ जोरि युग पाणी । बोले सत्य सरल मृदु बाणी
विद्यमान आपुन मिथिलेसू ॥ मोर कहा सब भांति भदेसू ॥
राउर राय रजायसु होई ॥ ॥ राउरि शपथ सही शिर सोई

दो० राम शपथ मुनि मुनि जनक सकुचे सभा समेत ॥
सकल विलोकहिं भरत मुख बनै न उत्तर देत ॥

सभा सकुच वस भरत निहारी ॥ राम बंधु धरि धीरज भारी ।
कुसमय देखि सनेह संभारा ॥ बढ़त विंध्य जिमि घटज निवारा ।
शोक कनक लोचन मति क्षोनी हरी विमल गुण गण जग योनी
भरत विवेक वराह विशाला ॥ अनायास उधरे तेहि काला
करि प्रणाम सब कह कर जोरी । राम राउ गुरु साधु निहोरी ॥
क्षमव आजु अति अनुचित मोरा कहउं वदन मृदु वचन कठोरा

हिय सुमिरी शारदा सुहाई । मानस ते मुख पंकज आई
विमल विवेक धर्म नय शाली भरत भारती मंजु मराली ॥
दो० निरखि विवेक विलोचनन्हि शिथिल सनेह समाज
करि प्रणाम बोले भरत सुमिरि सीय रघुराज ।
प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी पूज्य परम हित अंतर यामी
सरल सुसाहिब शील निधानू प्रणत पाल सर्वज्ञ सुजानू
समरथ शरणागत हितकारी । गुणग्राहक अवगुण अघहारी
स्वामि गुसाईंहिं सरिस गुसांई । मोहिं समान मैं स्वामि दोहाई
प्रभु पितु वचन मोह बस पेली आयउं इहां समाज सकेली ।
जग भल पोच ऊंच अरु नीचू अमी अमर पद माहुर मीचू
राम रजाय मेटि मन माहीं ॥ देखा सुना कतहुं कोउ नाहीं ।
सो मैं सब विधि कीन्ह ढिठाई । प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥
दो० कृपा भलाई आपनी । नाथ कीन्ह भल मोर ॥
दूषण भे भूषण सरिस । सुयश चारु चहुं ओर ॥
राउरि रीति सुबानि बड़ाई ॥ जगत विदित निगमागम गाई
क्रूर कुटिल खल कुमति कलंकी नीच निशील निरीश निशंकी ।
ते सुनि शरण सामुहे आये ॥ सकृत प्रणाम किये अपनाये ।
देखि दोष कबहुं न उर आने । सुनि गुण साधु समाज बखाने ।
को साहब सेवकहि नेवाजी ॥ आप समान साज सब साजी ।
निज करतूति न समुझिय सपने सेवक सकुच शोच उर अपने ।
सो गुसांइ नहिं दूसर कोपी ॥ । भुजा उठाय कहौं प्रण रोपी ॥
पशु नाचत शुक पाठ प्रवीना ॥ गुणगति नट पाठक आधीना
सो सुधारि सनमानि जन किये साधु शिर मोर ॥
को कृपाल बिनु पालिहै विरदावलि बरजोर ॥
शोक सनेह कि बाल सुभाये । आयउं लाइ रजाय सु बाये ॥

तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा । सबहि भांति भल मानेहु मोरा
देखेउं पाय सुमंगल मूला ॥ । जानेउं स्वामि सहज अनुकूला
बड़े समाज विलोकेउं भागू ॥ बड़ी चूक साहिब अनुरागू
कृपा अनुग्रह अंग अघाई ॥ कीन्ह कृपा निधि सब अधिकाई
राखा मोर दुलार गुसांई ॥ ॥ अपने शील सुभाव भलाई
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई । स्वामि समाज सकोच विहाई
अविनय विनय यथा रुचि बानी क्षमिय देव अति आरत जानी

दो॰ सुहृद सुजान सु साहिबहि बहुत कहब बड़ि खोरि
आयसु देइय देव अब । समय सुधारिय मोरि ।

प्रभु पद पद्म पराग दुहाई ॥ सत्य सुकृत सुख सीम सुहाई
सो करि कहौं हिये अपने की । रुचि जागत सोवत सपने की
सहज सनेह स्वामि सेवकाई ॥ स्वारथ छल फल चारि विहाई
आज्ञा समन सु साहिब सेवा ॥ सो प्रसाद जन पावै देवा ॥ ।
अस कहि प्रेम विवश भे भारी । पुलक शरीर विलोचन बारी
प्रभु पद कमल गहे अकुलाई । समय सनेह न सो कहि जाई
कृपा सिंधु सन मानि सु बाणी । बैठाये समीप गहि पाणी ।
भरत विनय सुनि देखि सुभाऊ । शिथिल सनेह सभा रघुराऊ ।

छं॰ रघुराउ शिथिल सनेह साधु समाज मुनि मिथिलाधनी
मन महँ सराहत भरत भायप भक्ति की महिमा घनी ।
भरतहिं प्रशंसत विबुध बरषत सुमन मानस मलिन से ।
तुलसी विकल सब लोग सुनि सकुचे निशागम नलिन से

सो॰ देखि दुखारी दीन । दुहु समाज नर नारि सब
मघवा महा मलीन । मुये मारि मंगल चहत

कपट कुचालि सीम सुर राजू ॥ पिय अकाज प्रिय आपन काजू
काक समान पाक रिपु रीती ॥ । छली मलीन कतहुं न प्रतीती ।

प्रथम कुमति करि कपट सँकेला सो उचाट सब के शिर मेला
सुर माया सब लोग बिमोहे ॥ राम प्रेम अतिशय न बिछोहे।
भय उच्चाट बस मन थिर नाहीं। क्षण बन रुचि क्षण सदन सुहाहीं
दुविध मनोगति प्रजा दुखारी। सरित सिंधु संगम जिमि बारी
दुचित कतहुं परितोषन लहहीं एक एक मन मर्म न कहहीं॥
लखि हिय हंसि कह कृपा निधानू सरिस श्वान मघवान जुवानू

दो॰ भरत जनक मुनि गण सचिव साधु सचेत बिहाइ
लगी देव माया सबहि। यथा योग जन पाइ॥

कृपा सिंधु लखि लोग दुखारे। निज सनेह सुरपति छल भारे।
सभा राउ गुरु महि सुर मंत्री॥ भरत भक्ति सब की मति यंत्री।
रामहिं चितवत चित्र लिखे से। सकुचत बोलत बचन सिखे से
भरत प्रीति निति विनय बड़ाई। सुनत सुखद बरणत कठिनाई।
जासु बिलोकि भक्ति लव लेसू। प्रेम मगन मुनि गण मिथिलेसू
महिमा तासु कहै किमि तुलसी भक्ति प्रभाव सुमति हिय हुलसी
आपु छोट महिमा बड़ि जानी। कवि कुल कानि मानि सकुचानी
कहि न सकत गुण रुचि अधिकाई मति गति बाल बचन की नाई

दो॰ भरत विमल यश विमल विधु सुमति चकोर कुमारि
उदित विमल जन हृदय नभ इकटक रही निहारि॥

भरत सुभाव न सुगम निगमहू। लघु मति चापलता कवि क्षमहू
कहत सुनत सति भाव भरत को सीय राम पद होइ न रत को।
सुमिरत भरत हिं प्रेम राम को। जेहि न सुलभ तेहि सम न वाम को
देखि दयाल दशा सबही की॥ राम सुजान जानि जन जी की।
धर्म धुरीण धीर नय नागर॥ सत्य सनेह शील सुख सागर।
देश काल लखि समय समाजू नीति प्रीति पालक रघु राजू॥
बोले बचन बाणि सर बस से। हित परिणाम सुनत शशि रस से

तात भरत तुम धर्म धुरीणा ॥ । लोक वेद विधि परम प्रवीणा ॥
दो॰ कर्म वचन मानस विमल तुम समान तुम तात ॥
गुरु समाज लघु बंधु गुण कुसमय किमि कहि जात
जानहु तात तरणि कुल रीती ॥ सत्य सिंधु पितु कीरति प्रीती ॥
समय समाज लाज गुरु जन की। उदासीन हित अनहित मन की
तुमहिं विदित सबही कर करमू । आपन मोर परम हित धरमू ।
मोहिं सब भांति भरोस तुम्हारा । तदपि कहौं अवसर अनुसारा
तात मात बिन बात हमारी ॥ । केवल कुल गुरु कृपा सुधारी ॥
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू ॥ हमहिं सहित सब होत दुखारू
जौ बिनु अवसर अथव दिनेशू । जग केहि कहहु न होइ कलेशू
तस उतपात तात विधि कीन्हा । मुनि मिथिलेश राखि सब लीन्हा
दो॰ राज काज सब लाज पति धर्म धरणि धन धाम ।
गुरु प्रभाव पालिहि सबहि भल होइहि परिणाम ॥
सहित समाज तुम्हार हमारा ॥ घर बन गुरु प्रसाद रख वारा ॥
मातु पिता गुरु स्वामि निदेशू ॥ सकल धर्म धरणी धर शेषू ॥
सो तुम करहु करावहु मोहू ॥ । तात तरणि कुल पालक होहू
साधक एक सकल सिधि देनी ॥ कीरति सु गति भूति मय वेनी
सो विचारि सहि संकट भारी ॥ करहु प्रजा परिवार सुखारी
बांटि विपति सब ही मोहिं भाई । तुमहिं अवधि भरि अति कठिनाई
जानि तुमहिं मृदु कहौं कठोरा । कुसमय तात न अनुचित मोरा
होहिं कुठाव सुबंधु सुहाये ॥ ओड़िय हाथ असिनहु के घाये
दो॰ सेवक कर पद नयन से । मुख सो साहिब होइ ॥
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकवि सराहहिं सोइ ।
सभा सकल सुनि रघुवर बानी ॥ । प्रेम पयोधि अमिय जनु सानी
शिथिल समाज सनेह समाधी ॥ देखि दशा चुप शारद साधी ॥

भरतहि भयउ परम संतोषू ॥ सनमुख स्वामि विमुख दुख दोषू ॥
मुख प्रसन्न मन मिटा विषादू ॥ भा जनु गूंगहि गिरा प्रसादू ॥
कीन्ह सप्रेम प्रणाम बहोरी ॥ बोले पाणि पंकरुह जोरी ॥
नाथ भयउ सुख साथ गये को । लहेउ लाभ जग जन्म भये को ॥
अब कृपाल जस आयसु होई । करौं शीश धरि सादर सोई ॥
सो अवलंब देव मोहिं देई ॥ अवधि पार पावउँ जेहि सेई ॥
दो० देव देव अभिषेक हित । गुरु अनुशासन पाइ ॥
आनेउँ सब तीरथ सलिल तेहि कहँ काह रजाइ ॥
एक मनोरथ बड़ मन माहीं ॥ सभय सकोच जात कहि नाहीं
कहहु तात प्रभु आयसु पाई । बोले वाणि सनेह सुहाई ॥
चित्रकूट मुनि थल तीरथ वन । खग मृग सर सरि निर्झर गिरिगन
प्रभु पद अंकित अवनि विशेषी आयसु होइ तो आवौं देखी ॥
अवशि अत्रि आयसु शिर धरहू तात विगत भय कानन चरहू ।
मुनि प्रसाद वन मंगल दाता ॥ पावन परम सोहावन भ्राता ।
ऋषि नायक जहँ आयसु देहीं राखेहु तीरथ जल थल तेहीं ।
सुनि प्रभु वचन भरत सुख पावा पुनि पद कमल मुदित शिर नावा
दो० भरत राम सम्वाद सुनि । सकल सुमंगल मूल ॥
सुर स्वारथी सराहि कुल । हर्षित बरषहिं फूल ॥ ।
धन्य भरत जय राम गुसांई । कहत देव हरषत बरि आई ।
मुनि मिथिलेश सभा सब काहू । भरत वचन सुनि भयउ उछाहू ।
भरत राम गुण ग्राम सनेहू ॥ । पुलकि प्रशंसत राउ विदेहू ॥
सेवक स्वामि सुभाव सुहावन । नेम प्रेम अति पावन पावन
मति अनुसार सराहन लागे । सचिव सभा सद सब अनुरागे ।
सुनि मुनि राम भरत सम्वादू । दुहु समाज हिय हर्ष विषादू
राम मातु दुख सुख सम जानी । कहि गुण दोष प्रबोधी रानी ।

एक करहिं रघुबीर बड़ाई ॥ । एक सराहत भरत भलाई ॥

दो० अत्रि कहेउ तब भरत सन शैल समीप सु कूप
राखिय तीरथ तोय तहँ पावन अमल अनूप ।

भरत अत्रि अनुशासन पाई ॥ जल भाजन सब दियें चलाई ।
सानुज आप अत्रि मुनि साधू सहित गये जहँ कूप अगाधू ।
पावन पाथ पुण्य थल राखा । प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाषा
तात अनादि सिद्ध थल एहू । लोपेउ काल विदित नहिं केहू
तब सेवकन्ह सरस थल देखा । कीन्ह सु जल हित कूप विशेषा
विधि वस भयउ विश्व उपकारू सुगम अगम अति धर्म विचारू
भरत कूप अब कहिहहिं लोगा । अति पावन तीरथ जल योगा
प्रेम सनेम निमज्जहिं प्राणी ॥ होइहहिं विमल कर्म मन वाणी

दो० कहत कूप महिमा सकल गये जहाँ रघु राउ ॥७
अत्रि सुनायउ रघुवरहि तीरथ पुण्य प्रभाउ ॥७

कहत धर्म इति हास सप्रीती ॥ भयउ भोर निशि सो सुख बीती
नित्य निवाहि भरत दोउ भाई । राम अत्रि गुरु आयसु पाई ।
सहित समाज साज सब सारे । चले राम बन अटन पयारे ।
कोमल चरण चलत बिनु पनहीं भै मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं
कुश कंटक कांकरी कुराई ॥ । कटुक कठोर कु वस्तु दुराई ।
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे । बहत समीर त्रिविधि सुख लीन्हे
सुमन वरसि सुर घन करि छाहीं । विटप फूलि फल दल मृदु ताहीं
मृग विलोकि खग बोलि सुबानी। सेवहिं सकल राम प्रिय जानी

दो० सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात ॥
राम प्राण प्रिय भरत कहँ यह न होइ बड़ि बात ।

इहि विधि भरत फिरत बन माहीं । नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं
पुण्य जलाशय भूमि विभागा । खग मृग तरु तृण गिरि बन बागा

चारु विचित्र पवित्र विशेषी। बूझत भरत दिव्य सब देखी
सुनि मन मुदित कहत ऋषिराऊ हेतु नाम गुण पुण्य प्रभाऊ।
कतहुं निमज्जन कतहुं प्रणामा कतहुं विलोकत मन अभिरामा
कतहुं बैठि मुनि आयसु पाई। सुमिरत सीय सहित दोउ भाई
देखि सुभाव सनेह सुसेवा ॥। देहिं अशीष मुदित बन देवा
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई प्रभुपदकमलविलोकहिं आई॥

दो० देखे थल तीरथ सकल भरत पांच दिन मांझ।
कहत सुनत हरि हर सुयश गयउ दिवस भइ सांझ

भोर न्हाइ सब जुरा समाजू ॥ भरत भूमि सुर तिरहुति राजू
भल दिन आजु जानि मन माहीं राम कृपालु कहत सकुचाहीं
गुरु नृप भरत सभा अवलोकी। सकुचि राम फिरि अवनि विलोकी
शील सराहि सभा सब सोची। कहु न राम सम स्वामि सकोची
भरत सुजान राम रुख देखी ॥ उठि सप्रेम धरि धीर विशेषी।
करि दण्डवत कहत कर जोरी राखी नाथ सकल रुचि मोरी
मोहिं लागि सबहिं सहेउ संतापू बहुत भांति दुख पावा आपू
अब गोसांइ मोहि देहु रजाई। सेवौं अवध अवधि लगि जाई

दो० जेहि उपाय पुनि पाय जन देखैं दीन दयाल॥
सो शिख देइय अवधि लगि कोशल पाल कृपाल

पुरजन परिजन प्रजा गुसांई ॥ सब सुचि सरस सनेह सगाई।
राउर वदि भल भव दुख दाहू। प्रभु बिनु बादि परम पद लाहू।
स्वामि सुजान जानि सबही की। रुचि लालसा रहनि जन जीकी
प्रणत पाल पालहिं सब काहू। देव दुहूं दिशि ओर नि वाहू।
अस मोहिं सब विधि भूरि भरोसो। किये विचार न शोच खरो सो।
आरति मोरि नाथ कर छोहू। दुहु मिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू।
यह बड़ दोष दूरि करि स्वामी। तजि सकोच सिखइय अनुगामी

भरत विनय सुनि सबहि प्रशंसा क्षीर नीर विवरण गति हंसा ।

दो॰ दीन बंधु सुनि बंधु के ॥ वचन दीन छल हीन ।
देश काल अवसर सरिस बोले राम प्रवीन ॥१॥

तात तुम्हार मोर परि जन की । चिन्ता गुरुहिं नृपहि घर बन की
माथे पर गुरु मुनि मिथिलेश ॥ हमहिं तुमहिं सपनेहु न कलेश
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ ॥ स्वारथ सुयश धरम पर मारथ ।
पितु आयसु पालिय दुहु भाई । लोक वेद भल भूप भलाई ॥
गुरु पितु मातु स्वामि सिख पाले । चलत सुमग्ग पग परत न खाले
अस विचारि सब शोच विहाई । पालहु अवध अवधि भरि जाई
देश कोश पुर जन परि वारू ॥ गुरु पद रज हि लाग छर भारू
तुम मुनि मातु सचिव सिख मानी पालहु पुहुमि प्रजा रज धानी

दो॰ मुखिआ मुख सो चाहिये खान पान को एक ॥
पाले पोषे सकल अंग । तुलसी सहित विवेक ॥

राज धर्म सर वस इत नोई ॥ । जिमि मन माह मनोरथ गोई
बंध प्रबोध कीन्ह बहु भांती ॥ बिनु अधार मन तोष न शांती
भरत शील गुरु सचिव समाजू । सकुच सनेह विवस रघु राजू
प्रभु करि कृपा पावरी दीन्ही । सादर भरत शीश धरि लीन्ही ।
चरण पीठि करुणा निधान के । जनु युग यामिन प्रजा प्राण के
संपुट भरत सनेह रतन के ॥ । आखर युग जनु जीव यतन के
कुल कपाट कर कुशल करम के । विमल नयन सेवा सु धरम के
भरत मुदित अवलम्ब लहे ते ॥ अस सुख जस सिय राम रहे ते

दो॰ मांगेउ विदा प्रणाम करि राम लिये उर लाइ ॥
लोग उचाटे अमर पति । कुटिल कु अवसर पाइ

सो कुचालि सब कहं भइ नीकी । अवधि आस सब जीवन जी की
नतरु लषण सिय राम वियोगा । हहरि भरत सब लोग करोगा

राम कृपा अवरेव सुधारी ॥ विबुध धार भइ गुणद गोहारी
भेटत भुज भरि भाइ भरत सो। राम प्रेम रस कहि न परत सो।
तन मन वचन उमगि अनुरागा धीर धुरन्धर धीरज त्यागा
वारिज लोचन मोचत वारी ॥ देखि दशा सुर सभा दुखारी
मुनि गण गुरु जन धीर जनकसे ज्ञान अनल मन कसे कनक से
जे विरंचि निर्लेप उपाये ॥ पदुमपत्र जिमिजलजग जाये।
दो॰ तेउ विलोकि रघुवर भरत प्रीति अनूप अपार।
भये मगन मन तन वचन सहित विराग विचार।
जहां जनक गुरु गतिमतिभोरी प्राकृत प्रीति कहत बड़ खोरी
वरणत रघुवर भरत वियोगू। सुनि कठोर कविजानिहि लोगू
सो सकोच वस अकथ सुवानी। समय सनेह सुमिरि सकुचानी।
भेटि भरत रघुवर समुझाये ॥ पुनि रिपुदमन हर्षि हिय लाये
सेवक सचिव भरत रुख पाई । निज निज काज लगे सब जाई
सुनि दारुण दुख दुहू समाजा। लगे चलन के साजन साजा॥
प्रभु पद पद्म वन्दि दोउ भाई ॥ चले शीश धरि राम रजाई॥
मुनि तापस वन देव निहोरी । सब सनमानि वहोरि वहोरी।
दो॰ लषणहिं भेटि प्रणाम करि शिर धरि सिय पद धूरि
चले सप्रेम अशीस सुनि सकल सु मंगल मूरि॥
सानुज राम नृपहि शिर नाई ॥ कीन्हीं बहु विधि विनय बड़ाई।
देव दया बस बड़ दुख पायहु । सहित समाज काननहिं आयहु
पुर पगु धारिय देइ अशीशा कीन्ह धीर धरि गमन महीशा
मुनि महि देव साधु सन माने । विदा किये हरि हर सम जाने।
सासु समीप गए दोउ भाई ॥ फिरे वन्दि पद आशिष पाई।
कौशिक वाम देव जावाली ॥ परिजन पुर जन सचिव सुचाली
यथा योग करि विनय प्रणामा। विदा किये सब सानुज रामा॥

नारि उरुप लघु मध्य बड़ेरे ॥। सब सनमानि कृपानिधि फेरे
दो॰ भरत मातु पद बंदि प्रभु । शुचि सनेह मिलि भेंटि
बिदा कीन सजि पालकी सकुच शोच सब मेटि ।
परिजन मातु पितहि मिलि सीता । फिरी प्राण प्रिय प्रेम पुनीता ।
करि प्रणाम भेंटी सब सासू ॥ प्रीति कहत कवि हियन हुलासू
सुनि सिख अभिमत आशिष पाई । रही सीय दुहु प्रीति समाई ।
रघुपति पटु पालकी मगाई ॥ करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई ।
वार वार हिलि मिलि दोउ भाई । सम सनेह जननी पहुंचाई ॥
साजि बाजि गज बाहन नाना । भूप भरत दल कीन्ह पयाना
हृदय राम सिय लषण समेता । चले जाहिं सब लोग अचेता
वसह बाजि गज पशु हिय हारे चले जाहिं पर बस मन मारे ।
दो॰ गुरु गुरु तिय पद वन्दि प्रभु सीता लषण समेत ॥
फिरे हर्ष बिसमय सहित । आये पर्ण निकेत ॥॰
बिदा कीन्ह सनमानि निषादू । चलेउ हृदय वड़ बिरह बिषादू
कोल्ह किरात भिल्ल बन चारी । फेरे फिरे जोहारि जोहारी ॥
प्रभु सिय लषण बैठि बट छाहीं । प्रिय परिजन वियोग बिलखाहीं
भरत सनेह सुभाव सुबानी ॥ । प्रिया अनुज सन कहत बखानी
प्रीति प्रतीति वचन मन करणी ॥ श्री मुख राम प्रेम वस वरणी ॥
तेहि अवसर खग मृग जल मीना चित्र कूट चर अचर मलीना
विबुध बिलोकि दशा रघुवर की । वरषि सुमन कहि गति घर घर की
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह भरोसो । चले मुदित मन डर न खरोसो
दो॰ सानुज सीय समेत प्रभु । राजत पर्ण कुटीर ॥॰।
भक्ति ज्ञान वैराग्य जनु । सोहत धरे शरीर ॥॰।
मुनि महि सुर गुरु भरत भुआलू राम बिरह सब साज बिहालू ॥
प्रभु गुण ग्राम गुणत मन माहीं । सब चुप चाप चले मग जाहीं ।

यमुना उतरि पार सब भयउ । सो वासर विनु भोजन गयेऊ ॥
उतर देव सरि दूसर बासू ॥ । राम सखा सब कीन्ह सुपासू ॥
सई उतरि गोमती नहाये ॥ चौथे दिवस अवध पुर आये
जनक रहे पुर वासर चारी । राज काज सब साज संभारी ।
सौंपि सचिव गुरु भरत हि राजू तिरहुत चले साजि सब साजू ।
नगर नारि नर गुरु सिख मानी । वसे सुखेन राम रज धानी ॥

दो॰ राम दरश लगि लोग सब करत नेम उपवास ।
तजितजि भूषण भोग सुख जिअत अवधि की आस

सचिव सु सेवक भरत प्रबोधे ॥ । निज निज काज पाइ सिख शोधे
पुनि सिख दीन्ह वोलि लघु भाई । सौंपी सकल मातु सेव काई ।
भूसुर वोलि भरत कर जोरे ॥ करि प्रणाम वर विनय निहोरे
ऊंच नीच कारज भल पोंचू । आयसु देव न कर ब सकोचू
परिजन पुर जन प्रजा वुलाये । समाधान करि सुबस बसाये ।
सानुज गे गुरु गेह वहोरी ॥ । करि दण्डवत कहत कर जोरी ।
आयसु होइ तो रहौं सनेमा । बोले मुनि तन पुलकि सप्रेमा ।
समुझव कहव करव तुम सोई । धर्म सार जग होइहि जोई ॥ ।

दो॰ सुनि सिख पाइ अशीष वड़ि गणक वोलि दिन साधि
सिंहासन प्रभु पादुका ॥ वैठारी निरु पाधि ॥ ।

राम मातु गुरु पद शिर नाई । प्रभु पद पीठि रजायसु पाई ।
नंदि ग्राम करि परण कुटीरा । कीन्ह निवास धर्म्म धुर धीरा
जटा जूट शिर मुनि पट धारी । महि खनि कुश सायरी संवारी
असन वसन वासर व्रत नेमा ॥ करत कठिन ऋषि धर्म सप्रेमा
भूषण वसन भोग सुख भूरी ॥ । मन तन वचन तजे तृण तूरी
अवध राज सुर राज सिहाहीं । दशरथ धन लखि धनद लजाहीं
तेहि पुर वसत भरत विनु रागा । चंचरीक जिमि चंपक वागा ।

रमा विलास राम अनुरागी ॥। तजत भवन जिमि जन बड़भागी
दो॰ राम प्रेम भाजन भरत। बड़ी न यह करतूति ॥
चातक हंस सराहियत। टेक विवेक विभूति ॥
देह दिनहिं दिन दूबरि होई ॥। घटत तेज बल मुख छबि सोई।
नित नव राम प्रेम पण पीना। बढ़त धर्म दल मन न मलीना।
जिमि जल निघरत शरद प्रकाशे विलसत वेतसु बनज विकासे
राम दम संयम नेम उपासा। नखत भरत हिय विमल अकाशा
ध्रुव विश्वास अवधि राकासी। स्वामि सुरति सुर वीथि विकासी
राम प्रेम विधु अचल अदोषा। सहित समाज सोह नित चोखा
भरत रहनि समुझनि कर तूती। भक्ति विरति गुण विमल विभूती
वरणत सकल सु कवि सकुचाहीं शेष गणेश गिरा गम नाहीं।
दो॰ नित पूजत प्रभु पावरी। प्रीति न हृदय समाति
मांगि मांगि आयसु करत राज काज बहु भांति
पुलक गात हिय सिय रघुबीरू। जीह नाम जप लोचन नीरू
लषण राम सिय कानन बसहीं। भरत भौन बसि तप तनकसहीं
दुहु दिशि समुझि कहत सब लोगू सब विधि भरत सराहन योगू
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं। देखि दशा मुनि राज लजाहीं ॥
परम पुनीत भरत आचरणू ॥ मधुर मंजु मुद मंगल करणू।
हरण कठिन कलि कलुष कलेषू। महा मोह निशि दलन दिनेषू
पाप पुञ्ज कुंजर मृग राजू ॥। शमन सकल संताप समाजू।
जन रंजन भंजन भव भारू ॥ । राम सनेह सुधा कर सारू ॥
छं॰ सियराम प्रेम पियूष पूरण होत जन्म न भरत को।
मुनिमन अगम यम नियम शम दम विषम व्रत आचरत को
दुख दाह दारिद दंभ दूषण सुयश मिसु अपहरत को
कलि काल तुलसी से शठहि हठि राम सनमुख करत को

सो॰ भरत चरित करि नेम। तुलसी जे सादर सुनहिं॥
सीय राम पद प्रेम ।। अवसि होइ भव रस विरति ३३०

॥ इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल विज्ञान वैराग्य सम्पादनो नाम तुलसी कृत अयोध्या काण्ड द्वितीयः सोपानः समाप्तः शुभमस्तु

शुभ मिती माघ कृष्ण १३
गुरु वासरे
संवत १९ ३४ विक्रम



श्रीगणेशायनमः

अरण्यकाण्ड

श्लोक

॥ मूलं धर्मतरो विवेक जलधी पूर्णेन्दुमानन्ददम् । वैराग्याम्बुज भास्करं ह्यघ हरं ध्वान्तापहं तापहं ॥ मोहाम्भोधरपुञ्ज पाटन विधौ खे शं भवं शङ्करम् । वन्दे ब्रह्मकुलं कलंकशमनम् श्री राम भूप प्रियम् ॥ १ ॥ सान्द्रानन्द पयोद सौभगतनुम्पीताम्बरं सुन्दरम् । पाणौ बाण शरासनं कटि लसत्तूणीर भारं वरम् ॥ राजीवायत लोचनं धृत जटा जूटेन संशोभितम् । सीता लक्ष्मण संयुतं पथि गतं रामा भि रामं भजे ॥ २ ॥

सो० उमा राम गुण गूढ़ । पण्डित मुनि पावहिं विरति
पावहिं मोह विमूढ़ । जे हरि विमुख न धर्म रति

पुर नर भरत प्रीति मैं गाई ॥ मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥ अब प्रभु चरित सुनो अति पावन करत जो बन सुर नर मुनि भावन एक बार चुनि कुसुम सुहाये ॥ निज कर भूषण राम बनाये । सीतहिं पहिराये प्रभु सादर ॥ बैठे फटिक शिला पर सादर ॥

सुरपति सुत धरि बायस बेषा । शठ चाहत रघुपति बल देखा
जिमि पिपीलिका सागर थाहा महा मन्द मति पावन चाहा
सीता चरण चोंच हति भागा । मूढ़ मन्द मति कारण कागा ।
चला रुधिर रघुनायक जाना । सींक धनुष शायक संधाना ॥

दो॰ अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह ॥
तासन आइ कीन्ह छल । मूरख अवगुण गेह ॥

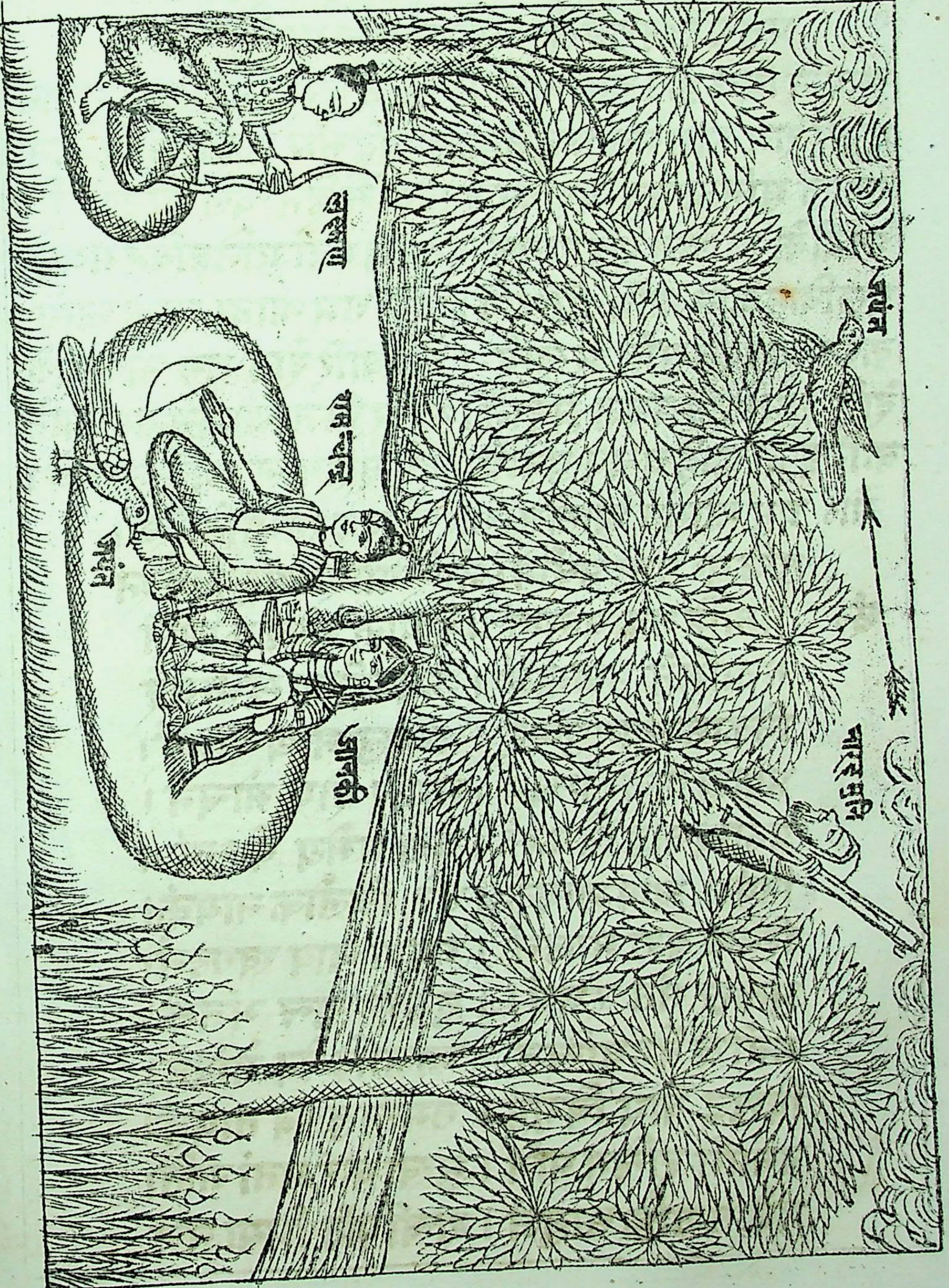
बिनःपराध प्रभु हतैं न काहू । अवसर परे ग्रसै शशि राहू ।
जब प्रभु लीन्ह धनुषसिकबाना । क्रोध जानि भा अनल समाना
प्रेरित अस्त्र ब्रह्म शर धावा ॥ चला भाजि वायस भय पावा
धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं राम बिमुख राखा तिन्ह नाहीं
भा निराश उपजा हिय त्रासा । यथा चक्र भय ऋषि दुर्वासा
ब्रह्म धाम शिव पुर सब लोका । फिरा श्रमित व्याकुल भय शोका
काहू बैठन कहा न ओही ॥ राखि को सकै राम कर द्रोही ।
मातु मृत्यु पितु शमन समाना सुधा होइ विष सुनु हरि याना
मित्र करै शत रिपु कै करणी । ताकहं विबुध नदी वै तरणी
सब जग ताहि अनल तें ताता। जो रघुबीर विमुख सुन भ्राता

दो॰ जिमि जिमि भाजत शक्र सुत व्याकुल अति दुखदीन
तिमि तिमि धावत राम शर पाछे परम प्रवीन ॥

बचहिं उरग बरु ग्रसै खगेशा रघुपति शर छुटिय सब अंदेशा
नारद देखा बिकल जयन्ता ॥ लागि दया कोमल चित सन्ता
हरिहिं ते कहि प्रभु प्रभुताई ॥ भजे जात बहु बिधि समुझाई
पठवा तुरत राम पहँ ताही ॥ कहसि पुकारि प्रणत हित पाही
आतुर सभय गहेसि पद जोई । त्राहि त्राहि दयाल रघु राई ॥
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई मैं मति मन्द जानि नहिं पाई ।
निज कृत कर्म जनित फल पायउं अब प्रभु पाहि शरण तकि आयउं

आ॰ ३

शक्रसुत जयंत को सीता जी के चरण में चोंच मारना और श्रीरामचन्द्र जी को सींक के बाण मारने से जयंत को अति व्याकुल होय त्रैलोक्य भ्रमि श्री रामचन्द्र जी के शरणागत आना



सुनि कृपाल अति आरत बानी। एक नयन करि तजा भवानी।

सो० कीन्ह मोह बस द्रोह। जद्यपि तेहि कर बध उचित
प्रभु छाड़ेउ करि छोह। को कृपाल रघुबीर सम ॥

रघुपति चित्र कूट बसि नाना। चरित करत अति सुधा समाना
बहुरि राम अस मन अनुमाना होइहि भीर सबहि मोहिं जाना
सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई सीता सहित चले दोउ भाई ॥
अत्री के आश्रम प्रभु गयऊ। सुनत महा मुनि हर्षित भयऊ।
पुलकित गात अत्रि उठि धाये। देखि राम आतुर चलि आये ॥
करत दण्डवत मुनि उर लाये। प्रेम बारि दोउ जन अन्हवाये
देखि राम छवि नयन जुड़ाने। सादर निज आश्रम तब आने
करि पूजा कहि वचन सुनाये। दिये मूल फल प्रभु मन भाये ॥

सो० प्रभु आसन आसीन। भरि लोचन शोभा निरखि।
मुनि वर परम प्रवीन। जोरि पाणि अस्तुति करत

छं० नमामि भक्त वत्सलं ॥ कृपालु शील कोमलं
भजामि ते पदाम्बुजं। अकामि नां स्वधा मदं
निकाम श्याम सुन्दरं। भवाम्बु नाथ मन्दरं।
प्रफुल्ल कंज लोचनं। मदादि दोष मोचनं।
प्रलम्ब बाहु विक्रमं। प्रभो प्रमेय वैभवं ॥
निषंग चाप शायकं। धरे त्रिलोक नायकं।
दिनेश वंश मण्डनं। महेश चाप खण्डनं।
मुनीन्द्र संत रंजनं।। सुरारि वृन्द भंजनं।
मनोज वैर वन्दितं। अजादि देव सेवितं।
विशुद्ध बोध विग्रहं। समस्त दुःख तापहं।
नमामि इन्दिरा पतिं। सुखा करं सतां गतिं।
भजे स शक्ति सानुजं। शची पति प्रिया नुजं

त्वदंघ्रि मूल जे नरा । भजन्ति हीन मत्सरा
पतंति नो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकुले
विविक्त वासनाःसदा । भजन्ति मुक्ति हं मुदा
निरस्य इन्द्रियादिकं । प्रयांति ते गतिस्वकं
त्वमेक मद्भुतं प्रभुं । निरीह मीश्वरं विभुं
जगद् गुरुंच शास्वतं । तुरीय मेव केवलं ॥
भजामि भाव वल्लभं । कुयोगि नां सु दुर्लभं
स्वभक्त कल्प पादपं । समस्त सेव्य मन्वहं
अनूप रूप भूपतिं । नतोह मुर्विजा पतिं
प्रसीद मे नमामि जे । पदाब्ज भक्ति देहि मे
पठन्ति ये स्तवं मिदं । नरा दरेण ते पदं ॥
व्रजन्ति नात्र संशयं । त्वदीय भक्ति संयुतं

दो० बिनती करि मुनि नाइ सिर कह कर जोरि बहोरि
चरण सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि

जन्म जन्म तव पद सुख कन्दा। बदौं प्रेम चकोर जिमि चन्दा
देखि राम मुनि विनय प्रणामा। विविध भांति पायेउ विश्रामा
अनुसूया के पद गहि सीता । मिलीं बहोरि सुशील विनीता
जो सिय कमल लोक सुख दाता अखिल लोक ब्रह्माण्ड विधाता
ते पाई सिय मुनि वर भामिनि सुखी भई कुमुदिनि ज्यों यामिनि
ऋषि पतनी मन सुख अधिकाई आशिष देइ निकट बैठाई।
दिव्य वसन भूषण पहिराये ।। जे नित नूतन अमल सुहाये
जाहि निरखि दुख दूरि पराहीं। बाढ़इ आनि जिमि पन्नग जाहीं
दो० ऐसे वसन विचित्र सुठि दिये सीय कहं आनि
सनमानी प्रिय वचन कहि प्रीति न जाइ बखानि
कह ऋषि वधू सरल मृदुवानी नारिधर्म कछु ब्याज बखानी।

मातु पिता भ्राता हित कारी ।। मित सुखप्रद सुनु राज कुमारी ।
अमित दान भर्त्ता बैदेही ।।४।। अधम सो नारि जो सेवन तेही
धीरज धर्म मित्र अरु नारी ।।। आपद काल परखियहि चारी
वृद्ध रोग बस जड़ धन हीना । अंध वधिर क्रोधी अति दीना
ऐसेहु पति कर किय अपमाना । नारि पाव यम पुर दुख नाना ।
एकै धर्म एक व्रत नेमा ।।५।। काय वचन मन पति पद प्रेमा
जगपति व्रता चारि विधि अहही वेद पुराण सन्त अस कहहीं
सो० उत्तम मध्यम नीच लघु । सकल कहउं समुझाइ ।
आगे सुनहिं ते भव तरहि सुनहु सीय चितलाइ
उत्तम के अस बस मन माहीं ।। सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं
मध्यम पर पति देखहि कैसे । भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ।
धर्म विचारि समुझि कुल रहही । सो निकृष्ट तिय श्रुति अस कहहीं
बिनु अवसर भय ते रह जोई । जानेहु अधम नारि जग सोई
पति वंचक पर पति रति करई । रौरव नरक कल्प शत परई ।
क्षण सुख लागि जन्म शत कोटी । दुख न समुझ तेहि सम को खोटी
बिनु श्रम नारि परम गति लहई । पतिव्रत धर्म छांडि छल गहई
पति प्रतिकूल जनमि जहं जाई । विधवा होइ पाइ तरुणाई ।।
सो० सहज अपावनि नारि । पति सेवत शुभ गति लहहि
यश गावत श्रुति चारि । अजहुं तुलसी हरिहि प्रिय
सुनु सीता तव नाम । सुमिरि नारि पतिव्रत करहि
तोहि प्राण प्रिय राम । कहेउं कथा संसार हित ।।
सुनि जानकी परम सुख पावा । सादर तासु चरण शिर नावा ।।
तब मुनि सन कह कृपा निधाना । आयसु होइ जाउं बन आना ।
सन्तत मोपर कृपा करेहू ।। ।। सेवक जानि तजेहु जनि नेहू ।
धर्म धुरन्धर प्रभु की बानी ।। सुनि सप्रेम बोले मुनि ज्ञानी ।

जासु कृपा अज शिव सनकादी । चहत सकल परमारथ बादी ।
ते तुम राम अकाम पियारे ।। दीन बंधु मृदु बचन उचारे ।
अब जानी मैं श्री चतुराई । भजिय तुमहिं सब देव बिहाई ।
जेहि समान अतिशय नहिं कोई ताकर शील कसन अस होई
केहि बिधि कहौं जाहु अब स्वामी कहहु नाथ तुम अन्तरयामी
अस कहि प्रभु बिलोकि मुनिधीरा लोचन जल बह पुलक शरीरा

छं॰ तन पुलक निर्भर प्रेम पूरण नयन मुख पंकज दिये ॥
मन ज्ञान गुण गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किये
जप योग धर्म समूह ते नर भक्ति अनुपम पावई ।
रघुबीर चरित पुनीत निशि दिन दास तुलसी गावई ।

दो॰ सुनिहि कि अस्तुति कीन्ह प्रभु दीन्ह सुभग बरदान
सुमन दृष्टि नभ संकुल जय जय कृपा निधान

मुनि पद कमल नाइ करि शीशा चले बनहिं सुर नर मुनि ईशा ॥
आगे राम अनुज पुनि पाछे । मुनि बर बेष बने अति काछे ।
सरिता बन गिरि अवघट घाटा । पति पहिचानि देहि बर बाटा ।
जहं जहं जाहिं देव रघुराया । करहिं मेघ नभ तहं तहं छाया
आश्रम बिपुल दीख बन माहीं देव सदन तेहि पट तर नाहीं ।।
बहु तड़ाग सुन्दर अमराई । भांति भांति सब मुनिन लगाई ।
दिव्य बिटप बन चहं सिरि सोहैं देखत सकल सुरन मन मोहैं ॥
तेहि दिन तहं प्रभु कीन्ह निवासा सकल मुनिन्ह मिलि कीन्ह सुपासा

दो॰ निज निज आश्रम बेदिका तिहि पर तुलसि बिराज
अनुज जानकी सहित तहं रजत भे रघुराज ॥
आनसु आश्रम मुदित मन पूज पहुनई कीन ।
कन्द मूल फल अमिय सम आन राम कहं दीन

अनुज सीय सह भोजन कीन्हा जो जिमि भाव सुभग बर दीन्हा ।

होत प्रभात मुनीन्द्र शिर नावा आशिर्वाद सबहि मन भावा
सुमिरि उमा गुरु सिद्ध गणेशा। पुनि प्रभु चले सुनहुं विहगेशा
वन अनेक सुन्दर गिरि नाना। लांघत चले जाहिं भगवाना
मिला असुर विराध मग जाता गरजत घोर कठोर दिसाता।
रूप भयंकर मानहुं काला ॥ वेग वक्र धायउ जिमि व्याला
गगन देव मुनि किन्नर नाना। तेहि क्षण हृदय हारि भय माना।
तुरतहि सो सीतहि लै गयऊ। राम हृदय कछु विस्मय भयऊ
समुझा हृदय कैकयी करणी। कहा अनुज सन बहु बिधि बरणी
बहुरि लषण रघुबरहि प्रबोधा पांच बाण छांड़े करि क्रोधा

छं॰ भये क्रोध लषण संधानि धनु शर मारि तेहि व्याकुल किये
पुनि उठि निशाचर राखि सीतहि शूल लै धावत भये
जनु काल दण्ड कराल धावा विकल सब खग मृग भये
धनु तानि श्री रघुबंशमणि पुनि काटि तेहि जरजर किये

दो॰ बहुरि एक शर मारेउ। परा धरणि धुनि माथ
उठा प्रबल पुनि गर्जेउ चला जहां रघुनाथ

ऐसे कहत निशाचर धावा॥ अब नहि बचहु तुमहिं मैं खावा
तासु वेग शत मरुत समाना। टूटहिं तरु बहु उड़हिं पषाना
जीव जंतु जहं लगि रहे जैते। व्याकुल भाजि चले सब तेते।
आव प्रबल रहे बिधि जनु भूधर होइहि काह कहहिं व्याकुल सुर
उरग समान घोर शर साता। आवत ही रघुबीर निपाता।
तुरतहि रुचिर रूप तेहि पावा। देखि दुखी निज धाम पठावा
तासु ओषि गाड़ेउ प्रभु धरणी देव सुदित मन लखि प्रभु करणी
सीता आइ चरण लपटानी। अनुज सहित तब चले भवानी
जहां शरभंग जहं मुनि सरभंगा। आये सकल देव निज संगा।
गये कहन नभ देन सिखावन। दिशा दल भेद बसत जहं रावन

दो. सुरपति संशय तम सम रघुपति तेज दिनेश ॥
रावण जीवन निशि सम बीते छूटहिं क्लेश ॥

सुनासीर प्रभु तिहि क्षण देखा । तेज निधान शुभ्र अति वेखा ।
तुरंग चार बल मरुत समाना । रथ रवि सम नहिं जाय बखाना ।
क्षिति न परत अंतर हित रहई । श्वेत छत्र चामर शिर ढुरई ॥
अनुजहि सियहि कहा समुझाई । सुरपति महिमा गुण प्रभुताई ।
जिहि कारण वासव महं आये । सो कछु वचन कहन नहिं पाये
चीन्हहि सुनि आदर प्रभु केरा । कहि सारथी तुरत रथ फेरा ॥
दूरहि ते करि प्रभुहि प्रणामा । हरषि सुरेश गयउ निज धामा
प्रभु आये जहं मुनि शरभंगा । सुंदर अनुज जानकी संगा ॥

दो. देखि राम मुख पंकज । मुनिवर लोचन भृङ्ग ॥
सादर पान करत अति । धन्य धन्य शरभङ्ग ॥

कह मुनि सुन रघुवीर कृपाला । शंकर मानस राज मराला ॥
जात रहेउं विरंचि के धामा । सुनेउं श्रवण बन आवत रामा
चितवत पंथ रहेउं दिन राती । अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती ॥
नाथ सकल साधन मैं हीना । कीन्हीं कृपा जानि जन दीना ॥
सो कछु देव न मोर निहोरा ॥ निज पन राखेउ जन मन चोरा
तब लगि रहहु दीन हित लागी । जब लगि मिलौं तुम्हैं तन त्यागी
योग यज्ञ जप तप व्रत कीन्हा । प्रभु कहं देइ भक्ति वर लीन्हा
इहि विधि सर रचि मुनि शरभंगा । बैठे हृदय छांड़ि सब संगा ॥

दो. सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तन श्याम
मम हिय बसहु निरंतर । सगुण रूप श्रीराम ॥

अस कहि योग अगिनि तन जारा । राम कृपा बैकुण्ठ सिधारा ॥
ताते मुनि हरि लीन न भयेऊ । प्रथमहिं भेद भक्ति वर लयेऊ
ऋषि निकाय मुनिवर गति देखी । सुखी भये निज हृदय विशेषी

अस्तुति करहिं सकल मुनि बृन्दा। जयति प्रणत हित करुणा कन्दा
पुनि रघुनाथ चले बन आगे। मुनिवर बृन्द पुलकि संग लागे
अस्थि समूह देखि रघुराया। पूछा मुनिन्ह लागि अति दाया
जानतहूं का पूछहु स्वामी। सम दर्शी उर अन्तर यामी ॥
निशिचर निकर सकल मुनि खाये। सुनि रघुनाथ नयन जल छाये

दो· निशिचर हीन करौं महि भुज उठाइ प्रण कीन्ह
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्ह जाइ जाइ सुख दीन्ह

मुनि अगस्त्य कर शिष्य सुजाना। नाम सुतीक्षण रत भगवाना
मन क्रम वचन राम पद सेवक। सपनेहुं आन भरोस न देवक
प्रभु आगमन श्रवण सुनि पावा। करत मनोरथ आतुर धावा ॥
हे विधि दीन बंधु रघुराया ॥ ॥ मोसे शठ पर करिहहिं दाया ॥
सहित अनुज मोहिं राम गुसांई। मिलिहहिं निज सेवक की नाई
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं ॥। भक्ति न विरति ज्ञान मन माहीं
नहिं सत संग योग जप यागा। नहिं दृढ़ चरण कमल अनुरागा
एक बानि करुणा निधान की। सो प्रिय जाके गति न आन की

छं· सोउ प्रिय अति पातकी जिन्ह कबहुं प्रभु सुमिरण कर्यो
ते आजु मैं निज नयन देखौं पूरि पुलकित हिय भर्यो॥
जे पद सरोज अनेक मुनि करि ध्यान कबहुं न आवहीं॥
ते राम श्री रघुवंश मणि प्रभु प्रेम तें सुख पावहीं ५॥

दो· पन्नगारि सुनु प्रेम सम भजन न दूसर आन ॥ ॥
यह विचारि पुनि पुनि मुनी करत राम गुणगान

होइहि सफल आजु मम लोचन। देखि वदन पंकज भव मोचन
निर्भर प्रेम मगन मुनि ज्ञानी। कहि न जाइ सोइ दशा भुलानी
दिशि अरु विदिशि पंथ नहिं सूका। को मैं चलेउं कहां नहिं बूका
कबहुंक फिरि पाछे पुनि जाई। कबहुं क नृत्य करै गुण गाई

अविरल प्रेम भक्ति मुनि पाई। प्रभु देखहिं तरु ओट लुकाई
अतिशय प्रीति देखि रघुबीरा। प्रगटे हृदय हरण भव भीरा
मुनि मग मांझ अचल होइ बैसा। पुलक शरीर पनस फल जैसा
तब रघुनाथ निकट चलि आये। देखि दशा निज जन मन भाये
सो· राम सुसहज सुभाव सेवक सुख दारिद दमन ॥
मुनि सन कह प्रभु आव उठ उठ द्विज मम प्राणसन
मुनिहिं राम बहु भांति जगावा। जाग न ध्यान जनित सुख पावा
भूप रूप तब राम दुरावा ॥ ॥ हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा ॥
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे। विकल हीन मणि बिनु फणि जैसे
आगे देखि राम तन श्यामा। सीता अनुज सहित सुख धामा
परेउ लकुट इव चरणन्ह लागी। प्रेम मगन मुनिवर बड़ भागी
भुज विशाल गहि लिये उठाई। परम प्रीति राखेउ उर लाई ॥
मुनिहिं मिलत अस सोह कृपाला। कनक तरुहि जनु भेटत माला
राम वदन विलोकि मुनि ठाढ़ा। मानहुं चित्र मांझ लिखि काढ़ा
दो· तब मुनि हृदय धीर धरि गहि पद बारहिं बार
निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा विविध प्रकार
कह मुनि प्रभु सुन विनती मोरी। अस्तुति करौं कवन विधि तोरी
महिमा अमित मोरि मति थोरी। रवि सन्मुख खद्योत अंजोरी
श्याम तामरस दाम शरीरं। जटा मुकुट परिधन मुनि चीरं
पाणि चाप शर कटि तूणीरं। नौमि निरंतर श्री रघुवीरं ॥
मोह विपिन घन दहन कृशानू। संत सरोरुह कानन भानू ॥
निशिचर करि वरूथ मृग राजं। त्रातु सदा नो भव खग भ्राजं ॥
अरुण नयन राजीव सुवेशं। सीता नयन चकोर निशेशं ॥
हर हृद मानस राज मरालं ॥। नौमि राम उर बाहु विशालं
संशय सर्प ग्रसन उरगादं। शमन सकल संताप विषादं

भय भंजन रंजन सुर यूथं ॥ ॥ त्रातु सदा नो कृपा वरूथं ॥
निर्गुण सगुण विषम सम रूपं। ज्ञान गिरा गोतीत अनूपं ॥ ॥
अमल अखिल अनवद्य मपारं। नौमि राम भंजन महि भारं ॥
भक्त कल्प पादप आरामं ॥ ॥ तर्जन क्रोध लोभ मद कामं ॥
अति नागर सागर भव सेतुं। त्रातु सदा दिनकर कुल केतुं ॥
अतुलित भुज प्रताप बल धामं। कलि मल विपुल विभंजन नामं
धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामं। संतत संत त्रातु तुम रामं ॥
यदपि विरज व्यापक अविनाशी। सब के हृदय निरंतर वासी
तदपि अनुज सिय सहित खरारी। बसहु मनसि मम कानन चारी
जे जानहिं ते जानहुं स्वामी ।। सगुण अगुण उर अंतर यामी
जो कोशल पति राजिव नयना। करौ सो राम हृदय मम ऐना

सो· माया वश जिमि जीव रहहिं सदा संतत मगन
तिमि लागहु मोहिं पीय करुणा कर सुंदर सुखद

अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥
राम भक्ति तजि चह कल्याना। सो नर अधम शृगाल समाना
सुनि मुनि वचन राम मन भाये। बहुरि हर्षि मुनि वर उर लाये
परम प्रसन्न जानि मुनि मोही। जो वर मांगहु देउं मैं तोही
मुनि कह मैं वर कबहुं न यांचा। समुझि न परै झूठ का सांचा
तुमहिं नीक लागै रघुराई । सो मोहि देहु दास सुखदाई
अविरल भक्ति विरति विज्ञाना। होहु सकल गुण ज्ञान निधाना
प्रभु जो दीन्ह सो वर मैं पावा। अब सो देहु मोहिं जो भावा

दो· अनुज जान की सहित प्रभु चाप बाण धरि राम
मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा निः काम

एव मस्तु कहि रमा निवासा । हर्षि चले कुंभज ऋषि पासा
मुनि प्रणाम करि युग कर जोरी। सुनहु नाथ कछु विनती मोरी

बहुत दिवस गुरु दरशन पाये। भये मोहिं इहि आश्रम आये
अब प्रभु संग जाउं गुरु पाहीं। तुम कहं नाथ निहोरा नाहीं ॥
चले जात मग नव पद कंजा। देखि हां जो विराध मद गंजा ॥
देखि कृपा निधि मुनि चतुराई। लिये संग विहसे दोउ भाई ॥
पंथ कहत निज भक्ति अनूपा। मुनि आश्रम पहुंचे सुर भूपा।
आश्रम देखि महा शुचि सुंदर। सरित सरोवर कानन भूधर ॥
जलचर थलचर जीव जहांते। वैर न करहिं प्रीति सबहीं ते ॥

दो॰ तरु बहु विधि विहंग मृग बोलत विविध प्रकार
बसहिं सिद्ध मुनि तप करहिं महिमा गुण आगार

तुरत सुतीक्षण गुरु पहं गयऊ। करि दंडवत कहत अस भयऊ
नाथ कोशला धीश कुमारा। आये मिलन जगत आधारा
राम अनुज समेत वैदेही ॥ ॥ निशि दिन देव जपत हहु जेही
सुनत अगस्त्य तुरत उठि धाये। हरिहिं विलोकि लोचन जल छाये
मुनि पद कमल परे दोउ भाई। ऋषि अति प्रीति लिये उर लाई
सादर कुशल पूछि मुनि ज्ञानी। आसन पर बैठारे आनी ॥
पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा। मोहिं सम भागवंत नहिं दूजा
जहं लगि रहे अपर मुनि वृन्दा। हर्षे सब विलोकि सुख कन्दा।

दो॰ मुनि समूह महं बैठ प्रभु सन्मुख सब की ओर
शरद इंदु जन चितवत मानहु निकर चकोर ॥

पाइ सुथल जल हर्षित मीना। पारस पाइ सुखी जिमि दीना
प्रभुहि निरखि सुख भाइहिभांती। चातक जिमि पाई जल स्वाती
तब रघुवीर कहा मुनि पाहीं। तुम सन प्रभु दुराव कछु नाहीं
तुम जानहु जेहि कारण आयउं। तातें तात न कहि समुझायउं
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही। जेहि प्रकार मारों सुर द्रोही
द्विज द्रोही न बचहिं मुनि राई। जिमि पंकज बन हिम ऋ

मुनि मुसकाने सुनि प्रभु बानी। पूछेहु नाथ मोहिं का जानी ॥
तुम्हरे भजन प्रभाव अघारी। जानौं महिमा कछुक तुम्हारी ॥

सो· भृकुटी निरखत नाथ। रहत सदा पद कमल नर
जिन डारे निज हाथ विविधि विधाता सिद्ध हर

अति कराल भव पर जग जाना। औरौं कहौं सुनिय भगवाना
तुमरि तरु विशाल तव माया। फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ॥
जीव चरा चर जंतु समाना ॥ ॥ भीतर बसहिं न जानहिं आना
ते फल भक्षक कठिन कराला। तव भय डरत सदा सोउ काला
ते तुम सकल लोक पति साईं। पूछेहु मोहिं मनुज की नाईं ॥
यह वर मागौं कृपा निकेता। बसहु हृदय सिय अनुज समेता
अविरल भक्ति विरति सत संगा। चरण सरोरुह प्रीति अभंगा
यद्यपि ब्रह्म अखंड अनन्ता अनुभव गम्य भजहिं जेहि संता
अस तव रूप बखानौं जानौं। फिरि फिरि सगुण ब्रह्म रति मानौं

दो· जेहि जीवं पर तव कृपा। संतत रहत कृपाल ॥
तिन की महिमा को कहै जे अनन्य प्रिय दास ॥

संतत दासन्ह देहु बड़ाई ॥ ॥ तातें मोहिं पूछेहु रघुराई ॥
है प्रभु परम मनोहर ठाऊं। पावन पंचबटी तेहि नाऊं ॥
गोदावरी नदी तहं बहई ॥ ॥ चारिहु युग प्रसिद्ध सो अहई
दंडक बन पुनीत प्रभु करहू। उग्र शाप मुनिवर के हरहू ॥
वास करहु तहं रघुकुल राया। कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया
चले राम मुनि आयसु पाई। तुरतहि पंचबटी नियराई ॥
दिव्य लता द्रुम प्रभु मन भाये। निरखि राम ते भयउ सुहाये ॥
लषण राम सिय चरण निहारी। कानन अघ गा भा सुख कारी

दो· गीध राज सों भेट भइ। बहु विधि प्रीति दृढ़ाइ
गोदावरी समीप प्रभु। रहे परण गृह छाइ ॥

जब तें राम कीन्ह तहं बासा । सुखी भये मुनि बीते त्रासा ॥
गिरि बन नदी ताल छवि छाये । दिन दिन प्रति अति होत सुहाये ॥
खग मृग वृन्द अनंदित रहहीं । मधुप मधुर गुंजत छवि लहहीं ॥
सो बन बरणि न सक अहिराजा । जहां प्रगट रघुबीर बिराजा ॥
एक बार प्रभु सुख आसीना । लक्ष्मण बचन कहे छल हीना ॥
सुर नर मुनि सचराचर साईं । मैं पूछौं निज प्रभु की नाईं ॥
मोहिं समुझाइ कहौ सोइ देवा । सब तजि करौं चरण रज सेवा ॥
कहहु ज्ञान बिराग अरु माया । कहहु सो भक्ति करहु जेहि दाया ॥

दो॰ ईश्वर जीवहि भेद प्रभु । सकल कहहु समुझाइ
जाते होइ चरण रत । शोक मोह भ्रम जाइ ॥

थोरे महं सब कहौं बुझाई ॥ ॥ सुनहु तात मति मन चित लाई ॥
मैं अरु मोर तोर तें माया ॥ । जेहि बस कीन्हे जीव निकाया ॥
गो गोचर जहं लगि मन जाई । सो सब माया जानहु भाई ॥
तेहि कर भेद सुनहु तुम सोऊ । विद्या अपर अविद्या दोऊ ॥
एक दुष्ट अतिशय दुख रूपा । जा बस जीव परा भव कूपा ॥
एक रचै जग गुण बस जाके । प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताके ॥
ज्ञान मान जहं एकौ नाहीं । देखत ब्रह्म रूप सब माहीं ॥
कहिय तात सो परम बिरागी । तृण सम सिद्धि तीनि गुण त्यागी ॥

दो॰ माया ईशन आपु कहं जानि कहै सो जीव
बंध मोक्ष प्रद सर्व पर । माया प्रेरक शीव ॥

धर्म तें बिरति योग तें ज्ञाना । ज्ञान मोक्ष प्रद बेद बखाना ॥
जातें बेगि द्रवौं मैं भाई ॥ ॥ । सो मम भक्ति भक्त सुखदाई ॥
सो स्वतंत्र अवलंब न आना । तेहि आधीन ज्ञान बिज्ञाना ॥
भक्ति तात अनुपम सुख मूला । मिलै जु संत होय अनुकूला ॥
भक्ति के साधन कहौं बखानी । सुगम पंथ मोहिं पावहि प्रानी ॥

प्रथमहिं विप्र चरण अति प्रीती। निज निज धर्म निरत श्रुति नीती
इहि कर फल पुनि विषय विरागा। तब मम चरण उपजु अनुरागा।
श्रौणादिक नव भक्ति दृढाहीं। मम लीला रत अति मन माहीं
सन्त चरण पंकज अति प्रेमा। मन क्रम वचन भजन दृढ़ नेमा
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा। सब मोहिं कहं जाने दृढ सेवा
मम गुण गावत पुलक शरीरा। गद्गद गिरा नयन बह नीरा॥
काम आदि मद दंभ न जाके। तात निरंतर बस मैं ताके॥॥

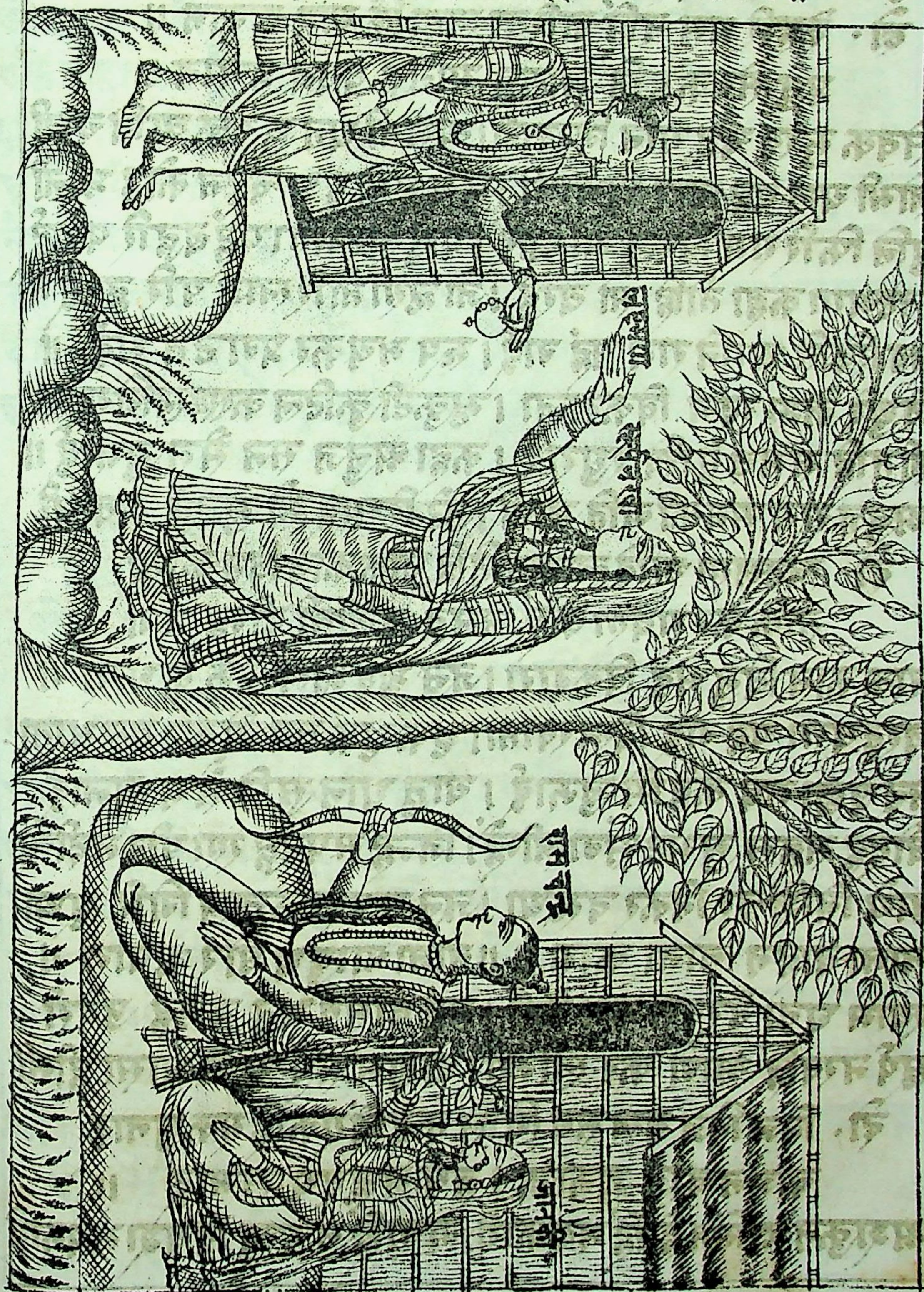
दो· वचन कर्म मन मोरि गति भजन करै निःकाम।
तिन के हृदय कमल महं करौं सदा विश्राम॥

भक्ति योग सुनि अति सुख पावा। लक्ष्मण प्रभु चरणन्ह शिर नावा
नाथ सुने गत मम संदेहा।। भयउ ज्ञान उपजेउ नव नेहा॥
अनुज वचन सुनि प्रभु मन भाये। हर्षि राम निज हृदय लगाये
इहि विधि गये कछुक दिन वीती। कहत विराग ज्ञान गुण नीती
सूर्पनखा रावण की बहिनी। दुष्ट हृदय दारुण जिमि अहिनी
पंचवटी सो गै एक बारा॥ ।देखि विकल भइ युगल कुमारा
भ्राता पिता पुत्र उपगारी॥ ॥पुरुष मनोहर निरखति नारी
होइ विकल सक मन नहिं रोकी। जिमि रवि मणि द्रव रविहिं बिलोकी

दो· अधम निशाचरि कुटिल अति चली करण उपहास
सुन खगेश भावी प्रबल भा चह निशिचर नास

रुचिर रूप धरि प्रभु पहं आई। बोली वचन मधुर मुसुकाई
तुम सम पुरुष न मो सम नारी। यह संयोग विधि रचा विचारी
मम अनुरूप पुरुष जग माहीं। देखेउं खोजि लोक तिहु माहीं
ताते अब लगि रही कुमारी। मन माना कछु तुमहिं निहारी
सीतहि चितइ कही प्रभु बाता। अहै कुमार मोर लघु भ्राता॥
गइ लक्ष्मण रिपु भगिनी जानी। प्रभु विलोकि बोले मृदु बानी

कपट रूप धारण करके सूर्पनखा को विवाहार्थ लक्ष्मण जी के निकट जाना और राक्षसी जान लक्ष्मण जी को सूर्पनखा की नाक काटना



सुन्दरि सुन मैं उन्ह कर दासा। पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥
प्रभु समरथ कोशल पुर राजा। जो कछु करहिं उन्हें सब छाजा
दो॰ केहरि सम नहिं करिवर लवा कि बाज समान ॥
प्रभु सेवक इमि जानहू मानहु वचन प्रमान ॥
सेवक सुख चह मान भिखारी। व्यसनी धन सुभक्त व्यभिचारी
लोभी यश चह चार गुमानी। नभ दुहि दूध चहत कोउ प्रानी
पुनि फिरि राम निकट सो आई। प्रभु लक्ष्मण पहं बहुरि पठाई
लक्ष्मण कहा तोहि सो वरई। जो तृण तोरि लाज परि हरई ॥
तब खिसि आनि राम पहं गई। रूप भयंकर प्रगटत भई ॥
बिथुरे केश रदन विकराला। भृकुटी कुटिल करण लगि गाला
सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुज सन सैन बुझाई ॥
अनुज राम मन की गति जानी। उठे रिसाइ सो सुनहु भवानी
दो॰ लक्ष्मण अति लाघव तिहि नाक कान विनु कीन्ह
ताके कर रावण कहं मनहुं चुनौती दीन्ह ॥ ॥
नाक कान विनु भइ विकरारा। जनु स्रव शैल गेरु के धारा ॥
खरदूषण पहं गइ विलखाता। धृक धृक तव पौरुष बल भ्राता
तेइ पूछा सब कहेसि बुझाई। यातु धान सुनि सेन बनाई
चौदह सहस सुभट संग लीन्हें। जिन्ह सपनेहु रण पीठ न दीन्हें
धाये निशिचर निकर वरूथा। जनु सपक्ष कज्जल गिरि यूथा
नाना वाहन नाना कारा ॥ ॥ नाना आयुध घोर अपारा ॥
श्याम घटा देखत नभ केरी। तहं वासव धनु मनहुं उबेरी
सूर्प नखहिं आगे कर लीन्ही। अशुभ रूप श्रुति नासा हीनी
दो॰ निज निज बल सब मिलि कहहिं एकहि एक सुनाइ
बाजन बाजु जुझाऊ। हर्ष न हृदय समाइ ॥
अशकुन अमित होहिं भय कारी। गणहि न मृत्यु विवश भयकारी

गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं । देखि कटक भट अति हरषाहीं ॥
कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई । धरि मारहु तिय लेहु छुड़ाई ।
कोउ कह सुनौ सत्य हम कहहीं । कानन फिरहिं वीर कोउ अहहीं
एके कहा भए हैं रहहू ॥ ॥ ॥ खरके आगे अस जनि कहहू
यहि विधि कहते वचन रणधीरा। आये सकल जहां रघुवीरा॥
धूरि पूरि नभ मंडल रहेऊ ॥ । राम बोलाइ अनुज सन कहेऊ
लै जानकिहिं जाहु गिरि कंदर । आवा निशिचर कटक भयंकर
रहेहु सजग सुनि प्रभु के बानी । चले सहित सिय शर धनु पानी
देखि राम रिपुदल चलि आवा । बिहंसि कठिन कोदंड चढ़ावा

छं॰ कोदंड कठिन चढ़ाइ प्रभु शिर जटा बांधत सोह क्यों ।
मरकत शयल पर लसत दामिनि कोटि सजग भुजंग ज्यों
करि कसि निषंग विशाल भुज गहि चाप विशिख सुधारि के
चितवत मनहुं मृगराज प्रभु गजराज घटा निहारि के ॥

सो॰ आय गये वग मेल धरहु धरहु धाये सुभट ॥
यथा विलोकि अकेल बाल रविहि घेरत दनुज

घेरि रहे निशिचर समुदाई ॥। दंडक खग मृग चले पराई ॥
प्रभु विलोकि शर सकहिं न डारी। थकित भये रजनीचर धारी ॥
सचिव बोलि बोले खर दूषण । यह कोउ नृप बालक नर भूषण
सुर नर नाग असुर मुनि जेते । देखे मुने हते हम केते ॥ ॥ ॥
हम भरि जनम सुनहु सब भाई। देखी नहिं अस सुंदर ताई ॥
यद्यपि भगिनी कीन्ह कुरूपा । वध लायक नहिं पुरुष अनूपा
देहु तुरत निज नारि दुराई । जीवत भवन जाहु दोउ भाई ॥
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु । तासु वचन सुनि आतुर आवहु

दो॰ भये काल बस मूढ़ सब जानहिं नहिं रघुवीर
मशक फूंक किमि मेरु डर भुजइ गरुड़ मति धीर

दूतन्ह कहा राम सन जाई । सुनत राम बोले मुसुकाई ॥
आजु भयउ बड़ भाग हमारा । तुम्हरे प्रभु अस कीन्ह विचारा ॥
हम छत्री मृगया बन करहीं । तुम से खल मृग खोजत फिरहीं ॥
रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं । एक बार कालहु सन लरहीं ॥
यद्यपि मनुज दनुज कुल घालक । मुनि पालक खल शालक बालक ॥
जौं न होइ बल घर फिरि जाहू । समर विमुख मैं हतौं न काहू ॥
रण चढ़ि करिय कपट चतुराई । रिपु पर कृपा परम कदराई ॥
दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ । सुनि खरदूषण उर अति दहेऊ ॥

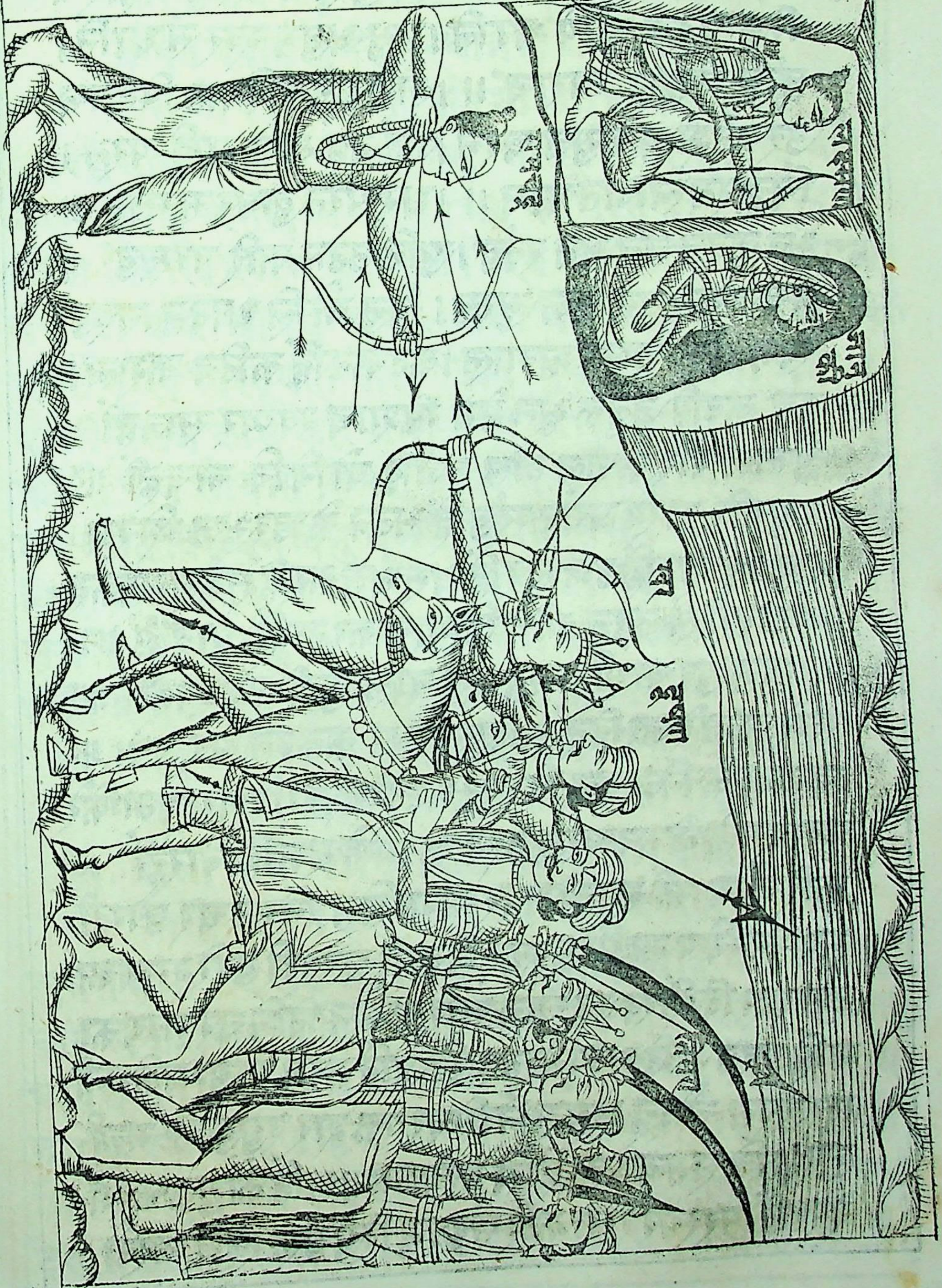
छं० उर दहेउ कहेउ कि धरहु धावहु विकट भट रजनीचरा
शर चाप तोमर शक्ति शूल कृपाणि परिघ परशु धरा
प्रभु कीन्ह धनुष टकोर प्रथम कठोर घोर भया महा
भये वधिर व्याकुल यातुधानन ज्ञान तेहि अवसर रहा

दो० सावधान होइ धाये । जानि सबल आराति ॥
लागे बरषण राम पर । अस्त्र शस्त्र बहु भांति ॥
तिन्ह के आयुध तिलसम करि काटे रघुवीर ॥
तानि शरासन श्रवण लगि पुनि छांड़े निज तीर

छं० तब चले बाण कराल । फुः करत जनु बहु व्याल ॥
कोपेउ समर श्री राम । चले विशिख नसित न काम
अवलोकि खर तर तीर । मुरि चले निशिचर वीर ॥
भुक एक को न संभार । कर तात मातु पुकार ॥
कोउ कहै खर कह कीन्ह । जो युद्ध इन सन लीन्ह
जाको बाण अतिहि कराल गुसे आय मानहुं काल
भये क्रुद्ध तीनो भाइ ॥ । जो भागि रण ते जाइ
तेहि बधब हम निज पानि । फिरे मरणासन मन्नंठानि

दो० उमा एक निज प्रभु हि दस पुनि इन के बड़ भाग

सूर्पनखा की नाक कान विहीन देखि खरदूषण आदि राक्षसों को अनेक सेन संयुक्त श्री रामचन्द्रजी से युद्ध करना ॥



तरन चढ़हिं प्रभु शर लगे बिना योग जप याग

छं· आयुध अनेक प्रकार । सनमुख ते करहिं प्रहार ॥
रिपु परम कोपे आनि । प्रभु धनुष शर संधानि ।
छांड़े विपुल नाराच ॥ । लगे कटन विकट पिशाच ॥
उर शीश कर भुज चरन । जहं तहं लगे महि परन ॥
चिक्करत लागत बान ॥ । धर परत कुधर समान ॥
भट कटत तन सत खंड । पुनि उठत करि पाखंड ॥
नभ उडत बहु भुज मुण्ड । बिनु मौलि धावत रुण्ड
खग कंक काग शृगाल । कट कटहिं कठिन कराल ।

छं· कट कटहिं जंबुक भूत प्रेत पिशाच खप्पर साजहीं
बैताल बीर कपाल ताल बजाइ योगिनि नाचहीं ॥
रघुबीर बाण प्रचंड खंडहिं भटन के उर भुज शिरा ।
जहं तहं परहिं उठि लरहिं धरु धरु करहिं सकल भयंकरा
अंतावरी ले उड़त गीध पिशाच कर गहि धावहीं ॥ ।
संग्राम पुर वासी मनहुं बहु बाल गुडी उड़ावहीं ॥
मारे पछारे उर विदारे विपुल भट कहरत परे ॥ ॥ ॥
अवलोकि निज दल विकल भट त्रिशिरा दिखर दूषण फिरे
शर शक्ति तोमर परसु शूल कृपाण एकहि बारहीं ॥
करि कोप श्री रघुबीर पर अगणित निशाचर डारहीं
प्रभु निमिष महं रिपु शर निवारि प्रचारि डारे शायका
दश दश विशिख उर मांझ मारे सकल निशिचर नायका
महि परत उठि भट भिरत पुनि पुनि करत माया अति घनी
सुर डरत चौदह सहस निशिचर एक शर रघुकुल मनी
सुर मुनि सभय प्रभु देखि माया नाथ अति कौतुक कस्यो
देखहिं परस्पर राम करि संग्राम रिपु दल लरि मस्यो

दो. राम राम कहि तन तजहिं पावहिं पद निर्वाण
करि उपाय रिपु मारेउ। क्षण महं कृपा निधान
हर्षित वर्षहिं सुमन सुर बाजहिं गगन निशान
अस्तुति करि करि सब चले शोभित विविध विमान
जब रघुनाथ समर रिपु जीते। सुर नर मुनि सब के दुख बीते
तब लक्ष्मण सीतहि ले आये। प्रभु पद परत हर्षि उर लाये
सीता निरखि श्याम मृदु गाता। परम प्रेम लोचन न अघाता
पंचवटी बसि श्री रघु नायक। करत चरित सुर मुनि सुखदायक
धुआं देखि खरदूषण केरा। जाइ सुपनखें रावण प्रेरा॥
बोली वचन क्रोध करि भारी। देश कोश की सुरति विसारी
करसि पान सोवसि दिन राती। सुधि न तोहि शिर पर आराती
राज नीति बिनु धन बिनु धर्म्मा। हरिहि समर्पे बिनु सत कर्म्मा
विद्या बिनु विवेक उपजाये। श्रम फल पढ़े किये अरु पाये
संग तें यती कुमंत्र तें राजा। मन तें मान ज्ञान तें लाजा॥
प्रीति प्रणाय बिनु मद तें गुनी। नाशहिं वेगि नीति अस सुनी
सो. रिपु रुज पावक पाप। प्रभु अहि गणिय न छोट करि
अस कहि विविध विलाप करि लागी रोदन करन
दो. सभा मांझ परि व्याकुल बहु प्रकार कहि रोइ॥
तोहि जियत दशकंधर मोरि कि अस गति होइ
सुनत सभा सद उठे अकुलाई। समुझाई गहि बांह बिठाई
कह लंकेश कहसि निज बाता। केइ तव नासा कान निपाता
अवध नृपति दशरथ के जाये। पुरुष सिंह बन खेलन आये
समुझि परी मोहिं उन्ह की करणी। रहित निशाचर करिहैं धरणी
जिन कर भुज बल पाइ दशानन। अभय भये मुनि विचरहिं कानन
देखत बालक काल समाना। परम धीर धन्वी गुण नाना

अतुलित बल प्रताप दोउ भ्राता। खल बध रत सुर मुनि सुखदाता
शोभा धाम राम अस नामा॥ । तिन्ह के संग एक नारि ललामा
सो· अति सुकमारि पियारि पद लर योवन आहि को
मैं मन दीख बिचारि जहं रह तेहि सम आन नहिं
रूप राशि बिधि नारि संवारी। रति शत कोटि तासु बलिहारी
अजहुं जाय देखव तुम जबहीं। होइहौ बिकल तासु बश तबहीं
जीवन मुक्ति लोक बस ताके। दशमुख सुन सुंदरि अस जाके
तासु अनुज काटी श्रुति नासा। सुनि तव भगिनी करि परिहासा
बिन अपराध अस हाल हमारी। अपराधी किमि बचहिं मुरारी
खर दूषण सुनि लागु गुहारा। क्षण महं सकल कटक उन मारा
खरदूषण त्रिशिरा कर घाता। सुनि दश शीश जरा सब गाता
भये शोच बस नहिं बिश्रामा। बीतहिं पल मानहुं शत यामा
दो· सूर्पनखहि समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भांति
भवन गयउ अति सोच बश नींद परी नहिं राति
सुर नर असुर नाग महि माहीं। मोरे अनुचर सम कोउ नाहीं
खरदूषण मो सम बल वंता। तिन्हे को मारै बिनु भगवंता॥
सुर रंजन भंजन महि भारा। जौ जग नाथ लीन्ह अवतारा
तौ मैं जाइ बैर हठ करऊं॥ । प्रभु शर तें भव सागर तरऊं
होइ भजन नहिं तामस देहा। मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ एहा
जौ नर रूप भूप सुत कोऊ। हरिहौं नारि जीति रण दोऊ
चला अकेल यान चढ़ि ताहां। बस मारीच सिंधु तट जाहां
रथ अनूप जोरे खर चारी। बेगवंत दूमि जिमि उर गारी॥
छं· उर गारि सम अति बेग बरणत जाय नहिं उपमा कही
शिर छत्र शोभित श्याम घन जनो चमर स्वेत बिराजहीं
इहि भांति नांघत सरित शैल अनेक बापी सोहहीं।

बन बाग उपबन बाटिका सुचिजल सुनि मन मोहहीं

दो॰ बहु तड़ाग सुचि बिहंग मृग बोलत बिबिधि प्रकार
इहिं बिधि आयउ सिंधु तट शत योजन्न बिस्तार

सुंदर जीव बिबिधि बिधि जाती। करहिं कुलाहल दिन अरु राती
कूदहिं ते गरजहिं घन नाईं। महाबली बल बरणि न जाईं
कनक बाल सुंदर सुखदाई। बैठहिं सकल जंतु तहं आई
तिहिं पर दिब्य लता तरु लागे। जिहिं देखत मुनि मन अनुरागे
गुहा बिबिधि बिधि रहहिं बनाई। बरणत शारद मन सकुचाई
चहिये जहां अदयिन कर बासा। तहां निशाचर करहिं निवासा
दशमुख देख सकल सकुचाने। जे जड़ जीव सजीव पराने ॥
इहां राम जसि युक्ति बनाई॥। सुनहु उमा सो कथा सुहाई

दो॰ लक्ष्मण गये बनहिं जब लेन मूल फल कंद
जनक सुता सन बोले बिहंसि कृपा सुख कन्द

सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुशीला। मैं कछु करब ललित नर लीला
तुम पावक महं करहु निवासा। जो लगि करौं निशाचर नाशा
जबहिं राम सब कहेउ बखानी। प्रभु पद धरि हिय अनल समानी
निज प्रति बिंब राखि तहं सीता। तैसइ शील स्वरूप बिनीता
लक्ष्मण हू यह मर्म न जाना। जो कछु चरित रच्यो भगवाना
दशमुख गयउ जहां मारीचा। नाइ माथ स्वारथ रत नीचा
नवनि नीच कै अति दुखदाई। जिमि अंकुश धनु उरग बिलाई
भयदायक खल की प्रियबानी। जिमि अकाश के कुसुम भवानी

दो॰ करि पूजा मारीच तब सादर पूछी बात ॥ ॥
कवन हेतु मन ब्यग्र अति अकसर आयउ तात

दशमुख सकल कथा तेहि आगे। कही सहित अभिमान अभागे
होहु कपट मृग तुम छल कारी। जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी

तेहु पुनि कहा सुनहु दशशीशा। ते नर रूप चराचर ईशा ॥
तासों तात वैर नहिं कीजे ॥। मोरे मरिय जियाये जीजे ॥ ॥
सुनि मख राखन गयउ कुमारा। विनु फर शर रघुपति मोहिं मारा
शत योजन आयउं क्षण माहीं। तिन्ह सन वैर किये भल नाहीं
भइ मति कीट भृङ्ग की नाई। जहं तहं मैं देखौं दोउ भाई ॥
जो नर तात तदपि अति सूरा। तिनहिं विरोधन आइहि पूरा

दो· जेइं ताड़िका सुबाहु हति खंडेउ हर को दंड ॥
खर दूषण त्रिशिरा बधेउ मनुज कि अस बलवंड

राक्षस नास सुनत दश कंधर। रहत आशा नहिं मम उर अंतर
जाहु भवन कुल कुशल विचारी। सुनत जरा दीन्हेसि बहु गारी
गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा। कहु जग मोहिं समान को योधा
तब मारीच हृदय अनुमाना। नवहि विरोधे नहिं कल्याना ॥
शस्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी। । वैद्य बंदि कवि भानस गुनी ॥
उभय भांति देखा निज मरणा। तब ताकेसि रघुनायक शरणा
उतर देत मोहिं बधिहि अभागे। कसन मरौं रघुपति शर लागे
अस जिय जानि दशानन संगा। चला राम पद प्रेम अभंगा ॥
मन अति हर्ष जनाव न तेही। आजु देखिहौं परम सनेही।

छं· निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहौं
श्री सहित अनुज समेत कृपा निकेत पद मन लाइहौं
निर्वाण दायक क्रोध जाकर भक्त ऐसहि बस करी ॥
निज पाणि शर संधानि सो मोहिं वधहि सुख सागर हरी

दो· मम पाछे धर धावत। धरे शरासन बान ॥
फिरि फिरि प्रभुहि विलोकिहौं धन्य न मो सम आन

सीता लषण सहित रघुराई। जेहि बन बसहिं मुनिन्ह सुखदाई
तेहि बन निकट दशानन गयऊ। तब मारीच कपट मृग भयऊ

अति विचित्र कछु वरणि न जाई। कनक देह मणि रचित बनाई
सीता परम रुचिर मृग देखा। अंग अंग सु मनोहर वेखा ॥
सुनहु देव रघुवीर कृपाला। इहि मृग कर अति सुंदर छाला
सत्य सिंधु प्रभु बध करि एही। आनहु चर्म कही वैदेही ॥ ॥
तब रघुपति जाना सब कारण। उठे हर्षि सुर काज संवारण ॥
मृग विलोकि कटि परिकर बांधा। करतल चाप रुचिर शर साधा
प्रभु लक्ष्मणहिं कहा समुझाई। फिरत विपिन निशिचर बहु भाई
सीता केरि करेहु रखवारी। बुधि विवेक बल समय विचारी

दो· अस कहि चले तहां प्रभु जहां कपट मृग जीव
देव हर्ष विस्मय विवश चातक वर्षा बीच ॥

प्रभुहि विलोकि चला मृग भाजी। धाये राम शरासन साजी ॥
निगम नेति शिव ध्यान न पावा। माया मृग पाछे सो धावा ॥
कबहुं निकट पुनि दूरि पराई। कबहुंक प्रगटै कबहुं छपाई
प्रगटत दुरत करत छल भूरी। इहि विधि प्रभुहि गयो लै दूरी
तब तकि राम कठिन शर मारा। धरणि परेउ करि घोर चिकारा
लक्ष्मण कर प्रथमहिं लैनामा। पाछे सुमिरेसि मन महं रामा
प्राण तजत प्रगटेसि निज देहा। सुमिरेसि राम समेत सनेहा
अंतर प्रेम तासु पहिचाना ।। । मुनि दुर्लभ गति दीन्ह सुजाना

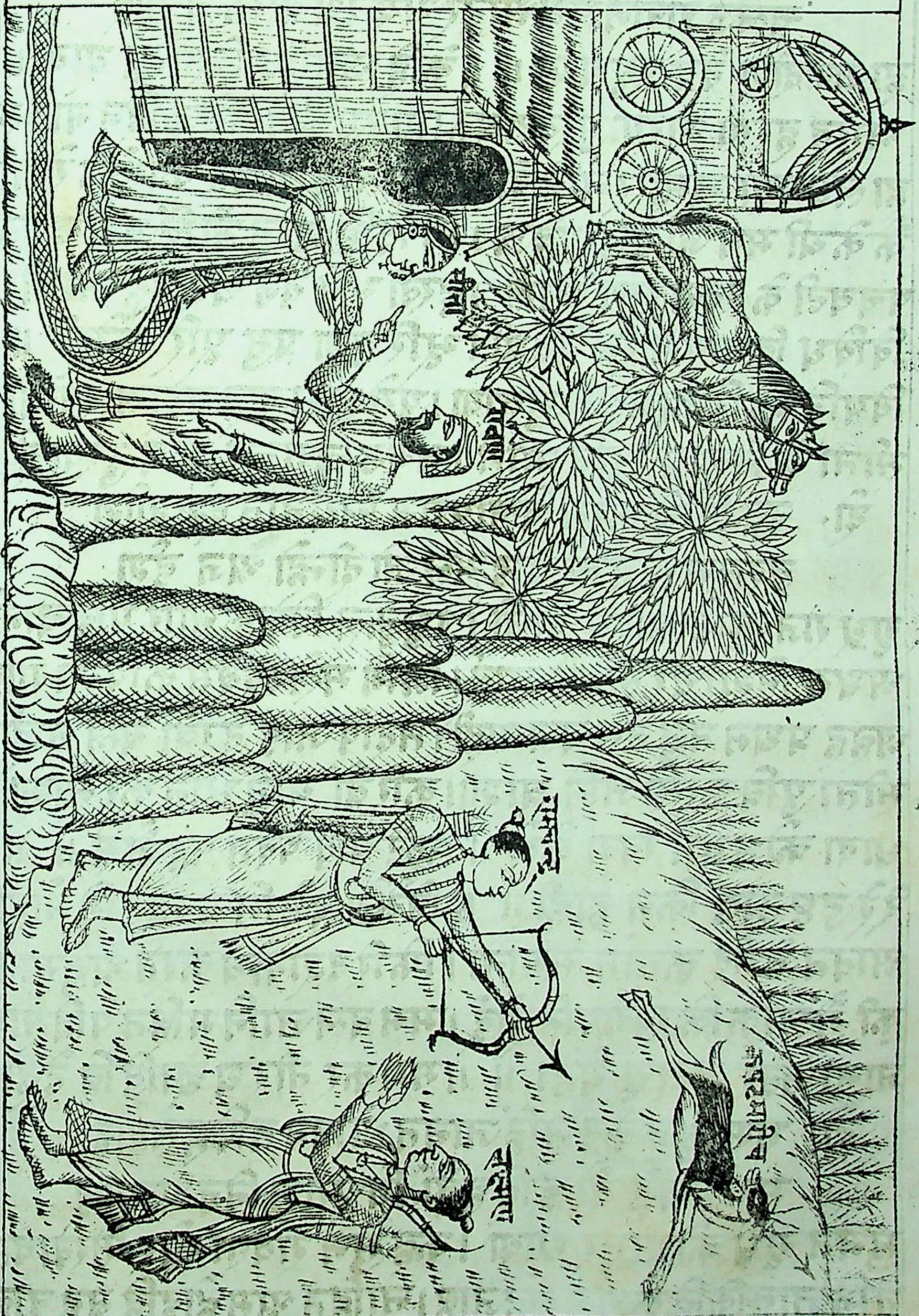
दो· विपुल सुमन सुर वर्षहिं गावहिं प्रभु गुण गाथ
निज पद दीन्हे असुर कहं दीन बंधु रघुनाथ ॥

खल बधि तुरत फिरे रघुवीरा। सोह चाप कर कटि तूणीरा
आरत गिरा सुनी जब सीता। कह लक्ष्मण सन परम सभीता
जाहु वेगि संकट तव भ्राता। लक्ष्मण विहंसि कहा सुन माता
भृकुटि विलास सृष्टि लय होई। सपनेहु संकट परै कि सोई
सौंपि गये मोहिं रघुपति थाती। जो तजि जाउं तोष नहिं छाती

यह जिय जानि सुनहु मम माता। पूछब कहब कवन मैं बाता
मर्म वचन सीता जब बोली। हरि प्रेरित लक्ष्मण मति डोली
चहुं दिशि रेख खचाइ अहीशा। बार बार नाये पद शीशा॥
वन दिशि देव सौंपि सब काहू। चले जहां रावण शशि राहू॥
चितवहिं लषण सियहि फिरि कैसे। तजत वच्छ निज मातहि जैसे
दो॰ एक डरत डर राम के। दूजे सीय अकेलि॥ ॥
लषण तेज तन हतभये जिमि डाढी दव बेलि
सून वीच दशकंधर देखा॥। आवा निकट यती के भेषा॥
जाके डर सुर असुर डेराहीं॥ निशि न नींद दिन अन्न न खाहीं
सो दश शीश श्वान की नाई। इत उत चिते चला भंडिहाई॥
जिमि कुपंथ पग देत खगेशा। रह न तेज बल बुधि लव लेशा
करि अनेक विधि छल चतुराई। मांगेउ भीख दशानन जाई
अतिथि जानि सिय कंद मूल फल। दिन लगी तेइ कीन्ह बहु रिछल
कह दश मुख सुन सुंदरि बानी। बांधी भीख न लेउ सयानी
विधि गति वाम काल कठिनाई। रेख लांघि सिय बाहिर आई
दो॰ विश्व भरनि अघ दलन दलनि करणि सकल सुर काज
जाना नहिं तेहि समय तहं दश शिर कपट कुसाज
नाना विधि कहि कथा सुहाई। राजनीति भय प्रीति देखाई
कह सीता सुन यती गुसांई। बोलेहु वचन दुष्ट की नाई
तब रावण निज रूप देखावा। भइ सभीत जब नाम सुनावा
कह सीता धरि धीरज गाढ़ा। आइ गये प्रभु रहु खल ठाढ़ा
जिमि हरि वधुहि क्षुद्र शशि चाहा। भयेसि कालवश निशिचर नाहा
वायस कर चह खगपति समता। सिंधु समान होइ किमि सरिता
खरी कि होइ सुर धेनु समाना। जाहु भवन निज सुन अज्ञाना
सुनत वचन दश शीश लजाना। मन महं चरण वंदि सुख माना

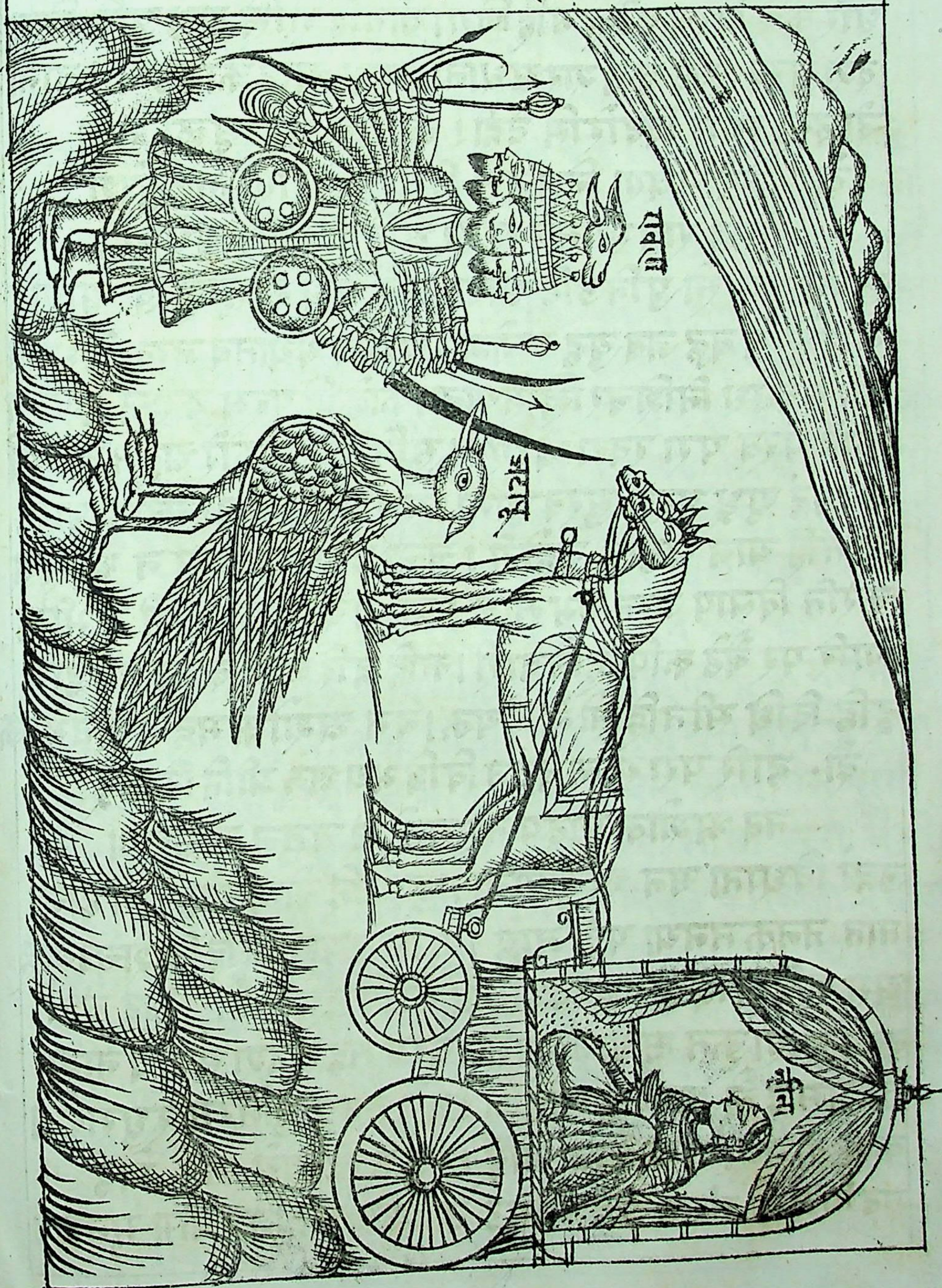
श्री·२९

श्री रामचन्द्र जी कर के कपट रूप मारीच का मारा जाना और यती रूप रावण कर के सीता हरण



दो॰ क्रोधवंत तब रावण । लीन्हेसि रथ बैठाइ ॥
चलेउ गगन पथ आतुर भय रथ हांकि न जाइ
हा जगदीश देव रघुराया ॥ ॥ केहि अपराध बिसारेहु दाया ॥
आरत हरण शरण सुखदायक । हा रघुकुल सरोज दिन नायक
हा लक्ष्मण तुम्हार नहि दोषा । सो फल पायउं कीन्हेउ रोषा
कैकेयी मन जो कछु रहेऊ । सो विधि आजु मोहिं दुख दयऊ
पंचवटी के खग मृग जाती । दुखी भये बन चर बहु भांती
विविध विलाप करत वैदेही । भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
विपति मोरि को प्रभुहि सुनावा । पुरो डास चह रासभ खावा
सीता के विलाप सुनि भारी । भयउ चराचर जीव दुखारी
दो॰ बहु विधि करत विलापनभ लिये जात दशशीश
डरत न खल वर पाइ भल जो दीन्हो अज ईश
गृध्र राज सुनि आरत बानी । रघुकुल तिलक नारि पहिचानी
अधम निशाचर लीन्हे जाई । जिमि मलेच्छ बस कपिला गाई
अहह प्रथम तनु मम बल नाहीं । तदपि जाइ देखौं बल ताहीं
सीता पुत्रि करसि जनि त्रासा । करिहौं यातुधान कर नाशा
धावा क्रोधवंत खग कैसे ॥ । छूटे पवि पर्वत पह जैसे ॥ ॥
रेरे दुष्ट ठाढ़ किन होही ॥ ॥ निर्भय चलेसि न जानेसि मोही
आवत देखि कृतांत समाना । फिरि दशकंध करत अनुमाना
की मैनाक कि खगपति होई । मम बल जानि सहित पति सोई
जाना जठर जटायु एहा ॥ ॥ मम कर तीरथ छाड़िहि देहा
दो॰ मम भुज बल नहिं जानत आवत नपिन्ह सहाइ
समर चढ़े तौ इहि हतौं जियत न निज थल जाइ
सुनत गृध्र क्रोधातुर धावा । कह सुन रावण मोर सिखावा
तजि जानकिहि कुशल गृह जाहू । नाहित अस होइहि बहु बाहू

रावण को सीता जी का हर ले जाना और सीता जी के रक्षार्थ जटायु रावण का युद्ध



राम रोष पावक अति घोरा । होइहि सकल शलभ कुल तोरा ॥
उतर न देत दशानन योधा । तबहिं गृध्र धावा करि क्रोधा ॥
धरि कच विरथ कीन्ह महि गिरा । सीतहि राखि गृध्र पुनि फिरा ॥
दशमुख उठि कृत शर संधाना । गृध्र आइ काटेउ धनु बाना ॥
चोंचन्ह मारि विदारेसि देही । दंड एक भइ मूर्छा तेही ॥

दो· जेइ रावण निज वस किये मुनि गण सिद्ध सुरेश ।
तेहि रावण सन समर अति धीर वीर गृध्रेश ॥

सुस्थ भये सो पुनि उठि धावा । मारे गृध्र न सन्मुख आवा ।
कीन्हिसि बहु जब युद्ध खगेशा । थकित भये तब जरठ गिधेशा ॥
तब सक्रोध निशिचर खिसियाना । काढेसि परम कराल कृपाना ॥
काटे पंख परा खग धरणी । सुमिरि राम करि अद्भुत करणी ॥
मन महं गृध्र परम सुख माना । राम काज मम लागेउ प्राना ॥
सीतहि यान चढाइ बहोरी । चला उताउल त्रास न थोरी ॥
करति विलाप जात नभ सीता । व्याधा बस जनु मृगी सभीता ॥
गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी । कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी ॥
इहि विधि सीतहि सो लै गयऊ । बन अशोक महं राखत भयऊ ॥

दो· हारि परा खल बहुत विधि भय अरु प्रीति दिखाइ ।
तब अशोक पादप तरे राखेसि यतन कराइ ॥

उहां विधाता मन अनुमाना । सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना ॥
तात जनक तनया पहं जाहू । सुधि न पाव जिहि निशिचरनाहू ॥
अस कहि विधि सुंदर ह पियाली । सोपि बहुरि बोले मृदु बानी ॥
जेहि भक्षण कृत क्षुधा न प्यासा । वर्ष सहस्र दश संशय नाशा ॥
सो प्रसाद लै आयसु पाई ॥ चले हृदय सुमिरत रघुराई ॥
कछु वासव माया निज सोई । रक्षक रहे जाये तहं सोई ॥
तदपि दुरत सीता पहं आयउ करि प्रणाम निज नाम सुनायउ

निश्चय जान सुरेश सुजाना। पिता जनक दशरथ सम माना॥
करिपरितोष दूर कर शोका। हव्य खवाय गये निज लोका॥

दो· जेहि विधि कपट कुरंग संग धाइ चले श्रीराम।
सो छवि सीता राखि उर रटति रहति हरि नाम॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी। मन बहु चिंता कीन्ह विशेषी॥
जनक सुता परि हरेउ अकेली। आयहु तात वचन मम पेली॥
निशिचर निकर फिरहिं वनमाहीं। मम मन सीता आश्रम नाहीं॥
अहह तात भल कीन्हेउ नाहीं। सिय विहीन मम जीवन काहीं॥
इहि तें कवन विपति बड़ भाई। खोयउ सीय कान नहिं आई॥
गहि पद कमल अनुज कर जोरी। कहेउ नाथ कछु मोरि न खोरी॥
अनुज समेत गयउ प्रभु तहवां। गोदावरि तट आश्रम जहवां॥
आश्रम देखि जानकी हीना। भये प्रकृत जस प्राकृत दीना॥

दो· कानन रहेउ तड़ाग इव चक चकई सिय राम।
रावण निशि बिछुरन किये दुख बीते चहुं याम॥

पर दुख हरण शोक दुख नाहीं। भा विषाद तिन्ह के मन माहीं॥
हा गुण खानि जानकी सीता। रूप शील व्रत नेम पुनीता॥
लक्ष्मण समुझाये बहु भांती। पूछत चले लता तरु पांती॥
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम देखी सीता मृग नैनी॥
खंजन शुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रवीना॥
कुन्द कली दाड़िम दामिनी। शरद कमल शशि हे भामिनी॥
वरुण पास मनोज धनु हंसा। गज केहरि निज सुनत प्रशंसा॥
श्री फल कनक कदलि हरषाहीं। नेकु न शंक सकुच मन माहीं॥
सुन जानकी तोहि बिनु आजू। हर्षे सकल पाइ जनु राजू॥
किमि सहिजात अनख तोहि पाहीं। प्रिया वेगि प्रगटसि कस नाहीं॥
इहि विधि विलपत खोजत स्वामी। मनो महा विरही अति कामी॥

दो· फणि मणि हीन दीन जिमि मीन हीन जिमि वारि
तिमि व्याकुल भये लषण तहं रघुबर दशा निहारि

धरि उर धीर बुझावहिं रामहिं । तजहिं न शोक अधिक सुखधामहिं
पूरण काम राम सुख राशी ॥ । मनुज चरित कर अज अविनाशी
सरवर अमित नदी गिरि खोहा । बहु विधि राम लषण तहं जोहा
शोच हृदय कछु कहि नहिं आवा । टूट धनुष शर आगे पावा ॥
कहुं कहुं शोणित देखिय कैसे । श्रावण जल भडावर जैसे ॥
कहत राम लक्ष्मणहिं बुझाई । काहू कीन्ह युद्ध इहि ठाईं ॥
आगे परा गृध्रपति देखा ॥ । सुमिरत राम चरण की रेखा

दो· कर सरोज शिर परसेउ कृपासिंधु रघुबीर ॥
निरखि राम छवि धाम सुख विगत भई सब पीर

तब कह गृध्र वचन धरि धीरा । सुनहु राम भंजन भव भीरा ।
नाथ दशानन यह गति कीन्ही । तेहि खल जनकसुता हरि लीन्ही
लै दक्षिण दिशि गयउ गुसांईं । विलपति अति कुररी की नाईं
दरश लागि प्रभु राखेउ प्राना । चलन चहत अब कृपानिधाना
राम कहा तनु राखहु ताता ॥ । मुख मुसुकाइ कही तेइ बाता
जाकर नाम मरत मुख आवा । अधमौ मुक्त होइ श्रुति गावा
सो मम लोचन गोचर आगे । राखौं देह नाथ केहि खांगे ॥
जल भरि नयन कहा रघुराई । तात कर्म निज ते गति पाई
परहित बस जिन्ह के मन माहीं । तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं
तन तजि तात जाहु मम धामा । देउं कहा तुम पूरण कामा

दो· सीता हरण तात जनि । कहहु पिता सन जाइ
जौ मैं राम तौ कुल सहित कहहि दशानन आइ

गृध्र देह तजि धरि हरि रूपा । भूषण बहु पट पीत अनूपा

स्याम गात विशाल भुज चारी। अस्तुति करत नयन भरि वारी
छं० जय राम रूप अनूप निर्गुण सगुण गुण प्रेरक सही॥
दश शीश बाहु प्रचंड खंडन चाप शर मंडन मही॥
पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं॥
नित नौमि राम कृपाल बाहु विशाल भव भय मोचनं
बल प्रमेय मनादि मज मव्यक्त मेक म गोचरं॥॥॥
गोविंद गोपर द्वंद हर विज्ञान घन धरणी धरं॥॥
जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं॥॥॥
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं
जेहि श्रुति निरंतर ब्रह्म व्यापक विरज अज कहि गावहीं
करि ज्ञान ध्यान विराग योग अनेक मुनि जेहि ध्यावहीं
सो प्रगट करुणा कंद शोभा वृन्द अग जग मोहई
मम हृदय पंकज भृङ्ग अङ्ग अनङ्ग बहु छवि सोहई॥
जो अगम सुगम स्वभाव निर्मल असम सम शीतल सदा
पश्यन्ति यं योगी यतन करि कर्म मन गोबस सदा॥
सो राम रमा निवास सन्तत दास बस त्रिभुवन धनी॥
मम उर बसहु सो शमन संसृति जासु कीरति पावनी
दो० अविरल भक्ति मांगि वर गृध्र गयउ हरि धाम
तेहि की क्रिया यथोचित निज कर कीन्ही राम
कोमल चित अति दीन दयाला। कारण बिनु रघुनाथ कृपाला
गृध्र अधम खग आमिष भोगी। गति तेहि दीन्ह जो याचत योगी
सुनहु उमा ते लोग अभागी। हरि तजि होहिं विषय अनुरागी
पुनि सीतहि खोजत दोउ भाई। चले विलोकत बन बहु ताई
संकुल लता विटप घन कानन। बहु खग मृग तहं गज पञ्चानन
आवत पंथ कबंध निपाता॥। तेइ सब कही श्राप की बाता

दुर्वासा मोहिं दीन्हों श्रापा ॥ प्रभु पद देखि मिटा सो पापा ॥
सुन गंधर्व कहौं मैं तोही ॥ मोहिं न सुहाइ ब्रह्मकुल द्रोही
दो॰ मन क्रम वचन कपट तजि जो कर भूसुर सेव ॥
मोहिं समेत विरंचि शिव बस ताके सब देव ॥
शापत ताड़त पुरुष कहंता । विप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥
पूजिय विप्र शील गुण हीना । नहिं न शूद्र गुण ज्ञान प्रवीना
कहि निज धर्म ताहि समुझावा । निज पद प्रीति देखि मन भावा
रघुपति चरण कमल शिर नाई । गयउ गगन आपनि गति पाई
ताहि देइ गति राम उदारा । शबरी के आश्रम पगु धारा ॥
शबरी दीख राम गृह आये । मुनि के वचन समुझि जिय भाये
सरसिज लोचन बाहु विशाला । जटा मुकुट शिर उर बनमाला
श्याम गौर सुंदर दोउ भाई । शबरी परी चरण लपटाई ॥
प्रेम मगन मुख वचन न आवा । पुनि पुनि पद सरोज शिर नावा
सादर जल लै चरण पखारे । पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥
दो॰ कंद मूल फल सरस अति दिये राम कहं आनि
॥ प्रेम सहित प्रभु खायउ बारहिं बार बखानि
पाणि जोरि आगे भइ ठाढ़ी । प्रभुहि विलोकि प्रीति अति बाढ़ी
केहि विधि अस्तुति करौं तुम्हारी । अधम जाति मैं जड़मति भारी
अधम ते अधम अधम अति नारी । तिनमहं मैं अति मंद गंवारी
कह रघुपति सुन भामिनि बाता । मानौं एक भक्ति के नाता ॥
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई । धन बल परिजन गुण चतुराई
भक्ति हीन नर सोहै कैसे ॥ ॥ विनु जल वारिद देखिय जैसे
नवधा भक्ति कहौं तोहि पांही । सावधान सुन धरु मन मांही
प्रथम भक्ति सन्तन कर संगा । दूसर रत मम कथा प्रसंगा
दो॰ गुरु पद पंकज सेवा तीसरि भक्ति अमान ॥

श्री राम चन्द्र और लक्ष्मण जी को सेवरी के गृह जाना और सवरी को अति आनन्द होय श्री राम के चरण स्पर्श करना ॥



चौथि भक्ति मम गुण गण करै कपट तजि गान

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा । पंचम भजन सो वेद प्रकासा ॥
छठ दम शील विरत बहु कर्म्मा । निरत निरंतर सज्जन धर्म्मा ।
सातईं सम मोहि मय जग देखै । मोते सन्त अधिक करि लेखै
आठईं यथा लाभ सन्तोषा । सपनेहुं नहिं देखै पर दोषा ॥
नवम सरल सब सों छल हीना । मम भरोस हिय हर्ष न दीना
नव महं एको जिन्ह के होई ॥ नारि पुरुष सचराचर कोई
सो अतिशय प्रिय भामिनि मोरे । सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे
योगि वृन्द दुर्लभ गति जोई । तो कहं आजु सुलभ भइ सोई
मम दर्शन फल परम अनूपा । जीव पाव निज सहज स्वरूपा

दो· सब प्रकार तव भाग बड़ मम चरणन्ह अनुराग
तव महिमा जेहि उर बसिहि तासु परम बड़भाग

सुनि शुभ वचन हर्ष कछु पाई । सुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई ॥
जनकसुता के सुधि भामिनी । जानहि कहु करि वर गामिनी
पंपा सरहि जाहु रघुराई ॥ । मुनिवर विपुल रहे जहं छाई
ऋषि मतंग महिमा गुण भारी । जीव चराचर रहत सुखारी
वैर न कर काहू मन कोई ॥ । जा सन वैर प्रीति करु सोई
शिखर सुहावन कानन फूले । खग मृग जीवजंतु अनुकूले ।
करहु सफल श्रम सब करजोई । तहं होइहि सुग्रीव मिताई ॥
सो सब कहिहि देव रघुवीरा । जानत हूं पूछत मति धीरा ॥
वार वार प्रभु पद शिर नाई । प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥

छं· कहि कथा सकल विलोकि हरिमुख हृदय पदपंकज धरे
तजि योग पातक देह हरि पद लीन भइ जहं नहिं फिरे
नर विविध कर्म अधर्म बहु मत शोकप्रद सब त्यागहू
विश्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुराग हू

दो० जाति हीन अघ जन्म मय मुक्त कीन्हि असि नारि॥
महा मंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि॥

चले राम त्यागा बन सोऊ॥ ॥ अतुलित बल नर केहरि दोऊ॥
बिरही इव प्रभु करत विषादा। कहत कथा अनेक संवादा॥
लक्ष्मण देखहु कानन शोभा। देखत केहि कर मन नहिं छोभा॥
नारि सहित सब खग मृग वृन्दा। मानहुं मोरि करत हहिं निन्दा॥
हमहिं देखि मृग निकर पराहीं। मृगी कहहिं तुम कहं भय नाहीं॥
तुम आनंद करहु मृग जाये। कंचन मृग खोजन ये आये॥
संग लाइ करिणी करि लेहीं। मानहुं मोहिं सिखावन देहीं॥
शास्त्र सुचिन्तित पुनि पुनि देखिय। भूप सुसेवित बस नहिं लेखिय॥
राखिय नारि यदपि उर माहीं। युवती शास्त्र नृपति बस नाहीं॥
देखहु तात बसंत सुहावा॥ ॥ प्रिया हीन मोहिं भय उपजावा॥

दो० बिरह बिकल बल हीन मोहिं जानेसि निपट अकेल॥
सहित बिपिन मधुकर खगन्ह मदन कीन्ह बग मेल॥
देखि गये भ्राता सहित। तासु दूत निज बात॥
डेरे कीन्हेउ मनहुं तिन्ह कटक हटकि नहिं जात॥

बिटप बिशाल लता अरुझानी। बिबिध बितान दिये जनु तानी॥
कदलि ताल बर ध्वजा पताका। देखि न मोह धीर मन जाका॥
बिबिध भांति फूले तरु नाना। जनु बानैत बने बहु बाना॥
कहुं कहुं सुंदर बिटप सुहाये। जनु भट बिलग बिलग होइ छाये॥
कूजत पिक मानहुं गज माते। ढेक महोख ऊंट बिसराते॥
मोर चकोर कीर बर बाजी। पारावत मराल सब ताजी॥
तीतर लावक पद चर यूथा। बरणि न जाइ मनोज बरूथा॥
रथ गिरि शिला दुन्दुभी झरना। चातक बंदी गुण गण बरणा॥
मधुकर मुखर भेरि सहनाई। त्रिबिध बयारि बसीठी आई॥

चतुरंगिनी सेन सब लीन्हे । बिचरत सबहिं चुनौती दीन्हे
लछमन देखहु काम अनीका। रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका
इहि के एक परम बल नारी । तेहि तें उबर सुभट सोइ भारी

दो॰ तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ
मुनि बिज्ञान धाम मन । करहिं निमिष महं छोभ
लोभ के इच्छा दंभ बल काम के केवल नारि ।
क्रोध के परुष बचन बल मुनि बर कहहिं बिचारि

गुणातीत सचराचर स्वामी । राम उमा सब अन्तर यामी ॥
कामिन्ह के दीनता देखाई । धीरन्ह के मन बिरति दृढ़ाई ॥
क्रोध मनोज लोभ मद माया । छूटहिं सकल राम की दाया
सो नर इंद्र जाल नहिं भूला । जा पर होइ सो नट अनुकूला ।
उमा कहौं मैं अनुभव अपना । हरि का भजन सत्य जग सपना
पुनि प्रभु गये सरोवर तीरा । पंपा नाम सुभग गंभीरा ॥ ॥
सन्त हृदय जस निर्मल बारी । बांधे घाट मनोहर चारी ॥ ॥
जहं तहं पियहिं बिबिध मृग नीरा । जनु उदार गृह याचक भीरा

दो॰ पुरइनि सघन ओट जल बेगि न पाइय मर्म
माया छन्न न देखिये । जैसे निर्गुण ब्रह्म ॥
सुखी मीन सब एक रस अति अगाध जल माहिं
यथा धर्म शीलन्ह के दिन सुख संयुत जाहिं

बिकसे सरसिज नाना रंगा । मधुर सुखद गुंजत बहु भृंगा
बोलत जल कुक्कुट कल हंसा । प्रभु बिलोकि जनु करत प्रशंसा
चक्र बाक बक खग समुदाई । देखत बनै बरणि नहिं जाई
सुंदर खग गण गिरा सुहाई । जात पथिक जनु लेत बुलाई
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाये । चहुं दिशि कानन बिटप सुहाये
चंपक बकुल कदंब तमाला । पाटल पनस पलास रसाला ॥

नव पल्लव कुसुमित तरु नाना । चंचरीक पटली कर गाना ॥
शीतल मंद सुगंध सुहाऊ । सन्तत बहै मनोहर वाऊ ॥ ॥
कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं । सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं
दो॰ फूले फले बिटप सब । रहे भूमि नियराइ ॥ ॥
पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सु संपति पाइ
देखि राम अति रुचिर तलावा । मज्जन कीन्ह परम सुख पावा
देखी सुंदर तरु वर छाया ॥ । बैठे अनुज सहित रघुराया ॥
तहं पुनि सकल देव मुनि आये । अस्तुति करि निज धाम सिधाये
बैठे परम प्रसन्न कृपाला ॥ । कहत अनुज सन कथा रसाला
बिरह वंत भगवंतहि देखी । नारद मन भा शोच विशेषी ॥
मोर श्राप करि अंगी कारा ॥ । सहत राम नाना दुख भारा ॥
ऐसे प्रभुहि बिलोकौं जाई । पुनि न बनिहि अस अवसर आई
यह बिचारि नारद कर बीना । गये जहां प्रभु सुख आसीना
गावत राम चरित मृदु बानी । प्रेम सहित बहु भांति बखानी
करत दंडवत लिये उठाई ॥ । राखे बड़ी बार उर लाई ॥ ॥
स्वागत पूंछि निकट बैठारे । लछमण सादर चरण पखारे
दो॰ नाना बिधि बिनती करि प्रभु प्रसन्न जिय जानि
नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि ॥
सुनहु उदार परम रघुनायक । सुंदर अगम सुगम बरदायक
देहु एक बर मांगौं स्वामी ॥ । यद्यपि जानहु अंतर यामी ।
जानहु मुनि तुम मोर सुभाऊ । जन सन कबहुं कि करौं दुराऊ
कवन वस्तु अस प्रिय मोहिं लागी । जो मुनि वर न सकहु तुम मांगी
जनकहं कछु अदेय नहिं मोरे । अब बिश्वास तजहु जनि भोरे
तब नारद बोले हरषाई ॥ ॥ अस बर मांगौं करौं ढिठाई ।
यद्यपि प्रभु के नाम अनेका । श्रुति कह अधिक एक तें एका

चतुरंगिनी सेन सब लीन्हे । बिचरत सबहिं चुनौती दीन्हे
लछमण देखहु काम अनीका। रहहिं धीर तिन्ह कै जगलीका
इहि के एक परम बल नारी ।। तेहि ते उबर सुभट सोइ भारी
दो· तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ
मुनि बिज्ञान धाम मन । करहिं निमिष महं छोभ
लोभ के इच्छा दंभ बल काम के केवल नारि।
क्रोध के सरुप वचन बल मुनि वर कहहिं बिचारि
गुणातीत सचराचर स्वामी । राम उमा सब अन्तर यामी ।।
कामिन्ह के दीनता देखाई । धीरन्ह के मन बिरति दृढाई ।।
क्रोध मनोज लोभ मद माया । छूटहिं सकल राम की दाया
सो नर इंद्र जाल नहिं भूला । जा पर होइ सो नट अनु कूला ।
उमा कहों मैं अनुभव अपना । हरि का भजन सत्य जग सपना
पुनि प्रभु गये सरोवर तीरा । पंपा नाम सुभग गंभीरा ।। ।।
सन्त हृदय जस निर्मल वारी । बांधे घाट मनोहर चारी ।। ।।
जहं तहं पियहिं बिबिध मृग नीरा । जनु उदार गृह याचक भीरा
दो· पुरइनि सघन ओट जल बेगि न पाइय मर्म
माया छन्न न देखिये । जैसे निर्गुण ब्रह्म ।।
सुखी मीन सब एक रस अति अगाध जल माहिं
यथा धर्म शीलन्ह के दिन सुख संयुत जाहिं
विकसे सरसिज नाना रंगा । मधुर मुखर गुञ्जत बहु भृङ्गा
बोलत जल कुक्कुट कल हंसा । प्रभु बिलोकि जनु करत प्रशंसा
चक्र वाक बक खग समुदाई । देखत बनै वरणि नहिं जाई
सुंदर खग गण गिरा सुहाई । जात पथिक जनु लेत बुलाई
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाये । चहुं दिशि कानन बिटप सुहाये
चंपक बकुल कदंब तमाला । पाटल पनस पलास रसाला ।।

नव पल्लव कुसुमित तरु नाना। चंचरीक पटली कर गाना ॥
शीतल मंद सुगंध सुहाऊ। सन्तत बहै मनोहर बाऊ ॥ ॥
कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं। सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं
दो॰ फूले फले विटप सब। रहे भूमि नियराइ ॥ ॥
पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सु संपति पाइ
देखि राम अति रुचिर तलावा। मज्जन कीन्ह परम सुख पावा।
देखी सुंदर तरु वर छाया ॥। बैठे अनुज सहित रघुराया ॥
तहं पुनि सकल देव मुनि आये। अस्तुति करि निज धाम सिधाये
बैठे परम प्रसन्न कृपाला ॥। कहत अनुज सन कथा रसाला
विरह वंत भगवंतहि देखी। नारद मन भा शोच विशेषी ॥
मोर श्राप करि अंगी कारा ॥। सहत राम नाना दुख भारा ॥
ऐसे प्रभुहि बिलोकौं जाई। पुनि न बनिहि अस अवसर आई
यह विचारि नारद कर बीना। गये जहां प्रभु सुख आसीना
गावत राम चरित मृदु बानी। प्रेम सहित बहु भांति बखानी
करत दंडवत लिये उठाई ॥ ॥ राखे बड़ी बार उर लाई ॥ ॥
स्वागत पूंछि निकट बैठारे। लछमण सादर चरण पखारे
दो॰ नाना विधि विनती करि प्रभु प्रसन्न जिय जानि
नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि ॥
सुनहु उदार परम रघुनायक। सुंदर अगम सुगम वरदायक
देहु एक वर मांगौं स्वामी ॥। यद्यपि जानहु अंतर यामी।
जानहु मुनि तुम मोर सुभाऊ। जन सन कबहुं कि करौं दुराऊ
कवन वस्तु अस प्रिय मोहिं लागी। जो मुनि वर न सकहु तुम मागी
जन कहं कछु अदेय नहिं मोरे। अब विश्वास तजहु जनि भोरे
तब नारद बोले हरषाई ॥ ॥ अस वर मांगौं करौं ढिठाई।
यद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कहि अधिक एक तें एका।

राम सकल नामन्ह तें अधिका। होउ नाथ अघ खग गण बधिका
दो· राका रजनी भक्ति तव। राम नाम सोइ सोम॥
अपर नाम उडु गण विमल वसहु भक्ति उरव्योम
एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ
तव नारद मन हर्ष अति प्रभु पद नायउ माथ॥
अति प्रसन्न रघुनाथ हिं जानी। पुनि नारद बोले मृदु वानी।
राम जवहि प्रेरेहु निज माया। मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया
तव विवाह चाहों मैं कीन्हा। प्रभु केहि कारण करै न दीन्हा
सुनि मुनि तोहि कहीं सह रोसा। भजहिं मोहिं तजि सकल भरोसा
करौं सदा तिन्ह की रखवारी। जिमि वालकहिं राख महतारी
गहि शिशु वच्छ अनल अहि धाई। तहं राखै जननी अरगाई
प्रौढ़ भये तेहि सुत पर माता। प्रीति करै नहिं पाछिल वाता
मोरे प्रौढ़ तनय सम ज्ञानी। वालक सुत सम दास अमानी
जनहि मोर वल निज वल ताही। दुहु कहं काम क्रोध रिपु आही
यह विचारि पंडित मोहिं भजहीं। पाएहु ज्ञान भक्ति नहिं तजहीं
दो· काम क्रोध लोभादि मद प्रवल मोह की धारि
तिन्ह महं अति दारुण दुख माया रूपी नारि
सुन मुनि कह पुराण श्रुति संता। मोह विपिन कहुं नारि बसंता
जप तप नेम जलाशय झारी। होइ ग्रीषम शोषै सव नारी
काम क्रोध मद मत्सर भेका। इन्हहिं हर्ष प्रद वरषा एका
दुर्वासना कुमुद समुदाई॥। तिन्ह कहं शरद सदा सुखदाई
धर्म सकल सरसीरुह वृन्दा। होइ हिम तिन्ह हि देति दुखमंदा
पुनि मम ताजवास बढ़ ताई। पलुहै नारि सिसिर ऋतु पाई
पाप उलूक निकर सुख कारी। नारि निविड़ रजनी अंधियारी
बुधि वल शील सत्य सव मीना। वन शी सम त्रिय कहहिं प्रवीना

दो॰ अवगुण मूल सूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि
ताते कीन्ह निवारण मुनि मैं यह जिय जानि
सुनि रघुपति के वचन सुहाये। मुनि तन पुलकि नयन भरि आये
कहहु कवन प्रभु के अस रीती। सेवक पर ममता अति प्रीती
जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी। ज्ञान रंक मति मंद अभागी
पुनि सादर बोले मुनि नारद। सुनहु राम विज्ञान विशारद
संतन्ह के लक्षण रघुवीरा। कहहु राम भंजन भव भीरा
सुन मुनि संतन के गुण कहऊं। जेहि ते मैं उन्ह के वस रहऊं
षट विकार तजि अनघ अकामा। अचल अकिंचन शुचि सुखधामा
अमित बोध परमारथ भोगी। सत्य सार कवि कोविद योगी
सावधान मान मद हीना। धीर भक्त गति परम प्रवीना
दो॰ गुणागार संसार दुख। रहित विगत संदेह॥
तजि मम चरण सरोज प्रिय। तिन्ह कहं देह न गेह
निज गुण सुनत श्रवण सकुचाहीं। पर गुण सुनत अधिक हर्षाहीं
सम शीतल नहिं त्यागहिं नीती। सरल सुभाव सबहिं सन प्रीती
जप तप व्रत दम संयम नेमा। गुरु गोविंद विप्र पद प्रेमा॥
श्रद्धा क्षमा मइत्री दाया॥ मुदिता मम पद प्रीति अमाया
विरति विवेक विनय विज्ञाना। बोध यथा रथ वेद पुराना॥
दंभ मान मद करहि न काऊ। भूलि न देहिं कुमारग पाऊ
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला। हेतु रहित परहित रत शीला
सुनु मुनि साधुन्ह के गुण जेते। कहि न सकहिं शारद श्रुति तेते
छं॰ कहि सक न शारद शेष नारद सुनत पद पंकज गहे
अस दीन बंधु कृपाल अपने भक्त गुण निज मुख कहे
शिर नाइ बारहि बार चरणन्ह ब्रह्मपुर नारद गये॥
ते धन्य तुलसीदास आस विहाइ जे हरि रंग रये॥

दो· रावणारि यश पावन । गावहिं सुनहिं जे लोग
राम भक्ति दृढ़ पावहिं । बिनु बिराग जप योग
दीप शिखा सम युवतिजन मन जनि हो सि पतंग
भजहिं राम तजि काममद । करहिं सदा सत संग
इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने
विमल वैराग्य संपादनो नाम तृतीयः सोपानः शुभं

लिपि कृतं हरमोहन दास खत्री



किष्किन्धाकाण्ड

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ ॥ शो-
भाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ॥ माया मा-
नुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ ॥ सीतान्वेषणतत्परौ प-
थिगतौ भक्तिप्रदौ तौहि नः ॥ १ ॥ ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलि
मलप्रध्वंसनं चाव्ययं ॥ श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशो
भितं सर्वदा ॥ संसारामयभेषजं सुमधुरं श्रीजानकीजीवनं ।
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

सो० मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ हानि कर
जहं बश शम्भु भवानि । सो काशी सेइय कस न १
जरत सकल सुर वृन्द विषम गरल जेहि पान किय
तेहि न भजसि मति मन्द को कृपाल शंकर सरिस ।

आगे चले बहुरि रघुराई ॥ ऋष्यमूक पर्वत नियराई ॥
तहं रह सचिव सहित सुग्रीवा ॥ आवत देखि अतुल बल सींवा
अति सभीत कह सुनु हनुमाना ॥ पुरुष युगल बल रूप निधाना ॥
धरि बटु रूप देखतैं जाई ॥ कहेसि मोहिं जिय सैन बुझाई
पठवा बालि होइ मन मैला ॥ भागौं तुरत तजौं यह शैला ॥
विप्र रूप धरि कपि तहं गयऊ ॥ माथ नाय पूछत अस भयऊ
को तुम श्यामल गौर शरीरा ॥ क्षत्री रूप फिरहु वन बीरा ॥

कठिन भूमि कोमल पद गामी ॥ कवन हेतु बन विचरहु स्वामी
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता ॥ सहत दुसह बन आतप बाता
के तुम तीनि देव महं कोऊ ॥ नर नारायण के तुम दोऊ ॥

दो॰ जग कारण तारण भवहिं भंजन धरणी भार ॥
के तुम अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार

सुनि बोले रघु वंश कुमारा । ॥ विधि कर लिखा को मेटन हारा
कौशलेश दशरथ के जाये ।॥ हम पितु वचन मानि वन आये
नाम राम लक्ष्मण दोउ भाई ॥ संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥
इहां हरी निशिचर वैदेही । ॥ खोजत विप्र फिरहिं हम तेही॥
आपन चरित कहा हम गाई ॥ कहहु विप्र निज कथा बुझाई
प्रभु पहिचानि परे गहि चरणा ॥ सो सुख उमा जाइ नहिं वरणा
पुलकित तन मुख आवन वचना ॥ देखत रुचिर वेष की रचना ॥
पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्हा। हर्ष हृदय निज नाथहि चीन्हा
मैं अजान होइ पूछा साईं ॥ तुम कस पूछहु नर की नाईं ॥
तव माया वस फिरौं भुलाना ॥ ताते प्रभु पद नहिं पहिचाना ॥

दो॰ एक मंद मैं मोह बस । कीस हृदय अज्ञान ॥
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेहु दीन बंधु भगवान ॥

यदपि नाथ अवगुण बहु मोरे ॥ सेवक प्रभुहि परै जनु भोरे ॥
नाथ जीव तव माया मोहू ॥ सो निस्तरै तुम्हारे छोहू ॥ ॥
ता पर मैं रघुवीर दुहाई ॥ जानौं नहिं कछु भजन उपाई
सेवक सुत पितु मातु भरोसे ॥ रहैं अशोच बनै प्रभु पोसे ॥
अस कहि चरण परे अकुलाई। निज तन प्रकट प्रीति उर छाई
तब रघुपति उठाइ उर लावा ॥ निज लोचन जल सींचि जुड़ावा
सुनु कपि जिय जनि मानसि ऊना। तैं मम प्रिय लक्ष्मण तें दूना ॥
सम दरशी मोहिं कह सब कोई । सेवक प्रिय अनन्य गति होई॥

दो॰ सो अनन्य जास जाहि के मति न टरै हनुमंत
मैं सेवक सचराचर । रूप राशि भगवंत ॥
देखि पवन सुत पति अनकूला हृदय हर्ष बीते सव सूला ॥ ॥
नाथ शैल पर कपि पति रहई ॥ सो सुग्रीव दास तव अहई ॥ ॥
तासन नाथ मइत्री कीजे ॥। दीन जानि तेहि अभय करीजे
सो सीता कर खोज कराइहि ॥ जहं तहं मर कट कोटि पठाइहि
इहि विधि सकल कथा समुझाई लिये दोउ जन पीठि चढाई ॥
जब सुग्रीव राम कहं देखा ।। अति शय धन्य जन्म करि लेखा
सादर मिले नाइ पद माथा ।। भेटे अनुज सहित रघुनाथा ॥
कपि के मन विचार यह नीती । करि इहिं विधि मोसन ये प्रीती
दो॰ तब हनु मन्त उभय दिशि कहि सब कथा बुझाइ
पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाई ॥ ॥
कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा । लक्ष्मण राम चरित सब भाखा
कहि सुग्रीव नयन भरि वारी ॥ मिलिहि नाथ मिथलेश कुमारी
मंत्रिन सहित इहां एक बारा ।। बैठ रहउ कछु करत विचारा ॥
गगन पंथ देखी मैं जाता ॥ ॥ पर बस परी बहुत बिलखाता
राम राम हा राम पुकारी ॥ । मम दिशि देखि दीन्ह पट डारी
मांगा राम तुरत सो दीन्हा ।। पट उर लाइ शोच अति कीन्हा
कह सुग्रीव सुनहु रघु बीरा ।। तजहु सोक मन आनहु धीरा ॥
सब प्रकार करिहौं सेवकाई । जेहि विधि मिलिहि जानकी आई
दो॰ सखा वचन सुनि हरखे रघुपति करुणा सींव ॥
कारण कवन बसहु बन मोसन कहु सुग्रीव
नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई । प्रीति रही कछु वरणि न जाई ॥
मय सुत मायावी तेहि नाऊं ॥ । आवा सो प्रभु हमरे गाऊं ॥
आई राति पुर द्वार पुकारा । ॥ बालिहु रिपु बल सहै न पारा ।

धावा बालि देखि सो भागा ।।मैं पुनि गयउं बंधु संग लागा
गिरि वर गुहा पैठ सो जाई । ।बालि मोहिं तब कहा बुझाई
परखेउ मोहि एक पख वारा । नहिं आवौं तौ जानेहु मारा ।।
मास दिवस तहं रहेउं खरारी ।। निसरी रुधिर धार तहं भारी ।।
तब मैं निज मन कीन्ह विचारा ।।जाना असुर बंधु कहं मारा ।।
बालि हतेसि मोहिं मारिहि आई सिला द्वार दै चलेउं पराई ।।
मंत्रिन पुर देखा बिनु सांई ।। दीन्हेउ राज मोहिं बरिआई ।।
बाली ताहि मारि गृह आवा ।। देखि मोहिं जिय भेद बढ़ावा ।।
रिपु समान मोहिं मारेसि मारी ।। हरि लीन्हेसि सर्वस अरु नारी
ताके भय रघुवीर कृपाला ।। सकल भुवन मैं फिरेउं बिहाला
इहां श्राप बस आवत नाहीं ।। तदपि सभीत रहौं मन माहीं ।।
सुनि सेवक दुख दीन दयाला ।। फरकि उठे दोउ भुजा विशाला

दो॰ सुनि सुग्रीव मैं मारिहौं बालिहि एकहि बान ।।
ब्रह्म रुद्र शरणा गतहु गयेन उबरहिं प्रान ।।

जेन मित्र दुख होहिं दुखारी ।। तिनैं विलोकत पातक भारी ।।
निज दुख गिरि समरज कै जाना मित्र के दुख रज मेरु समाना ।।
जिन के अस मति सहज न आई ते सठ हठ कत करत मिताई ।।
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा ।। गुन प्रगटे अव गुनहि दुरावा ।।
देत लेत मन शंक न धरहीं ।। ।। बल अनुमान सदा हित करहीं
विपति काल कर सत गुण नेहा ।। श्रुति कह सत्य मित्र गुण एहा ।।
आगे कह मृदु वचन बनाई ।। पाछे अन हित मन कुटिलाई ।।
जाकर चित अहि गति सम भाई ।। अस कुमित्र परि हरे भलाई ।।
सेवक सठ नृप कृपण कुनारी ।। कपटी मित्र शूल सम चारी ।।
सखा शोच त्यागहु बल मोरे ।। सब विधि करब काज मैं तोरे ।।
कह सुग्रीव सुनो रघुबीरा ।। ।। बालि महा बल अति रण धीरा

दुंदुभि अस्थि ताल दिख राये। विनु प्रयास रघुनाथ ढहाये॥
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती बालि बधन कर भइ परतीती॥
बारहि बार नाइ पद सीसा। प्रभुहि जानि मन हर्ष कपीसा॥
उपजा ग्यान वचन तब बोला। नाथ कृपा मन भयउ अडोला।
सुख संपति परिवार बड़ाई। सब परिहरि करिहौं सेवकाई॥
ये सब राम भक्ति के बाधक। कहहिं संत तव पद अवराधक॥
सत्रु मित्र दुख सुख जग माहीं। माया कृत परमारथ नाहीं॥
बालि परम हित जासु प्रसादा॥ मिलेहु राम तुम समन विषादा।
सपने जेहि सन होइ लराई॥ जागे समुझत मन सकुचाई
अब प्रभु कृपा करहु इहि भाती सब तजि भजन करौं दिन राती
सुनि विराग संयुत कपि बानी॥ बोले विहंसि राम धनु पानी॥
जो कछु कहेउ सत्य सब सोई। सखा वचन मम मृषा न होई
नट मरकट इव सबहि नचावत॥ राम खगेस वेद अस गावत॥
लै सुग्रीव संग रघुनाथा॥ चले चाप सायक गहि हाथा॥
तब रघुपति सुग्रीव पठावा॥ गर्जेसि जाइ निकट बल पावा॥
सुनत बालि आतुर होइ धावा॥ गहि कर चरण नारि समुझावा॥
सुनु पति जिनहिं मिला सुग्रीवा। ते दोउ बंधु तेज बल सींवा॥
कोसलेस सुत लक्ष्मण रामा॥ कालहु जीति सकहिं संग्रामा॥
सोइ रघुबीर हृदय में आनहु॥ छांड़हु मोह कहा मम मानहु॥

दो० कहा बालि सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ॥
जो कदापि मोहिं मारि हैं तो पुनि होंव सनाथ॥

अस कहि चला महा अभिमानी। तृण समान सुग्रीवहिं जानी॥
बालि देखि सुग्रीव हि ठाढ़ा॥ हृदय क्रोध पुनि बहु विधि बाढ़ा
भिरेउ उभय बाली अति तर्जा। मुष्टिक मारि महाधुनि गर्जा॥
जब सुग्रीव विकल होइ भागा। मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा॥

मैं जो कहा रघुबीर कृपाला ।। बंधु न होइ मोर यह काला ।।
एक रूप तुम भ्राता दोऊ ।। तेहि भ्रम ते नहिं मारेउ सोऊ ।।
कर परसा सुग्रीव शरीरा ।। तन भा कुलिश गई सब पीरा ।
मेली कंठ सुमन की माला ।। पठवा पुनि बल देइ बिशाला ।।
पुनि नाना बिधि भई लराई ।। बिटप ओट देखहिं रघुराई ।।

दो॰ बहु छल बल सुग्रीव करि हृदय हारि भय मानि
मारा बालिहि राम तब हिये मांझ शर तानि ।।

परा बिकल महि शर के लागे ।। पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे ।।
श्याम गात शिर जटा बनाये ।। अरुण नयन शर चाप चढ़ाये
पुनि पुनि चितै चरण चित दीन्हें । सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हें ।।
हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा ।। बोला चितै राम की ओरा ।।
धर्म हेतु अवतरेहु गुसाईं ।। मारेहु मोहि ब्याध की नाईं ।।
मैं बैरी सुग्रीव पियारा ।। कारण कवन नाथ मोहिं मारा ।
अनुज बधू भगिनी सुत नारी ।। सुन शठ ये कन्या सम चारी ।।
इन्हें कुदृष्टि बिलोकै जोई ।। ताहि बधे कछु पाप न होई ।।
मूढ़ तोहि अति अभिमाना । नारि सिखावन करेसि न काना
मम भुज बल आश्रित तेहि जानी ।। मारा चहसि अधम अभिमानी

दो॰ सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि ।।
प्रभु अजहूं मैं पापी अंत काल गति तोरि ।।

सुनत राम अति कोमल बाणी ।। बालि सीस परसा निज पाणी ।।
अचल करौं तन राखहु प्राणा ।। बालि कहा सुनि कृपा निधाना ।।
जन्म जन्म मुनि यतन कराहीं ।। अंत राम कहि आवत नाहीं ।।
जासु नाम बल शंकर काशी ।। देत सबहि सम गति अविनाशी
मम लोचन गोचर सो आवा ।। बहुरि कि अस प्रभु बनिहि बनावा

छं॰ सो नयन गोचर जासु गुण निति नेति कहि श्रुति गावहीं

श्री राम चन्द्र के सन्मुख मृतक बालि के शव को लेकर तारा को विलाप करना और श्री राम चंद्र जी का तारा को ज्ञान उपदेश देना



जिमि पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुं क पावहीं ॥
मोहिं जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु शरीरही
अस कवन शठ हठ काटि सुरतरु वारि करहिं करी रही ॥ ॥
अब नाथ करि करुणा विलोकहु देव यह वर मांगऊं ॥
जेहि योनि जनमौं कर्म बस तहं राम पद अनु रागऊं ॥
यह तनय मम सम विनय बल कल्याण पद प्रभु दीजियै
गहि बांह सुर नर नाह अंगद दास आपन कीजियै ॥ ॥

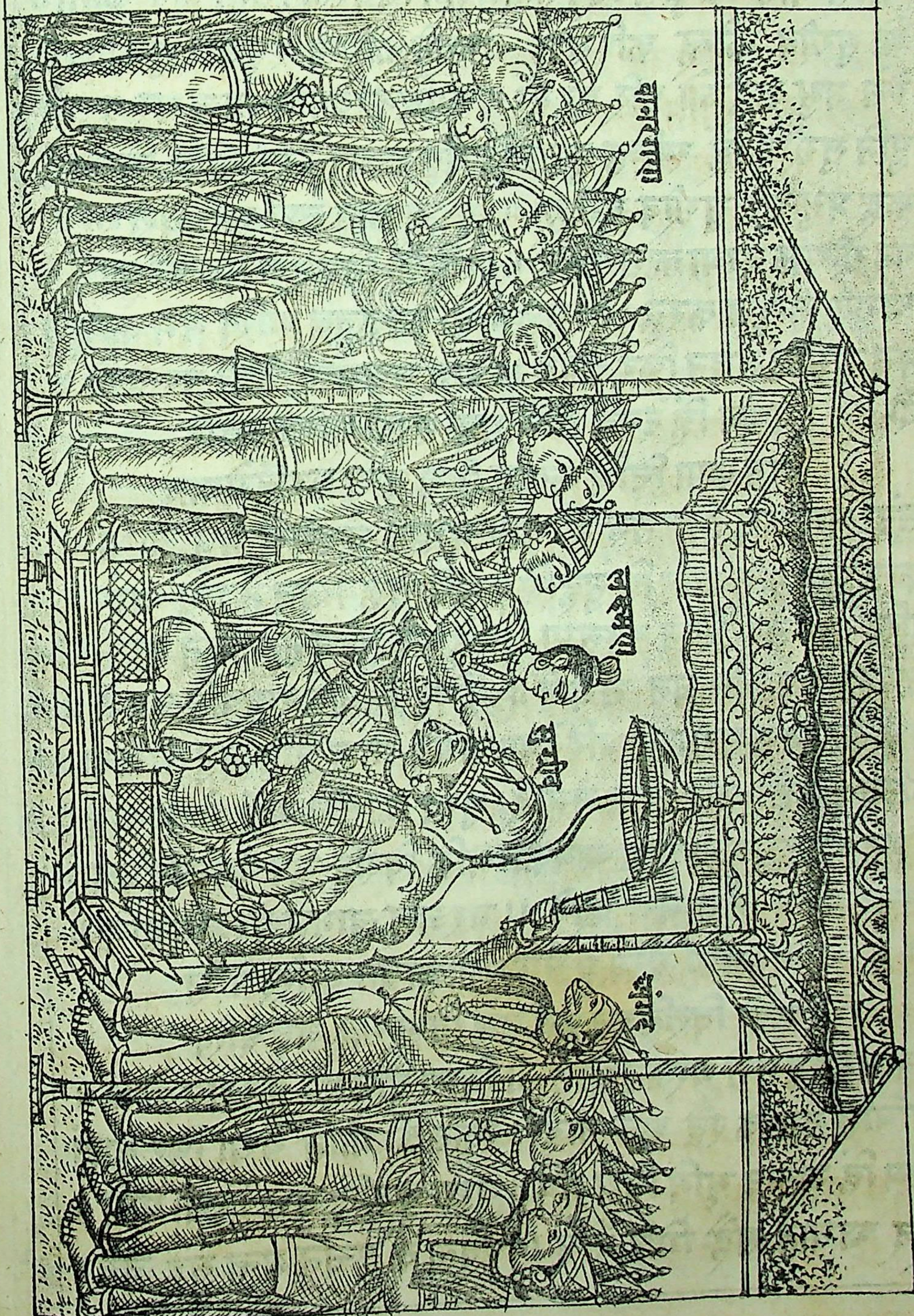
दो॰ राम चरण दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तन त्याग ॥
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानै नाग ॥ ॥

राम बालि निज धाम पठावा ॥ ॥ नगर लोग सब व्याकुल धावा ॥
नाना विधि विलाप कर तारा ॥ ॥ छूटे केश न देह संभारा ॥ ॥
पुनि पुनि तास शीस उर धरई । घदन बिलोकि हृदय महं हतई
मैं पति तुम हिं बहुत समझावा ॥ काल विवस पिय मनहिं न आवा
अंगद कह कछु कहन न पायहु ॥ बीचहि सुर पुर प्राण पठा यहु ॥
तारा बिकल देखि रघु राया ॥ ॥ दीन्ह ज्ञान हरि लीन्ही माया
क्षिति जल पावक गगन समीरा । पंच रचित यह अधम शरीरा ॥
प्रगट सो तनु तव आगे सोवा ॥ ॥ जीव नित्य तुम केहि लगि रोवा ।
उपजा ज्ञान चरण सब लागी ॥ लीन्हेसि परम भक्ति वर मांगी ।
उमादारु योषित की नाईं ॥ ॥ सब हि न चावत राम गुसाईं ॥
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा । । मृतक कर्म विधि वत सब कीन्हा
राम कहा अनुजहि समुझाई ॥ राज देहु सुग्रीव हिं जाई ॥
रघु पति चरण नाइ करि माथा । चले सकल प्रेरित रघु नाथा

दो॰ लछमण तुरत बुलावा पुर जन विप्र समाज ॥
राज दीन्ह सुग्रीव कहं अंगद कहं युव राज ॥

उमा राम सम हित जग माहीं ॥ सुत पितु मातु बंधु कोउ नाहीं

श्री रामचन्द्रजी की आज्ञानुसार हनुमत अंगद आदि वानरों संयुक्त श्री लक्ष्मण जी को सुग्रीव का राज तिलक करना॥



सरिता सर जल निर्मल सोहा ॥ संत हृदय जस गत मद मोहा ॥
रस रस सोख सरित सर पानी ॥ ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी
जानि शरद ऋतु खंजन आये ॥ पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये
पंकन रेणु सोह असि धरणी ॥ नीति निपुन नृप की जस करणी
जल संकोच विकल भो मीना ॥ विविधि कुटुम्बी जिमि धन हीना
बिनु घन निर्मल सोह अकाशा ॥ जिमि हरिजन परिहर सब आशा
कहुं कहुं वृष्टि शारदी थोरी ॥ कोउ एक पाव भक्ति जिमि मोरी

दो॰ चले हर्षि तजि नगर नृप तापस बणिक भिखारि ॥
जिमि हरि भक्ति पाइ जन तजहिं आश्रमी चारि ॥

सुखी मीन जहं नीर अगाधा ॥ जिमि हरि शरण न एको बाधा
फूले कमल सोह सर कैसे ॥ निर्गुण ब्रह्म सगुण भये जैसे
गुञ्जत मधुकर निकर अनूपा ॥ सुंदर खग रव नाना रूपा ॥
चक्र वाक मन दुख निशि पेखी ॥ जिमि दुर्जन पर संपति देखी ॥
चातक रटत तृषा अति वोही ॥ जिमि सुख लहै न शंकर द्रोही
शरदा तप निशि शशि अपहरई ॥ संत दरश जिमि पातक टरई ॥
देखहिं विधु चकोर समुदाई ॥ चितवहिं हरिजन हरि जिमि पाई
मशक दंश बीते हिन त्रासा ॥ जिमि द्विज द्रोह किये कुल नाशा

दो॰ भूमि जीव संकुल रहे गये शरद ऋतु पाइ ॥
सत गुरु मिले ते जाहिं जिमि संशय भ्रम समुदाइ

वर्षा गत निर्मल ऋतु आई ॥ सुधि न तात सीता की पाई ॥
एक बार कैसेउं सुधि पावौं ॥ कालहु जीति निमिष महं ल्यावौं ।
कतहुं रहौ जो जीवति होई ॥ तात यतन करि आनौं सोई ॥
सुग्रीवहुं सुधि मोरि बिसारी ॥ पावा राज कोश पुर नारी ॥
जेहि शायक मैं मारा बाली ॥ तेहि शर हतौं मूढ़ कहं काली
जासु कृपा छूटे मद मोहा ॥ ता कहं उमा कि सपनेहु कोहा

जानहिं यह चरित्र मुनि ज्ञानी ॥ जिन्ह रघुबीर चरण रत मानी ॥
लक्ष्मण क्रोध वंत प्रभु जाना ॥ धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥
दो· तब अनुज हि समुझावा रघुपति करुणा सींव
भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥
इहां पवन सुत हृदय विचारा ॥ राम काज सुग्रीव बिसारा ॥ ॥
निकट जाइ चरणन शिर नावा ॥ चारिहु विधि तेहि कहि समुझावा
सुनि सुग्रीव परम भय माना ॥ विषय मोर हरि लीन्हेउ ज्ञाना।
अब मारुत सुत दूत समूहा ॥ ॥ पठ बहु जहं तहं बानर यूहा ॥
कहहु पक्ष महं आवन जोई ॥ मोरे कर ताकर बध होई ॥
तब हनु मंत बुलाये दूता ॥ ॥ सब कर करि सन मान बहूता ॥
भय अरु प्रीति नीति सिखराई॥ चले सकल चरणन शिर नाई।
तेहि अवसर लक्ष्मण पुर आये॥ क्रोध देखि जहं तहं कपि धाये॥
दो· धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करौं पुर क्षार ॥
व्याकुल नगर देखि तब आवा बालि कुमार॥
चरण नाइ शिर बिनती कीन्हा॥ लक्ष्मण अभय बांह तेहि दीन्हा
क्रोध वंत लक्ष्मण सुनि काना ॥ कह कपीश अति भय अकुलाना
तुम हनु मंत संग लै तारा ॥ ॥ करि बिनती समझाउ कुमारा॥
तारा सहित जाइ हनुमाना॥ चरण बंदि प्रभु सुयश बखाना
करि बिनती मंदिर लै आये ॥ चरण पखारि पलंग बैठाये ॥
तब कपीश चरणन शिर नावा। गहि भुज लक्ष्मण कंठ लगावा
नाथ विषय सम मद कछु नाहीं मुनि मन मोह करै क्षण माहीं ॥
सुनत विनीत वचन सुख पावा॥ लक्ष्मण तेहि बहु विधि समुझावा
पवन तनय सब कथा सुनाई॥ जेहि बिधि गये दूत समुदाई॥
दो· हर्षि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ॥
राम अनुज आगे किये आये जहं रघु नाथ॥

नाथ चरण शिर कह कर जोरी ॥ नाथ मोरि कछु नाहिं न खोरी ॥
अति शय प्रबल देव तव माया ॥ छूटै तबहिं करहु जब दाया ॥
विषय विवस सुर नर मुनि स्वामी॥ मैं पामर पशु कपि अति कामी॥
नारि नयन शर जाहि न लागा ॥ महा घोर निशि सोवत जागा ॥
लोभ पाश जेहि गर न बंधाया॥ सो नर तुम समान रघु राया ॥
यह गुण साधन तें नहिं होई ॥ तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई ॥
तब रघु पति बोले मुसुकाई ॥ तुम प्रिय मोहिं भरत जिमि भाई
अब सोइ यतन करहु मन लाई ॥ जेहि विधि सीता की सुधि पाई

दो० इहि विधि होत बत कही आये वानर यूथ ॥
नाना वरण अतुल बल देखिय कीस बरूथ

बानर कटक उमा मैं देखा ॥ सो मूरख जो किय चह लेखा॥
आय राम पद नावहिं माथा ॥ निरखि वदन सब होहिं सनाथा।
अस कपि एक न सेना माहीं ॥ राम कुशल पूछी जेहि नाहीं॥
यह नहिं कछु प्रभु की अधिकाई।विश्व रूप व्यापक रघु राई ॥ ॥
ठाढे जहं तहं आयसु पाई ॥ ॥ कहि सुग्रीव सब हिं समुझाई।
राम काज अरु मोर निहोरा । ॥ बानर यूथ जाहु चहुं वोरा ॥
जनक सुता कहं खोजहु जाई ॥ मास दिवस महं आयेहु भाई॥
अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाये ॥ अवशि मरिहि सो मम कर आये

दो० वचन सुनत सब वानर जहं तहं चले तुरंत॥ ॥
तब सुग्रीव बुलाये अंगदादि हनु मंत ॥ ॥

सुनहु नील अंगद हनु माना। ॥ जाम वंत मति धीर सुजाना॥
सकल सुभट मिलि दक्षिण जाहू सीता सुधि पूछेहु सब काहू॥
मन वच क्रम सों यतन विचारेहु॥ राम चंद्र कर काज संवारेहु ॥
भानु पीठ सेइय उर आगी ॥। स्वामी सेइय सब छल त्यागी॥
तजि माया सेइय पर लोका ॥ मिटै सकल भव संभव शोका॥

देह धरे कर यह फल भाई ॥ भजिय राम सब काम बिहाई।
सोइ गुणज्ञ सोई बड़ भागी ॥ जो रघुबीर चरण अनुरागी ॥
आयसु मांगि चरण शिर नाई ॥ चले हर्षि सुमिरत रघुराई ॥
पाछे पवन तनय शिर नावा ॥ जानि काज प्रभु निकट बुलावा।
परसा शीस सरोरुह पानी ॥ कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी ॥
बहु प्रकार सीतहि समुझायहु ॥ कहि बल बीर बेगि तुम आयहु
हनुमंत जन्म सुफल करि जाना ॥ चले हृदय धरि कृपा निधाना।
यद्यपि प्रभु जानत सब बाता ॥ राज नीति राखत सुर त्राता ॥
दो॰ चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह
॥ राम काज लव लीन मन बिसरा तन कर छोह
कतहुं होइ निशिचर सन भेटा ॥ प्राण लेहिं इक एक चपेटा ॥
बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं ॥ कोउ मुनि मिले नाहि सब घेरहिं
लागि तृषा अति भाय अकुलाने ॥ मिलै न जल घन गहन भुलाने ॥
तब हनुमान कीन्ह अनुमाना । ॥मरण चहत सब बिनु जल पाना
चढ़ि गिरि शिखर चहूं दिशि देखा ॥ भूमि विवर इक कौतुक पेखा ॥
चक्र वाक बक हंस उड़ाहीं ॥ बहु तेक खग प्रविशहिं तेहि माहीं
गिरि ते उतरि पवन सुत आवा ॥ सब कहं लै सो विवर दिखावा।
आगे कर हनुमंत हि लीन्हा । ॥ पैठे विवर विलंब न कीन्हा ॥
दो॰ दीख जाइ उपवन सुभग सर विकसे बहु कंज
मंदिर एक रुचिर तहां बैठि नारि तप पुंज ॥
दूरिहि ते तेहि सब शिर नावा ॥ पूछेसि निज वृत्तान्त सुनावा॥
तब तेइ कहा करहु जल पाना ॥ खाहु सरस सुंदर फल नाना ॥
मज्जन कीन्ह मधुर फल खाये ॥ तासु निकट पुनि सब चलि आये
तेइ सब आपनि कथा सुनाई ॥ मैं अब जाव जहां रघुराई ॥
मूंदहु नयन विवर तजि जाहू ॥ पैहहु सीतहि जनि कदराहू ॥

नयन मूंदि तब देखहिं बीरा। ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा ॥
सो पुनि गई जहां रघु नाथा। जाइ कमल पद नाय सि माथा।
नाना भांति विनय तेइ कीन्ही। अन पावनी भक्ति प्रभु दीन्ही

दो॰ बदरी बन कहंसो गई प्रभु आज्ञा धरि शीश
उर धरि राम चरण युग जो बंदित अज ईस

इहां विचारहिं कपि मन माहीं बीती अवधि काज कछु नाहीं
सब मिलि कहहिं परस्पर बाता। बिनु सुधि लिये करब का भ्राता
कह अंगद लोचन भरि बारी। दुहु प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
इहां न सुधि सीता कर पाई। उहां गये मारिहि कपि राई॥
पिता बधे पर मारत मोही।। राखा राम निहोरा वोही ॥
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं मरण भयो कछु संशय नाहीं
अंगद वचन सुनत कपि बीरा बोल न सकहिं नयन बह नीरा
क्षण इक शोक मगन हो गये। पुनि अस वचन कहत सब भये
हम सीता की बिनु सुधि लीन्हे। फिर वन भुनु युव राज प्रवीने।
अस कहि लवण सिंधु तट जाई बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
जाम वंत अंगद दुख देखी। कही कथा उपदेश विशेषी
तात राम कहं नर जनि जानहु निर्गुण ब्रह्म अजित अज मानहु
हम सब सेवक अति बड़ भागी संतत सगुण ब्रह्म अनुरागी ॥

दो॰ निज इच्छा अवतरेउ प्रभु सुर द्विज गो महि लागि
सगुण उपासक रहहिं सब मोक्ष सकल सुख त्यागि

इहि विधि कहत कथा बहु भांती गिरि कंदरा सुना संपाती ॥
बाहिर होइ देखे सब कीसा। मोहिं अहार दीन्ह जग दीशा
आजु सबन्ह कहं भक्षण करऊं दिन बहु गे अहार बिनु मरऊं
कबहु न मिल भरि उदर आहारा। आजु दीन्ह विधि एकहि बारा।
डरपे गृध्र वचन सुनि काना। अब भा मरण सत्य हम जाना

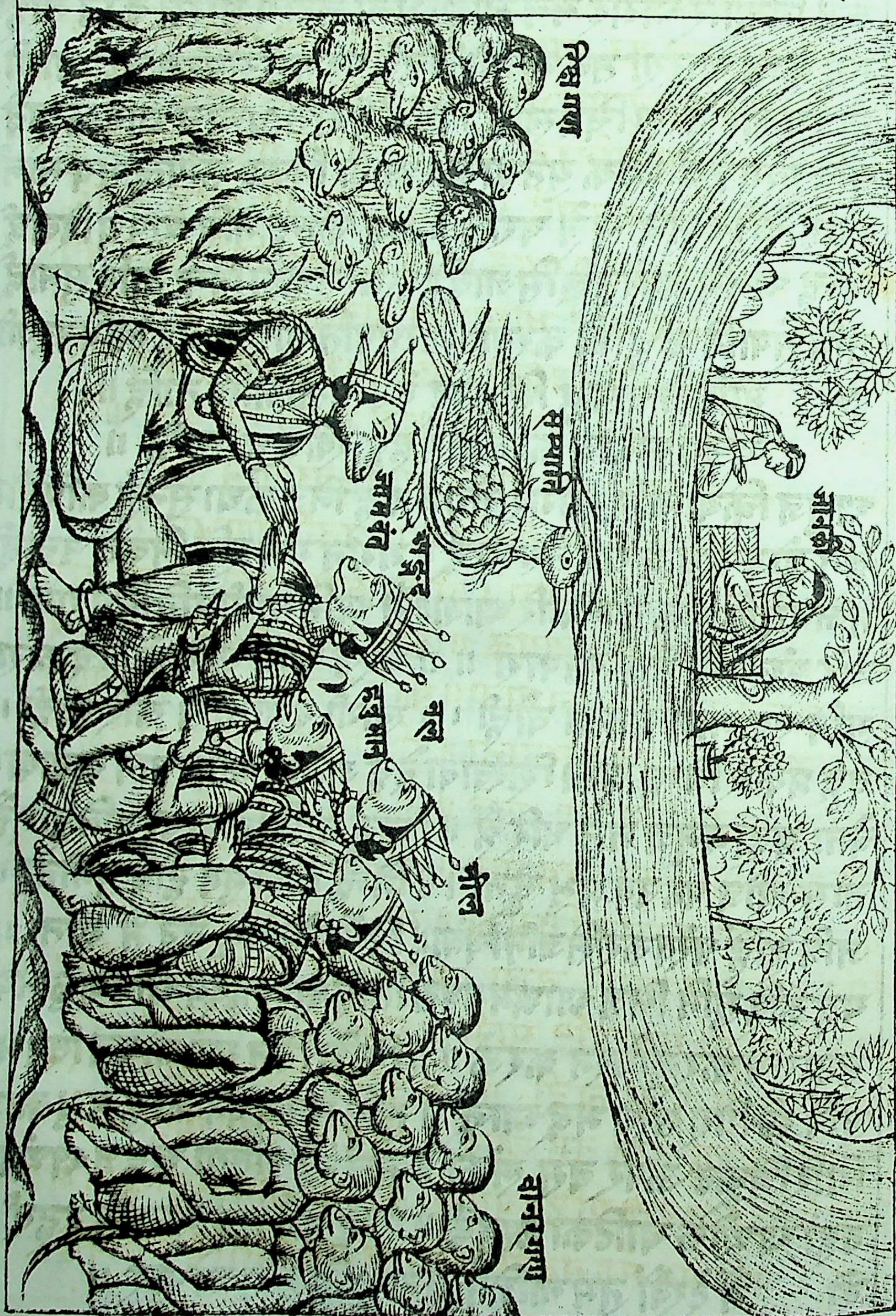
कपि सब उठे गृध्र कहँ देखी ॥ जामवंत मन सोच विशेषी ॥
कह विचारि अंगद मन माहीं। धन्य जटायु सरिस कोउ नाहीं
राम काज कारण तन त्यागी ॥ हरिपुर गयउ परम बड़ भागी।
जो रघुवीर चरण चित लावै । ॥ तिहिं सम धन्य न आन कहावै
सुनि खग हर्ष शोक युत बानी॥ आवा निकट कपिन्ह भय मानी
ताहि देखि सब चले पराई ॥ ठाढ़ कीन्ह तेहि शपथ दिवाई
तिन्हे अभय करि पूछेसि जाई॥ कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई
सुनि संपाति बंधु की करणी । ॥रघुपति महिमा बहु विधि वरणी

दो॰ मोहिं ले चलहु सिंधु तट देउं तिलांजलि ताहि ॥
वचन सहाय करब मैं पैहहु खोजहु जाहि ॥

अनुज क्रिया करि सागर तीरा॥ कह निज कथा सुनहु कपिवीरा
हम दोउ बंधु प्रथम तरुणाई ॥ गगन गये रवि निकट उड़ाई।
तेजन सहि सक सो फिरि आवा॥ मैं अभिमानी रवि नियरावा ॥
जरे पंख रवि तेज अपारा ॥ ॥ परेउं भूमि करि घोर चिकारा।
मुनि एक नाम चंद्रमा ओही । ॥ लागी दया देखि करि मोही ॥
बहु प्रकार तिन्ह ज्ञान सिखावा देह जनित अभिमान छुड़ावा॥
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरि हैं ॥ । तासु नारि निशिचर पति हरि हैं
तासु खोज पठइब प्रभु दूता । ॥ तिन्हें मिले तुम होब पुनीता ॥
जमि हहिं पंख करसि जनि चिंता॥ तिन्हैं देखाइ देव तें सीता ॥
यह कहि मुनि निज आश्रम गयऊ तिहि क्षण हृदय ज्ञान कछु भयऊ
सत्य राम कर सुमिरन करऊं ॥ ॥ निशि दिन मग जोवत दिन भरऊं
मुनि की गिरा सत्य भइ आजू ॥ सुनि मम वचन करहु प्रभु काजू।
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका ॥ तहँ रह रावण सहज असंका
तहां अशोक वाटिका अहई ॥ सीता बैठि तहं सोचति रहई ॥

दो॰ मैं देखौं तुम नाहिन ॥ गृध्र हि दृष्टि अपार ॥

जामवन्त हनुमत अङ्गदादि वानरों का जानकी जी के ढूंढने को जाना और समुद्र के तट पर सम्पाति का मिलना और सम्पाति से लङ्का में जानकी जी का पता मिलना॥



बूढ़ भयौं न तौ करितेउं । कछुक सहाय तुम्हार
जो लांघै पर्तें योजन सागर ॥ करै सो राम काज अति आगर
जो कोइ करै राम कर काजू ॥ तेहि सम धन्य आन नहिं आजू
मोहिं बिलोकि धरहू मन धीरा ॥ राम कृपा कस भयउ शरीरा ॥
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं ॥ अति अपार भव सागर तरहीं ॥
तासु दूत तुम तजि कदराई । ॥ राम हृदय धरि करहु उपाई ॥
अस कहि उमा गृध जब गयऊ ॥ सब के मन अति बिस्मय भयऊ
निज निज बल सब काहू भाषा ॥ पार जान कर संशय राखा ॥
जरठ भयउं अब कहेउ ऋछेशा ॥ नहिं तनु रहा प्रथम बल लेशा ॥
जबहिं त्रिविक्रम भये खरारी ॥ तब मैं तरुण रहा बल भारी ॥

दो॰ बलि बांधत प्रभु बाढेउ सो तनु बरणि न जाइ
उभय घरी महं दीन्ह मैं सात प्रदक्षिणा धाइ ॥

अंगद कहा जाउं मैं पारा । ॥ जिय संशय कछु फिरती बारा ॥
जामवंत कह तुम सब लायक ॥ किमि पठवों सब ही कर नायक
कहा ऋच्छपति सुनु हनुमाना ॥ का चुप साधि रहा बलवाना ॥
पवन तनय बल पवन समाना ॥ बुधि विवेक विज्ञान निधाना ॥
कौन सो काज कठिन जग माहीं ॥ जो नहिं तात होइ तुम पाहीं ॥
राम काज लगि तव अवतारा ॥ सुनि कपि भयउ पर्वताकारा ॥
कनक वरण तन तेज बिराजा ॥ मानहुं अपरगिरिन्ह कर राजा ।
सिंहनाद करि बारहि बारा । ॥ लीलहिं लांघौं जलनिधि खारा
सहित सहाय रावणहिं मारी ॥ आनौं इहां त्रिकूट उपारी ॥
जामवंत मैं पूछौं तोहीं ॥ ॥ उचित शिखावनु दीजे मोहीं ॥
इतना करहु तात तुम जाई ॥ सीतहि देखि कहो सुधि आई
तब निज भुज बल राजिव नयना । कौतुक लागि सङ्ग कपि सयना ।

छं॰ कपि सेन संग संहारि निशिचर राम सीतहि आनिहैं

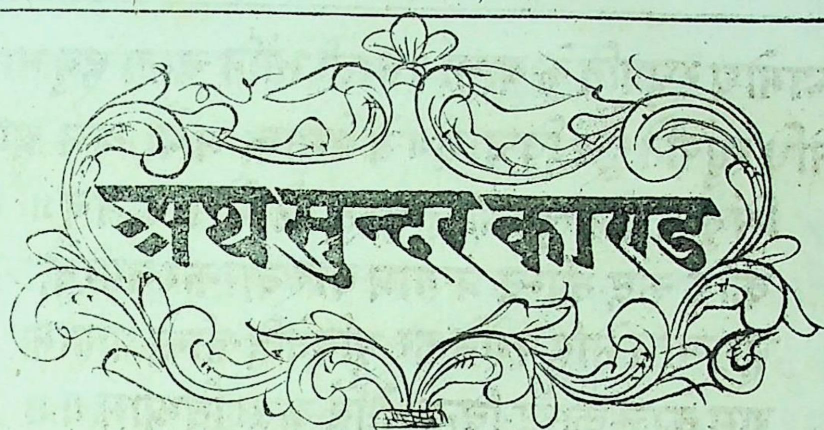
त्रय लोक पावन सुयश सुर मुनि नारदादि बखानि हैं
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावहीं।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं॥

दो· भव भेषज रघुनाथ यश सुनै जो नर अरु नारि॥
तिन कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिपुरारि॥

सो· नीलोत्पल तन श्याम काम कोटि शोभा अधिक
सुनिय तासु गुण ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादनो नाम चतुर्थः सोपानः समाप्तः॥ ४ ॥





श्लोक

शान्तं शाश्वत मप्रमेय मनघं निर्वाण शान्ति प्रदम् । ब्रह्मा शम्भु फणीन्द्र सेव्य मनिशं वेदान्त वेद्यं विभुम् ॥ रामाख्य ञ्जग दीश्वरं सुर गुरुं माया मनुष्यं हरिम् । वंदेहं करुणा करं रघुवरम्भू पाल चूड़ा मणिम् ॥ १ ॥ नान्या स्पृहा रघुपते हृदये स्मदीये सत्यं वदामि च भवान्न खिलान्त रात्मा । भक्तिं प्रयच्छ रघु पुङ्गव निर्भरां मे कामादि दोष रहितं कुरु मान सञ्च ॥ २ ॥ अतुलित बल धामं स्वर्ण शैलाभ देहं । दनुज वन कृशानुं ज्ञानि नामग्रगण्यं ॥ सकल गुण निधानं वानराणामधीशम् ॥ रघुपति वर दूतं वात जातन्नमामि ॥ ३ ॥

चौपाई

जामवन्त के बचन सुहाये । ॥ सुनि हनुमान हृदय अति भाये
तब लगि मोहिं परिखहु भाई ॥ सहि दुख कन्द मूल फल खाई
जब लगि आवौं सीतहि देखी ॥ होइ काज मन हर्ष बिशेषी ॥
अस कहि नाइ सबनि कहँ माथा । चलेव हर्षि हिय धरि रघुनाथा ॥
सिंधु तीर एक सुन्दर भूधर । कौतुक कूदि चढ़े तेहि ऊपर ॥
बार बार रघुबीर सँभारी । ॥ तरके उपवन तनय बल भारी
जेहि गिरि चरण देय हनुमन्ता ॥ सो चलि गयो पताल तुरन्ता ॥

जिमि अमोघ रघुपति के बाना ॥ ताही भांति चला हनुमाना ॥ ॥
जलनिधि रघुपति दूत विचारी ॥ तै मैनाक भयो श्रम हारी ॥ ॥

सो॰ सिंधु वचन सुन कान तुरत उठै मैनाक तब ॥
कपि कंह कीन्ह प्रणाम बार बार कर जोरिके

दो॰ हनूमान तेहि परसि कर पुनि तेहि कीन्ह प्रणाम
राम काज कीन्हे बिना मोहिं कहां विश्राम ॥ ॥

जात पवन सुत देवन देखा ॥ । जानैकह बल बुद्धि विशेषा ॥
सुरसा नाम अहिन की माता ॥ पठयउ आइ कही तें बाता ॥ ॥
आजु सुरन मोहिं दीन्ह अहारा। सुनि हंसि बोला पवन कुमारा ॥
राम काज करि फिरि मैं आवौं ॥। सीता कर सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥
तब तव बदन पैठिहौं आई ॥। सत्य कहौं मोहिं जान दे माई ॥
कवनिहुं यतन देइ नहिं जानो ॥ ग्रससिन मोहिं कहा हनुमाना ॥
योजन भरि तेइ वदन पसारा ॥ कपि तन कीन्ह दुगुण विस्तारा ॥
सोरह योजन मुख तेइं ठयऊ ॥ तुरत पवन सुत बत्तिस भयऊ ॥
जस जस सुरसा वदन बढ़ावा ॥ तासु दुगुण कपि रूप दिखावा
शत योजन तेइ आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवन सुत लीन्हा ॥
वदन पैठि पुनि बाहर आवा ॥ मांगी विदा ताहि सिर नावा ॥
मोहिं सुरन्ह जेहि लागि पठावा ॥ बुधि बल मर्म तोर मैं पावा ॥

दो॰ राम काज सब करिहहु तुम बल बुद्धि निधान
आशिष दे सुरसा चली हर्षि चले हनुमान ॥

निशिचर एक सिंधु महं रहई ॥ करि माया नभ के खग गहई ॥
जीव जन्तु जे गगन उड़ाहीं ॥ । जल विलोकि तिन की परिछाहीं
गहै छांह सक सोन उड़ाई ॥ इहि विधि सदा गगन चर खाई ॥
सोइ छल हनूमान ते कीन्हा ॥ तासु कपट कपि तुरतहि चीन्हा
ताहि मारि मारुत सुत धीरा ॥ ॥ बारिधि पार गयउ मति धीरा ॥

तहां जाइ देखी बन शोभा । ॥ गुञ्जत चंचरीक मधु लोभा ॥
नाना तरु फल फूल सुहाये ॥ ॥ खग मृग वृन्द देखि मन भाये
शैल विशाल देखि एक आगे ॥ तापर कूदि चढेउ भय त्यागे ॥
उमा न कछु कपि की अधिकाई ॥ प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥
गिरि पर चढि लंका तिहिं देखी ॥ कहिन जाइ अति दुर्ग विशेषी ।
अति उतंग जलनिधि चहुं पासा ॥ कनक कोट कर परम प्रकाशा

छं॰ कनक कोट विचित्र मणि कृत सुंदरा जित अति घना
चौहट्ट हाट सुघट्ट वीथी चारु पुर बहु विधि बना ॥
गज वाजि खच्चर निकर पद चर रथ वरूथ निको गनै ॥
वहु रूप निशि चर यूथ अति बल सेन वरणत नहि बनै
बन बाग उपवन वाटिका सर कूप वापी सो हहीं ॥
नर नाग सुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥ ॥
कहुं मल्ल देह विशाल शैल संमान अति बल गर्जहीं ॥
नाना अखारन्ह भिरहिं बहु विधि एक एकन्ह तर्जहीं
करि यत्न भट कोटिन्ह विकट तनु नगर चहुं दिशि रक्षहीं
कहुं महिष मानुष धेनु खर अज खग निशाचर भक्षहीं
इहि लागि तुलसी दास इन की कथा संक्षेपहि कही
रघुबीर शर तीरथ सरित तनु त्यागि गति पैहैं सही ॥

दो॰ पुर रखवारे देखि बहु । कपि मन कीन्ह विचार ॥
अति लघु रूप धरों निशि नगर करों पैसार ॥ ॥

मशक समान रूप कपि धरी ॥ ॥ लंका चले सुमिरि नर हरी ॥
नाम लंकिनी एक निशिचरी ॥ सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥
जानसि नाहिं मर्म शठ मोरा ॥ ॥ मोर अहार जहां लगि चोरा
मुष्टिक एक ताहि कपि हनी ॥ रुधिर बमन धरणी ढन मनी ॥
पुनि संभारि उठी सो लंका ॥ जोरि पाणि करु विनय सशंका

जब रावणहिं ब्रह्म वर दीन्हा ॥ चलत विरंचि कहा मोहिं चीन्हा
विकल होसि जब कपि के मारे। तब जानसि निशिचर संहारे ॥
तात मोर अति पुण्य बहूता ॥ देखेउं नयन राम कर दूता ॥
दो· तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरी तुला एक अंग ॥
तुलै न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत संग
प्रविशि नगर कीजे सब काजा ॥ हृदय राखि कोशल पुर राजा ॥
गरल सुधा रिपु करै मिताई ॥ गोपद सिंधु अनल शित लाई।
गरुड़ सुमेरु रेणु समताही ।॥ राम कृपा करि चितवहिं जाही।
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥
मंदिर मंदिर प्रति कर शोधा ॥ देखे जहं तहं अगणित योधा।
गयउ दशानन मंदिर माहीं॥ अति विचित्र कहि जात सो नाहीं
शयन किये देखा कपि तेही ॥ मंदिर महं न दीख बैदेही ॥
भवन एक पुनि दीख सुहावा॥ हरि मंदिर तहं भिन्न बनावा ॥
राम नाम अंकित गृह सोहा ॥ वरणि न जाइ देखि मन मोहा।
दो· राम नाम अंकित गृह शोभा वरणि न जाइ ॥
नव तुलसी के वृन्द बहु देखि हर्ष कपि राइ
लंका निशिचर निकर निवासा ॥ इहां कहां सज्जन कर बासा ॥
मन महं तर्क करन कपि लागे ॥ ताही समय विभीषण जागे ॥
राम राम तेहिं सुमिरण कीन्हा ॥ हृदय हर्ष कपि सज्जन चीन्हा।
इहि सन हठि करिहों पहिचानी ॥ साधु तें होइ न कारज हानी ॥
विप्र रूप धरि वचन सुनावा। ॥ सुनत विभीषण उठि तहं आवा
करि प्रणाम पूछी कुशलाई। ॥ विप्र कहहु निज कथा बुझाई
की तुम हरि दासन महं कोई ।॥ मोरे हृदय प्रीति अति होई ॥
की तुम दीन बंधु अनुरागी ॥ आयहु मोहिं करन बड़ भागी
दो· तव हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम॥

सुनत युगल तन पुलक अति मगन सुमिरि गुण ग्राम

सुनहु पवन सुत रहनि हमारी ॥ जिमि दशनन्ह महँ जीभ विचारी
तात कबहुं मोहिं जानि अनाथा॥ करिहहिं कृपा भानु कुल नाथा
तामस तन कछु साधन नाहीं ।॥ प्रीति न पद सरोज मन माहीं
अब मोहिं भा भरोस हनुमंता॥ बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा ।॥ तो तुम मोहि दरश हठि दीन्हा
सुनहु विभीषण प्रभु की रीती॥ करहिं सदा सेवक पर प्रीती॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना॥ कपि चंचल सब ही विधि हीना
प्रात लेइ जो नाम हमारा ॥ ॥ ता दिन ताहि न मिलै अहारा

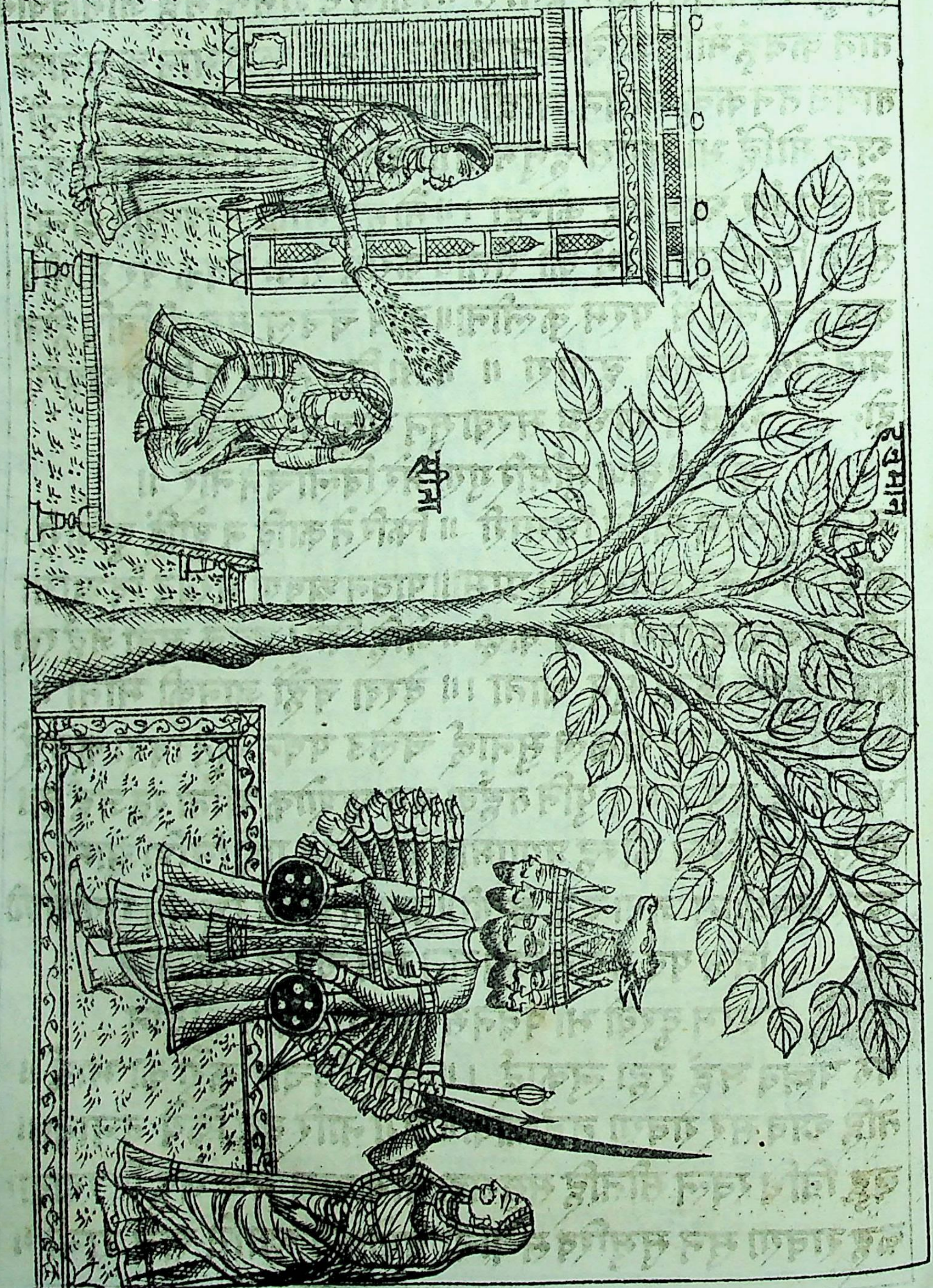
दो॰ अस मैं अधम सखा सुन मोहू पर रघुबीर ॥
कीन्ही कृपा सुमिरि गुण भरे बिलोचन नीर ॥

जानत हूं अस स्वामि बिसारी ॥ फिरि ते काहे न होहिं दुखारी।
इहि विधि कहत राम गुण ग्रामा॥ पावन श्रवण सुखद बिश्रामा
पुनि सब कथा विभीषण कही ॥ जेहि विधि जनक सुता जहँ रही
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता ।॥ देखा चहौं जानकी माता ॥
युक्ति विभीषण सकल सुनाई चलेउ पवन सुत बिदा कराई
धरि सोइ रूप गयउ पुनि तहँवा बन अशोक सीता रह जहँवा।
देखि मनहिं मन कीन्ह प्रणामा॥ बैठे बीति गई निशि यामा ॥
कृश तन शीस जटा इक बेणी॥ जपति हृदय रघुपति गुण श्रेणी

दो॰ निज पद नयन दिये मन राम चरण महँ लीन
परम दुखी भा पवन सुत निरखि जानकी दीन

तरु पल्लव महँ रहा लुकाई ।॥ करै विचार करौं का भाई॥
तेहि अवसर रावण तहँ आवा॥ संग नारि बहु किये बनावा॥
बहु विधि खल सीतहि समुझावा साम दाम भय भेद दिखावा।
कह रावण सुन सुमुखि सयानी मंदोदरी आदि सब रानी ॥

रावण को जानकी जी का साम दाम दण्ड भेदादि अनेक प्रकार की भय दिखलाना और हनूमान जी के सूक्ष्म रूप धर वृक्ष पर से श्री रामचन्द्र की मुद्रिका डाल सीता जी को दंडवत कर सम्पूर्ण वृत्तान्त कहना



तब अनुचरी करौं पन मोरा॥ एक बार बिलोकु मम ओरा॥
तृण धरि ओट कहति वैदेही॥ सुमिरि अवधपति परम सनेही॥
सुनु दशमुख खद्योत प्रकाशा। कबहूं कि नलिनी करहि विकाशा॥
असमन समुझु कहति जानकी। खलसुधि नहिं रघुबीर बाण की॥
शठ सूने हरि आनेसि मोहीं॥ अधम निलज्ज लाज नहिं तोहीं॥
दो॰ आपुहि सुनि खद्योत सम रामहिं भानु समान॥
परुष वचन सुनि काढ़ि असि बोला अति रिसिआन॥
सीता तैं मम कृत अपमाना॥ काटौं तव शिर कठिन कृपाना॥
नाहित सपदि मानु मम बानी। सुमुखि होत नत जीवन हानी॥
श्याम सरोज दाम सम सुंदर॥ प्रभु भुज करि कर सम दशकंधर॥
सो भुज कंठ कित तव असि घोरा॥ सुनु शठ अस प्रमाण पन मोरा॥
चन्द्रहास हरु मम परितापा॥ रघुपति विरह अनल संतापा॥
शीतल निशित वहसि वरधारा॥ कह सीता हरु मम दुख भारा॥
सुनत वचन पुनि मारण धावा॥ मयतनया कहि नीति बुझावा॥
कहेसि सकल निशिचरी बुलाई॥ सीतहि त्रास देखावहु जाई॥
मास दिवस महँ कहा न माना॥ तौ मैं मारब काढ़ि कृपाना॥
दो॰ भवन गयउ दशकंध तब इहां निशाचरि वृन्द॥
सीतहि त्रास दिखावहीं धरहिं रूप बहु मन्द॥
त्रिजटा नाम राक्षसी एका॥ राम चरण रत निपुण विवेका॥
सबहि बुलाइ सुनायसि सपना॥ सीतहि सेइ करौ हित अपना॥
सपने बानर लंका जारी॥ यातुधान सेना सब मारी॥
खर आरूढ़ नगन दशशीसा॥ मुंडित शिर खंडित भुज बीसा॥
इहि विधि सो दक्षिण दिशि जाई॥ लंका मनहुं विभीषण पाई॥
नगर फिरी रघुबीर दुहाई॥ तब प्रभु सीतहि बोलि पठाई॥
यह सपना मैं कहौं विचारी॥ होइहि सत्य गये दिन चारी॥

तासु वचन सुन के सब डरीं ॥ जनक सुता के चरणन परीं ॥

दो० जहं तहं गईं सकल तब सीता के मन सोच
मास दिवस बीते मोहिं मारिहि निशिचर पोच

त्रिजटा सन बोली कर जोरी ॥ मातु विपति संगिनि तैं मोरी ॥
तजौं देह करु बेगि उपाई ॥ दुसह विरह अब सहा न जाई ॥
आनि काठ रचि चिता बनाई । मातु अनल तुम देहु लगाई ॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी । सुनै को श्रवण शूल सम बानी ।
सुनत वचन पद गहि समुझावा । प्रभु प्रताप बल सुयश सुनावा ।
निशि न अनल मिलु राजकुमारी अस कहि सो निज भवन सिधारी
कह सीता विधि भा प्रतिकूला ॥ मिलै न पावक मिटै न शूला ॥
देखि यत प्रगट गगन अंगारा । अवनि न आवत एको तारा ॥
पावक मय शशि श्रवत न आगी मानहुं मोहिं जानि हत भागी ।
सुनहुं विनय मम विटप अशोका सत्य नाम करु हरु मम शोका ॥
नूतन किसलय अनल समाना देहु अगिनि मम करहु निदाना ।
देखि परम विरहा कुल सीता ॥ सो क्षण कपिहि कल्प सम बीता

सो० कपि करि हृदय विचार दीन्ह मुद्रिका डारि तब
जनु अशोक अंगार । दीन्ह हर्ष उठि कर गहेउ

तब देखी मुद्रिका मनोहर ॥ । राम नाम अंकित अति सुंदर ।
चकित चितै मुद्रिक पहिचानी । हर्ष विषाद हृदय अकुलानी ।
जीति को सकै अजय रघुराई ॥ माया ते असरची न आई ॥
सीता मन विचार कर नाना ॥ मधुर वचन बोले हनुमाना ॥
रामचंद्र गुण वरणन लागे ॥ सुनतहि सीता कर दुख भागे ।
लागी सुनै श्रवण मन लाई ॥ आदि हिते सब कथा सुनाई ॥
श्रवणामृत जिहि कथा सुनाई कहि सो प्रगट होत किन भाई ॥
तब हनुमंत निकट चलि गयउ, फिरि बैठी मन विस्मय भयउ

राम दूत मैं मातु जानकी ॥ ॥ सत्य शपथ करुणानिधानकी
यह मुद्रिका मातु मैं आनी ॥ दीन्ह राम तुम कहं सहिदानी
नर वानरहि संग कहु कैसे ॥ कही कथा संगति भइ जैसे
दो॰ कपि कर वचन सप्रेम सुनि उपजा मन विश्वास
जाना मन क्रम वचन यह कृपासिंधु कर दास॥
हरिजन जानि प्रीति अति बाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि ठाढ़ी
बूड़त विरह जलधि हनुमाना ॥ भयहु तात मो कहं जलयाना
अब कहु कुशल जाउं बलिहारी अनुज सहित सुख भवन खरारी
कोमल चित कृपाल रघुराई ॥ कपि केहि हेतु धरी निठुराई
सहज बानि सेवक सुख दायक। कबहुंक सुधि सुमिरत रघुनायक
कबहुं नयन मम शीतल ताता ॥ हो इहि निरखि श्याम मृदु गाता
वचन न आव नयन भरि वारी। अहो नाथ मोहिं निपट बिसारी
देखि विरह व्याकुल अति सीता बोलेउ कपि मृदु वचन विनीता
मातु कुशल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सो कृपा निकेता
जननी जनि मानहु मन ऊना ॥ तुम तें प्रेम राम कहं दूना ॥
दो॰ रघुपति के संदेश अब सुन जननी धरि धीर ॥
अस कहि कपि गद्गद भये भरे विलोचन नीर
राम वियोग कहा सुन सीता॥ मो कहं सकल भयउ विपरीता
नूतन किशलय मनहु कृशानू। काल निशा सम निशि शशि भानू
कुवलय विपिन कुन्त बन सरिसा वारिद तप्त तेल जनु बरिसा ॥
जेहि तरु रहौं करत सो पीरा ॥ उरग श्वास सम त्रिविध समीरा
कहे तें नहिं दुख घटि कछु होई काहि कहौं यह जान न कोई।
तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा ॥ जानत प्रिया एक मन मोरा॥
सो मन रहत सदा तोहि पाहीं। जानु प्रीति रस इतने माहीं।
प्रभु संदेश सुनत वैदेही ॥ मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही।

कह कपि हृदय धीर धरु माता॥ सुमिरि राम सेवक सुखदाता
उर आनहु रघुपति प्रभुताई॥ सुनि मम वचन तजहु विकलाई
दो· निशिचर निकर पतंग सम रघुपति बाण कृशानु
जननि हृदय निज धीर धरु जरे निशाचर जानु॥
जो रघुबीर होत सुधि पाई॥ करते नहिं बिलंब रघुराई॥
राम बाण रवि उदय जानकी॥ तम वरूथ कहं यातुधानकी
अबहिं मातु मैं जातु लिवाई॥ प्रभु आय सुनहिं राम दोहाई
कछुक दिवस जननी धरु धीरा॥ कपिन्ह सहित ऐहैं रघुबीरा।
निशिचर मारि तुमहिं लै जैहैं॥ तिहु पुर नारदादि यश गैहैं॥
हैं सुत कपि सब तुम्हैं समाना॥ यातुधान भट अति बल बाना
मोरे हृदय परम संदेहा॥ ॥सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा
कनक भूधरा कार शरीरा॥ ॥समर भयंकर अति बल बीरा
सीता मन भरोस तब भयऊ॥ पुनि लघु रूप पवन सुत लयऊ
दो· सुनि माता शाखा मृगहि नहिं बल बुद्धि विशाल
प्रभु प्रताप ते गरुड़ही खाइ परम लघु व्याल॥
मन संतोष सुनत कपि बानी॥ तन अति पुलक नयन ढरु पानी
भक्ति प्रताप तेज बल सानी॥ आशिष दीन्ह राम प्रिय जानी
अजर अमर गुण निधि सुत होहू॥ करहु सदा रघुनायक छोहू।
करहिं कृपा प्रभु अस सुनि काना॥ निर्भर प्रेम मगन हनुमाना॥
बार बार नावहिं पद शीसा॥ बोले वचन जोरि कर कीशा
अब कृत कृत्य भयउँ मैं माता॥ आशिष तव अमोघ विख्याता
सुनिय मातु मोहिं अतिशय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा
सुन सुत करैं बिपिन रखवारी॥ परम सुभट रजनी चर भारी
तिन कर भय माता मोहिं नाहीं। जो तुम सुख मानहु मन माहीं
दो· देखि बुद्धि बल निपुण कपि कहा जानकी जाहु॥

रघुपति चरण हृदय धरि तात मधुर फल खाहु

चला नाइ शिर पैठेउ बागा ॥ फल खाये तरु तोरन लागा ॥
रहे तहां बहु भट रख वारे ॥ कछु मारे कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी ॥ तेइ अशोक बाटिका उजारी ॥
खाएसि फल अरु विटप उपारे । जहं तहं पटकि पटकि भट मारे
सुनि रावण पठये भट नाना ॥ तिन्हहिं देखि गरजा हनुमाना ॥
सब रजनी चर कपि संहारे ॥ गये पुकारत कछु अध मारे ॥
पुनि पठवा तेइ अक्षय कुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ॥
आवत देखि विटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महा धुनि गर्जा ।

दो० कछु मारेसि कछु मर्देसि कछुक मिलायसि धूरि
कछु पुनि जाइ पुकारे । प्रभु मर्कट बल भूरि ॥

सुनि सुत बध लंकेश रिसाना । पठवा मेघ नाद बल वाना ॥
मारेसि जनि सुत बांधेसि ताही । देखों कीश कहां कर आही ॥
चला इन्द्र जित अतुलित योधा । बंधु बधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
कपि देखा दारुण भट आवा । कट कटाइ गरजा अरु धावा ॥
अति विशाल तरु एक उपारा । विरथ कीन्ह लंकेश कुमारा ॥
रहे महा भट ताके संगा ॥ गहि गहि कपि मर्देसि निज अंगा ॥
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । भिरे युगल मानहुं गज राजा ॥
मुष्टिक मारि चढ़ा तरु जाई । ताहि एक क्षण मूर्छा आई ॥
उठि बहोरि कीन्हेसि बहु माया । जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥

दो० ब्रह्म अस्त्र तेइ साधई । कपि मन कीन्ह विचार
जौन ब्रह्म शर मानऊं । महिमा मिटै अपार ॥

ब्रह्म बाण ते कपि कहं मारा ॥ पर तिहु बार कटक संहारा ॥
तेइ जाना कपि मूर्छित भयऊ ॥ नाग फांस बांधे सि ले गयऊ ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी । भव बंधन काटहिं नर ज्ञानी ॥

तासु दूत बंधन तर आवा ।। प्रभु कारज लगि आपु बँधावा
कपि बंधन सुनि निसिचर धाये। कौतुक लागि सभा लै आये ।।
दसमुख सभा दीख कपि जाई ।। कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई
कर जोरे सुर दिसप विनीता ।। भृकुटि बिलोकहिं सकल सभीता
देखि प्रताप न कपि मन संका ।। जिमि अहि गण महँ गरुड़ असंका

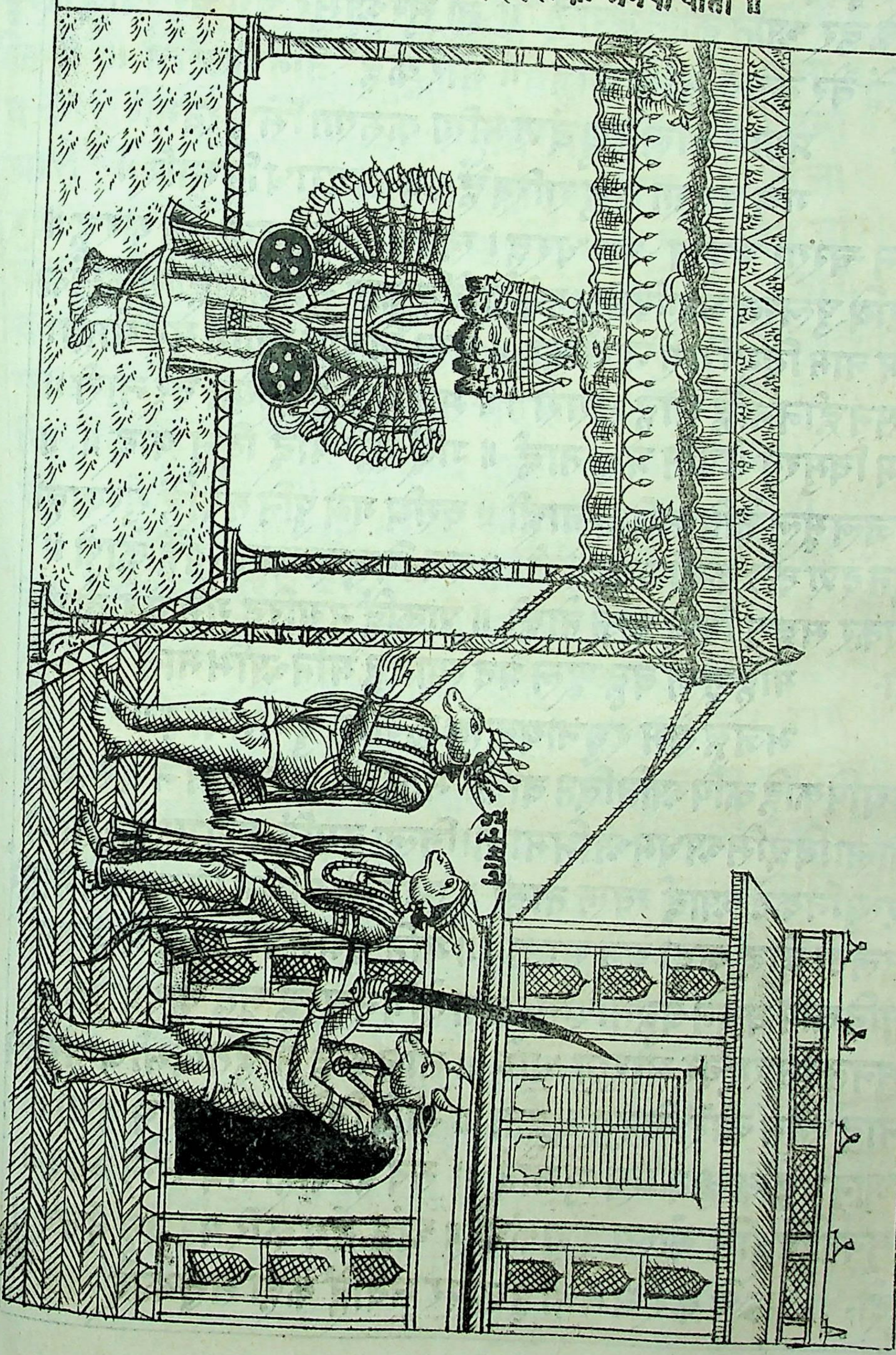
दो· कपिहि बिलोकि दसानन बिहँसि कहेसि दुर्बाद
सुत बध सुरति कीन्ह पुनि उपजा हृदय विषाद

कह लंकेस कवन तैं कीसा ।। केहि के बल घाले सि बन खीसा।
की धौं श्रवण सुने सि नहिं मोही ।। देखौं अति असंक सठ तोही ।।
मारेसि निसिचर केहि अपराधा। कहु सठ तोहि न प्राण की बाधा
सुनु रावण ब्रह्मांड निकाया ।। पाइ जासु बल विरचित माया ।।
जाके बल विरंचि हरि ईशा ।। पालत हरत सृजत दससीसा
जा बल सीस धरे सहसानन ।। अंड कोश समेत गिरि कानन ।।
धरे जो विविध देह सुर त्राता ।। तुम से सठ न सिखावन दाता
हर को दंड कठिन जेइ भंजा ।। तोहि समेत नृप दल मद गंजा
खर दूषण विराध अरु बाली। बधे सकल अतुलित बल शाली

दो· जाके बल लव लेश तें । जितेउ चराचर झारि
तासु दूत हौं जाहि की। हरि आनेहु प्रिय नारि

जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताई ।। सहस बाहु सन परी लराई ।।
समर बालि सन करि यश पावा। सुनि कपि बचन बिहँसि बहरावा
खायउँ फल मोहिं लागी भूखा। कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा ।।
सब के देह परम प्रिय स्वामी ।। मारहिं मोहिं कुमारग गामी ।।
जिन्ह मोहिं मारा तेहि मैं मारा ।। तेहि पर बांधेउ तनय तुम्हारा
मोहिं न कछु बांधे कर लाजा। कीन्ह चहौं निज प्रभु कर काजा
विनती करौं जोरि कर रावन ।। सुनहु मान तजि मोर सिखावन

मेघनाद ने श्री हनुमान जी को ब्रह्मफांस से बांध कर रावण की सभा में ले जाना और हनुमान जी और रावण की अनेक वार्ता ॥



देखहु तुम निज हृदय विचारी। भ्रमतजि भजहु भक्त भय हारी
जाके डर अति काल डेराई ॥ जो सुर असुर चरा चर खाई ॥
तासों बैर कबहुं नहिं कीजे ॥ मोर कहे जानकी दीजे ॥ ॥
दो॰ प्रणत पाल रघु बंश मणि करुणा सिंधु खरारि
गये शरण प्रभु राखि हैं तव अपराध बिसारि ॥
राम चरण पंकज उर धरहु। लंका अचल राज तुम करहू ॥
ऋषि पुलस्त्य यश विमल मयंका तेहि कुल महं जनि होसि कलंका
राम नाम बिनु गिरा न सोहा ॥ देख विचारि त्यागि मद मोहा।
बसन हीन नहिं सोह सुरारी ।॥ सब भूषण भूषित वर नारी ॥
राम विमुख संपति प्रभु ताई ॥ गई रही पाई बिनु पाई ॥ ॥
सजल मूल जेहि सरिता नाहीं ॥ वरषि गये पुनि तबहिं सुखाहीं
सुन दश कंठ कहौं प्रण रोपी ॥ राम विमुख त्राता नहिं कोपी ॥
शंकर सहस विष्णु अज तोही ॥ शकहिं न राखि राम कर द्रोही
दो॰ मोह मूल बहु शूल मद त्यागहु मति अभि मान
भजहु राम रघुनायक हि कृपा सिंधु भग वान ॥
यद्यपि कहि कपि अति हित बानी। भक्ति विवेक विरति नय सानी।
बोला विहसि अधम अभिमानी। मिला हमहिं कपि गुरु बड़ ज्ञानी
मृत्यु निकट आई खल तोहीं ॥ लागेसि अधम सिखावन मोहीं
उलटा होइ कहा हनु माना ।॥ मति भ्रम तोरि प्रगट मैं जाना
सुनि कपि वचन बहुत रिसिआना वेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना ॥
सुनत निशाचर मारण धाये ॥ सचि वन्ह सहित विभीषण आये
नाइ शीस करि विनय बहूता ॥ नीति विरोधन मारिय दूता ॥
आन दंड कछु करिय गुसांई ॥ सब ही कहा मंत्र भल भाई।
सुनत विहसि बोला दश कंधर॥ अंग भंग करि पठ वहु बंदर ।
दो॰ कपि कर ममता पूंछ पर सबहिं कहा समुझाइ

तेल बोरि पट बांधि पुनि। पावक देहु लगाइ ॥

पूंछ हीन बंदर जब जाइहि ॥ तब शठ निज नाथहि लै आइहि
जिन्ह की कीन्हसि बहुत बड़ाई। देखौं मैं तिन्ह की प्रभुताई ॥
वचन सुनत कपि मन मुसुकाना। भइ सहाय शारद मैं जाना ॥
यातु धान सुनि रावण वचना। लागे रचने मूढ सोइ रचना ॥
रहा न नगर बसन घृत तेला ॥ बाढ़ी पूंछ कीन्ह कपि खेला ॥
कौतुक कहँ आये पुर बासी ॥ मारहिं चरण करहिं बहु हांसी
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी ॥ नगर फेरि पुनि पूंछ प्रजारी ॥
पावक जरत देखि हनुमन्ता। भयउ परम लघु रूप तुरन्ता।
निबुक चढ़ेउ पुनि कनक अटारी भईं सभीत निशाचर नारी॥

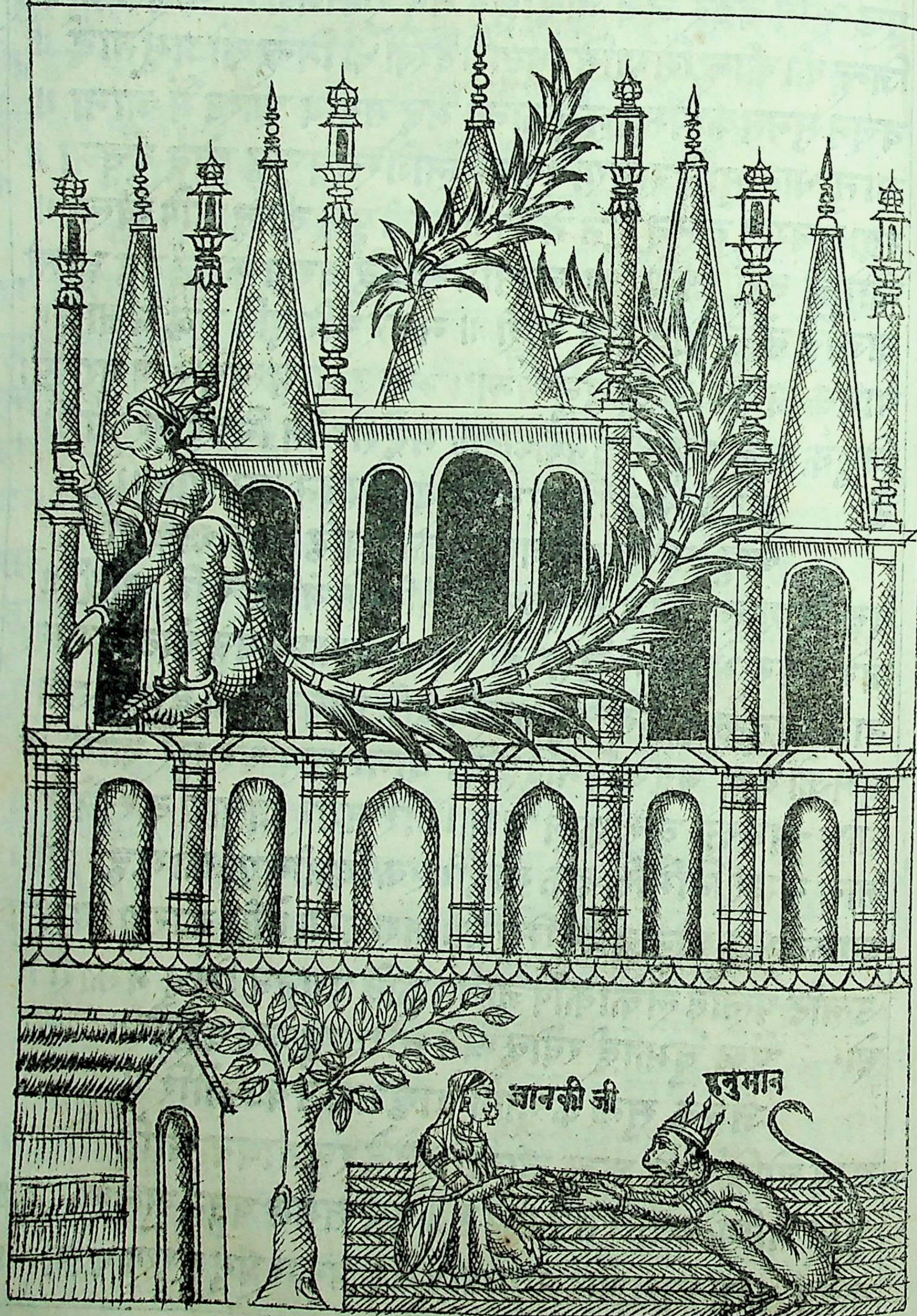
दो॰ हरि प्रेरित तेहि अवसर बहीं पवन उन चास॥
अट्टहासि करि गरजा। कपि बढ़ि लाग अकाश॥

देह बिशाल परम हरुआई। मंदिर ते मंदिर चढ़ि जाई ॥
जरै नगर भे लोग बेहाला ॥ लपट झपट बहु कोट कराला
तात मातु सब करहिं पुकारा॥ इहि अवसर को हमहि उबारा
हम जो कहा यह कपि नहिं होई। बानर रूप धरे सुर कोई ॥
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा। जरै नगर अनाथ कर जैसा॥
जारा नगर निमिषि इक माहीं। एक विभीषण को गृह नाहीं।
जाकर भक्त अनल जेइ सिरजा। जरा न सो तेहि कारण गिरिजा
उलटि पलटि लंका कपि जारी॥ कूदि परा तब सिंधु मझारी ॥

दो॰ पूंछ बुझाई खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि॥
जनक सुता के आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥

मातु मोहिं दीजे कछु चीन्हा॥ जैसे रघु नायक मोहिं दीन्हा॥
चूड़ा मणि उतारि तब दयऊ॥ हर्ष समेत पवन सुत लयऊ॥
कहेहु तात अस मोर प्रणामा॥ सब प्रकार प्रभु पूरण कामा ॥

हनुमानजी को लङ्का फूकना और जानकी जी के निकट जाय चूड़ामणि ले श्रीरामचन्द्र के निकट जाना



दीन दयाल बिरद संभारी ॥ हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
तात शक्र सुत कथा सुनायहु ॥ बाण प्रताप प्रभुहि समुझायहु
मास दिवस महँ नाथ न आवैं ॥ तौ पुनि मोहिं जियत नहिं पावैं।
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना तुमहू तात कहत हहु जाना।
तुमहिं देखि शीतल भइ छाती पुनि मो कहँ सोइ दिन सोइ राती
दो॰ जनक सुतहिं समुझाइ करि बहु बिधि धीरज दीन्ह
चरण कमल सिर नाइ करि गमन राम पहँ कीन्ह ॥
चलत महा धुनि गरजेउ भारी ॥ गर्भ स्रवेउ सुनि निशिचर नारी
लांघि सिंधु इहि पारहिं आवा। शब्द किलकिला कपिन्ह सुनावा।
हर्षे सब बिलोकि हनुमाना। ॥ नूतन जन्म कपिन तब जाना॥
मुख प्रसन्न तनु तेज बिराजा ॥ कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा॥
मिले सकल अति भये सुखारी॥ तलफत मीन पाव जनु बारी॥
चले हर्षि रघुनायक पासा ।॥ पूछत कहत नवल इति हासा
तब मधुबन भीतर सब आये ॥ अंगद सहित मधुर फल खाये
रखवारे तब गरजन लागे ।॥ मुष्टि प्रहार करत सब भागे।
दो॰ जाइ पुकारे सकल ते बन उजार युव राज॥
सुनि सुग्रीव हर्ष कपि करि आये प्रभुकाज॥
जो न होत सीता सुधि पाई ॥ मधुबन के फल को सक खाई
इहि बिधि मन बिचार कर राजा। आइ गये कपि सहित समाजा।
आइ सबहिं नावा पद शीशा। मिले सबन्हि अति प्रेम कपीशा
पूछेउ कुशल कुशल पद देखी। राम कृपा भा काज बिशेखी॥
नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना ॥ राखे सकल कपिन्ह कर प्राना
सुनि सुग्रीव बहुरि उठि मिलेउ। कपिन्ह सहित रघुपति पै चलेउ।
राम कपिन्ह कहँ आवत देखा॥ किये काज उर हर्ष बिशेखा।
फटिक शिला बैठे दोउ भाई ॥ परे सकल कपि चरण न जाई

दो॰ प्रीति सहित भेटे सकल रघुपति करुणा पुञ्ज ॥
पूछेउ कुशल नाथ अब कुशल देखि पद कञ्ज

जाम वन्त कह सुन रघु राया ॥ जापर नाथ करहु तुम दाया ॥
ताहि सदा शुभ कुशल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न तेहि ऊपर॥
सो विजयी विनयी गुण सागर। तासु सुयश तिहु लोक उजागर
प्रभु की कृपा भयउ सब काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू॥
नाथ पवन सुत कीन्ह जो करणी सो मुख लाखहु जाइ न बरणी
पवन तनय के चरित सुहाये। जाम वंत रघुपति हि सुनाये॥
सुनि कृपाल उठि हृदय लगाये जानि सुभट रघुपति मन भाये।
कहहु तात केहि भांति जानकी रहति करति रक्षा स्व प्राण की

दो॰ नाम पाहरु दिवस निशि ध्यान तुम्हार कपाट
लोचन निज पद यंत्रिका प्राण जाहिं केहि बाट ॥

चलती बार कह्यो मोहिं हेरी ॥ सुरत कराय शक्र सुत केरी ॥
चलत मोहिं चूड़ामणि दीन्ही रघुपति हृदय लाइ लेहि लीन्ही
नाथ युगल लोचन भरि वारी वचन कहेउ कछु जनक कुमारी
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरणा दीन बंधु प्रण तारति हरणा ॥
मन क्रम वचन चरण अनुरागी केहि अपराध नाथ मोहिं त्यागी
अवगुण एक मोर मैं जाना ॥ बिछुरत प्राण न कीन्ह पयाना।
नाथ सो नयनन्ह कर अपराधा निसरत प्राण करहिं हठि बाधा।
विरह अनल तन तूल समीरा। स्वास जरे क्षण मांह शरीरा।
नयन श्रवे जल निज हित लागी जरे न पाव देह विरहागी ॥
सीता की अति विपति विशाला बिना कहे भल दीन दयाला।

दो॰ निमिषि निमिषि करुणाय तन जाहिं कल्प शत बीति
वेगि चलिय प्रभु आनिये भुज बल खल दल जीति

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना भरि आये दोउ राजिव नयना।

वचन काय मन मम गति जाही। सपनेहुं विपति कि चाहिय ताही
कह हनुमान विपति प्रभु सोई। जब तव सुमिरण भजन न होई
केतिक वात प्रभु यातु धान की॥ रिपुहि जीत आनिये जानकी।
सुनि कपि तोहि समान उपकारी नहिं कोउ सुर नर मुनि तनु धारी
प्रति उपकार करौं का तोरा ॥ सन मुख होइ न सकत मन मोरा
सुन कपि तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउं करि विचार मन माहीं
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता लोचन नीर पुलक अति गाता।
दो. सुनि प्रभु वचन विलोकि मुख हृदय हर्ष हनुमन्त
चरण परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवन्त॥
बार बार प्रभु चहत उठावा॥ प्रेम मगन तेहि उठत न भावा
प्रभु पद पंकज कपि कर सीसा। सुमिरि सो दशा मगन गौरीशा
सावधान मन कर पुनि शंकर। लागे कहन कथा अति सुंदर
कपि उठाय प्रभु हृदय लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा
कहु कपि रावण पालित लंका केहि विधि दहेउ दुर्ग अति बंका
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना॥ बोले वचन विगत अभिमाना
शाखा मृग कै बड़ि मनु साई॥ शाखा ते शाखा पर जाई॥
लांघि सिंधु हाटक पुर जारा निशि चर गण बधि विपिन उजारा
सो सब तव प्रताप रघुराई॥ नाथ न कछुक मोरि प्रभुताई
दो. ताकहं प्रभु कुछ अगम नहिं जापर तुम अनुकूल
तव प्रताप बड़वानलहिं जारि सकै खल तूल ॥
सुनत वचन प्रभु बहु सुख माना। मन क्रम वचन दास निज जाना
मांग वचन सुत वर अनुकूला ॥ देउं आजु तुम कहं सुख मूला
नाथ भक्ति तव सुख दायिनि ॥ देहु कृपा करि शिव अनपायनि
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी॥ एव मस्तु तव कहेउ भवानी।
उमा राम सुभाव जिन्ह जाना ॥ ताहि भजन तजि भाव न आना

यह संवाद जासु उर आवा ॥ रघुपति चरण भक्ति सेइ पावा॥
सुनि प्रभु वचन कहैं कपि वृन्दा।जय जय जय कृपाल सुख कन्दा।
तब रघुपति कपिपतिहि बुलावा कहा चलै कर करहु बनावा ॥
अब विलंब केहि कारण कीजे। तुरत कपिन कहं आयसु दीजे॥
कौतुक देखि सुमन बहु बर्षे ॥ नभते भवन चले सुर हर्षे ॥
दो॰ कपि पति बेगि बुलायऊ आये यूथप यूथ ॥
नाना वरण अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥
प्रभु पद पंकज नावहिं शीशा। गरजहिं भालु महा बल कीशा॥
देखी राम सकल कपि सेना ॥ चितव कृपा करि राजिव नैना॥
राम कृपा बल पाइ कपिंदा ॥ भये पच्छ युत मनहुं गिरिंदा ॥
हर्षि राम तब कीन्ह पयाना ॥ शकुन भये सुंदर शुभ नाना ॥
जासु सकल मंगल मय नीती ॥ तासु पयान शकुन यह नीती ॥
प्रभु पयान जाना वैदेही ॥॥ फरके बाम अंग शुभ तेही ॥
जोजो शकुन जानकिहि होई॥असकुन भयउ रावणहिं सोई।
चला कटक को वरणै पारा ॥ गरजहिं बानर भालु अपारा ॥
नख आयुध गिरि पादपधारी। चले गगन महं इच्छा चारी ॥
केहरि नाद भालु कपि करहीं ॥ डग मगाहि दिग्गज चिक्करहीं ॥
छं॰ चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खर भरे
मन हरष दिन कर सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे।
कट कटहिं मरकट विकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं
जय राम प्रबल प्रताप कोशल नाथ गुण गण गावहीं ॥
सक सहि न भार अपार अहि पति बार बार विमोहई ॥
गहि दशन पुनि पुनि कमठ पीठ कठोर सो किम सोहई
रघुवीर रुचिर पयान प्रस्थित जानि परम सुहावनी ॥
जनु कमठ खप्पर सर्प राज सो लिखत अवि चल पावनी

दो॰ इहि विधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ॥ ॥
जहं तहं लागे खान फल भालु विपुल कपिबीर

उहां निशाचर रहहिं सशंका ॥ जब ते जारि गयउ कपि लंका ॥
निज निज गृह सब करें विचारा ॥ नहिं निशिचर कुल केर उबारा ॥
जासु दूत बल बरणि न जाई ॥ तेहि आये पुर कवन भलाई ॥
अति सभीत सुनि पुर जन बानी ॥ मन्दोदरी हृदय अकुलानी ॥
रही जोरि कर पति पद लागी ॥ बोली वचन नीति रस पागी ॥
कन्त कर्ष हरि सन परि हरहू ॥ मोर कहा अति हित चित धरहू ॥
समुझत जासु दूत की करनी ॥ स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥
तासु नारि निज सचिव बुलाई ॥ पठवहु कन्त जो चहहु भलाई ॥
तव कुल कमल विपिनि दुखदाई ॥ सीता शीत निशा सम आई ॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे ॥ हित न तुम्हार शंभु अज कीन्हे

दो॰ राम बाण अहि गण सरिस निकर निशाचर भेक
जो लगि ग्रसत न तबहि लगि यतन करहु तजि टेक

श्रवण सुनत शठ ताकरि बानी ॥ बिहंसा जगत विदित अभिमानी
सभय सुभाव नारि कर सांचा ॥ मंगल मांह अमंगल राचा ॥
जो आवे मर कट कर काई ॥ जियहिं विचारे निशिचर खाई
कंपहिं लोक प जाके त्रासा । ॥ तासु नारि सभीत बडि हासा
अस कहि विहंसि ताहि उर लाई ॥ चलेउ सभा ममता अधिकाई ॥
मन्दोदरी हृदय कर चीता । ॥ भयो कन्त पर बिधि विपरीता
बैठेउ सभा खबरि अस पाई ॥ सिंधु पार सेना सब आई ॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू ते सब हंसे मौन करि रहहू ॥
जितेहु सुरा सुर तब श्रम नाहीं ॥ नर वानर केहि लेखे माहीं ॥

दो॰ सचिव वैद्य गुरु तीनि जो प्रिय बोलहिं भय आश
राज धर्म तन तीन कर होइ वेगही नाश ॥

सोइ रावण कहं बनी सहाई ॥ अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई
अवसर जानि बिभीषण आवा॥ भ्राता चरण शीस तेहि नावा।
पुनि सिर नाइ बैठि निज आसन॥ बोला वचन पाइ अनुशासन
जो कृपाल पूंछहु मोहिं बाता॥ मति अनु रूप कहब मैं ताता
जो आपन चाहो कल्याना ।॥ सुयश सुमति शुभ गति सुख नाना
तौ परिनारि लिलार गुसांई ॥ तजौ चौथि चंदा की नांई ॥
चौदह भवन एक पति होई ॥ भूत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई ॥
गुण सागर नागर नर जोऊ ॥ अलप लोभ भल कहै न कोऊ
दो॰ काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक कर पंथ॥
सब परि हरि रघु बीर पद भजहु कहहिं सद ग्रंथ
तात राम नहिं नर भूपाला ॥ भुवनेश्वर कालहु के काला।
ब्रह्म अना मय अज भग वंता॥ व्यापक अजित अनादि अनंता
गो द्विज धेनु देव हित कारी ॥ कृपा सिंधु मानुष तनु धारी॥
जन रंजन भंजन खल भ्राता॥ वेद धर्म रक्षक सुर त्राता ॥
ताहि बैर तजि नाइय माथा ॥ प्रण तारति भंजन रघुनाथा
देहु नाथ प्रभु कहं बैदेही ।॥ भजहु राम बिनु काम सनेही॥
शरण गये प्रभु ताहु न त्यागा ॥ विश्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा
जासु नाम त्रय ताप नशा वन ॥ सोइ प्रभु प्रगट समुझ जिय रावन
दो॰ बार बार पद लागों विनय करों दश शीश ॥
परि हर मान मोह मद भजहु कोशला धीश ॥
सुनि पुलस्त्य निज शिष्य सन कहि पठई यह बात
तुरत सो मैं तुम सन कही पाइसु अवसर तात।
माल वंत अति सचिव सयाना॥ तासु वचन सुनि अति सुख माना
तात अनुज तव नीति विभूषण सो उर धरहु जो कहत विभीषण
रिपु उत करष कहत शठ दोऊ। दूर न करहु इहां ते कोऊ ॥

माल्यवंत गृह गयउ बहोरी ॥ ॥ कहेउ विभीषण पुनि कर जोरी
सुमति कुमति सब के उर रहई ॥ नाथ पुराण निगम अस कहई ॥
जहां सुमति तहं संपति नाना ॥ जहां कुमति तहं विपति निदाना ॥
तव उर कुमति बसी विपरीती ॥ हित अनहित जानत रिपु प्रीती
कालरात्रि निशिचर कुल केरी ॥ तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥
दो॰ तात चरण गहि मांगों । राखहु मोर दुलार ॥
सीता देहु राम कहं अति हित होइ तुम्हार ॥
बुध पुराण श्रुति संमति बानी ॥ कही विभीषण नीति बखानी ॥
सुनत दशानन उठा रिसाई ॥ खल तोहि मृत्यु निकट चलि आई
जिअसि सदा शठ मोर जिआवा ॥ रिपु कर पक्ष सदा तोहि भावा ॥
कहसि न खल अस को जग माहीं ॥ भुज बल जेहि जीते हम नाहीं ॥
मम पुर बसि तपसी सन प्रीती ॥ शठ मिलु जाहि तिन्हहि कहु नीती ॥
अस कहि कीन्हेसि चरण प्रहारा ॥ अनुज गहे पद बारहि बारा ॥
उमा संत कै इहै बड़ाई ॥ ॥ मंद करत जो करैं भलाई ॥
तुम पितु सरिस भले मोहिं मारा ॥ राम भजे हित होइ तुम्हारा ॥
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ ॥ सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥
दो॰ राम सत्य संकल्प प्रभु । सभा काल बस तोरि
मैं रघुनायक शरण अब जाउं देहु जनि खोरि
अस कहि चला विभीषण जबहीं ॥ आयु हीन भे निशिचर तबहीं ॥
साधु अवज्ञा तुरत भवानी ॥ ॥ कर कल्याण अखिल कर हानी ॥
रावण जबहि विभीषण त्यागा ॥ भयो विभव बिनु तबहि अभागा ॥
चलेउ हर्षि रघुनायक पाहीं ॥ करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहौं जाइ चरण जलजाता ॥ अरुण मृदुल सेवक सुखदाता ॥
जे पद परसि तरी ऋषि नारी ॥ दंडक कानन पावन कारी ॥
जे पद जनक सुता उर लाये ॥ ॥ कपट कुरंग संग धरि धाये ॥

हर उर सर सरोज पद जोई। अहो भाग्य मैं देखब सोई॥

दो॰ जिन पायन कर पादुका भरत रहे मन लाइ॥
ते पद आजु बिलोकिहौं इन नयनन अब जाइ॥

इहि विधि करत सप्रेम विचारा आयेउ सपदि सिंधु के पारा॥
कपिन्ह विभीषण आवत देखा जानेउ कोउ रिपु दूत विशेषा॥
ताहि राखि कपि पति पहं आये। समाचार सब जाइ सुनाये॥
कहि सुग्रीव सुनिय रघुराई॥ आवा मिलन दशानन भाई॥
कह प्रभु सखा बूझिये काहा। कहै कपीश सुनहु नर नाहा॥
जानि न जाइ निशाचर माया। काम रूप केहि कारण आया॥
भेद हमार लेन शठ आवा॥ राखिय बांधि मोहि अस भावा
सखा नीति तुम नीक विचारी। मम प्रण शरणा गत भय हारी
सुनि प्रभु वचन हर्ष हनुमाना। शरणा गत वत्सल भगवाना॥

दो॰ शरणा गत कहं जो तजहिं निज अन हित अनुमानि
ते नर पामर पाप मय। तिनहिं विलोकत हानि॥

कोटि विप्र बध लागहिं जाहू। आये शरण तजौं नहिं ताहू॥
सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासैं तबहीं।
पाप वन्त कर सहज सुभाऊ। भजन मोर तेहि भाव न काऊ॥
जो पै दुष्ट हृदय सो होई॥ मोरे सन्मुख आव कि सोई॥
निर्मल मन जन सो मोहिं पावा। मोहिं कपट छल छिद्र न भावा।
भेद लेन पठवा दश शीशा। तबहुं न कछु भय हानि कपीशा
जग महं सखा निशाचर जेते। लक्ष्मण हनहिं निमिष महं तेते
जो सभीत आवा शरणाई॥ रखिहौं ताहि प्राण की नाई॥

दो॰ उभय भांति ले आवहू। हंसि कह कृपा निधान
जय कृपाल कहि कपि चले अंगदादि हनुमान

सादर तेहि आगे करि वानर॥ चले जहां रघुपति करुणा कर

दूरिहि तें देखे दोउ भ्राता ॥ नयनानन्द दान के दाता ॥
बहुरि राम छवि धाम बिलोकी रहा सो ठाढ़ एक पग रोकी ॥
भुज प्रलंब कंजारुण लोचन । श्यामल गात प्रणत भय मोचन
सिंह कंध आयत उर सोहा ॥ आनन अमित मदन छवि मोहा
नैन नीर पुलकित अति गाता ॥ मन धरि धीर कही मृदु बाता ॥
निशिचर बंश जनम सुर त्राता ॥ नाथ दशानन कर मैं भ्राता ॥
सहज पाप प्रिय तामस देहा ॥ यथा उलूकहिं तम पर नेहा ॥

दो॰ श्रवण सुयश सुनि आयउं प्रभु भंजन भव भीर
त्राहि त्राहि आरत हरण शरण सुखद रघुबीर ।

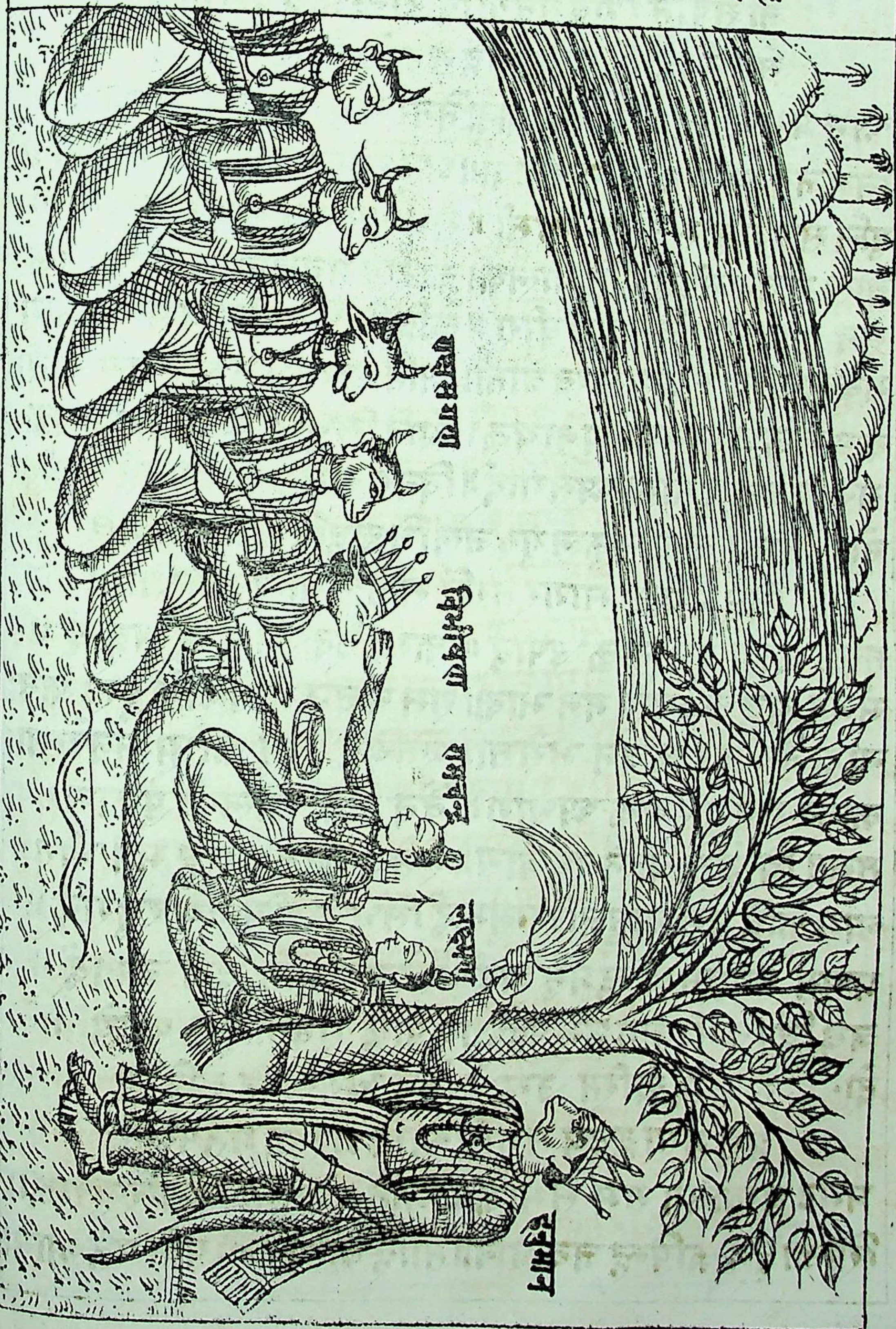
अस कहि करत दंडवत देखा ॥ तुरत उठे प्रभु हर्ष बिशेषा ॥
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा ॥ भुज बिशाल गहि हृदय लगावा
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी बोले बचन भक्त हित कारी ॥
कहु लंकेश सहित परिवारा ॥ कुशल कुठाहर बास तुम्हारा ॥
खल मंडली बसहु दिन राती ॥ सखा धर्म निबहै केहि भांती ॥
मैं जानी तुम्हारि सब रीती ॥ अति नय निपुण न भाव अनीती ।
वरु भल बास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देहि बिधाता ॥
अब पद देखि कुशल रघुराया । जो तुम कीन्ह जानि जन दाया ॥

दो॰ तब लगि कुशल न जीव कहँ सपनेहुँ मन बिश्राम
जब लगि भजन न राम के शोक धाम तजि काम ।

तब लगि हृदय बसत खल नाना लोभ मोह मत्सर मद माना ॥
जब लगि उर न बसत रघुनाथा । धरे चाप सायक कटि भाथा ॥
ममता तिमिर तरुण अंधियारी । राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥
तब लगि बसत जीव उर माहीं । जब लगि प्रभु प्रताप रवि नाहीं ।
अब मैं कुशल मिटे भय भारे ॥ देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥
तुम कृपाल जा पर अनुकूला ॥ ताहि न व्याप त्रिविध भय शूला

मैं निशिचर अति अधम सुभाऊ। शुभ आचरण कीन्ह नहिं काऊ॥
जो सुरूप मुनि ध्यान न पावा। सो प्रभु हर्षि हृदय मोहिं लावा॥
दो· अहो भाग्य मम अमित अति राम कृपा सुखपुञ्ज
देखउं नयन विरंचि शिव सेव्य युगल पद कञ्ज॥
सुनहु सखा निज कहहुं सुभाऊ। जानि भुशुंडि शंभु गिरिजाऊ॥
जो नर होइ चराचर द्रोही। आवै सभय शरण तकि मोही॥
तजि मद मोह कपट छल नाना। करौं सखा तेहि साधु समाना॥
जननी जनक बंधु सुत दारा। तन धन भवन सुहृद परिवारा॥
सब के ममता ताग बटोरी। मम पद मनहिं बांधि बटि डोरी॥
सम दरशी इच्छा कछु नाहीं। हर्ष शोक भय नहिं मन माहीं॥
अस सज्जन मम उर बस कैसे। लोभी हृदय बसत धन जैसे॥
तुम सारिखे संत प्रिय मोरे। धरौं देह नहिं आनि निहोरे॥
दो· सगुण उपासक परम हित निरत नीति दृढ़ नेम
ते नर प्राण समान मोहिं जिन के द्विज पद प्रेम॥
सुन लंकेश सकल गुण तोरे। तातें तुम अति शय प्रिय मोरे॥
राम वचन सुनि वानर यूथा। सकल कहहिं जय कृपा बरूथा॥
सुनत विभीषण प्रभु कर बानी। नहिं अघात श्रवणामृत जानी॥
पद अंबुज गहि बारहिं बारा। हृदय समात न प्रेम अपारा॥
सुनिये देव चराचर स्वामी। प्रणत पाल उर अंतर यामी॥
उर कछु प्रथम बासना रहेउ। प्रभु पद प्रीति सरित सो बहेउ॥
अब कृपाल निज भक्ति पावनी। देहु दया करि शिव भावनी॥
एवमस्तु कहि प्रभु रण धीरा। मांगा तुरत सिंधु कर नीरा॥
यदपि सखा तोहि इच्छा नाहीं। मम दर्शन अमोघ जग माहीं॥
अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन वृष्टि नभ भयउ अपारा॥
दो· रावण क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड॥

रावण की सभा से सक्रोध उठकर विभीषण को श्री रामचन्द्र जी की शरण गति जाना और श्री राम चन्द्र को विभीषण का राज तिलक करना



जरत विभीषण राखेउ दीन्हेउ राज अखंड ॥

जो संपति शिव रावणहिं दीन्ह दिये दश माथ

सो संपदा विभीषणहिं सकुचि दीन्ह रघुनाथ

अस प्रभु छांडि भजहिं जे आना तेनर पशु विनु पूंछ बखाना ॥
निज जन जानि ताहि अपनावा॥ प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा
पुनि सर वज्ञ सर्व उर वासी ॥ सर्व रूप सब रहित उदासी ॥
बोले वचन नीति प्रति पालक। कारण मनुज दनुज कुल घालक
सुन कपीश लंका पति बीरा ॥ केहि विधि उतरिय जलधि गंभीरा
संकुल उरग मकर झख जाती। अति अगाध दुस्तर सब भांती
कह लंकेश सुनहु रघुनायक। कोटि सिंधु शोषक तव शायक
यद्यपि तदपि नीति असगाई॥ विनय करिय सागर पहं जाई॥

दो॰ प्रभु तुम्हार कुल गुरु जलधि कहहिं उपाय विचारि

विनु प्रयास सागर तरहिं सकल भालु कपि धारि॥

सखा कही तुम नीक उपाई॥ करब दैव जो होइ सहाई॥
मंत्रन यह लक्ष्मण मन भावा। राम वचन सुनि अति दुख पावा
नाथ दैव कर कवन भरोसा। शोषिय सिंधु करिय मन रोसा।
कादर मन कर एक अधारा॥ दैव दैव आलसी पुकारा॥
सुनत विहंसि बोले रघुवीरा॥ ऐसेहु करब धरहु मन धीरा॥
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई। सिंधु समीप गये रघुराई॥
प्रथम प्रणाम कीन्ह प्रभु जाई॥ बैठे तट पुनि दर्भ डसाई॥
जव हिं विभीषण प्रभु पहं आये पाछे रावण दूत पठाये ॥

दो॰ सकल चरित उन्ह देखेउ धरे कपट कपि देह

प्रभु गुण हृदय सराहिं अति शरणागत परनेह

प्रगट बखानत राम सुभाऊ॥ अति सप्रेमगा विसरि दुराऊ॥
रिपु का दूत कपिन्ह जव जाना॥ ताहि बांधि कपि पति पहं आना।

कह सुग्रीव सुनहु सब बन चर। अंग भंग करि पठ बहु निशिचर
सुनि सुग्रीव वचन कपि धाये॥ बांधि कटक चहुं पास फिराये॥
बहु प्रकार मारन कपि लागे॥ दीन पुकारत तदपि न त्यागे॥
जो हमार हर नासा काना॥ तेहि कोशलाधीश कर आना
सुनि लक्ष्मण तेहि निकट बुलाये दया लागि हंसि दीन्ह छुड़ाये॥
रावण कर दीन्हेहु यह पाती॥ लक्ष्मण वचन बांचु कुल घाती
दो॰ कहेउ मुखागमूढ़ सन मम संदेश उदार॥
सीता देहु मिलहु न तो आवा काल तुम्हार
तुरत नाइ लक्ष्मण पद माथा। चला दूत वरणत गुण गाथा।
कहत राम यश लंका आवा॥ रावण चरण शीस तिन्ह नावा।
बिहंसि दशानन पूछेसि बाता। कह सिन शुक आपनि कुशलाता
पुनि कहु कुशल विभीषण केरी। जासु मृत्यु आई अति नेरी॥
करत राज लंका शठ त्यागा। होइहि यव कर कीट अभागा।
पुनि कहु भालु कीश कटकाई। कठिन काल प्रेरित चलि आई।
तिन्ह के जीवन कर रख वारा। भयउ मृदुल चित सिंधु विचारा
कहु तपसिन्ह कर बात बहोरी। जिन्ह के हृदय त्रास बड़ मोरी।
दो॰ भई भेंट की फिरि गये श्रवण सुयश सुनि मोर
कहसि न रिपु दल तेज बल कस चकित चित तोर
नाथ कृपा करि पूछेहु जैसे॥ मानहुं वचन क्रोध तजि तैसे॥
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा जातहिं राम तिलक तेहि सारा
रावण दूत हमहिं सुनि काना कपिन्ह बांधि दीन्हे दुख नाना
श्रवण नासिका काटन लागे राम शपथ दीन्ही तब त्यागे॥
पूछेहु नाथ कीश कटकाई बदन कोटि शत वरणि न जाई
नाना वरण भालु कपि धारी। विकटानन विशाल भय कारी
जेइ पुर दहेउ बधेउ सुत तोरा सकल कपिन महं तेहि बल थोरा

अमित नाम भट कठिन कराला। विपुल बरण तन तेज विशाला ॥
दो॰ द्विविद मयंद नील नल अंगदादि बिकटासि।
दधि मुख केहरि कुमुद गव जाम वंत बलरासि ॥
ये कपि सब सुग्रीव समाना। इन्ह सम कोटि गणै को नाना ॥
राम कृपा अतुलित बल तिनहीं। तृण समान त्रय लोकहि गिनहीं ॥
अस मैं श्रवण सुना दश कंधर। पद्म अठारह यूथप बंदर ॥
नाथ कटक महं सो कपि नाहीं। जो न तुम्हैं जीतहि रण माहीं ॥
परम क्रोध मींजहिं सब हाथा। आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
शोषहिं सिंधु सरित झख व्याला। पुरहिं न तो भरि कुधर विशाला ॥
मर्दि गर्द मिल वहिं दश शीशा। ऐसे वचन कहहिं सब कीशा ॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज अशंका। मानहु ग्रसन चहत अब लंका ॥
दो॰ सहज शूर कपि भालु सब पुनि शिर पर श्री राम।
रावण काल कोटि कहं जीति सकहिं संग्राम ॥
राम तेज बल बुधि विपुलाई। शेष सहस शत सकहिं न गाई ॥
सक शर एक शोषि शत सागर। तव भ्रातहिं पूछेउ नय नागर ॥
तासु वचन सुनि सागर पाहीं। मांगत पंथ कृपा मन माहीं ॥
सुनत वचन विहसा दश शीशा। जो अस मति सहाय कृत कीशा ॥
सहज भीरु करि वचन दृढ़ाई। सागर सन ठानी मचलाई ॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई। रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥
सचिव सभीत विभीषण जाके। विजय विभूति कहां लगि ताके ॥
सुनि खल वचन दूत रिसि बाढ़ी। समय विचारि पत्रिका काढ़ी ॥
राम अनुज दीन्ही यह पाती। नाथ बंचाइ जुड़ावहु छाती ॥
विहसि वाम कर लीन्हेसि रावन। सचिव बोलि शठ लागु बचावन ॥
दो॰ बातन मनहिं रिझाइ शठ जनि घालसि कुल खीस।
राम विरोध न उबरिहहु शरण विष्णु अज ईश ॥

होउ मान तजि अनुज इव प्रभु पद पंकज भृङ्ग ॥
होहि राम शर अनल खल जनि कुल सहित पतङ्ग ॥

सुनत सभय मन महं मुसुकाई। कहै दशानन सबहिं सुनाई॥
भूमि परा कर गहत अकाशा। लघु तापस कर बाग बिलासा॥
कह शुक नाथ सत्य सब बानी। समुझहु छांड़ि प्रकृति अभिमानी॥
सुनहु बचन मम परि हरि क्रोधा। नाथ राम सन तजहु बिरोधा॥
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ। यद्यपि अखिल लोक कर राऊ॥
मिलत कृपा प्रभु तुम पर करिहैं। उर अपराध न एकौ धरिहैं॥
जनक सुता रघुनाथहिं दीजे॥ इतना कहा मोर प्रभु कीजे॥
जब तेइ देन कहेउ बैदेही॥ चरण प्रहार कीन्ह शठ तेही॥
चरण नाइ शिर चला सो तहां। कृपा सिंधु रघुनायक जहां॥
करि प्रणाम निज कथा सुनाई। राम कृपा आपन गति पाई॥
ऋषि अगस्त्य कर श्राप भवानी। राक्षस भयो रहा मुनि ज्ञानी॥
बंदि राम पद बारहि बारा॥ पुनि निज आश्रम कहं पगुधारा॥

दो॰ विनय न मानत जलधि जड़ गये तीनि दिन बीति
बोले राम सकोप तब भय बिनु होय न प्रीति ॥

लक्ष्मण बाण शरा सन आनू। शोषौं बारिधि बिशिख कृशानू॥
शठ सन विनय कुटिल सन प्रीती सहज कृपण सन सुंदर नीती॥
ममता रत सन ज्ञान कहानी। अति लोभी सन बिरति बखानी॥
क्रोधिहिं शम कामि हि हरि कथा। ऊषर बीज बये फल यथा॥
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। यह मत लक्ष्मण के मन भावा॥
संधानेउ शर बिशिख कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला॥
मकर उरग झख गण अकुलाने जरत जंतु जल निधि जब जाने॥
कनक थार भरि मणि गण नाना। विप्र रूप आये तजि माना॥

दो॰ काटे पै कदली फरै। कोटि यतन करि सींच

विनय न मान खगेश सुन डाटे हि पै नव नीच

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। क्षमहु नाथ सब अवगुण मेरे

गगन समीर अनल जल धरणी इन की नाथ सहज जड़ करणी।

तव प्रेरित माया उपजाये। सृष्टि हेतु सब ग्रंथन गाये॥

प्रभु आयसु जेहि कहं जस अहही सो तेहि भांति रहे सुख लहहीं

प्रभु भल कीन्ह मोहिं सिख दीन्ही मर्य्यादा सब तुम्हरी कीन्ही।

ढोल गंवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी।

प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई। उतरिहि कटक न मोर बड़ाई॥

प्रभु आज्ञा अपेल श्रुति गाई। करहु बेगि जो तुमहिं सोहाई

दो॰ सुनत विनीत वचन अति कह कृपाल मुसुकाइ

जेहि विधि उतरै कपि कटक तात सो करहु उपाइ

नाथ नील नल कपि दोउ भाई लरि काई ऋषि आशिष पाई

तिन के परस किये गिरि भारे। तरि हहिं जलधि प्रताप तुम्हारे

मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करि हौं बल अनुमान सहाई।

इहि विधि नाथ पयोधि बंधाइय जिहिं अस सुयश लोक तिहुं गाइय

इहि पार मम उत्तर तट बासी। हतहु नाथ नर खल अघ राशी

सुनि कृपाल सागर मन पीरा। तुरतहिं हरी राम रण धीरा॥

देखि राम बल अतुलित भारी हर्षि पयोनिधि भयो सुखारी।

सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा चरण वंदि पाथोधि बंधावा॥

छं॰ निज भवन गव नेउ सिंधु श्री रघुबीर हिय मत भायउ।

यह चरित कलि मल हरन जस मति दास तुल सी गायउ

सुख भवन संशय शमन शमन विषाद रघुपति गुण गना

तजि आस सकल भरोस गावहिं सुनहिं सज्जन शुचि मना

दो॰ सकल सुमंगल दायक। रघु नायक गुण गान॥।

सादर सुनहिं ते तरहिं भव। सिंधु विना जल यान

इति श्री राम चरित मानसे सकल क॰ सम्पादनो नाम पंचमः सोपानः समाप्तः



लंकाकाण्ड

श्लोक

॥ शंखेन्द्वाभमतीव सुन्दरतनुं शार्दूल चर्म्माम्बरं । कालव्याल कराल भूषण धरं गंगा शशाङ्क प्रियं ॥ काशीशं कलि कल्मषौघ शमनं कल्याण कल्प द्रुमं । नौमीड्यं गिरिजा पतिं गुण निधिं श्री शंकरं काम हं ॥ १॥ यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्य मपि दुर्लभं । खलानां दण्डकृद्यो सौ शंकरः शन्तनोतु मे २।

दो॰ लव निमेष परमाणु युग वर्ष कल्प शर चण्ड।
भजसि न मन तेहि राम कहं काल जासु कोदण्ड

सो॰ सिंधु वचन सुनि राम। सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ
अब बिलम्ब केहि काम करहु सेतु उतरै कटक।
सुनहु भानु कुल केतु। जामवन्त कर जोरि कह॥
नाथ नाम तव सेतु। नर चढ़ि भव सागर तरहिं

यह लघु जलधि तरत कत बारा। अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी॥। सोषेउ प्रथम पयो निधि बारी।

नवरिपु नारि रुदन जल धारा । भयो बहोरि भयो तेहि खारा
सुनि अस युक्ति पवन सुत केरी। विहंसे रघुपति कपि तन हेरी
जामवन्त बोले दोउ भाई ॥ । नल नीलहि सब कथा सुनाई
राम प्रताप सुमिरि उर माहीं । करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं।
बोलि लिये कपि निकर बहोरी। सकल सुनहु बिनती इक मोरी
राम चरण पंकज उर धरहु ॥। कौतुक एक भालु कपि करहु
धावहु मर्कट विकट वरूथा । आनहु विटप गिरिन के यूथा
सुनि कपि भालु चले करि हूहा जय रघुवीर प्रताप समूहा।

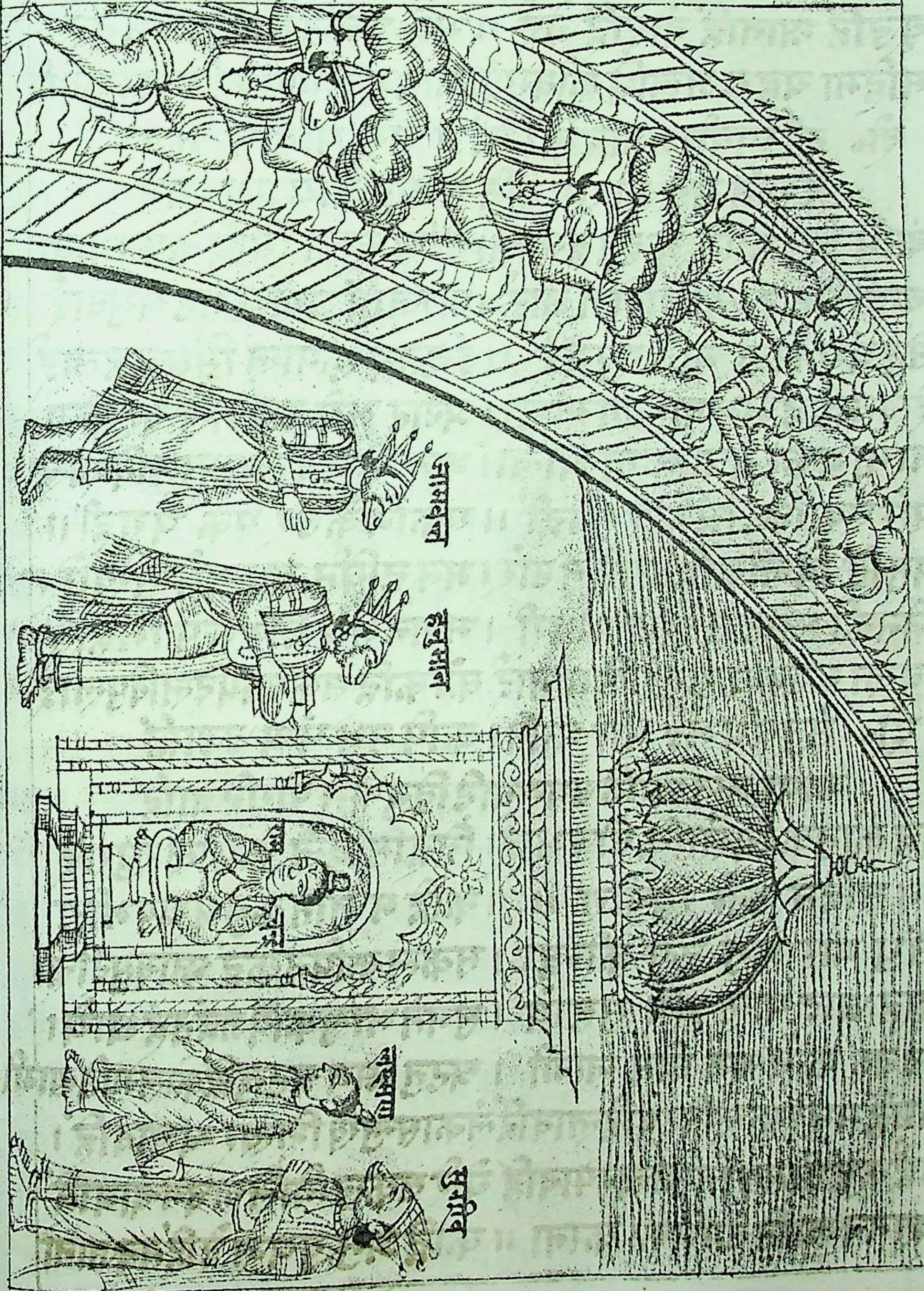
दो॰ अति उतंग तरु शैल गण लीलहिं लेहिं उठाइ।
आनि देहिं नल नील कहं विरचहिं सेतु बनाइ॥

शैल विशाल आनि कपि देहीं । कंदुक इव नल नील सो लेहीं
देखि सेतु अति सुन्दर रचना । विहंसि कृपा निधि बोले वचना
परम रम्य सुन्दर यह धरणी ।। महिमा अमित जाइ नहिं वरणी
करिहौं इहां शंभु थापना । मोरे हृदय परम कल्पना
सुनि कपीश बहु दूत पठाये ।। मुनिवर निकर बोलि लै आये
लिंग थापि विधिवत करि पूजा। शिव समान प्रिय मोहिं न दूजा
शिवद्रोही मम दास कहावै ।। सो नर सपनेहु मोहिं न भावै।
शंकर विमुख भक्ति चह मोरी । सो नर मूढ़ मन्द मति थोरी

दो॰ शंकर प्रिय मम द्रोही ।। शिव द्रोही मम दास
ते नर करहिं कल्प भर । घोर नरक महं वास।

जो रामेश्वर दरशन करिहैं ।। सो तन तजि मम धाम सिधरिहैं
जो गंगा जल आनि चढ़ाई । सो सायुज्य मुक्ति नर पाई।
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि भक्ति मोर तिहि शंकर देइहि
मम कृत सेतु जु दरशन करिहैं। सो विनु श्रम भव सागर तरिहैं
राम वचन सबके मन भाये ।। ।मुनिवर निज निज आश्रम आये

श्रीरामचन्द्र जी की आज्ञानुसार नल नीलादि कपियों को समुद्र में सेतु बाँधना और श्रीराम चन्द्र को रामेश्वरजी महादेव का स्थापन करना॥



गिरिजा रघुपति की यह रीती। संतत करहिं प्रणत पर प्रीती
बांधेउ सेतु नील नल नागर । राम कृपा यश भयउ उजागर
बूडहिं आनहिं बोरहिं जेई ॥ भये प्रबल बोहित सम तेई ।
महिमा यह न जलधि की बरणी पाहन गुणन कपिन की करणी

दो॰ श्री रघुवीर प्रताप तें । सिंधु तरे पाषाण ॥॰
ते मति मंद जो राम तजि भजहिं जाय प्रभु आन

बांधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा। देखि कृपा निधि के मन भावा
चली सेन कछु वरणि न जाई । गर्जहिं मरकट भट समुदाई
सेतु बंध ढिग चढ़ि रघुराई ॥ चितव कृपालु सिंधु बहुताई
देखन कहं प्रभु करुणा कन्दा। प्रगट भये सब जलचर वृन्दा
नाना मकर नक्र झख व्याला। शत योजन तन परम विशाला
ऐसे एक तिन हिं धरि खाहीं ॥ एकनि के डर एक पराहीं ॥
प्रभु हि विलोकहिं टरहिं न टारे। मन हर्षित सब भये सुखारे।
तिनकी ओट न देखिय बारी । मगन भये हरि रूप निहारी
चला कटक कछु वरणि न जाई को कहि सक कपि दल विपुलाई

दो॰ सेतु बंध भइ भीर अति। कपि नभ पंथ उड़ाहिं
अपर जलचरनि ऊपर चढ़ि चढ़ि विनु श्रम पारहि जाहिं

यह कौतुक विलोकि दोउ भाई। विहंसि चले कृपालु रघुराई
सेन सहित उतरे रघुबीरा ॥ ॥ कहि न जात कछु यूथप भीरा
सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा । सकल कपिन कहं आयसु दीन्हा
खाहु जाइ फल फूल सुहाये । सुनत भालु कपि जहं तहं धाये।
सब तरु फले राम हित लागी । ऋतु अनऋतु हिं काल गति त्यागी
खाहिं मधुर फल विटप हिलावहिं लंका सन्मुख शिखर चलावहिं।
जहँ कहुं फिरत निशाचर पावहिं घेरि सकल मिलि नाच नचावहिं
दशनन काटि नासिका काना ॥ कहि प्रभु सुयश देहिं तब जाना

जिन कर नासा कान निपाता । तेइ रावणहिं कही सब बाता ।
सुनत श्रवण बारिधि बंधाना । दश मुख बोलि उठा अकुलाना ।
दो॰ बांधे उजल निधि नीर निधि जलधि सिंधु वारीश
सत्य तोय निधि कंप निधि उदधि पयोधि नदीश
व्याकुलता निज समुझि बहोरी विहंसि चला गृह करि भय भोरी
मन्दोदरी सुना प्रभु आये ।। कौतुक ही पायोधि बंधाये ॥
कर गहि पतिहि भवन निज आनी बोली परम मनोहर बानी ।
चरण नाइ शिर अंचल रोपा । सुनहु वचन प्रिय परिहरि कोपा
नाथ बैर कीजे ताही सों ।। । बुधि बल जीति सकिय जाही सों
तुमहिं रघुपति हिं अंतर कैसा । खल खद्योत दिवाकर जैसा ॥
अति बल मधु कैटभ जिन मारा महाबीर दिति सुत संहारा ॥
जेहि बलि बांधि सहस भुज मारा सोइ अवतरेउ हरन महि भारा
तासु विरोध न कीजिय नाथा । काल कर्म गुण जिन के हाथा
दो॰ रामहिं सौंपहु जानकी । नाइ कमल पद माथ
सुत कहं राज देइ बन ।। जाय भजहु रघुनाथ ।
नाथ दीन दयाल रघु राई ।। । बाघौ सन्मुख गये न खाई ॥
चाहिय करन सो सब करि बीते । तुम सुर असुर चराचर जीते
बिद कहहिं अस नीति दशानन । चौथे पनहिं जाइ नृप कानन
तासु भजन कीजिय तहं भर्त्ता । जो कर्त्ता पालन सं हर्त्ता ॥ ।
सोइ रघुवीर प्रणत अनुरागी । भजहु नाथ ममता मद त्यागी
मुनि वर यतन करहिं जेहि लागी भूप राज तजि होंहि बिरागी
सोइ कोशला धीश रघुराया । आये करन तोहिं पर दाया ।
जौ पिय मानहु मोर सिखावन होइहि सुयश तिहुं पुर पावन
दो॰ अस कहि लोचन बारि भरि गहि पद कंपित गात
नाथ भजहु रघुनाथ पद मम अहिवात न जात ।

तब रावण मय सुता उठाई । कहै लागु खल निजप्रभुताई
सुनु तैं प्रिया वृथाभय माना जगयोधा को मोहिं समाना
वरुण कुवेर पवन यम काला । भुजबल जिते सकल दिगपाला
देव दनुज नर सब वस मोरे ॥ कवन हेतु भय उपजा तोरे ।
नाना विधि कहि तेहिं समुझाई सभा बहोरि बैठ सो जाई ॥
मन्दोदरी हृदय अस जाना ॥ । काल विवस उपजा अभिमाना
सभा जाइ मंत्रिन सो बूझा ॥ करिय कवन विधि रिपु सनजूझा
कहहिं सचिवसुनिनिशिचरनाहा बार बार प्रभु पूछहु काहा
कहहु कवन भय करिय विचारा नर कपि भालु अहार हमारा

दो॰ वचन सबनि के श्रवण सुनि कह प्रहस्त कर जोरि
नीति विरोधन करियप्रभु मंत्रिन मति अति थोरि

कहहिं सचिव सब ठकुर सुहाती नाथन भल होइहि इहि भांती ॥
वारिधि बांधि एक कपि आवा तासु चरित मन महं सब गावा ॥
क्षुधा न रही तुमहिं सब काहू । जारत नगर न सक धरि खाहू
सुनत नीक आगें दुख पावा । सचिवन्ह असमतप्रभहिंसुनावा
जो वारीश बंधायउ हेला ॥ । उतरे कपि दल सहित सुवेला
सो जनु मनुज खावहम भाई । वचन कहहु सब गाल फुलाई
सुनि सम वचन तात अति आदर निज मनगुणहु मोहिंकहिकादर
प्रिय वाणी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसे जग निकाय नर अहहीं
वचन परम हित सुनत कठोरे । कहहिं सुनहिं ते नरप्रभु थोरे ।
प्रथम वशीठ पठव सुननीती । सीतहिं देइ करिय पुनि प्रीती

दो॰ नारि पाइ फिरि जाहिंजौ तौन बढ़ाइय रार ॥
नाहि तो सन्मुख समरमहं नाथ करिय हठमार ।

यह मत जो मानहु प्रभुमोरा । उभय प्रकार सुयश जग तोरा
सुतसन कह दशकंध रिसाई । असमततोहिंशठकवनसिखाई

अब हीते उर संशय होई । वेणु वंश सुत भयसि घमोई ॥
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा चला भवन कहि वचन कठोरा
हित मत तोहिं न लागत कैसे । काल विवस कहँ भेषज जैसे ।
संध्या समय जानि दससीसा । भवन चला निरखत भुज बीसा
लंका शिखर रुचिर आगारा । अति विचित्र तहँ होत अखारा
बैठ जाइ तेहि मंदिर रावण । लागे किन्नर गंधर्व गावन ॥।
बाजै ताल पखावज बीणा ॥। नृत्य करहिं अप्सरा प्रवीणा ॥

दो॰ सुनासीर शत सरिस सो सन्तत करै विलास ॥।
परम प्रबल रिपु शीश पर तदपि न कछु मन त्रास

इहाँ सुबेल शैल रघुबीरा ॥। उतरे सेन सहित अतिभीरा ॥
शैल शृंग इक सुन्दर देखी ।। अति उतंग सम सुभग विशेषी
तहँ तरु किसलय सुमन सुहाये लक्ष्मण रचि निज हाथ डसाये
तापर रुचिर मृदुल मृग छाला । तेहि आसन आसीन कृपाला
प्रभु कृत शीश कपीश उछंगा बाम दहिन दिशि चाप निषंगा
दुहु कर कमल सुधारत बाना ।। कह लंकेश मंत्र लगि काना
बड़भागी अंगद हनुमाना । चरण कमल चापत विधि नाना
प्रभु पाछे लक्ष्मण बीरासन ।। कटि निषंग कर बाण शरासन

दो॰ इहि विधि करुणा शील गुण धाम राम आसीन ।
धन्य सो नर यह ध्यान रत रहत सदा लव लीन ॥।

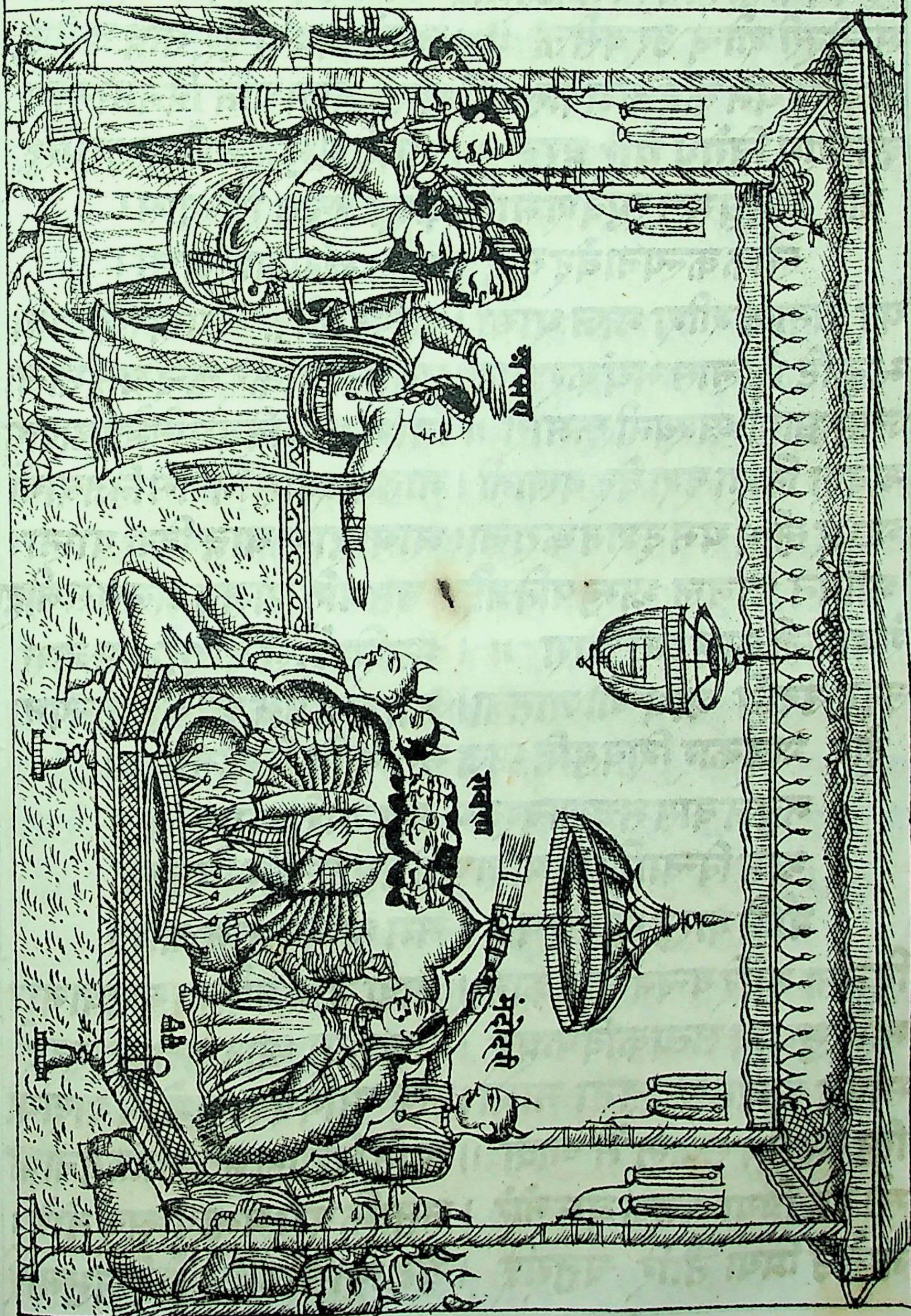
पूरब दिशा बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक ॥ ।
कहत सबहि देखहु शशिहि मृगपति सरिस असंक

पूरब दिशि गिरि गुहा निवासी । परम प्रताप तेज बल राशी ॥
मत्त नाग तम कुम्भ विदारी ॥। शशि केहरी गगन बन चारी
बिथुरे नभ मुकुताहल तारा । निशि सुन्दरी केर शृंगारा ॥
कह प्रभु शशि महँ मेचक ताई कहहु कहा निज निज मति भाई

कह सुग्रीव सुनहु रघुराया ॥। शशि महँ प्रगट भूमि की छाया
मारेहु राहु शशिहि कह कोई। उर महँ परी श्यामता सोई।
कोउ कह जब विधि रति मुख कीन्हा सार भाग शशि कर हरि लीन्हा
छिद्र सो प्रगट इन्दु उर माहीं। तेहि मग देखिय नभ परिछाहीं
कह प्रभु गरल बंधु शशि केरा। अति प्रीतम उर दीन्ह बसेरा
विष संयुत कर निकर पसारी। जारत विरहवंत नर नारी।
दो० कह मारुतसुत सुनहु प्रभु शशि तुम्हार प्रियदास।
तव मूरति तेहि उर बसत सोई श्यामता भास ॥
पवन तनय के वचन सुनि बिहँसे राम सुजान ॥
दक्षिण दिशा विलोकि पुनि बोले कृपा निधान।
देख विभीषण दक्षिण आसा। घन घमण्ड दामिनी विलासा।
मधुर मधुर गर्जत घन घोरा ।। होइ वृष्टि जनु उपल कठोरा।
कहत विभीषण सुनहु कृपाला होइ न तड़ित न बारिद माला।
लंका शिखर रुचिर आगारा तहँ दशकंधर केर अखारा।
छत्र मेघडम्बर शिर धारी ॥। सो प्रभु जलद घटा अति कारी
मन्दोदरी श्रवण ताटंका ॥। सो प्रभु जनु दामिनी दमंका
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा । सो रव सरस सुनहु सुर भूपा ॥
प्रभु मुसुकान देखि अभिमाना। चाप चढ़ाइ बाण संधाना ॥
दो० छत्र मुकुट ताटंक सब। हते एकही बान ॥४॥
सब के देखत महि गिरे मर्म न काहू जान ॥
यह कौतुक करि राम शर। प्रविश्यो आइ निषंग
रावण सभा सशंक सब। देखि महा रस भंग ॥।
कंप न भूमि न मरुत विशेषा। अस्त्र शस्त्र कोउ नयन न देखा
सोचहिं सब निज हृदय विचारी असगुन भयउ भयंकर भारी
रावण दीख सभा भय पाई ॥। बिहँसि वचन कह युक्ति बनाई

लं॰ ६

लङ्का के शिखर पर रावण को मंदोदरी सहित नाच राग कराना और राम-चन्द्र के बाण करके रावण के मुकट मंदोदरी के ताटंककटकेपृथ्वी पर गिरना ॥



गिरें गिरे संतत सुभ जाही ।। मुकुट गिरे कस असकुन ताही
शयन करहु निज निज गृह जाई गवने भवन सकल शिर नाई
मन्दोदरी सोच उर बसेऊ ।। जबते श्रवण पूर महि खसेऊ
सजल नयन कह युग कर जोरी सुनहु प्राणपति बिनती मोरी
कंत राम विरोध परि हरहू ।। जानि मनुज जनि हठ उर धरहू
दो॰ विश्वरूप रघुवंश मणि करहु वचन विश्वास।
लोक कल्पना वेद कह । अंग अंग प्रतिजास।
पद पाताल शीश अज धामा । अपर लोक अंगन्ह विश्रामा
भृकुटि विलास भयंकर काला नयन दिवाकर कच घन माला
जासु घ्राण अश्वनी कुमारा ।। निशि अरु दिवस निमेष अपारा
श्रवण दिशा दश वेद बखानी । मारुत श्वास निगम निजबानी
अधर लोभ यम दशन कराला। माया हास बाहु दिग पाला।
आनन अनल अम्बु पति जीहा उतपति पालन प्रलय समीहा
रोमावली अष्ट दश भारा ।। । अस्थि शैल सरिता नस जारा
उदर उदधि अध गो जातना। जग मय प्रभु की बहु कल्पना
दो॰ अहंकार शिव बुद्धि अज मन शशि चित्त महान।
मनुज वास सचराचर मय रूप राम भगवान ।।
अस विचारि सुनु प्राण पति प्रभु सन बैर बिहाइ
प्रीति करहु रघुवीर पद । मम अहिवातन जाइ।
बिहसा नारि वचन सुनि काना। अहो मोह महिमा बलवाना।
नारि सुभाव सत्य कवि कहहीं । अवगुण आठ सदा उर रहहीं
साहस अनृत चपलता माया। भय अविवेक अशौच अदाया
रिपु कर रूप सकल तैं गावा ।। अति विशाल भय मोहिं सुनावा
सो सब प्रिया सहज बस मोरे । समुझि परा प्रभाव अब तोरे।
जानेउं प्रिया तोरि चतुराई । यह मिसि कहेउ मोरि प्रभुताई

तव बतकहीं गूढ़ मृग लोचनि समुझत सुखद सुनत भय मोचनि
मन्दोदरि मन महं यह ठयऊ । प्रियहि कालबस मतिभ्रम भयऊ
दो० बहु विधि जल्पेसि सकल निशि प्रात भये दशकंध
सहज अशंक सो लंक पति सभा गयो मति अंध
सो० फूलै फलै न बेंत । यदपि सुधा बर्षहिं जलद ॥
मूरख हृदय न चेत । जो गुरु मिलहिं विरंचि सम
क्षेपक
दो० मंत्रिन सहित दशानन । चढ़ेउ धवरहर जाय ।
सारन कह तव राज सन । देखहु कपि समुदाय ।
ए जो सिंह नाद किल करहीं ।। सप्त ताल उन्नत संचरही ।
सहस कोटि अतुलित बलवाना । इन्ह के संग वानर परिमाना ॥
रण अजीत ए सहज अशंका । नाद सुने कांपे गढ़ लंका ।।
नभ निरखहु इन के लंगूरे ॥ । जनु ऋतु पावस सुगधनु पूरे
विसकरमा के सुत गुण खानी । इन्ह परसे पय सिल उतरानी
बसहिं ताम्र गिरि कन्दर माहीं । गोदावरी विमल जल पाहीं ।
अति बल आगे धावहिं वीरा । इन्ह पर कृपा करहिं रघुवीरा
करहिं यमहु कर संगर ढीला । कज्जल वरण नाम नल नीला
दो० पद्म अठारह कपि कटक चलइ इन की भुज छांह ।
निज कर सुरभि सुमन लै । रघुपति पूजी बांह ॥
यह जो आवत अचल समाना चौदह ताड़ ऊंच परिमाना
वास पुलिन्दा के तट करई ।।। अम्बुद निकर निरखि कर धरई
रक्त कमल दल सम सब देहा । जनु विकसेउ संध्या कर मेहा ।
हतै मेदिनी पूंछ भवाई ।। । लंका सौंह चितव जनु खाई
तारा सुवन वालि को जायो । अति कुमार रघुपति मन भायो
हृदय गगन रहहिं के प्रभु भानू । पंच पद्म कपि निकर पयानू

करै वज्र वासव कर भंगा ॥। जस्या चल कहँ लेइ उछंगा
परम चतुर सेनप रहि लागी। रघुपति कृपा परत बड़भागी
दो० पात धरा धरि चापै ॥ पन्नग होइ अकाज।
सेन अग्र सर देखहु ॥ यह अंगद युवराज ॥
यह जो स्वेत वरण तन रेखा मनहुं रजत गिरि शृंग विशेषा
दीर्घ केश दारुण भुज दण्डा। चपल चलत बल बुद्धि प्रचण्डा
वास करै जल निधि के तीरा। पान करै गोमती सु नीरा ॥
नृप सुग्रीव कर अधिकारी। सबल व्यूह यह रचै संवारी ॥
जनमत चन्द्रहि ग्रसन उड़ाना। इहि कर पुरुषारथ जग जाना
निरखि गगन राका शशि सोहा शिशु अजान तेहि लगि मन मोहा
धरणी धसकि धरन जब उड़ेउ सत्तरि योजन तें पुनि फिरेउ
दो० कोटि पंच शत मर्कट। रहइं सर्वदा साथ ॥।
कालहु ते रण लरि सकै कुमुद नाम कपि नाथ
ए देखहु जे चहुं दिशि घुमड़े। मनहुं लंक सावन घन उमड़े।
आगर पीछू दश दिशि धावहिं शिला शृंग तरु तरत आवहिं
सहस नाग बल सबहि समाना सत पदुम इन कर परमाना ॥
काशीपुरी वास इन्ह केरी ॥। समर कतहुं जिन पीठिन फेरी
तीक्षण दंत नख्ख युध धारी ॥ द्वंदयुद्ध ये जानहिं भारी ॥
धूमकेतु यूथप इन्ह केरा । लंका निकट कीन्ह जिहि डेरा।
इहि कर जेठ बंधु जमवंता । तिहि के बल कर पाव को अंता
देव दनुज को जूझै ताही ॥ धरा होइ कर कंदुक जाही ॥
बसै अशंक नर्मदा तीरा ॥। अगनि समान अभेद शरीरा
दो० सचिव सुकंठ राज कर । रघुवर कर प्रिय दास ॥
सो जड़ मन्द जो याहि रण चह जीतन की आस।
अब देखहु यह यूथ अपारा। पीत वरण होइ गयउ पहारा।

बाल अरुण मरीचि जस फूटी । निशाचर निकर तमी चह छूटी
चौबिस अर्बुद इन कर जूहा सहस वृन्द सम कोटि समूहा
शिला शैल जे आगे परहीं । पायन मर्दि गर्द सम करहीं ॥
कंचन गिरि कन्दर के नदी ॥ । इन कर यूथ नाथ अविनाशी
अति बल वासव कर हत कारी । सखा सुकण्ठ केर सुख कारी
पान करैं गंगा कर नीरा ॥ ॥ । पर्वत शृंग समान शरीरा ॥ ॥
छिन छिन सिंह नाद जो होई । गर्जत आवत हैं कपि सोई ॥

दो० यह लिहें मण्डल गलित गज बल कर नाहिन अंत
यह कपि राजा केसरी । सुवन जासु हनुमन्त ।

उत्तर दिशि देखहु रज धानी । जनु इकाल लागि शलभ उड़ानी
मर्कट निकर बल विकल छूटे । आवत उदधि कूल जनु छूटे
इहि दल यूथ नाथ जो अहई । अति बल वन्त राज संग रहई
कपि के रूप अनल अविनाशी ए दो पारि पात्र के वासी ॥
अति सुन्दर अरु समर विपक्षा महा बली द्वौ गवय गवक्षा ।
ए द्वौ गर्जत अति रण धीरा । पीवहिं तुंग भद्र कर नीरा ॥
मन्नारि सहस नाग बल जाही । इन महं एक कहों मैं ताही ।
अपर बली गंधमादन नामा । रण अजेय पुनि सब गुण धामा

दो० वासव विबुध वृन्द महं तेजन महं जस भानु
पनस नाम यह वानर । अति बल नीति निधानु

यह जो कुमुद पत्र सम देहा । जस कैलाश शरद कर मेहा
लोचन मधु पिङ्गल अति लोने काम रूप चितवत चहुं कोने ॥
लंका सौंह लंगूर फिराई ॥ । गर्जत मलय मेघ की नाई ।
सुरपति साथ युद्ध कहं गयऊ । तबते काम रूप यह भयऊ ।
मघवा इहि सन कीन्ह मिताई । करैं सदा यह देव सहाई ॥
सहस कोटि कपि इहि के संगा । रते पीत श्वेत बहु रंगा ॥

वचन मृषा मम प्रभु यह गेनं अपर वालि जानहुं मन माहीं ॥
हरदुर शैल सहन इहि केरा मन वच करम राम कर चेरा
दो० गिरि वर लांघत आवत नत उडावत रेणु ॥
तरणि तेज इन रूंधेउ ॥ तारा नय सुषेण ॥
यह कापि लसत मनहु गिरिगेरू दिनमुख रवि जसि लहत सुमेरू
सोइ कपि प्रथम लंक जेहि जारी प्रभु केहि ला आवत रहि बारी
अंजानि गर्भ जनम जब भयऊ क्षुधित जननि न अलसठ थयऊ
तेइ कह सुपक अरुण फल खाहू सुनत चितव इत उ चित चाहू
बाल अरुण लखि गगन उड़ाना ग्रसेसि तरणि वासव तेइ जाना
मारेउ वज्र चिबुक भर देही ॥। कोपि पवन समीर सम देही।
देव विकल होइ अस्तुति कीन्हा। कुलिश होउ तन असवर दीन्हा
विद्या पढ़त भानु के पाही ।। उलटी गति रवि आगे जाही।
वारिधि लांघेउ गोपद जैसे ।। यहि कपीश मन जूझव कैसे ॥
दो० अंबक पीत बाल रवि । बदन तेज अति राज ॥
पवन ते वेग अधिक जनु अनल नितंब सु भ्राज
अतसी कुसुम वरण तनु रेखा । पुरुष पुराण धरे नर वेषा ॥
मत्त गजेन्द्र शुण्ड भुज दण्डा । धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा
उर विशाल अति उन्नत कन्धर । कम्बु कंठ रेखा प्रसन्न वर ॥ ।
मुख छवि की उपमा कवि जोहैं । शशि सरोज सम कहे न सोहैं।
दशन पांति की कान्ति कहे को । ललकत मन पटतरिय लहै को
देखत अधरन की अरुणाई ।। विम्बा फल वन्धूक लजाई ॥
सुक तुण्ड हि नासिका लजावे ॥ यके सुकवि नहिं पटतर आवे
शीश जटा के मुकुट बनाये । भाल विशाल तिलक अलि भाये।
दक्षिण दिशि लक्ष्मण बल वीरा राम बाहु सम अति रण धीरा।
दो० बाम भाग विभीषण । शिर अभिषेक राज ॥

बीज मंत्र सब जानहिं। अकसर करहिं सुकाज ॥
अब देखहु यह सेन सुहाई ॥। मानों मेघ घटा जनु छाई।
कन्या एक ब्रह्म उप जाई ॥। नैन भूरि अरु रूप सुनाई
बाल भाव दिन कर बल दीन्हा ऋतु जानी वासव रति कीन्हा
जातक जमल वीर द्वौ जाये। देव अंश वानर तनु पाये ॥
किषुकिन्धा पर इन कर थाना। देव सरिस मधुवन उद्याना ॥
ऋष्य मूक इन कर विश्रामा। चातुर्मास्य वसे जहँ रामा ॥
बाली ज्येष्ठ राम रण मारा ॥। याहि कहं राज तिलक प्रभु सारा
तारा तासु भई पट रानी ॥। जिहि कर सुत अंगद अतिज्ञानी
सहस शंकु कर अरबुद एका। अरबुद सहस कि विन्दु विवेका
सहस विन्दु गण कन गणिमाना महापद्म तेहि कर परिमाना
ऐसे पद्म अठारह साजा ॥। विग्रह बढ़ेउ राम के काजा
वीर वेष अरु नयन विशाला। कम्बु कण्ठ मोतिन की माला
दो॰ हली सारि सहसबल। सदा धर्म की सीव ॥
श्वेत क्षत्र शिर शोभित। यह राजा सुग्रीव ॥
इहि विधि सकल दिखाये शारन कपि दल यूह
बाँजै न रावण कालवश। अतिशय गर्व समूह।

इति

इहाँ प्रात जागे रघुराई ॥२॥। पूछा मत सब सचिव बुलाई
कहहु वेगि का करिय उपाई। जामवन्त कह पद शिर नाई
सुनु सर्वज्ञ सकल उर वासी ॥। सर्व रूप सब रहित उदासी ॥
मंत्र कहब निज मति अनुसारा दूत पठाइय बालि कुमारा ॥
नीक मंत्र सब के मन माना। अंगद सन कह कृपा निधाना
बालि तनय बुधि बल गुणधामा लंका जाहु तात मम कामा।
बहुत बुझाइ तुमहिं का कहऊं। परम चतुर मैं जानत अहऊं।

काज हमार तासु हित होई ॥ रिपु सन करहु बतकही सोई
दो॰ प्रभु आज्ञा धरि शीश । चरणवन्दि अंगद कहेउ
सोइ गुण सागर ईश ॥ राम कृपा जापर करहिं
स्वयं सिद्ध सब काज ॥ नाथ मोहिं आदर दयउ
अस विचारि युवराज । तनपुलकितहर्षितभयउ
वन्दि चरण उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सबहि शिर नाई
प्रभु प्रताप उर सहज अशंका । रण बांकुरा बालि सुत बंका ॥
पुर पैठत रावण कर बेटा ॥ खेलत रहा सो होइ गइ भेंटा
बातहिं बात कर्ष बढ़ि आई ॥ युगल अतुल बल पुनितरुणाई
तेहि अंगद कहं लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमि भ्रमाई
निशिचर निकर देखि भट भारी । जहं तहं चले न सकहिं पुकारी
एक एक सन मर्म न कहहीं ॥ समुझि तासु बल चुप होइ रहहीं
भयउ कोलाहल नगर मझारी । आवा कपि लंका जेइ जारी ।
अबधौं कहा करिहि करतारा । अति सभीत सब करहिं विचारा
विन पूंछे मग देहिं बताई ॥ जेहि विलोकु सो जाहि सुखाई
दो॰ गयो सभा दरवार रिपु । सुमिरि राम पद कंज
हंस ठवनि इत उत चितै धीर वीर बल पुञ्ज ॥
तुरित निशाचर एक पठावा ॥ समाचार रावणहिं सुनावा
सुनत वचन बोलेउ दश शीशा आनहुं बोलि कहांकर कीशा
आयसु पाइ दूत बहु धाये ॥ कपि कुञ्जरहि बोलि लै आये
अंगद दीख दशानन वैसा ॥ सहित प्राण कज्जल गिरि जैसा
भुजा विटप शिर शृंग समाना । रोमावली लता तरु नाना ॥
मुख नासिका नयन अरु काना गिरि कन्दरा खोह अनुमाना
गयउ सभा मन नेकु न मुरा ॥ बालि तनय अति बल बांकुरा
उठी सभा सब कपि कहं देखी । रावण उर भा क्रोध विशेषी

दो० यथा मत्त गज यूथ महँ । पंचानन चलि जाय ।
राम प्रताप संभारि उर ॥ बैठ सभहि शिर नाय ॥

कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर मैं रघुबीर दूत दशकन्धर
मम जन कहि तोहिं रही मिताई । तव हित कारण आयउँ भाई
उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती ॥ शिव विरंचि पूजेहु बहु भांती
वर पायउ कीन्हेउ सब काजा । जीतेहु लोक पाल सुर राजा
नृप अभिमान मोह वस किम्बा हरि आनेहु सीता जगदम्बा
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा । सब अपराध क्षमहिं प्रभु तोरा
दशन गहहु तृण कण्ठ कुठारी। पुरजन संग सहित निज नारी
सादर जनक सुता करि आगे । इहि विधि चलहु सकल भय त्यागे

दो० प्रणतपाल रघुवंशमणि त्राहि त्राहि अब मोहिं
सुनतहि आरत वचन प्रभु अभय करहिंगे तोहिं।

रे कपि पोच बोलु संभारी ॥ । मूढ़ न जानसि मोहिं सुरारी ।
कहु निज नाम जनक कर भाई । केहि नाते मानिये मिताई ॥
अंगद नाम बालि कर बेटा ॥ तो सो कबहुँ भई होइ भेटा ।
अंगद वचन सुनत सकुचाना । रहा बालि वानर मैं जाना ।
अंगद ताहि बालि कर बालक उपजेहु वंश अनलकुल घालक
गर्भ न गयउ वृथा तुम जाये । निज मुख तापस दूत कहाये
अब कहु कुशल बालि कहँ अहई विहसि वचन अंगद अस कहई
दिन दश गये बालि पहँ जाई । पूछेहु कुशल सखा उर लाई ।
राम विरोध कुशल जस होई ॥ । सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई ।
सुन शठ भेद होइ मन ताके ॥ श्री रघुबीर हृदय नहिं जाके

दो० हम कुल घालक सत्य तुम कुल पालक दशशीश
अंधो वाधिर न कहहिं अस श्रवण नयन तोहि बीस

शिव विरंचि सुर मुनि समुदाई । चाहत जासु चरण सेवकाई

तासु दूत होइ हम कुल बीरा ॥। ऐसी मति उर बिहर न तोरा॥
सुनि कठोर बाणी कपि केरी ॥। कहत दशानन नयन तरेरी ॥।
खल तव वचन कठिन मैं सहऊं। नीति धर्म सब जानत अहऊं
कह कपि धर्म्म शीलता तोरी ॥ हमहूं सुनी कृत पर तिय चोरी
देखेउ नयन दूत रख वारी ॥। बूड़ि न मरहु धर्म्म व्रत धारी।
नाक कान बिन भगिनि निहारी। क्षमा कीन्ह तुम धर्म विचारी
धर्म्म शीलता तव जग जागी। पावा दरश हमहूं बड़ भागी।

दो० जनि जल्पसि जड़ जन्तु कपि शठ बिलोकु मम बाहु
लोक पालबल बिपुल शशि ग्रसन हेतु जिमि राहु
पुनि नभ सर मम कर निकर करकमलन पर बास
शोभित भयेउ मरालइव शंभु सहित कैलास ॥।

तुम्हरे कटक माह सुन अंगद। मोसन भिरहिं कवन योधा वद
तवप्रभु नारि बिरह बल हीना ॥ अनुज तासु दुख दुखितमलीना
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ ॥ * । बंधु हमार भीरु अति सोऊ।
जामवन्त मंत्री अति बूढ़ा ॥ सो किमि होइ समर आरूढ़ा
शिल्प कर्म जानत नल नीला। है कपि एक महा बल शीला
आवा प्रथम नगर जेहि जारा। सुनि हंसि बोलेउ बालिकुमारा
सत्य वचन कहु निशिचर नाहा सांचहु कीस कीन्ह पर दाहा।
रावण नगर अलप कपि दहई। को अस भूंठ कहै को सुनई
जो अति सुभट सराहेहु रावन। सो सुग्रीव केर लघु धावन ॥
चलै बहुत सो वीर न होई ॥ । पठवा खबरि लेन हम सोई ॥

दो० अब जाना पुर दहेउ कपि बिनु प्रभु आयसु पाइ
गयउन फिरि निज नाथपहं तेहिभय रहेउ लुकाइ
सत्य कहसि दशकंठ तैं। मोहिं न सुनि कछु कोह
कोउन हमारे कटक अस तुम सन लरत जो सोह॥

प्रीति विरोध समान सन करिय नीति अस आहि
जो म्रग पति बध मेडुकहि भलो कहैं को ताहि।
यद्यपि लघुता राम कहँ तोहि बधे बड़ दोष॥
तदपि कठिन दश कंठ सुन क्षत्रि जाति कर रोष
हँसि बोलेउ दश मौलि तब कपि कर गुण बड़ एक
जो प्रति पालै तासु हित। करै उपाय अनेक॥
धन्य कीस जो निज प्रभु काजा। जहँ तहँ नाचहिं परिहरि लाजा
नाँचि कूदि करि लोग रिझाई। पति हित करत कर्म निपुणाई
अंगद स्वामि भक्त तव जाती। प्रभु गुण कस न कहसि एहि भाँती
मैं गुण गाहक परम सुजाना। तव कटु वचन करौं नहिं काना
कह कपि तव गुण गाहकताई। सत्य पवन सुत मोहिं सुनाई॥
बन विधंसि सुत बधि पुर जारा। तदपि न तेइ कृत कछु अपकारा
सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई। दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई॥
देखेउं आइ जो कछु कपि भाषा। तुम्हरे लाज न रोष न माषा॥
दो॰ वक्र उक्ति धनु वचन शर हृदै दह्यो दश कीस॥
प्रति उत्तर गर्जसि मनो। काढ़त भट दश शीश
जो अस मति पितु खायहु कीसा कहि अस वचन हँसा दशशीशा
पितहि खाइ खातेउं अब तोही अबही समुझि परा कछु मोही
बालि विमल यश भाजन जानी हतौं न तोहिं अधम अभिमानी
कहु रावण रावण जग केते॥ मैं निज श्रवण सुने सुन तेते।
बलि जीतन एक गयउ पताला। राखा बांधि शिशुन हय शाला
खेलहिं बालक मारहिं जाई॥ दया लागि बलि दीन्ह छुड़ाई
एक बहोरि सहस भुज देखा॥ धाइ धरा जनु जन्तु विशेषा॥
कौतुक लागि भवन लै आवा। सो पुलस्त्य मुनि जाइ छुड़ावा।
दो॰ एक कहत मोहिं सकुच अति रहा बालि की कांख

तिन महँ रावण कवन तैं सत्य कहहु तजि माख।

सुन शठ सोइ रावण बल शीला। हर गिरि जान जासु भुज लीला
जानु उमापति जासु सुराई ।। पूजे जेहि शिर सुमन चढ़ाई
शिर सरोज निज करन्ह उतारी। पूजे अमित वार त्रिपुरारी ॥
भुज विक्रम जानहिं दिगपाला। शठ अजहूं जिन के उर शाला
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई। जब जब भिरेउं जाइ वरिआई
जिन के दशन कराल न फूटे। उर लागत मूलक इव टूटे ॥
जासु चलत डोलत इमि धरणी। चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरणी।
सोइ रावण जग विदित प्रतापी ।। सुनेन श्रवण अलीक प्रलापी

दो० तेहि रावण कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान।
रे कपि वर्वर खर्ब खल । अब जाना तव ज्ञान।

सुनि अंगद सकोप कह वानी। बोल संभारि अधम अभिमानी
सहस बाहु भुज गहन अपारा। दहन अनल सम जासु कुठारा
जासु परसु सागर खर धारा ।। बूड़े नृप अगणित बहु बारा
तासु गर्व जेहि देखत भागा ।। सो नर किमि दशकण्ठ अभागा
राम मनुज कस रे शठ बंगा । धन्वी काम नदी पुनि गंगा
पशु सुर धेनु कल्प तरु रूखा । अन्न दान पुनि रस पीयूषा
वैन तेय खग अहि सहसानन। चिन्तामणि की उपल दशानन।
सुन मति मन्द लोक वैकुण्ठा ।। लाभ कि रघुपति भक्ति अकुण्ठा

दो० सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि
कस रे शठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि

सुन रावण परिहरि चतुराई ।। भजसि न कृपा सिंधु रघुराई ॥
जो खल भयसि राम कर द्रोही। ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥
मूढ़ मृषा जनि मारसि गाला । राम बैर होइहि अस हाला।
तव शिर निकर कपिन के आगे। परिहैं धरणि राम शर लागे ॥

तब तब शिर कंदुक इव नाना ॥ खेलहिं भालु कीस चौगाना
जबहि समर कोपहिं रघुनायक। छूटहिं अति कराल बहु शायक
तब कि चलिहि अस गालतुम्हारा अस विचारि भजु राम उदारा।
सुनत वचन रावण पर जरा ॥ वरत अनल महँ जनु घृत परा
सो॰ कुम्भकर्ण सम बंधु मम ॥ सुत प्रसिद्ध शक्रारि ॥
मोर पराक्रम सुनेसिनहिं। जितेउँ चराचर झारि ॥
शठ शाखा मृग जोरि सहाई ॥ बांधा सिंधु इहै प्रभुताई ॥ ॥
लांघहिं खग अनेक बारीसा ॥ सूर न होहिं सुनहु जड़ कीसा।
मम भुज सागर जल बल पूरा । जहँ बूड़े सुर नर वर शूरा ॥ ॥
बीस पयोधि अगाध अपारा ॥ को असवीर जो पावहिं पारा
दिग पालन मैं नीर भरावा ॥ भूप सुयश खल मोहिं सुनावा
जौ पै समर सुभट तव नाथा ॥ पुनिपुनि कहसि जासु गुणगाथा।
तौ वशीठ पठवा केहि काजा ॥ रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा
हर गिरि मथन निरखि मम बाहू। पुनि शठ कपि निजस्वामि सराहू
सो॰ शूर कवन रावण सरिस । निज कर काटे शीश ॥
हुमेउँ अनल महं बार बहु हर्षित साखि गिरीश ॥
जरत विलोकउँ जबहिं कपाला । विधि के लिखे अंक निज भाला
नर के कर आपन बध बाँची । हँसेउँ जानि विधिगिरा असांची
सो मन समुझि त्रास नहिं मोरे ॥ लिखा विरंचि जरठ मति भोरे ॥
आन वीर को शठ मम आगे । पुनिपुनि कहसि लाज परित्यागे
कह अंगद सलज्ज जग माहीं । रावण तोहि समान कोउ नाहीं।
लाजवन्त तव सहज सुभाऊ । निजगुण निजमुख कहसिन काऊ
शिर अरु शैल कथा चित रही । तातें बार बीस तैं कही ॥
सो भुज बल राखेउ उर घाली। जितेउ न सहसबाहु बलि बाली
सुन मति मन्द देहि अब पूरा ॥ काटे शीश न होइय शूरा ॥

बाजीगर कहँ कहिय न बीरा। काटै निज कर सकल शरीरा।

दो० जरहिं पतंग विमोह बस भार ब हहिं खर वृन्द।

ते नहिं शूर कहावहीं ॥ समुझि देखु मति मन्द।

अब जनि बल बढ़ाव खलकरही सुनमम वचन मान परिहरही

दशमुख मैं न बशीठी आयउ अस विचारि रघुवीर पठायउ।

बार बार असि कहेउ कृपाला। नहिं गजारि यश बधे शृगाला

मन महं समुझि वचन प्रभु केरे। सहेउं कठोर वचन शठ तेरे॥

नाहित करि मुख भंजन तोरा। लै जातेउं सीतहि बर जोरा॥

जानेउं तव बल अधम सुरारी। सूने हरि आनी पर नारी।

तैं निशिचर पति गर्व बहूता। मैं रघुपति सेवक कर दूता॥

जो न राम अपमानहिं डरऊं॥ तव देखत अस कौतुक करऊं

दो० ताहि पटकि महि सेन हति चौपट करि तेउं गाउँ

मन्दोदरी समेत शठ॥ जनक सुतहि लै जाउँ॥

जो अस करउं न तदपि बड़ाई। मुयेवधे कछु नहिं मनु साई॥

कौलि कामवस कृपण विमूढ़ा अति दरिद्र अयशी अति बूढ़ा

सदा रोग वस सन्तत क्रोधी॥ राम विमुख श्रुति सन्त विरोधी।

तन पोषक निन्दक अघ खानी। अन जीवत सम चौदह प्रानी।

अस विचारि खल बधौं न तोहीं। अब जनि रिसि उपजावसि मोहीं

पुनि सकोप कह निशिचरनाथा अधर दशन गहि मींजत हाथा

रे कपि पोच मरण अबचहसी। छोटे वदन बात बड़ि कहसी॥

कटु जल्पसि जड़ कपिबल जाके बुधि बल तेज प्रतापन ताके॥

दो० अगुण अमान विचारि तेहि दीन्ह पिता बन वास।

सो दुख अरु युवती विरह पुनि निशि दिन मम त्रास

जिनके बल को गर्व तोहिं ऐसे मनुज अनेक॥

खाहिं निशाचर दिवस निशि मूढ़ समुझ तजि टेक।

जब ते कीन्ह राम कर निन्दा । क्रोधवन्त तब भयउ कपिन्दा।
हरि हर निन्दा सुनहिं जे काना । होइ पाप गो घात समाना ॥१॥
कटकटाइ कपि कुञ्जर भारी । दोउ भुज दण्डतमकिमहि मारी
डोलत धरणि सभासद खसे ॥ । चले भागि भय मारुत ग्रसे ॥
गिरत दशानन उठा संभारी ॥२॥ भूतल परेउ मुकुट षट चारी
कछु निजकरलै शिरन संभारे । कछु अंगद प्रभु पास पवारे ॥
आवत मुकट देखि कपि भागे । दिनहीं लूक परन विधि लागे।
कैं रावण करि कोप चलाये । कुलिश चारि आवत अतिधाये
कह प्रभु हँसि जनि हृदय डेराहु । लूकन असनि केतु नहि राहु।
ए किरीट दशकन्धर केरे ॥ । आवत बालि तनय के प्रेरे

दो० कूदि गहे कर पवनसुत । आनि धरे प्रभु पास ॥।
कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकाश।

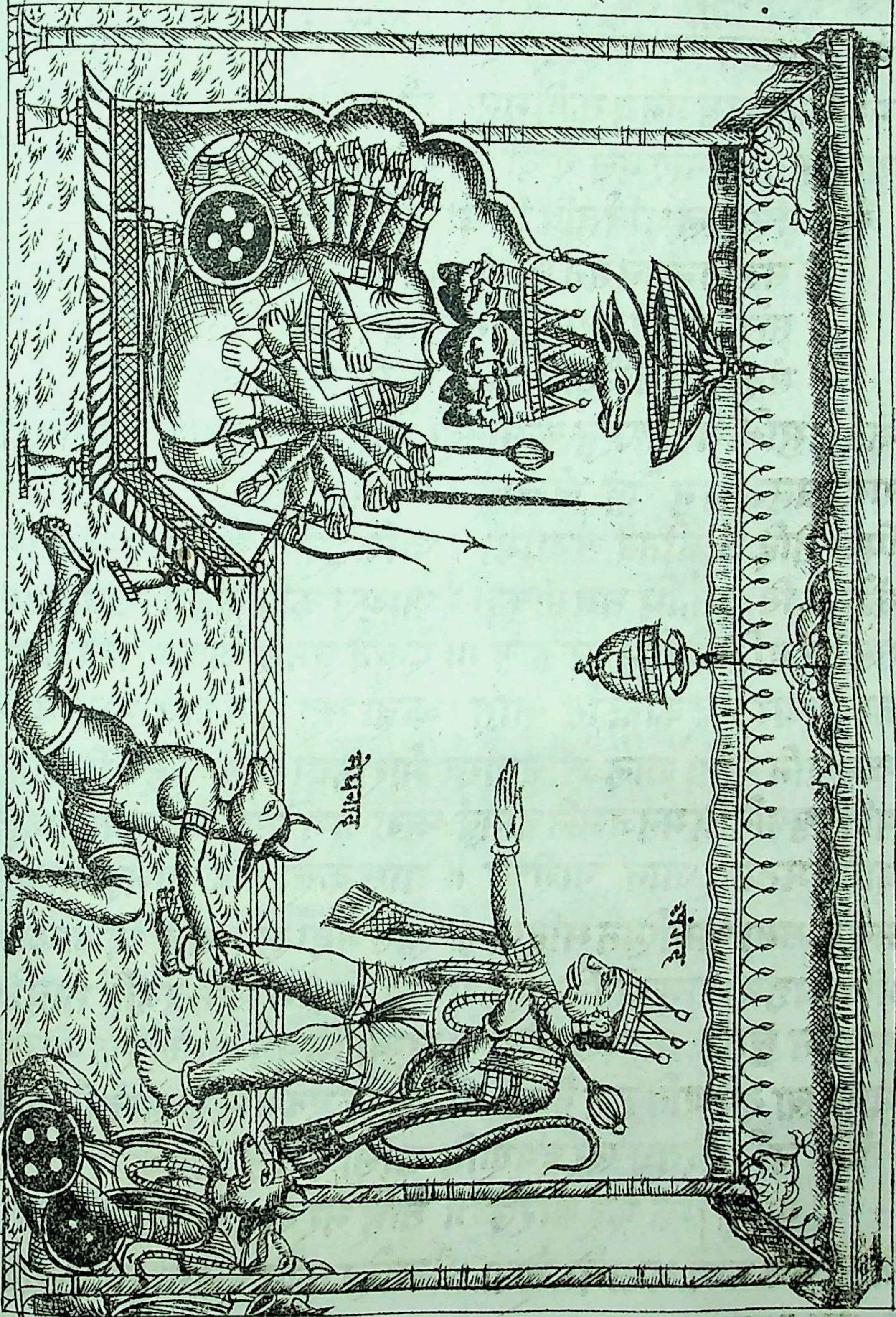
उहाँ कहत दश कन्ध रिसाई ॥ धरि मारहु कपि भागि न जाई
इहि विधि वेगि सुभट सब धावहु खाहु भालु कपि जहंतहंपावहु
मर्दि अकीस करि फेरि दोहाई। जिअत धरहु तपसी दोउ भाई
पनि सकोप बोलेउ युवराजा । गाल बजावत तोहि न लाजा
मरु गरु काटि निलज कुलघाती बल विलोकि बिहरतनहिंछाती
रे तिय चोर कुमारग गामी ॥ । खल मल राशि मन्द मति कामी
सन्निपात जल्पसि दुर्वादा ॥ ॥ भयसि कालवस शठमनुजादा
याको फल पावहु गो आगे ॥ वानरभालु चपेटनि लागे।
राम मनुज बोलत अस बानी । गिरहि न तव रसना अभिमानी
गिरिहैं रसना संशय नाहीं ॥ । शिरन समेत समर महि माहीं

सो० सो नर क्यों दशकन्ध । बालिवधेउजेहिएकशर
बीसहु लोचन अन्ध ॥धृकतवजन्मकुजातिजड़
तव शोणित की प्यास । तृषित राम शायकनिकर

तजेउ तोहिं तेहि आशा। कटु जल्पसि निशिचर अधम
मैं तव दशन तोरिबे लायक। आयसु मैं न दीन्ह रघुनायक
अस रिसि होत दशो मुख तोरों। लंका गहि समुद्र महँ बोरों ॥
गूलर फल समान तव लंका। बसहि मध्य जनु जन्तु अशंका
मैं बानर फल खात न बारा ॥ आयसु दीन्ह न राम उदारा॥
युक्ति सुनत रावण मुसुकाई ॥ मूढ़ सिखेसि कहँ अधिक ढिठाई
बालि कबहुं अस गाल न मारा। मिलि तपसिन तें भयसि लबारा
सांचेहु मैं लबार भुज बीहा। जौं न उपारों तव दश जीहा
राम प्रताप सुमिरि कपि कोपा। सभा माझ करि प्रण पद रोपा
जो मम चरण सकसि शठ टारी। फिरहिं राम सीता मैं हारी।
सुनहु सुभट सब कह दश शीशा पद गहि धरणि पछारहु कीशा
इन्द्रजीत आदिक बलवाना। हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना।
झपटहिं करि बल विपुल उपाई पद न टरै बैठहिं शिर नाई
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती टरै न कीश चरण इहि भांती।
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी। मोह विटप नहिं सकहिं उपारी
सो॰ भूमि न छाड़ै कपि चरण। देखत रिपु मद भागा।
कोटि विघ्न जिमि संत कहँ तदपि नीति नहिं त्यागा
कपि बल देखि सकल हिय हारे। उठा आप कपि के पर चारे॥
गहत चरण कह बालि कुमारा। मम पद गहे न तोर उबारा।
गहसि न राम चरण शठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई
भये तेजहत श्री सब गई ॥ मध्य दिवस जिमि शशि सोहई
सिंहासन बैठा शिर नाई ॥ ॥ मानहुं सम्पति सकल गंवाई॥
जगदाधार प्राण पति रामा ॥ तासु विमुख किमि लह विश्रामा
उमा राम कर भृकुटि विलासा। होइ विश्व पुनि पावै नाशा।
तृण ते कुलिश कुलिश तृण करही तासु दूत पद कहु किमि टरही

सं॰ २५

रावण की सभा में अंगद का जाना और पद रोपना और मेघनादादि राक्षस योद्धाओं से अंगद का पैर न हटना ॥



सुनि कपि कही नीति बिधि नाना। मानत नाहिं काल नियराना॥
रिपु मद मथि प्रभु सुयश सुनाये। अस कहि चले बालि नृप जाये॥
अबहीं मुख का करौं बड़ाई। हतिहौं तोहि खेलाइ खेलाई॥
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा। सो सुनि रावण भयो दुखारा॥
यातुधान अंगद बल देखी॥ भे व्याकुल अति हृदय विशेखी॥

दो० रिपुबल धर्षि हर्षि हिय। बालि तनय बल पुञ्ज।
सजल नयन तन पुलकि मन गहे राम पद कञ्ज॥
सांझ जानि दशकण्ठ तब भवन गयो बिलखाइ॥
मंदोदरी अनेक विधि। बहुरि कहा समुझाइ॥

कंत समुझि मन तजहु कुमतिही। सोह न समर तुमहिं रघुपतिही॥
राम अनुज धनु रेख खंचाई। सो नहिं लांघेहु अस मनुसाई॥
पिय तेहि ते जीतब संग्रामा। जाके दूतन के अस कामा॥
कौतुक सिंधु नांघि तव लंका॥ आयउ कपि केहरी असंका॥
रखवारे हति विपिन उजारा॥ देखत तुमहिं अक्षय जिन्ह मारा॥
जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा। कहाँ रहा बल गर्व तुम्हारा॥
अब पति मृषा गाल जनि मारहु मोर कहा कछु हृदय विचारहु॥
पति रघुपतिहि मनुज जनि जानहु अग जग नाथ अतुल बल मानहु॥
बाण प्रताप जान मारीचा॥ तासु कहा नहिं मानेहु नीचा॥
जनक सभा अगणित महिपाला रहेउ तहाँ तुम बलै विशाला॥
भंजि धनुष जानकी विवाही॥ तब संग्राम जितेहु नहिं ताही॥
सुरपति सुत जानाबल थोरा॥ राखा जियत आँखि इक फोरा॥
सूपनखा की गति तुम देखी॥ तदपि हृदय नहिं लाज विशेखी॥

दो० बधि विराध खर दूषणहि लीला हतेउ कबंध॥
बालि एक शर मारेउ॥ तेहि नर कह दशकंध॥

जेहि जल नाथ बधायो हेला॥ उतरेउ कपि दल सहित सुबेला॥

कारुणीक दिनकर कुल केतू ॥ दूत पठायउ तव हित हेतू ।
सभा मांझ जेइ तव बल मथा । करि वरूथ महं मृगपति यथा
अंगद हनुमत अनुचर जाके । रण बांकुरे वीर अति बांके ॥
तेहि कहं पिय पुनि पुनि नर कहहू मुधा मान ममता मद गहहू
अहह कन्त कृत राम विरोधा ॥ काल विवस मन होय न बोधा ।
काल दण्ड गहि काहु न मारा । हरे धर्म बल बुद्धि विचारा ।
निकट काल जेहि आवत साईं । तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं
दो० दुइ सुत मारेउ दहेउ पुर । अजहुं पूरि पिय देहु ।
कृपा सिंधु रघुबीर भजि । नाथ विमल यश लेहु ।
नारि वचन सुनि विशिख समाना सभा गयउ उठि होत बिहाना
बैठा जाइ सिंहासन फूली ॥ । अति अभिमान त्रास सब भूली
इहां राम अंगद हिं बुलावा ॥ आइ चरण पंकज शिर नावा ।
अति आदर समीप बैठारी ॥ । बोले विहंसि कृपाल खरारी ॥
बालि तनय अति कौतुक मोहीं तात सत्य कहु पूछौं तोहीं ॥
रावण यातुधान कुल टीका । भुज बल अतुल जासु जग लीका
तासु मुकुट तुम चारि चलाये । कहहु तात कवने विधि पाये
कहा बालि सुत सुनहु खरारी ॥ मुकुट न होइ भूप गुण चारी ॥
साम दाम अरु दण्ड विभेदा । नृप उर बसहिं नाथ कह वेदा ॥
नीति धर्म के चरण सुहाये ॥ अस जिय जानि नाथ पहं आये
दो० धर्म हीन प्रभु पद विमुख काल विवस दश शीश
आये गुण तजि रावणहिं । सुनहु कोशला धीश ॥
परम चतुरता श्रवण सुनि विहसे राम उदार ॥ ३ ॥
समाचार तब सब कहे ॥ गढ़ के बालि कुमार ॥
रिपु के समाचार जब पाये ॥ राम सचिव तब निकट बुलाये
लंका बंका चारि दुआरा ॥ । केहि विधि लागिय करहु विचारा

तब कपीश ऋच्छेश विभीषण। सुमिरि हृदय दिनकर कुलभूषण।
करि विचार तिन मंत्र दृढ़ावा ॥ । चारि अनी कपि कटक बनावा।
यथा योग सेना पति कीन्हे ॥ । यूथप सकल बोलि तिन लीन्हे।
प्रभु प्रताप सब कहि समुझाये । सिंहनाद करि सब कपि धाये।
हर्षित राम चरण शिर नावैं ॥ । गहि गिरि शिखर भालु कपि धावैं।
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा । जय रघुवीर कोशला धीशा।
जानत परम दुर्ग गढ़ लंका ॥ । प्रभु प्रताप कपि चले अशंका।
घटा टोप करि चहुँ दिशि घेरी । मुखहिं निशान बजावहिं भेरी।

दो॰ जयति राम भ्राता सहित जय कपीश सुग्रीव ॥
गर्जें केहरि नाद कपि ॥ भालु महा बल सींव।

लंका भयउ कोलाहल भारी ॥। सुनेउ दशानन अति हंकारी।
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई ॥ विहसि निशाचर सेन बुलाई।
आये कीश काल के प्रेरे ॥ । क्षुधा वन्त रजनी चर मेरे ॥
अस कहि अट्टहास शठ कीन्हा। गृह बैठे अहार विधि दीन्हा।
सुभट सकल चारिहु दिशि जाहू। धरि धरि भालु कीश सब खाहू।
उमा रावणहिं अस अभिमाना जिमि टिटिही खग सुतै उताना।
चले निशाचर आयसु मांगी । गहि कर भिंडिपाल बर सांगी।
तोमर मुद्गर परिघ प्रचण्डा । शूल कृपाणि परसु गिरि खण्डा।
जिमि अरुणोपल निकर निहारी धाये खग शठ मांस अहारी ॥
चोंच भंग दुख तिनहिं न सूझा तिमि धाये मनुजाद अबूझा।

दो॰ नानायुध शर चाप धरि यातु धान बल बीर ॥
कोट कंगूरन चढ़ि गये कोटि कोटि रण धीर।

कोट कंगूरन सोहहि कैसे ॥ । मेरु शृंग पर जनु घन बैसे ॥
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ। सुनि सुनि सुभटन के मन चाऊ।
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा ॥ सुनि कादर उर होइ दरारा ॥

देखि न जाइ कपिन कै ठट्टा। अति बिशालतनुभालुसुभट्टा।
धावहिं गनहिं न औघट घाटा पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा।
कट कटाइ कोटिन भट गर्जहिं। दशनन ओठ काटि अतितर्जहिं
उत रावण इत राम दोहाई ॥ । जयति जयति करि परी लराई।
निशिचर शिखर समूह ढहावहिं कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं

छं० धरि कुधर खण्ड प्रचण्ड मर्कट भालु गढ़पर डारहीं।
झपटहिं चरण गहि पटकि महि महँ बार बार प्रचारहीं
अति तरुण तरल प्रताप तर्जहिं तमकि गढ़ पर चढ़ि गये
कपि भालु चढ़ि मन्दिरन जहँ तहँ राम यश गावत भये॥

दो० एक एक गहि रजनिचर पुनि कपि चले पराइ।
ऊपर आपुन तर असुर गिरहिं धरणि पर आइ

राम प्रताप प्रबल कपि यूथा ॥। मर्द्दहिं निशिचर निकर बरूथा।
चढ़े दुर्ग पुनि जहं तहं बानर। जय रघुबीर प्रताप दिवाकर॥
चले तमीचर निकर पराई ॥ । प्रबल पवन जिमि घन समुदाई
हा हा कार भयो पुर भारी॥५॥ रोवहिं आरत बालक नारी॥
सब मिलि देहिं रावणहिं गारी। राज करत जेइ मृत्यु हँकारी।
निज दल बिचल सुना जब काना फिरे सुभट लंकेश रिसाना॥
जो रण बिमुख फिरा मैं जाना। तेहि मारिहौं कराल कृपाना
सर्बस खाइ भोग करि नाना ॥। समर भूमि भा दुर्लभ प्राना।
उग्र बचन सुनि सकल डेराने । फिरे क्रोध करि सुभट लजाने
सन्मुख मरण बीर की शोभा । तब तिन तजा प्राण कर लोभा

दो० बहु आयुध धरि सुभट सब भिरहिं प्रचारि प्रचारि
कीन्हे ब्याकुल भालु कपि परिघ प्रचण्डनि मारि।

भय आतुर कपि भागन लागे। यद्यपि उमा जीति हैं आगे
कोउ कह कहँ अंगद हनुमन्ता। कहँ नल नील द्विबिद जमवन्ता

निज दल विचल सुना हनुमाना पश्चिम द्वार रहा बलवाना ॥
मेघनाद तहँ करै लराई ॥ । टूटन द्वार परम कठिनाई ॥
पवन तनय मन भा अति क्रोधा गर्जेउ प्रलय काल सम योधा
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा । गहि गिरि मेघनाद पर धावा
भंजेउ रथ सारथी निपाता । तासु हृदय महं मारेउ लाता
दूसर सूत विकल तेहि जाना स्यंदन घालि तुरत घर आना

दो० अंगद सुनेउ कि पवन सुत गढ़ पर गयउ अकेल
समर बाकुरा बालि सुत । तर्कि चलेउ करि खेल ।

युद्ध विरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर । राम प्रताप सुमिरि उर अंतर
रावण भवन चढ़े दोउ धाई ॥ करहिं कोशलाधीश दुहाई ।
कलश सहित सब भवन ढहावहिं देखि निशाचर अतिभय पावहिं
नारि वृन्द कर पीटहिं छाती । अब दोउ कपि आये उतपाती
कपि लीला करि सबहि डरावहिं रामचन्द्र कर सुयश सुनावहिं
पुनि कर गहि कंचन के खंभा । करन लगे उत पात अरंभा ।
कूदि परे रिपु कटक मझारी ॥ लागे मर्दन भुज बल भारी ॥
काहू लात चपेटन केहू ॥ ॥ । भजहु न रामहिं सो फल लेहू

दो० एक एक सन मर्दि करि तोरि चलावहिं मुण्ड
रावण आगे परहिं ते ॥ जनु फूटहिं दधि कुण्ड

महा महा मुखिया जे पावहिं । ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं
कहहिं विभीषण तिन के नामा । देहिं राम तिनहूँ निज धामा
खल मनुजाद जो आमिष भोगी पावहिं गति जो याचत योगी
उमा राम मृदु चित करुणाकर वैर भाव मोहिं सुमिरत निशिचर
देहिं परम गति अस जिय जानी को कृपाल अस अहे भवानी
जे अस प्रभु न भजहिं भ्रम त्यागी ते मति मन्द सो परम अभागी
अंगद अरु हनुमंत प्रवेशा ॥ । कीन्ह दुर्ग अति कह अवधेशा

लंका महं कपि सोहहिं कैसे । मथहिं सिन्धु इइ मन्दर जैसे ॥
दो० भुज बल रिपुदल दलि मलेउ देखि दिवस कर अंत
कूदे युगल प्रयास बिनु । आये जहं भगवंत ॥
प्रभु पद कमल शीश तिन नाये । देखि सुभट रघुपति मन भाये ।
राम कृपा करि युगल निहारे । भये विगत श्रम परम सुखारे ।
गये जानि अंगद हनुमाना । फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
यातुधान प्रदोष बल पाई ॥ धाये करि दश शीश दुहाई ॥
निशिचर अनी देखि कपि फिरे कटकटाइ जहं तहं भट भिरे ॥
दोउ दल भिरहिं प्रचारि प्रचारी लरहिं सुभट नहिं मानहिं हारी ।
बीर तमीचर सब अति कारे ॥ नाना बरण बली मुख भारे ॥ ॥
सबल युगल दल सम अति योधा बिविध प्रकार लरहिं करि क्रोधा
प्रावट शरद पयोद घनेरे ॥ । लरत मनहुं मारुत के प्रेरे ।
अवनि अकंपन अरु अति काया बिचरत सेन करी तिन माया
भयउ निमिष महं अति अंधियारा काहु न सूझै आपन पारा
मारु खाहु सब करहिं पुकारा । वृष्टि होइ रुधिरोपल क्षारा ॥
दो० देखि निबिड़ तम दशहु दिश कपि दल भयउ खंभार
एकहि एक न देखत ॥ जहं तहं करहिं पुकार ।
सकल मर्म रघुनायक जाना । लिये बोलि अंगद हनुमाना
समाचार सब कहि समुझाये सुनत कोपि कपि कुंजर धाये
पुनि कृपाल हंसि चाप चढ़ावा पावक शायक सपदि चलावा
भयउ प्रकाश कतहुं तम नाहीं ज्ञान उदय जिमि संशय जाहीं
तबहिं बली मुख पाइ प्रकाशा धाये कोपि बिगत श्रम त्रासा
हनूमान अंगद रण गाजे ॥ हांक सुनत रजनीचर भाजे ॥
भागत भट पटकहिं गहि धरणी करहिं भालु कपि अद्भुत करणी
गहि पद डारहिं सागर माहीं । मकर उरग झष धरि धरि खाहीं

दो० कछु घायल कछु रण परे कछु गढ़ चले पराइ ॥
गर्जेउ मर्कट भालु भट । रिपु दल बल बिचलाइ ।
निशा जानि कपि चारिउ अनी। आये जहँ कोशल धनी ॥
राम कृपा करि चितवा जबहीं। भये बिगत श्रम वानर तबहीं
उहां दशानन सचिव हंकारे ॥। सब सन कहेसि सुभट जे मारे ।
आधा कटक कपिन संहारा ॥। कहहु बेगि का करिय बिचारा
माल्यवंत एक जरठ निशाचर । रावण मात पिता मंत्री वर ॥
बोला वचन नीति अति पावन। तात सुनहु कछु मोर सिखावन
जब ते तुम सीता हरि आनी ॥ असगुन होहिं न जात बखानी
वेद पुराण जासु यश गावा ॥। तासु बिमुख सुख काहुन पावा
दो० हिरण्याक्ष भ्राता सहित। मधु कैटभ बलवान ॥
जेइ मारेउ सोइ अवतरेउ कृपा सिंधु भगवान ॥
काल रूप खल बल दहन गुण गार घन बोध ।
जिहि सेवहिं शिव कमलभव तिहि सन कौन विरोध
परिहरि बैर देहु वैदेही ॥। भजहु कृपा निधि परम सनेही
ताके वचन बाण सम लागे ॥ करिया मुख करि जाहु अभागे
बूढ़ भयसि नत मरतेउँ तोहीं । अब जनि वदन देखावसि मोही
तेइ अपने मन अस अनुमाना बधै चहत यहि कृपा निधाना
सो उठि गयउ कहत दुर्वादा ॥ तब सकोप बोलेउ घन नादा ॥
कौतुक प्रात देखियहु मोरा ॥। करिहों बहुत कहत हौं थोरा
सुनि सुत वचन भरोसा आवा। प्रीति समेत निकट बैठावा ॥
करत विचार भयउ भिनुसारा ॥ लगे भालु कपि चारिहु द्वारा।
कोपि कपिन दुर्गम गढ़ घेरा । नगर कोलाहल भयउ घनेरा
विविध अस्त्र गहि निशाचर धाये गढ़ ते पर्वत शिखर ढहाये।
छं० ढाहे महीधर शिखर कोटिन विविध विधि गोला चले

घहराति जिमि पवि पातगर्जत प्रलयके जनबादले
मर्कट विकटभट जुटत कटत नलरत तन जर्जर भये
गहि शैल ते गढ़ पर चलावहिं जहँसो तहं निशिचरहये

दो० मेघनाद सुनि श्रवण अस गढ़ पुनि छेंका आइ
उतरि दुर्ग तें वीर वर। सनमुख चला बजाइ

कहँ कोशला धीश दोउ भ्राता। धन्वी सकल लोक विख्याता।
कहँ नल नील द्विविद सुग्रीवा। कहं हनुमत अंगद वलसींवा
कहां विभीषण भ्राता द्रोही। आजु शठहि हठि मारउं ओही
अस कहि कठिन बाण संधाने अतिशय कोपिश्रवणलागिताने
शर समूह सो छांडन लागा॥ जनु सपक्ष धावें बहु नागा।
जहँ तहं परत देखिये वानर। सनमुखहोइ नसकत तेहि अवसर
भागे भय व्याकुल कपिऋच्छा बिसरी सबहि युद्ध की इच्छा
सो कपि भालु न रण महँ देखा। कीन्हेसि जेहि न प्राण अवशेषा

दो० मारेसि दश दश विशिख उर परे भूमिसबवीर
सिंहनाद करि गर्ज तब। मेघनाद रण धीर॥

देखि पवन सुत कटक बेहाला। क्रोध वन्त धावा जनु काला।
महा महीधर तमकि उपारा॥ अति रिसि मेघनाद पर डारा।
आवत देखि गयउ नभ सोई॥ रथ सारथी तुरासब खोई॥
बार बार पचार हनुमाना॥। निकट न आव मरम सो जाना
राम समीप गयउ घन नादा॥नाना भांति कहत दुर्बादा।
अस्त्र शस्त्र बहु आयुध डारे। कौतुकही प्रभु काटि निवारे।
देखि प्रभाव मूढ़ खिसियाना॥करै लाग माया विधि नाना।
जिमि कोउ करै गरुड़ सन खेला डरपावहि गहि स्वल्प सपेला॥

दो० जासु प्रबल माया विवस शिव विरंचि बड़ छोट
ताहि देखावे रजनिचर। निज माया मति खोट।

नभ चढ़ि वरषै विपुल अंगारा। महि ते प्रगट होइ जल धारा।
नाना भांति पिशाच पिशाची। मारु काटु धुनि बोलहिं नाची
कीन्हेसि वृष्टि रुधिर कच हाड़ा। वर्षै कबहु उपल बहु छांड़ा।
वर्षि धूरि कीन्हेसि अंधियारा। सूझन आपन हाथ पसारा
अकुलाने कपि माया देखे ॥। सब कर मरण बना इह लेखे
कौतुक देखि राम मुसुकाने ॥। भये सभीत सकल कपि जाने
एकहिं वाण काटि सब माया। जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया
कृपादृष्टि कपि भालु विलोके। भये प्रबल रण रहहिं न रोके।
दो० आयसु मांगी राम पहँ ॥ अंगदादि कपि साथ।
लक्ष्मण चले सकोप तब वाण शरासन हाथ ॥
जलजनयन उर बाहु विशाला। हिम गिरि वरण कछुक इक लाला
वहां दशानन सुभट पठाये ॥ नाना अस्त्र शस्त्र गहि धाये
भूधर विटपायुध धरि भारी।। धाये कपि जय राम पुकारी।
भिरे सकल जोरी सन जोरी ॥ इत उत जय इच्छा नहिं थोरी
मुष्टिकन लातन दांतन काटहिं। कपि गिरि शिला मारि पुनि डाटहिं
मारु मारु धरु धरु धरु मारु।। शीश तोरि गहि भुजा उपारु
अस धुनि पूरि रही नव खण्डा धावहिं जहं तहं रुण्ड प्रचण्डा
देखहिं कौतुक नभ सुर वृन्दा ॥ कबहुंक विस्मय कबहु अनन्दा
दो० जमेउ गाड़ भरि भरि रुधिर ऊपर धूरि उड़ाइ ॥
जिमि अंगारन राशि पर मृतक धूम रहि छाइ।
घायल बीर विराजहिं कैसे ॥। कुसुमित किंशुक के तरु जैसे।
लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा।। भिरहिं परस्पर करि अति क्रोधा
एकहि एक सकै नहिं जीती ॥ निशिचर छल बल करै अनीती
क्रोधवन्त तब भयउ अनन्ता। भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता ॥
नाना युध प्रहार करि शेषा ॥। राक्षस भयउ प्राण अवशेषा।

नं॰ ३५

मेघनाद और लक्ष्मण जी का घोर युद्ध और संग्राम विषे मेघनाद की शक्ती करके लक्ष्मण जी का मोहि-
त होना और हनुमान जी को लक्ष्मण जी का उठाकर श्री रामचन्द्र जी के निकट लेजाना



हनुमान
लक्ष्मण

रावण सुन निज मन अनुमाना। संकट भये हरिहि मम प्राना।
वीर घालिनी छांडेसि सांगी ॥ तेज पुञ्ज लक्ष्मण उर लागी
मूर्छा भई शक्ति के लागी ॥ तब चलि गयउ निकरभयत्यागी
दो० मेघनाद सम कोटि शत योधा रहे उठाय ॥ ४०॥
जगदाधार अनन्त सो । उठहिं न चला खिसाइ
सुन गिरिजा क्रोधानल जासू। जरै भुवन चारिहु दश आसू
सक संग्राम जीति को ताही।। सेवहिं सुर नर अगजग जाही
यह कौतुक जानहि जन सोई। जेहि पर कृपा राम की होई ॥
संध्या भई फिरी दोउ ऐनी ।। लगे संभारन निज निज सैनी ॥
व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर लक्ष्मण कहँ पूछा करुणाकर
तौ लगि लै आये हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अतिदुखमाना
जामवन्त कह वैद्य सुखेना ।। लंका रह पठइय कोउ लेना ॥
धरि लघु रूप गये हनुमन्ता ।। आनेउ भवन समेत तुरन्ता ॥
सो० रघुपति चरण सरोज शिर नायउ आइ सुखेन।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवन सुत लेन ॥
राम चरण सरसिज उर राखी। चलेउ प्रभंजन सुत बल भाषी।
उहां दूत एक मरम जनावा ॥ रावण काल नेमि गृह आवा
दश मुख कहा मरम तेहि सुना पुनि पुनि कालनेमि शिर धुना ॥
देखत तुमहि नगर जेहि जारा । तासु पंथ को रोकनि हारा ॥
भजि रघुपतिहि करहु हित अपना तजो नाथ अब सखा कलपना
नील कंज तन सुन्दर श्यामा ।। हृदय राखु लोचन अभिरामा।
अहंकार ममता मद त्यागू।। महा मोह निशि सोवत जागू
काल व्याल कर भक्षक सोई । सपनेहु समर कि जीतै कोई।
दो० सुनि दश कंध रिसान तब तेइ मन कीन्ह विचार
राम दूत कर मरण भल । यह खल नत मोहिं मार

अस कहि चला रची मगमाया । सर मन्दिर बरबाग बनाया ।
मारुत सुत देखा सुभ आश्रम मुनिहि बूझि जल पियौं जाइ श्रम
राक्षस कपट भेष तहँ सोहा ।। मायापति दूतहिं चह मोहा
तुरत पवन सुत नायउ माथा ।। लागा कहन राम गुण गाथा
होत महा रण राम रावणहि ।। जीतहिं राम न संशय यामहि
इहां भये मैं देखौं भाई ।। ।। ज्ञान दृष्टि बल मोहिं अधिकाई
मांगा जल तेइ दीन्ह कमण्डल । कपि कहं नहिं अघाउं थोरे जल
सर मज्जन कर आतुर आवहु ।। दीक्षा देउं ज्ञान जेहि पावहु

दो॰ सर पैठत कपि पद गहे । मकरी अति अकुलान
मकरी सो धरि दिव्यतन चली गगन चढ़ि यान

कपि तव दर्श भइउं निष्पापा । मिटा तात मुनि वर कर श्रापा
मुनि न होइ यह निशिचर घोरा मानहु सत्य वचन कपि मोरा
अस कहि गई अप्सरा जबही । निशिचर निकट गयउ कपि तबही
कह कपि मुनि गुरु दक्षिणा लेहू । पाछे हमहिं मंत्र तुम देहू ।।
सिर लंगूर लपेटि पछारा ।।। निज तनु प्रगटेसि मरती बारा
राम राम कहि छांडेसि प्राना । सुनि मन हर्षि चले हनुमाना
देखा शैल न औषधि चीन्हा सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा
गहि गिरि निशि नभ धावत भयऊ अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ

दो॰ देखा भरत विशाल अति निशिचर मन अनुमानि
बिनु फर सायक मारेउ । चाप श्रवण लगि तानि

परेउ मूर्छि महि लागत सायक सुमिरत राम राम रघु नायक
सुनि प्रिय वचन भरत उठि धाये कपि समीप अति आतुर आये
विकल बिलोकि कीश उर लावा जागत नहिं बहु भांति जगावा
मुख मलीन मन भयउ दुखारी । कहत वचन भरि लोचन वारी
जेहि विधि राम विमुख मोहि कीन्हा तेहि पुनि यह दारुण दुख दीन्हा

जो मोरे मन वच अरु काया ॥ प्रीति राम पद कमल अमाया।
तो कपि होउ विगत श्रम शूला जो मोपर रघुपति अनुकूला
वचन सुनत उठि बैठ कपीशा कहि जय जयति कोशला धीशा

सो० लीन्ह कपिहि उर लाइ।पुलक गात लोचनसजल
प्रीति न हृदय समाइ ॥ सुमिरि राम रघुकुलतिलक

तात कुशल कहु सुख निधानकी सहित अनुज अरु मातु जानकी
कपि सब चरित संक्षेप बखाने ।भये दुखित मन महं पछिताने
अहह दैव में कत जग जाये। प्रभु के एको काज न आये।
जानि कु अवसर मन धरि धीरा। पुनि कपि सन बोलेउ बलबीरा
तात गहरु होइ है तुहि जाता। काज नशाइहि होत प्रभाता।
चढ़ु मम शायक शैल समेता। पठवौं तोहि जहां कृपा निकेता
सुनि कपि मन उपजा अभिमाना मोरे भार चलहि किमि बाना।
राम प्रताप विचारि बहोरी ।। वन्दि चरण बोलेउ कर जोरी
तव प्रताप उर राखि गुसाईं ।। जै हौं नाथ वाण की नाईं ।।
हर्षि भरत तब आयसु दीन्हा। पद शिर नाइ गवन कपि कीन्हा

दो० तव प्रताप उर राखि प्रभु। जै हौं नाथ तुरन्त ॥
अस कहि आयसु पाय पद बन्दि चले हनुमन्त ॥
भरत बाहु बल शील गुण प्रभु पद प्रीति अपार
जात सराहत मन हिं मन। पुनि पुनि पवन कुमार

उहां राम लक्ष्मणहिं निहारी । बोले वचन मनुज अनुहारी ॥
अर्द्ध राति गइ कपि नहिं आवा राम उठाइ अनुज उर लावा
सकहुन दुखित देखि मोहिं काऊ बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ
मम हित लागि तजे पितु माता। सहेउ विपिन हिम आतप बाता
सो अनुराग कहां अब भाई ।। उठहु विलोकि मोरि बिकलाई
जौं जनित्यौं बन बंधु विछोहू । पिता वचन नहिं मनतेउं वोहू

सुत वित नारि भवन परि वारा। होहिं जाहिं जग वारहि वारा॥
अस विचारि जिय जागहु ताता। मिलहि न जगत सहोदर भ्राता॥
यथा पंख विनु खग पति दीना। मणि बिनु फणि करिवर कर हीना॥
अस मम जिवन वंधु विनु तोही। जो जड़ दैव जिआवै मोही॥
जैहों अवध कवन मुह लाई॥ नारि हेतु प्रिय वंधु गंवाई॥
वरु अपयश सहतेउं जग माही। नारि हानि विशेष क्षति नाहीं॥
अब अवलोकि शोक यह तोरा। सहिं कठोर निठुर उर मोरा॥
निज जननी के एक कुमारा॥ तात तासु तुम प्राण अधारा॥
सौंपेउ मोहिं तुमहिं गहि पानी। सब विधि सुखद परम हित जानी॥
उतर काहि देहों का जाई॥ उठि किन मोहि समुझावहु भाई॥
बहु विधि शोचत शोच विमोचन। श्रवत सलिल राजिव दल लोचन॥
उमा अखण्ड एक रघुराई॥ नरगत भाव कृपाल दिखाई॥

सो॰ प्रभु विलाप सुनि कान। विकल भये वानर निकर
आइ गये हनुमान॥ जिमि करुणा महँ वीर रस

हर्षि राम भेंटे हनुमाना॥ अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना॥
तुरत वैद्य तव कीन्ह उपाई॥ उठि बैठे लक्ष्मण हरषाई॥
हृदय लाइ भेंटे प्रभु भ्राता॥ हर्षे सकल भालु कपि व्राता॥
पुनि कपि वैद्य तहां पहुंचावा। जेहि विधि तबहिं ताहि ले आवा॥
यह वृत्तान्त दशानन सुनेऊ॥ अति विषाद पुनि पुनि शिर धुनेऊ॥
व्याकुल कुम्भकर्ण पहँ गयऊ। करि बहु यतन जगावत भयऊ॥
जागा निशिचर देखिय कैसा। मानहुं काल देह धरि वैसा॥
कुम्भकर्ण पूछा सुन भाई॥ काहे तव मुख रहा सुखाई॥
कथा कही तेइ सकल भवानी। जेहि प्रकार सीता हरि आनी॥
तात कपिन निशिचर संहारे॥ महा महा योधा सब मारे॥
दुर्मुख सुर रिपु मनुज अहारी॥ भट अति काय अकंपन भारी॥

रावणकी कुम्भकरण के पास जाय जगाना और अनेक इत्यादि वचन कहि श्री राम चन्द्र से युद्ध करने के निमित्त समझाना



अपर महोदर आदिक वीरा ॥ परे समर महँ सब रणधीरा ॥

दो० दशकन्धर के वचन सुनि कुम्भकरण बिलखान
जगदम्बा हरि आनि के शठ चाहसि कल्यान

भल न कीन्ह तैं निशिचर नाहा अब मोहिं आनि जगायहु काहा
अजहुं तात त्यागहु अभिमाना भजहु राम होइहि कल्याना ॥
हैं दससीस मनुज रघुनायक । जाके हनूमान से पायक ॥
अहह बंधु तैं कीन्ह खुटाई । प्रथमहिं मोहिं न जगायहु आई
कीन्हेहु प्रभु विरोध तेहि देवक । शिव विरंचि सुर जाके सेवक
नारद मुनि मोहिं ज्ञान जो कहेऊ कहतेउँ तोहि समय नहिं रहेऊ
अब भरि अंक भेटु मोहिं भाई । लोचन सफल करौं मैं जाई ।
श्याम गात सरसीरुह लोचन । देखौं जाइ ताप त्रय मोचन

दो० राम रूप गुण सुमिरि मन मगन भयउ क्षण एक ।
रावण मांगेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक

महिष खाइ करि मदिरा पाना ॥ गर्जेउ बज्र घात अनुमाना ॥
कुम्भकर्ण दुर्मद रण रंगा ॥ ॥ चलेउ दुर्ग तजि सेन न संगा
देखि विभीषण आगे आयउ ॥ पुनि पद गहि निज नाम सुनायउ
अनुज उठाय हृदय तेहि लावा । रघुपति भक्त जानि मन भावा ।
तात लात मोहिं रावण मारा ॥ कहत परम हित मंत्र विचारा
तेहि गलानि रघुपति पहँ आयउँ दीन जानि प्रभु के मन भायउँ '
सुनु सुत भयउ काल बस रावन ॥ सो किमि मानै परम सिखावन
धन्य धन्य तैं धन्य विभीषण ॥ भयहु तात निशिचर कुल भूषण
बंधु बंश तैं कीन्ह उजागर ॥। भजहु राम शोभा सुख सागर

दो० मन क्रम वचन कपट तजि भजहु तात रघुबीर ॥ ।
जाहु न निज पर सूझ मोहिं भयउ काल बश बीर ।

बंधु वचन सुनि फिरा विभीषण । आयउ जहँ त्रैलोक्य विभूषण

नाथ भूधराकार शरीरा ॥ ॥। कुम्भकरण आवत रण धीरा।
इतना कपिन सुना जब काना। किल किलाइ धाये हनुमाना
लिये उपारि विटप अरु भूधर। कट कटाइ डारे तिहि ऊपर।
कोटि कोटि गिरि शिखर प्रहारा करहिं भालु कपि एकहिं बारा
गिरे न मुरे टरे नाहिं टारे ॥३। जिमि गज आक फलनि के मारे
तब मारुत सुत मुठिका हनेऊ परेउ धरणि व्याकुल शिर धुनेऊ
पुनि उठि तेइ मारेउ हनुमन्ता घुर्मित घायल परेउ तुरन्ता ॥
पुनि नल नीलहिं आनि पछारेसि जहँ तहँ पटकि पटकि भट मारेसि
चली बली मुख सैन पराई ॥। अति भय त्रसित न कोउ समुहाई
दो० अंगदादि कपि मूर्छित करि समेत सुग्रीव ॥४॥
काँख दाबि कपि राज कहँ चला अमित बलसींव
उमा करत रघुपति नर लीला। खेलत गरुड़ जिमि अहिगण मीला
भृकुटि भंग जिह कालहि खाई ताहि कि ऐसी सोह लराई ॥
जग पावन कीरति विस्तरहीं ॥। गाइ गाइ नर भव निधि तरहीं।
मूर्छा गइ मारुत सुत जागा। सुग्रीवहि तब खोजन लागा
कपि राजहु कर मूर्छा बीती। निबुकि गयेउ तब स्तक प्रतीती
काटेसि दशन नासिका काना गर्जि अकाश चला तेहि जाना
गहेसि चरण धरि धरणि पछारा अति लाघव पुनि उठि तेहि मारा
पुनि आयउ प्रभु पहँ बलवाना जयति जयति जय कृपानिधाना
नाक कान काटे तेहि जानी ॥ फिरा क्रोध करि भानि गलानी
सहज भीम पुनि विनु श्रुति नासा देखत कपि दल उपजा त्रासा।
दो० जय जय जय रघुवंश मणि धाये कपि करि हूह ॥
एकहि बार जो तासु पर। डारे गिरि तरु जूह ॥
कुम्भकर्ण रण रंग विरोधा ।। सनमुख चला काल जनु क्रोधा॥
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई। जनु टीडी गिरि गुहा समाई ॥।

कोटिन गहि शरीर महँ मर्दा ॥ कोटिन मीजि मिलायसि गर्दा
मुख नासिका श्रवण की बाटा । निकसि पराहिं भालु कपि ठाटा
रण मद मत्त निशाचर दृप्पा ॥ मानहुं विश्व ग्रसन कहँ अप्पा
मुरे सुभट रण फिरहिं न फेरे ॥ सूझन नयन सुने नहिं टेरे ।
कुम्भकरण कपि फौंज बिडारी सुनि धाये रजनी चर भारी ।
देखी राम विकट कट कारे । रिपु अनीक नाना विधि आरे

दो॰ सुन सौमित्र विभीषण ॥ सकल संभारहु सैन ।
मैं देखौं खल दल बलहि बोले राजिव नयन ॥

कर सारंग विशिख कटि भाथा । म्रग पति ठवनि चले रघुनाथा
प्रथम कीन्ह प्रभु धनु टंकोरा । रिपु दल बधिर भये सुनि शोरा
धनु संधानि छांड शर लक्षा ॥ । काल सर्प जनु चले सपक्षा ।
अलि बल चले निकर नाराचा । लगे कटन भट विकट पिशाचा
कटहिं चरन शिर उर भुज दण्डा बहुतक वीर होहिं मत खण्डा
घुर्मि घुर्मि घायल महि परहीं ॥। उठहिं संभारि सुभट फिरि लरहीं
लागत बाण जलद जिमि गाजें । बहुतेक देखि कठिन शर भाजें
रुण्ड प्रचण्ड मुण्ड बिनु धावहिं धरु धरु मारु मारु गोहरावहिं

दो॰ क्षण महँ प्रभु के शायकनि काटे विकट पिशाच ।
पुनि रघुपति के त्रोण महँ प्रविशे आर नराच ।

कुम्भकर्ण मन दीख बिचारी ॥ क्षण महँ हते निशाचर भारी
भयउ क्रोध दारुण बल वीरा ॥ करि म्रग नायक नाद गंभीरा ।
कोपि महीधर लिये उपारी ॥ डारेसि जहँ मर्कट भट भारी
आवत देखि शैल प्रभु भारे ॥ शरनि काटि रज सम करि डारे
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक छांडे अति कराल बहु शायक
तन महँ प्रविशि निसरि शर जाहीं जिमि दामिनि घन मांह समाहीं
शोणित श्रवत सोह तन कारे । जिमि कज्जल गिरि गेरु पनारे

कुम्भकर्ण औरश्रीरामचन्द्रका अत्यन्तयुद्धहोना और अनेकवानरादिकों कोएकहीबारकुम्भकर्णके
ऊपरवृक्षशिलादिका डालना और सुग्रीव करके कुम्भकर्णकीनाक कान काटना ॥



विकल विलोकि भालु कपि धाये । बिहँसा जबहिं निकट चलि आये ॥
दो॰ गर्जत धायउ बेगि अति कोटि कोटि गहि कीश ।
महि पटकै गज राज इव शपथ करै दशशीश ।
भागे भालु कपिन के यूथा ॥ । वृक विलोकि जिमि मेष वरूथा ॥
चले भाजि कपि भालु भवानी । विकल पुकारत आरत बानी ॥
यह निशिचर दुकाल सम अहई । कपि कुल देश परन अब चहई ॥
कृपा वारिधर राम खरारी ॥ । पाहि पाहि प्रणतारत हारी ॥
करुणा वचन सुनत भगवाना । चले सुधारि शरासन बाना ॥
राम सेन निज पाछे घाली ॥ । चले सकोप महा बल शाली ॥
खैंचि धनुष शत शर संधाने । छूटे तीर शरीर समाने ॥ ॐ ॥
लागत शर संभारि सो फिरा । कुधर डगमगेउ डोली धरा ॥
लीन्हो तेइ एक शैल उपाटी । रघु कुल तिलक भुजा सोइ काटी ॥
धावा वाम बाहु गिरि धारी ॥ प्रभु सोउ भुजा काटि महि डारी ॥
काटे भुज सोहैं खल कैसे ॥ । पक्ष हीन मन्दर गिरि जैसे ॥ ॥
उग्र विलोकनि प्रभुहि विलोका । मानहु ग्रसन चहत त्रै लोका ॥
दो॰ करि चिकार मुख घोर अति धावा वदन पसार
गगन सकल सुर त्रास अति हा हा कार पुकार ॥
सभय देव करुणा निधि जाने । श्रवण प्रयन्त शरासन ताने ॥
विशिख निकर निशिचर मुख भरेऊ तदपि महा बल भूमि न परेऊ ।
शरनि भरा मुख सन्मुख धावा ॥ काल त्रोण जनु तन धरि आवा ॥
तब प्रभु कोपि तीव्र शर लीन्हा । धड़ तें भिन्न तासु शिर कीन्हा ।
सो शिर परा दशानन आगे ॥ विकल भयउ जिमि फणि मणि त्यागे ॥
धरणि धसै धर धाव प्रचण्डा । तब प्रभु काटि कीन्ह युग खण्डा ॥
परे भूमि जिमि नभ तें भूधर ॥ हेठ दाब कपि भालु निशाचर ।
तासु तेज प्रभु वदन समाना ॥ सुर मुनि सबहिं अचम्भो माना ॥

नभ दुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं ।।जय जय कहि प्रसून सुर वर्षहिं
करि विनती सुर सकल सिधाये। तब तेहि समय देवऋषि आये
गगनो परि हरि गुण गणगाये रुचिर बीर रस प्रभु मनभाये
वेग हतहु खल सुनि कहि गये। राम समर महँ शोभित भये ॥
छं॰ संग्रामभूमि विराजरघुपति अतुल बल शोभा धनी
श्रम बिन्दु मुख राजीवलोचन रुचिर तन शोणितकनी
भुज युगल फेरत कर शरासनभालुकपिचहुंदिशिबने
कह दास तुलसी कहि न सक छबिशेषजेहि आननघने
दो॰ निशिचर अधम मलायतन ताहिदीन्ह निजधाम
गिरिजा ते नर मन्दमति जे न भजहिं श्री राम
दिन के अन्त फिरीं दोउ अनी। समर भये सुभटनसन घनी।।
राम कृपा बल कपिदल बाढ़ा। जिमि तृण बढ़े लगे अतिडाढ़ा
छीजहिं निशिचर दिन अरुराती निजमुख कहे सुकृतजेहि भांती
बहु विलाप दश कंधर करई ॥ पुनि पुनि बंधु शीश उर धरई
रोवहिं नारि हृदय हति पानी।। तासु तेज बल विपुल बखानी।
मेघनाद तेहि अवसर आवा। कहि बहु कथा पितहि समुझावा
देखेहु काल्हि मोरि मनुसाई । अबहि बहुत का करौं बड़ाई
इष्ट देव सन जो वर पायउं ।।। सो वर तात न तुमहिं सुनायउं
इहि विधि जलपत भयउ विहाना लगे भालु कपिचहुं दिशिनाना
इत कपि भालु काल सम बीरा। उत रजनी चर अति रण धीरा
लरहिं सुभट निज निजजय हेतू। वरणि न जाइ समर खग केतू
दो॰ मेघनाद माया विरचि ।। रथ चढ़ि गयउ अकाश
गर्जेउ मलय पयोद जिमि भा कपि दल अति त्रास
शक्ति शूल शर परिघ कृपाना। अस्त्र शस्त्र कुलिशायुध नाना
डारे परसु प्रचण्ड पखाना ।। लागा वृष्टि करैं विधि नाना

रहे दसहु दिसि शायक छाई। मानहुं मघा मेघ झरि लाई॥
धरु धरु मारु सुनहिं कपि काना। जो मारै तेहि कोउ न जाना।
गहि गिरि तरु अकाश कपि धावहिं। देखहिं तेहि न दुखित फिरि आवहिं
अवघट घाट बाट गिरि कंदर। माया बल कीन्हेसि शर पंजर
मारुत सुत अंगद नल नीला॥ कीन्हेसि बिकल सकल बलशीला
पुनि लछमण सुग्रीव विभीषण॥ शरन मारि कीन्हेसि जर्ज्जर तन।
पुनि रघुपति सन जूझै लागा। छांडत शर होइ लागहिं नागा
व्याल फांस बस भये खरारी। स्वबस अनन्त एक अविकारी
नट इव चरित करत विधि नाना। सदा स्वतंत्र राम भगवाना॥
रण शोभा हित आपु बंधावा देखि दशा देवन भय पावा।

दो॰ खगपति जाकर नाम जपि नर काटहिं भव फांस
सो प्रभु आव कि बंध तर व्यापक विश्व निवास

चरित राम के सगुण भवानी तरकि न जाइ बुद्धि बल बानी।
अस विचारि जो परम विरागी रामहिं भजहिं तर्क सब त्यागी
व्याकुल कटक कीन्ह घन नादा। पुनि भा प्रगट कहत दुर्बादा।
जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा। सुनि कै ताहि क्रोध अति बाढ़ा
बूढ़ जानि शठ छांडेउं तोही। लागेसि अधम प्रचारन मोही॥
अस कहि ताहि त्रिशूल चलावा जामवन्त सो कर गहि धावा।
मारेउ मेघनाद की छाती॥ परा धरणि घुर्मित सुर घाती॥
पुनि रिसाइ गहि चरण फिरावा महि पछारि निज बलहि देखावा
वर प्रसाद सो मरै न मारा। तब घट गहि लंका पर डारा।
इहां देव ऋषि गरुड़ पठाये। राम समीप सपद चलि आये

दो॰ पन्नगारि खाये सकल क्षण महं व्याल वरूथ
भई विगत माया तुरत हर्षे वानर यूथ॥।
गहि गिरि पादप उपल बहु धाये कीश रिसाइ

चले तमीचर बिकल अति गढ़ पर चढ़े पराइ ॥

मेघनाद की मूर्छा जागी ॥ ॥ पितहिं बिलोकि लाज अति लागी
तुरत गयउ सो गिरिवर कन्दर । करन अजय मख अस मन हठ धर ।
सो सुधि पाइ बिभीषण कहई ॥ सुन प्रभु समाचार अस अहई ।
मेघनाद मख करै अपावन ॥ । खल मायावी देव सतावन ॥
सो प्रभु सिद्ध होइ जो पाइहि । नाथ वेगि रिपु जीति न जाइहि
सुनि रघुपति अतिशय सुख माना बोलि लिये अंगद हनुमाना ।
लक्ष्मण संग जाहु सब भाई । यज्ञ विध्वंस करहु तुम जाई
तुम लक्ष्मण रण मारेहु ओही देखि सभय सुर बड़ दुख मोही
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई ॥ जेहि छीजै निशिचर सुनु भाई ।
जामवन्त कपिराज बिभीषन । सेन समेत रहहु तीनों जन ॥
जब रघुबीर दीन्ह अनुशासन । कटि निषंग कर बाण शरासन
प्रभु प्रताप उर धरि रणधीरा । बोलेउ घन इव गिरा गंभीरा ।
जौ तेहि आजु बधे बिनु आवौं तौ रघुपति सेवक न कहावौं ।
जौ शत शंकर करहिं सहाई । तदपि हतौं रघुबीर दुहाई ॥

दो॰ बंदि राम पद कमल युग चले तुरंत अनन्त ।
अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमन्त ॥

जाइ कपिन देखा सो बैसा ॥ आहुति देत रुधिर अरु भैंसा
तब कीशन कृत यज्ञ बिधंसा । जब न उठै तब करहिं प्रशंसा
तदपि न उठै धरहिं कच जाई । लातन हति हति चलहिं पराई
लै त्रिशूल धावा कपि भागे । आवा राम अनुज के आगे ।
आवत परम क्रोध करि मारा ॥ गर्जि घोर रव बार हिं बारा ॥
कोपि मरुत सुत अंगद धाये । हति त्रिशूल उर धरणि गिराये
प्रभु पर छांडेसि शूल प्रचण्डा । शर हति कृत अनन्त युग खण्डा
उठि बहोरि मारुत युव राजा ॥ हतेउ कोपि तेहि घाव न बाजा

फिरै वीर रिपु मरै न मारा ॥ पुनि धावा करि घोर चिकारा
धावत देखि क्रोध जनु काला । लक्ष्मण छांड़े विशिख कराला
आवत देखि वज्र सम बाना ॥ तुरत भयो खल अन्तर ध्याना ।
विविध वेष धरि करै लराई । कबहुं क प्रगट कबहुं दुरिजाई
तब त्रिशूल छांडेसि लक्ष्मण पर काटि कीन्ह शत खण्ड धरणिधर
शिखर एक लै पुनि सो धावा । राम अनुज सो काटि खसावा

दो० आयुध विविध प्रहार किय रज सम कीन्ह फणीश
हर्ष विवस कपि रीछ सब विबुध सहित सुर ईश

बहु री विविध शर छांडन लागा रण कारण छूटहिं जिमि नागा
राम अनुज शर गरुड़ समाना। उभय ग्रसत छूटहि अभिमाना
देखि अजय रिपु उरमें कीश परम क्रोध तब भये अहीश ॥
देखिय जिमि रवि तेज समाना। कुकरत मनहुं व्याल अनुमान।
लक्ष्मण मन अस मंत्र दृढ़ावा । इहि पापिहि मैं बहुत खेलावा
सुमिरि कोशला धीश प्रतापा। शर सधान कीन्ह करि दापा।
छांड़ा बाण तासु उर लागा । शीश भुजा काटे नृप नागा।
घन समान सो गर्जि अभागा मरती बार कपट सब त्यागा।

दो० राम अनुज कहि राम कहि अस कहि छांड़ेसि प्रान
धन्य शक्र जित मातु तव कहि अंगद हनुमान।

बिन प्रयास हनुमान उठाये ॥ लंका द्वार राखि पुनि आये।
तासु मरण सुनि सुर गन्धर्वा ।। चढ़ि विमान आये नभ सर्वा।
बरषि सुमन दुन्दुभी बजावहिं श्री रघुवीर विमल यश गावहिं
जय अनन्त जय जगदाधारा। तुम प्रभु सर्व देव निस्तारा ॥।
अस्तुति करि सुर सकल सिधाये लक्ष्मण कृपासिंधु पहँ आये

सोरठ

प्रभुहिं विलोकि शीश पद नाये। उठि प्रभु अनुज हर्षि उर लाये

कृपा दृष्टि करि अनुजहि हेरा। विगत भयो श्रम जब कर फेरा
वाण वेधि तन देखियत कैसे। कनक श्रोण शर पूरित जैसे
मुख प्रसन्नता देखि छके सब ॥ रिपु बध कहा बिभीषणहू तब
धरेउ शीश आन प्रभु आगे। वानर भाल बिलोकन लागे
प्रभु कौतुकी निरखि सोइ शीशा। राखन कहेउ कोशला धीशा।

दो॰ प्रभु आयसु सुनि कीशपति राखेउ यतन कराय
कटक सहित रघुवंशमणि शोभित अति सोउ भाय

कृपा दृष्टि सब कटक निहारे। भये श्रम रहित राम बैठारे ॥
सुनहु उमा इहि विधि रिपु मारे। सुर गंधर्व मुनि भए सुखारे।
अब सो सुनहु भुजा तेहि केरी ॥ खग जिमि गई लंक शर प्रेरी।
मेघनाद आंगन में परी ॥ ॐ। वाण वेधि शोणित सन भरी।
देखत तहाँ सुलोचनि कैसी ॥। रति तें रुचिर रूप गुण जैसी।
नाग सुता दशकंध पतोहू ॥ वासव रिपु तिय छवि मय जोहू
हेम सिंहासन सोहत बाला। सेवत विद्या धर त्रय माला
पूजत विविध विनय कर ताही मुख प्रमोद की सकल सराही।
तहं पति भुजा परी इहि भांती। मनहुं सकल सुख तरु की कांती

दो॰ तब निज दासिन्ह देखि तहँ श्रोणि श्रवत भुज दण्ड
भयउ समर आश्चर्य्य मय मनहुं अखण्डन खण्ड

सुन कर सकल सखी मुख बैना। तजि सिंहासन उठी सुनैना ॥
प्रेम सुभाय धुक धुकी धरकी ॥ सूचक असुभ दहिन भुज फरकी
होत महा रण रावण रामहिं। वीर धुरीण मोर पिय तामहिं
सकल सुरासर सकहिं न जूझी विधि वामता परत नहिं बूझी।
इतना कहत गई चलि आपू। पति भुज लखि करि कोटि कलापू
कंचन मणि गण भूषण सोई ॥ महा विटप सम आनन होई।
देखत मनहिं न आवत तेही। जासु प्रभाव सुनत किन लेही।

नींद नारि भोजन परि हरही ॥ बारह बरस तासु कर मरही।
दो॰ करि विचार मन टेक दै मैं पति दैवत नारि ॥
भुज लिखि मेटहु सुचितहो सुनकर दीन पसारि।
लखि रुख तासु सखी उठिधाई सो लिहि खोज खरी लै आई
दीन हाथ मणि मय अंगनाई। लिखन लष्मणकीरतिनिरुचिराई
नींद नारि भोजन शत कोटी ॥ तजत तासु महिमा अति छोटी
अक्षय अखण्ड अलख अविनाशी अतुल अमित घर घर के बासी
भगरहिं पालहिं पुनि संहरई। त्रिगुण रूप त्रय मूरति धरई।
जो कालहु कर काल भयंकर। बरणत शेष शारदा शंकर ॥
लीला तनु सुर सेवक हेतू ॥ जासु नाम भव सागर सेतू।
मुनि मन पुण्डरीक जाके घर। वन्धन विवेक विचार बुद्धि बर
दो॰ कोटि कल्प वरणत निगम आगम जासु गुनगाथ
तम शरीर जड़ जीव बिनु किमि वरणत लिखहाथ
मम शिर गयो हरयो रघुराई। सब मतीत लगिभुजा पठाई
इहि विधि लिखेउ सकल भुजबाता परीभूमि तब अति विकलाता
बांचि सकल भुज लिखित यथारथ लक्ष्मण राम नाम परमारथ ॥
त्रिया सुभाव तदपि बहु भांती। बिलखत सकल सखिन कर पांती
गुण गण साहस शील नाह को कहि रोवत बल विपुल बांह को
जेहि भुज बल सुर नाथ विगोवा सो भुज आजु समर महि सोवा
मणि गण भूषण वसन विसारत महि लोटत कर तल शिरमारत
मगन विपति निज तन सुधि नाही दारुण विपति कहि न केहि पाही
छिनक प्रबोध सखी कोउ करही बहुरि शोक दावा नल जरही।
क्षण क्षण उठत परत धरणी तल पुनि पुनि सब सराहपति को बल
दो॰ तिन में सखी सयान इक कहि समुझावत बैन॥
शोक छांड़ि पति देवता सुमति करो मति बैन

युद्ध में लक्ष्मण जी करके मेघनाद वध और हनुमान जी को मेघनाद का मृतक शरीर उठाकर लंका द्वार पर रख आना और मेघनाद की भुजा सुलोचना के निकट जाय खरी से सम्पूर्ण वृत्तान्त लिखना ॥



मेघनाद

सुन कर सहसानन तन जाता सत्य कहत तुम सखी सुमाता ॥
विधि निर्मित दुख मोकहं ताहू सुख परि पूर भवन सब काहू
विजय राम लक्ष्मण कहं आवा । सुयश सकल मर्कट कुल पावा ।
कुल कलंक बड़ लहेउ विभीषण कुलकुठार अस खलेउ सदीखण
छूटि बंद अस सुर गण केरी ॥ निज निज पुरन दुहाई फेरी ॥
मुनि पुलस्त्य कर आकुल नाथा । अब रवि शशि सुख करहिं प्रकाशा
तेज बल्ल पावक परिहरि दुख । बहल समीर आजु अपने सुख
सलिल गंग निर्मल जल आजू । सुबस बसहिं सुर नायक राजू
दो॰ यम कुबेर दिग पाल सब प्रमुदित सुर नर नाग ॥
खाइ अघाय बिहाय दुख पाय सुयश बिभाग ॥
इतना कह मन्दिर महं आई । देखत मणि गणधन बहुताई
सुरपति भुवन सुघट तर नाहीं । जहं रिध सिध तन धरे कमाहीं
देखत विनय न मन अनुरागा पति पद प्रेम निसुरा गन पागा
देत दान मणि भूषण चीरा ॥ धेनु वसन मन हारक हीरा ॥
मणिमय शिविका रुचिर सुहाई उजबकाइ पाहिराय बनाई ॥ ॥
आपन चढ़त भई पुनि आई । दुर दुर्लभ सुख सबन विहाई
बीत राग जिमि तजत विषय रस तेहि तस भांति स्त्रियोपतिपद मन
सुक शारिका सुलोचन ज्याये । कनक पिंजरन राखि पढ़ाये ॥
व्याकुल कह कहं जात सुनयना सुन धीरज परि हरत सबयना ॥
भये विकल खग मृग इहि भांती अपर दशा कैसे कहि जाती ॥
प्रजा लोग ग्रह तजि संग लागे । प्रेम उमगि लोचन जल पागे
दो॰ बांजन लागे निशान बहु ढोल दुन्दुभी भेरि ॥ ।
पर जन परिजन संग सब चले पालकी घेरि ॥
देखि भीर दशकन्धर हारे ॥ सजग भये सब बीर प्रचारे ॥
जानेउ कटक रिपुन कर आवा । अस्त्र शस्त्र कर गहि कर धावा

धनु चढ़ाइ कटि तर कस बाधे । कोउ असि चर्म गगन पथ साधे
तोमर परसु प्रचण्ड गदा गहि । रोषन चोखे शूल शक्ति गहि
मारु मारु धरु धरु कहि धाये । प्रगट दशानन विजय सुनाये
गर्जत तर्जत गिरा गंभीरा ।। समर भयंकर निश्चर वीरा ॥
निपटहि निकट पालकी आई । चीन्ह सकल भट रहे लजाई ।
देखि जुहारि नाग पति कन्या । सती शिरो मणि त्रिभुवन धन्या
दो० हार पाल दशकन्ध बहु । खबर जनाई जाय ॥
भयउ रजायसु वेगि तब वचन कहत बिलखाय
तुमहिं अछत अस दशा हमारी सुख तजि भई शोक अधिकारी
नभ पथ ह्वै भुज मम बहि परा । बाण बेधि शोणित तन भरा ।
देखि भुजा मन में अति डरी ।।। संशय जानि दीन्ह कर खरी ।
लिखी राम लक्ष्मण महिमाइन क्रम क्रम सो सब कथा कही तिन
डगिसी रही बांचि गुण गाथा । जरहुं संग जो पाऊं माथा ।
रण कबंध भुज मम बह आई । फिर तहं गयउ जहां रघुराई ।
करहु सो यतन मिलहि मोहिं शीशा तुम सामर्थ निशाचर ईशा
सुनत कुलिश सम गिरा वधू की । जीवन आश दशानन चूकी
तदपि धीर धरि करसि प्रबोधा । कहि कोउ मोहिं समान जग योधा
दो० राम लषण सुग्रीव नल नील द्विविद हनुमन्त ॥
साथ विभीषण रिषभ कर आनब मार तुरन्त ॥
जब लगि रहेउ भरोस भारी कुम्भ कर्ण घन नाद सुरारी ॥
सुनहु आज लौटि कीन्ह न जूझा इन सब कर पुरुषारथ बूझा ॥
मरेउ सो नर वानर के मारे ।। । बात सुनत अति लाज हमारे
जिनकी कवन वीर सों जिनकी । अनि डर दशा कीन्ह कपि जिनकी
तजहु शोक कुल वधू पतोहू ।। उन समान जनि मानसि मोह
पुत्रि विलंब करो घटि चारी । देखहु मोर भयंकर मारी ।।

आनब शीश तव भ्रातन केरा । बिन प्रयास नहिं लावौं बेरा ।
भोगल जन्तु पराक्रम भोगा ॥ । नतु किन निश्चर बनचर योगा

दो॰ मेरु उखारन हार जे ॥ धरा धरत कर बीच ॥
ते भट खाये मशक शिशु काल कुटिलता नीच ।

क्रोधा वेष प्रगल्भहि बोली ॥ हृदय शोक तन अचल न डोली
समाधान नहिं मानत सोई ॥ सुनि प्रलाप परितोष न होई ।
नर वानर पुरुषारथ देखत ॥ । बड़ो प्रभाव छोट करि लेखत
क्रूर सिंधु कपि लंका जारी ॥ लघु कर मानत नाहि खरारी ।
कुम्भकरण अतिकाय महोदर मम पति बिरंचि समेत सहोदर
ते रिपु न्वहल दशानन जीती । देखहु महा मोह कर रीती ॥
उतर देउं तौ पातक होई ॥ । कह विवाद कर सर्बस खोई ।
फिरहि राज कछु मोहिं न काजू बिन पिय सकल नरक कर साजू

दो॰ तुरतहि उठी सुलोचना गइ मय तनया पास ॥
पद गहि रोवत सकल कह प्रगट शोक इतिहास ।

आदिहि ते सब कथा बखानी सुनि सुनि रोवत रावण रानी ।
कह निज पति भुज लिखत बहोरी राम लषण महिमा नहिं थोरी
कह्यो बहुरि दशकन्धर क्रोधा । सुर विडंबन कीन्हेसि बोधा ।
सुन निज पुत्र बधू की वाणी ॥ बोली दुखित मंदोदरि रानी ॥
कहल सो मानहु सत्य सयानी । सुनी जो नारद मुनि की बानी ।
पाछिल बात भई सब सांची । अनुभव कीन्ह न एकहु बांची
देवि न होइ स्वधा ऋषि भाषत । अपने महा मोह मन राखत ।
भाखी कथा समास समेता । सुनु पुत्री ऋषि वरणेउ जेता
वैरि भाव दशकन्धर जूझब । मानहु गये नीति नहिं बूझब ।
सिया शोक संकट से छूटहिं ॥ बानर भालु राज घर लूटहिं ॥
सुर मन भूषण बसन दिसाना । भोग करहिं वनचर कुल नाना

सो॰ राज विभीषण पाय हैं अमर कल्प निरबाह।
भावीबस दुखसुखजगत उपदेशिय कह काह।
मुनि वर वचन मोह पर तीती। अनुभव होत हार अरु जीती
अब पुत्री परिहरि सब शोका। पति संग बेगि साध पर लोका
जाहु राम पहँ पति शिर लागी तज संकोच आन किन मांगी
आज न होइ लाज करभूषन। सबै हीन गुण गानिय न दूषन
हैं पुनि ससुर विभीषण तोरा। बालि तनय बालक सम मोरा
एक नारि व्रत रघुबर केरा ॥। लषण सुयश तुम सुनेउ धनेरा
जामवन्त मंत्री सुग्रीवा ॥ ॥ द्विविद मयंद महाबल सीवा।
जानहु ब्रह्म चर्य्य हनुमन्ता। शिव स्वरूप भव हर भगवन्ता
सदा नीति रत राम नरेशा ॥। तहाँ जात कहु कवन कलेशा
सो॰ विदित तोर पति भुज लिखल लक्ष्मण राम प्रभाव।
हमहूं ऋषि भाषित कहेउ अब विलम्ब जनि लाव
सुनत सासु सुखकर हित बानी। जाहुं राम पहँ अस जियजानी
बार बार वरणत शिर नाई ॥। चली जहां लक्ष्मण रघुराई ॥
देखत कटक भालु कपि केरा। सिंधु सुवेल महीधर घेरा
उमगेउ मनो महोदधि दूसर। हरित पीत कपि धूमर धूसर।
व्योम लाल भाषत अनुहेरी। मनहुं लेत बड़वानल घेरी।
गिरि तरु धर भुज सहस भयंकर जहँ तहँ प्रगट होइ जनु जलधर
लक्ष्मण शेष सु अंक शीशधर कटक जलधि सोवत राघववर
अषवट जहँ तहँ बैठ विभीषन। अस सुकृती कहुं सुनै न दीखन
सो॰ देखत डरत सुलोचना। धीरज धरत बहोरि ॥
महा राज रघुवीर कहँ। विनय सुनावो मोरि।
वानर सकल उठे अस बोली। अरि पुर तें आवत इक डोली
जानि परत रावण अब बूझा। भइ मति मेघनाद अब जूझा

हठ तजि सीतहि दीन पठाई। तजहु सोच अब मिटी लराई
जिहि लगि प्रकट कीन्ह पुर आगी बांधेउ सेतु हेतु जिहि लागी
सोइ सीता अब बिन श्रम पाई॥ जानहु विधि अनुकूल सहाई
विजय राम सुग्रीवहिं आवा। सुयश वीर वानर कुल पावा।
विरह राम लक्ष्मण कर छूटा। बिन कलेश लंका गढ़ टूटा।
युग युग कीरति चलब हमारी। कहँ राक्षस कहँ लघु बनचारी
दो॰ इहि विधि चारु विचारु करि निश्चय धरि मन माहिं
भयउ काज रघुराज कर बात दूसरी नाहिं॥
पैठत कटक अतिहि सकुचाई अनवि नारि जनु पर घर आई
आगेहि जाइ देखि रघुवीरा। छवि श्यामल मय गौर शरीरा
मरकत कनक छविहि जनु निंदत धन्य सुजन महिमा ते विंदत।
मत्त गयन्द सुराड भुज दराडा॥ धनुष बाण असि धरिय प्रचराडा
उर विशाल अति उन्नत कंधर। कंबु कंठ रेखा त्रय सुन्दर॥
दशन पांति की क्रांत कहैको॥ लावत मन पट तरहि लहै को।
देखत अधरन की अरुणाई। विंबा फल बंधूक लजाई॥
सुक तराडक नासिका लजाई। याकेउ कवि पट तरहि न पाई
दो॰ छवि मय गुण मय तेज मय राम उदधि अवगाह
जहां न पावत पार सुर। किमि वरणै कवि याह
भृकुटी ललित कपोल सुहाये शीश जटा कर मुकुट बनाये
भाल विशाल तिलक युत सोहै ध्यान समय मुनि मानस मोहै
वल्कल वसन तून कटि बांधे। कर शर सुभग शरासन कांधे
वीरासन आसीन कृपाला। नव पल्लव प्रसून कर माला
चरण सरोज वरणि नहिं जाई जहँ मुनि मधुकर रहे लुभाई
प्रकट भई जिह थल से गंगा श्रुति पुराण कह कथा प्रसंगा
नवत महेश विरंचि जाहि को लोचन गोचर होत काहि को

जन आरत भंजन जो कोई। भव सागर तारन के सोई
दो॰ प्रणत पाल विरदावली जिन चरणन की बान
शोक हरण संशय दलन। करन हु मंगल खान॥
कर जोरे अंगद हनुमाना॥ ॥ द्विविद मयंद कुमुद बल वाना
जामवन्त कपि पति बल शीला। रिषभ सुखेन सहित नल नीला।
महावीर वानर सब राजत॥। लषण विभीषण इतदिशि भ्राजत
मितिभाषित प्रभु चरण हु सेवक चितवत रुख रघुनन्दन हेवक।
सभा मध्य सोहत अघ मोचन। कीनेउ सकल निरख निज लोचन
करत दण्डवत शिर धरि धरणी। तिहि कर चरित विभीषण वरणी
पुत्र बधू दश कन्धर केरी॥ दाड़ि पति मृता जानि प्रभु हेरी।
मेघनाद की नारि सुशीला॥ अस गति लव विरोध कर लीला
करत प्रणाम प्रेम नहिं थोरे। करुणा वचन कहत कर जोरे
दो॰ सुये जान पति भजहिं तव लिख समुझाई मोहिं
महा राज रघुवंश मणि। याचन आई तोहिं॥
छं॰ परसे चरण कर प्रेम पूरण प्रणत पाल खरारि के।
जिहि नमत शंकर शेष सुर मुनि धरारी भंजन भार के
प्रभु जान सो विनती सुलोचनि करत कहे विनती घनी
जय शोक हरण कृपाल जय जय जयति जय रघुकुल मनी
प्रभु ब्रह्म रूप सुभाव शीतल अतुल बल त्रिभुवन धनी
जय हरण धरणी भार बाहु विशाल खण्डन खल अनी
तव दीन बन्धु दयाल अपरमपार सब गुण आकरे
करुणा निधान सुजान शील सनेह रूप उजागरे
षट अष्ट लोक जो स्चत पालत प्रलय सो माया तुरी
किहि भाँति वरणों नाथ गुण गण नारि जड़ मति बावरी
जेइ चरण ईश महेश शारद स्तुति निरन्तर ध्यावहीं

हूं भूरि भाग सरोज पद तोइ हर्ष सिरसि लगावहीं॥
छं॰ गहकर वाणी सारद पाणी सब गुणखानी रामवली
सुर सुखी रक्षक राक्षस भक्षक भक्तिहि रक्षक नागवली
मैं रिपु सुत नारी ज्ञान अधारी अधिकारी नहिं इरखभारी
हरि विरह दुखारी अति भयकारी सह बहु वारि दुख कारी
तव शरणन आई जल दुख हाई रघुराई करुणा सागर
पति मस्तक पाऊं जरि संग जाऊं गिर पाऊं शोभा आगर
पति मम तन त्यागी अति बड़भागी अनुरागी जिन मुक्ति लई
ममता किम ताहु वरण आसू जासु अचल जवा पति रही॥
यह विधि पद पंकज धेय रमा अज शिरनाय होउ कर जोरि रही
सुन पंकज लोचन वचन सुलोचन लोचन में जलधार वही
दो॰ अस प्रभु दीनेउ बंधु हरि कारण रहित दयाल॥
तुलसि दास शठ ताहि भज छांड़ कपट जंजाल॥
तुम अन्तर यामी भगवाना॥ नहिं तोहि आदि मध्य अवसाना
करुणा वचन सुनत रघुवीरा। पुलक रोम भये शिथिल शरीरा
देहुं जिवाय तोर पति आजू॥ करहु लंक कलप शत राजू।
छांड शोच अब मन हर्षाहू। तुरत भवन अपने फिर जाहू॥
सुनि अस सत्य सिंधु कर बानी। मन में वनचर अति भय मानी॥
कहि न सकत कछु प्रभु रुख देखी कहा करब कर तार विशेषी॥
सब देवन कर शोच न जाई॥ जो कर कृपा राम इहि न्याई।
दो॰ राज विभीषण लंक कर। केहि विधि करिहहिं जाइ
समुझि बैर बननार जब गहब शरासन धाइ॥
मुख रुख देखि कपिन भय माना। प्रणत पाल भगवंत सुजाना।
देखि बहुत रघुवर कर छोहू॥ विनय करत दशकंध मतोहू
तुम उदार सब देवे लायक॥ करुणा मय देखे रघुनायक।

हमहूं विचारि दीख मन माही। जीवन तें अस मरण सराही
भुज बल जीति लोक बस कीन्हे। चौदह भुवन भोग करि लीन्हे
रण तीरथ याचक बड़ चीन्हा। प्राण सुधन लक्ष्मण कहं दीन्हा
अब न उचित पति दैं उपहारा तेहि पर अधिक सो दरश तुम्हारा
हमहूं जाइ मरब सत साधी॥ मिलब तुमहिं जस मिलत समाधी

दो॰ निर्मल गति अवसर भयउ सुनहु सत्य रघुवीर॥
तुमहिं मिलत नहिं होय भव यथा सिंधु गत नीर॥

मन की जानन हार सु जेवा। भव सागर तारहु यह खेवा॥
लीनेउ राम कपीश बुलाई। मेघनाद शिर दीन्ह मंगाई॥
पाय कृतारथ मानेउ आपू॥ पिया विरह संभव परि तापू
अंचल पोंछत मुख की धूरी। कहि मम प्राण सजीवन मूरी।
देख संदेह कहत सुग्रीवा॥ भुज गहि लिखत जीह बिन ग्रीवा
हंसि हहिं वदन तोहि हैं सांची नातर निशिचर माया यांची।
कित अस ज्ञान म्रतक भुज गावै जो मुनि वर साधन नहिं पावै
प्रभु अस कहेउ हंसब यह शीशा करत कुतर्क न उचित कपीशा

दो॰ शिर सों कहत सुलोचना हंसहु वेगि मम नाथ।
नातर सत्य न मानिहैं लिखा जो तुमरे हाथ।

क्षणक विलम्ब कीन्ह नहिं बोला म्रतक वदन मूंदत नहिं खोला
पुनि सुनि कहत सो नाग कुमारी अमित भयउ रण में करि मारी।
लखो लषण शर क्षोभ बढ़ावा। प्रभु समीप कस मोह लजावा
जो मन वचन करम यह देही॥ पति देवता न आन सनेही
तौ प्रभु सभा बीच शिर बोलै। रहहि छाय यश सुयश अमोलै
जौ जानत तव यह गति सांई। बोल पठावत पितहि सहाई॥
सुनि तिय वचन हंसेउ तब शीशा चौंके चकित भालुभट कीशा
हंसेउ ठठाय वदन सब देखा। विस्मय भयउ सकल जिहि पेखा

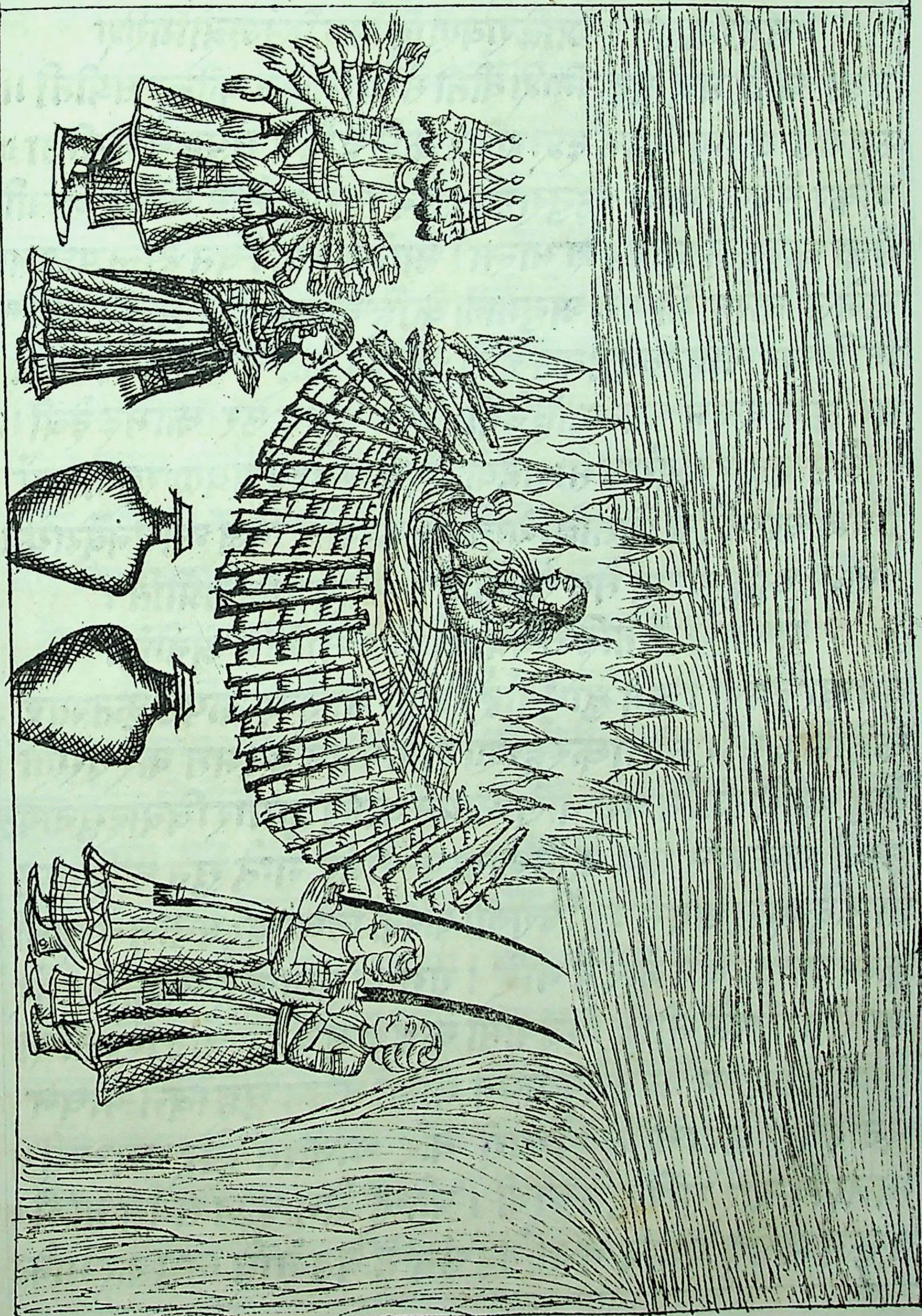
कुलिश समान सुनानहि जाई। रहेउ सो बदन बहुरि अरगाई।
सकुच कपीशहिं नोचेउ नारी। बड़ आश्चर्य्य भयोबलचारी
पूछन कपि पति पद शिर नाई। कारण कवन हंसा शिर साई॥
प्रभु कह सुन सुग्रीव कपीशा॥शीश हंसे कर सुनहु अधीशा।
मन क्रम बचन पतिहिं सेवकाई तिय हित इहि सम आन उपाई।
अस तिय जानि करहिं पतिसेवा तिहि पर सानुकूल मुनि देवा।
यह सत बृति ध्याहि रज कुमारी तेहि सतते हंसि शीश सुरारी॥
सुनि प्रभु बचन कपिन सुख माना पुनि सुनि चरण बंदे हनुमाना
सुनु गिरिजा अस प्रभु प्रभु ताई॥ केवल भक्तिहिं देत बड़ाई॥
जासु दृष्टि जग उपजत नाशा। अस कौतुक कर केतिक आशा
सो० शीश पाइ प्रभु चरणबाहि बहु विधि विनय सुनाय
आज की दिन रन परिहरहु मम हित कोशल राय
बहुरि विभीषन पतन परीसो॥ रघुपति चरण दियेमनपुनि सो
तुम पितु सम दश कन्धर भाई। इहि कुल की तोहि लाजबड़ाई
मुनि पुलस्त्य परिवारक दीपा॥ पायउ फल रघुबीर समीपा॥
महा मोह बस अनभल माना। ज्ञान भयो तव गुण पहिचाना
युग युग करहु अकंटक राजू। सहित सुकीरति सुकृत समाजू
सुमिरत तुमहि सुजन सत पावा रघुपति चरित संग कर गावा।
सुनत विभीषण मन करुणाभर प्रबार न कहत समयविरहाकर
काल कर्म गति कह समुझाई। चली तुरत गुरु आयसु पाई।
सो० बाहर करि कपि कटक सें फिरेउ विभीषण आप।
बिसरेउ रण सुख बैरही। हृदय अधिक संताप।
शिर चढ़ाइ पालकी चढ़ीसो॥ रघुपति कृपा प्रभावबढ़ी सो
हृदय राखि मूरति घन श्यामा। रसना रटत निरन्तर नामा॥
सरित सिंधु संगम जहँपावन अस साधि पाय गयोतहँरावन

संग मंदोदरि सब रनवासू ।। मनो शोक रवि कीन्ह प्रकासू
पाय रजायसु सेवक धाये ।। चंदन अगर सुगन्ध बहु लाये
रचि दृढ़ दारुण चिता बनाई ।। जनु सुर लोक निसेनी लाई ।।
करि प्रणाम सब जन परितोषी। धीरज धरासि तासु मतिपोषी
शिर भुज धर बैठी कर आसन भइ जनु योगसिद्ध कर भाजन
दो० देत अनल ज्वाला बढ़ी लपट गगन लगि जाय
लखी न काहु जात तेहि सुर पुर पहुंची आय ।।

इति

सुतवध सुना दशानन जबही । संभ्रम मूर्छि परा महि तबही।
दुखित भयउ लोचन भरि आवा जनु निज मारि अहिरज गवांवा
हा सुत संतत आज्ञा कारी ।। । करि विलाप दशकन्ध पुकारी।
शक्र आदि जीतेउ सब देवा ।। सुर मुनि वन्दि करायहु सेवा
दूसर रहा न भुज बल दाया ।। । स्वर्ग भूमि तल तपेउ प्रतापा
इहि विधि करि विलाप लंकेशा। भयउ तेज हत सुन उरगेशा।
मन्दोदरी रुदन करि भारी ।।। उर ताडति बहु भांति पुकारी।
नगर लोग सब व्याकुल शोचा। सकल कहहिं दशकन्धर पोचा
दो० तब दशकन्ध अनेक विधि समुझाई सब नारि ।।
नश्वर रूप प्रपंच सब । देखहु हृदय बिचारि ।
तिनहि ज्ञान उपदेशेउ रावन । आपन मंद कथा अतिपावन
पर उपदेश कुशल बहु तेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे
तासु क्रिया करि निशिचर नाहा। भयउ तेज हत आति मनमाहा
सचिव आइ सब लागु बुझावन बादि बिषाद करिय जनु रावण
सुत वित नारि त्रिविधि सुख कैसे उपजहि घटा घने नभ जैसे।
यह जिय जानि सुनहु दशभाला बचहि न कोउ जग आयेकाला
अब प्रभु यतन विचारहु सोई । रिपु कर नाश जवन विधि होई।

सिलोञ्चना को श्री रामचन्द्र जी के कटक में जाय अनेक वार्त्तालाप कर अपने पति मेघनाद का शीश लेय चिता वनाय सती होना



क्षेपक

दो० लागेउ करन विचारमुनि बहु प्रकार दशशीश।
समुझिहृदय अहिरावणहिं आयेउजहांगिरीश

दरउ चारि तब तहं निशि बीती संध्या बन्दन कीन्ह सप्रीती ॥
लागेउ करण ध्यान दशशीशा करि हर्षित संपुटभुज बीसा ॥
शंकर सेवक अति अनुरागी। सुन खगेश तेहि तें बड़भागी
मंत्र करषण जपि दशभाला। अहिरावण चित डोल पताला
लगेउ करन सो मन अनुमाना केहि कारण दश मुखअकुलाना
निशिचर नाह भुवनबसजाके जीतन कहं न धीर कोउ ताके
मन क्रम बचन आननहि सेवी। धरेउ ध्यान उर कामद देवी ॥
चलेउ बहुरि आयेउ सो तहवा शिव मण्डप रावण रह जहवां
निशिचरपति कहितेहि शिरनायउ करगहि निज आसनबैठायउ

दो० अहिरावण तब रावणहि बूझी कुशल सप्रीति।
प्रथम कही तेहि सब कथा जैसे भगिनि अनीति।

वध खर दूषण जिमि सुधिपाई। मृग मारीन्च कपट कृतगाई
कहेसि बहुरि सीता कर हरणा लंक दहन हनुमत कर वरणा
सेतु बांधि जिमि प्रभुचलिआयउ वालि कुमार विवादसुनायउ
अनी अकम्पन अरु अतिकाया परे समर गाढे सुनु अहिराया
तात कुशल अब सबइ सिरानी। कटक निशाचर सकल नशानी
कुम्भ करण घन नादहु मारे। राम लषण द्वइ मनुज बिचारे
आनेहु बोलि तोहि निजपासा कहहु सुयतन होइ रिपु नाशा
सुनत शोच भा अहिरावणमन बोला बचन सुहावन पावन
सुन रावण जग नीति पियारी करे अनीति होइ भय भारी ॥
बिना बिचार रारि तुम ठानी। कीन्ह सेन कुल सर्बस हानी।
मनुज प्रताप प्रभाव न जानेउ सब तें बड तेहि लघु कर मानेउ

यद्यपि न योग मोहिं अस बाता तदपि हरहुं तव लगि सेउ भ्राता।
लै पताल देविहि बल देहौं ॥। यश पूरण निशिचर कुल लेहौं
लै जैहौं तुम आवेउ तबही ॥ रवि सम तेज होइ निशि जबही
दो॰ कहि अस वचन प्रबोध करि शीर्ष नाइ बल भाषि।
आयउ रघुपति कटक तब निज देविहि उर राखि।
सूझ न निज कर अति अंधियारी। मर्कट भट जागहिं तहं भारी॥
कहहिं जयति जय जय तिकृपाला अतिहि अगाम जहं नहिं गति काला
तहं मारुत सुत रचेउ उपाई ॥। करि लंगूर कोट कठिनाई ॥।
सो शोभा इहि भांति सुनाई ।भुजग राज कुण्डली लगाई।
वेष्टिय उन्नत शैल समाना ॥ द्वार जहां जहं सुख हनुमाना
देखि हृदय अहिरावण हारा। किमि रवि ग्रह कर तिमिर पसारा
सकौ युक्ति न मन वहरानी ॥। कपट वेष तेहि कीन्ह भवानी।
वेष विभीषण सब अनुहारी। पवन तनय पहं गा छल कारी।
दो॰ सहज प्रतापी पवनसुत। पुनि सुरपति पति दास
तिनहिं निदर चल राम पहं मूढ़ हृदय नहिं त्रास
मरम न जान प्रभञ्जन जाता ॥ कीन्हेसि गमन विभीषण भांता
ठाढ़ होइ बोलेउ सुन भ्राता ॥ चलेउ जहां कृपाल जन त्राता
मैं रघुपति सन आयसु पाई ।संध्या करन गयउं सुन भाई॥
तेहि तें तुरित चलेउं प्रभु पाहीं। भइ विलम्ब जनि राम रिसाहीं
सत्य वचन कपि निज मन माना। सुनु खगेश भावी बलवाना॥
कपट चतुर गति जानि न जाई। पर मन हरै हरहि धन भाई।
आयसु पाइ गयउ सो तहवां। रहे फणीश अरु प्रभु दोउ जहंवा
कपि पति जामवन्त नल नीला। बाली सुत सुखेन बल शीला
दो॰ द्विविद मयन्द रु कीशगण गय गवाक्ष कपि बीर
सहित विभीषण अपर भट सोये सब रण धीर॥

तिनहिं मध्य रावण शशि राहू। एक संग सोवत फणि नाहू ॥
दक्षिण दिशि सोवत रघुनाथा। अनुज वाम दिशि तेहिपर हाथा।
प्रभु कर कर पर राजत कैसे ॥ जात रूप पंकज फणि जैसे।
कपि समूह जनु सागर क्षीरा। तहँ सोये मानहुं दोउ बीरा॥
सुभग वाण धनु धरे बनाई ॥ लक्ष्मण सह समीप रघुराई ॥
अहिरावण मन कीन्ह प्रणामा। देखि राम सुन्दर घन श्यामा॥
ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावहिं मुनि महेश पूजा मन लावहिं।
करहिं विविधि जप योग विरागी जपहिं निरन्तर निशि दिन जागी
सो प्रभु तेहि देखा भरि लोचन कृपा सिन्धु सेवक भय मोचन
बहुरि हृदय तेहि कीन्ह विचारा। करहुं काज रावण अनुसारा।
कछु निज माया कृत गुण आई कवनी भांति जाहिं दोउ भाई

दो॰ मोहन ते मोहे सकल मंत्रिन तें मुख मूँदि ॥ ॥
भयउ अदृश्य उठाइ करि प्रभुहि चलेउ लै कूदि

यहि विधि गयउ हरन लै सोई। नभ मारग प्रकाश अति होई।
सो प्रकाश जब रावण देखा ॥ किय प्रमाण तेहि वचन विशेषा
मन महँ हर्ष करहि अतिभारी ॥ अहि रावण लै गा असुरारी।
लै निज लोक गयउ पलमाहीं। भयउ शोर तब कपिदलमाहीं
जागे वानर श्री हत भारी ॥ ॥ देखिय जिमि सरिता बिनुवारी
पुनि देखिय जिमि निशि बिनु इंदू भे वानर जिमि उड़ु बिन चन्दू।
रवि विनु दिवस जीव बिनु देहा। जिमि देखिय दीपक बिन गेहा
एकहि एक लगे तब बूझन ॥ कहां गये त्रैलोक्य विभूषन।

दो॰ शोधेउ सब मिलि कटक तिन नहिं पाये दोउ बीर।
भे व्याकुल सब भालु कपि जिमि जलचर गत नीर।

सकल कहहिं यह बिधिकह कीन्हा रघुपति विरह प्राण कत लीन्हा
शोक ग्रसित धरि सकहिं न धीरा कहां राम लक्ष्मण दोउ बीरा।

करुणा करहिं कपीश अपारा। बनी बात विधि कहा बिगारा।
कटक निशाचर सकल संघारी रहा एक रिपु रावण भारी॥
सोउ न रहत राम शर लागे॥ भाइउ हम सब परम अभागे
कबहुँ जो दश शिर अरि रण जीतहि उत्तर कवन देव हम सीतहि
अस कहि विकल मूर्छि महि परे लागत वज्र शैल जिमि गिरे
दशा विभीषण कही न जाई॥ विछुरत वत्स जनु धेनु लवाई।

दो॰ सहित पवन सुत ऋक्षपति दुख मन भा बड़ि भांति
खगपति सूझन कतहुं कछु तम अपार तेहि राति

पवन तनय पुनि कह सब पाहीं। विस्मय एक होत मन माहीं
कोउ इक आव विभीषण वेषा प्रभु के निकट जात हम देखा
पूछत वचन कहेसि अति नीका कपट न जानिय निश्चर जीका
वचन सुनत बोलेउ लंकेशा। अहिरावण लै गा अवधेशा
पन्नग लोक निवासी सोई॥ मम तनु वेष अवर नहिं कोई
महाबली जानै सब माया। निश्चय तेहि दश शीश पठाया
जेहि बल होइ तहां सो जाई। ताहि जीति आनहि दोउ भाई।
कहेउ भालु पति सुनु हनुमाना। तव बल तात सकल जग जाना
वेगि सो यतन विचारहु ताता। कृपा सिन्धु आनहु दोउ भ्राता

दो॰ बिलखि कहेउ कपि पति बहुरि सुनु मारुतसुत तात
बिनु रघुनायक जन्म धिग पल युग सरिस बिहात।

यथा तृषित बिनु वारिद बारी। रवि बिनु जलज मीन बिनु बारी।
भट अशस्त्र रण अनी अनाथा वन्हि अतिंधन गात अमाथा
दीप अवर्ति सकल क्षण भंगी। तिमि हम सब देखिय बजरंगी
जिमि सीता सुधि भेषज आनी तेहि प्रकार आनहु सुख दानी
सुनत वचन मारुत सुत बोला। राखहु चित थिर कटक अडोला
भुवन चारि दश तीनिहुं लोका। आनहु प्रभु बल प्रभु तज शोका

अब तुम सजग रहेउ सब भाई। लरेहु काल सनजौ चढ़ि आई।
अस कहि सकुन चलेउ हनुमाना। गाजत प्रलय पयोधि समाना।
चलत बाट एक तरु तर आयउ। बोलिनि गीध कहत तहं भयऊ।
दो० नारि गर्भिणी गरुड़ कर बोली पति सन बैन ।।
आनहु आमिष मनुज पिय खाहुं होइ जिय चैन
तासु वचन सुनि खग अस कहेऊ। अहिरावण रामहिं लै गयऊ।
देइहि बलि देबिहि सो जाई। सो आमिष बड़ भाग न पाई।
कवनेउ यतन देव मैं आनी। अस कहि विहग वामसनमानी
जबहिं पवन सुत अससुधि पाई चलेउ तहां सुमिरत रघुराई।
अभय सबग पातालहि गयऊ अहिरावण पुर भाविशत भयऊ
द्वारपाल मकर ध्वज कीशा।। कपि सन डाटि कहत बहु रीशा।
निदरि जात मोहिं तोहि डर नाहीं दीपाहिं जिमि न पतंग उराहीं
जानेसि मोहि न मरुतसुत बालक स्वामि भक्त भंजन सुरकालक
सो० सुनत वचन हनुमान। बोलत भे विसे विवश
अरे मूढ़ अज्ञान ।। मोरे सुत सपनेहु नहीं
कहत वचन शठ संयुत खोरी। काम विवश कब भइ मति मोरी
मम सुत बनसि मूढ़ केहि काजा। इतना कहत तोहि नहिं लाजा
केहि प्रकार तुव मम सुत भयऊ निज उतपति मो सन किन कहऊ
सुनत कहहि मकरध्वज वचना किहेउ दाह रावणपुर रचना
जब आयउ न्हालि उदधि समीपा चहेउ स्वेद तब तन कपि दीपा
सो प्रस्वेद सागर महँ गयऊ। पियउ मीन तेहि तें मैं भयऊ
यहि प्रकार मैं तव सुत ताता। गोवहु नाहिं निज पितान माता
अहिरावण सेवा मैं करहूं ।। राखेहु द्वार न कबहूँ टरहूं।
दो० सत्य वचन हनुमान कहि पुनि पूछी सब बात ।।
लाया लक्ष्मण राम कहँ कांह करत सो तात ।।

कहहु तात तेहि अस्थल नाऊं जान चहउं मैं तब प्रभु ठाऊं
यह सुनांत अस जानहु ताता मह मैं अक्षर सुनेउं कछु बाता
सीता मति अरु कारण पति शाया सो लै आयउ निशिचरनाथा
करत होम तेहि कारण आजू देविहि बलि देई नृप राजू
जो कछु निज श्रवणन सुनि पायउं तात सकल सो तुमहिं सुनायउं
निज प्रभु काज लागि दुख सहेऊं तुम सन सत्य वचन मैं कहेऊं
जान कहहु तुम जान न देऊं। प्रभु आज्ञा तजि अपयश लेऊं
सुनि अस पेलि चलेउ हनुमाना भयउ क्रोध मकरध्वज जाना

दो॰ तेहि मुष्टिक कपि कहं हनेऊं पुनि मारेउ कपि ताहि
हने हिं परस्पर एक एक। बल समान घट नाहिं।

एकहि एक सकहि नहिं पारी पिता पुत्र होऊ भट भारी॥
सुतहिं लूम सुत बांधि भवानी। चलेउ तात सुत बिलंबन आनी
धरि लघु रूप होम थल देखा। जीव सजीव परे नहिं लेखा।
तहं देवी कर मरडप रहई ॥ शोणित घट बहु कोकहि कहई
विविध भांति मेवा पकवाना धरे आनि देवी अस्थाना।
मालिनि तहं मरडन ले आई। सुमन मध्य माचि गेउ कपिराई
सुमनहु तें करि आनि हलुकाई लेत धानि जेहि जानि न जाई
जब देविहि सो पुष्प चढ़ायउ। विकट रूप तब कपि दिखरायउ

दो॰ छुवत चरण देवी तुरत। धरणी रही समाइ॥
मुख पसारि ठाढ़े भये। कपि छवि लखन जराइ

देवी भगार समुझि खल भारी। करहिं विचार हृदय अति भारी
कहहिं कि देवि मगनभइ आजू बड़भागी भा निशिचर राजू॥
करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं। जो चढ़ाव सो कपि मुख परहीं।
जो जहं रही वस्तु समुदाई ॥ बची न कछू सकल कपि खाई
कपि खिलारि कौतुक विस्तारा। आ चह निशिचर कुल संहारा

अहिरावण उर भा सुख कैसे चढ़े काँध पर बलि पशु जैसे ।
जब हीं होम सिद्ध तेहि जाना । लक्ष्मण राम तुरित तहँ आना
ठाढ़ कीन्ह प्रभु कहँ तहँ आनी निशिचर सकु आयुध धरि पानी
कोऊ गदा कोऊ धनु बाणा । शक्ति शूल धरि कोउ कृपाणा

दो॰ तोमर मुद्गर परशु असि पासि परिघ अरु बेनु
शूल भुसुण्डी पाटि परशु देखत बिसरत चैन ॥

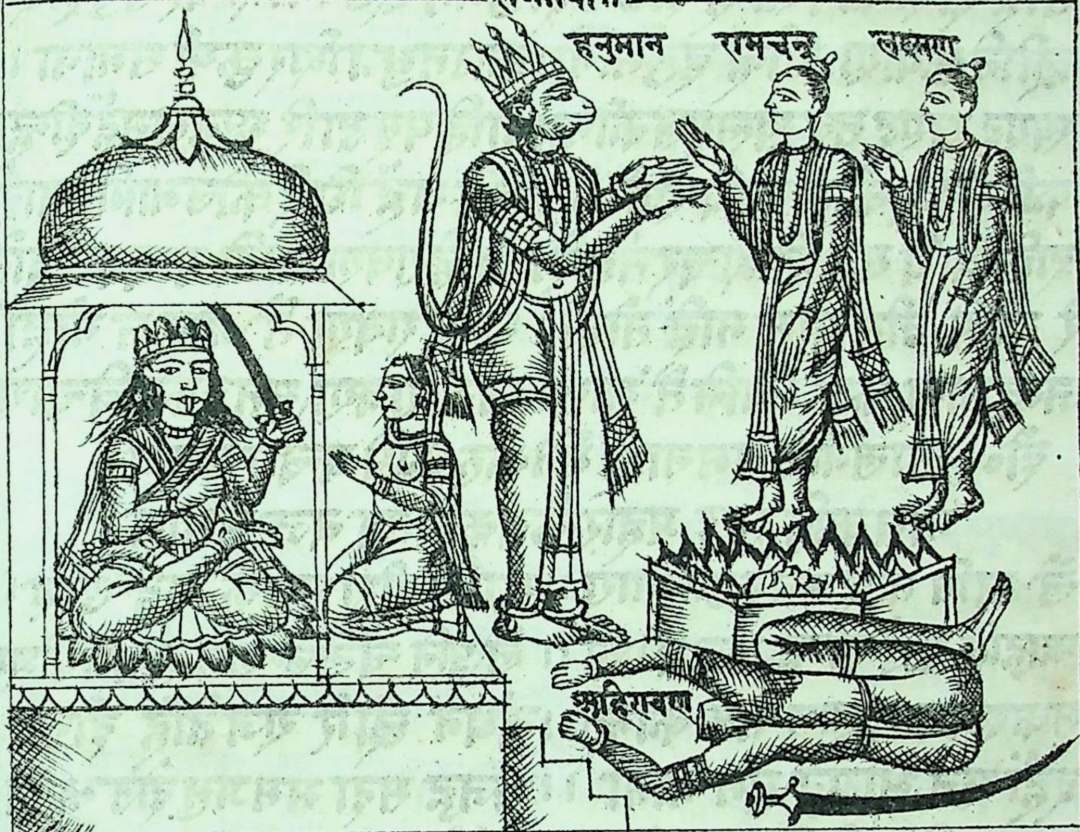
माया बल ते सकल विचक्षण अति विकार भय प्रद कुलक्षण
यहि विधि सकल बीर तहँ रहहीं अहिरावण आज्ञा हद गहहीं
आयसु पाइ खड्ग तिन काढ़े मारन कहँ प्रभु पर भे ठाढ़े ॥
कोउ कह राज नीति अनुसरहू भरि त्रप दरड विलंब अव करहू
पुनि अस वचन मूढ़ मति कहहीं सुमिरहु जो तुम्हरे हितु अहहीं
नाहित काल आइ नियराना ॥ निशा स्वप्न सम होउ जन माना
बोलहिं मूढ़ असम्भव बानी ॥ सकुच लखौ सो कहत भवानी

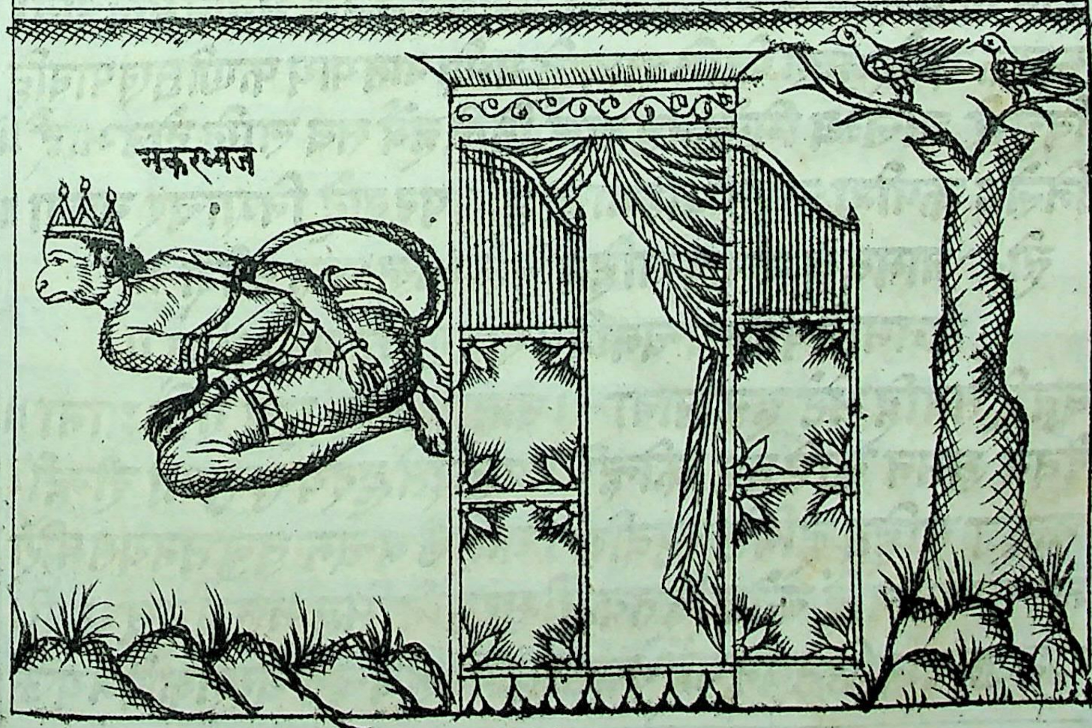
दो॰ फणि पति चितवत राम तन राम चितव अहिराज
प्रभु कर कौतुक कहिय किमि सुनौ हमा खगराज

बिहँसि कीन्ह प्रभु हृदय विचारा जपै सकल जग नाम हमारा
जाना देवि रूप हनुमाना ॥ । बिहँसि कहा तब राम सुजाना
काल कोर तुम सुमिरहु रक्षक । भई तुम्हारि देवि तुव भक्षक
सुनत गिरा तिन मारन ठयऊ । घन समान कपि गर्जत भयऊ
निशिचर सकल त्रसित भे भारी कहहिं वचन भय हृदय विचारी
अहिरावण भल कीन्ह न काजू । आने कपट वेष सुर राजू ।
तेहितें देवि क्रुद्ध हत आजू । अब भा सब कर मरण समाजू
संभ्रम बस तब निश्चर झारी ॥ बहुरि कीश गर्जेउ अति भारी

दो॰ प्रगट रूप करि पवनसुत अट्टहास गंभीर ॥ ४ ॥
अति भय त्रासित रजनिचर सुनहु उमा मतिधीर ।

अहिरावण करि राम लछमण का पाताल में हरि जाना और हनुमान जी को पाताल में जाकर मकरध्वज को युद्ध में परास्त करि अहिरावण को मार श्री रामचन्द्र और लछमण जी को ले आना ॥





उग्रबलवान निशिचर अभिमानी मारुत वेग यथा नहिं पानी ॥
तेहि छन कपि लीन्हे दोउ भाई। धुनल दूत निशिचर समुदाई ॥
छीनि कृपाण लीन्ह हनुमाना। काटत भुज शिर कूष्मी समाना ॥
खण्ड खण्ड सब खलदल कीन्हा गहि पद डारि अनल महं दीन्हा
करि संग्र कोट कपि राई ॥ तेहि महं घिरि कोउ भागिन जाई
इहि विधि सब निशिचर संहारे। अहिरावण लखि वचन उचारे
रे कपि ढीठ त्रास नहिं तोही। अहि रावण तैं जान न मोही
जम्बु माल कहं जिमि तैं मारा। अरु रावण सुत हतेउ बिचारा

दो॰ कालनेमि सम नाहिं मैं। करु कपि वचन प्रमान
अस कहि खड्ग प्रहार किय कपि तन बज्र समान

लै असि ताहि पवनसुत मारा ॥ काटि शीश पावक महं डारा।
आहुति पूर्ण दीन्ह तब कीशा ॥ लैपुनि चलेउ लखण जगदीशा
मकरध्वज प्रणाम तब कीन्हा । बंधन छोरि राज तेहि दीन्हा
रहां राज भोगहु तुम ताता । भजहु सदा मम प्रभु दोउ भ्राता
अस कहि कपि निज दल सो आवा हर्षेउ कटक सबनि सुख पावा
मृतक शरीर प्राण जिमि आवहि मणि बिन पाय फणी सुख पावहि
बिछुरि अनन्य मिलें जनु आई तिमि हर्षे सब लखि दोउ भाई ॥
मिलेउ कपीश चरण धरि माथा पुनि पद गहे निशाचर नाथा ॥

दो॰ जामवन्त अंगद सहित मिले भालु अरु कीश ॥
सनमाने कहि वचन प्रिय लखण कोशला धीश ॥

बहुरि सबहि भेटे हनुमाना ॥ कहहिं तात तुम राखे प्राना ॥
देवन सुमन वृष्टि तब कीन्हीं । प्रमुदित हृदय दुन्दुभी दीन्हीं।
अनुज सहित हर्षित रघुबीरा । कहेउ वचन सुनु तनय समीरा
तव समान नहिं कोउ हितकारी सुर मुनि सिद्ध मनुज तनु धारी।
यश तुम्हार त्रिभुवन महं भयऊ सुनि प्रभु वचन चरण कपि नयऊ

नाथ कीन्ह सब सैं केहि लेखे। नगारी चलत अगमजल देखे।
तैसे सब प्रताप तव नाथा ॥ सुनि अस तिले कपिहि रघुनाथा
कटक सहित हरखे दोउभाई। तेहि अवसर सुख किमि कहि जाई
छं॰ कहि जाइ सुख किमि तेहि समय का सुन लगि गिरिजा चित धरे
रघुवीर रुख अवलोकि हरषित आरती सुर गण करे ॥
अतिप्रेम सों मारुतसुवन यश गाइ विबुधन अस कहा
नरनारि यह कीरति सुनत गावत लहत मंगल सहा
सो॰ करि बहुविधि हरि आरती बाणी सत्य सुनाय ॥
राम चरण अनुरागेउ। अमर सुमन झरि लाय
देव निकर प्रभु गुण गण गावहिं आरत हर कहं विनय सुनावहिं
विबुध विनय रघुपति सुनि काना कह प्रभु सत्य सिंधु भगवाना
चतुराननं वर दीन अपेला। तेहि कारण यह वाढ्यो खेला
नाहित लखण एक पल माहीं राखत यातुधान कुल नाहीं ॥
अजहुं होइ रण कौतुक भारी। निरखहु तुम सब शोच विसारी
अब जो रहेउ निशाचर शेषा। भट महं जासु भुजा कर रेखा
ते रण माहि महं हनहुं पचारी। विनु श्रम सब सी कहत खरारी
शंभु कृपा अब संशय नाहीं॥ सुनि सुर अति हर्षे मन माहीं
दो॰ सत्य वचन सुनि राम के आनन्दित सुर यूह।
चले कहत जय जयति प्रभु वरखे सुमन समूह।
यह चरित्र यश्चि सुभग सुहावा खग पति राम कृपा मैं गावा
अब हिय हरषि सुनहु द्विजराई मानस कहहुं सुमिरि रघुराई।
याज्ञवल्क्य पद वंदि सप्रीती। भरद्वाज बोले सुचि नीती ॥
यह चरित्र अति रुचिर सुहावा सुनि मम नाथ परम सुख पावा
अहिरावण बधांत भगवाना चरित किये सो करहुं बखाना
सुनि मुनि विनय त्रपय पुलकाई बोले हृदय सुमिरि गिरिराई

प्रश्न तुम्हार तात अतिपावन सहज सुभग सज्जनमनभावन

मानस हरि चरित्र सुठि नीका। सुनत करत जो कोउ मन फीका

दो॰ सोई अघ वंचक सुनहु तेहि मानस न सुहाइ।

अघ सागर महँ भ्रमत सो अमित कल्प चलिजाइ

मानस सुनत न मनहिं अघाहीं ता सम धन्य अवर कोउ नाहीं

धन्य धन्य तुम सन कोउ आना। ललित चरित अलि सुनहु सुजाना।

राम लषण दल सहित विराजे। जयति राम कहि कपिगण गाजे

राम सेन सुखमा अधिकाई।। निगमागम जानेउ बुध भाई।

उहाँ दशानन सब सुधि पाई। दूत संदेश दीन्ह सब जाई।।

अहिरावण कर वध सुनि काना भयउ तेज हत अति दुखसाना

वचन वज्र सम लागेउ ताही। संभ्रम मूर्छि परेउ महि माहीं।

कटे पंख जिमि विहंग विहाला रंक चोर हत निशि हिम काला

मुख सुखान लोचन जल बहई। वचन न आव शीश धुनि रहई

दो॰ मय तनया तब आइ पुनि बहु प्रकार समुझाइ।

मान न मूरख कालवश परम क्रोध कहँ पाइ।।

नारि वचन सुनि तेहि रिसि बाढ़ी उठि बैठेउ धरि धीरज गाढ़ी

तेहि अवसर मंत्री एक आवा। करि आदर दश मुख बैठावा

सिन्धुर नाद नाम बलवाला। वृद्ध ज्ञान मय परम सुजाना।

सदा विभीषण कर संग ठयऊ कबहूं दश मुख सभा न गयऊ

आवा सो भल अवसर पाई। कहेसि नीति रावणहिं बुझाई

ज्ञान कथा दश मुख न सुहानी। तब वहिरार बात कह आनी।

करि वर नार हृदय अस गुनेऊ प्रभु दृढ़ ताग हृदय पट बुनेऊ

अब याहि कहौं सो सहज उपाई जेहि यहि मूल समूल नशाई

दो॰ यह विचार बोलेउ सचिव सुनहु दनुज कुल राउ

धीर धरहु संशय विगत कहहुं सो करिय उपाउ

अक्षारिकानि सुतन बल दूना। कस सुरारि मन मानहुं ऊना
सचिव वचन सुनि दश मुख कहई अब हमरे कुल कोभट अहई
अपने मन महँ करहु विचारा। हैं नारान्तक तनय तुम्हारा॥
मूल अभुक्त माहिं भा सोई।। दियो बहाइ मरा नहिं सोई।
शंखु प्रसार ताहि कछु भयऊ। पुर विहवा बल न्रपता दयऊ
कोटि वहत्तर एक प्रभाऊ॥। राजा प्रजा भेद नहिं काऊ।
दूत पठाइ बुलावहु ताही॥। जीतिहि सो रिपु रणमहिमाही
दनुज अधीश चतुर वर पठवौ धरहु धीर चित चिंता घटवौ

दो० तासु मंत्र सुनि दशवदन हृदय प्रमोद अमान॥
धूम केतु कहं बोलि ढिग समुझायउ सनमान॥

धूम केतु तुम परम सयाना॥ लै मम पाती करहु पयाना
वसत जहां नारान्तक राजा। तहां न तात अवर कर काजा
अवसर पाइ हेतु समुझाई। सपदि ताहि लै आनो भाई।
आयसु पाइ चार तहं गवना। यह सुनि विहसि कह्यो अहिदवना
काक नाथ यह गाथ सुहाई॥ मोसन तात कहहु समुझाई
नारान्तक उतपत्ति यथा विधि। पुर विहवाबल गाकवनी सिधि
सुमिरि काक पति उर अवधेशा मन प्रसन्न कर कह काकेशा
अति सुन्दर सुचि यह संवाद। चित थिर करि सुनिये उरगाद

दो० नख चौगुण वसु ऊन लहं सम अकाश मिलाइ
इतने निशिचर एक दिन भे रावण पुर आइ।

पुर महँ उपजे खल इक साथा। तब सुनि हरखा निशिचरनाथा
निज गुरु बोलि चरण शिर नाई बूझा सुदिन सो कलश धराई
भृगु नन्दन तब तेहि सन कहेऊ आजु बाल सब मूलनभयऊ
सत्य कहत दशमुख तुम पाहीं भये आजु जे तव पुर माहीं।
वे सुत सब निज निज पितुघाती मुख देखत सुन सुर आराती॥

घर राखे धन सहित विनाशा । होर अवशि नहिं उबरन आशा ॥
सुरु वचन सुनि डरे निशाचर । कह करिये अति बार परस्पर ॥
निश्चय कीन्ह प्रसव शिशु आज । सौंपिय सिन्धुहिं अवरन काजू ॥

दो॰ सपदि करहु सब काज यह लावहु बाल बटोर ॥
राखे होइ हानि अति यह दश वदन बहोर ॥

सेवक दश मुख आयसु पाई ॥ धाये तुरित चरण शिर नाई ॥
रावण आयसु नगर पुकारी ॥ सुनहु सकल पुर नर अरु नारी ॥
आजु अभुक्त मूल भव बालक । डारहु सागर सब कुल घालक ॥
बोरे सबनि बाल इक ठाई ॥ । भावी वश मधु माखी नाई ॥
पाय अधार तृस बट बौरा ॥ । पावन लगे छीर चहुं ओरा ॥
पीवत छीर अब्द भर साती ॥ । पुष्ट भये खल निश्चर जाती ॥
पुनि सब एक संग तहँ जाई ॥ सुरसरि संगम भा जेहि ठाई ॥
तहँ शिव मन्दिर परम सुहावा । सबनि विलोकि मुदित शिर नावा ॥

छं॰ शिर नाइ मुदित विलोकि शिव मंदिर सुहावन पावनं ॥
कछु दिन रहे तहं सकल पुनि उठि चले सुन आहि दावनं
रावण पुरी तें दिशा प्राची कोस शत रस चलि गये ।
बैठे जलधि महँ पाइ थल वर शंभु चरणन चित्त दये ।

दो॰ जानत नहिं उतपत्ति निज मन महं करत विचार ।
गे तेहि दिग जाकर विदित रवि तें छठवीं वार

हरि अरि गुरु निज शिष्यन चीन्हा करत प्रणाम आशिषा दीन्हा
कहि निज नाम सबनि समुझावा कुल गुरु जानि विनय सुनावा
निज उतपति बूझी शिर नाई ॥ भृगु नंदन सो सकल सुनाई ।
सुनत अपन वृत्तान्त लजाने । जाकि रख भृगु नायक सनमाने
करा प्रतोष मंत्र गुरु दीन्हा ॥ शिक्षा पाइ गमन तिन कीन्हा
ज्ञान लहेउ सब संशय त्यागी । भे विरंचि पद सब अनुरागी ।

निराहार बैठे इक आसन ॥ वर्ष सहस तप किय उग्रासन
स्वास धार कृत वर्ष हजारा । रहे ऊर्ध्व मुख बिना अहारा
दो॰ एक पाद पुहमी दये ॥ अपर अंग अन यास
सकल पुष्ट तन मन हरख सपनेहु भूख न प्यास।
तप अति उग्र विचार विधाता तिन ढिग गमने सुखमुसकाता
हंसा रूढ़ कमण्डल हाथे ॥ श्वेत मुकुट सुन्दि चारिउ माथे
आनन चारि नयन वसु नीके । चारिउ भाल भस्म शुभ टीके।
उपमा मय प्रभु सब जग रेना । भाषेउ दया सदन वर बयना
मांगहु वर जो सब मन भावा ॥ सुनेउ सबनि विधिपद शिरनावा
नाथ चहत हम यह वरदाना । हमहिं न कोउ जीतै मयदाना
एवमस्तु विधि कहेउ विचारी । आन पाणि नाहिं मृत्यु तुम्हारी
हरि सुत हैं तुम्हार गुरु भाई ॥ तेहि सन किहेउ न कबहु लराई
दो॰ जो तेहि सन करिहौ समर मरिहो वचन प्रमान।
सकहि कह वरदान यह दै कह कृपा निधान
दियउ मरान्तक कहं वरदाना । रहे अपर जे धरि उर ध्याना
तिन सन वरब्रहि विधि कहेऊ सुनत प्रमोद सबनि उर लहेऊ
सुनि विधि गिरा सबनि कह स्वामी देहु एक वर अन्तरयामी।
देवासुर संग्रामहिं माहा ॥ जीतहिं हम यह वर सुर नाहा
अस कहि दनुज रहे शिरनाई । तिन सन कहेउ विरंचि बुझाई
तुम अजीत सब सन सब भांती बानर भालु त्यागि इद जाती
यहि विधि सब कहं दै वरदाना ब्रह्म लोक गे ब्रह्म सुजाना।
विधि तें लहि वर तिन सुख बाढ़ा लागे करन बहुरि तप गाढ़ा
दो॰ गिरा गिरीश समेत सब जपहिं निरन्तर नाम ॥
जोरि युगल कर एक पद निशि दिन आठौ याम ॥
बिनु प्रयास ठाढ़े सब भाई ॥ क्षुधा तृषा निद्रा विसराई ॥

गुण सहस्र संवत सब ऐसे ॥ गये बीति प्रथमहिं तप जैसे ।
सवनि शीश पुनि अवनी दीना । उभय चरण ऊरध कहं कीन्हा
ओरे कर निरोध कर स्वासा । जपहिं मंत्र शंकर वर आशा
मुनि गण तिन कर साधन हेरी मन महँ मानत सकुचि विशेषी
हरि इच्छा बल हृदय विचारी । निरखि चले मुनि जपत पुरारी
अयुत अब्द बीते खग नायक भे प्रसन्न शिव जन सुखदायक
चढ़े वरद हिम सुता समेता । आये तिन तट कृपा निकेता
दो० बोले तिनहिं प्रशंसि शिव मांगहु वर मन भाव ।
नारान्तक करि दण्डवत बोला सुन सुर राव ॥।
मैं तप किहउं इहां तव लागी नाथ दीन जन न्दित अनुरागी
अब मांगत आवत मोहिं लाजा ठाढ़ रहा कहि निशिचर राजा
मांगु सकुच तजि अस हर कहेऊ नारान्तक तब मांगत भयऊ
मोहिं विभव अस देहु गोसाईं । भूप प्रजा नहिं परहुं लखाई
पुर अनयास वसहिं मम नाथा यह कहि रहा जोरि युग हाथा
एवमस्तु कहि हर सुर ईशा ॥ गवने भवन सहित वागीशा
शिव प्रसाद नारान्तक पावा । अन्तरिक्ष पुर सपदि बसावा ।
पुर विहवावल की रुचि राई ॥ कहत कछू इक तुम सन गाई
दो० भरतु रवि दूने कोटि सों भवन बसे इक ठौर ॥
जात रूप मय नग जटित अति शोभित चहुं ओर
योजन दोई शत चकलाई ॥ चौंसठ कोस उतंग सुहाई ॥
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुं फेरा । विस्मय विश्व कर्म मन घेरा ।
चारि दुवार कुलिश पट रूरे । गढ़ भीतर चौदह निधि पूरे ।
माणिक पदम धन लुच्छ बखाना बन उपवन सरिता सर नाना ।
बसत प्रजा पुर सघन अपारा नारान्तक गढ़ मध्य संभारा ।
षोडश कोस कोट चहुं ओरा । मणि माणिक लागे नहिं थोरा

हय गय रथ खच्चर समुदाई । कहि न जाय खगमृग विपुलाई
कोटि वहत्तर एकै साथा ॥ । विद्या पढ़न लगे खल नाथा
दो॰ हरि प्रेरित तेहि कालमहं दधि बल पहुंचा आइ
पुर विहवा बल निरखि सो कछु दिन रहा लुभाइ
भावी वस निशिचर संग कीशा वर्ष एक पढ़ सुनहु मुनीशा।
गुरु एक बार कहेउ रिसियाई हति हैंसित आपन गुरु भाई।
बिनु श्रम सुनि दधिबल गुरु शापा बिदा मांगि गवना करि दापा।
मारग मिले देव ऋषि तेही ।। गहे सुकंठ सुवन पग नेही।
लखि आशीष दै बूझा तेही । दधि बल कवन काज गे जेही
तब नारान्तक पुर प्रभुताई ॥ । दधिबल नारद मुनिहिं सुनाई
सुनी निशाचर सम्पति भारी । रहे ब्रह्म सुत हृदय विचारी।
छिनक देव ऋषि कीन्ह गुमाना बार बार सुमिरे भगवाना।
दो॰ दधिबल तें नारद कहेउ सुनहु तात चित लाइ।
तनु धरि जेहि हरिभक्ति नहिं जन्म वादि जग जाइ
यह विचारि भजु रामहिं ताता उपजेउ सुनत ज्ञान सुनि बाता
ऋषि पद परसि आशिषा पाई। कपि पति सुत गवनेउ हरषाई
सपदि कीश तब पहुंचा जहवां पय निधि मध्य रुचिर गिरि तहवां
धवरा गिरि तेहि नाम सुहावा। शुभग देखि कपि बर मन भावा
गौरि गिरीश सुमिरि गणराई । कीन्ह निवास बैठ हरषाई ॥
नारद ताहि देइ उपदेशा ॥। गये विरंचि धाम खग ईशा।
उत दशमुख सुत विद्या पाई। जहां तहां की विविधि लराई
विंद नाम एक निशिचर आहा सो खल रहा वितल थल माहा
सो॰ अति रणधीर जुझार ॥ चढ़े शक्र पर बलि विपुल
कीन्हेउ समर अपार ॥ अब्द एक सुनि संत कह
सत्त कोटि निशिचर संग ताके । असित मेरु सम खल भट बाँके

सुनासीर कोयेउ इक बारा ॥ सब कहँ समर मध्य संहारा ॥
भाजि विन्दु केवल ग्रह गयऊ तासु नारि निशिचर सुख दयऊ
सब निशि भोग करा खल पापी उपजे बहु बालक परतापी ॥
सप्त कोटि सुत नाना नामा ॥ ऊदर वक्र सकल बल धामा
कोटि वहत्तर तनया जाके ॥ लाजहिं मृगा लोचन लखिताके
तिन महँ विन्दु मती इक सुन्दरि। नभ चारिनि रति रूप निरन्तरि
निरखि विन्दु निज मन अनुमाना नाहिं नारान्तक सम कोउ आना

दो॰ यह विचारि चित विन्दु तब नारान्तक हिं बुलाइ ॥
विन्दुमती आदिक सुता सुन्दर साज सजाइ ॥॥

सकल सुता इक संग विवाही। यथा योग जेहि कहजस चाही
नारान्तक सब सेन समेता ॥। करि विवाह फिर गयउ निकेता
पुर विहवावल कीन्ह वसेरा ॥ प्रजा सहित सुख करत घनेरा
जो तिय चहिय विबुध ग्रह भाई सो भावी बस निशिचर पाई ॥
नारि पति व्रत जेहि घर माहीं। तेहि प्रताप निज अमर डेराहीं॥
विंदुमती विद्या सम ताता ॥ बुध जन सभा चरित विख्याता
नारान्तक उतपति मैं गावा ॥ सुन खगेश पुनि चरित सुहावा
पुनि पुनि हरि हर पद शिरनाई। गुरु सन सुनेउँ सो कहेउँ बुझाई

दो॰ चारन दश मुख को तुरत। मग चलि पहुंचो जाइ
ग्रामान्तर योजन युगल। ठाढ़ भयउ हरखाइ ॥।

तेहि मारुत दिशि कानन भारी। परन खेत देखेउ तहं वारी ॥
सकुचि समीप जाइ भा ठाढ़ा। बूझेसि ताहि धीर धरि गाढ़ा
कवन रीति यहि पुर महँ भाई। तरु पर चढ़त भूप सुत आई
चार बचन सुनि सो मुसकाना। कवन नगर तुव बसत अयाना।
नारान्तक नृप कै यह बारी ॥ तेहि कर सेवक मैं लघु चारी।
धूम्रकेतु तेहि उतर न दीन्हा ॥ कछु डरि पुनि निज मारग लीन्हा

लिये कनक घट सुरसा पूरी ।। वारि लेन आई तिय रूरी ।
देखि भयउ तेहि संशय भारी । बूझा सत्य कहहु सुकुमारी ।
दो॰ तुम्हरे पुर कह चेरि नहिं रानी कहहु स्वभाव ।
आइउ तुम जल भरन कहँ बोलेउ त्यागि दुराव ।
दूत वचन सुनि निशिचर चेरी बोली हंसि करि सकहि हेरी ।।
नरान्तक दासिन की दासी ।। हम ताकी दासी विश्वासी ।।
सदां भरें यहि सागर पानी ।। इहँ आवहिं के कारण रानी
कहिहहु अवर काहु असवाना पैहहु मार मुष्टिका नाना ।।
अस कहि गवनी लै जल नारी तिन संग धूम्र केतु मग धारी
गढ़ भीतर कीन्हेसि पैसारी ।। निरखे विपुल कूप सर वारी ।।
नाना गज रथ खच्चर घोरा । फिरत विलोकत पुर चहुं ओरा
अन्तर गढ़ तेहि चारि दुआरा। तहां न चर पावहिं पैसारा ।।
छं॰ पावत नहीं पैसार चर गति द्वार लगि फिरि आयऊ
यहि भांति रावण दूत घटिका युगल दिवस गवांयऊ
मन महं विसूरत ठाढ़ चौहट मध्य सो जब रहि गयो
निशिचर निकर न होन लागि विधि ताहि इक अवसर दयो
सो॰ गवनेउ भूपति द्वार । नृत्य करन इक कौतुकी ।
लीन्ह धार तेहि भार । गढ़ हमि कीन्ह प्रवेश चर
बैठेउ सभा नरान्तक जाई ।। कोटि बहत्तर संयुत भाई ।।
व्योम तीनि रस गुण वसु एका। अंक रीति लिखि गुणी विवेका।
बन्दी जन नट कौतुक करहीं । प्रति दिन कवि कोविद उच्चरहीं
रावण दूत सभा सो देखी ।। । मन महं चकित भयउ विशेखी
तब चारण मन अस अनुमाना। कोटि बहत्तर रूप न आना।
भूषण वसन सु आसन जोहा। देखि सुरवर चारण मन मोहा।
याम दिवस गत अवसर पावा। नारान्तक कहँ शीश नवावा।

दीन्ह पत्रिका पद शिर नाई ॥ कुशल तासु बूझी हरषाई ॥
दो॰ नारान्तक निज कुशल कहि बूझा दशमुख हेतु ॥
समाचार गढ़ लंक कर। बरणेउ दूत सन्केतु ॥
चर भाषित नारान्तक सुनेऊ ॥ क्षणक माहिं मन कारण गुनेऊ
पुनि पत्री निशिचर पति बांची मानी चार बात सब सांची ॥
उठेउ सभा तें हृदय रिसाई ॥ गा निज भवन शोच भर साई
बिन्दुमती कहँ बांचि सुनाई ।। पितु पद भीर पत्रिका आई।
समाचार सुनि कह तेइ नारी। तुम जनि करहु राम सन रारी
गहहु चरण पिय अकमर जाई रतन सुफल करि विनय सुनाई
मांगि भक्ति वर प्रेम दृढ़ाई ।। निर्भय राज करहु गृह जाई।
नारि वचन तेहि मन हि न भावा तब उठि कोट द्वार खल आवा
दो॰ कहत बजाव निशान घन सजहु सेन चतुरंग।
जन्म भूमि जाबा चहहुं। पितु चारन के संग।
आयसु दीन्ह नरान्तक राजा। लगे निशाचर सजन समाजा
अमित बाजि गज उष्टर नाना रथ खच्चर खेचर बहु जाना
नाना अस्त्र शस्त्र गहि पानी ॥ निशिचर अनी न जाइ बखानी
जे सब संयुत साज सजाई ।। विविधि निशान हने हरषाई
कन्त जात निश्चय जिय जानी। बिन्दुमती निज चित अनुमानी
राम विरोध न यहि कल्याना। महुं संग अब करहुं पयाना
भूषण वसन सु अंग बनाई । कंत चरण गहि विनय सुनाई
सासु ससुर दर्शन हित नाथा। हमहूं चलब प्राण पति साथा
दो॰ दशमुख सुत सुनि तिय वचन हृदय परम सुखमानि
कहेउ चलहु सब सखिन पहं ससुरित छांड़ि गलानि
सुनि पति वचन नारि हरषानी चली संग लै सखी सयानी।
लै दल नारान्तक पग धारा ॥ अमित सेन को कहि सक पारा

बुध जन कहत सुनहु खगराजा। अयुत सतावन बाजन बाजा।
धूमकेतु कह दिग संग लीन्हे । अति आतुर गवनारिस कीन्हे
चलत शकुन भल ताहिन होई गनइ न मृत्यु विवशशठ सोई
तासु पयान जानि दिगपाला जिय महं संशय करत विशाला
कोल कूर्म अहि पति अतिडरहीं पुनि पुनि राम चरण चितधरहीं
समुझि राम बल संशय त्यागी। सुर दिगेश प्रभु पद अनुरागी
दो॰ नारान्तक लंका तुरत । दल समेत नियरान ॥
दिग योजन दल रहेउ जब सुन मुनीश सज्ञान ॥
इहां कृपाल रमेश खरारी ।। असित जलद सम सेन निहारी
प्रभु सर्वज्ञ नीति हित सेतू ।। सचिव बोलि कह रघुकुल केतू
सखा विलोकहु दक्षिण ओरा गर्जत घन आवत नहिं घोरा
उमा राम सब अन्तर यामी ।। चरित हेतु बूझा अस स्वामी
राम वचन सुनि दृगसुख भाला कह हंसि गहि प्रभु पद जल जाला
देव देव नहिं दल जल बाहा। अहहि नरान्तक निशिचरनाहा
विहवावल पुर बसत गुसांई । पठवा तेहि दशकन्ध बुलाई
आवत धूम्रकेतु चर संगा ॥ करत कुलाहल नाद उतंगा।
दो॰ तेहि संग गुणी अनेक प्रभु गावत हनत निशान
सेन संग चतुरंग खल । डोलत विविधि दिशान
कह प्रभाव तेहि सुनि भगवाना। विहंसे प्रभु बल बुद्धि निधाना
पाइ राम रुख पवन कुमारा ॥ उठे हर्षि हिय गरजि प्रचारा
सहित लषण प्रभु पद शिर नाई धाये कहि जय जय रघुराई ॥
बात जात निशिचर समुदाई ॥ देखि सपदि दिग पहुंचे जाई
कट कटाइ गरजे अति भारी । देखेउ इमि आवत बन चारी।
बूझेउ दूतहि निशिचर त्राता। यह आवत धावत को भ्राता
स्वर्ण शैल विकरार शरीरा । गर्जत प्रलय जलद सम वीरा

तब नारान्तक सन कह दूता । यहै पवन सुत बली अकूता ।
दो॰ सिंधु लांघि लंकहि दहेसि पुनि हति अक्षकुमार
कालनेमि कहं मारि मग लावा मेरु उपार ॥
पुनि अहिरावण सह भरि वारा मैंठि पताल सदल संहारा ॥
लै आवा तापस दोउ भाई ।। आवत अब तव ढिग सोइ भाई
एहि कर भुज बल अहै अपारा सुनि रिसान दश कण्ठ कुमारा
चाप चढ़ाइ सुधारेसि बाना । तजन न पाव गहेउ हनुमाना
सो शर धनुष तोरि कपि डारा। पुनि रिसाइ उर मुष्टिक मारा ॥
परा दशानन सुत महि कैसे ।। मिश्र रसातल दो गिरि जैसे ।
पवन पूत बल लूम पसारा ।। कोटिन रथ गहि तापर डारा ।
रथ सारथी चूर्ण सम भयऊ । विधि बस तेहि कर प्राण न गयऊ
दो॰ एक दण्ड अति विकल खल रह भूतल धुनि माथ
पुनि शठ उठा संभारि तन धायउ धनु धरि हाथ
छांड़ेसि अगणित शायक कोपी क्षण इक कीश कटक गा तोपी
राम प्रताप प्रभंजन जाया ॥। कर गहि अरि शर तोरि बहाया
देखि पवन सुत की प्रभुताई ॥ बरषत सुमन विबुध झरि लाई
जय जय पिंग अस सुर भाषा। सुनि दशकंध तनय मन माषा।
नारान्तक अति हृदय रिसाई । कपि तट पहुंचा आतुर धाई।
कह कल कीश जो कछु बल धरहू मोसन मल्ल युद्ध रण करहू।
गावहिं विबुध तोरि भुज जोरा। निज उर सहु इक मुष्टिक मोरा
लागत ठाढ़ रहै जो बानर ।। सो जानहुं तव भुज बल आगर
सो॰ हरि सुनि ताकर बात । राम दूत रिसि रोकि उर
अति समीप मुसक्यात क्षणक ठाढ़ सन्मुख रहेउ
तब तेहि कपि कहं मुष्टिक मारा भयउ तड़ित्त सम शब्द अपारा
टरा न तहं ते पग हनुमाना ।। हृदय न निशिचर नेकु लजाना

दूइ मुष्टिक तेहि फेरि चलावा । तब मारुतसुत कोप बढ़ावा ।
किलकिलाय लंगूर लपेटा ।। डारि भूमि तिन दीन्ह चपेटा ।
विकल ताहि करि कपि अति गाजे भे व्याकुल निशिचर बहु भाजे
कोटिन निशिचर कपि कर गहहीं राम दूत कर कौतुक अहहीं ।
मर्दि मर्दि बहु वारिधि डारे ।। देखि देव जय जयति पुकारे
एक दण्ड रात निशिचर जागा । बहु विधि समर करन सो लागा

छं॰ लागेउ करन पुनि समर बहु विधि निज सुभट बहु फेरिकै
खल कोटि कोटि प्रचण्ड धायक कपिहि रणमहं घेरिकै
रण रंग रंजित वीर मारुत पूत पुनि पुनि गर्जही ।।ॐ
गहि गहि विपुल दनुजहिं पछारत उर विदारत तर्जही

दो॰ सघन वाहिनी जलज वन जिमि करि कृत उतपात
रिपुन हनत तिमि वायु सुत विनु श्रम प्रमुदित गात

करत समर आयउ तेहि ठामा । जहँ नित होत रहा संग्रामा ।
लरत अकेल तहाँ हनुमाना ।। धायउ बालि तनय बलवाना
ता पाछे कपि चमू अपारा ।।। चले कहत जय कृपा अगारा
लीन्हे गिरि वरु रज पाषाना । जहँ तहँ करन लगे मैदाना ।
अंगद आइ पवनसुत पांहा । कहि जय रघुवर सुन विज नाहा
दोउ भट इक संग करि जूहा ।। हतन लगे अरि सेन समूहा ।
देखत भालु कीश कृत भारी । भागि चले निशिचर भय भारी
देखि अनी निज त्रासित बहूता । भा अति कुपित दशानन पूता

छं॰ अति कुपित भा दशमुख सुवन निज भटन शपथ दिवाइकै
फेरेउ सबनि करि कोप बोला जात कहहं पराइकै ।
विधि दीन्ह विविध अहार कपि दल खात कछन अघाइकै
विनु भालु कपि महि करहु पुनि हठ धरहु तापस धाइकै

दो॰ सुनि नारान्तक सरुष वच रजनीचर समुदाय ।।ॐ

लागे लरन सकोप सब । माया कपट कुभाय ॥
माया तिमिर पसार अपारा । अस्त्र शस्त्र बहु भांति प्रहारा
शक्ति शूल सर बिशिष कराला डारहिं रज तरु शैल बिशाला
गिरत रिस काँपि लागत शायक उठहिं बहुरि कहि जय रघुनायक
निज दल विकल बिलोकि खरारी सत्य सिन्धु इक शर संचारी ॥
रिपु शर काटि तिमिर कर दूरी । प्रभु शर हते निशाचर भूरी ॥
हरि निषंग महं पुनि सो तीरा । प्रविशे आइ सुनहु मुनि धीरा
निरखि प्रकाश भालु अरु कीशा गाहि गिरि तरु कहि जय जगदीशा
निशिचर अनी मध्य गे जबहीं दिये डारि गिरि रज तरु तबहीं ।
दो॰ मरे तमीचर कोटि भट । जानि निशा परि वेश ॥
दल युत अंगद पवन सुत चले जहां अवधेश ॥
अंगद हनुमदादि कपि भालू । आये जहं रघुवीर कृपालू
प्रभुहि बिलोकि चरण सिर धरे । भे श्रम रहित सकल सुख भरे ।
अति आदर प्रभु किय सनमाना सब कहं बैठन कह भगवाना
पुनि रजाइ लै चले निशि धाये छबि वारिधि प्रभु पद शिर नाये
अंगद हनुमत निकट निवासी । राम चरण सुखमा गुण राशी ।
दोउ भट कर परसत प्रभु पाऊ । देखि सुखद मन भा अति चाऊ
हमहुं होत जग कीश स्वरूपा । पद गाहि नित्त रहत नर भूपा
हरि न सिहाहिं सुमन झरि लाये निज निज आश्रम अमर सिधाये
दो॰ बंधु सचिव सेना सहित शोभित श्री भगवान ॥
तुलसिदास ते धन्य नर जो यह ध्यान लुभान ।
उत नारान्तक सेन समेता ॥ गयउ जहां दश कंध निकेता
मिलहि सुरारि मिला पुलकाई । कुशल बूझि बैठेउ हरषाई ॥
देखि नरान्तक कै समुदाई ॥ दशमुख शठ सब शोच डराई
जेहि विधि हरि लावा जगमाता । ताहि आदि कृत दूत विख्याता

कुम्भकरण घन नाद निपाता । कहि बिलखा अहिरावण घाता
पितु मन मलिन नरान्तक देखा ।। बोला खल उर गर्व विशेषा ॥
तजहु सकल संशय दिवधारी । कीरिहउं प्रात समर अति भारी।
चतुर कौश पितु छिति करि ताता धरिहौं तापस होत प्रभाता ।

छं॰ धरि आनि तापस भ्रात होउ परभात वार न लाइहौं ।
धरि धरि विपुल कपि भालु सैन निशाचरन अघवाइहौं
भुजबल कहहुं निज नाहिं बहुत करि रिपुन प्रगट दिखाइहौं
पितु असहिं तातन को तपर लै तव चरण सिर नाइहौं

दो॰ सुनत बीसभुज सुत वचन बार बार उर लाइ ॥
लागु करावन नृत्य जइ । सुरगी समूह बुलाइ ॥

बिन्दुमती आदिक रनिवासू ।। सब चलि गई मन्दोदरि पासू।
सासुहिं मिलि बैठीं सब नारी । मय तनुजा करि आदर भारी।
बूझि परस्पर रावण घरनी ॥ । प्रभु यश ताहि सुनायउ बरनी।
देइ पतोहुन वास सुहावन ॥ । आपु लगी सुमिरन जग पावन
शयन करहु कह सुतहि निशाचर उठा आपु मति मंद अघाकर ॥
गा तेहि भवन कुटिल दस ग्रीवा जहं मय तनया सह गुण सींवा ॥
आयउ पिय मन्दोदरि जानी ॥ पाइ सु अवसर गहि पद पानी।
तिय सुनाय अति कोमल बैना । लगी कहन जल भरि युग नैना॥

दो॰ नाथ निगम आगम विबुध कहत प्रगट यह बात ।
बुध जन सो जो आधेहू । राखै सर बस जात ॥ ।

तजहि न हठ शठ सर बस खोवै। यद्यपि अन्त शीश धुनि रोवै।
सो विचारु प्रभु परम सुजाना । मोर वचन सुनि कीजिय काना
अजहुं करहु हठ दूरि गुसांई। अनुज भांति मिलिये प्रभु जाई
प्रथमहिं सीतहि देहु पठाई । पुनि तुम गवनहु पुत्र लवाई
प्रभु पद गहि मांगहु वर एहू । पद पंकज रति विमल सनेहू

प्रिया वचन तेहि विषसम लागा सो रहह तजि गा अनत अभागा
निज नारी कहि कटु अभिमानी। कीन्ह शयन निशि आइ घड़िजानी
सो रजनी गत भयउ प्रभाता ॥। जागे रघुवर श्री जग त्राता ॥

दो॰ रीछ कीश जगदीश पद शीश नाइ रुख पाइ ॥
धरि गिरि तरु धावत भयउ कहि जय जय रघुराइ ।

कपि घेरा गढ़ सुनि यह काना । रावण सुन लखि निपट रिसाना
साजि विपुल दल हनत निशाना गढ़ ते चला निकर बल वाना।
चारि द्वार करि कठिन लराई ।। विशिष वरषि कपि दल विचलाई
निकरे निशिचर गढ़ ते कैसे । सलभ समूह शैल तें जैसे ॥
मारुत सुत देखा कपि भाजे ॥ । कट कटाइ मलि विक्रम गाजे
कपि लंगूर चहुं ओर भवाई ॥ रोके खल निशिचर समुदाई ॥
पटकत महि निशिचर फलवेलू। केतिन हेत विदिशि दिश मेलू।
इक दिशि इमि हरि ठ्ठत संग्रामा दिग दूनी अंगद बल धामा ॥ ।

दो॰ निशिचर सेना उदधि सम मन्दर इव दोउ कीश ॥
मथत देखि जय रतन लगि हँसे विवुध सुर ईश ॥

पद्धतिका छन्द

इमि निरखि पराक्रम करत कीश भा क्रोध परम रजनीचरीश
करि प्रलय कन्द तें घोर शोर धर कुधर शस्त्र धाये कठोर।
इकवार मार कर शर समूह । किय विकल अस्त्र हनि कीश जूह
कोउ टरत कपि पति चित उचाट कोउ सुरत करत निज धाम बाट ॥
बहु चले कन्दरा शैल नाक ।कोउ दवकत इत उतपात धाक
कोउ देत दुहाई लषण राम कोउ कहत विधाता भयो वाम
यहि वीच नरान्तक कर प्रधान तेहि धाय गहेउ युवराज पानि
बहु भट लपटाने अंग संग । सब संग उठेउ अंगद उतंग
नभ कीश कीन्ह कौतुक अभूत रवि मण्डल पहुंचेउ वालि पूत
अंग भारे जारे वपनि आंच पुनि आयउ जहं संग्राम राच

यह निरखि अपर यूथप पिशाच । आइ यायउ सेना समाच ।
लै विषम शूल मारेसि प्रचण्ड उर लागि आनि अति कठिन दण्ड
महि परेउ तनय तारा तुरन्त । लखि मैंरि परेउ हनुमन्त सन्त ॥
सोइ शूल खैंचि मारेउ प्रचण्ड होइ गिरेउ यूथपति सहस खण्ड
सब चरित सुनेउ रविकुल दिनेश कह जाहु वेगि अहिराज शेष
चलेनाइ माथ शंकर मनाइ ॥ धनु बांधि बान विकराल लाइ
उर अंगद कर धरि सुमिरि राम अस विगत भयउ बल अतुल धाम

दो॰ विगत भई मूर्छा तुरित ॥ बहुरि चलेउ युवराज ॥
लक्ष्मण चाप टंकोर सुनि फिरा कीश दल साज ॥

सुनत टंकोर शरासन निशिचर । वधिर भये नहिं सुनत शब्द पर ।
वर्षा विशिख कीन्ह अहिनाथा । काटे पानि पांय बहु माथा ॥
उड़हिं अकाश शीश भुज कैसे । धुनकत तूल रोमगण जैसे ॥
रुण्ड अशीश फिरहिं रण धरणी यथा अकाल क्षुधारत करणी
इत कपि भालु विजय अभिलाखे उताहिं निशाचर जय हित राखे
मारुत सुत अंगद बल वीरा । समर बांकुरे अति रण धीरा ॥
सिंहनाद कीन्हा हरि दोऊ ।। भाजे कपि रण गाजे सोऊ ।
दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं ॥ प्रमुदित भट कायर हिय डरहीं

छं॰ कायर डरहिं प्रमुदित सुभट सब लरत हारि न मानहीं
जहँ तहँ गिरहिं पुनि उठि फिरहिं इहुं ओर जयति बखानहीं
कौतुक विलोकत विबुधगन विस्मय हरष उर आनहीं
रघुवीर सेननि परसु मन भरि लाय विनती ठानहीं ।

दो॰ अति अद्भुत करणी करहिं रिक्ष कीश बल भूरि ॥
कर पद विनु करि रैनचर तिन मुख डारहिं धूरि ॥

बहुतनि के शिर तोरि चलावहिं । निज भुज बल रावणहिं जनावहिं
बाये याम युग दिवस भवानी ॥ नारान्तक अध सेन सिरानी ॥

मरे निशाचर अमित निहारी ।। रवण सुवन कोप करि भारी ।।
रथ समेत ऊपर नभ जाई ।।। भयउ अदृश्य शस्त्र झरि लाई
क्षण महं करि मूर्छित कपि सैना। मुनि शठ गा जहं राजिव नैना
गरजा मनहुं मेघ समुदाई ।।। कहन लगा कटु वचन रिसाई
होसि न जग निशिचर कुलद्रोही बंधु वैर लगि मारहुं तोही।
प्रभु कहं कटुक कहत सुनि काना कोपेउ जामवन्त बल वाना।

दो॰ शूल एक तेहि छांडेउ ।। सो कर गहि रिक्षेश ।।
धाय तासु उर मारेऊ ।। भाषि जयति अवधेश

लागत शूल सो मूर्छित भयऊ। जामवन्त तब कर गहि लयऊ
बार अमित महि माह पछारा। बाधि गाड़ि बारु महं डारा ।
जागे सकल बली सुख रिच्छा । लगे करन रण निज निज इच्छा
जामवन्त यह हृदय विचारा ।। मरे नहीं यह खल मम मारा।
विधि इच्छा पुनि ताहि उखारी । मुष्टि चारि उर माहिं प्रचारी।
गहि पद संचारा गढ़ माहा ।। । सपदि परा जहं निशिचर नाहा
दशों वदन हा हा कर धावा ।। नारान्तकहि हृदय तब लावा।
निरखि निशाचर गण समुदाई। गढ़ कहं गे सब संभ्रम धाई

दो॰ कपिगण समय प्रदोष लखि राम चरण धरि माथ
ठढ़ भये सब तन चितय दया दृष्टि रघुनाथ ।।

पितु अस कीन्ह सबनि जगदीशा गये सुवास भालु अरु कीशा
रुचिरासन आसीन रमेशा ।।। दिग वीरासन उरग नरेशा।।
अंगद मारुत सुत प्रभु चरणा। लागा पलोटन सुनहु अमरणा
पुण्य पुंज अरु भाग्य निधाना जिन पर नित्त प्रसन्न भगवाना
यहां सुरारि सुतहि पीड़ाई ।।। विलखहिं तासु नारि समुदाई
होत प्रभात नरान्तक जागा ।। पितु विलोकि लज्जा रस पागा
रथ चढ़ि तुरत इकाकी धावा ।। नभ पथ समर मोह मिस आवा

कीश कटक यह मर्म न जाना । होइ लोप कीन्हेसि झरि बाना ॥
दो॰ धावहिं व्योमहिं भालु कपि ताहि न हेरैं नैन ॥ ७५ ॥
घायल होइ होइ गिरहिं महि भाषहिं आरत बैन ॥
बाण एक शत तड़ित समाना । छांडेसि शठ जहं कृपा निधाना
लागत विपुल कीश सुरझाने । बहुतक कायर देखि पराने ॥ १ ॥
भागि सेत दिश एक अयाना ॥ । हेरे फिरहिं न सुन हरि याना ॥
मारुत सुत अंगद सुग्रीवा ॥ । कुमुद मयंद द्विविद बल सीवा
ये सब वीर हांक दै धावहिं ॥ नभ पथ ताहि न खोजत पावहिं
तब सब वीर एक मत ठाना ॥ । लै गिरि तरु किय लंक पयाना
दशमुख भवन तासु कंगूरा ॥ बैठे कपि पसारि लंगूरा ॥ २ ॥
करते डारि देहिं पाषाना ॥ ॥ बहुत दनुज भे चूर्ण समाना
तोमरछन्द भे चूर्ण निशिचर यूथ । गे निशिचरी भय यूथ ।
सुखहीन आरत हीन्ह । भइ भवन रावण लीन्ह
सुनि बोलि भट दशभाल । कह खाहु कीश कराल
करि यत्न भागें कीश । अस कहेउ वच दशशीश
मम लहहु आयसु वीर । तुम हो सकल रणधीर
सो शूर मोकहं प्यार ॥ । जो खाइ मर्कट धार ॥
जो जाइ आयसु छोर । सोइ जानिहौं रिपु मोर
दो॰ एतु एतु गुण रयनचर । एक एक भुज जोरि ॥
रावण पावन राखि थिर धाये करि रव घोरि ॥
देखि लंगूर सकल हरषाने ॥ । मधु माखी सम सब लपटाने
कपि उर सुमिरि रमेश प्रतापा । डारे सबनि पटकि करि दापा ।
कान्चे घट सम दनुज विदारी ॥ जयति राम जय लषण खरारी
सुभट दुहनि पुनि फेरि लंगूरा । भूमि गिरावहिं कोटि कंगूरा ।
अति विशाल गहि कंचन खंभा । जिमि प्रयास विनु करु आरंभा

लेहाहत अपक्क घट जूहा ॥ । कपि तिमि तोरत दनुज समूहा
पुनि विचार करि हरि घट धाये निशिचर निकर मध्य चलि आये
करि कोटिन बिनु नासा काना ॥ कर पद हीन कीन्ह रिपु नाना।

छं॰ रिपु कीन कर पद हीन शोणित दीन वचन पुकारहीं।
बाट तें निकरि निशिचर अखिल खल विपिन बाट सिधारहीं
पीपर परण सम धरणि लंका कम्प घट कीशनि करा
तोरे कपाट नियारि अरितिय केश खैंचत गहि करा

दो॰ भयउ कुलाहल लंक अति नारान्तक सुनि कान ॥
नभ ते स्यन्दन सहित शठ। प्रगटि परम रिसियान।

निरखि दशा निज नारिन केरी ॥ कहन लाग कटु गिरा घनेरी ॥
शठ आयउ संग्राम बिहाई ॥ लरत तियन संग लाज न आई।
अवलन पै बल भट न कराहीं ।। छांड़हु तियन लरहु मम पाहीं।
सुनि मरकटनि भयउ सुखभारी। तजी निशाचरि दीन पुकारी ॥
भाजि भवन भय युत गइ नारी ।लीन्ह कपिन कर शिला उपारी।
शिल प्रहार हय स्यन्दन भंजा । आयुध तोरि सारथी गंजा ॥।
धरि पछारि रावण दृग देखा ॥। कौतुक कीशनि कीन्ह विशेषा।
लागे पद गहि खल न फिरावन। नाचहिं गाइ राम यश पावन।

दो॰ तोरत तिन तन पटकि महि कहत जयति रघुबीर
करत युद्ध गतयाम युग। कीश छुहौं रण धीर ॥

अस्ताचल रवि कीन्ह प्रवेशा ॥ बन्दे चरण जाइ अवधेशा ॥
श्याम सरोरुह प्रभु तन देखी ॥ पद धरि शिर सुख लहेउ विशेषी
राम सबनि सादर सनमाना ॥। को दयाल रघुबीर समाना ॥
कह प्रभु होहु थलनि आसीना। आयसु पाइ भये श्रम हीना ॥
भये विगत श्रम वानर भालू ॥ अनुज सहित मन मुदित कृपालू
सुनहु उमा ता निशि रघुनायक। गावत जन गुण सब गुण दायक

याम तीनि यामिनि गत जबहीं उत नागन्तक जागेउ तबहीं
शोच विवश भीजत होउ छाया लज्जित हृदय निशाचर नाया।

छं॰ लाज के रथै संभारि। बाज साजि रुष्ट पुष्ट
शंक छाड़ि शस्त्र मांडि गाढ़ बीर संग दुष्ट।
भेरि दुन्दुभी निशान गान काड कैंत कर्त
धीर वीर अग शोल गाजि गाज शब्द भर्त॥
जीव आश त्रास नाश बाज मोह छगड छगड
बंक श्रूर शंक दूर बीरता सपूर चगड॥
बाजि नाग शोर घोर पूरि गे दशो दिशान
धूरि पूरि मेघ बांध शोधना परो अपान॥
कूदि कूदि व्योम पंथ जाय आइ जाइ भूमि
अस्त्र शस्त्र काढ़ि काटि क्रुद्ध क्रुद्ध भूमि भूमि

दो॰ मलय मनहु चाहत करन अनी तमीचर चगड
सुनु खगेश मर्कट विकट जिमि धाये वरवगड

छं॰ निहारि हर्ष कीश रिक्ष फूलि फूलि गोल भे
बजाइ कहृटाइ हूह एक बार के अभय॥
उपारि भूधरा अपार वृक्ष अश्म शृंगह्
मरे निशाचरानि रुगड झुगड मुगड भंगहू॥
रहीं हरी म्लगावनी सवार उष्ट्र मगडहू॥॥
मनो विचित्र वाहिनी दई मनोज खगडहू।
हले धरा बलें विचारि भार धारि को सकै
सुने पुकारि जयति राम शत्रु से नहीं धकै॥
लंगूर मूल से अकाश भीत उच्च ओंचलो
गिरे पयोद पौन ते झपट भेट ते कलो॥।

सो॰ शब्द करत अति घोर। इमि पहुंच्यो दल भालु कपि

आयुध झरि अतिजोर। परैलागिघनप्रलय सम ॥
सजगहोन कपि भालु न पाये ।। अतिशय निकट तमीच्चर आये
असित निशाच्चर अति अंधियारी तापर करहिं शस्त्र के मारी ॥ ।
सूझहिं कपिन न हाथ पसारे । जहँ तहँ एकनि एक पुकारे ॥
सनमुख कोउ न करत लराई ।। कपिन मारि रण भूमि सोवाई ।।
गे अनेक भजि सिंधु समीपा ।। सेन विकल लखि रघुकुल दीपा
सजि सारंग तजा एक वाना ॥ ।भा प्रकाश दिग तरणि समाना
लखि तम विगत भालु कपि हरषे कट कटाइ धाये रिपु धरषे ।
भिरे एक सन एक प्रचारी ॥ ।। लागो करन कठिन हठ भारी ।।
दो० शीश शिला तरु करनिधरि काँखन भरिभरिधूरि
गरजे भालुबलीबदन धाय धाय नभ दूरि ॥ ॥
डारहिं गिरि तरु निशिच्चर शीशा दधि घट सम कोरहिं भट कीशा
चढ़हिं अनेक कंध पर जाई ।।। काटहिं कान दशनि रज माई ।
तोरहिं शूल चाप नाराच्चा ॥ ।। अरि दल अस्त्र न सको बाच्चा ॥
शस्त्र हीन रिपु सेन पराई ॥ ॥ देखि पवन सुत हँसेउ ठठाई
बैठि अवनि अति लूम लफाई। अति उतंग दीरघ चौड़ाई ॥
तर्कित खसे निशाच्चर कैसे ॥। पक्ष हीन नभ ते खग जैसे ।।
गिरत कीश गहि च्चरण फिरावहिं पटकि भूमि गाड़हिं विहसावहिं
तुम्बरि सम अगणित भुज तोरत। अगणित रुण्ड सिंधमहं बोरत
दो० कोटि बयालिस तमीच्चर नारान्तक कर भ्रात ॥।
राम कृपाबल हति खलनि कपिन बिताई रात ॥
प्रभु तुणीर महं हरि शर जबही प्रविशे कीन्ह उदय रवि तबही
देखि कटक निज परम विशाला नारान्तक भट कोटि कराला ॥
करि बहु शपथ लिये संग वीरा। बरषत शक्ति उपल गन तीरा।
शर अस्तम्भन विपुल पनारे ।भये अच्चल कपि टरहिं न टारे ।।

ले ले पास निशाचर धाई ।।बाँधत जिमि चुंगली शुक पाई
व्याधि पींजरा सम बहु जाना । भरे जान प्रति अयुत प्रमाना।
जे कपि लखें विपुल बल बंका ॥ ते मूर्छित फेकें गढ़ लंका ॥
रावण देखि तनय की करणी ।॥ बन्दी जन जिमि भुजबल वरणी

दो॰ हरि इच्छा जानें नकस । सुतहिं सराहत मूढ़ ॥
काल विवश मति संभ्रमित सुनहु अरषय बुधिगूढ़

अंगद हनूमान जब जागे ॥। नारान्तक मन अति भय लागे ॥
क्षण इक कौशल पायउ लरई । धुनि शर हति मूर्छा वश करई ॥
याम युगल तेहि कर वर हाना । राखेउ तेहि कारण भगवाना
शिशुहिं खिलावत रघुकुलकेतू । पालत बुधि बानी श्रुति सेतू ॥
सो युग याम गये जब बीती ॥। तब रघुबीर सजी जय रीती।
हाँक देइ कपि भालु जगाये ॥ भये विगत मूर्छा सब धाये ॥
हनूमान अंगद जब जागे ॥। राम लषण चरणन अनुरागे
प्रभु पद शीश रहे धरि कीशा । तब हंसि बोले श्री जगदीशा

सो॰ विधि वाचा लखि आज । तात तुमहिं मूर्छा भई ।
पुनि कहि प्रभु रघुराज । अब भ्रम सपनेहु अनतनहिं

तुमहिं सुमिरि अंगद हनुमाना जितिहैं जगत मनुज संग्रामा
अस वर जबहि रमापति भाषा सुनत गिरा हरखे मृग साखा
कहेउ बहोरि वचन रघुबीरा ।। सुनु अंगद हनुमत रण धीरा
तात तुरत तुम उभय सिधावहु। लंक गये कपि तिन्हें छुटावहु
सुनि दोउ भट गहि शैल विशाला सुमिरि कोशलाधीश कृपाला
सपदि कीश गढ़ पर चढ़ि गये ॥ देखि लंक महं खरभर भये।
तोरि पास भजि राम समीती ॥
सकल कपिन कै मूर्छा बीती । ॥ हरषे कहि जय जयति खरारी
वायु सूनु युवराज निहारी ।।

दो॰ मेष वरूथहिं पाइ जिमि वृक गण करहि सिंगार

तिमि मरदहिं दनुजन सुभट कीश भालु बरियार ॥
याम एक वासर अवशेषा ॥ ॥ कह अंगद कीशन तन देखा ॥
चलिय तात अब जहँ सुरभूपा। देखिय पद पाथोज अनूपा।
अंगद वचन पवन सुत भाये । सपदि सहित दल प्रभु पहँ आये
निशिचर कोटि नरान्तक संगा। करत रहे बहु विधि रण रंगा।
माया करि निजगण तब जावहिं जहँ जहँ खल रावण यश गावहिं
अदिति नन्द लखि तिनकर माया सभय भये जाना रघुराया ॥
दीन नाथ अनुजहि अनुशासन उठे निमित गाहि विशिष शरासन
अहिपति कहेउ तिष्ट क्षण एका तें कीन्हे रण खेल अनेका।
छं॰ तैं कीन्ह खेल अनेक विधि अब तिष्ट खल रण भूथला ॥
इमि काहि अहीश चढ़ाइ धनु शर करन निशिचर दलमला।
निज अनी निरखि निदान हरिहर सुवन धावा रिसिभरा
डारत अनेक नराच प्रभु पर शिला तरु वर भूधरा
रघुबीर अनुज प्रवीन खल बल दलन छतियश गावहीं
तरु उपल गिरि अरि तीर उपरहिं बाण लषण चलावहीं
रिपु शस्त्र अस्त्र अनेक आयुध कनक करि करि डारहीं
सुरगण प्रफुल्लित सुमन झरि करि जय तिलषण पुकारहीं
दो॰ माया पति के अनुज सन माया करत अयान ॥
लगत न एको जानि जिय तब खल निकट तुलान
हना लषण उर प्रवि सम शायक लगत गिरे रण महि अहि नायक
पुनि खल दल भा प्रबल अपारा। भक्षण लाग भालु कपि धारा।
चले पराय कीश भय भीता ॥ अवन बचब करि काल प्रतीता
निशिचर धारि भालु कपि वेषा लागे खान कपिन अस देखा ॥
कपि डर कीश भालु डर रिसा। आपु आपु भय मिलन अनिसा
कोउ न काहु निकट नियराई । जो जेहि पाव ताहि तेहि खाई ।

पुनि शठ साधि विभीषरारूपा। गहि अंगद हनुमन कपिभूपा
काहुन यह माया कछु जानी । कपट मिलाय विभीषण ठानी।
दो॰ तेहि अवसर गौरी लखण देखा सेन विनाश ॥ ४
अहिरावण छल पवन सुत समुझत उड़ा अकाश
गरजेउ भार भयंकर भारी ॥। फटेउ हृदय सुनि निशिचरझारी
माया हत शर लखण पवारा ॥ उघरे कपट कपाट अपारा॥
नारान्तक कै माया वीती ॥ ॥ गयउ यज्ञ शाला अतिप्रीती
खोजेसि सकल समग्री ताकी कीन्ह अरम्भ विजय निज ताकी
यज्ञ आसुरी तेहि तब ठाना ।। पशु समूह बलि कारण आना।
भये निशासुर अस वश सेना ॥ फिरे सुमिरि सब राजिव नैना ॥
तुरित अहीश रान पहँ आये । सहित अनी प्रभु पद शिर नाये
कृपा अयन निरखे खग शाखा। प्रभुश्रम छीन दीन अभिलाषा
दो॰ निकहु थलनि सब सनकहा सुख सागर रघुनाथ
पाय सुआयसु भालु कपि चले सुमिरि श्री नाथ
तब रघुराज अनुज उर लावा ।॥ निज आसन समीप बैठावा ॥
मघवा सुत सुत अरु हनुमाना इन सम भाग्य वन्त नहिं आना
अमलाम्बुज पद गहि निज पानी परसे सबनि सनेह भवानी।
जामवन्त लंकेश हरीशा ।।। प्रभु समीप सब मुदित मुनीशा
अनुज सखा नारान्तक करणी युद्ध प्रबलता बहु विधि वरणी
शिव प्रसाद तेहि अमित प्रतापा मरत न दीन्हे बहु संतापा ॥
सुने वचन रघुपति मुसकाने । अति सनेह हर चरित बखाने
सुनहु सकल मम शम्भुन आना जिन्हहिं भेद ते वश अज्ञाना
दो॰ जे सुमिरहिं शिव सह उमा ते जानहु मम प्रीय।
शंकर भजहिं सो मोहिं भजे मोहि सो शंभु अतीय
चारि पदारथ करतल ताके ॥ बसहिं महेश उमा उर जाके

जो मम प्रण शिव सदा निबाहा सो जय देव न संशय आहा।
सुख कलत्र जय विजय विभूती शंकर सुमिरत होइ अकूती।
भक्ति मोरि शंकर आधीना ॥। जलाधीन जिमि जीवन मीना।
कह आश्चर्य नरान्तक एहा ।। मोपर गिरिपति परम सनेहा।
सुमिरहु सदा विश्व इक नाथा। कपट त्यागि सब नावहु माथा
होइहि विजय धीर मन धरहू। वेगि उपाव पाव सुख करहू।
शम्भु उपासन कर मम दासा ।। तात हृदय धरि दृढ़ विश्वासा

दो॰ जे नर चाहत भक्ति मम। सो छल कपट दुराइ ॥
शिवा समेत गिरीश पद निशि दिन रहु मन लाइ

मन क्रम वचन शम्भु पद आशा करहिं ताहि उर सम्भु निवासा
निर्भय करि जो हर पद नेहू ।। ता उर रमा सहित मम गेहू।
भव वारिधि लांघहिं विनु खेवहि यह बिचारि बुध जन भव सेवहिं
भव भंजन यह हित उपदेशा। सुनु जाहि सबहिं बुझाव रमेशा
सुब वाणी सुनि अति सुख पावा अहिपति राम चरण शिर नावा
अंगद हनूमान नल नीला ॥। कपि पति अरु रिक्षेश सुशीला
सहित विभीषण राजन साता। सुन भी सुख हर यश विख्याता
रामहिं शिवहि एक जे जाने ॥। भय तजि नाम जपत हरषाने

दो॰ कहत सुनत इतिहास शुचि निशि बीती युग याम
खगपति आवत देखे ऋषि जित शोभित श्रीराम

राम लषण सुख सीव विराजें। मार अपार निहारत लाजें।
निरखि मानि मुनि हृदय सनाथा उठे हरषि प्रभु रघुकुल नाथा
शीश नाइ प्रभु आसन दीन्हा। आशिष पाइ हरषि हित कीन्हा
मुनि नीके हरि रूप विलोका ॥ यथा इन्दु लखि सुख लह कोका
सुनि कि बात तब कह ऋषि राजा सुनहु नाथ आयउँ जेहि काजा
चतुरानन पठवा मोहिं स्वामी ॥ यदपि कृपानिधि अन्तरयामी

सदा अनाथ नाथ भगवाना। विनय विरंचि करिय परिमाना
जब लगि होन प्रभातन पावहि। तब लगि हरि हर सुत लै आवहि

दो० जपत निरन्तर नाम तव। सो जानहु भगवान॥
विधि वर हित इत आनिये तेहि कह कृपा निधान

नारान्तक बध है तेहि हाथा॥ दधिबल नाम भक्त तव नाथा
नाथ बहुत यहि खलहि खिलावा रण विलोकि देवन दुख पावा
अब रघुबीर करहु सोइ बाता। बिनु प्रयास रिपु मरइ प्रभाता
तेहि सन तुमहि न सोह लराई। दधिबल सन सुख करहु बुलाई
सविनय नाइ शीश बर भाषी। गावने मुनि प्रभु छवि उर राखी
नारद गये जबहिं विधिलोका। वायु तनय तन राम विलोका
तात तुरत तुम गवनहु तहवां। वारिधि महँ धौरा गिरि जहवां
तहँ दधिबल रह ध्यान लगाये बहुत दिवस चलि गये सुभाये

दो० अहै तपोबल तेजसी॥ तात तासु ढिग जाइ।
मन प्रसन्न करि चतुरई आनहु वेगि बुलाइ॥

पवन कुमार पाइ अनुशासन। चलेउ बन्दि पद हरषि उदासन॥
वेग वन्त धावा कपि कैसे॥ ॥ वर नराच दधि सुत तें तैसे॥
लोक अर्द्ध घटिका तेहि ठामा। पहुंचे वायु पुत्र बल धामा॥
देखि तरणि सम तासु प्रकाशा ठाढ़ भयउ कपि मन्दिर पासा
दण्ड युगल कपि इस्थित रहेऊ हिय महँ राम राम अस कहेऊ
उतरु न होई होत प्रभाता॥ इत इन कर चित हरिपद राता
क्षण इक कपि मन कीन विचारा प्रभु पहँ चलिये कवन प्रकारा
जो बरह सहित चलहु लै एही। नहिं अस आयसु भक्त सनेही

दो० बुध जन शीश शिरोरतन अति लजात मुनिराउ
ताहि जगावन हेत तब कीन्हे अमित उपाउ।

अचल ध्यान कपि तासु प्रमाना तजि प्रवीनता भजि भगवाना

राम चरणा चित कपिवर स्ययऊ दराड एक औरों चली गयऊ
विधि प्रेरित दधिबललघु शंका करन उठेउ देखा भट बंका
ॐ श्री राम वायुसुत बोला ॥। सुनि दधिबल निज लोचनखोला
बूझि हरिहि कीशाहि उर लाई ।। कहीपरस्पर होउ कुशलाई।
पुनिहनुमान कहेउसुन भ्राता। चलहु विलोकन त्रिभुवनत्राता
सानुज नाथ सुखद पद कंजा। जिन मकरन्द शिलाअघगंजा
जेहि लगि तप कीन्हेउ बहुकाला सो तुम पर अनुकूल कृपाला
दो॰ धूर जटी हनुमान सर। बसत हंस इव जोइ ॥।
सादर तुम कहं लेन लगि पठवा मोहिं प्रभु सोइ
सुनि शुभवचन सुकंठ कुमारा हरि पहं हरि संग तुरत सिधारा
आये नाथ निकट मगशाखा देखे पद जे हर हिय राखा ॥
रहेउ चरण गहि प्रीति समेता दधिबल निरखेउ कृपा निकेता
सानुज हरषि मिले सुखकंजा। तासु पाणि गहि निजकर कंजा
बैठे ताहि निकट बैठावा ।। ॥ तेहि अवसर सुकण्ठतहं आवा
निरखि तनय कपिपति हरषाना मिलतप्रेम नहिं जाय बखाना
गइ मणि पन्नग जनु पुनिपाई। देही देह मीन जल जाई॥
सुखसुग्रीव लहेउ प्रभु भेटे।। अवगुण तीन ताहि क्षण मेटे
सो॰ दधिबल बालिकुमार ॥ मिले परस्पर हरषिहिय
भयउ आइ मिलुसार। न्हाइ सबनि प्रभुपद गहे
जहँ तहं समर करन बन चारी। चले कहत जय लषण खरारी
उहां नरान्तक भ्रात प्रबोधा ॥ रथचढ़ि चलेउ भयंकर योधा
निशिचर हठी सुभट संग ताके आयुध अखिल भयानक वाके
महि संत्रास निशाचर ठाढ़े ॥ असित मेघ सम अतिरिसबाढ़े
करि माया तेहि गात छिपावा भयउ प्रगट तबप्रभु ढिग आवा
दधिबल लखा सखा चलि आयउ भुजा पसारि हरषिउठिधायउ

नारान्तकहुं दीख गुरु भाई ।। मुदित मिले उर अभय अघाई
भेटि सप्रेम बूझि कुशलाता ।। निज निज दशा कीन्ह विख्याता

दो॰ हरिपति सुत प्रवीण अति सुनि तेहि सुख विख्यात
लगे बुझावन मित्र कहँ सुनहु वीयपति बात ॥

वंश सुभाव सत्य कवि कहही । फल पियूष विष बेलिन लहही
समुझहु तात विचारि निदाना। किहे अनीति न जग कल्याना
पितु चरित्र समुझहु मनमाहीं राम विरोध कतहुं जय नाहीं।।
तुव प्रवीन भा मतिभ्रम कैसे ।। कूप धसत विक बार अनैसे।
तुमहुं कीन्ह दिन चारि लराई । जानेउ भालु कीश बल भाई।।
तजि कुमंत्र सम्भव अज्ञाना ।। कहहु पाहि रघुवर भगवाना
सफल करहु भव प्रभु पद परसी करिहैं अभय तोहि समदरसी
मानहुं सीख मोरि सुख कारी ।। प्रणत पाल रघुवीर खरारी ।।

दो॰ शारंगी शर तरणि सम। दशमुख वपु खग लेख
जरत राखु यह समय तुव करि विज्ञान विशेष

सुनत वचन गुरु भ्राता केरा ।। नारान्तक भा क्रोध घनेरा ।।
कहन लाग खल ताहि कुभांती सहज सभीत कीश दिन राती।
बालि हि हतेउ जवन तपधारी। भा अंगद तिन आज्ञा कारी।
दधिबल यह वानर कुल रीती । हमरे कस्हिं न अरि सन प्रीती
यह कहि प्रभु सन्मुख सो धावा दधिबल लूम लपेटि टिकावा
नारान्तक कह रे शठ वानर ।। तव तन नहीं मोर डर कादर
छाड़हुं मूढ़ समुझि गुरु भाई ।। कहि अस पेलिच ताकठिनाई
तब सुकण्ठ सुत क्रोधित भयऊ सपदि कूदि आगे गहि लयऊ

दो॰ नारान्तक दधिबल भिरे निरखि भालु अरु कीश
लगे करन संग्रा निशिचरन कहि जे श्री जगदीश।

छं॰ कपिभूर संहारहिं लनिगारि बहु मर्दि करे सिकत्ता पहारि

भटविहवावलवासी जितेका। कपि सारि गिराये बचनएक
रह एकाकी मनुजाद वीर ॥ किय द्वन्द युद्ध उग्रगाढ़धीर
दोउ लरत लहैं छवि एकभांति गिरिकज्जलकंचन उभयख्याति
युग घटिका ऊपर एकयाम। दोउ भिरे समर बलयोगधाम
पुनिभा अलक्ष सो करत युद्ध बलवन्त उभय अमगतसक्रुद्ध
कह षट प्रकार श्रुति युद्धरीति सुख मानेउ सुरदेखत सुप्रीति
लखि पुत्र इकाकी पुलकि तात कह बालि अनुज अति हर्षवात

दो॰ जामवन्त मन बचन मृदु कहेउ सुकण्ठ पुकारि।
कहहु तात दधिबल कबहिं दनुजहिं डारिहि मारि।

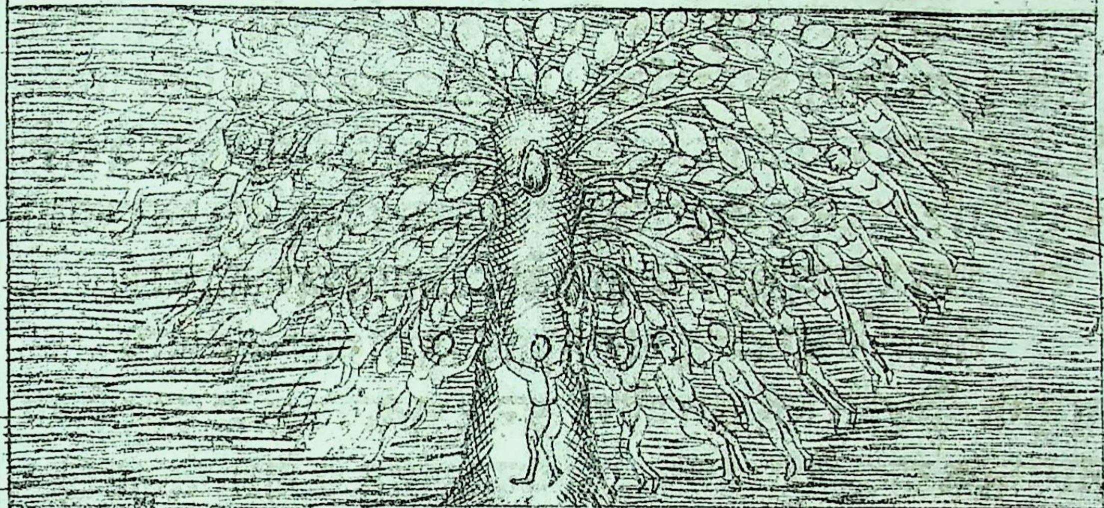
समर करत लागी अति बारा ॥। यह सुनि बोलेउ रिक्ष भुआरा।
क्षणक हृदय धरु धीर कपीशा। दधिबल गुरु मन नहीं अशीशा
सो अवसर अब आन तुलाना। एक पलक महँ मारिहि अथाना
सुनि हरीश मन महँ अति हरषे। तबही विबुध सुमन बहु बरषे
दधिबल धन्य भुजा बल तोरा ॥। रण कौतूहल कीन्हन घोरा ॥।
हरि अस्तुति सुनि हरि अरिकोपा कपिहि सहित खल भयउ अलोपा
योजन अयुत अष्ट नभ जाई। दधिबल सुमिरि हृदय रघुराई
गहि मनुजाद भूमि पर डारा ॥ करि चिकार तेहि मरती बारा

छं॰ मरतीसमय अति शब्द करि दशमुखतनय हरिहरि कही
तजि अधम तन धरि शुभगवपु द्विजनाथ सुनि सोगति लही
जेहि हेतु सुर मुनि सिद्ध नाना भांति जप तप मख किये
श्री राम करुणा सिन्धु सो फल सहजही दनुजे दिये।

दो॰ देखि तासु गति विबुधगण अभय भये खगराट
प्रमुदित बरषे पुहुप झरि राम चरण चित लाट।

मरा नरान्तक दधिबल जानी ॥ तोरि तासु शिर गहि निज पानी।
रुण्ड तासु गहि लंक सचारी ॥ आपु चले जहं नाथ खरारी।

रावण के नरान्तक आदि पुत्रों की उत्पत्ति और नरान्तक व अंगद हनुमदादि वानरों का घोर युद्ध और दधिबल नरान्तक के घोर संग्राम में दधिबल करके नरान्तक बध॥







निशा प्रवेश भूत बैताला ॥ ५ चढ़ि चढ़ि बाहन वेष कराला।
आइ समर महि सुरवर समेता। उदर अघाइ गये मुनि केता
आयउ दधिबल प्रभु के पासा देखि हरषि उठि रमा निवासा
सानुज राम मिले अति प्रीती। परम प्रसाद नाथ नित रीती॥
बैठे रघुकुल मणि दोउ भाई॥ सखा सुतहि निज दिग बैठाई
हनुमदादि मरकट प्रभु पाहीं। नाइ माथ प्रमुदित मन माहीं
दो॰ राम रजायसु पाय पुनि होइ विगत श्रम कीश।
तब दधिबल प्रभु चरण गहि आगे धरि अरि शीश
समुझि कौतुकी रिपु सुत शीशा सुनहु सुकण्ठ कहो जग दीशा
नारान्तक कर शीश धरावहु॥ यतन समेत न सेत चलावहु॥
नाथ रजाय पाइ कपि राई॥ राखेउ सो शिर यतन कराई।
पुनि दधिबल हरि कीन्ह बड़ाई श्रीपति श्री मुख बहु विधि गाई
जासु बडाई किय बहु ईशा। सबहि सराहत सो जगदीशा
दधिबल प्रभु अनुकूल बिलोकी सफल जन्म लखि भयउ विशोकी
प्रेम वारि लोचन कर जोरी॥ बोलेउ गिरा भक्ति रस बोरी॥
जगदातमा तुम्हार यह बाना॥ सन्तत करहु दीन मन माना
दो॰ वनचर पावर सहज जड़ बुद्धि विषम अज्ञान
बिरद स्वभाव कृपाल प्रभु सेवक सुयश बखान॥
तव यश विमल विदित अवधेशा कहत न पार पाव श्रुति शेषा
सो मैं प्रभु कहि सकहुं न कैसे। परी वणिक गज मणि गुण जैसे
अस कहि हरि हरि पद लपटाने देखि प्रेम कपि विबुध सिहाने
अन अभिमान ताहि प्रभु जाना दीन दयाल बहुरि मन माना
मांगु बच्छ जो वर मन भावा। सुनि दधिबल करि विनय सुनावा
नाथ तुम्हार रूप गुण नामा। करहि निरन्तर मम उर धामा
होइ मुहिं प्रिय पद पंकज कैसे कामिहिं वाम लूम धन जैसे।

एवमस्तु तुम कहँ वर एहू ॥। मम इच्छा कछु औरो लेहू।
सो॰ चिहुवाबलपुर राज ॥ करहु तात तुम मुदितमन
छांडि अवर सब काज ॥ शिवा शम्भु पदभक्तिहृद
यहै काज शुभ संतत चहई ॥ ॥ जोइ सोइ प्राणी ममप्रिय रहई।
उमा राम कर यहै स्वभाऊ ॥ जन पर प्रेम न कबहु दुराऊ
मोहिं निज रूप रमापति जानैं। ताते वारम्बार बखानैं ॥ ॥
जानेउ श्रीरघुवर स्वभाव जिन। सब तजि प्रेम भक्ति मांगी तिन
राम भक्ति वारीश जासु उर ॥ महिमा तासु कहत स्तुतिबुधवर
सर सरिता सब सुखद सुहाये सहजहि आवत विनहि बुलाये
ताहि मुदित सिखई रघुनाथा ॥ पुनि प्रभु कीन्ह तिलक निज हाथा
सारंगी रुख सबही धावा ॥ ॥ अंगदादि ताकहं शिर नावा
दो॰ पाइभक्ति वर राजवर प्रभुचरणन शिर नाइ ॥ ॥
दधिबल पठयउ तुरतहठ सुनहु अरयय सुभभाइ
तन मन राम चरण अनुरागे ॥ दधि बल राज करत भय त्यागे
सेन सहित श्री राजिव नैना ॥ राजत देखि विबुधचितचयना
हनत दुन्दुभी विविधि प्रकारा ॥ पुहुप माल भरि करत अपारा
करि अस्तुति वर विनय पुकारे। अदित सुनु निज गेह सिधारे।
उनहि जहां बैठा दशभाला ॥ विनु शिर वपु सो परा विशाला
देखि विकल आपे उठि धावा। पहिन्चानत तेहि अतिदुखपावा
हा नारान्तक कहि खल परा ॥ महा खभार लंके गढ़ भरा ॥
मय तनया आदिक निशिचरी। शोक समाज विषादहिं भरी।
दो॰ विन्दुमती आदिक सकल नारान्तक की नारि ॥।
व्याकुल महि लोटहिं परी निज निज दशा विसारि
करि विलाप जिमि निशिचरनारी सो न जात कहि सुन नभचारी।
शोक जलधि लंका लघु तरणी॥ चढ़ीं सकल निशिचरकी घरणी

बूड़त जानि जकतहुं निबाहा ॥ कहत मंदोदरि तब सब पाहा
बिंदुमती कर गहि बैठाई ॥ । भाग सुताके कथा सुनाई ॥ ॥
सुनत सुनयना की सुन्धि करणी धारि धीर नारान्तक घरणी।
सबनि बुझाय मातु पद लागी तजि धन धाम स्वामि अनुरागी
मातु करहु सो यतन उतकुल ॥ मिलहुं जाइ जेहि पद निजराउल
सुन सुतबधू न आन उपाऊ ॥ जाउ जहां राजत रघुराऊ ॥

दो० जेहि विधि गई सुलोचना तेहि गति तुम भय त्यागि
निरखहु रघुपति पद कमल लावहु प्रीति सिर नांवि

सासु वचन सुनि जानि प्रभाता । उठि निशिचर तिय पुलकित गाता
जातरूपमय यान मंगाई ॥ ॥ निजकर गाहि पति देह चढ़ाई।
चली अकेलि यान चढ़ि जबहीं । तासु सवति इक आई तबहीं ॥
नाम चित्र रेखा अस तासू ॥ । सुरा गरा सुभगा बसैं तनु जासू
सो करि विनय चढ़ी तेहि संगा । कीन्ह पयान रंगी सत रंगा ॥
रथ अकेल आवत कपि देखा । कादर डरपे हृदय विशेषा ॥ ।
आवत मानि सबल रिपु कोऊ । नल अरु नील सुभट वर दोऊ।
आये धाय सपदि तब आगे ॥। युगल नारितन निरखन लागे

दो० समुझि बूझि वृत्तान्त दोउ फिरि आये प्रभु पास ॥
बन्दि कंजपद उभय कह सुनिये रमा निवास ॥

नाथ नरान्तक की दोउ नारी ॥ आवत शरण प्रणत भय हारी ॥
सुनि रघुबीर हृदय मुसकाने ॥ उतहिं टिकावहु सखा सयाने।
सुनि प्रभु वचन बहुरि सो धाये। कटक विशाल रथ दूरि टिकाये
चित्रुमती पद रेखा दूनो ॥ ॥ विनय हमारि कीश अस सूनो
कहहु जाइ तुम प्रभुहि बुझाई केहि कारण हम दरसन पाई।
हम अबला कपि विनवैं तोही बूझिनाथ सन कहबै मोही
नारि विनय सुनि कपि दोउ भले नीति विचारि राम पहं चले ॥

विनती नारि जाइ नल वरणी ॥ सुनि विहँसे प्रभु तिनकी करणी
दो॰ परम मृदुल रघुनाथ चित कहत संत बुध वेद ॥।
ता कहँ देत न दरश प्रभु । सुनु खगेश सो भेद ॥।
प्रेम परीक्षा हित रघुनायक ॥ कौतुक करत अमर सुखदायक
नाथ सखा सब बहुरि बुझाई ॥ सुनि नल नारिन पास पठाई ॥
कह कपि सुनहु नरान्तक नारी दरशन तुमहिं न देत खरारी ॥
तुम दरह जाहु वचन मम मानी ॥ बोली सो तिय वचन सयानी ॥
हम अबला दरशन हित आई । नयन सफल बिनु किमि रह जाई
यहि विधि करत विनय दोउ नारी कौशल कटक कीन पैसारी ॥।
आवत निकट जानि रिपुरवनी यद्यपि पति व्रत हैं सुखभवनी
तदपि नाथ तेहि दरश न देहीं ॥ जाइ निकट विनती की तेहीं ॥
दो॰ प्रभु सीता पति जगत पति सुर नर पति रघुनाथ ।
देउ दरश करुणाअयन । दीन बन्धु श्रुति गाथ ।
बोले राम न सो तिय बोली ॥ विमल ज्ञान पति व्रत अनुडोली
नाथ सत्य यह नीति बखाने ॥ ।पुरुष न पर तिय सपनेहु जाने।
प्राकृत पुरुषन की यह रीती ॥। जिनके हृदय कपट पर प्रीती।
सम दरशी कछु दोष न स्वामी ॥ सो विचारु प्रभु अन्तर यामी।
आरत वन्धु विलम्ब न कीजे ॥ करुणा कर वर दरशन दीजे।
नहिं बोले प्रभु पुनि सो कहई ॥ तव यश अस श्रुति गावत अहई
गौतम नारि राम तुम तारी ॥ । अधम जाति भिलनी निस्तारी।
सुनि मम हृदय परी पर तीती । अब प्रभु कस देखिय विपरीती
दो॰ तारि तारि अधमनि अमित बार बार श्रम जान ॥
ताते करत अनाकनी ॥ मोरि ओर भगवान ॥
प्रभु मुसकाहिं न उत्तर देहीं ॥ ताकर प्रेम परीक्षा लेहीं ॥ ।
विकल उभय नारान्तक बाला। बार बार करि विनय विशाला

धर्म्म धुरन्धर प्रभु अवतारा ॥ केवल पति व्रत धर्म्म हमारा।
जो हम सत्य सत्य तुम स्वामी ॥। इवहु वेगि उर अन्तर यामी
वृथा करत कत प्रभु श्रुति भाषा। पूजन नाथ न मम अभिलाषा
लीन भयउ पति प्राण राम महं ॥ अर्ध भाग हम कहहु जांव कहँ।
वृन्दा चरित नाथ सुधि करहू ॥ विनय हमारि वेगि उर धरहू।
विनय प्रीति सत धर्म्म जनाई ॥ परी प्रेम वश महि अकुलाई ॥

दो० पाहि पाहि रघुवंश मणि हतहु न विरह प्रतीति।
प्रीतम प्रीति न नर्क डर। तुम कहँ नाथ अनीति

सती निराश विनय सुनि बानी ॥ पुलके दीन दयाल भवानी ॥
इहुन लीन निज कटक बुलाई ॥ परीं युगल प्रभु पद तर आई।
तिन्हैं उठाय राम बैठावा ॥॥ जगदीश्वर मृदु वचन सुनावा
विलुमती तैं परम सयानी ॥। पति पद रति दृढ़ हृदय समानी।
बहुत करहुं कह तव गुण गाना। मांगु वेगि वर जो मन माना
सुनत वचन लोचन जल बाढ़ी। जोरि युगल कर दोऊ ठाढ़ी ॥
प्रभु तव हानि वेर तर वर से ॥ पद जल जात देखि सुर सरिसे
परम पवित्र भई हम दोऊ ॥ हम सम धन्य नारि नहिं कोऊ

छं० को धन्य हम सम नारि जग मह सुनहु श्री रघुनायकं
दै दरश कीन्ही पतित पावन नाथ सुर अरि घायकं
कृपा सागर यश उजागर देहु वर सुर भा वरम ॥
जेहि मिलैं पति कहं जाइ वितु श्रम बढ़इ तव यश श्री धरम

सो० यह कहि विन्दु कुमारि ॥ सहित सौति प्रभु पद परी।
तिन्हैं उठाइ खरारि ॥ ॐ। जग त्राता इमि कहत पुनि

धरहु धीर तुम जनि अब डरहू ॥ निज पति लेहु भवन सुख करहू
कहेउ देव हम कंह यह नीका ॥ हमहुं कहत अब भावत जीका
गिरिजा सहित गिरीश विरागी ॥ नाथ तुम्हार दरश अनुरागी।

नारदादि सनकादिक जेते ॥। अपजय करहिं विविधि विधि तेते
तेउ न कबहुं हमारी नाई ॥४॥ देखहिं मद जल जात अघाई ॥
हरि दरशन सुख लेश समाना । जग के सब सुख नाहिं समाना ।
अमिय अघाइ गरल को खाई । विनय हमारि यहै सुर सांई ॥।
देहु कन्त सिर सपदि मगाई ॥ दया शील सागर रघुराई ॥।
दो॰ नासत्तक कर शीश तब । दीन्ह मगाइ रमेश ॥।
पाइ स्वामि सिर मुदित होइ बोलीं सेउ उर गेश ॥
नाथ विनय हम अवरौ करहीं । ताहि विना हम केहि विधि जरहीं
सुख सागर सुनि वचन समाना हनुमत अंगदादि भट नाना ॥
कह प्रभु सखा लंक महँ धावहु चन्दन अगर भार बहु लावहु
पाइ राम अनुशासन धाये ॥ ॥ लंका गढ़ घरह गरह सत्रु पाये
कपिन शोधि चन्दन बहु भारा ॥। लाये जहँ श्री नाथ उदारा ॥
कह रघुवीर सुनहु लंकेशा ॥। तात यहै बड़ हित उपदेशा ॥
विन्दुमती जहँ चाहत ठाँऊ ॥। ताहि भार संग तुम तहँ जाऊ ॥
दशकन्धर कर वधर विहाई ॥। चिता चारु सुन्दि देहु बनाई ॥
दो॰ रघुवर आज्ञा धारि सिर ॥ उठे दशानन भाइ ॥ ॥
अयुत भार चन्दन अगर तेहि संग चले लिवाइ ॥
जहाँ जरी मघवाजित नारी ॥। तेही ठहर चिता संवारी ॥।
उहवाँ अपर सोति मनु मारी ॥ विन्दुमती मन भाव पियारी ॥
मूर्छित परी प्रथम सुधि नाहीं ॥। चलीं सुनत अति दुख मन माहीं ॥
चलीं चतुर्दश निशिचरि कैसे ॥ निरखि स्वास मृगी गण जैसे ।
हा हा विन्दुमती पति प्यारी ॥। कहां गई तुव हमहिं बिसारी ॥
पहुंची सह विलाप तहं सोऊ ॥ हरषी हृदय विलोकत दोऊ ॥
षोड़श निशिचरि भई सभागी । मन वच क्रम पति पद अनुरागी
सकल अन्हाइ मृतक अन्हवाई सुमिरत हृदय राम गति हाई ॥

दो॰ उत दशकन्धर जागेउ शठ। सुनेउ श्रवण सब हेतु।
संग मंदोदरि आदि तिय। रावणा से खग केतु॥१॥

बाजत ढोल कपिन सुनि काना॥ अपने मन तिन अस अनुमाना॥
आव युद्ध हित उत कोउ बीरा॥ हम कहं ठाढ़ करत यह तीरा॥
कीश अयुत तब प्रभु पहं आये। पूरण प्रेम चरण शिर नाये॥
नाथ उतहि दशकन्धर जाना। कीश एक कह सुनु जन त्राता।
प्रभु कह कुमुद तुरित तुम धावहु। बेगि विभीषण कहं लै आवहु।
राम रजाइ सु शिर धरि धाये॥। सपदि विभीषण पहं सो आये
तात तुमहिं रघुराज बुलावा॥ ।सुनत लंक पति आतुर आवा
हेतु पतोहन कहि सभुभावा॥ कुमुद सहित रघुपति पहं आवा

दो॰ मोहिं निशा तहं तरुणि रवि तिन चरणन शिर नाइ
भागवन्त रावण अनुज। बैठेउ प्रभु रुख पाइ॥

दशमुख तियन सहित गा तहवां। बिन्दुमती चित्ररेखा जहवां॥
देखत अति बिलखा विबुधारी। करुणा करत निशाचरि भारी
सासु ससुर कहं देखि दुखारी॥। ज्ञान नवीन नरान्तक नारी॥
कहि श्रुचि गाथ सबन समुझाई। स्वामि समेत चिता पर आई।
यथा योग्य बैठीं सब तैसे॥। पति गृह रहत रहीं नित जैसे
अगिन दीन्ह ज्वाला अतिधाई। पहुंचीं सुर पुर सब तिय जाई
देखि दशा तिनकी सुर रवनी॥ तिनहिं सराहि भवन निज गवनी
रावण सहित यवति निज गेहा। गयउ भरोसा सति संदेहा॥

छं॰ सन्देह सासत भरेउ रावण सहित दारनिगृह गयो।
दनिमय सुता दिक निशिचरिन लखि विकलबल मूर्छित भयो
दशमाय वातिदेखत विपुल बिलखैं निशाचर निशिचरी
संताप शोक विलाप भय भुम कटक लंका महंपरी।

दो॰ राम विरोधिहिं जस उचित तस दिन पहुंचा आइ

सो विस्तार करि लंक बनाई ॥ उतरीं विपति बजाई ॥

इहाँ देव देखाइसु जाना ॥ । वर आसन शोभित भगवाना

यथा योग्य बैठे स्वग शाखा । सब कीन्हे प्रभु पर अभिलाषा

रिपु बड़ भयेउ हर्ष सब के मन ।। पुनि पुनि हेरत शुभगश्यामतन

तिनकी रुचि लखि दीन दयाला । शिव यश गावहु कहा कृपाला

भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई ॥ ॥ गावहिं कपि कल कंठलजाई

डमरु श्रृंगि श्रृंगी कर तारी ॥ ॥ घ्राण पाणि सुख ते बनचारी

गाँडर तन्तु वेणु मंजीरा ॥ ॥ शंख मृदंग नाद गंभीरा ॥

नृत्यत कीश भाव दिखरावत । शिवा सहित शिवकीरतिगावत

छं॰ शिव शिवा कीरति विमल गावत भालु वानर सुख भरे

अहिनाथ युत रघुनाथ छवि निरखत सकल चित पर धरे

प्रभु देखि कौतुक अनुजसहित सखन लखानत श्रीसुखम

तुलसी यतो जेहि ध्यान जे जन पावहिं नित यश सुखम ।

सो॰ गत रजनी सुजयाम । लवकीश लकरणा अयन

करि पूरण मन काम । सबनिक हेउ राजहु यतन

बैठे निज निज थल रण धीरा ।। अनुज सहित राजत रघु बीरा ।

सुखमा सीव सेन युत राजे ॥ ।जय जय धुनि कपि भालु समाजे

उमा चरित यह रुचिर सुहावा । नाथ कृपा मैं तुमहिं सुनावा ।

अपर चरित गिरि राज कुमारी। सुनहु कहत मय भीति निहारी

उहां मध्य निशि रावण जागा ।। कोउ कोउ सचिव सिखावन लागा

उर सिखावन कहि बुध बांके ।। थके न कछु मन माने ताके ।।

रावण मन औरै कछु लसई ।।। मेटि को सकै जो विधि उर बसई ।

प्रभु विरोध करि चह कल्याना। मोह विवस सो शठ अज्ञाना ।

इति

वचन सुनत तेइ कछु सुख माना । काल विवस जस तीरथ जाना ॥

इहि विधि जलपत भा भिनुसारा। लगे भालु कपि चारिहु द्वारा॥
सुभट बोलाइ दशानन बोला॥ ॥ रण सनमुख जाकर मन डोला
सो अबहीं बरु जाइ पराई॥ ॥ रण सनमुख भागे न भलाई॥
निज भुज बल मैं बैर बढ़ावा॥ दैहौं उतर जो रिपु चढ़ि आवा
अस कहि मरुत वेग रथ साजा। बाजहिं सकल जुझाऊ बाजा
चले वीर सब अतुलित बली॥ जनु कज्जल गिरि आँधी चली
अशकुन अमित होहिं तेहि काला। गनै न भुज बल गर्व विशाला

छं० अति गर्व गनत न शकुन अशकुन स्रवहिं आयुध हाथ ते
भट गिरहिं रथ ते बाजि गज चिक्करत भाजत साथ ते
गोमायु गृध्र कराल खर रव स्वान बोलहिं अति घने
जनु कालदूत उलूक बोलहिं सकल परम भयावने।

दो० ताहि कि सम्पति शकुन शुभ सपनेहु मन विश्राम
भूतद्रोह रत मोह वस॥ राम विमुख रत काम

चली निशाचर अनी अपारा। चतुरंगिनी चमू बहु धारा॥
विविध भांति बाहन रथ याना। विपुल वरण पताक ध्वज नाना
चले मत्त गज यूथ घनेरे॥ । मनहु जलद मारुत के प्रेरे॥
वरण वरण वर दैत्य निकाया॥ समर शूर जानहिं बहु माया
अति विचित्र वाहनी विराजी।। वीर वसन्त सेन जनु साजी॥
चलत कटक दिग सिन्धुर डगहीं क्षुभित पयोधि कुधर डगमगहीं
उठी रेणु रवि गयउ छिपाई॥। पवन थकित वसुधा अकुलाई
पणव निशान घोर रव बाजहिं। महा प्रलय के जनु घन गाजहिं
भेरि नफीरि बाजु सहनाई॥। मारु राग शूर सुख दाई॥
केहरि नाद वीर सब करहीं॥। निज निज बल पौरुष अनुसरहीं
कहै दशानन सुनहु सुभट्टा॥। मर्दहु भालु कपिन कर ठट्टा॥
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई॥। अस कहि सनमुख फौज चलाई

यह सुधि सकल कपिन जब पाई धाये करि रघुवीर दुहाई ॥ ॥
छं॰ धाये विशाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।
मानहुं सपक्ष उड़ाहिं भूधर वृन्द नाना वाण ते ॥।
नख दशन शैलन कन्द द्रुम गहि सबल शंक न मानहीं
जय राम रावण मत्त गज मृग राज सुयश सुनावहीं
दो॰ दुहु दिशि जय जय कार करि निज निज जोरी जानि।
भिरे वीर इत रघुपतिहि। उत रावणहिं बखानि।
रावण रथी विरथि रघुवीरा ॥ ।।देखि विभीषण भयउ अधीरा।
अधिक प्रीति उर भा सन्देहा । ।वंदि चरण कह सहित सनेहा ॥
नाथ न रथ नाहीं पद त्राना ॥ । केहि विधि जीतब रिपु बलवाना
सुनहु सखा कह कृपा निधाना ।। जेहि जय होइ सो स्यन्दन आना
शौरज धर्म्म जाहि रथ चाका। सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका ॥
बल विवेक दम पर हित घोरे । क्षमा दया समता रजु जोरे ॥
ईश भजन सारथी सु जाना ।। विरति चर्म्म संतोष कृपाना ॥
दान परसु बुधि शक्ति प्रचण्डा। वर विज्ञान कठिन कोदण्डा
संयम नियम शिलीमुख नाना अमल अचल मन त्रोण समाना
कवच अभेद विप्र पद पूजा । इहि सम विजय उपायन दूजा
सखा धर्म्म मय अस रथ जाके। जीतन कहँ न कतहुं रिपु ताके
दो॰ महाघोर संसार रिपु ।। जीति सकै को वीर ।।॰
जाके अस रथ होइ दृढ़। सुनहु सखा मतिधीर ॥
सुनत विभीषण प्रभु वचन हर्षि गहे पद कञ्ज ॥।
इहि विधि मोहिं उपदेश किय राम कृपा सुख पुञ्ज ॥
उत प्रचार दशकन्धर ।। इत अंगद हनुमान ॥ ।
लरत निशाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन
सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना ।। देखहिं रण नभ चढ़े विमाना

मैं हूँ उमा रहेउँ तेहि संगा ॥। देखत राम चरित रण रंगा ॥
सुभट समर रस दुहु दिशिमाते ॥ कपि जय शील राम बल ताते।
एक एक सन भिरहिं प्रचारहिं ॥ एक एक मर्दहिं महि पारहिं ॥
मारहिं काटहिं धरणि पछारहिं। शीश तोरि गहि भुजा उपारहिं
उदर विदारहिं भुजा उपारहिं ॥।गहि पद अवनि पटकिभटडारहिं
निशिचर भट महि गाड़हिं भालु। ऊपर डारि देहिं बहु बालू॥
वीर बली सुख युद्ध विरुद्धा ॥। देखिय विपुल काल जनु क्रुद्धा

छं॰ क्रोधे कृतान्त समान कपितन स्रवत शोणित राजहीं
मर्दहिं निशाचर कटक भट बलवन्त जिमि घन गाजहीं
मारहिं चपेटनि काटि दातनि डाटि लातनि मीजहीं॥
चिक्करहिं मर्कट भालु छलबल करहिं जेहि खल छीजहीं
धरि गाल फारहिं उर विदारहिं गल अँतावरि मेलहीं।
महलाद पति जनु विविध तनु धरि समर अंगन खेलहीं
धरु मारु काटि पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही
जय राम जो तृण ते कुलिश कर कुलिश ते करु तृण सही

दो॰ निज दल विचल बिलोकि तब बीस भुजा दश चाप
चला दशानन कोप करि फिरहु फिरहु करि दाप

धावा परम क्रोध दशकन्धर ॥ सनमुख चले हूह दै बन्दर ॥।
गहि कर पादप उपल पहारा ॥ डारहिं तेहि पर एकहि बारा।
लागहिं शैल बज्र तनु तासू ॥ खण्ड खण्ड होइ फूटहिं आसू
चला न अचल रहा रथ रोपी ॥।रण दुर्मद रावण अति कोपी ॥॥
इत उत झपटि दपटि कपि योधा। मर्दै लाग भयो अति क्रोधा ॥
चले पराइ भालु कपि नाना ॥। त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥
पाहि पाहि रघुवीर गुसाईं ॥। यह खल खाव काल की नाईं।
तेहि देखे कपि सकल पराने ॥॥ दशहु चाप शायक संधाने ॥

छं॰ संधानि धनु शर निकर छांडेसि उरग जिमि उडि लागहीं
रह पूरि शर धरणी गगन दिशि विदिशि कहँ कपि भाजहीं
भा अति कोलाहल विकल दल कपि भालु बोलहिं आतुरे
रघुबीर करुणा सिंधु आरत बन्धु जन रक्षक हरे ॥

दो॰ निज दल विकल देखा कपि कटक कटि निषंग धनु हाथ
लक्ष्मण चले सकोप तब नाइ राम पद माथ।

रे खल का मारसि कपि भालू। मोहिं विलोक तोर मैं कालू ॥
खोजत रहेउँ तोहि सुत घाती। आजु निपाति जुडावौं छाती
कहि अस छांडेसि बाण प्रचण्डा लक्ष्मण किये शर हति शत खण्डा
कोटिन आयुध रावण डारे ॥ तिल प्रमाण प्रभु काटि निवारे।
पुनि निज बाणन्ह कीन्ह प्रहारा। स्यन्दन भञ्जि सारथी मारा ॥
शत शत शर मारे दश भाला। गिरि शृंगनि जनु प्रविशहिं व्याला
पुनि शत शर मारे उर माहीं ॥ परेउ अवनितन सुधि कछु नाहीं
उठा प्रबल पुनि मूर्छा जागी ॥ छांडेसि ब्रह्म दत्त जो सांगी ॥

छं॰ जो ब्रह्म दत्त प्रचण्ड शक्ति अनन्त उर लागी सही।
पर्यो विकल बीर उठाव दश मुख अतुल बल महिमा रही
ब्रह्माण्ड भुवन विराज जाके एक शिर जिमि रज कनी
सो चह उठावन मूढ रावण जान नहिं त्रिभुवन धनी

दो॰ देखि धावा पवन सुत। बोलत वचन कठोर ॥
आवत तेहि उर महँ हनेउ मुष्टि प्रहार प्रघोर

जानु टेकि कपि भूमि न परेऊ ॥ उठा संभारि बहुरि रिसि भरेऊ।
मुठिका एक ताहि कपि मारा ॥ परेउ शैल जिमि वज्र प्रहारा।
मूर्छा गई बहुरि सो जागा ॥ कपि बल विपुल सराहन लागा
धिक धिक धिक बल पौरुष मोही। जो तैं जियत उठा सुर द्रोही ॥
अस कहि कपि लक्ष्मण कहं ल्यावा देखि दशानन विसमय पावा

कहह रघुबीर समुझि जिय भ्राता । तुम कृतान्त भक्षक सुर त्राता ।
सुनत वचन उठि बैठु कृपाला ॥ गगन गई सो शक्ति कराला ॥ ।
पुनि कोदण्ड बाण गहि धाये ॥ रिपु सन्मुख अति आतुर आये

छं० आतुर बहोरि विभंजि स्यन्दन मारि तेहि व्याकुल कियो
गिरयो धरणि दशकन्धर विकलतनु बाणशतबेध्यो हियो
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लंका लै गयो ॥
रघुवीर बन्धु प्रताप पुञ्ज बहोरि प्रभु चरणन नयो ।

दो० उहां दशानन बहुरि उठि करन लाग कछु यज्ञ ॥
जय चाहत रघुपति विमुख शठ हठ बस अति अज्ञ

इहां विभीषण सब सुधि पाई ॥ सपदि आइ रघुपतिहि सुनाई ॥
नाथ करै रावण एक यागा ॥ सिद्ध भये नहिं मरिहि अभागा
पठवहु नाथ वेगि भट बन्दर ॥ करहिं विधंस आव दशकन्धर
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये ॥ हनुमदादि बन्दर सब धाये ॥
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका ॥ पैठे रावण भवन असंका ॥
जबहीं यज्ञ करत तेहि देखा ॥ सकल कपिन भा क्रोध विशेषा
रण तें भाजि निलज यहं आवा । इहाँ आइ बक ध्यान लगावा ॥
अस कहि अंगद मारेउ लाता । चितव न शठ स्वारथ मद राता

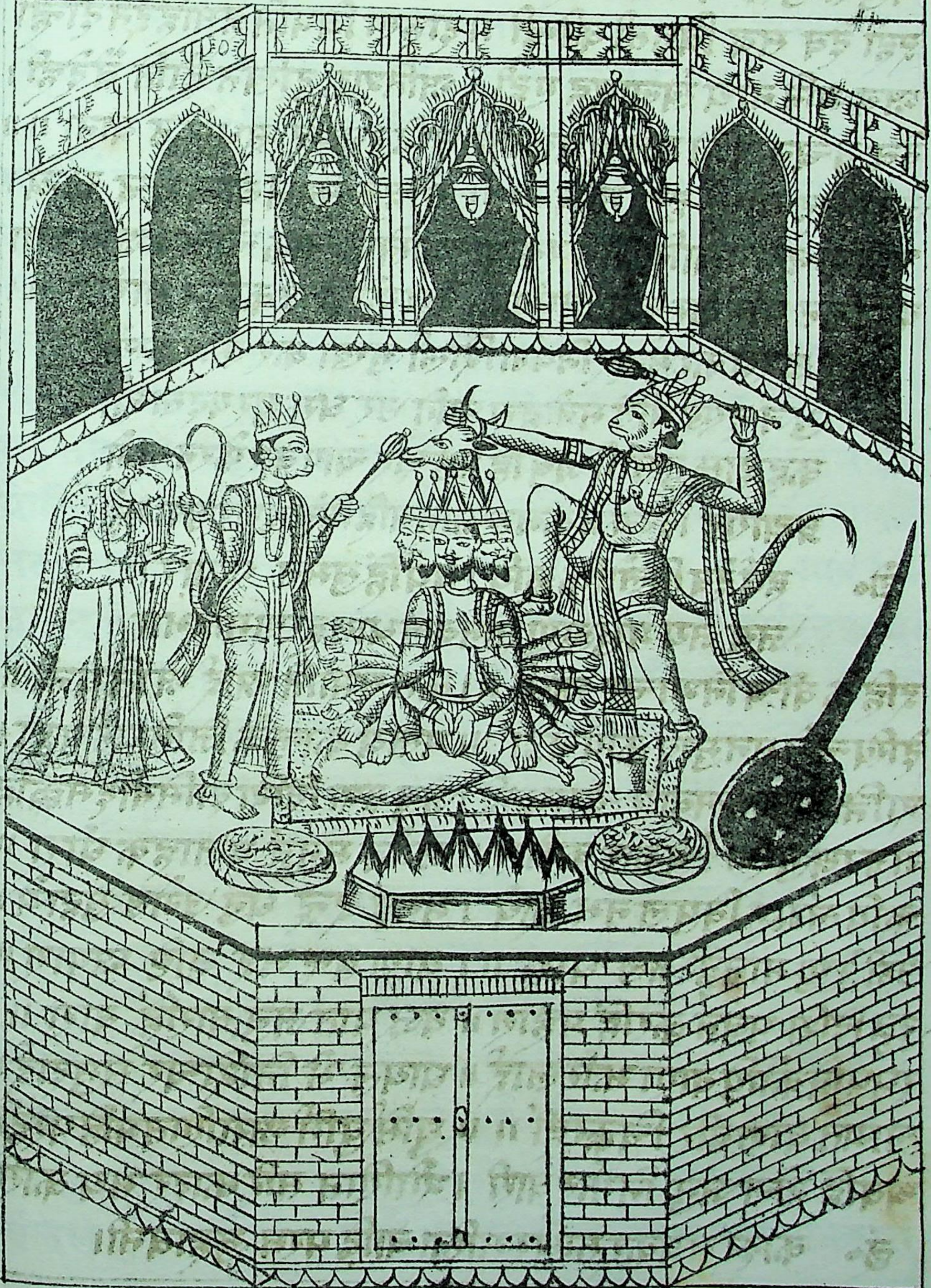
छं० नहिं चितव जब कपि कोपि तब गहि दशन लातन मारहीं
धरि केश नारि निकारि बाहर जब सो दीन पुकारहीं
तब उठा कोपि कृतान्त सम गहि चरण वानर डारहीं ।
इहि भांति यज्ञ विधंस करि कपिनेकु मन हिं न हारहीं

दो० मख विधंस करि कपि सकल आये रघुपति पास
चला दशानन क्रोध करि छांड़ी जिय की आस

चलत होहिं तेहि असुभ भयंकर बैठहिं गृध्र उड़ाहिं शिरनि पर ।
भयउ काल बस काहु न माना । कहेसि बजावहु युद्ध निशाना ।

सं. २२७

रावण को जयार्थ यज्ञ करना और श्री रामचन्द्र की आज्ञानुसार हनुमदादि कपियों को जाकर अनेक उपाधि करि यज्ञ विध्वंस करना



चली तमीचर अनी अपारा ॥ बहु गज रथ पद चर असवारा
प्रभु सन्मुख खल धावहिं कैसे। शलभ समूह अनल कहँ जैसे
इहाँ देव सब विनती कीन्ही ॥ दारुण विपति हमहिं इन दीन्ही
अब जनि नाथ खेलावहु एही । अतिशय दुखित होति वैदेही।
देव वचन सुनि प्रभु मुसुकाना । उठि रघुवीर सुधारेउ बाना ॥॥
जटा जूट बांधी दृढ़ माथे ॥ ॥ सोहत सुमन बीच्च विच गाथे।
अरुण नयन वारिद तन श्यामा अखिल लोक लोचन अभिरामा
कटि तट परि कर कसे निषंगा । कर कोदण्ड कठिन सारंगा ॥।
छं॰ सारंग कर सुन्दर निषंग शिली मुखा कर कटि कस्यो
भुज दण्ड पीन मनोहरा अति उर धरा सुर पद लस्यो
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु शर चाप कर फेरन लगे
ब्रह्माण्ड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डग मगे
दो॰ हर्षे देव विलोकि छवि । वर्षहिं सुमन अपार।
जय जय प्रभु गुण ज्ञान बल धाम हरण महि भार
इहि के बीच निशाचर अनी ॥। कस मसाति आई अति घनी ॥
देखि चले सनमुख कपि भट्टा ॥। प्रलय काल के जिमि घन घट्टा।
शक्ति शूल तलवारि चमकहिं । जनु दश दिशि दामिनी दमकहिं
गज रथ तुरंग चिकार कठोरा ॥ गर्जत मनहुं बलाहक घोरा ॥
कपि लंगूर विपुल नभ छाये । मनहुं इन्द्र धनु उगेउ सुहाये।
उठी रेणु मानहुं जल धारा ॥। वाण बुन्द भइ वृष्टि अपारा॥
दुहु दिशि पर्वत करहिं प्रहारा॥ वज्र पात जनु वारहिं बारा ॥।
रघुपति कोपि वाण भरि लाई ॥ घायल भे निशिचर समुदाई॥
लागत वाण वीर चिक्करहीं ॥ ॥ घुमि घुमि अगणित महि परहीं
श्रवहिं शैल जनु निर्झर वारी । शोणित सरि कादर भय कारी
छं॰ कादर भयंकर रुधिर सरिता बाढ़ि परम सुहावनी।

दोउ कूल दलरथ रेत चक्र अवर्त्त बहति भयावनी
जल जन्तु गज पदचर तुरग खर विविधि बाहन को गने
शर शक्ति तोमर परसु चाप तरंग चर्म कमठ घने।
दो० बीर परे जनु तीर तरु ।। मज्जा बह जनु फेन ।।
कादर देखत डरहिं जिय सुभटन के मन चैन
मज्जहिं भूत पिशाच बैताला ।। केलि करहिं योगिनी कराला ।।
काक कंक धरि भुजा उड़ाहीं ।। एक ते एक छीनि धरि खाहीं
एक कहहिं ऐसी सौंधाई ।। ।। शठ तुम्हार दारिद्र न जाई ।।
कहरत भट घायल तट गिरे ।। जहं तहं मनहुं अर्द्ध जल परे
खैंचहिं आंत गृध्र तट भये ।।। जनु वनशी खेलत चित दये।
बहु भट बहे चढ़े खग जाहीं ।। जिमि नावरि खेलहिं जल माहीं
योगिनि भरि भरि खप्पर सांचहिं। भूत पिशाच विविधि विधि नाचहिं
भट कपाल करताल बजावहिं ।। चामुण्डा नाना विधि गावहिं।
जम्बुक निकर तहां कट कटहीं। खाहिं अघाहिं हुंआहिं दपटहीं
कोटिन रुण्ड मुण्ड बिनु डोलहिं। शीश परे महि जय जय बोलहिं
छं० बोलहिं जो जय जय रुण्ड मुण्ड प्रचण्ड शिर बिनु धावहीं
परिणाम युद्ध असुद्ध बोलहिं सुभट सुर पुर पावहीं
निशिचर वरूथनि मर्दि गाजहिं भालु कपि दर्पित भये
संग्राम अंगनि सुभट सोहहिं राम शर निकरनि हये
दो० हृदय विचारेसि दशवदन भा निशिचर संहार ।।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार ।।
देवन्ह प्रभुहि पयादेहि देखा ।। । उर उपजा अति क्षोभ विशेषा
सुरपति निज रथ तुरत पठावा। हर्ष सहित मातलि लै आवा ।।
तेज पुञ्ज रथ दिव्य अनूपा ।।। विहसि चढ़े कोशल पुर भूपा।
चंचल तुरंग मनोहर चारी ।।। अजर अमर मन सम गति कारी

रथारूढ़ रघुनाथहिं देखी ॥ ॥ धाये कपि बल पाइ बिशेषी ॥
सही न जाइ कपिन की मारी ॥ तब रावण माया बिस्तारी ॥
सो माया रघुबीर हिं बांची ॥ ॥ सब काहू मानी करि सांची ॥
देखी कपिन निशाचर अनी ॥ बहु अंगद कपि लक्ष्मण धनी ।

छं॰ बहु बालिसुत लक्ष्मण कपीश विलोकि मर्कट अपडरे
जनु चित्र लिखित समेत लक्ष्मण जहँ सो तहँ चितवत खरे
निज सेन चकित विलोकि हँसि धनु लानियर कोशल धनी
माया हरी हरि निमिष महँ हर्षी सकल मर्कट अनी ।

दो॰ बहुरि राम सब तन चितय बोले बचन गंभीर ॥
द्वन्द युद्ध देखहु सकल । श्रमित भये अति बीर

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा बिप्र चरण पंकज शिर नावा ।
तब लंकेश क्रोध करि धावा ॥ ॥ गर्जि तर्जि प्रभु सन्मुख आवा ॥
जीतेहु जो भट संयुग माहीं ॥ ॥ सुन तापस मैं तिन सम नाहीं ॥
रावण नाम जगत यश जाना ॥ लोक पाल जेहि के बंदि खाना ।
खर दूषण विराध तुम मारा ॥ हतेउ ब्याध इव बालि बिचारा ॥
निशिचर सुभट सकल संहारे । कुम्भकर्ण घन नादहिं मारे ।
आजु बैर सब लेउँ निबाही । जौ रण भूमि भागि नहिं जाही
आजु करौं खल काल हवाले । परेहु कठिन रावण के पाले ॥
सुनि दुर्बचन काल बस जाना ॥ कहेउ बिहँसि तब कृपानिधाना
सत्य सत्य तव सब प्रभुताई । जनि जल्पसि देखव मनुसाई ॥

छं॰ जनि जल्पना करि सुयश नाशहि नीति सुनिय ठकहु समा
संसार महँ पुरुष त्रिविधि पाटल रसाल पनस समा
एक सुमन प्रद एक सुमन फल एक फलै केवल लागहीं
एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं

दो॰ राम बचन सुनि बिहँसि कह मोहिं सिखावहु ज्ञान

बैर करत तब नहिं डरेहु अबलागत प्रिय प्रान।
कहि दुर्वचन क्रोध दशकन्धर। कुलिश समान लागछांडन शर
नाना कार शिलीमुख धाये ॥। दिशि अरु विदिशि गगनमहंछाये
अनल बाण छांडे रघुबीरा ॥ ॥क्षण महँ जरे निशाचर तीरा।
छांडेसि तीव्र शक्ति खिसियाई ॥ बाण संग प्रभु फेरि पठाई ॥
कोटिन चक्र त्रिशूल पँवारे ॥ तृण समान प्रभु काटि निवारे
निफल होंइ रावण शर कैसे ॥। खलके सकल मनोरथ जैसे।
तब शत बाण सारथिहि मारेसि। परे भूमि जय राम पुकारेसि
राम कृपा करि सूत उठावा ॥ तब प्रभु परम क्रोध कर पावा

छं॰ भयेक्रुद्ध युद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोण शायक कसमसे
कोदण्ड धुनि सुनि चण्ड अति मनुजादि भय मारुतग्रसे
मन्दोदरी उर कम्पकम्पत कमठ भूधर अति त्रसे ॥
चिक्करहिं दिग्गज दशनगहि महि देखि कौतुक सुर हंसे

दो॰ तान्यो चाप जो श्रवण लगि छांड़े विशिख कराल
राम बाण नभ मग चले लहलहात जनु व्याल

चले बाण सपक्ष जनु उरगा ॥ प्रथमहिं हते सारथी तुरगा ॥
रथ विभंजि हत केतु पताका। गर्जा अति अन्तर बल थाका।
तुरत आनि रथ चढ़ि खिसियाना छांडेसि अस्त्र शस्त्र विधि नाना
विफल होइं सब उद्यम ताके। जिमि पर द्रोह निरत मनसाके
तब रावण दश शूल चलाये। बाजि चारि महि मारि गिराये।
तुरग उठाइ कोपि रघुनायक। छांडे अति कराल बहु शायक
रावण शिर सरोज बनचारी ।। चले रघुनाथ शिलीमुख धारी
दश दश बाण भाल दश मारे ।। निसरि गये चलु रुधिर पनारे
श्रवत रुधिर धावा बलवाना ॥ प्रभु पुनि कृत धनु शर संधाना
तीस तीर रघुबीर पँवारे ॥ ॥भुजनि समेत शीश महि पारे।

कातहीं पुनि भये नवीने ॥। राम बहोरि भुजा शिर छीने ॥
काटत झटित पुनि नूतन भये। प्रभु बहु वार बाहु शिर हये ॥
पुनि पुनि प्रभु काटहिं भुज शीशा अति कौतुकी कोशलाधीशा
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू ॥ मानहुं अमित केतु अरु राहू।

छं० जनु राहु केतु अनेक नभपथ श्रवत शोणित धावहीं
रघुबीर तीर प्रचण्ड धावहिं भूमि गिरन न पावहीं
इक एक शर शिर निकर छेदे नभ उडत इमि सोहई।
जनु कोपि दिनकर कर निकर जहँ तहँ विधुंतु विपोहई

दो० जिमि जिमि प्रभु हत तासु शिर तिमि तिमि होहिं अपार
सेवत विषय विवर्द्ध जिमि तिमि निति नूतन मार ॥

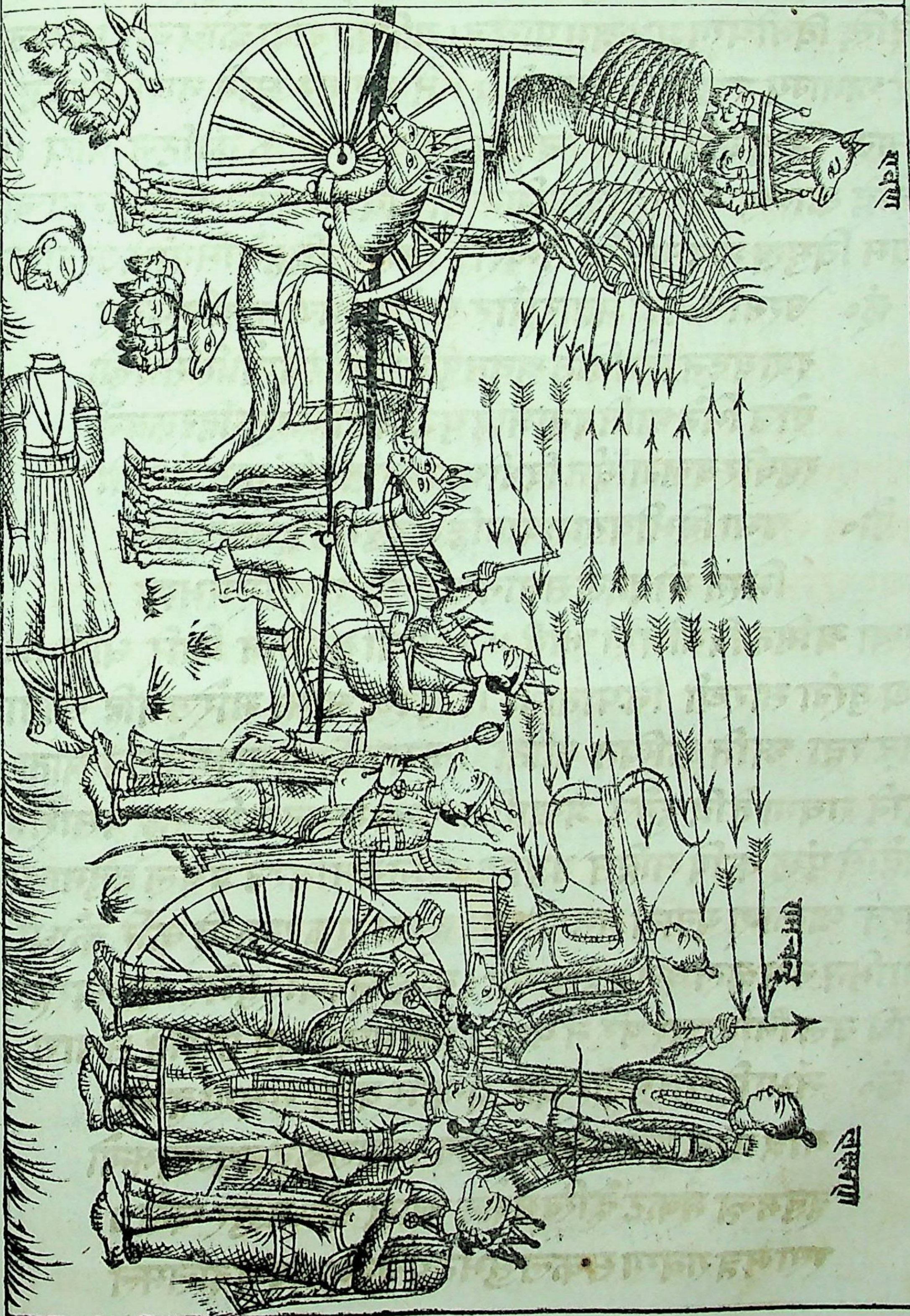
दशमुख दीख शिरनि की बाढ़ी ॥ विसरा मरण भई रिसि गाढ़ी।
गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी ॥ धायउ दशहु शरासन तानी।
समर भूमि दश कन्धर कोपा ॥ वर्षि बाण रघुपति रथ तोपा
दण्ड एक रथ देखिन परेऊ। जनु निहार महँ दिनकर दुरेऊ
हाहा कार सुरन्ह सब कीन्हा। तब प्रभु कोपि धनुष कर लीन्हा
शर निबारि रिपु के शिर काटे। ते दिशि विदिशि गगन महि पाटे
काटे शिर नभ मारग धावहिं। जय जय धुनि करि भय उपजावहिं
कहँ लक्ष्मण हनुमन्त कपीशा। कहँ रघुबीर कोशला धीशा।

छं० कहँ राम कहि शिर निकर धावहिं देखि मर्कट भजि चले
संधानि शर रघुवंश मणि तब शरनि शिर बेधे भले
शिर मालिका गहि कालिका तहँ वृन्द वृन्दनि सों मिलीं
करि रुधिर सर मज्जन मनहुं संग्राम बट पूजन चलीं

दो० पुनि रावण अति कोप करि छांडी शक्ति प्रचण्ड
सन्मुख चली विभीषणहिं मनहुं काल को दण्ड ॥

आवत देखि शक्ति कर धारा। प्रणतारत हरि विरद संभारा।

श्रीरामचन्द्र और रावण के परस्पर घोर युद्ध में श्री रामचन्द्र जी करके रावण के सारथी को मार कर रथ को भंजन कर अनेक वार रावण के शिर और भुजा खण्डन करना ॥



तुरत विभीषण पाछे मेला ॥ सनमुख राम सहेउ सो मेला
लगी शक्ति मूर्छा कछु भई ॥ प्रभु कृत खेल सुरन्ह विकलई
देखि विभीषण प्रभु श्रम पायउ । गहि कर गदा क्रोध कर धायउ
रे अभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे ॥ तैं सुर नर मुनि नाग विरुद्धे
सादर शिव कहँ शीश चढ़ाये । एक एक के कोटिन पाये ॥
तेहि कारण खल अब लगि बाचा अब तव काल शीश पर नाचा
राम विमुख शठ चहसि सम्पदा । अस कहि हनेसि मांझ उरगदा

छं० उरमांझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महि पर्यो
दश वदन शोणित स्रवत पुनि संभारि धायो रिसिभर्यो
दोउ भिरे अति बलमल्लयुद्ध विलोकि एकहि एक हने
रघुवीर बलगर्वित विभीषण घालि नहिं ताकहँ गने ।

दो० उमा विभीषण रावणहिं सनमुख चितव किकाउ
भिरत सो काल समान अब श्री रघुवीर प्रभाउ

देखा श्रमित विभीषण भारी ॥ । धावा हनूमान गिरि धारी ॥।
रथ तुरंग सारथी निपाता ॥ ॥ हृदय माझ मारेउ तेहि लाता
ठाढ़ रहा अति कम्पित गाता ॥ गयउ विभीषण जहँ जन त्राता
पुनि रावण तेहि हतेउ प्रचारी ॥ चला गगन कपि पूंछ पसारी॥
गहेसि पूंछ कपि सहित उड़ाना । पुनि नभ भिरेउ प्रबल हनुमाना
लरत अकाश युगल सम योधा । हनत एक एकहि करि क्रोधा
शोभित नभ छल बल बहु करहीं । कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं
बुधि बल निशिचर परै न पार्‍यो । तब मारुत सुत प्रभुहिं संभार्‍यो

छं० संभारि श्री रघुवीर धीर प्रचारि कपि रावण हन्यो
महि परत पुनि उठि लरत देवन युगल कह जय जय भन्यो
हनुमन्त संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले ॥
रण मत्त रावण सकल सुभट प्रचंड भुजबल दलिमले

दो॰ राम प्रचारे वीर सब ॥ धाये कीश प्रचण्ड ॥
कपिदल विपुल विलोकितेइ कीन्ह प्रगट पाखण्ड ।

अन्तर ध्यान भयो क्षण एका ॥ पुनि प्रगटेसि खल रूप अनेका
रघुबर कटक भालु कपि जेते ॥ जहँ तहँ प्रगट दशानन तेते ॥
देखे कपिन अमित दश शीशा भागे भालु विकल भट कीशा ।
चले वली मुख धरहिं न धीरा । त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुवीरा
दह दिशि कोटिन धावहिं रावन । गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥
डरे सकल सुर चले पराई ॥ जय की आस तजहु रे भाई ॥
सब सुर जिते एक दशकन्धर ॥ अब बहु भये तकहु गिरिकन्दर
रहे विरंचि शंभु मुनि ज्ञानी ॥ जिन जिन प्रभु की महिमा जानी

छं॰ जानहिं प्रताप ते रहे निर्भय कपिन रिपु माने फुरे ।
चलु विचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे
हनुमन्त अंगद नील नल वलवन्त अतिरण बांकुरे
मर्दहिं दशानन कोटि कोटिन कपट भट के अंकुरे

दो॰ सुर वानर देखे विकल हँसे कोशलाधीश ॥
साजि शरासन निमिष महं हरे सकल दशशीश

प्रभु क्षण महँ माया सब काटी । जिमि रवि उदय जाहि तम फाटी
रावण एक देखि सुर हर्षे ॥ ॥ विपुल सुमन सुनि प्रभु पर वर्षे ।
भुज उठाय रघुपति कपि फेरे ॥ फिरे एक एकनि के टेरे ॥ ॥
प्रभु बल पाइ भालु कपि धाये । तरल तमकि संयुग महं आये ।
करत प्रशंसा सुर तेइ देखे ॥ भयउँ एक मैं इन के लेखे ।
शठहु सदा तुम मोर मरायल । अस कहि गगन पंथ कहं धायल
हा हा कार करत सुर भागे ॥ शठहु जाहु कहँ मोरे आगे
देखि विकल सुर अंगद धावा । कूदि चरण गहि भूमि गिरावा

छं॰ गहि भूमि पार्यो लात मार्यो वालिसुत प्रभु पहँ गयो

संभारितउठि दशकण्ठ घोरकठोर करि गर्जत भयो ॥
करिदाप धनुष चढ़ाइ दश सन्धानि शर बहु वर्षई
किय सकल भट घायल बियकुल देखि निजबल हर्षई

दो० तब रघुपति लंकेश के। शीश भुजा शर चाप।
काटे भये बहोरि जिमि कर्म मूढ़ के पाप ॥

शिर भुज वाढ़ि देखि रिपु केरी। भालु कपिन रिसि भई घनेरी ॥
मरत न मूढ़ कटे भुज शीशा ॥ धाये कोपि भालु अरु कीशा
वालि तनय मारुत नल नीला। द्विविद मयन्द महा बलशीला
विटप महीधर करहिं प्रहारा। सोइ गिरि तरु गहि कपिन सो मारा
एकन नख गहि वपुष विदारी। भागि चलहिं एक लातन मारी
तब नल नील शिरनि चढ़ि गयऊ नखनि ललाट विदारत भयऊ
रुधिर विलोकि सकोप सुरारी ॥ तिनहिं धरन कहँ भुजा पसारी
गहे न जाहिं शिरनि पर फिरहीं। जनु युग मधुप कमलवन चरहीं
कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी ।। महि पटकेसि गहि भुजा मरोरी
पुनि सकोपि दश धनु कर लीन्हा शरनि मारि घायल कपि कीन्हा
हनुमदादि मूर्छित सब बन्दर ॥ पाइ प्रदोष हर्ष दश कन्धर
मूर्छित देखि सकल कपि वीरा जामवन्त धावा रण धीरा।
संग भालु भूधर तरु भारी ॥ मारन लगे प्रचारि प्रचारी।
भयो क्रोध रावण बलवाना। गहि पद महि पटके भट नाना
देखि भालु पति निज दल घाता कोपि मांझ उर मारेसि लाता

छं० उरलात घात प्रचण्ड लागत विकल रथ ते महि गिरा
गहि भालु वीसहु करनि मानहुं कमल निशि वस मधुकरा
मूर्छित बहोरि विलोकि पद हति भालुपति प्रभु पहं गयो
निशि जानि स्यंदन घालि तेहि तब सूत यत्न करत भयो

दो० मूर्छा गइ कपि भालु तब सब आये प्रभु पास

सकल निशाचर रावणहि घेरिरहे अति त्रास ॥
तेहि निशिमहँ सीता पहँ जाई। त्रिजटा कहि सब कथा बुझाई
शिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी सीता उर भै त्रास घनेरी ॥।
मुख मलीन उपजी मन चिंता त्रिजटा सन बोली तव सीता
होइहि कहा कहसि किन माता केहि विधि मरिहि विश्व दुखदाता
रघुपति शर शिर कटेन मरई । विधि विपरीत चरित सब करई
मोर अभाग्य जिआवत ओही जेहिहौं हरि पद कमल बिछोही
जेइ कृत कनक कपट मृग झूठा अजहुं सो दैव मोहि पर रूठा
जेइ विधि मोहिं दुख दुसह सहावा लक्ष्मण कहँ कटु वचन कहावा
रघुपति विरह विषम शर भारी । तकि तकि वार वार मोहिं मारी
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राना ॥ सो विधि ताहि जिआवन आना
बहु विधि करत विलाप जानकी करि करि सुरति कृपा निधान की
कह त्रिजटा सुन राज कुमारी । उर शर लागत मरिहि सुरारी ॥
तातें प्रभु उर हतहिं न तेही ॥। इहि के हृदय वसति वैदेही ॥

छं० इहि के हृदय वसु जानकी मम जानकी उर वास है
मम उदर भुवन अनेक लागत वाण सबको नाश है
अस सुनत हर्ष विषाद उर अति देखि पुनि त्रिजटा कहा
अब मरिहि रिपु इहि भांति सुंदरि तजहु तुम संशय महा

सो० काटत शिर होइहि विकल छुटि जाइ तब ध्यान
तब रावण के हृदय शर मारिहि राम सुजान

अस कहि बहु प्रकार समुझाई पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई
राम सुभाव सुमिरि वैदेही ॥। उपजी विरह व्यथा अति तेही।
निशिहि शशिहि निन्दत बहु भांती युग सम भई बिहाति न राती।
करत विलाप मनहि मन भारी। राम विरह जानकी दुखारी ॥
जब अति भयो विरह उर दाहू। फरकेउ वाम नयन अरु बाहू

सकुन बिचारि धरी उर धीरा। अब मिलिहहिं कृपालु रघुबीरा
इहाँ अर्द्ध निशि रावण जागा॥ निज सारथि सन खीजन लागा
शठ रणभूमि छुड़ायहु मोही। धृक धृक अधम मंदमति तोही
तेहि पद गहि बहु बिधि समुझावा भोर भये रथ चढ़ि पुनि आवा
सुनि आगमन दशानन केरा। कपि दल खर भर भयउ घनेरा
जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी॥ धाये कटकटाइ भट भारी॥

छं० धाये जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधर धरा।
अति कोपि करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा
बिचलाइ दल बलवन्त कीशनि घेरि पुनि रावण लियो
चहुँ दिशि चपेटन्ह मारि नखनि बिदारि तेहि ब्याकुल कियो

दो० देखि महा मरकट प्रबल रावण कीन्ह बिचार॥
अन्तर हित होइ निमिष महँ कृत माया बिस्तार

छं० जब कीन्ह तेहि पाखण्ड। भये प्रगट जन्तु प्रचण्ड
बैताल भूत पिशाच। कर धरे धनु नाराच
योगिनि गहे करबाल। इक हाथ मनुज कपाल
करि सद्य शोणित पान। नाचहिं करहिं बहु गान
धरु मारु बोलहिं घोर। रहि पूरि धुनि चहुँ ओर
मुख बाय धावहिं खान। तब लगे कीश परान।
जहँ जाहिं मर्कट भागि। तहँ बरत देखहिं आगि
भय बिकल बानर भालु। पुनि लागु बर्षण बालु
जहँ तहँ थकित करि कीश गर्जेउ बहुरि दशशीश
लक्ष्मण कपीश समेत। भये सकल बीर अचेत
हा राम हा रघुनाथ॥ कहि सुभट मीजहिं हाथ
इहि बिधि सकल बल तोरि तेहि कीन्ह कपट बहोरि
प्रगटे बिपुल हनुमान धाये गहे पाषाण।

तिन घेरि रामहिं जाइ। चहुं दिशि वरूथ बनाइ
मारहु धरहु जनि जाइ कट कटहिं पूंछ उठाइ
दश दिशि लंगूर विराज तेहि मध्य कोशलराज

छं० तेहि मध्य कोशलराज सुन्दर श्याम तन शोभा लही ॥
जनु इन्द्र धनुष अनेक किय वर वारि तुंग तमालही
प्रभु देखि हर्ष विषाद उर सुर वदति जय जय जय करी
रघुवीर एकहि तीर कोपित निमिष महं माया हरी।
माया विगत कपि भालु हर्षे विटप गिरि गहि सब फिरे
शर निकर छांड़े राम रावण बाहु शिर महि महं गिरे
श्री राम रावण समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं
शत शेष शारद निगम कवि तेउ तदपि पार न पावहीं

दो० कहे तासु गुण गण कछुक जड़ मति तुलसीदास।
निज पौरुष अनुसार जिमि मशक उड़हिं आकाश
काटि शीश भुज बार बहु मरैं न भट लंकेश।
प्रभु क्रीड़त सुनि सिद्ध सुर व्याकुल देखि कलेश

काटत बढ़हिं शीश समुदाई। जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई
मरै न रिपु श्रम भयउ विशेषा। राम विभीषण तन तब देखा।
उमा काल मरु जाकी इच्छा। सो प्रभु जन की लेत परिच्छा
सुन सर्वज्ञ चराचर नायक ॥ प्रणतपाल सुर मुनि सुखदायक
नाभि कुण्ड सुधा वस वाके ॥ नाथ जियत रावण बल ताके
सुनत विभीषण वचन कृपाला हर्षि गहे प्रभु वाण कराला ॥
असकुन होन लगे विधि नाना रोवहिं बहु शृगाल खर श्वाना
बोलहिं खग आति आरत हेतू। प्रगट भये जहं तहं नभ केतू
दश दिशि दाह होन तब लागा। भये पर्व विनु रवि उपरागा
मन्दोदरि उर कम्पित भारी ॥ ।प्रतिमा स्रवहिं नयन मग वारी

सकुन विचारि धरी उर धीरा। अब मिलिहहिं कृपालु रघुबीरा
इहाँ अर्द्ध निशि रावण जागा ॥ निज सारथि सन खीजन लागा
शठ रण भूमि छुड़ायहु मोही। धृक धृक अधम मंदमति तोही
तेइ पद गहि बहु बिधि समुझावा भोर भये रथ चढ़ि पुनि आवा
सुनि आगमन दशानन केरा। कपि दल खर भर भयउ घनेरा
जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी ॥ धाये कटकटाइ भट भारी ॥

छं० धाये जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधर धरा।
आति कोपि करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा
बिचलाइ दल बलवन्त कीशनि घेरि पुनि रावण लियो
दहुँ दिशि चपेटन्ह मारि नखनि बिदारि तेहि व्याकुल कियो

दो० देखि महा मरकट प्रबल रावण कीन्ह बिचार ॥
अन्तर हित होइ निमिष महँ कृत माया बिस्तार

छं० जब कीन्ह तेइ पाखण्ड। भये प्रगट जन्तु प्रचण्ड
बैताल भूत पिशाच। कर धरे धनु नाराच
योगिनि गहे करवाल। इक हाथ मनुज कपाल
करि सद्य शोणित पान। नाचहिं करहिं बहु गान
धरु मारु बोलहिं घोर। रहि पूरि धुनि चहुँ ओर
मुख बाय धावहिं खान। तब लगे कीश परान।
जहँ जाहिं मर्कट भागि। तहँ बरत देखहिं आगि
भय बिकल बानर भालु। पुनि लागु बर्षण बालु
जहँ तहँ थकित करि कीश गर्जेउ बहुरि दशशीश
लक्ष्मण कपीश समेत। भये सकल बीर अचेत
हा राम हा रघुनाथ ॥ कहि सुभट मींजहिं हाथ
इहि बिधि सकल बल तोरि तेहि कीन्ह कपट बहोरि
प्रगटे बिपुल हनुमान धाये गहे पाषाण।

तिन घेरि रामहिं जाइ। चहुं दिशि वरूथ बनाइ
मारहु धरहु जनि जाइ कट कटहिं पूंछ उठाइ
दश दिशि लंगूर विराज तेहि मध्य कोशलराज

छं० तेहि मध्य कोशलराज सुन्दर श्याम तन शोभा सही ॥
जनु इन्द्र धनुष अनेक किय वर वारि तुंग तमालही
प्रभु देखि हर्ष विषाद उर सुर वदति जय जय जय करी
रघुवीर एकहि तीर कोपित निमिष महं माया हरी।
माया विगत कपि भालु हर्षे विटप गिरि गहि सब फिरे
शरनिकर छांड़े राम रावण बहुरि शिर महि महं गिरे
श्री राम रावण समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं
शत शेष शारद निगम कवितेउ तदपि पार न पावहीं

दो० कहे तासु गुण गण कछुक जड़मति तुलसीदास।
निज पौरुष अनुसार जिमि मशक उड़हिं आकाश
काटि शीश भुज बार बहु मरैन भट लंकेश।
प्रभु क्रीडत सुनि सिद्ध सुर व्याकुल देखि कलेश

काटत बढ़हिं शीश समुदाई। जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई
मरै न रिपु श्रम भयउ विशेषा। राम विभीषण तन तब देखा।
उमा काल मरु जाकी इच्छा। सो प्रभु जन की लेत परिच्छा
सुन सर्वज्ञ चराचर नायक ॥ प्रणतपाल सुर मुनि सुखदायक
नाभी कुण्ड सुधा बस वाके ॥ नाथ जियत रावण बल ताके
सुनत विभीषण वचन कृपाला हर्षि गहे प्रभु बाण कराला ॥
असकुन होन लगे विधि नाना रोवहिं बहु शृगाल खर स्वाना
बोलहिं खग अति आरत हेतू। प्रगट भये जहं तहं नभ केतू
दश दिशि दाह होन तब लागा। भये पर्व बिनु रवि उपरागा
मन्दोदरि उर कम्पित भारी ॥। प्रतिमा स्रवहिं नयन मग वारी

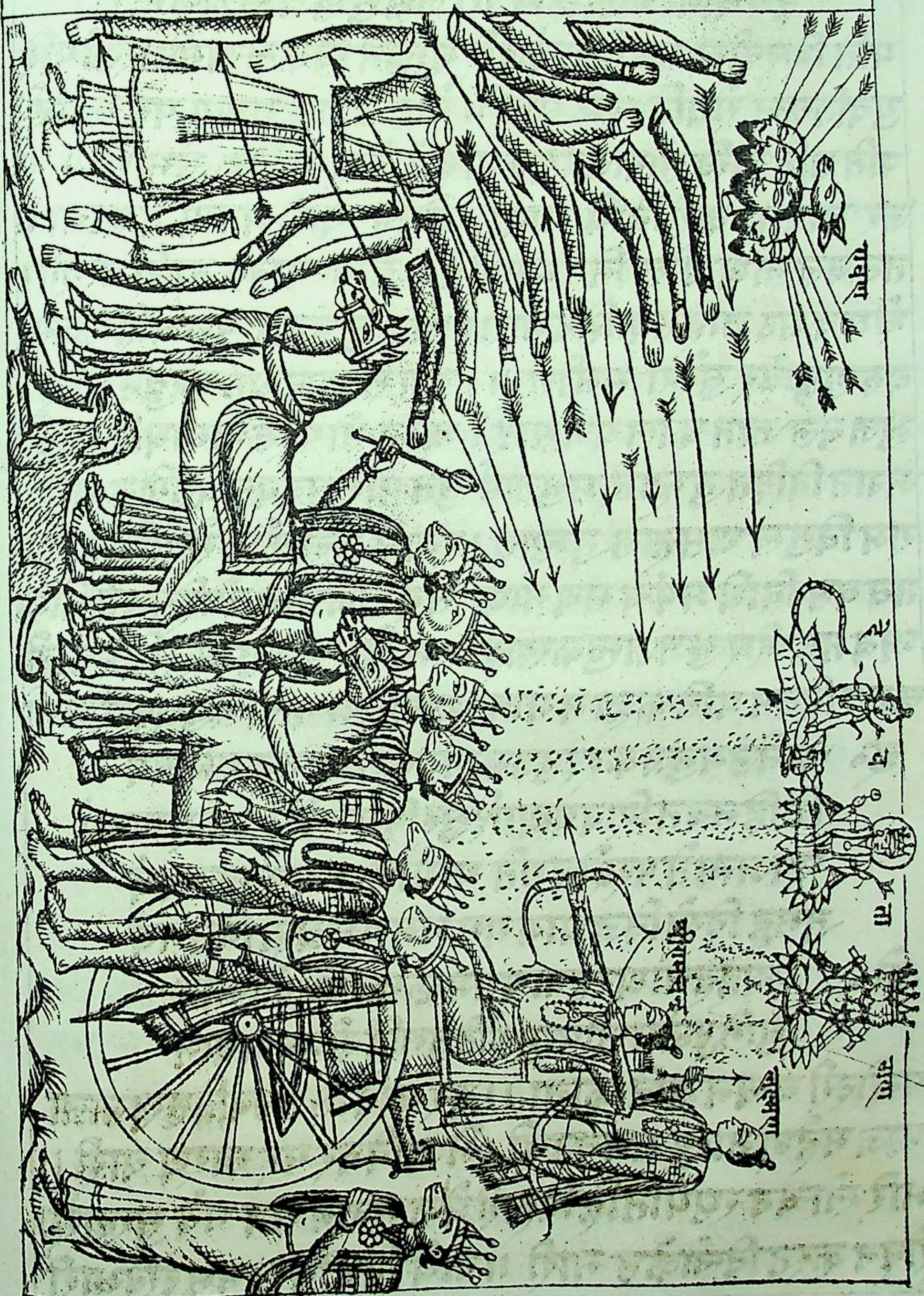
छं० मतिमा श्रवहिं पवि पातन भ अनिबात बह डोलति मही।
वर्षहिं बलाहक रुधिर कच रज अशुभ अति सक को कही॥
उतपात अमित बिलोकि नभ सुर विकल बोलहिं जय जये।
सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप शर जोरत भये।

दो० आकर्षेउ धनु श्रवण लगि छांड़े शर एक तीस।
रघुनायक शायक चले मानहुं काल फणीश॥

शायक एक नाभि सर शोषा। अपर लगे शिर भुज करि रोषा॥
ले शिर बाहु चले नाराचा॥ शिर भुज हीन रुण्ड महि नाचा॥
धरणि धसै धर धाव प्रचण्डा। तब शर हति प्रभु कृत युग खण्डा॥
गर्जेउ मरत घोर रव भारी॥ कहां राम रण हतौं प्रचारी।
डोली भूमि गिरत दशकन्धर। क्षुभित सिन्धु सह दिग्गज भूधर॥
परेउ भूमि युग खण्ड बढ़ाई। चापि भालु मर्कट समुदाई।
मन्दोदरि आगे भुज शीशा। धरि शर चले जहां जगदीशा॥
प्रविशे सब निषंग महँ जाई। देखि सुरन दुन्दुभी बजाई॥
तासु तेज समान प्रभु आनन। हर्षे देव शम्भु चतुरानन॥
जय धुनि पूरि रही नव खण्डा जय रघुवीर प्रबल भुज दण्डा॥
वर्षहिं सुमन देव मुनि वृन्दा॥ जय कृपाल जय जयति मुकुन्दा॥

छं० जय कृपा कन्द मुकुन्द हरि मर्दन निशाचर मद प्रभो।
खलदल विदारण परम कारण कारुणीक सदा विभो॥
सुर सिद्ध मुनि गन्धर्व हर्ष बाज दुन्दुभि गह गही।
संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु शोभा लही।
शिर जटा मुकुट प्रसून विच विच अति मनोहर राजहीं।
जनु नील गिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगण भ्राजहीं॥
भुज दण्ड फेरत शर शरासन रुधिर कण तन अति बने।
जनु रायमुनिय तमाल तरु वर बैठि बहु सुख आपने॥

श्री राम चन्द्र जी और रावण का परस्पर घोर युद्ध और श्री राम चन्द्र करके रावण वध॥



दो० कृपादृष्टिकरिवृष्टिप्रभु। अभय किये सुर वृन्द॥
हर्षे वानर भालु कपि॥। जय सुख धाम मुकुन्द।
पति शिर देख जबहि मन्दोदरि मूर्छित विकल खसी धरणी परि
युवतिवृन्द रोवति उठि धाई॥ तेहि उठाय रावण पहँ ल्याई
पति गति देखि सो करति पुकारा छूटे केश न देह संभारा॥॥
उर ताडना करै विधि नाना। रोदन करै प्रताप बखाना॥
तव बल नाथ डोल नित धरणी तेज हीन पावक शशि तरणी।
शेष कमठ सहि सकहिं न भारा। सो तनु आजु परा महि छारा
वरुण कुवेर सुरेश समीरा॥। रण सन्मुख धरु काहुन धीरा।
भुज बल जीत काल यम साईं। आजु सो परेउ अनाथकि नाईं
जगत विदित्त तुम्हारि प्रभुताई सुत परि जन बल वरणि न जाई
राम विमुख अस हाल तुम्हारा। रहा न कुल कोउ रोवनि हारा।
तव वस विधि प्रपंच सब नाथा सब दिगपति तोहिनावहिंमाथा
अब तव शिर भुज जम्बुक खाहीं राम विमुख यह अनुचितनाहीं
काल विवस पति कहा न माना अगजग नाथ मनुजकरिजाना
छं० जानेउ मनुज करदनुजकानन दहन पावक हरिस्वयं
जिहि नवत शिव ब्रह्मादिसुर पियभजेहु नाकरुणामयं
आजन्म ते परद्रोह रति पापौघ मयतवतनअयं
तुमहू दियो निजधाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं
दो० अहहनाथरघुनाथसम कृपा सिंधु को आन
मुनिदुर्लभ जो परमगति तुमहिं दीनभगवान
मन्दोदरी वचन सुनि काना॥ सुर मुनि सिद्ध सबहिं सुख माना
अज महेश नारद सनकादी। जे मुनि वर पर मारथ वादी॥
भरि लोचन रघुपतिहिं निहारी प्रेम मगन सब भये सुखारी।
रोदन करत विलोकेउ नारी॥ गये विभीषण मन दुखभारी

बन्धु दशा देखत दुख भयऊ ॥ तब प्रभु अनुजहि आयसु दयऊ
लक्ष्मण तेहि बहु विधि समुझाये सहित विभीषण प्रभु पहँ आये
कृपा दृष्टि प्रभु ताहि विलोका ॥ करहु क्रिया परिहरि सब शोका
कीन्ह क्रिया प्रभु आयसु मानी। विधिवत देश काल गति जानी

दो॰ मय तनयादिक नारि सब देइ तिलाञ्जलि ताहि।
भवन गईं रघुवीर गुण। गण बरणति मन माहि

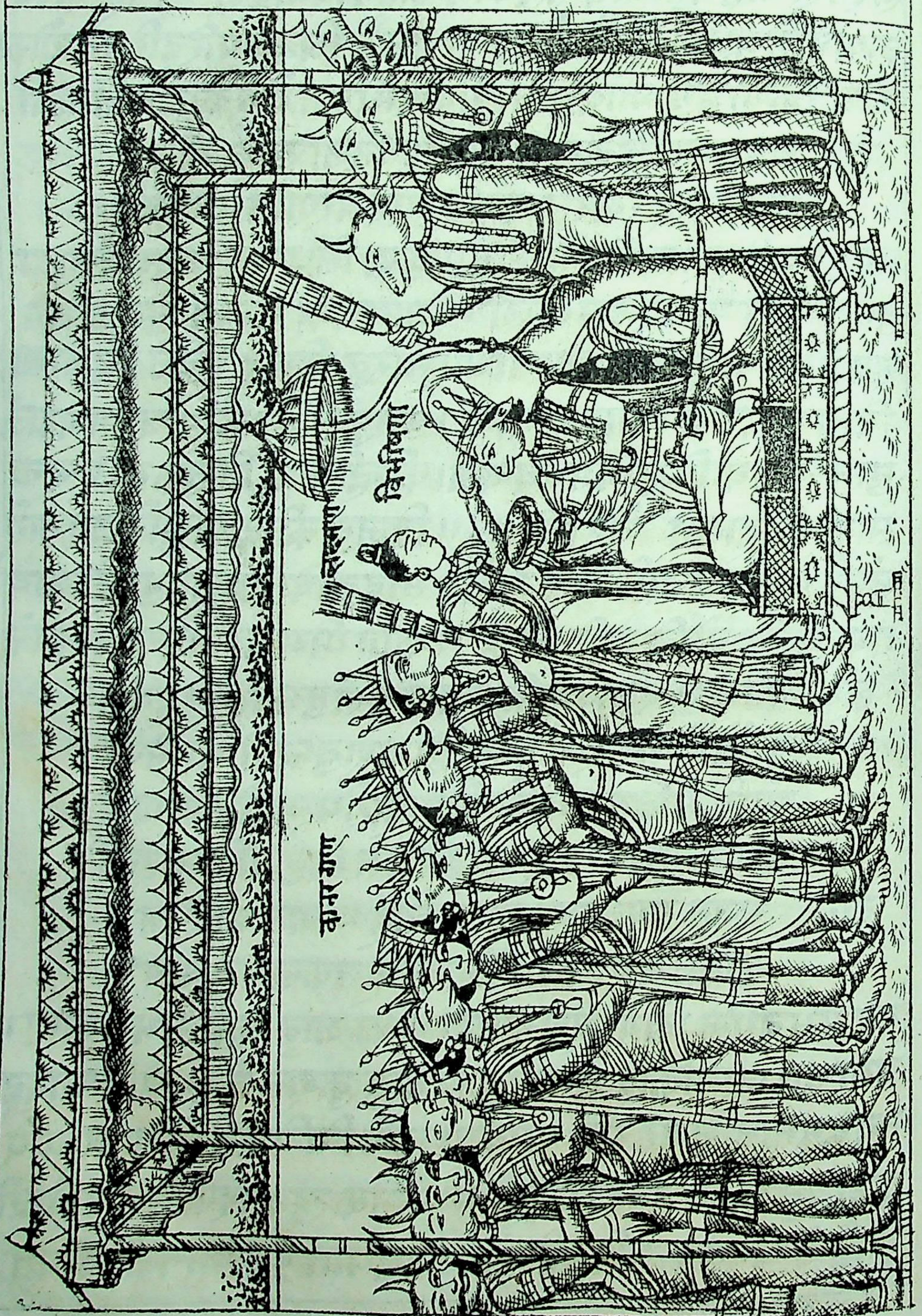
आइ विभीषण पुनि शिर नावा। कृपा सिंधु तब अनुज बुलावा
तुम कपीश अंगद नल नीला ॥ जामवन्त मारुत सुत शीला
सब मिलि जाहु विभीषण साथा। सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा
पिता वचन मैं नगर न जाऊं। आपु सरिस कपि अनुज पठाऊं
तुरत चले कपि सुनि प्रभु वचना। कीन्ही जाइ तिलक की रचना
सादर सिंहासन बैठारी ॥ ॥ तिलक कीन्ह अस्तुति अनुसारी
जोरि पाणि सबही शिर नाये। सहित विभीषण प्रभु पहं आये
तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे ॥ कहि प्रिय वचन सुखी सब कीन्हे

छं॰ कीन्हे सुखी सब कहि सुवाणी बल तुम्हारे रिपु हयो।
पायो विभीषण राज तिहुंपुर यश तुम्हारो नित नयो
मोहिं सहित शुभ कीरति तुम्हारि परम प्रीति जो गाइहैं
संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु तरि जाइहैं।

दो॰ सुनत राम के वचन मृदु। नहिं अघात कपिपुंज
बारहि बार विलोकि मुख गहहिं सकल पद कंज

तब प्रभु बोलि लिये हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना।
समाचार जानकिहि सुनावहु ॥ तासु कुशल लै तुम चलि आवहु
तब हनुमान नगर महं आये ॥ सुनि निशिचरी निशाचर धाये
पूजा बहु प्रकार तिन कीन्ही ॥॥ जनक सुता दिखाय पुनि दीन्ही
दूरिहि ते प्रणाम कपि कीन्हा ॥ रघुपति दूत जानकी चीन्हा

श्रीरामचन्द्र जी की आज्ञानुसार लङ्का में लक्ष्मण जी करके विभीषण को राज्य गद्दीपर बैठाकर राज्य तिलक करना



कहहु तात प्रभु कृपा निकेता । कुशल अनुज प्रभु सेन समेता
सब विधि कुशल कोशलाधीशा मातु समर जीत्यो दश शीशा
अविचल राज विभीषण पावा सुनि कपि वचन हर्ष उर छावा

छं॰ अति हर्ष मन तन पुलक लोचन सजल पुनि पुनि कह रमा
काँ देउँ तोहि त्रैलोक महँ कपि किमपि नहिं वाणी समा
सुन मातु मैं पायउँ अखिल जग राज आजु न संशयं
रण जीति रिपुदल बंधु युत पश्यामि राम नमामियं ॥

दो॰ सुन सुत सदगुण सकल तव हृदय बसौ हनुमन्त ।
सानुकूल रघुवंश मणि रहहिं समेत अनन्त ॥

अब सोइ यतन करहु तुम ताता देखौं नयन श्याम मृदु गाता ॥
तब हनुमन्त राम पहँ आये ॥ जनक सुता कर कुशल सुनाये
सुनि वाणी पतंग कुल भूषण ॥ बोलि लिये कपि राज विभीषण
मारुत सुत के संग सिधावहु ॥ सादर जनक सुता लै आवहु ॥
तुरत हि सकल गये जहँ सीता । सेवहिं सब निशिचरी विनीता ।
वेगि विभीषण तिनहिं सिखावा सादर तिन सीतहि अन्हवावा
दिव्य वसन भूषण पहिराये ॥ । शिविका रुचिर साजि पुनि ल्याये
तेहि पर हर्षि चढ़ी वैदेही ॥ ॥ सुमिरि राम सुख धाम सनेही ॥
वेत पाणि रक्षक चहुं पासा ॥ । चले सकल मन परम हुलासा ॥
देखन भालु कीश बहु धाये ॥ । रक्षक कोटि निवारण आये ॥
कह रघुवीर कहा मम मानहु । सीतहि सखा पयादेहि आनहु ।
देखहिं कपि जननी की नाईं ॥ विहँसि कहा रघुवीर गुसाईं ॥
सुनि प्रभु वचन भालु कपि हरषे । नभ ते सुरन सुमन बहु बरषे ॥।
सीतहि प्रथम अनिमह राखी प्रगट कीन्ह चह अन्तर साखी

दो॰ तेहि कारण करुणा अयन कहे कछुक दुर्वाद ॥
सुनत यातुधानी सकल । लागीं करन विषाद ।

प्रभु के वचन शीश धरि सीता ॥ बोली मन क्रम वचन पुनीता ॥
लक्ष्मण होहु धर्म्म के नेगी ॥ पावक प्रगट करहु तुम वेगी
सुनि लक्ष्मण सीता की वानी । विरह विवेक धर्म्म रति सानी
लोचन सजल जोरि कर दोऊ ॥ प्रभु सन कछु कहि सकत न ओऊ
देखि राम रुख लक्ष्मण धाये ॥ पावक प्रगट काठ बहु लाये ॥
प्रबल अनल विलोकि वैदेही । हृदय हर्ष कछु भय नाहिं तेही ॥
जो मन क्रम वच मम उर माहीं ॥ तजि रघुवीर आन गति नाहीं
तव कृशानु सब की गति जाना । मो कहँ होउ श्री खण्ड समाना

छं० श्रीखंडसम पावक प्रगट कियसुमिरि प्रभु तेहि महँ चली
जय कोशलेश महेश वंदित चरण रज अति निर्मली
प्रतिविम्ब अवलोकित कलंक प्रचण्ड पावक महँ जरे
प्रभु चरित काहु न लखे उसुर मुनि सिद्ध सब देखहिं खरे
तब अनल भूसुर रूप कर गहि सत्य श्री श्रुति विदित जो
जिमि क्षीर सागर इन्दिरा रामहिं समर्पी आनि सो ॥
सोइ राम वाम विभाग राजित रुचिर अति शोभा भली
नवनील नीरज निकट मानहुं कनक पंकज की कली

दो० हर्षि सुमन वर्षहिं विबुध बाजहिं गगन निशान
गावहिं किन्नर अप्सरा नाचहिं चढ़ी विमान
श्री जानकी समेत प्रभु शोभा असित अपार
देखि भालु कपि हरषे उजय रघुपति सुख सार

तब रघुपति अनुशासन पाई ॥ । मातलि चले चरण शिर नाई
आये देव सदा स्वारथी ॥ । वचन कहहिं जनु परमारथी
दीन बंधु दयाल रघु राया ॥ । देव कीन्ह देवन पर दाया ॥
विश्व द्रोह रत खल अति कामी । निज अघ गयउ कुमारग गामी
तुम सर्वज्ञ ब्रह्म अविनाशी । । सदा एक रस सहज उदासी ॥

सकल अगुण अनवद्य अनामय अजित अमोघ शक्ति करुणामय
मीन कमठ सूकर नरहरी ।। बामन परशु राम बपु धरी
जब जब नाथ सुरन्ह दुख पावा नाना तनु धरि तुमहिं नशावा
रावण पाप मूल सुर द्रोही ॥ काम क्रोध मद रत अति कोही
सो कृपालु तव धाम सिधावा । यह हमरे मन अचरज आवा
हम देवता परम अधिकारी ।। स्वारथ रत तव भक्ति बिसारी।
भव प्रवाह सन्तत हम परे ।। अब प्रभु पाहि शरण अनुसरे

दो० करि बिनती सुर सिद्ध सब रहे जहँ तहँ कर जोरि
अति सप्रेम सरोजभव अस्तुति करत बहोरि॥

छं० जय राम सदा सुखधाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे।
भव बारन दारन सिंह प्रभो । गुण सागर नागर नाथ बिभो
तन काम अनेक अनूप छबी गुण गावत सिद्ध मुनीन्द्र कवी
यश पावन रावण नाग महा । खगनाथ यथा करि कोप गहा
जन रंजन भंजन शोक भयं । गत क्रोध सदा प्रभु बोधमयं
अवतार उदार अपार गुनं । महि भार बिभंजन ज्ञान घनं
अज व्यापकमेकमनादि सदा करुणाकर राम नमामि मुदा
रघुवंश विभूषण दूषण हा । कृत भूप विभीषण दीन रहा
गुण ज्ञान निधान अमान अजं नित राम नमामि विभुं विरजं
भुज दण्ड प्रचण्ड प्रताप बलं । खल वृन्द निकन्द महा कुशलं
बिनु कारण दीन दयाल हितं। छवि धाम नमामि रमा सहितं
भव तारण कारण काज परं । मन सम्भव दारुण दोष हरं।
सर चाप मनोहर तूण धरं ।। जलजारुण लोचन भूप वरं।
सुख मन्दिर सुन्दर श्रीरमनं । मद मार मुधा ममता समनं
अनवद्य अखण्ड न गोचर गो सब रूप सदा सब होइ न सो
इति वेद वदन्ति न दन्त कथा। रवि आतप भिन्नमभिन्न यथा

कृत कृत्य विभो सब वानर ये निरखंत तवानन सादर ये ॥
धिक जीवन देव शरीर हरे । तव भक्ति विना भव भूलि परे
अब दीनदयाल कृपा करिये मति मोरि विभेद करी हरिये
जिहि ते विपरीति क्रिया करिये दुख सो सुख मान सुखी चरिये
खल खण्डन मण्डन रम्य क्षमा पद पंकज सेवित शम्भु उमा
नृपनायक दे वर दान मिदं । चरणाम्बुज प्रेम सदा शुभदं
दो॰ विनय कीन्ह बहु भांति विधि प्रेम प्रफुल्लित गात ।
वदन विलोकत राम कर । लोचन नाहिं अघात
तिहि अवसर दशरथ तहं आये तनय विलोकि नयन जल छाये
सहित अनुज प्रणाम प्रभु कीन्हा आशिर्वाद पिते तब दीन्हा
तात सकल तव पुण्य प्रभाऊ । जीतेंउ अजय निशाचर राऊ
सुनि सुत वचन प्रीति अति बाढ़ी नैन सलिल रोमावलि ठाढ़ी।
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना ॥ चितै पितहि दीन्हेउ दृढ़ ज्ञाना
ताते उमा मोक्ष नहिं पावा ॥ दशरथ भेद भक्ति मन लावा
सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं। तिन्ह कहँ राम भक्ति निज देहीं
वार वार करि प्रभुहि प्रणामा । दशरथ हर्षि गये निज धामा
दो॰ अनुज जानकी सहित प्रभु कुशल कोशलाधीश
छवि विलोकि मन हरषि अति अस्तुति कर सुरईश
छं॰ जय राम शोभाधाम । दायक प्रणत विश्राम
धृत तूण वर शर चाप । भुज दण्ड प्रबल प्रताप
जय दूषणारि खरारि । मर्दन निशाचर भारि।
यह दुष्ट मारेउ नाथ । भे देव सकल सनाथ ।
जय हरण धरणी भार । महिमा उदार अपार ।
जय रावणारि कृपाल किये यातुधान विहाल
लंकेश अति बल गर्व । किये वश्य सुर गन्धर्व

मुनि सिद्ध नर खग नाग हठि पंथ सबके लाग।
पर द्रोह रत अति दुष्ट। पायो सो फल पापिष्ठ
अब सुनहु दीनदयाल राजीव नैन विशाल।
मोहिं रहा अति अभिमान नहिं कोउ मोहिं समान
अब देखि प्रभु पदकंज गत मान प्रद दुख पुंज
कोउ ब्रह्म निर्गुण ध्याव अव्यक्त जिहि श्रुति गाव
मोहिं भाव कोशल भूप श्री राम सगुण स्वरूप
वैदेहि अनुज समेत। मम हृदय करहु निकेत
मोहिं जानिये निज दास दे भक्ति रमा निवास।

छं० दे भक्ति रमानिवास त्रास हरण शरण सुख दायकं
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं
सुरवृन्द रंजन द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलित बलं
ब्रह्मादि शंकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलं॥

दो० अब करि कृपा विलोकि मोहिं आयसु देहु कृपाल
कहा करौं सुनि प्रिय वचन बोले दीनदयाल॥

सुन सुरपति कपि भालु हमारे॥ परे भूमि निशिचरन्ह जो मारे।
मम हित लागि तजे इन प्राना। सकल जियाउ सुरेश सुजाना।
सुन खगेश प्रभु की यह बानी॥ अति अगाध जानहिं मुनि ज्ञानी
प्रभु चह त्रिभुवन मारि जिवाई। केवल शक्रहि दीन्ह बड़ाई।
सुधा बरषि कपि भालु जिवाये। हरषि उठे सब प्रभु पहं आये
सुधा वृष्टि भै दुहुं दल ऊपर। जिये भालु कपि नहिं रजनीचर
रामाकार भये तिन्ह के मन॥ गये ब्रह्मपद तजि शरीर रन॥
सुर अंशिक सब कपि अरु रिच्छा जिये सकल रघुपति की इच्छा
राम सरिस को दीन हितकारी। कीन्हे मुक्त निशाचर झारी॥
खल मल धाम काम रत रावन। गति पाई जो मुनिवर पावन

दो॰ सुमन बरषि सब सुर चले। चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान
देखि सु अवसर राम पहँ। आये शम्भु सुजान ॥
परम प्रीति कर जोरि युग। नयन नलिन बह बारि
पुलकित तन गद गद गिरा बिनय करत त्रिपुरारि

छं॰ मामभि रक्षय रघु कुल नायक ॥
धृत बर चाप रुचिर कर शायक
मोह महा घन पटल प्रभञ्जन
संशय बिपिन अनल सुर रंजन
अगुण सगुण गुण मन्दिर सुन्दर
भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर
काम क्रोध मद गज पञ्चानन
बसहु निरन्तर जन मन कानन ॥
विषय मनोरथ पुञ्ज कञ्ज बन।
प्रबल तुषार उदार पार मन ॥
भव बारिधि मन्दर पर मन्दर ॥
कारय तारय संसृत दुस्तर ॥
श्याम गात राजीव बिलोचन
दीन बन्धु प्रण ता रत मोचन।
अनुज जानकी सहित निरन्तर।
बसहु राम नृप मम उर अन्तर
मुनि रंजन महि मण्डल मण्डन
तुलसि दास प्रभु त्रास बिखण्डन

दो॰ नाथ जबहि कोशलपुर होइहि तिलक तुम्हार
तब आइब सुनहु प्रभु। देखन चरित उदार॥

करि बिनती जब शम्भु सिधाये। तब प्रभु निकट बिभीषण आये

नाइ चरण शिर कह मृदु बाणी । विनय सुनिय मम शारंग पाणी
सकुल सदल प्रभु रावण मारा ॥ पावन यश त्रिभुवन विस्तारा
दीन मलीन हीन मति जाती ॥ मोपर कृपा कीन्ह बहुभांती
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे मज्जन करिय सकल श्रम छीजे
देश कोश मन्दिर सम्पदा ॥ । देहु कृपालु कपिन कहं मुदा ।
सब विधि नाथ मोहिं अपनाइय पुनि मोहिं सहित अवधपुर जाइय
सुनत वचन मृदु दीन दयाला । सजल भये हरि नयन विशाला

दो॰ तोर कोश गृह मोर सब सत्य वचन सुन तात ॥
दशा भरत की सुमिरि मोहिं पलक कल्प सम जात
तापस भेष शरीर कृश । जपैं निरन्तर मोहिं ॥
देखौं वेगि सो यत्न करि । सखा निहोरों तोहिं ।
जो जैहौं बीते अवधि । जियत न पाऊं वीर ।
प्रीति भरत की समुझि प्रभु पुनि पुनि पुल क शरीर

सुनत विभीषण वचन राम के । हर्षि गहे पद कृपा निधान के
वानर भालु सकल हर्षाने ॥ प्रभु पद गहि गुण विमल बखाने
बहुरि विभीषण भवन सिधाये । मणि गण वसन विमान भराये
लै पुष्पक प्रभु आगे राखा । हंसि के कृपा सिन्धु अस भाषा
चढ़ि विमान सुन सखा विभीषण गगन जाइ वर्षहु पट भूषण
नभ पर जाइ विभीषण तबहीं वर्षि दिये पट भूषण सबहीं
जो जेहि मन भावे सो लेहीं ॥ मणि मुख मेलि डारि कपि देहीं
हंसत राम सिय अनुज समेता । परम कौतुकी कृपा निकेता ।

दो॰ ध्यान न पावहिं जासु मुनि नेति नेति कह वेद ।
कृपा सिन्धु सोइ कपिन सों करत अनेक विनोद
उमा योग जप दान तप नाना व्रत मख नेम ॥
राम कृपा नहिं करहिं तस जस निःकेवल प्रेम ।

भालु कपिन पट भूषण पाये। पहिरि पहिरि रघुपतिपहँ आये
नाना जिनिसि देखि प्रभु कीशा पुनि पुनि हंसत कोशलाधीशा
चितै सबनि पर कीन्ही दाया ।। बोले मधुर वचन रघुराया ।।
तुम्हरे बल मैं रावण मारा ।। तिलक विभीषण कहं पुनि सारा
निज निज गृह अब तुम सब जाहू सुमिरहु मोहिं डरहु जनि काहू
वचन सुनत प्रेमाकुल वानर ।। जोरि पाणि बोले सब सादर ।।
प्रभु जो कहहु तुमहिं सब सोहा। हमरे हिय उपजै सुनि मोहा ।।
दीन जानि कपि किये सनाथा तुम त्रैलोक्य ईश रघुनाथा।
सुनि प्रभु वचन लाज हम मरहीं मशक कबहुं खगपति हित करहीं
देखि राम रुख वानर ऋच्छा। प्रेम मगन नहिं गृह की इच्छा

दो॰ प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि ।।
हर्ष विषाद समेत सब ।। चले विनय बहु भाषि
जामवन्त कपिराज नल अंगदादि हनुमान ।।
सहित विभीषण अपर जे यूथप अति बलवान
कहि न सकहिं कछु प्रेमवस भरि भरि लोचन वारि
सनमुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि ।।

अतिशय प्रीति देखि रघुराई। लीन्हे सकल विमान चढ़ाई।
मन महं विप्रचरण शिरनावा। उत्तर दिशिहि विमान चलावा
चलत विमान कोलाहल होई ।। जय रघुवीर कहै सब कोई ।।
सिंहासन अति उच्च मनोहर। सिय समेत बैठे प्रभु तापर ।।
राजत राम सहित भामिनी ।। मेरु शृंग जनु घन दामिनी
रुचिर विमान चला अति आतुर कीन्ही सुमन वृष्टि हर्षे सुर ।।
परम सुखद चलि त्रिविध बयारी सागर सुर सरि निर्मल वारी ।।
शकुन होहिं सुन्दर चहुँ पासा। मन प्रसन्न निर्मल आकाशा
कह रघुवीर देखु रण सीता ।। लक्ष्मण हत्यो इहां इन्द्रजीता

अंगद हनूमान के मारे ॥ रण महँ परे निशाचर भारे।
कुम्भकर्ण रावण दोउ भाई । इहां हतेउँ सुरमुनि दुखदाई
दो॰ सुन्दरि सेतु देखु यह ॥ थापेउँ शिव सुखधाम
सीता सहित कृपायतन। शम्भुहि कीन्ह प्रणाम
जहँ जहँ कृपा सिंधु बन । कीन्ह वास विश्राम॥
सकल देखाये जानकिहि कहि कहि सब के नाम
सपदि विमान तहाँ चलि आवा दण्डक बन जहँ परम सुहावा
कुम्भजादि मुनि नायक नाना । गये राम सब के अस्थाना
सकल मुनिन सों पाइ अशीषा आये चित्रकूट जग दीशा॥
तहँ करि ऋषिन केर संतोषा । चला विमान तहां ते चोखा।
बहुरि राम जानकी दिखाई ॥ यमुना कलि मलहरणि सुहाई
पुनि देखी सुरसरी पुनीता ॥। राम कहा प्रणाम करु सीता
तीरथ पति पुनि देख प्रयागा। देखत जाहि पाप सब भागा।
देखि राम पावन पुनि वेनी ।। हरण शोक सुर लोक निसेनी
देखी अवधपुरी अति पावनि। त्रिविध ताप भव दापनशावनि
दो॰ तब रघुनन्दन सियसहित अवधहि कीन्हप्रणाम
सजल विलोचन पुलक तन पुनिपुनि हर्षित राम
बहुरि त्रिवेणी आय प्रभु हर्षित मज्जन कीन्ह।
कपिन समेत महीसुरन्ह दान विविध विधि दीन्ह
प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई ॥ धरि द्विज रूप अवधपुर जाई
भरतहि कुशल हमार सुनावहु समाचार लै पुनि चलि आवहु
तुरत पवन सुत गवनत भयऊ । तब प्रभु भरद्वाज पहँ गयऊ
नाना विधि पूजा मुनि कीन्ही। अस्तुति करि पुनि आशिष दीन्ही
मुनि पद वन्दि युगल कर जोरी। चढ़ि विमान प्रभु चले बहोरी
इहां निषाद सुना प्रभु आये ॥ नाव नाव करि लोग बुलाये।

सुरसरि लांघि यान जब आवा उतरा तहँ प्रभु आयसु पावा।
तब सीता पूजी सुर सरी ॥ ॥ बहु प्रकार करि चरणन परी।
दीन्ह अशीष मुदित मन गंगा सुन्दरि तव अहिवात अभंगा
सुनतहि गुह धावा प्रेमाकुल। आवा निकट परम सुख संकुल
प्रभुहि विलोकि सहित वैदेही परेउ अवनितल सुधि नहिं तेही
परम प्रीति विलोकि रघुराई ॥ हर्षि उठाइ लीन्ह उर लाई।

छं॰ लियहृदय लाइ कृपा निधान सुजान राम रमापती।
बैठारि परम समीप पूछी कुशल सो करि वीनती ॥
अब कुशल पद पंकज विलोकि विरंचि शंकर सेव्य जे
सुख धाम पूरण काम राम नमामि राम नमामि जे
सब भांति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइये
मतिमन्द तुलसीदास सो प्रभु मोह वश विसराइये
यह रावणारि चरित्र पावन राम पद रतिप्रद सदा
कामादि हर विज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा

दो॰ समर विजय रघुनाथ के सुनहिं जे संत सुजान
विजय विवेक विभूति नित तिनहिं देहिं भगवान
यह कलि काल मलायतन मन करि देखु विचार
श्री रघुनायक नाम तजि नाहिं कछु आन अधार

इति श्री रामचरित मानसे सकल कलि
कलुष विध्वन्सने विमल वैराग्य
संपादनो नाम षष्ठः सोपानः समाप्तः

हस्ताक्षर महावीरप्रसाद
ब्राह्मण सरयूपारी

अथ उत्तरकाण्ड लिख्यते

श्लोक

केकी कंठाभनीलं सुरवर विलसद्विप्र पादाब्ज चिन्हं। शोभाढ्यं पीत वस्त्रं सरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसन्नं। पाणौ नाराच चापं कपि निकर युतं बंधु ना सेव्य मानं। नौमी ड्यं जानकीशं रघुवर मनिशं पुष्प कारूढ राम ।१। कोशलेंद्र पद कंज मंजुलौ पद्म योनि शिति कंठ बंदितौ। जानकी कर सरोज लालितौ चिंतकस्य मन भृङ्ग सङ्गिनौ ।२। कुन्द इन्दु दर गौर सुन्दरं अंबिका पति मभीष्ट सिद्धिदं। कारुणीक कल कंज लोचनं नौमि शङ्कर मनंग मोचनं ।३।

दो॰ रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग।
जहं तहं शोचहिं नारिनर कृश तन राम वियोग॥
शकुन होहिं सुन्दर सकल मन प्रसन्न सब केर।
प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुं फेर॥
कौशिल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ॥
आये प्रभु सिय अनुज युत कहन चहत अस कोइ

भरत नयन भुज दक्षिण फरकहिं बारहिं बार ॥
जानि शकुन मन हर्ष अति लागे करण विचार

रहा एक दिन अवधि अधारा । समुझत मन दुख भयउ अपारा
कारण कवन नाथ नहिं आये । जानि कुटिल प्रभु मोहिं बिसराये
अहह धन्य लक्ष्मण बड़ भागी । राम पदार विन्द अनुरागी ॥ ॥
कपटी कुटिल नाथ मोहिं चीन्हा । तातें नाथ सङ्ग नहिं लीन्हा ।
जो करणी समुझैं प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कल्प शत कोरी
जन अवगुण प्रभु मान न काऊ । दीन बन्धु अति मृदुल सुभाऊ ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई । मिलिहहिं राम शकुन शुभ होई ।
बीते अवधि रहे जो प्राना ॥ । अधम कवन जग माहिं समाना

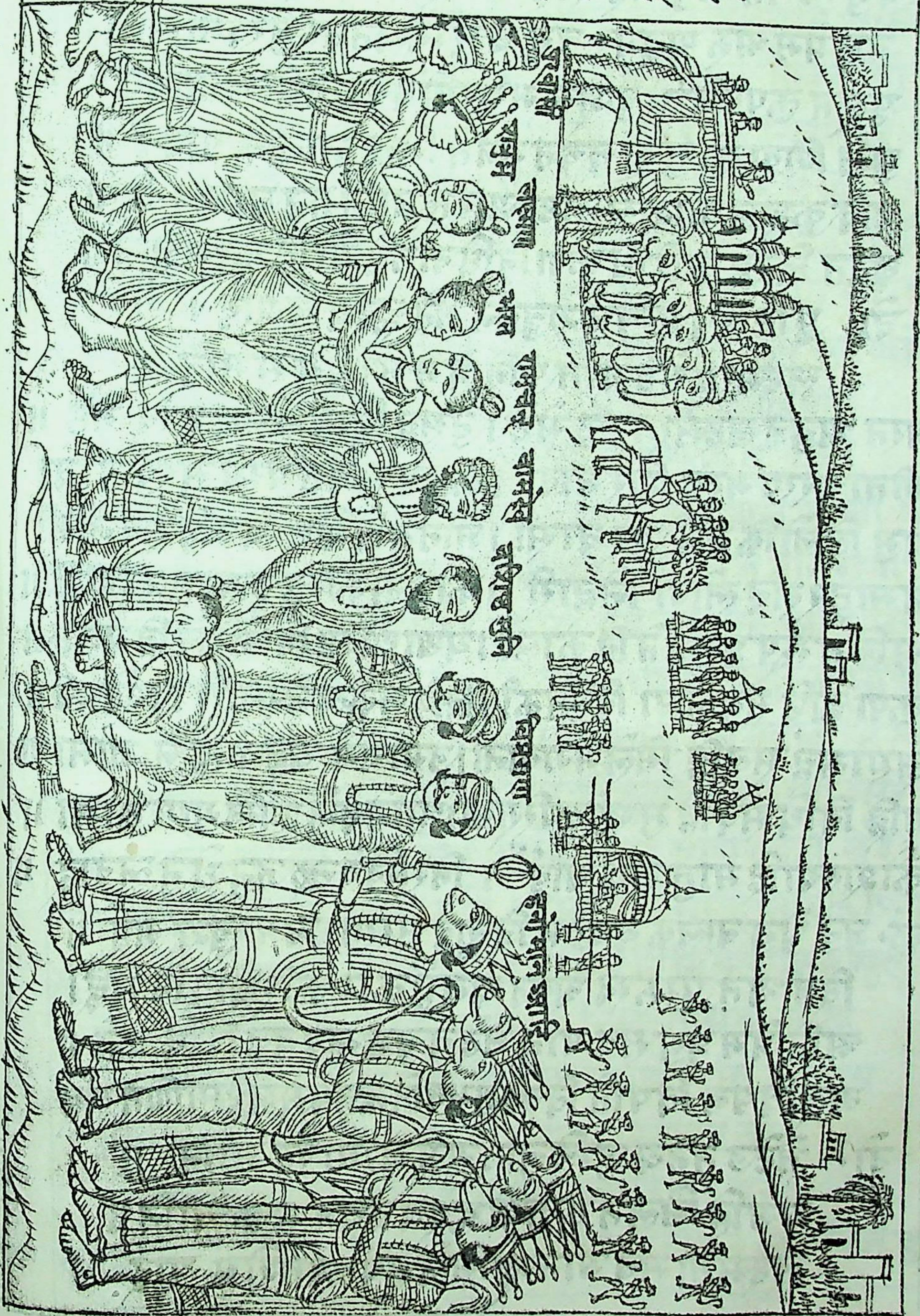
दो॰ राम बिरह सागर महं । भरत मगन मन होत ॥
विप्र रूप धरि पवन सुत आइ गये जिमि पोत ॥
बैठे देखि कुशासन जटा मुकुट कृश गात ॥ ॥
राम राम रघुपति जपत स्रवत नैन जलजात ॥

देखत हनूमान अति हर्षे ॥ ॥ पुलक गात लोचन जल बर्षे
मन महं बहुत भांति सुख मानी । बोले श्रवण सुधा सम बानी ।
जासु बिरह शोचहु दिन राती । रटहु निरन्तर गुण गण पाती
रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता । आये कुशल देव मुनि त्राता ॥
रिपु रण जीति सुयश सुर गावत । सीता अनुज सहित प्रभु आवत
सुनत वचन बिसरे सब दूषा । तृषावन्त जनु पाय पियूषा ॥
को तुम तात कहां ते आये । मोहिं परम प्रिय वचन सुनाये
मारुत सुत मैं कपि हनुमाना । नाम मोर सुनु कृपा निधाना
दीन बंधु रघुपति कर किंकर । सुनत भरत भेंटे उठि सादर ॥
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता । नयन स्रवत जल पुलकित गाता
कपि तव दरश सकल दुख बीते । मिले आज मोहिं राम सप्रीते ।

बार बार पूछी कुशलाता । तो कहं काह देउं सुन भ्राता ॥
यह संदेश सरिस जग माहीं । करि विचार देखा कछु नाहीं
नाहिंन उरिण तात मैं तोहीं । अब प्रभु चरित सुनावहु मोहीं
तब हनुमान नाइ पद माथा । कहेसि सकल रघुपति गुणगाथा
कहु कपि कबहुं कृपाल गुसांई । सुमिरत मोहिं दास की नाईं
छं॰ निज दास ज्यों रघुवंश भूषण कबहुं मम सुमिरन कस्यो ॥
सुनि भरत वचन विनीत अति कपि पुलक तन चरणन पस्यो
रघुवीर निज मुख जासु गुण गण कहत अग जग नाथ जो
काहे न होहु विनीत परम पुनीत सद्गुण सिन्धु सो ॥ ॥
दो॰ राम प्राण प्रिय नाथ तुम सत्य वचन मम तात ।
पुनि पुनि मिलत भरत सन प्रेम न हृदय समात
सो॰ भरत चरण शिर नाइ तुरत गये कपि राम पहं
कही कुशल सब जाइ । हर्षि चले प्रभु यान चढ़ि
हर्षि भरत कोशल पुर आये । समाचार सब गुरुहिं सुनाये ॥
पुनि मंदिर महं बात जनाई । आवत नगर कुशल रघुराई ॥
सुनत सकल जननी उठि धाई । कहि प्रभु कुशल भरत समुझाई
समाचार पुर वासिन पाये । नर अरु नारि हर्षि उठि धाये
दधि दूर्वा रोचन फल फूला । नव तुलसी दल मंगल मूला ॥
भरि भरि हेम थार भामिनी । गावत चलीं सिंधुर गामिनी ॥
जो जैसहिं तैसहिं उठि धावहिं । बाल वृद्ध कोउ संग न लावहिं ।
एक एक सन पूछहिं धाई । तुम देखे दयाल रघुराई । ॥
अवधपुरी प्रभु आवत जानी । भई सकल शोभा की खानी ॥
भा सरयू अति निर्मल नीरा । बहै सोहावन त्रिविधि समीरा
दो॰ हर्षित गुरु पुरजन अनुज भूसुर वृन्द समेत ॥
चले भरत अति प्रेम मन सन्मुख कृपा निकेत ॥

बहुतेक चढीं अटारिन्ह निरखहिं गगन बिमान
देखि मधुर स्वर हर्षित । करहिं सुमंगल गान
राका शशि रघुपति पुरी सिंधु देखि हर्षान ॥
बढ़े कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान ॥
रविकुल कमल दिवाकर आवत । नगर मनोहर कपिन देखावत
सुनु कपीश अंगद लंकेशा । पावनि पुरी रुचिर यह देशा ॥
यद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना । बेद पुराण बिदित जग जाना
अवध सरिस प्रिय मोहिं न सोऊ । यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ
जन्म भूमि मम पुरी सोहावनि । उत्तर दिशि सरयू बह पावनि ॥
जो मज्जहिं सो बिनहिं प्रयासा । मम समीप नर पावहिं बासा
अति प्रिय मोहिं इहां के बासी । मम धामदा पुरी सुख रासी ॥
हर्षे कपि सुनि प्रभु की बानी । धन्य अवध जेहि राम बखानी
दो॰ आवत देख लोग सब । कृपासिन्धु भगवान ॥
नगर निकट प्रभु आयउ उतरे भूमि बिमान ॥
बहुरि कहेउ प्रभु पुष्प कहि तुम कुबेर पहं जाहु
प्रेरित राम चलेउ सो । हर्ष बिरह अति ताहु ॥
आये भरत संग सब लोगा । कृशतन श्री रघुवीर बियोगा ।
बाम देव वशिष्ठ मुनि नायक । देखा प्रभु महि धरि धनु शायक
धाइ धरे गुरु चरण सरोरुह । अनुज सहित अति पुलकतनोरुह
भेटे कुशल पूछि मुनि राया । हमरे कुशल तुम्हारिहि दाया
सकल द्विजन कहं नायउ माथा । धर्म धुरंधर रघुकुल नाथा ॥
गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज । नवहिं जिनहिं शंकर सुर मुनि अज
परे भूमि नहिं उठत उठाये । बल करि कृपा सिंधु उर लाये
श्यामल गात रोम भय ठाढ़े । नवराजीव नयन जल बाढ़े ॥
छं॰ राजीव लोचन स्रवत जल तन ललितपुलकावलि बनी ॥

श्री राम चन्द्र लक्ष्मण और सीताजी को वानरादि यूथों के संयुक्त अयोध्याजी में आकर भरत शत्रुहन आदि अयोध्यावासियों से परस्पर मिलाप ॥



अति प्रेम हृदय लगाइ अनुजहिं मिले प्रभु त्रिभुवन धनी
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पहं जात नहिं उपमा कही
जनु प्रेम अरु शृङ्गार तनु धरि मिलत वर सुखमा लही।
पूछत कृपानिधि कुशल भरतहिं वचन वेगि न आवई॥
सुनि शिवा सो सुख वचन मन ते भिन्न जान न पावई॥
अब कुशल कोशल नाथ आरत जानि जन दरशन दियो
बूड़त विरह वारिधि कृपा निधि काढ़ि मोहिं कर गहि लियो
दो॰ पुनि प्रभु हर्षित शत्रुहन भेंटे हृदय लगाइ। ॥
लक्ष्मण भेंटे भरत पुनि प्रेम न हृदय समाइ ॥
भरत अनुज लक्ष्मण तब भेंटे। दुसह विरह संभव दुख मेटे ॥
सीता चरण भरत शिर नावा। अनुज समेत परम सुख पावा
प्रभु विलोकि हर्षे पुर वासी। जनित वियोग विपति सब नासी
प्रेमातुर सब लोग निहारी। कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी॥
अमित रूप प्रगटे तेहि काला। यथा योग्य मिलि सबहि कृपाला
कृपा दृष्टि सब लोग विलोकी। किये सकल नर नारि विशोकी॥
क्षणमहं सबहिं मिले भगवाना। उमा मर्म यह काहु न जाना॥
एहि विधि सबहि सुखी करि रामा। आगे चले शील गुण धामा॥
कौशल्यादि मातु सब धाई। निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई॥
छं॰ जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरण बन परबश गईं॥
दिन अंत पुर रुख स्रवत थन हुंकार करि धावति भई।
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेंटे वचन मृदु बहु विधि कहे॥
गइ विषम विपति वियोग भव तिन्ह हर्ष सुख अगणित लहे
दो॰ भेंटेउ तनय सुमित्रा। राम चरण रत जानि ॥
रामहिं मिलत कैकयी हृदय बहुत सकुचानि॥
लक्ष्मण सब मातन्ह मिले हर्षे आशिष पाइ

केकयि कहं पुनि पुनि मिले मन कर क्षोभ न जाइ

सासुन सबहिं मिली बैदेही । चरणन लागि हर्ष अति तेही ॥
देहिं अशीश पूंछि कुशलाता । होउ अचल तुम्हार अहि वाता
सब रघुपति पद कमल विलोकी । मंगल जानि नयन जल रोकी ॥
कनक थार आरती उतारहिं । बार बार प्रभु गात निहारहिं ॥
नाना भांति निछावरि करहीं । परमानन्द हर्ष उर भरहीं ॥
कौशल्या पुनि पुनि रघुबीरहिं । चितवहि कृपासिंधु रणधीरहि
हृदय विचारति बारहि बारा । कवनि भांति लंका पति मारा ॥
अति सुकुमार युगल मम वारे । निशिचर सुभट महा बल भारे ॥

दो॰ लक्ष्मण अरु सीता सहित प्रभुहिं विलोकहिं मात
परमानन्द मगन मन । पुनि पुनि पुलकित गात

लंकापति कपीश नल नीला । जामवन्त अंगद शुभ शीला ॥॥
हनुमदादि सब बानर वीरा । । धरे मनोहर मनुज शरीरा ॥ ॥
भरत सनेह शील ब्रतनेमा । । सादर सब वरणहिं अति प्रेमा।
देखि नगर वासिन के रीती । सकल सराहहिं प्रभु पद प्रीती ॥
पुनि रघुपति निज सखा बुलाये । मुनिपद लागहु सबहिं सिखाये
गुरु वशिष्ठ कुल पूज्य हमारे । इन की कृपा दनुज रण मारे ॥
ये सब सखा सुनिय मुनि मेरे । भये समर सागर कहं बेरे ॥
मम हित लागि जन्म इन हारे । भरतहु तें मोहिं अधिक पियारे
सुनि प्रभु बचन मगन सब भये । निमिष निमिष उपजत सुख नये

दो॰ कौशल्या के चरणन । पुनि तिन्ह नायउ माथ
आशिष दीन्ह हर्षि हिय तुम प्रिय जिमि रघुनाथ
सुमन वृष्टि नभ संकुल भवन चले सुख कन्द ॥
चढ़े अटारिन्ह देखहीं नगर नारि नर वृन्द ॥ ॥

कंचन कलश विचित्र संवारे । सबन्हि धरे सजि निज निज द्वारे

बंदन वार पताका केतू ॥ । सबन्हि बनाये मंगल हेतू
बीथिन सकल सुगंधि सिंचाये । गज मणि रचि बहु चौक पुराये
नाना भांति सुमंगल साजे । हर्ष निशान नगर बहु बाजे ।
जहं तहं नारि निछावरि करहीं । देहिं अशीश हर्ष उर भरहीं
कंचन थार आरती नाना । युवती साजि करहिं कल गाना
करहिं आरती आरति हर के । रघुकुल कमल विपिन दिनकर के
पुर शोभा सपति कल्याना । निगम शेष शारदा बखाना ।
तेऊ चरित देखि ठगि रहहीं । उमा तासु गुण नर किमि कहहीं

दो॰ नारि कुमुदिनी अवध सर रघुपति बिरह दिनेश
अस्त भये बिकसित भई निरखि राम राकेश ।
होहिं शकुन शुभ विविध विधि बाजहिं गगन निशान
पुर नर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान ॥

प्रभु जानी कैकयी लजानी । प्रथम तासु गृह गये भवानी
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा । तब निज भवन गवन प्रभु कीन्हा
कृपासिंधु जब मन्दिर गयऊ । पुर नर नारि सुखी सब भयऊ
गुरु वशिष्ठ द्विज लिये बुलाई । आजु सुघरी सुदिन सुखदाई ।
सब द्विज देहु हर्षि अनुशासन । रामचंद्र बैठहिं सिंहासन ॥
मुनि वशिष्ठ के वचन सुहाये । सुनत सकल विप्रन मन भाये
कहहिं वचन मृदु विप्र अनेका । जग अभिराम राम अभिषेका
अब मुनिवर विलंब नहिं कीजे । महाराज कहं तिलक करीजे ॥

दो॰ तब मुनि कहेउ सुमंत सन सुनत चले हर्षाइ
रथ अनेक गज बाजि बहु सकल संवारे जाइ
जहं तहं धावन पठै पुनि मंगल द्रव्य मंगाइ ॥
हर्ष समेत वशिष्ठ पद पुनि शिर नायउ आइ ॥

अवधपुरी अति रुचिर बनाई । देवन्ह सुमन वृष्टि करि लाई ॥

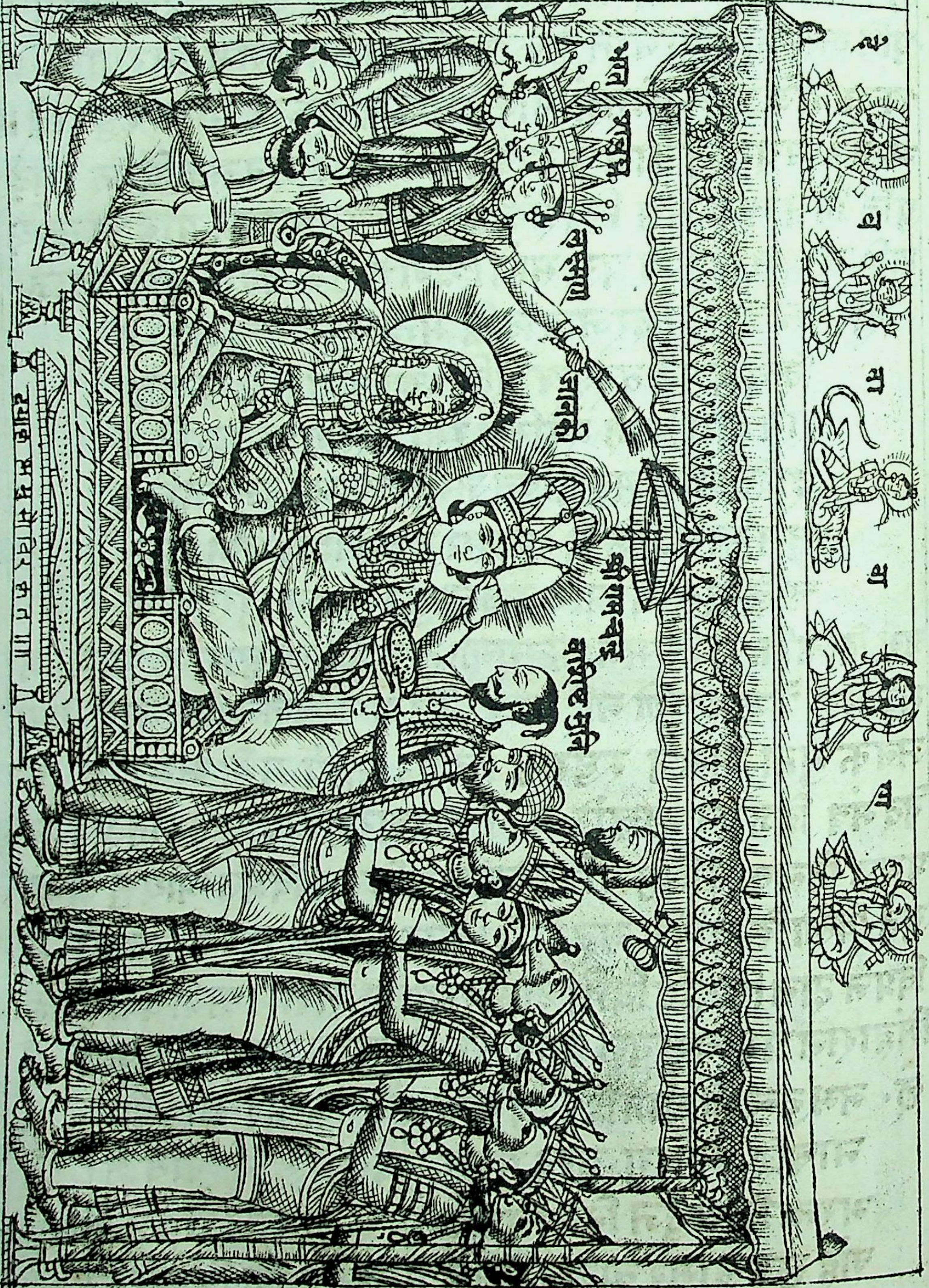
राम कहा सेवकन्ह बुलाई । प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥
सुनत वचन जनजहँ तहँ धाये । सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये ॥
पुनि करुणानिधि भरत हंकारे । निज कर जटा राम निरवारे ॥
अन्हवाये पुनि तीनहुं भाई । भक्तबछल कृपाल रघुराई ॥
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई । शेष कोटि शत सकहिं न गाई ॥
पुनि निज जटा राम बिवराये । गुरु अनुशासन पाइ अन्हाये ॥
करि मज्जन भूषण प्रभु साजे । अंग अनंग कोटि छबि छाजे ॥

दो॰ सासुन सादर जानकिहिं मज्जन तुरत कराइ ॥
दिव्य बसन वर भूषणनि अंग अंग सजे बनाइ ॥
राम वाम दिशि शोभित रमा रूपगुण खानि ॥
देखि सासु सब हर्षिन जन्मसुफल निज जानि ॥
सुन खगेश तेहि अवसर ब्रह्मा शिव मुनि वृन्द
चढ़ि बिमान आये सकल सुर देखन सुखकन्द

प्रभु विलोकि मुनि मन अनुरागा । तुरत दिव्य सिंहासन मांगा ॥
रवि सम तेज वरणि नहिं जाई । बैठे राम द्विजन शिर नाई ॥
जनकसुता समेत रघुराई । देखि प्रहर्षे मुनि समुदाई ॥
वेद मंत्र द्विजवर उच्चारे ॥ । नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे ॥
प्रथम तिलक वशिष्ठ मुनि कीन्हा । पुनि सब विप्रन आयसु दीन्हा ॥
सुत विलोकि हर्षित महतारी । बार बार आरती उतारी ॥
विप्रन दान विविधि विधि दीन्हे । याचक सकल अयाचक कीन्हे ॥
सिंहासन पर त्रिभुवन सांई । देखि सुरन दुन्दुभी बजाई ॥

छं॰ नभ दुन्दुभी बाजहिं विपुल गंधर्व किन्नर गावहीं ॥
नाचहिं अपसरा वृन्द परमानंद सुर मुनि पावहीं ।
भरतादि अनुज विभीषणांगद हनुमतादि समेत जे
गहे छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म शक्ति विराजते ।

कुलगुरु वशिष्ठ जी करके श्री राम चन्द्र जी को राज्य तिलक करना और नारद शिव ब्रह्मादि देवताओं को अत्यन्त हर्ष करके सिंहासनस्थ श्री रामचन्द्र की स्तुति करना



सिय सहित दिनकर वंश भूषण काम बहु छवि सोहहीं
नव अंबु धर बर गात अंबर पीत सुनि मन मोहहीं ॥
मुकुटांगदादि विचित्र भूषण अंग अंगन प्रति सजे।
अंभोज नयन विशाल उर भुज धन्य नर निरखंत जे।
दो॰ यह शोभा समाज सुख कहत न बनै खगेश ॥
वरणै शारद शेष स्रुति सो रस जानु महेश ॥
भिन्न भिन्न अस्तुति करि गे सुर निज निज धाम
बंदी वेष वेद धरि ॥ आये जहँ श्रीराम ॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति आदर कृपा निधान
लखा न काहू मर्म कछु लगे करण गुण गान
छं॰ जय सगुण निर्गुण रूप राम अनूप भूप शिरो मने ॥ ॥
दशकंधरादि प्रचंड निशिचर प्रबल खल भुज बल हने
अवतार नर संसार भार विभंजि दारुण दुख दहे ॥
जय प्रणत पाल दयाल प्रभु संयुक्त शक्ति नमामि हे
तव विषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हे
भव पंथ भ्रमित अमित दिवस निश काल कर्म्मण गुणभरे
जेहि नाथ करि करुणा बिलोकहु त्रिविध दुख ते निर्वहे
भव खेद छेदन दक्ष हम कहं रक्ष राम नमामि हे ॥ ॥
जे ज्ञान मान बिमत्त तव भय हरणि भक्ति न आदरी ॥
ते पाइ सुर दुर्लभ पदा दपि परत हम देखत हरी ॥ ॥
विश्वास करि सब आश परिहरि दास तव जे हो रहे ॥
जपि नाम तव बिनु श्रमत रहिं भव नाथ राम नमामि हे
जे चरण शिव अज पूज्य रज शुभ परसि मुनि पत्नी तरी
नख निर्गता सुर वंदिता त्रैलोक्य पावनि सुर सरी ॥ ॥
ध्वज कुलिश अंकुश कंज युत पद फिरत कंटक जिन लहे

पद कंज द्वंद मुकुन्द राम रमेश नित्य भजामिहे ॥ ॥ ॥
अव्यक्त मूल मनादि तरु त्वच चारि निगमा गम भने ॥
षट कंध शाखा पंच विंश अनेक पर्ण सुमन घने ॥ ॥
फल युगल विधि कटु मधुर वेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे
पल्लवित फूलत नवल निति संसार विटप नमामिहे ॥
जे ब्रह्म अज अद्वैत अनुभव गम्य मन पर ध्यावही ॥ ॥
ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुण यश निति गावहीं
करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देव यह वर मांगहीं ॥
मन कर्म वचन विकार तजि तव चरण हम अनुरागहीं ॥

दो० सब के देखत वेदन्ह । विनती कीन्हि उदार ॥ ॥
अन्तर्ध्यान भये तब गये ब्रह्म आगार ॥ ॥ ॥
वैन तेय सुन शंभु तब । आये जहं रघुवीर ॥
विनय करत गद्गद गिरा पूरित पुलक शरीर ॥

छं० जय राम रमा रमणं शमनं । भव ताप भयाकुल पाहि जनं ।
अवधेश सुरेश रमेश विभो । शरणागत मांगत पाहि प्रभो
दश शीश विनाशन वीस भुजा । कृत दूरि महा महि भूरि रुजा
रजनीचर वृन्द पतंग रहे । शर पावक तेज प्रचंड दहे ॥
महि मंडल मंडन चारु तरं । धृत शायक चाप निखंग वरं
मद मोह महा ममता रजनी । तम पुञ्ज दिवाकर तेज अनी
मनुयाद किरात निपात किये । मृग लोग कुभोग सरेन हिये
हित नाथ अनाथ नि पाहि हरे विषया वन पामर भूलि परे
बहु रोग वियोगन्ह लोग हये भव दंघ्रि निरादर के फल ये
भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते
अति दीन मलीन दुखी नितहीं जिनके पद पंकज प्रीति नहीं
अवलंब भवन्त कथा जिन के । भव भीति कदापि नहीं तिनके

नहिं राग न रोष न मान मदा तिन्ह के सम वैभव वादि यदा
मुनि त्यागत योग भरोस सदा इहि ते तव सेवक होत मुदा
करि प्रेम निरंतर नेम लिये। पद पंकज सेवत शुद्ध हिये।
सम मान निरादर आदरही। सोइ सन्त सुखी विचरन्त मही
मुनि मानस पङ्कज भृङ्ग भजे रघुबीर महा रणधीर अजे
तव नाम जपामि नमामि हरी भव रोग महा मदमान अरी
गुण शील कृपा परमायतनं प्रणमामि निरंतर श्रीरमणं
रघुनंद निकंदन द्वंद घनं। महिपाल बिलोकिय दीन जनं
दो॰ बार बार बर मागौं॥ हर्षि देहु श्री रंग॥
पद सरोज अनुपावनी भक्ति सदा सत संग॥
बरणि उमापति राम गुण हर्षि गये कैलाश
तब प्रभु कपिन दिवाये सब विधि सुखप्रद वास
सुन खगपति यह कथा सुहावनि। त्रिविधि ताप भव दोष नशावनि
महाराज कर शुभ अभिषेका। सुनत लहहिं नर बिरति बिवेका॥
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख संपति नाना विधि पावहिं
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं। अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं
सुनहिं विमुक्त विरत अरु विषई। लहहिं भक्ति सुख संपति नितई
खगपति राम कथा मैं वरणी। सुमति विलास त्रास दुख हरणी
विरति विवेक भक्ति दृढ़ करणी। मोह नदी कहं सुंदर तरणी॥
निति नव मंगल कोशल पुरी। हर्षित रहहिं लोग सब कुरी॥
निति नव प्रीति राम पद पंकज। सेवत जेहि शंकर सुर मुनि अज
मंगन बहु प्रकार पहिराये। द्विजन दान नाना विधि पाये॥
दो॰ परमानंद मगन कपि। सब कहं प्रभु पद प्रीति
जात न जाने दिवस निश गये मास षट बीति
बिसरे गृह सपने सुधि नाहीं। जिमि परद्रोह संत मन माहीं

तब रघुपति सब सखा बुलाये। आइ सबहि सादर शिर नाये
प्रेम समेत निकट बैठारे ॥ । भक्त सुखद मृदु वचन उचारे
तुम अति कीन्ह मोरि सेवकाई। मुख पर केहि विधि करौं बड़ाई
तातें मोहिं तुम अति प्रिय लागे। मम हित लागि भवन सुख त्यागे
अनुज राज संपति बैदेही ॥। देह गेह परिवार सनेही ॥ ॥
सब मोहिं प्रिय नहिं तुमहिं समाना। मृषा न कहौं मोर यह बाना ॥
सब कहं प्रिय सेवक यह नीती। मोरे अधिक दास पर प्रीती ॥

दो॰ अब गृह जाहु सखा सब भजहु मोहिं दृढ नेम
सदा सर्व गत सर्व हित। जानि करेहु अति प्रेम

सुनि प्रभु वचन मगन सब भये। कोहम कहां बिसरि तन गये
इकटक रहे जोरि कर आगे। कहि न सकत कछु अति अनुरागे
परम प्रीति तिन्ह कर प्रभु देखी। कहा विविध विधि ज्ञान विशेषी
प्रभु सन्मुख कछु कहै न पारहिं। पुनि पुनि चरण सरोज निहारहिं
तब प्रभु भूषण बसन मंगाये। नाना रंग अनूप सुहाये ॥ ॥
सुग्रीवहिं प्रथमहिं पहिराये। भरत बसन निज हाथ बनाये ॥
प्रभु प्रेरित लक्ष्मण पहिराये। लंकापति रघुपति मन भाये।
अंगद बैठि रहे नहिं डोले। प्रीति जानि प्रभु ताहि न बोले

दो॰ जामवन्त नीलादि सब पहिराये रघुनाथ ॥
हिय धरि राम सरूप सब चले नाइ पद माथ
तब अंगद उठि नाइ शिर सजल नयन कर जोरि
अति विनीत बोले वचन मनहुं प्रेम रस बोरि

सुनु सर्वज्ञ कृपा सुख सिंधो। दीन दयाकर आरत बंधो ॥ ॥
मरती बार नाथ मोहिं बाली। गयो तुम्हारे पग तर घाली ॥
अशरण शरण बिरद संभारी। मोहिं जनि तजहु भक्त भय हारी
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता। जाउं कहां तजि पद जलजाता ॥

तुमहिं विचारि कहहु नरनाहा। प्रभु तजि भवन काज मम काहा
बालक ग्यान बुधि बल हीना। राखहु सरन नाथ जन दीना
नीचि टहल गृह कै सब करिहौं। पद पंकज बिलोकि भव तरिहौं
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही। अब जनि नाथ कहहु गृह जाही

दो॰ अंगद बचन बिनीत सुनि रघुपति करुना सींव
प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव ॥
निज उर माल बसन मनि बालितनय पहिराइ
बिदा कीन्हि भगवान तब बहु प्रकार समुझाइ ॥

भरत अनुज सौमित्रि समेता। पठवन चले भगत कृत चेता ॥
अंगद हृदयँ प्रेम नहिं थोरा। फिरि फिरि चितव राम कीं ओरा
बार बार कर दंड प्रनामा ॥ मन अस रहन कहहिं मोहि रामा
राम बिलोकनि बोलनि चलनी। सुमिरि सुमिरि सोचत हँसि मिलनी
प्रभु रुख देखि बिनय बहु भाषी। चलेउ हृदयँ पद पंकज राखी ॥ ॥
अति आदर सब कपि पहुँचाए। भाइन्ह सहित राम फिरि आए
तब सुग्रीव चरन गहि नाना। भाँति बिनय कीन्हे हनुमाना
दिन दस करि रघुपति पद सेवा। पुनि तव चरन देखिहउँ देवा ॥
पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा। सेवहु जाइ कृपा आगारा ॥
अस कहि कपि सब चले तुरंता। अंगद कहइ सुनहु हनुमंता

दो॰ कहेहु दंडवत प्रभु सन तुम्हहि कहउँ कर जोरि
बार बार रघुनायकहि सुरति करायहु मोरि
अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आयउ हनुमंत
तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भए भगवंत ॥
कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि
चित खगेस राम कर समुझि परइ कहु काहि

पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा। दीन्हे भूषन बसन प्रसादा

जाहु भवन मम सुमिरण करहू । मन क्रम वचन धर्म्म अनुसरहू
तुम मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहेहु पुर आवत जाता ॥
वचन सुनत उपजा सुख भारी । परेउ चरण लोचन भरि वारी
चरण कमल उर धरि गृह आवा । प्रभु प्रभाव परिजनहिं सुनावा
रघुपति चरित देखि पुर वासी । पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी
राम राज बैठे त्रयलोका ॥ । हर्षित भयउ गयउ सब शोका
बैर न कर काहू सन कोई । राम प्रताप विषमता खोई ॥

दो० वर्णाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग ॥
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं नहिं भय शोक न रोग

दैहिक दैविक भौतिक तापा । राम राज नहिं काहुहिं व्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती । चलहिं सुधर्म्म निरत श्रुति नीती
चारिउ चरण धर्म्म जग माहीं । पूरि रहा सपनेहु अघ नाहीं
राम भक्ति रत नर अरु नारी । सकल परम गति के अधिकारी
अलप मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा । सब सुंदर सब निरुज शरीरा
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिं कोउ अबुध न लक्षण हीना
सब निर्दम्भ धर्म रति धरणी । नर अरु नारि चतुर शुभ करणी
सब गुणज्ञ सब पण्डित ज्ञानी । सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी

दो० राम राज्य विहगेश सुनि सचराचर जग माहिं
काल कर्म स्वभाव गुण कृत दुख काहुहि नाहिं

भूमि सप्त सागर मेखला ॥ । एक भूप रघुपति कोशला ॥
भुवन अनेक रोम प्रति जासू । यह प्रभुता कछु बहुत न तासू
सो महिमा समुझत प्रभु केरी । यह वर्णत हीनता घनेरी ॥
यह महिमा खगेश जिन जानी । फिरि यह चरित तिनहुं रति मानी
सो जाने कर फल यह लीला । कहहिं महा मुनि सुमति सुशीला
राम राज्य कर सुख संपदा । वरणि न सकहिं फणीश शारदा

सब उदार सब पर उपकारी । द्विज सेवक सब नर अरु नारी
एक नारि व्रत रत नर कारी । ते मन वच क्रम पति हित कारी
दो· दंडय तिन कर भेद जहं नर्तक नृत्य समाज ॥
जीतेउ जग मन सुनिय अस रामचन्द्र के राज
फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक संग गज पंचानन
खग मृग बैर सहज बिसराई। सबनि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥
कूजहिं खग मृग नाना वृन्दा। अभय चरहिं बन करहिं अनन्दा
शीतल सुरभि पवन वह मंदा। गुंजत अलि लै चलु मकरंदा ॥
लता विटप मांगे फल द्रवहीं। मन भावते धेनु पय स्रवहीं ॥
ससि संपन्न सदा रह धरणी। त्रेता भी सतयुग की करणी
प्रगटे गिरि नाना मणि खानी। जगदात्मा भूप पहि चानी ॥
सरिता सकल बहे बर वारी। शीतल अमल स्वाद सुखकारी
सागर निज मर्यादा रहहीं ॥ डारहिं रत्न तटनि नर लहहीं ॥
सरसिज संकुल सकल तड़ागा। अति प्रसन्न दश दिशा विभागा
दो· बिधु महि पूरपियूष नर रवि तप तेज न काज ॥
मांगे वारिद देहिं जल रामचंद्र के राज ॥ ॥ ॥
कोटिन्ह बाजि मेध प्रभु कीन्हा। अमित दान बिप्रन कहं दीन्हा
श्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर। गुणातीत अरु भोग पुरंदर ॥
पति अनुकूल सदा रह सीता। शोभा खानि सुशील विनीता
जानति कृपा सिंधु प्रभुताई। सेवत चरण कमल मन लाई ॥
यद्यपि गृह सेवक सेवकीनी। सब प्रकार सेवा विधि लीनी
निज कर गृह परिचर्य्या करहीं। रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं।
जेहि विधि कृपा सिंधु सुख मानहिं। सोइ सिय सेवा विधि उर आनहिं
कौशल्यादि सासु गृह माहीं। सेवहिं सबै मान मद नाहीं ॥
उमा रमा ब्रह्माणि वंदिता ॥ जगदंबा संतत स मानिता ॥

दो० जाकी कृपा कटाक्ष सुर चाहत चितवनि सोइ
राम पदारविंद रत ॥ रहति स्वभावहिं जोइ
सेवहिं सानुकूल सब भाई । रामचरण रति प्रीति सुहाई ॥
प्रभु पद कमल विलोकत रहहीं । कबहिं कृपाल हमहिं कछु कहहीं
राम करहिं भ्रातन पर प्रीती ।। नाना भांति सिखावहिं नीती।
हर्षित रहहिं नगर के लोगा । करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा
अह निशि विधिहिं मनावत रहहीं। श्री रघुवीर चरण रति चहहीं
दुइ सुत सुंदर सीतहिं जाये । लवकुश वेद पुराणनि गाये
दोउ विजयी विनयी अति सुन्दर। हरि प्रति विंब मनहुं गुणमंदिर
दोइ दोइ सुत सब भ्रातन केरे । भये रूप गुण शील घनेरे ॥
दो० ज्ञान गिरा गोतीत अज माया गुण गोपार
सोइ सच्चिदानंद घन। करत चरित्र अपार ॥
प्रात काल सरयू करि मज्जन। बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन
वेद पुराण बशिष्ठ बखानहिं। सुनहिं राम यद्यपि सब जानहिं
अनुजन्ह संयुत भोजन करहीं। देखि सकल जननी सुख भरहीं
भरत शत्रुहन दोनौ भाई ॥ । सहित पवन सुत उपवन जाई
पूछहिं बैठि राम गुण गाहा। कह हनुमान सुमति अवगाहा
सुनत विमल गुण अति सुख पावहिं। बहुरि बहुरि के बिनय सुनावहिं
सब के गृह गृह होइ पुराना । राम चरित सुंदर विधि नाना ॥
नर अरु नारि राम गुण गावहिं। करहिं दिवस निश जात न जानहिं
दो० अवध पुरी वासिन्ह कर सुख संपदा समाज ॥
सहस शेष नहिं कहि सकहिं जहं नृप राम बिराज
नारदादि सनकादि मुनीशा। दरशन लागि कोशलाधीशा
दिन प्रति सकल अयोध्या आवहिं। देखि नगर बिराग विसरावहिं
रत्न जटित मणि कनक अटारी। नाना रंग रुचिर गच ढारी ॥ ॥

पुर चहुं पास कोट अति सुन्दर। रचे कंगूरा रंग रंग वर ॥ ॥ ॥
नव गृह सुंदर निकर बनाई ॥ । मनहुं घेरि अमरावति आई ॥
महि बहु रूप रुचिर गच कांचा । जो विलोकि मुनिवर मन नांचा
धवल धाम ऊपर नभ चुम्बत । कलश मनहुं शशि रवि दुति निंदत
बहु मणि रचित झरोखन भ्राजें । गृह गृह प्रति मणि दीप विराजें
छं॰ मणि दीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुम रची ॥
सुन्दर मनोहर मंदिरायत अजिर अति फटिकन रची
मणि खंभ भीति विरंचि विरचित कनक मणि मरकत रचे
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाय बहु वज्रन खचे ॥ ॥
दो॰ चारु चित्र शाला अमित गृह गृह रचे बनाइ ।
राम धाम जो निरखत । मुनि मन लेत चुराइ
सुमन वाटिका सबहिं लगाई । विविध भांति करि यतन बनाई
लता ललित बहु भांति सोहाई । फूलहिं सदा बसंत की नाई ॥
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर । मारुत त्रिविधि सदा बह सोहर
नाना खग बालकन्ह जिआये । बोलत मधुर उड़ात सुहाये ॥
मोर हंस सारस पारावत ॥ ॥ भवनन्ह पर शोभा अति पावत
जहं तहं देखहिं निज परिछाहीं । बहु विधि कूजहिं नृत्य कराहीं
शुक शारिका पढ़ावहिं बालक । कहहु राम रघुपति जन पालक
राज द्वार सबही विधि चारू ॥ । बीथी चौहट रुचिर बजारू ॥
छं॰ बाजार रुचिर न बनै वरणत वस्तु बिनु गथ पाइये
जहं भूप रमा निवास तहं की संपदा किमि गाइये
बैठे बजाज सराफ वणिक अनेक मनहुं कुबेर ते
सब सुखी सब सुचरित्र सुंदर नर सुवा शिशु जठरते
दो॰ उत्तर दिशि सरयू बहे । निर्मल जल गंभीर ॥
बांधे घाट मनोहर । स्वल्प पंक नहिं तीर ॥

दूर फराक रुचिर सो घाटा । जहं जल पिवहिं बाजि गज ठाटा ॥
पनिघट परम मनोहर नाना । तहां न पुरुष करहिं अस्नाना ॥
राज घाट सबही विधि सुंदर । मज्जहिं तहां वरण चारिउ नर
तीर तीर देवन कर मंदिर । चहुं दिशि तिहि के उपवन सुंदर
कहुं कहुं सरिता तीर निवासी । बसहिं ज्ञान रत मुनि सन्यासी
जहं तहं तुलसी वृन्द सुहाये । बहु प्रकार सब मुनिन लगाये
पुर शोभा कछु वरणि न जाई । बाहर नगर परम रुचि राई ।
देखत पुरी अखिल अघ भागा । वन उपवन वाटिका तड़ागा

छं॰ वापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं ॥
सो पान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं
आराम रम्य पिकादि खग रव मनहुं पथिक हंकारहीं

दो॰ रमानाथ जहं राजा सो पुर वरणि न जाइ ॥
अणिमादिक सुख संपदा रही अवधपुर छाइ

जहं तहं नर रघुपति गुण गावहिं । बैठि परस्पर इहै सिखावहिं
भजहु प्रणत प्रतिपालक रामहिं । शोभा शील रूप गुण धामहिं
जलज विलोचन श्यामल गातहिं । पलक नयन इव सेवक त्रातहिं
धृत शर रुचिर चाप तूणीरहि । संत कंज बन रवि रण धीरहि ॥
काल कराल व्याल खग राजहि । नमत राम अकाम ममता जहि
लोभ मोह मृग यूथ किरातहि । मन सिज करि हरि जन सुखदातहि
संशय शोक निविड़ तम भानुहि । दनुज गहन वन गहन कृशानुहि
जनक सुता समेत रघुबीरहि । कस न भजहु भंजन भव भीरहि
बहु वासना मशक हिम राशिहि । सदा एक रस अज अविनाशिहि
मुनि रंजन भंजन महि भारहि । तुलसिदास के प्रभुहि उदारहि

दो॰ इहि विधि नगर नारि नर करहिं राम गुण गान

सानुकूल संतत रहत सब पर कृपा निधान ॥
जब ते राम प्रताप खगेशा । उदित भये अति प्रबल दिनेशा
पूरि प्रकाश रहेउ तिहुं लोका । बहु तन सुख बहु तन मन शोका
जिनहिं शोक तेहि कहौं बखानी । प्रथम अविद्या निशा नशानी ॥
अघ उलूक जहं तहां लुकाने । काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥
विविधि कर्म गुण काल सुभाऊ । ये चकोर सुख लहहिं न काऊ
मत्सर मान मोह मद चोरा । इन कहं सुख नहिं कवनिहुं ओरा
धर्म तड़ाग ज्ञान विज्ञाना । ये पंकज बिकसे विधि नाना ॥
सुख संतोष विराग विवेका । विगत शोक ये कोक अनेका ॥
दो॰ यह प्रताप रवि जाहि के उर जब करै प्रकाश ॥
पाछिल बाढ़हिं प्रथम जे कहे ते पावहिं नाश ॥
भ्रातन सहित राम इक बारा । संग परम प्रिय पवन कुमारा ॥
सुंदर उपवन देखन गयऊ । सब तरु कुसुमित पल्लव नयऊ
जानि समय सनकादिक आये । तेज पुंज गुण शील सुहाये ॥
ब्रह्मानंद सदा लय लीना ॥ । देखत बालक बहु कालीना ॥
धरे देह जनु चारिउ वेदा ॥ । समदर्शी मुनि विगत विभेदा ॥
आशा वसन व्यसन नहिं तिनहीं । रघुपति चरित होइ तहं सुनहीं
तहां रहे सनकादि भवानी ॥ । जहं घटसंभव मुनिवर ज्ञानी ॥
राम कथा मुनि बहु विधि बरणी । ज्ञान योग पावक जिमि अरणी
दो॰ देखि राम मुनि आवत हर्षि दण्डवत कीन ॥
स्वागत पूछी पीत पट प्रभु बैठन कहं दीन्ह ॥
कीन्ह दण्डवत तीनिउ भाई । सहित पवन सुत सुख अधिकाई
मुनि रघुपति छबि अतुल बिलोकी । भये मगन मन सकत न रोकी
श्यामल गात सरोरुह लोचन । सुंदरता मंदिर भव मोचन ॥
इकटक रहे निमेष न लावहिं । प्रभु कर जोरे शीश नवावहिं

तिन्ह की दशा देखि रघुबीरा। स्रवत नयन जल पुलक शरीरा ॥
कर गहि प्रभु मुनिवर बैठारे। परम मनोहर वचन उचारे ॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीशा। तुम्हरे दरश जांहिं अघ खीशा
बड़े भाग्य पाइय सत संगा । बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा।

दो॰ संत पंथ अपवर्ग कर। कामी भव कर पंथ ॥
कहहिं संत कबि कोविद स्रुति पुराण सद ग्रंथ

सुनि प्रभु वचन हर्षि मुनि चारी। पुलक गात अस्तुति अनुसारी
जय भगवंत अनंत अनामय। अनघ अनेक एक करुणा मय
अज निर्गुण जय जय गुण सागर। सुख निधान तिहुं लोक उजागर
जय इन्दिरा रमण जय भूधर। अनुपम यश अनादि शोभाकर
ज्ञान निधान अमान मान प्रद। पावन सुयश पुराण वेद बद ॥
अज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन। नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
सर्व सर्व गत सर्व उरालय ॥ बसहु सदा हम कहं प्रति पालय
द्वंद विपति भव फंद विभंजन। हृद बसु राम काम मद गंजन

दो॰ परमानंद कृपायतन। तुम परि पूरण काम ॥
प्रेम भक्ति अन पावनी। देहु हमहिं श्री राम ॥

देहु भक्ति रघुपति अन पावनि। त्रिविध ताप भव दाप नशावनि।
प्रणत पाल सुर धेनु कल्प तरु। होइ प्रसन्न प्रभु दीजे यह वरु ॥
भव वारिधि कुम्भज रघुनायक। सेवक सुलभ सकल सुख दायक
मन संभव दारुण दुख दारक। दीन बंधु समता बिस्तारक ॥ ॥
आश त्रास ईर्षा दिनि वारक। विनय विवेक विरति बिस्तारक
भूप मौलि मणि मंडन धरणी। देहु भक्ति संसृति सरि तरणी
मुनि मन मानस हंस निरंतर। चरण कमल वंदित अज शंकर
रघु कुल केतु सेतु स्रुति रक्षक। काल कर्म स्वभाव गुण भक्षक
तारण तरण हरण सब दूषण। तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषण

दो॰ बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित शिर नाइ ॥
ब्रह्म भवन सनकादि गे अति अभीष्ट वर पाइ ॥
सनकादिक विधिलोक सिधाये। भ्रातन राम चरण शिर नाये ॥
पूछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं। चितवहिं सब मारुत सुत पाहीं
सुना चहहिं प्रभु मुख की बानी। जो सुनि होय सकल भ्रम हानी
अन्तरयामी प्रभु सब जाना। पूछत कहहु कहा हनुमाना ॥
जोरि पाणि तब कह हनुमन्ता। सुनिये दीन बंधु भगवंता ॥
नाथ भरत कछु पूछेन चहहीं। प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं
तुम जानहु कपि मोर सुभाऊ। भरतहिं मोहि न कछु दुराऊ
सुनि प्रभु वचन भरत गहे चरणा। सुनिये नाथ प्रणतारति हरणा
दो॰ नाथ न मोहिं संदेह कछु सपनेहु शोक न मोह
केवल कृपा तुम्हारि प्रभु चिदानंद संदोह ॥
करौं कृपा निधि एक ढिठाई। मैं सेवक तुम जन सुखदाई
संतन की महिमा रघुराई। बहु विधि वेद पुराणन्ह गाई ॥
श्री मुख पुनि तुम कीन्ह बड़ाई। तिन्ह पर प्रभुहिं प्रीति अधिकाई
सुना चहौं प्रभु तिन्ह कर लक्षण। कृपासिंधु गुण ज्ञान विचक्षण
सन्त असन्त भेद बिलगाई। प्रणत पाल मोहिं कहिय बुझाई
सन्तन के लक्षण सुनु भ्राता। अगणित श्रुति पुराण विख्याता
सन्त असन्तन की अस करणी। जिमि कुठार चंदन आचरणी
काटै परसु मलय सुनि भाई। निज गुण देइ सुगंध बसाई ॥
दो॰ ताते सुर शीसन चढ़त जग वल्लभ श्री खंड ॥
अनल दाहि पीटत घनहि परसु वदन यह दंड
विषय अलंपट शील गुणाकर। पर दुख दुख सुख सुख देखे पर
समय भूति रिपु बिमद विरागी। लोभा मर्ष हर्ष भय त्यागी ॥
कोमल चित दीनन पर दाया। मन बच क्रम मम भक्ति अमाया।

सबहि मान मद आपु अमानी। भरत प्राण सम मम ते प्रानी
बिगत काम मम नाम परायन। शान्त बिरक्त बिदित सुदितायन
शीतलता सरलता मयंत्री। द्विज पद प्रेम धर्म जनु यंत्री॥
यह सब लक्षण बसहिं जासु उर। जानेहु तात सन्त सन्तत फुर
शम दम नियम नीति नहिं डोलहिं। परुष बचन कबहूं नहिं बोलहिं
दो॰ निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज॥
ते सज्जन मम प्राण प्रिय गुण मंदिर सुख पुञ्ज
सुनहु असन्तन केर सुभाऊ। भूलेहु संगति करिय न काऊ
तिन कर संग सदा दुखदाई। जिमि कपिलहिं घाले हर हाई
खलन हृदय अति ताप बिशेषी। जरहिं सदा पर सम्पति देखी॥
जहं कहुं निंदा सुनहिं पराई। हर्षहिं मनहु परी निधि पाई
काम क्रोध मद लोभ परायन। निर्दय कपटी कुटिल मलायन
बैर अकारण सब काहू सों। जो करु हित अनहित ताहू सों
झूठे लेना झूठे देना॥॥॥ झूठ भोजन झूठ चबेना॥॥
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा। खाहिं महा अहि हृदय कठोरा
दो॰ परद्रोही परदार रत। पर धन पर अपबाद
ते नर पामर पाप मय। देह धरे मनुयाद।
लोभै ओढ़न लोभै डासन। शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन
काहू की जो सुनहिं बड़ाई। श्वास लेहिं जनु जूड़ी आई॥
जब काहू की देखहिं बिपती। सुखी होहिं मानहु जग नृपती
स्वारथ रत परि वार बिरोधी। लंपट काम लोभ अति क्रोधी
मात पिता गुरु बिप्र न मानहिं। आपु गये अरु घालहिं आनहिं
करहिं मोह बस द्रोह परावा। सत संगति हरि भक्ति न भावा
अवगुण सिंधु मंद मति कामी। वेद बिदूषक पर धन स्वामी
बिप्रद्रोह परद्रोह बिशेषी॥ दंभ कपट जिय धरे सुवेषी॥

दो० ऐसे अधम मनुज खल कृतयुग त्रेता नाहिं ॥
द्वापर कछुक बृन्द बहु होइ हैं कलियुग माहिं
परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई
निर्णय सकल पुराण वेद कर। कहेउं तात जानहिं कोविद नर
नर शरीर धरि जो पर पीरा। करहिं ते सहहिं महा भव भीरा
करहिं मोह वस नर अघ नाना। स्वारथ रत परलोक नशाना
काल रूप मैं तिन कहं ताता। शुभ अरु अशुभ कर्म फलदाता
अस विचारि जो परम सयाने। भजहिं मोहिं संसृत दुख जाने
त्यागहिं कर्म शुभाशुभ दायक। भजें मोहिं सुर नर मुनि नायक
संत असंतन के गुण भाषे। ते न परहिं भव जिन लखि राखे
दो० सुनहु तात माया कृत गुण अरु दोष अनेक
गुण यह उभय न देखिये देखिय सो अविवेक
श्री मुख वचन सुनत सब भाई। हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई ॥
करहिं विनय अति बारहि बारा। हनूमान हिय हर्ष अपारा ॥
पुनि रघुपति निज मंदिर गये। इहि विधि चरित करत नित नये
बार बार नारद मुनि आवहिं। चरित पुनीत राम कर गावहिं
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं। ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं
सुनि विरंचि अतिशय सुख माना। पुनि पुनि तात करहु गुण गाना।
सनकादिक नारदहिं सराहहिं। यद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिं
सुनि गुण गान समाधि बिसारी। सादर सुनहिं परम अधिकारी
दो० जीवन मुक्त ब्रह्म पर। चरित सुनहिं तजि ध्यान
जे हरि कथा न करहिं रति तिनके हृदय पखान।
एक बार रघुनाथ बुलाये।। गुरु द्विज पुरवासी सब आये
बैठे गुरु द्विज बर मुनि सज्जन। बोले वचन भक्त भय भंजन ॥
सुनहु सकल पुरजन मम बानी। कहौं न कछु ममता उर आनी ॥

नहिं अनीति नहिं कछु प्रभु ताई। सुनो करहु जो तुमहिं सुहाई
सोइ सेवक प्रीतम मम सोई। मम अनुशासन मानै जोई॥
जो अनीति कछु भाषौं भाई। तो मोहि बरजेहु भय बिसराई
बड़े भाग्य मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सद ग्रन्थन गावा॥
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा। पाइ न जेहु परलोक संवारा॥

दो० सो परत्र दुख पावई शिर धुनि धुनि पछिताइ
कालहिं कर्महि ईश्वरहिं मिथ्या दोष लगाइ

इहि तनु कर फल विषयन भाई। स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुख दाई
नर तनु पाइ बिषय मन देही। पलटि सुधा तें शठ विष लेहीं
ताहि कबहुं भल कहै न कोई। गुञ्जा गहै परस मणि खोई
आकर चारि लाख चौरासी। योनि भ्रमत यह जीव अविनाशी
फिरत सदा माया के प्रेरे॥ काल कर्म स्वभाव गुण घेरे॥
कबहुंक करि करुणा नर देही। देत ईश विनु हेतु सनेही॥
नर तन भव वारिधि कह बेरे। सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरे
कर्णधार सद गुरु दृढ नावा। दुर्लभ साज सुलभ करि पावा

दो० जो न तरै भव सागरहिं नर समाज अस पाइ
सो कृत निंदक मंद मति आतम हनगति जाइ

जो परलोक इहां सुख चहहू। सुनि मम बचन हृदय दृढ गहहू
सुलभ सुखद यह मारग भाई। भक्ति मोरि पुराण श्रुति गाई
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका। साधन कठिन न मन कहं टेका
करत कष्ट बहु पावत कोई। भक्ति हीन प्रिय मोहिं न सोई
भक्ति स्वतंत्र सकल सुख खानी। विनु सत संग न पावहिं प्रानी
पुण्य पुञ्ज विनु मिलहिं न संता। सत संगति संसृति कर अंता
पुण्य एक जग में नहिं दूजा। मन क्रम बचन बिप्र पद पूजा
सानुकूल तिहि पर सब देवा। जो तजि कपट करै द्विज सेवा

दो॰ औरौं एक गुप्त मत। सबहि कहौं कर जोरि
शंकर भजन बिना नर भक्ति न पावै मोरि ॥
कहहु भक्ति पथ कवन प्रयासा। योग न मख जप तप उपवासा
सरल सुभाव न मन कुटिलाई। यथा लाभ संतोष सदाई ॥
मोर दास कहाइ नर आसा। करै तौ कहहु कहा बिस्वासा
बहुत कही का कथा बढ़ाई। इहि आचरण वश्य मैं भाई।
बैर न विग्रह आश न त्रासा। सुखमय ताहि सदा सब आशा
अनारंभ अनिकेत अमानी। अनघ अरोष दक्ष विज्ञानी ॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा। तृण सम विषय स्वर्ग अपवर्गा
भक्ति पक्षता नहिं शठताई। दुष्ट कर्म सब दूरि बिहाई ॥
दो॰ मम गुण ग्राम नाम रत गत ममता मद मोह
ता कर सुख सोइ जानै परमानंद संदोह ॥
सुनत सुधा सम बचन राम के। सबन्हि गहे पद कृपा निधान के
जननि जनक गुरु बंधु हमारे। कृपा निधान प्राण ते प्यारे ॥
तन धन धाम राम हितकारी। सब बिधि तुम प्रणतारति हारी
अस सिख तुम बिनु देइ न कोऊ। मात पिता स्वारथ रत ओऊ
हेतु रहित सब बिधि उपकारी। तुम तुम्हार सेवक असुरारी ॥
स्वारथ मीत सकल जग माहीं। सपनेहु कोउ परमारथ नाहीं
सब के बचन प्रेम रस साने। सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने ॥
निज निज गृह गे आयसु पाई। बरणत प्रभु की गिरा सुहाई ॥
दो॰ उमा अवध बासी नर नारि कृतारथ रूप ॥
ब्रह्म सच्चिदानंद घन रघुनायक जहं भूप
एक बार वशिष्ठ मुनि आये। जहां राम सुखधाम सुहाये ॥
अति आदर रघुनायक कीन्हा। पद पखारि चरणोदक लीन्हा
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी। कृपासिंधु बिनती इक मोरी

देखि देखि आचरण तुम्हारा। होत मोह मम हृदय अपारा॥
महिमा अमित वेद नहिं जाना। मैं केहि भांति कहौं भगवाना॥
उपरोहिती कर्म अति मंदा। वेद पुराण स्मृति करु निंदा॥
जब न लेउं तबही विधि मोही। कहा लाभ आगे सुन तोही॥
परमात्मा ब्रह्म नर रूपा॥। होइहैं रघुकुल भूषण भूपा

दो॰ तब मैं हृदय विचार किय योग यज्ञ जप दान॥
जेहि नित करिय सो पाइये धर्म न इहि सम आन

जप तप नियम योग ब्रत धर्म्मा। श्रुति संभव नाना विधि कर्म्मा
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन। जहं लगि धर्म कहे श्रुति सज्जन
आगम निगम पुराण अनेका। पढ़े गुने कर फल प्रभु एका
तव पद पंकज प्रीति निरंतर। सब साधन कर फल यह सुंदर
छूटै मलकि मलहि के धोये। घृत कि पाव कोउ वारि विलोये
प्रेम भक्ति जल विनु रघुराई। अभ्यन्तर मल कबहु न जाई
सोइ सर्वज्ञ तज्ञ सोइ पंडित। सोइ गुणज्ञ विज्ञान अखंडित
दक्ष सकल लक्षण युत सोई। जाके पद सरोज रति होई॥

दो॰ नाथ एक वर मांगों। मोहिं कृपा करि देहु॥
जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहु घटै जनि नेहु

अस कहि मुनि वशिष्ठ गृह आये। कृपासिंधु के मन अति भाये
हनूमान भरतादिक भ्राता। संग लिये सेवक सुख दाता॥
पुनि कृपाल पुर बाहर गयऊ। गजरथ तुरंग मंगावत भयऊ
देखि कृपा करि सकल सराहे। दिये उचित जिन्ह जिन्ह जो चाहे
हरण सकल श्रम प्रभु श्रम पाई। गये जहां शीतल अमराई॥
भरत दीन्ह निज बसन डसाई। बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई॥
मारुत सुत मारुत तब करई। पुलकि गात लोचन जल भरई
हनूमान सम को बड़ भागी। नहिं कोउ राम चरण अनुरागी

गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई । बार बार प्रभु निज सुख गाई ॥
दो॰ तेहि अवसर मुनि नारद आये करतल बीन ॥
गावन लागे राम गुण कीरति सदा नवीन ॥ ॥
राम विलोके पंकज लोचन ॥ । कृपा विलोकनि शोच विमोचन
नील ताम रस श्याम काम अरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ॥
यातु धान बरूथ बल गंजन ॥ । मुनि सज्जन रंजन अघ भंजन ॥
भूसुर शशि नव वृंद बलाहक । अशरण शरण दीन जन गाहक
भुज बल विपुल भार महि खंडित । खरदूषण विराध बध पंडित
रावणारि सुखरूप भूप वर । जयदशरथ कुल कुमुद सुधाकर
सुयश पुराण विदित निगमागम । गावत सुर मुनि संत समागम
कारुणीक बाली मद खंडन । सब विधि कुशल कोशला मंडन
कलि मल मथन नाम ममताहन । तुलसिदास प्रभु पाहि प्रणतजन
दो॰ प्रेम सहित मुनि नारद वरणि राम गुण ग्राम
शोभा सिंधु हृदय धरि गये जहां विधि धाम ॥
गिरिजा सुनहु विशद यह कथा । मैं सब कही मोरि मति यथा
राम चरित शत कोटि अपारा । श्रुति शारदा न वरणै पारा ॥
राम अनन्त अनन्त गुणानी । जन्म कर्म अनन्त नामानी ॥
जल शीकर महि रज गणि जाहीं । रघुपति चरित न वरणि सिराहीं
विमल कथा यह हरि पद दायिनि । भक्ति होइ सुनि अति अनपाइनि
उमा कहेउं सो कथा सुहाई । जो भुशुंडि खगपति हि सुनाई
कछुक राम गुण कहेंउ बखानी । अब का कहौं सो कहहु भवानी
सुनि शुभ कथा उमा हर्षानी । बोली अति विनीत मृदु बानी
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी ॥ । सुनेउं राम गुण भव भय हारी
दो॰ तुम्हरी कृपा कृपाय तन अब कृत कृत्य न मोह
जानेउं राम प्रभाव प्रभु चिदानंद संदोह ॥ ॥

दो॰ नाथ तवानन शशि स्रवत कथा सुधा रघुबीर ॥
श्रवण पुटनि मन पान किय नहिं अघात मति धीर
रामचरित जे सुनत अघाहीं । रस विशेष जाना तिन्ह नाहीं ॥
जीवन मुक्त महा मुनि जेऊ । हरि गुण सुनत अघात न तेऊ
भव सागर चह पार जो पावा । राम कथा ता कहं दृढ़ नावा ॥
विषयिन कहं पुनि हरि गुण ग्रामा । श्रवण सुखद अरु मन विश्रामा
श्रवणवंत अस को जग माहीं । जाहि न रघुपति कथा सुहाहीं
ते जड़ जीव निजातम घाती । जिनहिं न रघुपति कथा सुहाती
हरि चरित्र मानस तुम गावा । सुनि मैं नाथ परम सुख पावा
तुम जो कही यह कथा सुहाई । काकभुशुंडि गरुड़ प्रति गाई
दो॰ विरत ज्ञान विज्ञान दृढ़ राम चरण अति नेह ॥
वायस तन रघुपति भगत मोहिं परम संदेह ॥
नर सहस्त्र महं सुनहु पुरारी । कोउ इक होइ धर्म ब्रत धारी
धर्म शील कोटिन्ह महं कोई । विषय विमुख विराग रत होई
कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई । सम्यक ज्ञान सुकृत कोउ लहई
ज्ञानवंत कोटिन्ह महं कोई । जीवन मुक्त सुकृत फल सोई ॥
तिन सहस्त्र महं सब सुख खानी । दुर्लभ ब्रह्म निरत विज्ञानी ॥
धर्म शील विरक्त अरु ज्ञानी । जीवन मुक्त ब्रह्म पर प्रानी ॥
सब तें सो दुर्लभ सुर राया । । राम भक्ति रत गत मद माया
सो हरि भक्ति काक किमि पाई । विश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई
दो॰ राम परायण ज्ञान रत गुणागार मति धीर
नाथ कहहु केहि कारण पायउ काक शरीर ॥
यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा । कहहु कृपाल काग किमि पावा
तुम केहि भांति सुना मद मारी । कहहु मोहिं यह कौतुक भारी
गरुड़ महा ज्ञानी गुण राशी । हरि सेवक अति निकट निवासी

सो केहि हेतु काग सन जाई। सुनी कथा मुनि निकर विहाई॥
कहहु कवनि विधि भा संवादा। दोउ हरि भक्ति काग उरगादा॥
गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई। बोले शिव सादर सुख पाई॥
धन्य सती पावनि मति तोरी। रघुपति चरण प्रीति नहिं थोरी॥
सुनहु परम पुनीत इतिहासा। जो सुनि होइ सकल भ्रम नाशा॥
उपजहि राम चरण विश्वासा। भव निधि तरु नर बिनहिं प्रयासा॥

दो॰ ऐसिय प्रश्न विहंग पति कीन्ह काग सन जाइ।
सो सब सादर कहत हौं। सुनहु उमा चित लाइ॥

मैं जिमि कथा सुनी भय मोचनि। सो प्रसंग सुनि सुमुखि सुलोचनि॥
प्रथम दक्ष गृह तव अवतारा। सती नाम तब रहा तुम्हारा॥
दक्ष यज्ञ मम भा अपमाना। तुम अति क्रोध तजा तहं प्राना॥
मम अनुचरन्ह कीन्ह मख भंगा। जानहु तुम सो सकल प्रसंगा॥
तब अति शोच भयउ मन मोरे। दुखित भयउं वियोग प्रिय तोरे॥
सुंदर गिरि वन सरित तड़ागा। कौतुक देखत फिरौं विभागा॥
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी। नील शैल इक सुंदर भूरी॥
तासु कनकमय शिखर सुहाये। चारि चारु मोरे मन भाये॥
तेहि पर इक इक विटप विशाला। वट पीपर पाकरी रसाला॥
शैलो परि सुन्दर सर सोहा। मणि सो पान देखि मन मोहा॥

दो॰ शीतल अमल मधुर जल जलज विपुल बहु रंग।
कूजत कल रव हंस गण गुंजत नाना भृङ्ग॥

तेहि गिरि रुचिर वसै खग सोई। तासु नाश कल्पांत न होई॥
माया कृत गुण दोष अनेका। मोह मनोज आदि अविवेका॥
रहेउ व्याप समस्त जग माहीं। तेहि गिरि निकट कबहु नहिं जाहीं॥
तहं बसि हरिहि भजे जिमि कागा। सो सुन उमा सहित अनुरागा॥
पीपर तरु तर ध्यान सो धरई। जाप योग पाकर तर करई॥

आंब छाह करि मानस पूजा। तजि हरि भजन काज नहिं दूजा
बटतर कहइ हरि कथा प्रसंगा। आवहिं सुनन अनेक विहंगा
राम चरित विचित्र विधि नाना। प्रेम सहित करु सादर गाना॥
सुनहिं सकल मति विमल मराला। बसहिं निरंतर जो जेहि काला।
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा। उर उपजा आनंद विशेषा ॥

दो॰ तब कछु काल मराल तनु धरि तहं कीन्ह निवास
सादर सुनि रघुपति चरित पुनि आयउं कैलास

गिरिजा कहेउं सो सब इतिहासा। मैं जेहि समय गयउं खगपासा
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू। गयउ काग पहं खग कुल केतू
जब रघुनाथ कीन्ह रण क्रीड़ा। समुझत चरित होत मोहि ब्रीड़ा
इन्द्र जीत कर आपु बंधावा। तब नारद मुनि गरुड़ पठावा
बंधन काटि गयउ उरगादा। उपजा हृदय प्रचंड विषादा॥
प्रभु बंधन समुझत बहु भांती। करत विचार उरग आराती॥
व्यापक ब्रह्म विरज वागीशा। माया मोह पार परमीशा॥
सो अवतार सुनेउ जग माहीं। देखा सो प्रभाव कछु नाहीं

दो॰ भव बंधन तें छूटहिं॥ नर जपि जा कर नाम
खर्व निशाचर बांधेउ नाग फांस सोइ राम

नाना भांति मनहिं समुझावा। प्रगट न ज्ञान हृदय भ्रम छावा
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई। भयउ मोह बस तुम्हरी नाई
व्याकुल गयउ देव ऋषि पाहीं। कहेसि जो संशय निज मन माहीं
सुनि नारद हि लागि अति दाया। सुनु खग प्रबल राम की माया
जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई। बरि आई विमोह बस करई॥
जेइ बहु बार नचावा मोहीं। सो व्यापेउ विहंग पति तोहीं
महा मोह उपजा मन तोरे। मिटहि न वेगि कहे खग मोरे
चतुरानन पहं जाहु खगेशा। सोइ करेहु जो देहिं उपदेशा

दो॰ अस कहि चले देव ऋषि करत राम गुण गान ॥
हरि माया बल वरणत । पुनि पुनि परम सुजान

तब खगपति विरंचि पहं गयऊ । निज संदेह सुनावत भयऊ ॥
सुनि विरंचि रामहिं शिर नावा । समुझि प्रताप प्रेम उर छावा ॥
मन महं करहिं विचार विधाता । माया बश कवि कोविद ज्ञाता ॥
हरि माया कर अमित प्रभावा । विपुल बार जो मोहिं नचावा ॥
अग जग मय सब मम उपराजा । नहिं आश्चर्य मोह खग राजा
पुनि बोले विधि गिरा सुहाई । जानु महेश राम प्रभुताई ॥
वैनतेय शंकर पहं जाहू । तात अनत पूछहु जनि काहू
तहां होइ तव संशय हानी । चलु विहंग पति सुनि विधिबानी

दो॰ परमातुर विहंग पति । तब आयउ मम पास ।
जात रहेउं कुबेर गृह । उमा रहेउ कैलाश ॥

तेहु मम पद सादर शिर नावा । पुनि आपुन संदेह सुनावा ॥
सुनि ता करि पुनीत मृदु बानी । प्रेम सहित मैं कहेउ भवानी
मिलेउ गरुड़ मारग महं मोहीं । कवन भांति समझावों तोहीं ।
जब कछु काल करिय सत संगा । तब यह होइ मोह भ्रम भंगा
सुनिय तहां हरि कथा सुहाई । नाना भांति मुनिन्ह जो गाई
जेहि महं आदि मध्य अवसाना । प्रभु प्रति पाद्य राम भगवाना
निति हरि कथा होइ जहं भाई । पठवों तोहि सुनहु तहं जाई
जाइहि सुनत सकल संदेहा । होइहि राम चरण दृढ़ नेहा ॥

दो॰ विनु सत संग न हरि कथा तेहि विनु मोह न भाग
मोह गये विनु राम पद । होइ न दृढ़ अनुराग

मिलहिं न रघुपति विनु अनुरागा । किये योग जप ज्ञान विरागा
उत्तर दिशि सुन्दर गिरि नीला । तहं रह काग भुशुण्ड सुशीला
राम भक्ति पथ परम प्रवीना । ज्ञानी गुण गृह बहु काल लीना ॥

राम कथा सोइ कहै निरंतर। सादर सुनहिं विविधि बिहंगवर॥
जाइ सुनहु तहं हरि गुण भूरी। होइहि मोह जनित दुख दूरी॥
मैं जब सब तेहि कहा बुझाई। चलेउ हर्षि मम पद शिर नाई॥
ताते उमा न मैं समुझावा। रघुपति कृपा मर्म सब पावा॥
होइहि कीन्ह कबहुं अभिमाना। सो खोवै चह कृपा निधाना॥
कछु तेहि ते पुनि बीच न राखा। खग जानै खगही की भाषा॥
प्रभु माया बलवंत भवानी। जाहि न मोह कवन अस ज्ञानी॥

दो॰ ज्ञानी भक्ति शिरोमणि त्रिभुवन पति कर यान।
ताहि मोह माया प्रबल पामर करहिं गुमान॥
शिव विरंचि कहं मोहई को है बपुरा आन॥
अस जिय जानि भजहिं मुनि माया पति भगवान॥

गयउ गरुड़ जहं बसै भुशुण्डी। मति अकुण्ठ हरि भक्ति अखण्डी॥
देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ। माया मोह शोक भ्रम गयऊ॥
करि तड़ाग मज्जन जल पाना। वटतर गयउ हृदय हर्षाना॥
वृन्द वृन्द विहंग तहं आये। सुनैं राम के चरित सुहाये॥
कथा अरंभ करै सो चाहा। ताही समय गयउ खग नाहा॥
आवत देखि सकल खग राजा। हर्षेउ वायस सहित समाजा॥
अति आदर खगपति कर कीन्हा। स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा॥
करि पूजा समेत अनुरागा। मधुर बचन बोले तब कागा॥

दो॰ नाथ कृतारथ भयउं मैं। तव दरशन खग राज।
आयसु होइ सो करौं अब प्रभु आयहु केहि काज॥
सदा कृतारथ रूप तुम कह मृदु बचन खगेश।
जाकी अस्तुति सादर। निज मुख कीन्ह महेश॥

सुनहु तात जेहि कारण आयउं। सो सब भयउ दरश तव पायउं॥
देखि परम पावन तव आश्रम। गयउ मोह संशय नाना भ्रम॥

गरुड़ जी को कागभुसुण्ड के आश्रम पर जाय कागभुसुण्डजी से राम चरित्र श्रवण करि निज भ्रम निवृत्त करना ॥



अब श्रीराम कथा अति पावनि। सदा सुखद दुख पुंज नशावनि
सादर तात सुनावहु मोही। बार बार विनवौं प्रभु तोही॥
सुनत गरुड़ की गिरा विनीता। सरल सप्रेम सुखद सुपुनीता
भयउ तासु मन परम उछाहा। कहै लाग रघुपति गुण गाहा
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी। रामचरित सर कहेसि बखानी
पुनि नारद कर मोह अपारा। कहेसि बहुरि रावण अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई। पुनि शिशु चरित कहेसि मन लाई

दो. बाल चरित कहि विविधि विधि मन महं परम उछाह
ऋषि आगमन कहेसि पुनि श्री रघुवीर विवाह

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा। पुनि नृप मरण राज रस भंगा
पुर वासिन कर विरह विषादा। कहेसि राम लक्ष्मण संवादा
विपिन गवन केवट अनुरागा। सुरसरि उतरि निवास प्रयागा
बालमीक प्रभु मिलन बखाना। चित्रकूट जिमि बस भगवाना
सचिवागमन नगर नृप मरणा। भरतागमन प्रेम अति वरणा
करि नृप क्रिया संग पुर वासी। भरत गये जहं प्रभु सुखरासी
पुनि रघुपति बहु विधि समुझाये। लै पादुका अवध फिरि आये
भरत रहनि सुरपति सुत करणी। प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि वरणी

दो. कहि विराध बध जाहि विधि देह तजी शरभंग
वरणि सुतीक्षण प्रेम पुनि प्रभु अगस्त्य सतसंग

कहि दंडक वन पावन ताई। गृध्र मइत्री पुनि तेहि गाई
पुनि प्रभु पंचवटी कृत वासा। भंजेउ सकल मुनिन्ह कर त्रासा
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा। सूर्पनखा जिमि कीन्ह कुरूपा
खर दूषण वध बहुरि बखाना। जिमि सब मर्म दशानन जाना
दशकंधर मारीच बत कही। जेहि विधि भई सकल तेहि कही
पुनि माया सीता कर हरणा। श्री रघुवीर विरह कछु वरणा

पुनि प्रभु गृध्र क्रिया जिमि कीन्ही । बधिक बंध शबरी हिं गति दीन्ही
बहुरि बिरह बरणत रघुबीरा । जेहि विधि गयउ सरोवर तीरा
दो. प्रभु नारद संवाद कहि मारुति मिलन प्रसंग
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्राण कर भंग ॥
कपिहि तिलक करि प्रभु कृत शैल प्रवर्षण वास
वर्णत वर्षा शरद अरु राम रोष कपि त्रास ॥
जेहि विधि कपिपति कीश पठाये । सीता खोज सकल दिशि धाये
विवर प्रवेश कीन्ह जेहि भांती । कपिन्ह बहोरि मिला संपाती
सुनि सब कथा समीर कुमारा । लांघत भयउ पयोधि अपारा ॥
लंका कपि प्रवेश जिमि कीन्हा । पुनि सीतहिं धीरज जिमि दीन्हा
वन उजारि रावणहिं प्रबोधी । पुर दहि लांघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहं रघुराई । वैदेही की कुशल सुनाई ॥
सेन समेत यथा रघुवीरा । उतरे जाइ वारि निधि तीरा ॥
मिला विभीषण जेहि विधि आई । सागर निग्रह कथा सुनाई ॥
दो. सेतु बांधि कपि सेन जिमि उतरे सागर पार ॥
गयो वसीठी वीर वर जेहि विधि बालि कुमार
निशिचर कीश लराई वरणेसि विविधि प्रकार
कुम्भकर्ण घन नाद कर बल पौरुष संहार ॥ ॥
निशिचर निकर मरण विधि नाना । रघुपति रावण समर बखाना
रावण वध मंदोदरि शोका । राज विभीषण देव अशोका ॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी । सुरन्ह कीन्ह अस्तुति कर जोरी
पुनि पुष्पक चढ़ि सीय समेता । अवध चले प्रभु कृपा निकेता ॥
जेहि विधि राम नगर निज आये । वायस विशद चरित सब गाये
कहेसि बहोरि राम अभिषेका । पुर वर्णन नृप नीति अनेका
कथा समस्त भुशुंड बखानी । जो मैं तुम सन कहा भवानी ।

सुनि शुभ राम कथा खगनाहा। विगत मोह मन परम उछाहा

सो॰ गयउ मोर संदेह । सुनेउ सकल रघुपति चरित
भयउ राम पद नेह । तव प्रसाद वायस तिलक
मोहिं भयउ अति मोह। प्रभु बंधन रण महं निरखि
चिदानंद संदोह राम विकल कारण कवन ॥

देखि चरित अति नर अनुहारी। भयउ हृदय मम संशय भारी
सो भ्रम अब मैं हित करि जाना। कीन्ह अनुग्रह कृपा निधाना।
जो अति आतप व्याकुल होई । तरु छाया सुख जानै सोई ॥
जो नहिं होत मोह अति मोही। मिलितेउं तात कवनि विधि तोही
सुनितेउं किमि हरिकथा सुहाई । अति विचित्र सब विधि तुम गाई
निगमागम पुराण मत एहा । कहहिं सिद्ध मुनि नहिं संदेहा
संत विशुद्ध मिलहिं पुनि तेही। चितवहिं राम कृपा करि जेही
राम कृपा तव दरशन भयऊ। तव प्रसाद मम संशय गयऊ

दो॰ सुनि विहंग पति वाणी सहित विनय अनुराग
पुलक गात लोचन सजल मन हर्षे अति काग
श्रोता सुमति सुशील अति कथा रसिक हरिदास
पाइ उमा यह गोप्य मत सज्जन करहिं प्रकाश

बोलेउ काग भुशुंड बहोरी । नभग नाथ पर प्रीति न थोरी
सब विधि नाथ पूज्य तुम मोरे। कृपा पात्र रघुनायक केरे ॥
तुमहिं न संशय मोह न माया। मोपर नाथ कीन्ह तुम दाया
पठै मोह मिसु खगपति तोहीं। रघुपति दीन्ह बडाई मोहीं ॥
तुम निज मोह कहा खगसाई। सो नहिं कछु आचर्य गुसाईं
नारद शिव विरंचि सन कादी । जो मुनि नायक आतम वादी
मोह न अंध कीन्ह केहि केही । को जग काम नचाव न जेही
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा । केहि के हृदय क्रोध नहिं दाहा

दो. ज्ञानी तापस शूर कवि कोविद गुण आगार ॥
केहिं के लोभ विडंबना कीन्हि न इहि संसार ॥
श्री मद वक्र न कीन्ह केहि प्रभुता वधिर न काहि
मृग नयनी के नयन शर को अस लागु न जाहि

गुण कृत सन्निपात नहिं केही । कोउ मान मद व्यापेउ जेही ॥
यौवन ज्वर केहि नहिं बल गावा । ममता केहि कर यश न नसावा
मत्सर काहि कलंक न लावा । काहि न शोक समीर डोलावा ॥
चिंता सांपिनि काहि न खाया । को जग जाहि न व्यापी माया
कीट मनोरथ दारु शरीरा । जेहि न लागु घुन को अस धीरा
सुत वित नारि ईषणा तीनी । केहि की मति इन्ह कृत न मलीनी
यह सब माया कृत परिवारा । प्रवल अमित को वरणै पारा
शिव चतुरानन देखि डेराहीं । अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

दो. व्यापि रह्यो संसार महं माया कटक प्रचंड ॥
सेनापति कामादि भट दंभ कपट पाखंड ॥
सो दासी रघुवीर की । समुझे मिथ्या सोपि ॥
छूटे न राम कृपा विनु । नाथ कहौं पण रोपि

जो माया सब जगहि नचावा । जासु चरित लखि काहु न पावा
सो प्रभु भ्रू विलास खगराजा । नाच नटी इव सहित समाजा
व्यापक ब्रह्म अखंड अनंता । अखिल अमोघ एक भगवंता
सोइ सच्चिदानंद घन श्यामा । अज विज्ञान रूप गुण धामा ॥
अगुण अदंभ गिरा गोतीता । समदर्शी अनवद्य अजीता ॥
निर्गुण निराकार निर्मोहा । नित्य निरंजन सुख संदोहा ॥
प्रकृति पार प्रभु सब उर वासी । ब्रह्म निरीह विरज अविनाशी
इहां मोह कर कारण नाहीं । रवि सन्मुख तम कबहुं कि जाहीं

दो. भक्ति हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप

किये चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप ॥
दो॰ यथा अनेक वेष धरि । नृत्य करै नट कोइ ॥
जोइ सोइ भाव दिखावै । आपु न होइ न सोय
अस रघुपति लीला उरगारी । दनुज विमोहन जन सुखकारी
जे मति मलिन विषय वस कामी । प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी
नयन दोष जा कहं जब होई । पीत बरण शशि कहं कहु सोई
जब जेहि दिग्भ्रम होइ खगेशा । सो कह पश्चिम उगेउ दिनेशा ॥
नौका रूढ़ चलत जग देखा । अचल मोह वस आपुहि लेखा
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी । कहहिं परस्पर मिथ्या वादी ॥
हरि विषइक अस मोह विहंगा । सपनेहु नहिं अज्ञान प्रसंगा ॥
माया पति मति मंद अभागी । हृदय जवनिका बहु विधि लागी
ते शठ हठ वस संशय करहीं । निज अज्ञान राम पर धरहीं ॥
दो॰ काम क्रोध मद लोभ रत गृहा शक्त दुख रूप ॥
ते किमि जानहिं रघुपति हि मूढ़ परे तम कूप
निर्गुण रूप सुलभ अति सगुण न जाने कोइ
सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ
सुनि खगपति रघुपति प्रभुताई । कहौं यथामति कथा सुहाई ॥
जेहि विधि मोह भयउ प्रभु माहीं । सो सब चरित सुनावौं तोहीं ॥
राम कृपा भाजन तुम ताता । हरि गुण प्रीति मोहि सुखदाता
ताते नहिं कछु तुमहिं दुरावौं । परम रहस्य मनोहर गावौं ॥
सुनहु राम कर सहज सुभाऊ । जन अभिमान न राखैं काऊ
संसृति सूल मूल प्रद नाना । सकल शोक दायक अभिमाना
ताते करहिं कृपा निधि दूरी । सेवक पर ममता अति भूरी ॥
जिमि शिशु तनु व्रण होइ गुसांई । मातु चिराव कठिन की नांई
दो॰ यदपि प्रथम दुख पावै रोवै बाल अधीर ॥

ब्याधि नाश हित जननी गनै न सो शिशु पीर

दो॰ तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि

तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं कस न भजहु भ्रम त्यागि

राम कृपा आपनि जड़ताई । कहौं खगेश सुनहु मन लाई ॥
जब जब राम मनुज तन धरहीं । भक्त हेतु लीला बहु करहीं ॥
तब तब अवध पुरी में जाऊं । शिशु लीला बिलोकि हर्षाऊं ॥
जन्म महोत्सव देखौं जाई । वर्ष पांच तहं रहौं लुभाई ॥
इष्ट देव मम बालक रामा ॥ शोभा वपुष कोटि शत कामा
निज प्रभु वदन निहारि निहारी । लोचन सुफल करौं उरगारी
लघु वायस वपु धरि हरि संगा । देखौं बाल चरित बहु रंगा

दो॰ लरिकाई जहं जहं फिरहिं तहं तहं संग उड़ाउं

जूठन परै अजिर महं । सो उठाय पुनि खाउं

एक बार अतिशय सब चरित कीन्ह रघुबीर

॥ सुमिरत प्रभु लीला सोई पुलकित भयउ शरीर

कहै भुसुंड सुनहु खगनायक । राम चरित सेवक सुखदायक
नृप मंदिर सुंदर सब भांती । खचित कनक मणि नाना जाती
बरणि न जाय रुचिर अंगनाई । जहं खेलहिं नित चारों भाई
बाल विनोद करत रघुराई । विचरत अजिर जननि सुखदाई
मरकत मृदुल कलेवर श्यामा । अंग अंग प्रति छबि बहु कामा
नव राजीव अरुण मृदु चरणा । पद पंकज नख शशि दुति हरणा
ललित अंक कुलिशादिक चारी । नूपुर चारु मधुर रव कारी ॥
चारु पुरट मणि रचित बनाई । कटि किंकिणि कल मुखर सुहाई

दो॰ रेखा त्रय सुंदर उदर । नाभि रुचिर गभीर ॥

उर आयत भ्राजत विविध बाल विभूषण चीर

अरुण पाणि नख करज मनोहर । बाहु विशाल विभूषण सोहर

कंध बाल केहरि दर ग्रीवां ॥ । चारु चिबुक आनन छवि सींवां
कल बल बचन अधर अरुणारे । दुइ दुइ दशन विशद वर वारे
ललित कपोल मनोहर नासा । सकल सुखद शशि कर सम हासा
नील कंज लोचन भय मोचन । भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ॥
विकट भृकुटि सम श्रवण सुहाये । कुंचित कच मेचक छवि छाये
पीत झीन झँगुलि तन सोही । । किलकनि चितवनि भावत मोही
रूप राशि नृप अजिर विहारी । नाचहिं निज प्रति विंब निहारी ॥
मो सन करहिं विविधि विधि क्रीडा । वरणत चरित होत मन ब्रीडा
किलकत मोहिं धरन जब धावहिं । चलौं भाजि तब पूप देखावहिं

दो॰ आवत निकट हंसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं
जाउं समीप गहन पद । फिर फिरि चिते पराहिं
प्राकृत शिशु इव लीला देखि भयउ मोहि मोह
कवन चरित्र करत प्रभु । चिदानंद संदोह ॥ ॥

इतना मन आनत खग राया । रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥
सो माया न दुखद मोहिं काही । आन जीव इव संसृति नाही
नाथ इहां कछु कारण आना । सुनहु सो सावधान हरि याना
ज्ञान अखंड एक सीता वर । माया वश्य जीव सचराचर ॥
जो सब के रह ज्ञान एक रस । ईश्वर जीवहि भेद कहहु कस
माया वश्य जीव अभिमानी । ईश वश्य माया गुण खानी
परवस जीव स्ववस भगवंता । जीव अनेक एक श्री कंता ॥
दुविधा भेद अपी कृत माया । विनु हरि जाइ न कोटि उपाया

दो॰ रामचन्द्र के भजन विनु जो चह पद निर्वाण ॥
ज्ञानवंत अति सोपि नर पशु विनु पूछ बखान
राका शशि षोडश उगहिं तारा गण समुदाय
सकल गिरिन दव लाइये रवि विनु राति न जाय

ऐसे बिनु हरि भजन खगेशा। मिटै न जीवन केर कलेशा ॥
प्रभु सेवकहिं न व्याप अविद्या। प्रभु प्रेरित तेहि व्यापै विद्या॥
तातें नाश न होइ दास कर। भेद भक्ति बाढ़ै विहंगवर॥ ॥
भ्रमतें चकित राम मोहिं देखा। विहँसे सो सुनु चरित विशेषा
तेहि कौतुक करि मर्म न काहू। जाना अनुज न मातु पिताहू
जानु पाणि धाये मोहिं धरणा। श्यामल गात अरुण मृदु चरणा
तब मैं भागि चलेउं उरगारी। राम गहन कहँ भुजा पसारी
जिमि जिमि दूरि उड़ाउं अकासा। तिमि तिमि भुज देखौं निजपासा

दो॰ ब्रह्मलोक लौं गयउं मैं चितवत पाछु उड़ात॥
युग अंगुल कर बीच रह राम भुजहि मोहि तात
सप्ता वरण भेद करि। जहं लगि रहि गति मोरि
गयउं तहां प्रभु भुज निरखि व्याकुल भयउं बहोरि

मूंदेउं नयन त्रसित जब भयऊं। पुनि चितवत कोशल पुर गयऊं
मोहिं विलोकि राम मुसकाहीं। विहंसत तुरत गयउं मुख माहीं
उदर मांझ सुनु अंडज राया। देखेउं बहु ब्रह्मांड निकाया॥
अति विचित्र तहं लोक अनेका। रचना अधिक एक तें एका
कोटिन चतुरानन गौरीशा। अगणित उडु गण रवि रजनीशा
अगणित लोक पाल यम काला। अगणित भूधर भूमि विशाला
सागर सरिता विपिन अपारा। नाना भांति सृष्टि विस्तारा ॥
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर। चारि प्रकार जीव सचरा चर॥

दो॰ जो नहिं देखा नहिं सुना जो मन महं न समाइ
अस अद्भुत तहं देखेउं बरणि कवनि विधि जाइ
एक एक ब्रह्मांड महं। रहेउं वर्ष शत एक॥
एहि विधि मैं देखत फिरेउं अंड कटाह अनेक

लोक लोक प्रति भिन्न विधाता। भिन्न विष्णु शिव मनु दिशत्राता

नर गंधर्व भूत बैताला ।। ।। किन्नर निशिचर पशु खग व्याला
देव दनुज गण नाना जाती । सकल जीव तहं आनहि भांती
महि सर सागर सरि गिरि नाना । सब प्रपंच तहं आनहि आना
अंड कोश प्रति प्रति निज रूपा । देखेउं जिनिस अनेक अनूपा
अवध पुरी प्रति भुवन निहारी । सरयू भिन्न भिन्न नर नारी ।।
दशरथ कौशल्या दिक माता । विविधि रूप भरतादिक भ्राता
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा । देखेउं बाल विनोद अपारा ।।

दो॰ भिन्न भिन्न सब देखेउं अति विचित्र हरियान ।।
अगणित देखत फिरेउं मैं राम न देखा आन
सोइ शिशु पन सोइ शोभा सोइ कृपाल रघुवीर
भुवन भुवन देखत फिरेउं प्रेरित मोह समीर

भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका । बीते मनहुं कल्प शत एका ।।
फिरत फिरत निज आश्रम आयउं । तहं पुनि रहि कछु काल गवायउं
निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउं । निर्भर प्रेम हर्षि उठि धायउं ।।
देखेउं जन्म महोत्सव जाई । जेहि विधि प्रथम कहा मैं गाई
राम उदर देखेउं जग नाना । देखत बनै न जात बखाना ।।
तहं पुनि देखेउं राम सुजाना । माया पति कृपाल भगवाना
करौं विचार बहोरि बहोरी । मोह कलित व्यापित मति मोरी
उभय घरी महं मैं सब देखा । भयउं भ्रमित मन मोह विशेषा

दो॰ देखि कृपाल विकल मोहिं विहंसे तब रघुवीर
विहंसत ही मुख बाहर आयउं सुनु मति धीर
सोइ लरिकाई मो सन करन लगे पुनि राम
कोटि भांति समुझावौं मन न लहै विश्राम ।।

देखि चरित हरि सो प्रभुताई । समुझत देह दशा बिसराई ।।
धरणि परेउं मुख आवन बाता । त्राहि त्राहि आरत जन त्राता

परमाकुल प्रभु मोहिं बिलोकी। निज माया प्रभुता तब रोकी ॥
कर सरोज प्रभु मम शिर धरेऊ। दीन दयाल दुसह दुख हरेऊ ॥
कीन्ह राम मोहिं बिगत बिमोहा। सेवक सुखद कृपा संदोहा
प्रभुता प्रथम बिचार बिचारी। मन महं होइ हर्ष अति भारी
भक्त बछलता प्रभु कै देखी। उपजा मम उर हर्ष बिशेषी ॥
सजल नयन पुलकित कर जोरी। कीन्ही बहु बिधि बिनय बहोरी

दो॰ सुनि सप्रेम मम वाणी देखि दीन निज दास ॥
वचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमा निवास ॥
काग भुशुण्डी मांगु वर अति प्रसन्न मोहिं जानि
अणिमादिक सुख अपर निधि मोक्ष सकल सुखखानि

ज्ञान बिवेक बिरति बिज्ञाना। मुनि दुर्लभ गति जो जग जाना
आजु देउं सब संशय नाहीं। मांगु जो तोहि भाव मन माहीं
सुनि प्रभु वचन बहुत अनुरागेउं। मन अनुमान करन तब लागेउं
प्रभु कह देन सकल सुख सही। भक्ति आपनी देन न कही ॥
भक्ति हीन गुण सुख सब ऐसे। लवण बिना बहु व्यंजन जैसे
भक्ति हीन सुख कवने काजा। अस बिचारि बोलेउं खगराजा ॥
जो प्रभु होइ प्रसन्न वर देहू। मोपर करहु कृपा अरु नेहू
मन भावत वर मांगौं स्वामी। तुम उदार उर अंतर यामी ॥

दो॰ अबिरल भक्ति बिशुद्ध तव श्रुति पुराण जो गाव
जेहि खोजत योगीश मुनि प्रभु प्रताप कोउ पाव
भक्त कल्प तरु प्रणत हित कृपा सिंधु सुख धाम
सोइ निज भक्ति मोहिं प्रभु देहु दया करि राम

एवमस्तु कहि रघुकुल नायक। बोले वचन परम सुख दायक
सुन वायस तैं परम सयाना। काहे न मांगसि अस वर दाना
सब सुख खानि भक्ति तैं मांगी। नहिं कोउ तोहि समान बड़भागी

जो मुनि कोटि यत्न नहिं लहहीं। जे जप योग अनल तन दहहीं॥
रीझेउं मोहि देखि चतुराई ॥ मागेउ भक्ति मोहि अति भाई ॥
सुनु विहंग प्रसाद अब मोरे । सब शुभ गुण बसि हैं उर तोरे ॥
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा ॥ जो सद चरित रहस्य विभागा ॥
जानब तैं सबही कर भेदा ॥ ॥ मम प्रसाद नहिं साधन खेदा ॥

दो॰ माया संभव भ्रम सब अब नहिं व्यापिहि तोहिं
जानेसि ब्रह्म अनादि अज अगुण गुणाकर मोहिं
मोहिं भक्त प्रिय सन्तत अस विचारि सुनु काग
काय वचन मन मम चरण करहु अचल अनुराग

अब सुनु परम विमल मम बानी। सत्य सुगम निगमादि बखानी
निज सिद्धांत सुनावौं तोहीं । सुनि मन धरि सब तजि भजु मोहीं
मम माया संभव संसारा ॥ जीव चराचर विविध प्रकारा ॥
सब मम प्रिय सब मम उपजाये। सब तें अधिक मनुज मोहिं भाये
तेहि महं द्विज द्विज महं श्रुतिधारी। तिन्ह महं निगम नीति अनुसारी
तिन्ह महं प्रिय विरक्त मुनि ज्ञानी। ज्ञानिहु ते अति प्रिय विज्ञानी
तेहि तें पुनि मोहिं प्रिय निज दासा। जेहि गति मोहिं न दूसर आसा
पुनि पुनि सत्य कहौं तोहि पाहीं। मोहिं सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं
भक्ति हीन विरंचि किन होई । सब जीवन महं अप्रिय सोई ॥
भक्तिवंत अति नीचौ प्राणी । मोहिं परम प्रिय सुनि मम वाणी

दो॰ शुचि सुशील सेवक सुमति कहु प्रिय काहु न लाग
श्रुति पुराण कह नीति अस सावधान सुनु काग

एक पिता के विपुल कुमारा । होंइ पृथक गुण शील अचारा
कोउ पंडित कोउ तापस ज्ञाता। कोउ धनवंत शूर कोउ दाता
कोउ सर्वज्ञ धर्म रत कोई । । सब पर पितहिं प्रीति सम होई
कोउ पितु भक्त वचन मन कर्म्मा। सपनेहु जान न दूसर धर्म्मा ॥

सो प्रिय सुत पितु प्राण समाना। यद्यपि सो सब भांति अयाना॥
इहि विधि जीव चराचर जेते। त्रिजग देव नर असुर समेते॥
अखिल विश्व यह मम उपजाया। सब पर मोरि बराबर दाया॥
तिन महं जो परि हरि सब माया। भजहिं मोहि मन बच अरु काया॥

दो॰ पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ॥
सर्व भाव भजु कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ॥

दो॰ सत्य कहौं खग तोहि शुचि सेवक मम प्राण प्रिय।
अस विचारि भज मोहि परि हरि आ भरोस सब॥

कबहुं काल नहिं व्यापै तोही। सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही॥
प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊं। तन पुलकित मन अति हरषाऊं॥
सो सुख जानै मन अरु काना। नहिं रसना प्रति जाइ बखाना॥
प्रभु शोभा सुख जानत नयना। कहि किमि सकै तिन्है नहिं बयना॥
बहु विधि राम मोहि सिख देई। लगे करण शिशु कौतुक तेई॥
सजल नयन कछु मुख करि रूखा। चितै मातु तन लागी भूखा॥
देखि मातु आतुर उठि धाई। कहि मृदु वचन लिये उर लाई॥
गोद राखि कराव पय पाना। रघुपति चरित ललित कर गाना॥

सो॰ जेहि सुख लागि पुरारि अशिव भेष कृत शिव सुखद।
अवध पुरी नर नारि। तेहि सुख महं संतत मगन॥
सोइ सुख लव लेश। जिन वारक सपनेहुं लहेउ।
ते नहिं गणहिं खगेश ब्रह्म सुखहिं सज्जन सुमति॥

मैं पुनि अवध रहेउं कछु काला। देखेउ बाल विनोद रसाला॥
राम प्रसाद भक्ति वर पायउं। प्रभु पद वंदि निजाश्रम आयउं॥
तब तें मोहि न व्यापी माया। जब तें रघुनायक अपनाया॥
यह सब गुप्त चरित मैं गावा। हरि माया जिमि मोहि नचावा॥
निज अनुभव अब कहौं खगेशा। बिनु हरि भजन न जाहिं कलेशा॥

राम कृपा बिनु सुनु खगराई । जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥ ॥
जाने बिनु न होइ परतीती ॥ ॥ बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती
प्रीति बिना नहिं भक्ति दृढ़ाई । जिमि खगेश जल की चिकनाई
सो॰ बिनु गुरु होइ कि ज्ञान ज्ञान कि होइ विराग बिनु
गावहिं वेद पुराण । सुख कि लहहिं बिनु हरिभगति
कोउ विश्राम कि पाव । तात सहज संतोष बिनु
चलै कि जल बिनु नाव । कोटि यतन पचि पचि मरे
बिनु संतोष न काम नशाहीं । काम अछत सुख सपनेहु नाहीं
राम भजन बिनु मिटहिं न कामा । थल विहीन तरु कबहुं कि जामा
विना ज्ञान की समता आवै । कोउ अवकास कि नभ बिनु पावै
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई । । बिनु महि गंध कि पावै कोई ॥
बिनु तप तेज कि करु विस्तारा । जल बिनु रस कि होइ संसारा ॥
शील कि मिलु बिनु बुध सेवकाई । जिमि बिनु तेज न रूप गुसाई
निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा । परस कि होइ विहीन समीरा
कवनेउ सिद्धि कि बिनु विश्वासा । बिनु हरि भजन न भव भय नाशा
सो॰ बिनु विश्वास भक्ति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न राम
राम कृपा बिनु सपनेहुं मन कि लहै विश्राम ॥
सो॰ अस विचारि मति धीर तजि कुतर्क संशय सकल
भजहिं राम रण धीर करुणा कर सुन्दर सुखद
निज मति सरिस नाथ मैं गाई । प्रभु प्रताप महिमा खगराई ।
कहेउं न कछु करि युक्ति विशेषी । यह सब मैं निज नयनन्ह देखी
महिमा नाम रूप गुण गाथा । सकल अमित अनंत रघुनाथा
निज निज मति मुनि हरि गुण गावहिं । निगम शेष शिव पार न पावहिं
तुम्हें आदि खग मसक प्रयंता । नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता
तुमि रघुपति महिमा अवगाहा । तात कबहुं कोउ पावकि थाहा

राम काम शत कोटि सुभग तन। दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन
शक्र कोटि शत सरिस बिलासा। नभ शत कोटि अमित अवकासा।

दो॰ मरुत कोटि शत बिपुल बल रबि शत कोटि प्रकास
शशि शत कोटि सुशीतल समन सकल भवत्रास
काल कोटि शत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत
धूमकेतु शत कोटि सम। दुराधर्ष भगवंत ॥

प्रभु अगाध शत कोटि पताला। समन कोटि शत सरिस कराला
तीरथ अमित कोटि शत पावन। नाम अखिल अघ पुंज नशावन
हिम गिरि कोटि अचल रघुबीरा। सिंधु कोटि शत सरिस गंभीरा
काम धेनु शत कोटि समाना। सकल काम दायक भगवाना
शारद कोटि अमित चतुराई। बिधि शत कोटि सृष्टि निपुणाई
विष्णु कोटि शत पालन कर्ता। रुद्र कोटि शत सम संहर्ता ॥
धनद कोटि शत सम धनवाना। माया कोटि प्रपंच निधाना ॥
भार धरण शत कोटि अहीशा। निरवधि निरुपम प्रभु जगदीशा

छं॰ निरवधि निरूपम राम सम नहिं आन निगमागम कहै
जिमि कोटिशत खद्योत रबि कहं कहत अति लघुता लहै
इहि भांति निज निज मति बिलास मुनीश हरिहिं बखानहीं
प्रभु भाव गाहक अति कृपालु सु प्रेम सुनि सुख पावहीं

दो॰ राम अमित गुण सागर थाह कि पावै कोइ ॥
सन्तन सन जस कछु सुनेउं तुमहिं सुनायउं सोइ

सो॰ भाव वश्य भगवान सुख निधान करुणा भुवन
तजि ममता मद मान भजिय राम सीता रमण

सुनि भुशुण्डि के वचन सुहाये। हर्षित खगपति पंख फुलाये
नयन नीर मन अति हर्षाना। श्री रघुपति प्रताप उर आना
पाछिल मोह समुझि पछिताना। ब्रह्म अनादि मनुज करि जाना।

पुनि पुनि काग चरण शिर नावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ॥
गुरु बिनु भव निधि तरै न कोई । जो विरंचि शंकर सम होई ॥ ॥
संशय सर्प ग्रसेउ मोहिं ताता । दुखदल हरि कुतर्क बहु बाता
तव सरूप गारुड़ि रघुनायक । मोहिं जियायेहु जन सुखदायक
तव प्रसाद मम मोह नशाना । राम रहस्य अनूपम जाना ॥

दो॰ ताहि प्रशंसेउ विविधि विधि शीश नाइ कर जोरि
वचन सप्रेम विनीत मृदु बोलेउ गरुड़ बहोरि ॥
प्रभु अपने अविवेक तें । पूछौं स्वामी तोहिं ॥
कृपा सिंधु सादर कहहु । जानि दास निज मोहिं

तुम सर्वज्ञ तज्ञ तम पारा ॥ ॥ सुमति सुशील सरल आचारा
ज्ञान विरति विज्ञान निवासा । रघुनायक के प्रिय तुम दासा
कारण कवन देह यह पाई । तात सकल मोहिं कहहु बुझाई
राम चरित सर सुन्दर स्वामी । पायहु कहां कहहु नभ गामी
नाथ सुना मैं अस शिव पाहीं । महा प्रलयहुं नाश तव नाहीं
मृषा वचन नहिं शंकर कहहीं । सो मोरे मन संशय अहहीं ॥
अग जग जीव नाग नर देवा । नाथ सकल जग काल कलेवा
अंड कटाह अमित लय कारी । काल सदा दुर्गम अस भारी

सो॰ तुमहिं न व्यापै काल । अति कराल कारण कवन
सो मोहिं कहहु कृपाल ज्ञान प्रभाव कि योग बल

दो॰ प्रभु तव आश्रम आयउं मोर मोह भ्रम भाग
कारण कवन सो नाथ अब कहहु सहित अनुराग

गरुड़ गिरा सुनि हर्षेउ कागा । बोलेउ वचन सहित अनुरागा
धन्य धन्य तव मति उरगारी । प्रश्न तुम्हार मोहिं अति प्यारी
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई । बहुत जन्म की सुधि मोहिं आई
सब निज कथा कहौं मैं गाई । तात सुनहु सादर मन लाई

जप तप मख संयम ब्रत दाना। विरति विवेक योग विज्ञाना॥
सब कर फल रघुपति पद प्रेमा। तेहि विनु कोइ न पावै छेमा॥
इहि तन राम भक्ति मैं पाई। तातें मोहिं ममता अधिकाई॥

सो॰ पन्नगारि अस नीति। श्रुति सम्मत सज्जन कहहिं
अति नीचहु सन प्रीति करिय जानि निज परम हित
पाट कीट तें होइ। तातें पाटंबर रुचिर॥
कृमि पालै सब कोइ। परम अपावन प्राण सम

स्वारथ सांच जीव कहं एहा। मन क्रम वचन राम पद नेहा
सोइ पावन सोइ सुभग शरीरा। जो तनु पाइ भजिय रघुबीरा
राम विमुख लहि विधि सम देही। कवि कोविद न प्रशंसहिं तेही
राम भक्ति एहि तन महं जामी। तातें मोहिं परम प्रिय स्वामी
तजौं न तन निज इच्छा मरणा। तन विनु वेद भजन नहिं वरणा
प्रथम मोह मोहिं बहुत विगोवा। राम विमुख सुख कबहुं न सोवा
नाना जन्म कर्म पुनि नाना। किये योग जप तप मख दाना
कवन योनि जन्मेउं जहं नाहीं। मैं खगेश भ्रमि भ्रमि जग माहीं
देखेउं सब करि कर्म गुसाईं। सुखी न भयउं अबहिं की नाईं
सुधि मोहिं नाथ जन्म बहु केरी। शिव प्रसाद मति मोह न घेरी

दो॰ प्रथम जन्म के चरित अब कहौं सुनहु विहगेश
सुनि प्रभु पद रति ऊपजै जातें मिटै कलेश
पूरव कल्प एक प्रभु। कलियुग मलकर मूल
नर अरु नारि अधर्म रत सकल निगम प्रतिकूल

तेहि कलियुग कोशलपुर जाई। जन्मत भयउं शूद्र तनु पाई
शिव सेवक मन क्रम अरु बानी। आन देव निंदक अभिमानी
धन मद मत्त परम वाचाला। उग्र बुद्धि उर दम्भ विशाला॥
यदपि रहेउं रघुपति रजधानी। तदपि नहीं महिमा कछु जानी

अब जाना मैं अवध प्रभावा। निगमागम पुराण अस गावा
कवनहुं जन्म अवध बस जोई। राम परायण सो कुर होई ॥
अवध प्रभाव जान तब प्राणी। जब उर बसहिं राम धनु पाणी
सो कलि काल कठिन उरगारी। पाप परायण सब नर नारी

दो. कलिमल ग्रसेउ धर्म रत गुप्त भयउ सद ग्रंथ
दंभिन निज मत कल्पि कर प्रगट कीन्ह बहु पंथ
भयउ लोग सब मोह वश लोभ ग्रसेउ शुभ कर्म
सुन हरियान ज्ञान निधि कहौं कछुक कलि धर्म

वर्ण धर्म नहिं आश्रम चारी। श्रुति विरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुति वंचक भूप प्रजासन। कोउ न मानु निगम अनुशासन
मारग सोइ जा कहं जो भावा। पंडित सोइ जो गाल बजावा ॥
मिथ्यारंभ दंभ रत जोई ॥ ॥ ता कहं संत कहैं सब कोई ॥
सोइ सयान जो परधन हारी। जो करु दंभ सो बड़ आचारी ॥
जो कछु झूठ मसखरी जाना। कलियुग सोइ गुणवंत बखाना
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी। कलियुग सोइ ज्ञानी वैरागी
जाकें नख अरु जटा विशाला। सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो. अशुभ भेष भूषण धरें भक्ष्याभक्ष्य जे खाहिं
ते योगी ते सिद्ध नर। पूज्य ते कलियुग माहिं

सो. जे अप कारी चार ॥ तिन कर गौरव मान्यता
मन क्रम वचन लबार ते वक्ता कलि काल महं

नारि विवश नर सकल गुसांई। नाचहिं नट मरकट की नांई
शूद्र द्विजहिं उपदेशहिं ज्ञाना। मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥
सब नर काम लोभ रत क्रोधी। देव विप्र गुरु सन्त विरोधी
गुण मंदिर सुंदर पति त्यागी। भजहिं नारि पर पुरुष अभागी
सौभागिनी विभूषण हीना। विधवन कहं शृंगार नवीना

गुरु शिष अंध बधिर के लेखा। एक न सुनि एक ने देखा ॥ ॥
हरै शिष्य धन शोक न हरई। सो गुरु घोर नरक महं परई
मात पिता बालकन्ह बोलावहिं। उदर भरै सोइ कर्म सिखावहिं

दो॰ ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर कहहिं न दूसर बात
कौड़ी लागी लोभ सब करहिं विप्र गुरु घात
बाद शूद्र कहं द्विजन सन हम तुम ते कछु घाटि
जानै ब्रह्म सो विप्र वर। आंखि देखावहिं डाटि

पर त्रिय लंपट कपट सयाने। मोह द्रोह ममता लपटाने ॥
तेइ अभेद वादी ज्ञानी नर। देखा मैं चरित्र कलियुग कर
आपु गये अरु आनहिं घालहिं। जो कोउ श्रुति मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्प भरि इक इक नर्का। परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तर्का
जे वर्णाधम तेलि कुम्हारा। स्वपच किरात कोल्ह कलवारा
नारि मुई गृह संपति नाशी। मूड़ मुड़ाइ भये सन्यासी ॥
ते विप्रन सन पाव पुजावहिं। उभय लोक निज हाथ नशावहिं
विप्र निरक्षर लोलुप कामी। निराचार शठ वृषली स्वामी
शूद्र करहिं जप तप व्रत दाना। बैठि बरासन कहहिं पुराना
सब नर कल्पित करहिं अचारा। जाइ न बरणि अनीति अपारा

दो॰ भये वर्ण शंकर कलिहिं भिन्न सेतु सब लोग
करहिं पाप पावहिं दुख भय रुज शोक वियोग
श्रुति संमत हरि भक्ति पथ संयुत ज्ञान विवेक
तेन चलहिं नर मोह बश कल्पहिं पंथ अनेक

छं॰ बहु धाम संवारहिं धामयती। विषया हरि लीन्ह गई विरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही। कलि कौतुक तात न जात कही
कुलवन्ति निकारहिं नारि सती। गृह आनहिं चेरिहिं चोरगती
सुत मानहिं मात पिता तौलौं। अबलानन दीख नहीं जौलौं

ससुरारि पियारि लगी जब तें। रिपु रूप कुटुम्ब भये तब तें॥
नृप पाप परायण धर्म नहीं। करुदंड विडंड प्रजा नितहीं॥
धनवन्त कुलीन मलीन अपी। द्विज चिन्ह जनेउ उघार तपी॥
नहिं मान पुराणहिं वेदहिं जो। हरि सेवक सत्य सही कलि सो॥
कवि वृन्द उदार धुनी न सुनी। गुण दूषक व्रात न कोपि गुनी॥
कलि वारहिं वार दुकाल परै। विनु अन्न दुखी बहु लोग मरै॥

दो॰ सुन खगेश कलि कपट हठ दंभ दोष पाखण्ड॥
काम क्रोध लोभादि मद व्यापि रहे ब्रह्मण्ड॥
तामस धर्म करहिं नर। जप तप मख व्रत दान
देवन वर्षे धरणी पर। बये न जामहिं धान

छं॰ अबला कच भूषण भूरि क्षुधा। धनहीन दुखी ममता बहुधा
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म रता। मति थोरि कठोरि न कोमलता
नर पीड़ित रोग न भोग कहीं। अभिमान विरोध अकारणहीं
लघु जीवन संवत पंच दशा। कल्पान्त न नाश गुमान असा
कलि काल बेहाल किये मनुजा। नहिं मानत कोउ अनुजा तनुजा
नहिं तोष विचार न शीतलता। सब जाति कुजाति भये मंगता
इरिषा परुषा छल लोलुपता। भरि पूरि रही समता विगता॥
सब लोग वियोग विशोक हये। वर्णाश्रम धर्म अचार गये॥
दम दान दया नहिं जान पनी। जड़ता परिवंचकता त घनी

दो॰ सुन व्यालारि कराल कलि मल अवगुण आगार
गुणउ बहुत कलि युग कर विनु प्रयास निस्तार
कृत युग त्रेता द्वापरहु पूजा मख अरु योग॥
जो गति होइ सो कलि हरि नाम ते पावहिं लोग

कृत युग सब योगी विज्ञानी। करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रानी
त्रेता विविधि यज्ञ नर करहीं। प्रभुहिं समर्पि कर्म भव तरहीं

द्वापर करि रघुपति पद पूजा । नर भव तरहिं उपाय न दूजा ॥
कलि केवल हरि गुण गण गाहा । गावत नर पावहिं भव थाहा
कलि युग योग यज्ञ नहिं ज्ञाना । एक अधार राम गुण गाना ॥
सब भरोस तजि जो भज रामहिं । प्रेम समेत गाव गुण ग्रामहिं
सो भव तरु कछु संशय नाहीं । नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं ।
कलि कर एक पुनीत प्रतापा । मानस पुण्य होइ नहिं पापा

दो॰ कलियुग सम युग आन नहिं जो नर करु विश्वास
गाइ राम गुण गण विमल भव तरु विनहिं प्रयास
प्रगट चारि पद धर्म के । कलि महं एक प्रधान ॥
येन केन विधि दीन्हे । दान करै कल्यान ॥

कृत युग धर्म होहिं सब केरे । हृदय राम माया के प्रेरे ॥ ॥
शुद्ध सत्य समता विज्ञानी । कृत प्रभाव प्रसन्न मन मानी
सत्य बहुत कछु रज रति कर्म्मा । सब विधि शुभ त्रेता कर धर्म्मा
बहु रज सत्य स्वल्प कछु तामस । द्वापर हर्ष शोक भय मानस ।
तामस बहुत रजो गुण थोरा । कलि प्रभाव विरोध चहुं ओरा
बुध युग धर्म जानि मन माहीं । तजि अधर्म रत धर्म्म कराहीं
कलि अधर्म नहिं व्यापहिं ताही । रघुपति चरण प्रीति अति जाही
नट कृत कपट विकट खग राया । नट सेवकहि न व्यापै माया ॥

दो॰ हरि माया कृत दोष गुण विनु हरि भजन न जाहिं
भजिय राम सब काम तजि अस विचारि मन माहिं
तेहि कलि काल वर्ष बहु । बसेउं अवध विहगेश
परेउ दुकाल विपति वस तब मैं गयउं विदेश

गयउं उजेन सुनहु उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
गये काल कछु संपति पाई । तहं पुनि करौं शंभु सेवकाई ॥
विप्र एक वैदिक शिव पूजा । करै सदा तेहि काज न दूजा ॥

परम साधु परमारथ विंदक । शंभु उपासक नहिं हरि निंदक
सेवौं मैं तेहि कपट समेता । द्विज दयाल अति नीति निकेता
बाहिर नम्र देखि मोहिं साईं । विप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं ॥ ॥
शंभु मंत्र मोहि द्विज वर दीन्हा । शुभ उपदेश विविधि विधि कीन्हा
जपौं मंत्र शिव मंदिर जाई । हृदय दंभ अहमिति अधिकाई

दो· मैं खल मल संकुल मति नीच जाति वश मोह
द्विज हरि जन देखत जरौं करौं विष्णु कर द्रोह

सो· गुरु निति मोहि प्रबोध दुखित देखि आचरण मम
मोहिं उपजै अति क्रोध दंभिहि नीति कि भावई

एक बार गुरु लीन्ह बुलाई । मोहि नीति बहु भांति सिखाई
शिव सेवा कर फल सुत सोई । अविरल भक्ति राम पद होई ॥
रामहि भजहिं तात शिव धाता । नर पामर कर केतिक बाता ॥
जासु चरण शिव अज अनुरागी । तासु द्रोह सुख चहसि अभागी
हर कहं हरि सेवक गुरु कहेऊ । सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ
अधम जाति मैं विद्या पाये । भयउं यथा अहि दूध पिआये
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । गुरु सन द्रोह करौं दिन राती
अति दयाल गुरु स्वल्प न क्रोधा । पुनि पुनि मोहिं सिखाव सुबोधा
जेहि तें नीच बड़ाई पावा । सो प्रथमहिं हति ताहि नशावा
धूम अनल संभव सुनु भाई । तेहि बुझाव घन पदवी पाई
रज मग परी निरादर रहई । सब कर पद प्रहार नित सहई
मरुत उड़ाइ प्रथम सो भरई । पुनि नृप नयन किरीटन्ह परई
सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा । बुध न करहिं अधम कर संगा
कवि कोविद गावहिं असि नीती । खल सन कलह न भल सन प्रीती
उदासीन नित रहिय गुसाईं । खल परिहरिय श्वान की नाईं
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई । गुरु हित कहें न मोहि सुहाई

दो॰ एक बार हर मंदिर ॥ जपत रहेउं शिव नाम
गुरु आये अभिमानतें । उठि नहिं कीन्ह प्रणाम
सो दयाल नहिं कहेउ कछु उर न रोष लव लेश
अति अघ गुरु अपमानता सहि नहिं सके महेश

मंदिर मांझ भई नभ बानी । रे हत भाग्य अधम अभिमानी
यद्यपि तव गुरु स्वल्प न क्रोधा । अति कृपाल चित सम्यक बोधा
तदपि आप देहौं शठ तोहीं । नीति विरोध सुहात न मोहीं
जो नहिं करौं दंड शठ तोरा । भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा
जो शठ गुरु सन ईर्षा करहीं । रौरव नरक कल्प शत परहीं
त्रिजग योनि पुनि धरहिं शरीरा । अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा
बैठि रहेसि अजगर इव पापी । होहि सर्प खल मल मति व्यापी
महा विटप कोटर महं जाई । रहु रे अधम अधोगति पाई

दो॰ हा हा कार कीन्ह गुरु । सुनि दारुण शिव शाप
कंपित मोहिं विलोकि अति उर उपजा परिताप
करि दंडवत सप्रेम गुरु । शिव सन्मुख कर जोरि
विनय करत गद्गद गिरा समुझि घोर गति मोरि

छं॰ नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं
करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागारसंसार पारं नतोहं
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं । मनोभूत कोटिप्रभाश्रीशरीरं
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगंगा । लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा
चलत्कुंडलं शुभ्रनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंडं भजे भानुकोटिप्रकाशं

त्रयी शूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदासज्जनानंद दाता पुरारी
चिदानंद संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी
न यावद् उमानाथ पादारविंदं। भजंतीह लोके परे वा नराणां
न तावत्सुखं शांति संताप नाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं
जराजन्म दुःखौघ तातप्यमानं। प्रभो पाहि शापान्नमामीश शंभो

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ।।
ये पठंति नरा भक्त्या। तेषां शंभुः प्रसीदति ।।

दो॰ सुनि बिनती सर्वज्ञ शिव देखि विप्र अनुराग
पुनि मंदिर बाणी भई हे द्विज बर बर मांगु
जो प्रसन्न प्रभु मोहि पर नाथ दीन पर नेहु ।।
निज पद भक्ति देहु प्रभु पुनि दूसर बर देहु ।।
तव माया बश जीव जड़ सन्तत फिरै भुलान
तेहि पर क्रोध न करिय प्रभु कृपासिंधु भगवान
शंकर दीनदयाल अब एहि पर होहु कृपाल
शापानुग्रह होइ जेहि नाथ थोरही काल ।।

इहि कर होइ परम कल्याना। सोइ अब करहु कृपानिधाना।
बिप्र गिरा सुनि परहित सानी। एवमस्तु कहि भइ नभ बानी
यदपि कीन्ह यह दारुण पापा। मैं पुनि दीन्ह क्रोध करि शापा
तदपि तुम्हार साधुता देखी। करिहौं इहि पर कृपा बिशेषी
क्षमा शील जे पर उपकारी। ते द्विज प्रिय मोहि यथा खरारी
मोर श्राप द्विज बृथा न जाई। जन्म सहस्र पाव यह सोई ।।
जन्मत मरत दुसह दुख होई। इहि कहँ स्वल्पउ न ब्यापिहि सोई
कौनहुं जन्म मिटिहि नहिं ज्ञाना। सुनहु शूद्र मम बचन प्रमाना।

रघुपति पुरी जन्म तव भयऊ। पुनि तैं मम सेवा मन दयऊ॥
पुरी प्रसाद अनुग्रह मोरे ॥ ।।राम भक्ति उपजहि उर तोरे ॥
सुनु मम वचन सत्य अब भाई। हरि तोषक व्रत द्विज सेवकाई
अब जनि करसि विप्रअपमाना। जानसि ब्रह्म अनंत समाना॥
इन्द्र कुलिश मम शूल विशाला। काल दंड हरि चक्र कराला॥
जो इनकर मारा नहिं मरई। विप्र रोष पावक सो जरई॥
अस विवेक राखेहु मन माहीं। तुम कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं
औरो एक आशिषा मोरी। अव्याहत गति होइहि तोरी॥

दो॰ सुनि शिव वचन सप्रेम गुरु एव मस्तु इति भाषि
मोहिं प्रबोधि गयेउ गृह शंभु चरण उर राखि॥
प्रेरित काल विंध्य गिरि। जाइ भयउं मैं व्याल
बिनु प्रयास सो तनु तजेउं नाथ थोरही काल
जो तनु धरौं सो तजौं पुनि अनायास हरियान॥
जिमि नूतन पट पहिरि कै नर परिहरै पुरान॥
शिव राखेउ श्रुति नीति विधि मैं नहिं पाव कलेश
इहि विधि धरेउं विविध तनु ज्ञान न गयउ खगेश

त्रिजग योनि जो जो तनु धरेऊं। तहं तहं राम भक्ति अनुसरेऊं
एक शूल मोहिं बिसरु न काऊ। गुरु कर कोमल शील सुभाऊ
चर्म देह द्विज कर मैं पाई ॥ । सुर दुर्लभ पुराण श्रुति गाई
खेलौं तहां बालकन मीला । करौं सकल रघुनायक लीला
प्रौढ भये मोहिं पिता पढावा। समुझौं सुनौं गुनौं नहिं भावा
मन तें सकल वासना भागी । केवल राम चरण लय लागी
कहु खगेश अस कवन अभागी। खरी सेव सुर धेनुहिं त्यागी
प्रेम मगन मोहिं कछु न सुहाई। हारेउ पिता पढाय पढाई
भयउ काल वश जब पितु माता। मैं बन गयउं भजन जनत्राता

जहं जहं बिपिन मुनीश्वर पावौं। आश्रम जाइ जाइ शिर नावौं
पूछौं तिनहिं राम गुण गाहा। कहौं सुनौं हर्षित खग नाहा ॥
सुनत फिरौं हरि गुण अनुबादा। अव्याहत गति शंभु प्रसादा।
छूटी त्रिविधि ईषणा गाढ़ी। एक लालसा उर अति बाढ़ी ॥
राम चरण पंकज जब देखौं। तब निज जन्म सुफल करि लेखौं
जेहिं पूछौं सो मुनि अस कहई। ईश्वर सर्व भूत मय अहई ॥
निर्गुण मत नहिं मोहिं सुहाई। सगुण ब्रह्म रति उर अधिकाई

दो॰ गुरु के वचन सुरति करि राम चरण मन लाग
रघुपति यश गावत फिरौं क्षण क्षण नव अनुराग
मेरु शिखर बट छाया। मुनि लोमश आसीन ॥
देखि चरण शिर नायउं वचन कहेउं अति दीन
सुनि मम वचन विनीत मृदु मुनि कृपाल खगराज
मोहिं सादर बूझत भयउ द्विज आयउ केहि काज
तब मैं कहेउं कृपा निधि तुम सर्वज्ञ सुजान ॥
सगुण ब्रह्म अवराधना। मोहिं कहहु भगवान

तब मुनीश रघुपति गुण गाथा। कहेउ कछुक सादर खग नाथा
ब्रह्म ज्ञान रत मुनि विज्ञानी। मोहिं परम अधिकारी जानी॥
लागे करण ब्रह्म उपदेशा। अज अद्वैत अगुण हृदयेशा।
अकल अनीह अनाम अरूपा। अनुभव गम्य अखंड अनूपा
मन गोतीत अमल अविनाशी। निर्विकार निरवधि सुख राशी
सो तैं ताहि तोहि नहिं भेदा। वारि वीचि इव गावहिं वेदा
विविध भांति मोहिं मुनि समुझावा। निर्गुण मत मम हृदय न आवा
पुनि मैं कहेउं नाइ पद शीशा। सगुण उपासन कहहु मुनीशा
राम भक्ति जल मम मन मीना। किमि बिलगाइ मुनीश प्रवीना
सो उपदेश कहहु करि दाया। निज नयनन्ह देखौं रघुराया

भरि लोचन बिलोकि अवधेशा। तब सुनिहौं निर्गुण उपदेशा॥
सुनि मुनि कह हरि कथा अनूपा। खंडित मत गुण अगुण निरूपा
तब मैं निर्गुण मत करि दूरी॥ सगुण निरूपौं करि हठ भूरी॥
उत्तर प्रत्युत्तर मैं दीन्हा॥ ॥मुनि तन भयउ क्रोध करि चीन्हा
सुन प्रभु बहुत अवज्ञा कीये। उपजै क्रोध ज्ञानिह्न के हीये॥
अति संघर्षण करै जो कोई। अनल प्रगट चंदन तें होई॥

दो॰ बारहि बार सकोपि मुनि करहिं निरूपण ज्ञान
मैं अपने मन बैठि तब करौं विविध अनुमान॥
क्रोध कि द्वैत बुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अज्ञान
माया बस परि छीण जड़ जीव कि ईश समान

कबहुं क दुख सब कर हित ताके। तेहि कि दरिद्र परस मणि जाके
कामी पुनि कि रहै निकलंका। परद्रोही कि होइ निःशंका॥
वंश कि रह द्विज अनहित कीन्हे। कर्म कि होहिं स्वरूपहि चीन्हे
काहु सुमति कि खल संगजामी। शुभ गति पाव कि पर तिय गामी
राज कि रहै नीति बिनु जाने। अघ कि रहै हरि चरित बखाने
भव कि परहिं परमात्म विंदक। सुखी कि होहिं कबहुं पर निंदक
पावन यश कि पुण्य बिनु होई। बिनु अघ अयश कि पावै कोई
लाभ कि कछु हरि भक्ति समाना। जेहि गावहिं श्रुति सन्त पुराना
हानि कि जग इहि सम कछु भाई। भजिय न रामहिं नर तनु पाई
अघ कि होहिं तामस सम आला। धर्म कि दया सरिस हरि याना
इहि विधि अमित युक्ति मन गुणेऊं। मुनि उपदेश न सादर सुनेऊं
पुनि पुनि सगुण पक्ष मैं रोपा। तब मुनि बोले वचन सकोपा
मूढ़ परम सिख देउं न मानेसि। उत्तर प्रत्युत्तर बहु आनेसि॥
सत्य वचन विश्वास न करही। वायस इव सबही सन डरही॥
शठ सपक्ष तव हृदय विशाला। सपदि होउ पक्षी चंडाला॥

लीन्ह शाप मैं शीश चढ़ाई। नहिं कछु भय न दीनता आई॥

दो० तुरत भयउं मैं काग तब पुनि पुनि पद शिर नाइ।
सुमिरि राम रघुवंश मणि हर्षित चलेउं उड़ाइ॥
उमा जो राम चरण रत विगत काम मद क्रोध।
निज प्रभु मय देखहिं जगत कासन करहिं विरोध॥

सुनि खगेश नहिं कछु ऋषि दूषण। उर प्रेरक रघुवंश विभूषण॥
कृपा सिंधु मुनि मति करि भोरी। लीन्ही प्रेम परीक्षा मोरी॥
मन क्रम वचन मोहिं जन जाना। मुनि मति पुनि फेरी भगवाना॥
ऋषि मम सहज शीलता देखी। राम चरण विश्वास विशेषी॥
अति विस्मय पुनि पुनि पछताई। सादर मुनि मोहिं लीन्ह बुलाई॥
मम परितोष विविध विधि कीन्हा। हर्षित राम मंत्र मोहिं दीन्हा॥
बालक रूप राम कर ध्याना। कहेउ मोहिं मुनि कृपा निधाना॥
सुन्दर सुखद मोहिं अति भावा। सो प्रथमहिं मैं तुमहिं सुनावा॥
मुनि मोहिं कछुक काल तहं राखा। राम चरित मानस सब भाषा॥
सादर मोहिं यह कथा सुनाई। पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई॥
राम चरित सर गुप्त सुहावा। शंभु प्रसाद तात मैं पावा॥
मोहिं निज भक्त राम कर जानी। तातें मैं सब कहेउं बखानी॥
राम भक्ति जिन के उर नाहीं। कबहुं न तात कहिय तेहि पाहीं॥
मुनि मोहिं विविध भांति समुझावा। मैं सप्रेम मुनि पद शिर नावा॥
निज कर कमल परसि मम शीशा। हर्षित आशिष दीन्ह मुनीशा॥
राम भक्ति अविरल उर तोरे। बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे॥

दो० सदा राम प्रिय होव तुम शुभ गुण भवन अमान।
काम रूप इच्छा मरण। ज्ञान विराग निधान॥
जेहि आश्रम तुम बसब पुनि सुमिरत श्री भगवंत।
व्यापिहि तहं न अविद्या योजन एक पर्यंत॥

काल कर्म गुण दोष सुभाऊ । कछु दुख तुमहिं न व्यापि हि काऊ ॥
राम रहस्य ललित विधि नाना । गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
बिनु श्रम तुम सब जानब सोऊ । नित नव प्रेम राम पद होऊ ॥
जो इच्छा करिही मन माहीं । हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
सुनि मुनि आशिष सुन मतिधीरा । ब्रह्म गिरा भइ गगन गंभीरा ॥
एव मस्तु तव बच मुनि ज्ञानी । यह मम भक्त कर्म मन बानी ॥
सुनि नभ गिरा हर्ष मन भयऊ । प्रेम मगन मन संशय गयऊ ॥
करि बिनती मुनि आयसु पाई । पद सरोज पुनि पुनि शिर नाई ॥
हर्ष सहित इहि आश्रम आयउं । प्रभु प्रसाद दुर्लभ वर पायउं ॥
इहां बसत मोहिं सुन खगईशा । बीते कल्प सात अरु बीशा ॥
करौं सदा रघुपति गुण गाना । सादर सुनहिं विहंग सुजाना ॥
जब जब अवध पुरी रघुबीरा । धरहिं भक्ति हित मनुज शरीरा ॥
तब तब जाइ अवध पुर रहऊं । शिशु लीला बिलोकि सुख लहऊं ॥
पुनि उर राखि राम शिशु रूपा । इहि आश्रम आवौं खग भूपा ॥
कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई । काग देह जेहि कारण पाई ॥
कहेउं तात सब प्रश्न तुम्हारी । राम भक्ति महिमा अति भारी ॥

दो॰ तातें यह तन मोहिं प्रिय भयउ राम पद नेह ॥
निज प्रभु दरशन पायउं गयउ सकल संदेह ॥
भक्ति पक्ष हठ करि रहेउं दीन्ह महा ऋषि शाप ।
पुनि दुर्लभ वर पायउं । देखहु भजन प्रताप ॥

जो अस भक्ति जानि परि हरहीं । केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं ॥
ते जड़ काम धेनु गृह त्यागी । खोजत आक फिरहिं पय लागी ॥
सुन खगेश हरि भक्ति बिहाई । जो सुख चाहहिं आन उपाई ॥
ते शठ महा सिंधु बिनु तरणी । पैरि पार चाहत जड़ करणी ॥
सुनि भुशुण्ड के वचन भवानी । बोलेउ गरुड़ हर्षि मृदु बानी ॥

तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं। संशय शोक मोह भ्रम नाहीं॥
सुनेउं पुनीत राम गुण ग्रामा। तुम्हरी कृपा लहेउं विश्रामा॥
एक बात प्रभु पूछौं तोहीं॥ ॥ कहहु बुझाइ कृपा निधि मोहीं
कहहिं सन्त मुनि वेद पुराना। नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना
सो मुनि तुमसन कहेउ गुसांई। नहिं आदरेउ भक्ति की नांई
ज्ञानहिं भक्तिहिं अन्तर केता। सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता
सुनि उरगारि वचन सुख माना। सादर बोलेउ काग सुजाना
ज्ञानहिं भक्तिहिं नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा
नाथ मुनीश कहहिं कछु अन्तर। सावधान होइ सुनहुं विहंगवर
ज्ञान विराग योग विज्ञाना। ये सब पुरुष सुनहु हरि याना॥
पुरुष प्रताप प्रबल सब भांती। अबला अबल सहज जड़ जाती

दो॰ पुरुष त्यागि सक नारिहिं जो विरक्त मति धीर
नहिं तो कामी विषयवस। विमुख जो पद रघुवीर

सो॰ जो मुनि ज्ञान निधान। मृगनयनी विधुमुखनिरखि
विकल होहिं हरि यान नारि विरचि माया प्रगट

इहां न पक्ष तात कछु राखौं। वेद पुराण संत मत भाषौं॥
मोह न नारि नारि के रूपा। पन्नगारि यह नीति अनूपा॥
माया भक्ति सुनहु प्रभु दोऊ। नारि वर्ग जानै सब कोऊ॥
पुनि रघुवीरहि भक्ति पियारी। माया खल नर्तकी विचारी
भक्तिहिं सानुकूल रघुराया। ताते तेहि डरपति अति माया
राम भक्ति निरुपम निरुपाधी। बसै जासु उर सदा अबाधी॥
तेहि विलोकि माया सकुचाई। करि न सकै कछु निज प्रभुताई
अस विचारि जो मुनि विज्ञानी। याचहिं भक्ति सकल गुणखानी

दो॰ यह रहस्य रघुनाथ कर वेगि न जानै कोइ॥
जानैं ते रघुपति कृपा। सपनेहुं मोह न होइ॥

अबरो ज्ञान भक्ति कर भेद सुनहु परवीन ॥ ५॥
जो सुनि होइ राम पद । प्रीति सदा अव क्षीन
सुनहु तात यह अकथ कहानी । समुझत बने न जात बखानी
ईश्वर अंश जीव अविनाशी । चेतन अमल सहज सुख राशी
सो माया वश भयउ गुसांई । बंध्यो कीर मरकट की नाई ॥
जड़ चेतनहिं ग्रंथि परिगई । यदपि मृषा छूटत कठिनई ॥
तब तें जीव भयो संसारी ॥ । ग्रंथि न छूट न होइ सुखारी ॥
श्रुति पुराण बहु कहेउ उपाई । छूटन अधिक अधिक अरुझाई।
जीव हृदय तम मोह विशेखी । ग्रंथि छुटे किमि परे न देखी ॥
अस संयोग ईश जब करई । तबहुं कदाचित सो निरुअरई
सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई । जो हरि कृपा हृदय बस आई
जप तप संयम नियम अहारा । जो श्रुति कहे सुधर्म अचारा॥
ये तृण हरित चरै जब गाई । भाव वत्स शिशु पाइ पन्हाई ॥
नोइ ने प्रीति पात्र विश्वासा । निर्मल मन अहीर निज दासा
परम धर्म मय पय दुहि भाई । अवटै अनल अकाम बनाई
तोष मरुत तब क्षमा जुड़ावै । धृत सम जावन देइ जमावै
मुदिता मथे विचार मथानी । दंभ अधार रज सत्य सुबानी॥
तब मथि काढ़ि लेइ नव नीता । विमल विराग सुभग सुपुनीता
दो॰ योग अग्नि करि प्रगट तब कर्म शुभाशुभ लाइ
बुद्धि सरावै ज्ञान धृत ममता मल जरि जाइ ॥
तब विज्ञान निरूपिणी बुद्धि विशद धृत पाइ
चित्त दिया भरि धरै दृढ समता दिअट बनाइ ॥
तीनि अवस्था तीनि गुण तेहि कपास तें काढ़ि
तूल तुरीय संवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि ॥
सो॰ यहि विधि लेसै दीप तेज राशि विज्ञान मय

जातहिं तासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा। दीप शिखा सोइ परम प्रचंडा
आतम अनुभव सुख सुप्रकाशा। तब भव मूल भेद भ्रम नाशा
प्रबल अविद्या कर परिवारा। मोह आदि तम मिटै अपारा॥
तब सोइ बुद्धि पाइ उजियारा। उर गृह बैठि ग्रंथि निरुआरा
छोरन ग्रंथि पाव जो सोई॥। तब यह जीव कृतारथ होई।
छोरत ग्रंथि जानि खगराया। विघ्न अनेक करै तब माया॥
ऋद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई॥। बुद्धिहिं लोभ देखावैं जाई॥
कल बल छल करि जाइ समीपा। अंचल बात बुझावैं दीपा॥
होइ बुद्धि जो परम सयानी। तिन्ह तन चितव न अनहित जानी
जौ तेहि विघ्न बुद्धि नहिं बाधी। तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी
इंद्रिय द्वार झरोखा नाना॥। तहं तहं सुर बैठे करि थाना॥
आवत देखहिं विषय बयारी। ते हठि देहिं कपाट उघारी॥
जब सो प्रभंजन उर गृह जाई। तबहिं दीप विज्ञान बुझाई॥
ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकाशा। बुद्धि विकल भइ विषय बताशा
इंद्रिय सुरन्ह न ज्ञान सुहाई। विषयभोग पर प्रीति सदाई॥
विषय समीर बुद्धि कृत भोरी। तेहि विधि दीप को बार बहोरी

दो॰ तब फिरि जीव विविध विधि पावै संसृति क्लेश
हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ विहगेश
कहत कठिन समुझत कठिन साधन कठिन विवेक
होइ घुणाक्षर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक

ज्ञानक पंथ कृपाण कै धारा। परत खगेश न लागै बारा॥
जो निर्विघ्न पंथ निर्वहई॥॥ सो कैवल्य परम पद लहई
अति दुर्लभ कैवल्य परम पद। सन्त पुराण निगम आगम वद
राम भक्ति सो मुक्ति गुसाईं। अन इच्छित आवै बरिआई

जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई। कोटि भांति कोउ करै उपाई॥
तथा मोक्ष सुख सुनु खगराई। रहि न सकै हरि भक्ति बिहाई॥
अस बिचारि हरि भक्त सयाने। मुक्ति निरादरि भक्ति लोभाने॥
भक्ति करत बिनु यतन प्रयासा। संसृति मूल अविद्या नाशा॥
भोजन करिय तृप्ति हित लागी। जिमि सो अन्न पचवे जठरागी॥
अस हरि भक्ति सुगम सुखदाई। को अस मूढ न जाहि सुहाई॥

दो॰ सेवक सेव्य प्रभाव बिनु भव न तरिय उरगारि।
भजहु राम पद पंकज। अस सिद्धान्त बिचारि॥
जो चेतन कहं जड़ करै। जडहि करै चैतन्य॥
अस समर्थ रघुनाथ कह भजहिं जीव ते धन्य॥

कहेउं ज्ञान सिद्धांत बुझाई॥। सुनहु भक्ति मणि की प्रभुताई॥
राम भक्ति चिंतामणि सुन्दर। बसे गरुड़ जाके उर अन्तर॥
परम प्रकाश रूप दिन राती। नहिं कछु चहिय दिया घृत बाती॥
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा। लोभ बात नहि ताहि बुझावा॥
प्रबल अविद्या तम मिटि जाई। हारहिं सकल सलभ समुदाई॥
खल कामादि निकट नहिं जहीं। बसे भक्ति मणि जेहि उर माहीं॥
सरल सुधा सम अरि हित होई। तेहि मणि बिनु सुख पावन कोई॥
व्यापहिं मानस रोग न भारी। जेहि के वश सब जीव दुखारी॥
राम भक्ति मणि उर बसु जाके। दुख लवलेश न सपनेहु ताके॥
चतुर शिरोमणि ते जग माहीं। जे मणि लागि सुयतन कराहीं॥
सो मणि यदपि प्रगट जग अहई। राम कृपा बिनु कोउ न लहई॥
सुगम उपाइ पाइबे केरे॥। नर हत भाग्य देत भट भेरे॥
पावन पर्वत वेद पुराना॥। राम कथा रुचिरा कर नाना॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी। ज्ञान विराग नयन उरगारी॥
भाव सहित जो खोदै प्रानी। पाव भक्ति मणि सब सुख खानी॥

मोरे मन प्रभु अस विश्वासा। रामते अधिक राम कर दासा॥
राम सिंधु घन सज्जन धीरा। चंदन तरु हरि सन्त समीरा॥
सब कर फल हरि भक्ति सुहाई। सो विनु संत न काहू पाई॥
अस विचारि जो करु सत संगा। रामभक्ति तेहि सुलभ विहंगा॥

दो॰ ब्रह्म पयो निधि मंदर। ज्ञान संत सुर आहि॥
कथा सुधा मथि काढही भक्ति मधुरता जाहि
विरति चर्म असि ज्ञान मद लोभ मोह मद मारि
जय पाई सोइ हरि भगति देख खगेश विचारि

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ। जो कृपाल मोहिं ऊपर भाऊ॥
नाथ मोहिं निज सेवक जानी। सप्त प्रश्न मम कहहु बखानी
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा। सबतें दुर्लभ कवन शरीरा॥
बड दुख कवन कवन सुखभारी। सो संक्षेपहि कहहु विचारी॥
संत असंत मर्म तुम जानहु। तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु
कवन पुण्य श्रुति विदित विशाला। कहहु कवन अघ परम कराला
मानस रोग कहहु सब गाई। तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई॥
तात सुनहु सादर अति प्रीती। मैं संक्षेप कहौं यह नीती॥
नर समान नहिं कवनिहु देही। जीव चराचर याचत जेही॥
नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी। ज्ञान विराग भक्ति सुख देनी॥
सो तनु धरि हरि भजहिं न जेनर। होंय विषय रत मंद मंद तर॥
कंचन कांच बदलि शठ लेही। करते डारि परस मणि देहीं
नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं। सन्त मिलन सम सुख कछु नाहीं
पर उपकार वचन मन काया। सन्त सहज सुभाव खगराया
सन्त सहहिं दुख परहित लागी। परदुख हेतु असन्त अभागी
भुरजा तरु सम सन्त कृपाला। परहित सह निति विपति विशाला
सन इव खल परबंधन करई। खाल कढाइ विपति सहि मरई

खल बिनु स्वारथ पर उपकारी। अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥
पर संपदा बिनाशि नशाहीं । जिमि ससि हति हिमउपल बिलाहीं ॥
दुष्ट हृदय जग आरति हेतू । यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥
सन्त उदय सन्तत सुख कारी । बिश्व सुखद जिमि इंदु तमारी ॥
परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा । पर निंदा सम अघ न गिरीशा ॥
हरि गुरु निंदक दादुर होई । जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥
द्विज निंदक बहु नरक भोग करि। जग जन्मैं बायस शरीर धरि ॥
सुर श्रुति निंदक जो अभिमानी। रौरव नरक परहिं ते प्रानी ॥
होहिं उलूक सन्त निंदा रत । मोह निशा प्रिय ज्ञान भानु गत ॥
सब की निंदा जो जड़ करहीं । ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
सुनहु तात अब मानस रोगा । जेहि ते दुख पावहिं सब लोगा ॥
मोह सकल व्याधि न कर मूला। तेहि तें पुनि उपजहिं बहु शूला ॥
काम बात कफ लोभ अपारा । क्रोध पित्त नित छाती जारा ॥
प्रीति करहिं जौं तीनों भाई । उपजे सन्निपात दुख दाई ॥
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना । ते सब शूल नाम को जाना ॥
ममता दद्रु कंडु इरषाई । कुष्ट दुष्ट तामस कुटिलाई ॥
अहंकार जो दुखद डमरुआ । दंभ कपट मद मान नहरुआ ॥
तृष्णा उदर वृद्धि अति भारी । त्रिबिधि ईषणा तरुण तिजारी ॥
युग बिधि ज्वर मत्सर अबिवेका। कहं लगि कहौं कुरोग अनेका ॥

दो. एक व्याधि तें नर मरहिं ये असाध्य बहु व्याधि ।
सन्तत पीडहिं जीव कहं सो किमि लहहिं समाधि ॥
नेम धर्म आचार तप ज्ञान यज्ञ जप दान ।
भेषज पुनि कोटिन करहिं रुज न जाहिं हरियान ॥

एहि बिधि सकल जीव जग रोगी। शोक हर्ष भय प्रीति बियोगी ॥
मानस रोग कछुक मैं गाये । हैं सब के लखि बिरलन्हि पाये ॥

मोरे मन प्रभु अस विश्वासा। राम ते अधिक राम कर दासा ॥
राम सिंधु घन सज्जन धीरा । चंदन तरु हरि सन्त समीरा ॥
सब कर फल हरि भक्ति सुहाई। सो बिनु संत न काहू पाई ॥
अस विचारि जो करु सत संगा। राम भक्ति तेहि सुलभ बिहंगा।
दो. बूह्म पयो निधि मंदर । ज्ञान संत सुर आहि ॥
कथा सुधा मथि काढही भक्ति मधुरता जाहि
विरति चर्म असि ज्ञान मद लोभ मोह मद मारि
जय पाई सोइ हरि भगति देख खगेश विचारि
पुनि सप्रेम बोलेउ खग राऊ। जो कृपाल मोहिं ऊपर भाऊ ॥
नाथ मोहिं निज सेवक जानी। सप्त प्रश्न मम कहहु बखानी
प्रथमहिं कहहु नाथ मति धीरा। सब तें दुर्लभ कवन शरीरा ॥
बड दुख कवन कवन सुख भारी। सो संक्षेपहि कहहु विचारी ॥
संत असंत मर्म तुम जानहु । तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहुं
कवन पुण्य श्रुति विदित विशाला। कहहु कवन अघ परम कराला
मानस रोग कहहु सब गाई । तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई ॥
तात सुनहुं सादर अति प्रीती। मैं संक्षेप कहौं यह नीती ॥
नर समान नहिं कवनिहु देही। जीव चराचर याचत जेही ॥
नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी। ज्ञान विराग भक्ति सुख देनी ॥
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर। होंय विषय रत मंद मंद तर ॥
कंचन कांच बदलि शठ लेही। कर ते डारि परस मणि देहीं
नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं। सन्त मिलन सम सुख कछु नाहीं
पर उपकार वचन मन काया। सन्त सहज सुभाव खग राया
सन्त सहहिं दुख पर हित लागी। पर दुख हेतु असन्त अभागी
भुरजा तरु सम सन्त कृपाला । परहित सह निति विपति विशाला
सन इव खल पर बंधन करई। खाल कढाइ विपति सहि मरई

खल बिनु स्वारथ पर उपकारी। अहि मूषक इव सुनु उरगारी
पर संपदा बिनाशि नशाहीं। जिमि कृषि हति हिमउपल बिलाहीं
दुष्ट हृदय जग आरति हेतू। यथा प्रसिद्ध अधम गृह केतू॥
सन्त उदय सन्तत सुखकारी। विश्व सुखद जिमि इंदु तमारी
परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा। पर निंदा सम अघ न गिरीशा॥
हरि गुरु निंदक दादुर होई। जन्म सहस्र पाव तन सोई॥
द्विज निंदक बहु नरक भोग करि। जग जन्मैं वायस शरीर धरि
सुर श्रुति निंदक जो अभिमानी। रौरव नरक परहिं ते प्रानी
होहिं उलूक सन्त निंदा रत। मोह निशा प्रिय ज्ञान भानु गत
सब की निंदा जो जड़ करहीं। ते चमगादुर होइ अवतरहीं।
सुनहु तात अब मानस रोगा। जेहि तें दुख पावहिं सब लोगा
मोह सकल व्याधि न कर मूला। तेहि तें पुनि उपजहिं बहु शूला
काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त निति छाती जारा॥
प्रीति करहिं जौं तीनों भाई। उपजे सन्निपात दुख दाई॥
विषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब शूल नाम को जाना॥
ममता दद्रु कंडु इरिषाई। कुष्ट दुष्ट तामस कुटिलाई॥
अहंकार जो दुखद डहरुआ। दंभ कपट मद मान नहरुआ॥
तृष्णा उदर वृद्धि अति भारी। त्रिविधि ईषणा तरुण तिजारी
युग विधि ज्वर मत्सर अविवेका। कहं लगि कहौं कुरोग अनेका

दो॰ एक व्याधि तें नर मरहिं ये असाध्य बहु व्याधि
सन्तत पीडहिं जीव कहं सो किमि लहहिं समाधि
नेम धर्म आचार तप। ज्ञान यज्ञ जप दान॥
भेषज पुनि कोटिन करहिं रुज न जाहिं हरियान

एहि विधि सकल जीव जग रोगी। शोक हर्ष भय प्रीति वियोगी
मानस रोग कछुक मैं गाये। हैं सब के लखि विरलन्हि पाये

जाने तें छीजहिं कछु पापी । नाश न पावहिं जन परितापी ॥
विषय कुपंथ पाइ अंकुरे । मुनिन्ह हृदय का नर बापुरे ॥
राम कृपा नाशहिं सब रोगा । जो इहि भांति बनै संयोगा ॥
सद्गुरु वैद्य वचन विश्वासा । संयम यह न विषय की आशा
रघुपति भक्ति सजीवन मूरी । अनूपान श्रद्धा मति रूरी ॥
इहि विधि भले कुरोग नशाहीं । नाहित यतन कोटि नहिं जाहीं
जानियत तब यह विरुज गुसाईं । जब उर बल विराग अधिकाई
सुमति क्षुधा बाढ़ै निति नई । विषय आश दुर्बलता गई ॥
विमल ज्ञान जल पाइ अन्हाई । तब रह राम भक्ति उर छाई ॥
शिव अज शुक सनकादिक नारद । जो मुनि ब्रह्म विचार विशारद
सब कर मत खगनायक एहा । करिय राम पद पंकज नेहा ॥
श्रुति पुराण सद ग्रंथ कहाहीं । रघुपति भक्ति विना सुख नाहीं
कमठ पीठ जामहिं वरु बारा । बंध्या सुत वरु काहुहि मारा
फूलहिं नभ वरु बहु विधि फूला । जीव न लह सुख प्रभु प्रतिकूला
तृषा जाइ वरु मृग जल पाना । वरु जामहिं शश शीश विषाना
अंधकार वरु रविहिं नशावै । राम विमुख सुख जीव न पावै
हिम तें प्रगट अनल वरु होई । विमुख राम सुख पाव न कोई

दो. वारि मथे वरु होइ घृत सिकता तें वरु तेल
विनु हरि भजन न भव तरिय यह सिद्धान्त अपेल
मशकहिं करहिं विरंचि प्रभु अजहिं मशक तें हीन
अस विचारि तजि संशय रामहिं भजहिं प्रवीन

कहेउं नाथ हरि चरित अनूपा । व्यास समास स्वमति अनुरूपा
श्रुति सिद्धान्त इहै उरगारी । राम भजिय सब काम विसारी
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही । मोसे शठ पर ममता जाही
तुम विज्ञान रूप नहिं मोहा । कीन्ह नाथ मो पर अति छोहा

पूछेउ राम कथा अति पावनि । शुक सनकादि शंभु मन भावनि
सत संगति दुर्लभ संसारा ॥ ॥ निमिष दंड भरि एकौ वारा ॥
देखु गरुड़ निज हृदय विचारी । मैं रघुवीर चरण अधिकारी ॥
शकुनाधम सब भांति अपावन । प्रभु मोहिं कीन्ह विदित जग पावन

दो॰ आजु धन्य मैं धन्य अति यद्यपि सब विधि हीन
निज जन जानि राम मोहिं संत समागम दीन
नाथ यथा मति भाषेउ राखेउ कछु नहिं गोय
चरित सिंधु रघुनाथ कर थाह कि पावै कोइ ॥

सुमिरि राम के गुण गणनाना । पुनि पुनि हर्ष भुशुण्ड सुजाना
महिमा निगम नेति करि गाई । अतुलित बल प्रताप प्रभुताई
शिव अज पूज्य चरण रघुराई । मोपर कृपा परम मृदुलाई ॥
अस सुभाव कहुं सुनौ न देखौं । केहि खगेश रघुपति सम लेखौं
साधक सिद्ध विमुक्त उदासी । कवि कोविद विरक्त संन्यासी ॥
योगी सुर अरु तापस ज्ञानी । धर्म निरत पंडित विज्ञानी ॥
तरहिं न विनु सेये मम स्वामी । राम नमामि नमामि नमामी
शरण गये मोसे अघ राशी । होहिं शुद्ध नमामि अविनाशी

दो॰ जासु नाम भव भेषज । हरण घोर त्रय शूल ॥
सो कृपाल मोहिं तोहि पर सदा रहहिं अनुकूल
सुनि भुशुण्ड के वचन वर देखि राम पद नेह ॥
बोले गरुड़ सप्रेम अति विगत मोह सन्देह ॥

मैं कृत कृत्य भयउं तव वानी । सुनि रघुवीर भक्ति रस सानी
राम चरण नूतन रति भई ॥ । माया जनित विपति सब गई
मोह जलधि बोहित तुम भयऊ । मो कहं नाथ विविध सुखदयऊ
मो सन होइ न प्रत्युपकारा ॥ । वंदौं तव पद वारहिं वारा ॥ ॥
पूरण काम राम अनुरागी । तुम सन तात न कोउ बड़भागी

संत विटप सरिता गिरि धरणी। परहित हेतु इन्हन कर करणी
संत हृदय नव नीति समाना ॥ ॥ कहा कविन पै कहै न जाना
निज परिताप द्रवै नव नीता । । पर दुख द्रवहिं सु सन्त पुनीता
जीवन जन्म सुफल मम भयऊ । तव प्रसाद सब संशय गयऊ
जानेहु मोहिं सदा निज किंकर। पुनि पुनि उमा कहै विहंग बर

दो· तासु चरण शिर नाइ करि प्रेम सहित मति धीर
गरुड़ गयउ बैकुण्ठ तब हृदय राखि रघुबीर ॥
गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन ॥
विनु हरि कृपा होइ नहिं गावहिं वेद पुरान ॥

कहेउं परम पुनीत इतिहासा। सुनत श्रवण छूटहिं भव पासा
प्रणत कल्प तरु करुणा पुञ्जा। उपजै प्रीति राम पद कञ्जा ॥
मन वच कर्म जनित अघ जाई ।सुनै जो कथा श्रवण मन लाई
तीर्थ अटन साधन समुदाई । योग विराग ज्ञान निपुणाई ॥
नाना कर्म धर्म व्रत दाना ॥ । संयम नियम बहु जप नाना
भूत दया द्विज गुरु सेवकाई । विद्या विनय विवेक बड़ाई ॥
जहं लगि साधन वेद बखानी। सब कर फल हरि भक्ति भवानी
सोइ रघुनाथ भक्ति श्रुति गाई। राम कृपा काहु एक पाई ॥

दो· मुनि दुर्लभ हरि भक्ति नर पावहिं विनहिं प्रयास
जो यह कथा निरंतर । सुनहिं मानि विश्वास

सोइ सर्वज्ञ गुणी सब ज्ञाता। सोइ महि मंडन पंडित दाता
धर्म परायण सोइ कुल त्राता। राम चरण जा कर मन राता
नीति निपुण सोइ परम सयाना । श्रुति सिद्धांत नीक तेइ जाना
सोइ कवि कोविद सोइ रण धीरा। जो छल छांड़ि भजै रघुबीरा
धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी । धन्य सो देश जहां सुर सरी ॥
धन्य सो भूप नीति जो करई । धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई

सो धन धन्य प्रथम गति जाकी। धन्य पुण्य रत मति सोइ जाकी
धन्य घरी सोइ जब सत संगा। धन्य जन्म द्विज भक्ति अभंगा
दो॰ सो कुल धन्य उमा सुन जगत पूज्य सु पुनीत
श्री रघुवीर परायण जेहि कुल उपज विनीत
मति अनुरूप कथा मैं भाषी। यद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी॥
तव मन प्रीति देखि अधिकाई। तब मैं रघुपति कथा सुनाई॥
यह न कहिय शठहीं हठ शीलहिं। जो मन लाइन सुन हरिलीलहिं
कहिय न लोभिहिं क्रोधिहिं कामिहिं। जो न भजै सचराचर स्वामिहिं
द्विज द्रोहिहिं न सुनाइय कबहूं। सुरपति सरिस होइ नृप जबहूं
राम कथा केते अधिकारी। जिन के सत्संगति अति प्यारी
गुरु पद प्रीति नीति रत जोई। द्विज सेवक अधिकारी सोई
ताकहं यह विशेष सुखदाई। जाहि परम प्रिय श्रीरघुराई
दो॰ राम चरण रति जो चहैं अथवा पद निर्वान॥
भाव सहित जो यह कथा करै श्रवण पुट पान
राम कथा गिरिजा मैं वरणी। कलिमल शमन मनोमल हरणी
संसृति रोग सजीवन मूरी॥ राम कथा गावहिं श्रुति भूरी
इहि महं रुचिर सप्त सो पाना। रघुपति भक्ति केर पथ नाना
अति हरि कृपा जाहि पर होई। पाव देइ यह मारग सोई॥
मन कामना सिद्ध नर पावै। जो यह कथा कपट तजि गावै
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं। ते गोपद इव भव निधि तरहीं
सुनि शुभ कथा हृदय अति भाई। गिरिजा बोली गिरा सुहाई
नाथ कृपा मम गत संदेहा। राम चरण उपजा नव नेहा॥
दो॰ मैं कृत कृत्य भइउ अब तव प्रसाद विश्वेश
उपजी राम भक्ति दृढ़ बीते सकल कलेश॥
यह शुभ शंभु उमा संवादा। सुखद सदा अरु शमन विषादा

भव भंजन गंजन संदेहा ॥ अ॥ जन रंजन सज्जन प्रिय एहा ॥ ॥
राम उपासक जे जग माहीं ॥ इह सम प्रिय तिन कहं कछु नाहीं
रघुपति कृपा यथा मति गावा। मैं यह पावन चरित सुहावा ॥
इहि कलि काल न साधन दूजा। योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं। सन्तत सुनिय राम गुण ग्रामहिं
जासु पतित पावन जग बाना। गावहिं कवि श्रुति सन्त पुराना
ताहि भजिय तजि मन कुटिलाई। राम भजे के गति नहिं पाई ॥

छं॰ पाई न गति केइ पतित पावन राम भज सुन शठ मना
गणिका अजामिल गृध्र व्याध गजादि खल तारेउ घना
आभीर यवन किरात खल श्वपचादि अति अघ रूप जे
कहि नाम वारेक ते पि पावन होत राम नमामि ते ॥
रघुवंश भूषण चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं।
कलि मल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं
शत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरैं ॥ ॥
दारुण अविद्या पंच जनित विकार श्री रघुपति हरैं॥
सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो ॥
सो एक राम अकाम हित निर्वाण प्रद सम आन को ॥
जाकी कृपा लवलेश ते मति मन्द तुलसी दासहूं ॥
पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूं ॥ ॥

दो॰ मो सम दीन न दीन हित तुम समान रघु बीर ॥
अस विचारि रघुवंश मणि हरहु विषम भव भीर
कामिहिं नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम
ऐसे होइ के लागहु तुलसी के मन राम ॥ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य सम्पादनो नाम सप्तमः सोपानः समाप्तः ॥७॥

रा.नु.७५

अथ आरती श्रीरामायणजीकी

आरति श्री रामायण जीकी । कीरति कलित ललित सियपीकी टेक ॥ गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद । वाल्मीक विज्ञान विशारद शुक सनकादि शेष अरु शारद । वरणि पवन सुत कीरति नीकी संतत गावत शंभु भवानी ॥ । अौघट संभव मुनि वर ज्ञानी व्यास आदि कवि पुङ्ग· वखानी । काग भुसुण्डि गरुड़के हियकी चारिउ वेद पुराण अष्ट दस । छहूउ शास्त्र सब ग्रंथनिकोरस तन मन धन संतन को सर्वस । सार अंश सम्मत सबही की कलि मल हरणि विषे रस फीकी । सुभग सिंगार मुक्तियुवतीकी हरणि रोग भव मूरि अमीकी । तात मात सब विधि तुलसीकी

श्लोक

यः पृथ्वी भरवारणाय दिविजैः संप्रार्थितश्चिन्मयः
संजातः पृथिवी तले रवि कुले माया मनुष्यो ऽव्ययः
निश्चक्रं हत राक्षसः पुनरगाद ब्रह्मत्व माद्यांस्थिरां ॥
कीर्त्तिम्पाप हरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे

लि॰ हरमोहनदास खत्री

